जीवन गाथा

परम योगीराज सद्गुरुदेव श्री मंगत राम जी महाराज
प्रथम भाग

लेखक
अमोलक राम मेहता

संगत समतावाद (पंजी०)
समता योग आश्रम, छछरौली रोड
जगाधरी (हरियाणा)

प्रकाशक :
संगत समतावाद (रजि०)
समता योग आश्रम
जगाधरी
© संगत समतावाद (रजि०)

प्रथम सस्करण, 1993 - 2200
द्वितीय संस्करण, 2008 - 1100

प्राप्ति स्थान :
(1) समता योग आश्रम
छछरौली रोड
जगाधरी-135003
(2) समता योग आश्रम
अंसल पालम विहार फार्म नं०45
गाँव-सलाहपुर
हुड्डा गुड़गाँव सेक्टर-21 के सामने
नई दिल्ली-110061

मुद्रक :
राजेश प्रिंटिंग प्रैस
7321-22, आराम नगर,
पहाड़ गंज, कुतुब रोड,
नई दिल्ली-110055

सर्वाधिकार सुरक्षित
संगत समतावाद

सत्पुरुष श्री मंगतराम जी महाराज

जन्म	: 24 नवम्बर, सन् 1903
महासमाधि	: 4 फरवरी, सन 1954 (अमृतसर)
जन्म स्थान	: गंगोठियां ब्राह्मणां, तहसील कहुटा ज़िला – रावलपिण्डी, (पाकिस्तान)

दो शब्द

उनकी जीवन गाथा को कौन सुनाए जिसे न भूख सताती हो, न प्यास, जिसे न थकावट महसूस होती हो, न बेचैनी, हानि और लाभ, मान और अपमान, ज़िंदगी और मौत जिसके लिए एक समान हों, मित्र और शत्रु, सगे और पराये जिसकी दृष्टि में एक जैसे हों, जिसका बचपन कठिन तप, त्याग, सेवा और पर उपकार में गुज़रा हो और जिन्होंने जवानी के आने से पहले ही योग साधना और तपोबल द्वारा विषय विकारों को दग्ध करके रख दिया हो, यही नहीं बल्कि मोहनी माया भी जिनके ब्रह्मचर्य के बल के आगे निर्बल हो चुकी हो और जो शरीर धारण करके भी शरीर की मांगों से मुक्त और मान-मर्यादा से निर्लेप रहा हो और जिन्हें जड़ और चेतन सभी जीव रूप नज़र आते हों और फिर जिनकी सुरति और सोच, साधना और तप सब केवल एक ईश्वर पर ही केन्द्रित हों। ऐसी अनोखी हस्ती के जीवन का वर्णन लगभग असंभव ही है। लेकिन ऐसे महापुरुष के सम्पर्क में आने वाला हर व्यक्ति उनके जीवन, ख़्यालात और वचनों से प्रभावित हुआ। प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने अनुभव को अपने ही ढंग से व्यक्त करता है- चाहे लिखित रूप से करे, चाहे ज़बानी। ज़बानी वर्णन किए हुए भाव समय पाकर अपना रूप बदल लिया करते हैं, लेकिन लिखित भावों पर समय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। गुरुदेव श्री मंगत राम जी की यह 'जीवन-गाथा' ऐसी ही भावना का प्रतीक है।

आशा है कि जीवन सत्ता को जानने की तड़प रखने और यत्न करने वाले जिज्ञासु सज्जन इसको पढ़कर न केवल उस महान ब्रह्मलीन ऋषि का परिचय प्राप्त करेंगे बल्कि उस अवतारी पुरुष के उच्च आदर्शों को जानकर उनको अपने जीवन में घटाने का प्रयत्न भी करेंगे और तीव्र जिज्ञासा रखने वाले सज्जन तो योग की मंज़िलों को तय करने में इस जीवन गाथा को अपना अनमोल सहायक अनुभव करेंगे।

इस 'जीवन गाथा' के लिखने का एक उद्देश्य यह भी है कि इस महान योगी के श्रद्धालु इनके दुबले-पतले शरीर को न तो शृंगार का पहलू बनाएं और न ही मन्दिरों में उनकी मूर्ति स्थापित करके पूजा-अर्जना का आदर्श मानें, बल्कि इस युग-पुरुष के अटूट प्रभु प्रेम, प्रबल संयम, कठोर अनुशासन, निर्मानता, निष्कामता, शील, सन्तोष इत्यादि उज्ज्वल गुणों से

सुशोभित जीवन से प्रेरणा लें और इन गुणों को अपने निजि तथा पारिवारिक और सामाजिक जीवन में अपनाकर सच्चे अध्यात्मवाद का लाभ उठाएं और उनका सन्देश जनता जनार्दन तक पहुंचाएं।

सद्गुरुदेव मंगत राम जी महाराज के जीवन के इस पुस्तक में वर्णित हालात को लिपिबद्ध करने का श्रेय उनके एक परम शिष्य बाबू अमोलक राम जी मेहता को जाता है जिनको काफी समय गुरुदेव के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी इस बहुमूल्य कृति से भावी पीढ़ियाँ युगों-युगों तक प्रेरणा लेती रहेंगी।

16.10.1993 प्रकाशक

जीवन गाथा

(पहला भाग)

सूची-पत्र

		पृष्ठ सं०
1.	शुभ जन्म और पारिवारिक जीवन	1
2.	बचपन	3
3.	आत्म साक्षात्कार	4
4.	नौकरी	5
5.	कपड़ा बुनने का काम	7
6.	हिकमत के ज़रिए जीवन निर्वाह	8
7.	शादी के लिए प्रेरणा	9
8.	माता जी का परलोक गमन	9
9.	महन्त रतन दास जी से मिलाप	10
10.	यज्ञ का प्रारंभ	11
11.	बाहर विचरने का प्रोग्राम शुरू	13
12.	कश्मीर की तरफ प्रस्थान	14
13.	जलमादा की तरफ प्रस्थान	16
14.	आहार और व्यौहार की शुद्धता पर ज़ोर	16
15.	कुटिया में तप के लिए प्रवेश	19
16.	जलमादा में यज्ञ	21
17.	निखेत्र गाँव में चरणकंवल	22
18.	सत्संग सम्मेलन	26
19.	अहमदाबाद आगमन और अनुभवी वाणी का प्रकाश	27
20.	काला गुजरां में निवास	30
21.	शुभ स्थान गंगोठियां को प्रस्थान	30
22.	निखेत्र पर्वत पर एकान्त निवास व तप	31
23.	पश्चिमी पंजाब में आगमन	41
24.	यज्ञ के हालात	44

		पृष्ठ सं०
25.	अन्धकार व अज्ञानता की हद	46
26.	मटोर पहाड़ की चोटी पर ब्राह्मण जाति के सुधार के लिए कठिन तप	46
27.	बमियाला में सम्मेलन	51
28.	कोहाला, जलमादा की तरफ प्रस्थान	52
29.	चिनारी में सत् प्रचार	54
30.	जलमादा में विशाल सत्संग	59
31.	समता समाज के वास्ते उपदेश	60
32.	शुभ स्थान गंगोठियां में यज्ञ	61
33.	हृदय की बात जानना	61
34.	शाहपुर कंडी में एकान्त निवास	62
35.	ग़लत रस्मों को दूर करना	67
36.	चिनारी में दोबारा सत् प्रचार	68
37.	गोपी तीर्थ में तपस्या	70
38.	पश्चिमी कश्मीर का दौरा	70
39.	थट्टा में तप	71
40.	सिमरण सम्बंधी संवाद	77
41.	काला गुजरां में सत् उपदेश	86
42.	काहनूवान में एकान्त निवास	86
43.	शाहपुर कंडी में सत् प्रचार	87
44.	शाहपुर कंडी में छुआ-छूत का सुधार	87
45.	दौरांगला ज़िला गुरदासपुर में चरणकंवल	90
46.	चिनारी में सत् प्रचार व सत्संग सम्मेलन	92
47.	जंगल सरूपा में कठिन तप	92
48.	जलमादा में सत् प्रचार	93
49.	शुभ स्थान गंगोठियां ब्राह्मणां में सत्संग सम्मेलन	95
50.	वज़ीराबाद में चरणकंवल	97
51.	कुठाला ज़िला गुजरात में एकांत निवास	97
52.	कालागुजरां में चरणकंवल	100
53.	रावलपिंडी में सत् उपदेश	103
54.	शुभ स्थान पर एकांतवास	105

पृष्ठ सं०

55. उस्मान खट्टर में चरणकंवल 106
56. पूर्व-पश्चिम सीमा ज़िला सराये सालहा में सत् प्रचार 108
57. सराये सालहा में एकांत निवास 112
58. छज्जियाँ निवासियों का सुधार 114
59. कूरी में सत् उपदेश 115
60. शुभ स्थान गंगोठियां सम्मेलन के लिए रवानगी 119
61. पत्र 120
62. दूसरा पत्र 121
63. तीसरा पत्र 122
64. सत्संग सम्मेलन का संक्षिप्त वर्णन 123
65. आत्मा की खोज 130
66. छूत-छात की बीमारी का इलाज 132
67. तरनतारन में सत् उपदेश 132
68. दौरांगला ज़िला गुरदासपुर में निवास 135
69. काहनूवान में एकान्त निवास 138
70. मारतंड भवन लाहौर में सत्संग 140
71. सत्संगशाला का निर्माण 142
72. कुठाला ज़िला गुजरात व रावलपिंडी में आगमन 143
73. गोलड़ा आगमन 145
74. शुभ स्थान गंगोठियां में एकान्त निवास 146
75. चिनारी की तरफ प्रस्थान 147
76. जंगल फैलां में एकान्त निवास 149
77. जंगल फैलां डाक बंगला और आस-पास का विवरण 150
78. चिनारी में सत् उपदेश व सम्मेलन 154
79. पश्चिमी पंजाब व हज़ारा में समता संदेश 156
80. सहर बगला में निवास 160
81. सराय सालहा हरीपुर में आगमन 160
82. स्वस्थ होने पर सत् उपदेश 163
83. काला गुजरां में एकांत निवास 167
84. अहमदाबाद, गुजरात में एकांत निवास 168

पृष्ठ सं०

85.	तरनतारन में सत् उपदेश	170
86.	लाला अनन्त राम जी एडवोकेट के विचार पत्र द्वारा	170
87.	प्रेमियों को मान देना	173
88.	संगठित जीवन शिक्षा	174
89.	लाहौर में आगमन	174
90.	शुभ स्थान गंगोठियां में बैसाखी का सत्संग	175
91.	सरूपा जंगल में एकांत निवास	177
92.	सरूपा जंगल का दैनिक प्रोग्राम	179
93.	एक खास वाक्या	180
94.	यात्रियों की वापसी	181
95.	सरूपा जंगल से वापसी	181
96.	कान में दोबारा दर्द	181
97.	सम्मेलन के लिए शुभ स्थान को प्रस्थान	182
98.	सत्संग 15 अक्टूबर, 1945	183
99.	प्रेरक और प्रकाशक शक्ति का निर्णय	184
100.	वार्षिक सम्मेलन और यज्ञ के संक्षिप्त हालात	186
101.	धर्म की महिमा	188
102.	सुख	189
103.	लोक सेवा	191
104.	अपना सुधार	194
105.	दूसरों के नुकसान का दुःख	196
106.	काहनूवान को रवानगी	197
107.	कृपा दृष्टि का असर	197
108.	ज़िन्दगी का लक्ष्य	199
109.	भेद-भाव	200
110.	दौरांगला में सत् उपदेश	201
111.	अबोहर में अमृत वर्षा	204
112.	नाम की महिमा	204
113.	तरनतारन में आगमन	207
114.	एक अद्भुत सेवा का आदर्श	208

पृष्ठ सं०

115. लाहौर में आगमन 210
116. समयाला बंगला में एकांत निवास 211
117. शाहपुर कंडी में एकांत निवास 214
118. काहनूवान में निवास 215
119. मलखानवाला ज़िला स्यालकोट में अमृत वर्षा 218
120. कालागुजरां में आगमन 219
121. रावलपिंडी में निवास 221
122. झंग मघियाना में एकान्त निवास 228
123. सुखू की मंडी में कुछ दिन निवास 237
124. तरनतारन में आगमन 240
125. अबोहर में अमृत वर्षा 248
126. लाहौर में आगमन 251
127. मटन व श्रीनगर के लिये रवानगी 267
128. अन्धकार परस्ती के प्रति चेतावनी 268
129. श्रीनगर में सत् उपदेश 268
130. चिनारी में आगमन 272
131. विशाल सत्संग यज्ञ 274
132. चिनारी निवासियों पर कृपा 276
133. श्रीनगर वापसी 277
134. होनी बलवान है 277
135. जम्मू के लिये रवानगी 278
136. पठानकोट की तरफ प्रस्थान 281
137. काहनूवान में निवास 282
138. जगाधरी की तरफ प्रस्थान 285
139. जगाधरी में सत् प्रचार 288
140. क्षर-अक्षर का निर्णय 290
141. देहरादून का प्रोग्राम 291
142. शरीर विनाश की चेतावनी 292
143. देहरादून में निवास 294
144. सिद्ध खड्ड मसूरी में एकांत निवास 297

		पृष्ठ सं०
145.	देहरादून में चंद दिन निवास	302
146.	ताजेवाला हैड पर एकांत निवास	302
147.	दिल्ली में एकांत निवास	312
148.	कुरुक्षेत्र में निवास	318
149.	काहनूवान में एकांत निवास	321
150.	अबोहर में सत् उपदेश	325
151.	मलोट मंडी में निवास	331
152.	बलदेव नगर कैम्प, अम्बाला में सत् प्रचार	334
153.	शिमला जाखू पहाड़ी पर एकांत निवास	339
154.	शिमला से रवानगी	353
155.	ताजेवाले के लिए रवानगी	371
156.	पठानकोट में एकांत निवास और सत् उपदेश	384
157.	जम्मू में निवास	398

ॐ ब्रह्म सत्यं सर्वाधार

जीवन गाथा

सद्गुरुदेव मंगत राम जी

1. शुभ जन्म और पारिवारिक जीवन

सृष्टि त्रिगुणमई है। गुणों के अनुसार ज़माने का चक्र बदलता रहता है। कभी सतोगुण प्रधान होता है, तो कभी रजोगुण और कभी तमोगुण। जब सतोगुण प्रधान होता है तब सत् धर्म का प्रकाश होता है और तमाम जीव शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं और शारीरिक भोग वासना से त्याग हासिल करने का यत्न करते हैं। परिणामस्वरूप मानसिक शांति को प्राप्त करना परम धर्म जानते हैं।

जब रजोगुण प्रधान होता है तब जीव अधिक सम्पदा एकत्र करते हैं और अधिक भोगों में आसक्त रहते हैं और विचित्र से विचित्र शारीरिक सुखों के सामान प्रकट करते हैं। जीवन धर्म शारीरिक सुख ही जानते हैं। नाना प्रकार के भोग पदार्थों को प्राप्त करने की खातिर दिन-रात लगे रहते हैं। शारीरिक उन्नति के साधन ऐसे-ऐसे धारण करते हैं जिनके जाल में आसक्त होकर ईश्वर की हस्ती को भूल जाते हैं, यानि, सब कुछ शरीर का ही सुख जानते हैं। मानसिक शांति के विचार वाली बुद्धि को अधिक शारीरिक भोगों में फंसा कर नाश कर देते हैं। आखिर अधिक भोग विकारों में शारीरिक उन्नति भी नाश कर देते हैं और आत्मिक उन्नति से तो पहले ही नास्तिक हो चुके होते हैं। ऐसी हालत में अधिक तमोगुणी वासना प्रकट होकर जीवों को अधिक संकट में घेर लेती है और तमाम जीव मलीन वासना की पाबंदी में आकर अधिक दु:ख पाते हैं। ऐसे ही समय के बारे में सत्पुरुष का फरमान है:-

सत् धर्म का निश्चय विनासिया, भयो अधर्म परचार।
'मंगत' पूजा माया की, करे सकल संसार॥

अर्थात्-जब सत् धर्म का निश्चय मिट जाता है अधर्म का प्रचार शुरू हो जाता है, परिणाम स्वरूप सब संसारी जीव माया की पूजा में लग जाते हैं । जब तमोगुण वासना जीवों में प्रधान होने लगती है तब स्वार्थ अन्धकार इस कद्र बढ़ जाता है कि तमाम जीव आपस में कट-कट कर मरते हैं, एक दूसरे का हक हासिल करने की खातिर और कोई शांति का रास्ता दिखाई नहीं देता। फलस्वरूप एक दूसरे की नाश की ख़ातिर दिन-रात लगे रहते हैं। इस तरह वासना अन्धकार हर एक जीव को

इस कद्र घेर लेता है कि छल-कपट के बग़ैर एक वचन भी बोलना कठिन हो जाता है। तब अधिक उपद्रव संसार में प्रकट होने लगते हैं और जीव तमोगुणी वासना के जाल में आकर हर प्रकार की उन्नति को नष्ट करके अधिक दु:खी होते हैं। ऐसे ही समय के लिए सत्पुरुष का फरमान है-

सत् का मंडन पाखंड खंडन, सत् पुरुष जग आये।
पाप विखाद का नाश करन ते, केते दु:ख उठाये॥

अर्थात्-सत् का मंडन करने और पाखंड का खंडन करने के लिए सत्पुरुष जग में आते हैं और पाप की दौड़ को ख़त्म करने के लिए खुद बड़े कष्ट उठाते हैं। ऐसे ही समय के बारे में भगवान कृष्ण जी ने भी गीता में चेतावनी दी हुई है और फरमाया है:- हे अर्जुन! **''जब-जब धर्म की ग्लानि (हानि) और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् प्रकट होता हूँ।''**

घोर कलयुग आवरतिया, सत् धर्म भयो नाश।
कूड़ कपट की सम्पदा, सब घट कियो निवास॥

ऐसे ही घोर कलियुग के समय में जबकि सत् धर्म नाश हो रहा था और कूड़ (झूट) कपट की सम्पदा सबके अन्दर निवास कर रही थी सत्पुरुष मंगत राम जी महाराज का जन्म शुभ स्थान गंगोठियां ब्राह्मणां, तहसील कहूटा, ज़िला रावलपिंडी (पाकिस्तान) में एक कसाल ब्राह्मण कुल में हुआ। इनके बुज़ुर्ग भक्ति के रंग में रंगे हुए थे। इनके दादा सुन्दर दास जी भी घर-बार छोड़कर काफी समय शबकदर और बानहाल के जंगलों में तप करते रहे और कई वर्ष अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए घर-बार को त्याग किये रखा। अन्त में आपको भी महात्मा ज्ञानेश्वर जी के पिता बिट्ठल पंथ जी की तरह परिवार के बंधन वश घर वापिस लौटना पड़ा। अपने बुज़ुर्गों के दवाब पर गृहस्थ आश्रम की बेड़ियाँ पड़ गईं, मगर आपने अपने जीवन को कँवल फूल की तरह अलेप रखा और प्रभु भक्ति में डूबे रहे और एक सौ पच्चीस साल की आयु तक सत् धर्म का पालन करते हुए शरीर त्याग किया। गृहस्थ आश्रम के पालन के दौरान आपके यहाँ दो पुत्र हुए। बड़े का नाम पंडित गौरी शंकर और छोटे का नाम पंडित प्रभुदयाल था।

आपके पिता पंडित गौरी शंकर का जीवन भी बड़ा शुद्ध और सदाचारी था। वह भी प्रभु के भक्त थे और आपके उच्च जीवन को देखकर रावलपिंडी के रईस आज़म सरदार सुजान सिंह ने उन्हें अपना मुख़्तयार-आम बनाकर तमाम खज़ाना उनके सुपुर्द कर रखा था। सरदार साहिब आपकी बड़ी इज़्ज़त करते थे, जबकि पंडित जी आपके मुलाज़िम थे। मगर पंडित जी के साधारण जीवन और प्रभु प्रेम से इतने प्रभावित थे कि आप उनको अपना मुलाज़िम नहीं समझते थे बल्कि मालिक की दृष्टि से देखते थे।

पंडित गौरी शंकर जी ने ख़ास हालात में दो शादियां की। पहली शादी से आपके यहाँ दो पुत्र पंडित ठाकुर दास जी व पंडित किशन चन्द जी ने जन्म लिया और दूसरी शादी जो श्रीमती गणेशी

देवी से हुई, उनसे दो लड़कियाँ श्रीमती करतार देवी, श्रीमती देवकी देवी और सुपुत्र मंगत राम जी ने जन्म लिया। सतगुरु मंगत राम जी का जन्म 9 मघर, संवत् 1960 तदनुसार 24 नवम्बर, 1903 मंगलवार के दिन हुआ। आपका आगमन जन्म सिद्ध अवस्था में हुआ। तीन साल की आयु में ही आपको सन्मार्ग की सारी सुधि (होश) थी।

2. बचपन

जब आप तीन साल की आयु के हुए तो आप रात को उठकर चारपाई पर बैठ जाते और प्रभु भक्ति में लीन हो जाते। आपकी माता जब आपको इस तरह बैठा देखती तो महसूस करती और सो जाने को कहती। माता के ज़ोर देने पर आप झट लेट जाते, मगर जब वह सो जाती तो फिर आप उठकर बैठ जाते।

दया और त्याग की भावनायें बाल अवस्था से ही आपके अन्दर मौज़ूद थीं। जब आपको स्कूल में दाखिल किया गया और आप स्कूल जाते तो आपकी माता परांठे पकाकर खाने के लिए देती। जब छुट्टी मिलने पर आप अपने साथियों के साथ खाना खाने बैठते तो दया की भावना के कारण ग़रीब साथियों की रूखी-सूखी रोटियां आप ले लेते और इस्तेमाल करते और परांठे उन्हें खिला देते। एक दफा आपकी माता जी ने आपको अतलस का कोट सिलवा कर पहना दिया। जब आप स्कूल पहुंचे तो आपने एक ग़रीब बच्चे को फटे-पुराने वस्त्र पहने देखा। आप इसे सहन न कर सके और अपना अतलस का कोट उतार कर उसे पहना दिया और आपने उसका फटा-पुराना कोट पहन लिया।

आप बचपन में ही बड़े बुद्धिमान थे। हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम आया करते थे। आपके अन्दर प्रभु भक्ति की ऐसी लगन थी कि जब आप छुट्टी मिलने पर वापस लौटते तो रास्ते में किताबें एक तरफ रखकर एकांत स्थान पर ईश्वर आराधना में लग जाते। यह सिलसिला बढ़ता गया। आठ साल की आयु में आपने रात को ही उठकर बाहर जाना शुरू कर दिया। आप शुभ स्थान के नज़दीक ही नीचे गहराई में नदी के किनारे आधी रात को उठकर चले जाते और एक पत्थर की चट्टान पर बैठकर प्रभु सिमरण में लग जाते। इस तरह आपका जीवन दूसरे खेल-कूद में लगे रहने वाले बच्चों से बिलकुल अलग था।

आपने पांचवीं कक्षा से आठवीं कक्षा तक कल्लर कस्बे के स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। यह कस्बा आपके जन्म स्थान से 6 मील के फासले पर था और वहां आपकी बहन श्रीमती करतार देवी रहती थीं। आप वहां अपनी बहन के गृह में रहते और स्कूल में तालीम हासिल करते। स्कूल में साथी व दूसरे विद्यार्थी आपको लाट पादरी कहा करते थे, क्योंकि आप स्कूल में धर्म पर भाषण दिया करते थे। आपके भाषण सुनकर आपके उस्ताद भी हैरान हुआ करते थे कि इतनी छोटी उम्र में

कैसी तीव्र बुद्धि इस बच्चे की है और किस प्रकार सुन्दर ढंग से सदाचार की कठिन से कठिन बातों पर विचार प्रकट करता है।

बचपन से ही आपका जीवन सादगी का नमूना था। न केवल आपकी ख़ुराक (आहार) ही सादा थी बल्कि लिबास (पहनावा) और विचार भी सादा हुआ करते थे। आप हेरा-फेरी वाली बातों से परहेज़ करते थे। अपने अन्दरूनी विचार स्पष्ट कह दिया करते थे। आपकी सादा और निर्मल बुद्धि की एक अनुपम घटना इस प्रकार है। उन दिनों में स्कूलों का निरीक्षण व परीक्षा, निरीक्षक साहेबान आकर लिया करते थे और अपने आने की सूचना पहले भेज दिया करते थे। एक दफा एक अंग्रेज़, सर्किल निरीक्षक, परीक्षा लेने के लिए आ रहे थे। जब उनके आने की सूचना स्कूल में पहुंची तो उस्ताद साहेबान ने सब विद्यार्थियों को उस दिन अच्छे-अच्छे कपड़े पहन करके आने की आज्ञा दी। निश्चित दिन बाकी विद्यार्थी तो अच्छे-अच्छे वस्त्र पहन कर आये मगर बालक मंगत राम अपने सादा लिबास में ही स्कूल आया। आपके सादा कपड़ों को देखकर जब उस्ताद साहेबान ने आपको टोका तो आपने फरमाया:- ''इंसान की कदर उसके नेक आचरण व नेक विचार से हुआ करती है, न कि चमकीली और भड़कीली पौशाक से।'' इसी सादगी को आपने बाद में नियम बना दिया और इसे धारण करने की शिक्षा दी। आपने अपनी अनुभवी वाणी में, जो बाद में प्रकट हुई, फरमाया हुआ है-

सादा खावन सादा लावन, सादा वचन विलास ।
'मंगत' रहनी देव की, जो पाये तो पाप विनास ॥

3. आत्म साक्षात्कार

आपने आत्म अनुभवता की स्थिति को प्राप्त करना था, उस मकसद के लिए आपने अपने बहनोई से चिला (40 दिन का तप) काटने का ज़िकर (चर्चा) किया। उस वक्त आप सातवीं कक्षा में पढ़ रहे थे। जब आपने अपने बहनोई को सहमत कर लिया तो उन्होंने आपकी बहन को गंगोठियां मायके भेज दिया और आपने चालीस दिन बराबर दिन-रात प्रभु सिमरण में लगाये और आत्म अनुभवता की स्थिति को प्राप्त कर लिया। इस छोटी सी उम्र में, जबकि आपकी आयु 13 वर्ष की थी, चालीस दिन लगातार अटूट तप करना कोई साधारण बात नहीं थी। लेकिन प्रभु भक्तों की दृढ़ता के आगे कोई कठिनाई रुकावट नहीं डालती।

जब आत्म साक्षात्कार हो चुका तो आपके अन्दर परम आनन्द और अखंड शांति का राज्य हो गया। आप उस समय कनफटे योगियों की संस्था में शामिल होने के लिए पूरन-भक्त का कुआँ, जो स्यालकोट (पाकिस्तान) में है, के लिए रेल-गाड़ी में सवार होकर चल पड़े। वज़ीराबाद गाड़ी बदलनी थी। आप गाड़ी से उतर कर स्टेशन से बाहर जाकर लक्कड़ मंडी में एक बड़ी शतीर पर

लेट गए और सो गए। सुबह उठकर बजाय स्यालकोट वाली गाड़ी में सवार होने के लाहौर वाली गाड़ी में सवार हो गये और जब गाड़ी लाहौर स्टेशन पर पहुंची तो आप उससे उतरकर स्टेशन के बाहर जाकर लाला मूलचन्द की सराय में जा ठहरे। वहां आपने कुछ समय तक विश्राम किया। विश्राम के दौरान आपके अन्दर से आवाज़ आई- ''तुम्हारा मिशन कन-फटे योगियों में शामिल होना नहीं है, बल्कि तमोगुण के चक्र में फंसी हुई जनता को आत्म ज्ञान रूपी शस्त्र से उस फंदे को काटकर बाहर निकालना है।'' इस प्रभु आज्ञा का पालन करते हुए आप लाहौर से सीधे जन्म भूमि गंगोठियां वापिस लौट आये और वहां से कल्लर जाकर फिर पढ़ाई शुरू कर दी और एक साल में आठवीं कक्षा पास कर ली। आपके उच्च आचरण और प्रेम-मई जीवन को ध्यान में रखते हुए स्कूल के हैडमास्टर साहब श्री रामदास जी आनन्द ने इन्हें पढ़ाई जारी रखने के लिए कहा और फरमाया:- आपकी एम०ए० तक की पढ़ाई का तमाम खर्च वह खुद करेंगे। मगर जिस विचित्र विद्या को आप प्राप्त कर चुके थे उसके मुकाबले में सांसारिक विद्या की उन्हें ज़रूरत नहीं थी इसलिए उन्होंने हैडमास्टर साहब का धन्यवाद करके अर्ज़ की:- ''यह एक ही तालीम जारी रख सकते हैं। दुनियादारी की तालीम इनके लिए नहीं है। यह तो अब उस तालीम को पूरा करेंगे जिससे संसार की भूली-भटकी जनता का उद्धार हो।''

जब आप स्कूल की पढ़ाई पूर्ण हो चुकने पर और स्कूल छोड़कर जन्म भूमि की तरफ रवाना हुए तो आपके साथी और मास्टर साहेबान आपके उच्च जीवन और प्रेम के कारण आपको छोड़ने के लिए तीन मील तक साथ आये। आपने उस समय उन सबका शुक्रिया अदा किया और लौटने की प्रार्थना की। उस वक्त जुदाई का दृश्य देखने लायक था। सबकी आंखों में आंसू थे और गले मिलकर बारी-बारी सब जुदा हुए और महसूस कर रहे थे कि प्रेम और श्रद्धा की पूर्ण हस्ती उनसे जुदा हो रही है।

यह तो था आपके बाल अवस्था का समय। चूंकि प्रभु आपके रोम-रोम में रम रहा था और आप सब साथियों में प्रभु को ही रमा हुआ देखते थे। इस वजह से आपको सबसे अति प्रेम था और आप सबको प्रभु रूप जानते हुए उनकी सेवा करते और जब भी किसी को दुःखी देखते तो उसके दुःख को दूर करने का फौरन प्रबंध करते। इसलिए सब आपका सम्मान करते थे।

4. नौकरी

जब आप पढ़ाई खत्म होने पर वापिस गंगोठियां आ गये तो आपने सारा समय प्रभु सिमरण-ध्यान में लगाना शुरू कर दिया। निरन्तर प्रभु प्रेम में मस्त रहते। रात को लगभग तीन बजे आप गांव से कुछ फासले पर पीर ख़्वाजा जंगल में जाकर समाधिस्त हो जाते। यह जंगल किसी समय कब्रिस्तान था और आप-पास के लोग इसे भूत-प्रेत, चुड़ैलों का स्थान समझते थे और इस

जगह जाने से डरते थे। आपको भी भय दिलाकर उस जगह जाने से रोका करते थे, लेकिन एक ब्रह्मज्ञानी हस्ती पर इसका क्या असर हो सकता था? वह अपने प्रोग्राम के अनुसार निश्चित समय पर उस जंगल में हमेशा जाते और आनन्द अवस्था में मग्न रहते।

''घर दा जोगी जोगड़ा बाहर दा जोगी सिद्ध''

इस कहावत के अनुसार नगर वाले कब आपकी इस निराली अवस्था को जान सकते थे वह तो इन्हें निकम्मा ही समझते थे और ख़्याल करने लगे थे कि वह ऐसे ही समय बर्बाद कर रहे हैं, उन्हें किसी काम में लगाना चाहिये। इस विचार को लेकर आपके भाइयों ने नौकरी करने पर जोर देना शुरू किया और आपकी माता से भी कहलवाया। उनके बार-बार कहने पर और अपनी अवस्था को छुपाये रखने की ख़ातिर आप 1922 में जन्म स्थान से पेशावर अपने बड़े भाई पंडित ठाकुर दास जी के पास चले गये और कुछ दिनों के लिए एम०ई०एस० के महकमे में नौकरी कर ली। बाद में उस नौकरी को छोड़कर कंट्रोलर ऑफ मिलिटरी एकाउंट्स के दफ़्तर में नौकरी कर ली। जिस उच्च अवस्था को आप प्राप्त हो चुके थे वह कब तक छुपी रह सकती थी। दफ़्तर में आपके साथियों पर आपका असर होने लगा और वहाँ हरि चर्चा भी होने लगी। अक्सर इस हरि चर्चा की वजह से इनकी शिकायत अधिकारियों तक पहुंच जाती कि आप ज़्यादा समय हरि चर्चा में बेकार करते हैं और अपनी ड्यूटी पूरी नहीं करते। मगर जब भी अफसरों ने आपके काम की जांच की तो उस कार्य को पूरा पाया। ऐसी हालत में कई किस्म की अजीब घटनाएँ भी होनी संभव थीं। एक बहुत ही अजीब घटना ऐसी हो गयी जिसकी वजह से आपने नौकरी छोड़ दी।

वह घटना इस तरह है-

एक दिन आप अपने बड़े भाई साहब के घर पर बैठे थे और बख्शी हीरा नन्द जी मटोर, ज़िला-रावलपिंडी निवासी भी वहां मौजूद थे। धार्मिक वार्तालाप चल रहा था। बख्शी साहब ने प्रहलाद भक्त के गर्म लोहे के स्तम्भ को अपने बाजुओं की लपेट में लेकर इससे चिपटने और फिर जिन्दा बचे रहने पर शक किया और कहा-यह सब ढोंग है, ऐसा होना नामुमकिन है। आपने इस पर उत्तर दिया -ईश्वर विश्वासी इंसान के लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं बल्कि ऐसा होना साधारण बात है। मगर बख्शी जी न माने और अपनी जिद्द पर अड़े रहे और यह कह दिया कि कोई ऐसा करके तो दिखलाये। उस समय पास ही तंदूर जल रहा था। आग पूरे जोर से जल रही थी। आपने अपनी टांग उसमें डाल दी। कुछ देर के बाद जब देखने वालों ने उसे निकालने पर जोर दिया तो टांग बाहर निकाल ली और सबने देखा के उसे ज़रा भी आंच नहीं पहुंची। सत्पुरुष के लिए रिद्धि-सिद्धि दिखलाना मना है और उन्हें इसकी सज़ा भुगतनी पड़ती है, मगर एक प्रभु भक्त की जीवन घटना सत्य साबित करने के लिए ऐसा किया गया था। बहरहाल इस शक्ति के दिखाने की खबर का फैलना ज़रूरी था और इसके ज़ाहिर होने से आम जनता का इस तरफ राग़ब होना भी लाज़मी था

जो आपके लिए मुसीबत का कारण बन जाना स्वाभाविक था। इसलिए आपने नौकरी छोड़ दी और गंगोठियां वापिस चले गये और पहले की तरह अपनी आनन्दित अवस्था में पीर ख़्वाजा जंगल में मस्ती से रहने लगे।

5. कपड़ा बुनने का काम

सत्पुरुष गंगोठियां वापिस आकर फिर अपनी आत्म अनुभवता की आनन्दित अवस्था में मस्त होकर रहने लगे और अक्सर ही पीर ख़्वाजा जंगल में या दूसरी जगह जाकर समय व्यतीत करते। मगर रिश्तेदार अब भी वैसा ही ख़्याल लिये हुए थे कि वे अपना वक्त बर्बाद न करें और न ही किसी पर बोझ बनें। इसलिए भाइयों ने फिर उन्हें काम पर लगाने का विचार शुरू कर दिया और स्कीम बनाकर कस्बा सागरी में, जो शुभ स्थान गंगोठियां से पांच मील के फासले पर था, खड्डियां लगवा दीं और आपको वहां कपड़ा तैयार करवाने और खुद कपड़ा बुनने के काम को सीखने के लिए भेज दिया। आपने अपने बुज़ुर्ग भाइयों की आज्ञा मान तो ली और वहां जाने लगे, मगर वह हस्ती ऐसा कपड़ा बुन चुकी थी जिसकी मिसाल परम सन्त कबीर साहब ने निम्न शब्दों में दी हुई है:-

अजब जुलाहे चादर बीनी, सूत करम को तानी ।
सुरत निरत का भरना देना, तब सबके मन मानी ॥

और ऐसी चादर ओढ़ ली जिसका ज़िकर आपने अपनी अनुभवी वाणी में किया हुआ है।

निर्वाण शब्द की आखंड चादर, कोई गुरमुख साजन ओढ़े ।
'मंगत' तिस के चरण कंवल में, नित नित परीती जोड़े ॥

निर्वाण शब्द की आखंड चादर कोई गुरुमुख साजन ही ओढ़ता है और हर समय उसके चरण कमलों में प्रीति जोड़ता है। भला ऐसी विचित्र हस्ती को ऐसे कपड़े बुनने का कार्य, जो माया के चक्र में फंसाने वाला हो, कब बन्धन में फंसा सकता है? आप मशीनरी वग़ैरह को वैसे ही छोड़कर सागरी से चले आये और अपनी एकान्त निवास की जगहों में जाकर फिर महा-आनन्द में गोते लगाने लगे। मजबूरी में भाइयों को जाकर खड्डियां इत्यादि सामान बेचना पड़ा और आपको काम करने पर मजबूर करने के लिए सोचने लगे। सोच विचार के बाद आपको हर किस्म की आर्थिक सहायता देनी बंद कर दी ताकि तंग आकर आप जीवन निर्वाह का यत्न करें। सहायता बन्द हो जाने पर आपकी पूज्य माता श्रीमती गणेशी देवी जी ने गुज़ारे का प्रबन्ध करने के लिए कहा।

6. हिकमत के ज़रिये जीवन निर्वाह

आपने अब हिकमत का काम शुरू कर दिया। आपने यह काम किसी से सीखा नहीं बल्कि अपने अनुभव से बड़े-बड़े रोगी जीवों को ठीक किया। दुनिया नहीं छोड़ती। जब आपने हिकमत का काम शुरू किया तो गांव निवासियों ने कहना शुरू कर दिया कि कब्रें खोद रखो, कई बीमार खत्म होंगे। मगर इन लोगों को पता नहीं था कि एक आत्म अनुभवी पुरुष हमारा इलाज करता है और ऐसी हस्तियों के लिए ऐसे कार्य कोई महत्त्व नहीं रखते। वह ऐसे कार्यों को बहुत आसानी से कर सकते हैं। जब आपके इलाज से कई बीमार ठीक हुए तो सबके लिए आश्चर्य होने लगा। आपने बीमारों को देखने व दवाई देने का समय जंगल से वापिस आकर नौ बजे तक निश्चित किया हुआ था। बाहर भी बीमारों को देखने के लिए दूसरे गांव में चले जाते और इसका वक्त बारह बजे से चार बजे तक निश्चित कर दिया था। आप बीमारों को दवा लिख देते और अनेकों को दवाइयां भी बना देते। ग़रीबों को दवाइयां अपने पास से देते। जो ज़्यादा बीमार होते उनके घरों में जाकर उनकी सेवा भी करते। यहां तक कि उनको दलिया वग़ैरा भी आप बना देते। आपने कभी भी किसी को सेवा व इलाज के बदले में कोई पैसा देने को नहीं कहा। अगर कोई खुशी से कुछ छोड़ जाता उसे रख लेते और उसमें अपना और अपनी माता का खर्चा निकालकर बाकी ग़रीब, यतीम और दुखियों में बांट देते और ग़रीब, बीमारों की खुराक में भी खर्च करते। उनकी इस निष्काम सेवा का असर आम जनता पर होना लाज़मी था। आस-पास रहने वाले मुसलमान आपको पीर साहब कह कर पुकारने लगे। आप जब दूसरे गांव में बीमार देखने जाते तो वापसी पर आस-पास के जंगलों में समाधिस्त हो जाते और काफी समय मस्त हालत में व्यतीत कर देते।

एक घटना लेखक के सामने भी हुई। लेखक शुभ स्थान गंगोठियां में आया हुआ था। उन दिनों में गुरुदेव मामूली सा अन्न खाते थे। आप जब पीर ख़्वाजा जंगल से वापस आये और भोजन तैयार हो गया तो आपकी भाभी भाग ने, जो उन दिनों में आपका भोजन पकाया करती थीं, थाली में इसे परोस कर उस कमरे में रख दिया जहां बैठकर आप इसे ग्रहण किया करते थे और कहा-कि उठकर भोजन खा लो। आपने जवाब में कहा कि ठहर जाओ। कुछ समय गुज़र गया तो फिर उसने कहा:- रोटी ठंडी हो रही है उठकर खा लो। आपने फिर ठहरने को कहा। इसके थोड़ी देर बाद एक साहब आ गये और प्रणाम करके बैठ गये। इस पर आपने उसे कहा:- रोटी पड़ी है खा लो। उसने जवाब दिया:- वह मन्दिर से खाना खाकर चला है। इस पर आपने उसे कहा:- वह आठ नौ मील चलकर आया है भूख लग गई होगी, भोजन पा लेवे। मगर उसने जवाब दिया:- नहीं महाराज! भूख नहीं लगी है। तब आप उठे और कहा हम खा लेते हैं और जाकर भोजन खा लिया। जब खाना खा कर वापस आकर बैठे तो उस साहब ने अर्ज़ की:- वह दवाई लेने आया है। इस पर आपने फरमाया:- अन्दर जाकर सन्दूकी में से दवाई निकाल लेवे। वह दवाई ले आया और आपको

दिखलाई। आपने फरमायाः- इसे ले जाओ। थोड़ी देर के बाद वह दवाई लेकर वापस चला गया।

जब वह बोतल दवाई वाली लेकर चला गया तो बाबू अमोलक राम ने आपसे पूछाः- महाराज जी! इसे क्या बीमारी है जिसकी दवाई वह लेने आया था? तो आपने फरमायाः- अर्सा हुआ वह रावलपिंडी गये थे और अपने बड़े भाई के घर पर ठहरे हुए थे। पड़ोस में यह व्यक्ति सख़्त बीमार पड़ा था। इनके वहां पहुंचने की सूचना मिलने पर उसके रिश्तेदारों ने उन्हें बुलवाया। जाकर उसे देखा। उसके सारे जिस्म में पाक पड़ी हुई थी। दवाई बनाकर इस्तेमाल करवाई गई और उसे आराम आ गया। मगर उसने पूरी सावधानी नहीं की। इसलिए कभी-कभी फिर उस बीमारी का असर हो जाता है। फिर अर्ज़ की गईः- महाराज जी! आपने सारी दवाई उसे दे दी है। तो आपने फरमायाः- ''उसे इसलिए सारी बोतल ले जाने के लिए कहा ताकि वह फिर न आवे।''

फिर अर्ज़ कीः- महाराज जी! उसे नुस्ख़ा बताने की कृपा कर देते ताकि अगर फिर ज़रूरत होती तो वह उसे खुद बना लेता। इस पर आपने फरमायाः- अगर वह नुस्ख़ा बनावेगा तो अन्धा हो जावेगा, इसलिए उसे नुस्ख़ा नहीं बतलाया गया। इस वार्तालाप से दो बातें पता लगीं। एक तो सत्पुरुष सर्वज्ञाता होते हैं। उन्हें पता होता है कि कहां क्या हो रहा है? सत्पुरुष जान गये थे कि वह व्यक्ति आ रहा है इसलिए खाना खाने में देरी की और उसका इन्तज़ार किया। सत्पुरूष सर्व-समर्थ होते हैं, जैसे कि इस किस्म की दवाईयाँ भी बना सकते हैं जिन्हें अगर कोई दूसरा व्यक्ति बनावे तो अन्धा हो जावे।

7. शादी के लिए प्रेरणा

आपने इलाज का सिलसिला, जब-तक आपकी माता जी जिन्दा रहीं, जारी रखा। इस सिलसिले को देखकर आपकी माताजी और बहनों ने आपको शादी करने के लिए कहना शुरू कर दिया। मगर आप मना करते रहे। फिर उन्होंने दूसरे रिश्तेदारों के ज़रिये आपको कहलवाया तो आपने फरमायाः-

''दो तलवारें एक म्यान में नहीं रह सकतीं।'' इस पर सब खामोश हो गये और इसके बाद किसी ने शादी के लिए कहने की हिम्मत नहीं की और आपने अति त्यागमई, ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करने का आदर्श पेश किया।

8. माता जी का परलोक गमन

फागुन संवत् 1985 मुताबिक मार्च 1928 में आपकी माता जी परलोक सिधार गईं। आप उस समय घर पर नहीं थे, रावलपिंडी गये हुए थे। ख़ास आदमी आपको माताजी की मृत्यु की सूचना देने के लिए भेजा गया। जब आपको सूचना मिली तो विचार हुआ कि जिस हस्ती का ऋण उनके

ज़िम्मे था वह तो जा चुकीं, अब यहीं से बाहर चले चलो। मगर फिर विचार उठा कि शरीर के आख़री संस्कार में भी शामिल होना चाहिए। ऐसा विचार उठते ही आप शुभ स्थान गंगोठियां आ गये और मृतक शरीर के साथ शमशान भूमि गये। आत्मदर्शी महापुरुष त्रिकाल-दर्शी होते हैं। उन्हें सब पता होता है कि जीव कहां से आया है और आगे कहां जा रहा है? इसलिए वह रस्म रिवाज़ के पाबंद नहीं होते। असलियत की जानकारी होने के कारण आपने रस्म वग़ैरा की अदायगी में कोई हिस्सा नहीं लिया। यह सब आपके भाइयों ने अदा की। शरीर को अग्नि सुपुर्द कर चुकने के बाद आप अपने दिन की एकान्त निवास की जगह यानी पीर ख़्वाजा जंगल में तशरीफ़ ले गये। माता जी की सेवा का ऋण जो आपके ज़िम्मे था वह अब उतर चुका था। अब आपने हिकमत वाला सिलसिला भी खत्म कर दिया और अपने प्रोग्राम को बदल दिया। अब आप रात के पहले पहर ही बाहर तशरीफ़ ले जाते और तरेल नदी के तट पर एक तरफ एक पहाड़ी के पास समाधिस्त हो जाते और तमाम रात वहीं व्यतीत करते। सुबह दिन निकलने के बाद शौच इत्यादि से निवृत्त होकर नदी में स्नान करके वापिस घर पर आते। भोजन तैयार हो जाने पर जो बिलकुल सादा होता जैसे कि साग, दही व फुलका, आप थोड़ा सा खाकर एक घंटा आराम करके फिर पीर ख़्वाजा जंगल में चले जाते और आनन्द के समुन्द्र में खूब डुबकियां लगाते। शाम हो जाने पर वापिस आते थे।

9. महंत रतन दास जी से मिलाप

संवत् 1968, भादों का महीना था। आप रावलपिंडी पधारे हुए थे। उन ही दिनों में सत् के जिज्ञासु महंत रतन दास जी, जो कि अहमदाबाद गुजरात में खाड़िया गेट कबीर साहब मंदिर के महंत थे, किसी पूर्ण हस्ती की तलाश में देश के कोने-कोने में फिरते-फिरते और मशहूर तीर्थों, ऋषिकेश, उत्तराखंड, बद्रीनारायण और अन्य कई तीर्थों के भ्रमण करके रावलपिंडी पहुंचे। निराश हो रहे थे कि उन्हें कोई पूर्ण सन्त नहीं मिला। महंत जी सुबह इसी निराशा की हालत में नदी लेई के किनारे चश्मों पर, जो शहर रावलपिंडी से शुमाल की तरफ थे, बैठे हुए विचार कर रहे थे कि अब वशिष्ठ, याज्ञवल्क, गौतम, कणाद, व्यास जी जैसे ऋषियों को पैदा करने वाली पवित्र भूमि सत्पुरुषों से खाली हो चुकी है और कोई ऐसी हस्ती नज़र नहीं आती जो अज्ञानता के अन्धेरे को ज्ञान के प्रकाश से दूर कर सके। इतने में श्री महाराज जी स्वयं उसी समय उस जगह पहुंच गये और महंत जी की कल्पना निवृत्ति की खातिर उनसे प्रश्न करने लगे:- प्रेमी! क्या ऋषियों, महर्षियों को पैदा करने वाली यह पवित्र भूमि सत्पुरुषों से खाली हो चुकी है और अज्ञानता के अन्धकार को ज्ञान के प्रकाश से दूर करने वाला कोई नहीं रहा? अपने अन्दरूनी संशयों को प्रगट पाकर महंत जी ने निग़ाह ऊपर उठाई तो दुबले-पतले सफेद खद्दर के कपड़ों में एक हस्ती को सामने खड़ा पाया। अपने मन के प्रश्नों को हल करने के लिए पूछा:- महाराज जी! अज्ञानता का अन्धकार कैसे दूर हो

सकता है? आपने इस पर उत्तर दिया- प्रेमी! सत् स्वरूप परमात्मा को इस देह में प्रकाशवान कर लेने से अज्ञानता का अन्धकार दूर हो जाता है। यानी जब आत्म अनुभवता हो जाती है अविद्या, अज्ञानता स्वयं ही दूर हो जाते हैं। इस उत्तर को सुनकर महंत जी कृत-कृत हो गए और विश्वास हो गया कि भारत भूमि में अब भी अनमोल रत्न मौजूद हैं और जिस अमूल्य चीज़ की उन्हें तलाश थी वह इस जौहरी से मिल सकती है। जीवन के उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए उन्होंने आपसे प्रार्थना की-कि उनके यहां ठहरें। मगर सत्पुरुष ने उत्तर दिया- कि वह किसी के यहां नहीं ठहरते। इस पर महंत जी ने प्रार्थना की-कि उन्हें अपने साथ ले चलिये। इस पर आपने उत्तर दिया - कि वह किसी को साथ भी नहीं ले जाते। महंत जी ने फिर आपका पता पूछा तो आपने शुभ स्थान गंगोठियां का पता दे दिया और वहां से चले गये। श्री महाराज जी के चले जाने के बाद महंत जी वापिस अहमदाबाद आ गये। अब यह तड़प उठ रही थी कि कौन सा समय हो, जब चरणों में हाज़िर होकर सत्पुरुष से सत् मार्ग का अनमोल रत्न प्राप्त किया जावे। गर्मी का मौसम था। धूप खूब तेज थी। सफ़र काफी लम्बा था। लेकिन सब तकलीफ़ों को सहन करते हुए सत् शांति प्राप्ति की इच्छा को लिए हुए आप शुभ स्थान की तरफ रवाना हुए और मंज़िल पर पहुंच गये। काफी यात्रा आपको पैदल भी तय करनी पड़ी। जब महंत जी पहुंचे, उस समय सत्पुरूष जंगल में गये हुए थे। महंत जी ने पहुंच कर आपके बारे में पता किया। ऐसा पता लगने पर महंत जी गांव से बाहर ही एक जगह इंतज़ार में बैठ गये। सफ़र पैदल तय किया था। प्यास लगी हुई थी। मगर उन्होंने पानी तक भी किसी से नहीं मांगा। जब सत्पुरुष जंगल से वापिस तशरीफ़ लाये तो आपने महंत जी को धूप में बैठे इंतज़ार करते पाया। महंत जी की श्रद्धा और तड़प को देखकर आप बहुत प्रसन्न हुए और प्रेम से उन्हें साथ घर पर ले गये। आपने उन्हें जलपान कराया और भोजन तैयार होने पर भोजन खिलाया। इसके बाद खुद भोजन पाकर और फ़ारिग होकर महंत जी के सब संशय दूर किये और अध्यात्मवाद के गूढ़तम ज्ञान को भी महंत जी के सामने खोलकर रख दिया। महंत जी ने चंद दिन शुभ स्थान पर ठहर कर सत्पुरुष के सत् उपदेशों की अमृत वर्षा से तृप्ति हासिल की और सत् मार्ग के अनमोल रत्न को भी प्राप्त किया और आज्ञा पाकर आप अहमदाबाद वापिस आ गये। सत्पुरुष की कृपा की चर्चा महंत जी ने इस प्रकार की है:

''आखिर मेरे पूर्ण भाग्य से मुझ पर ईश्वर दया हो गई तो इन महापुरुष के दर्शन सहज स्वभाव ही उस वक्त हुए जबकि मैं फ़िकरमंद और घबराया हुआ था। एक दो घड़ी के सत्संग से मेरे सब संशय दूर हो गये।''

10. यज्ञ का प्रारंभ

जैसा कि पहले दिया जा चुका है समय का चक्र खूब उल्टा चल रहा था जिसके कारण देश की जनता का जीवन विकारमई बन गया था। देश में फूट पड़ रही थी। धर्म के नाम पर लूट-खसोट

का बाज़ार गर्म हो रहा था। कई सम्प्रदाय, पन्थ, मज़हब का झगड़ा खड़ा हो गया था। मतभेद बहुत हो गया था। स्वार्थ की खूब दौड़ लग रही थी। सत् धर्म लोप हो चुका था। अधर्म की तरफ जनता खूब राग़ब हो रही थी। इलाका मजकूर, जहां शुभ स्थान स्थित था, की जनता खूब तोहमात में फंसी हुई थी। खूब बलियां वग़ैरा दी जाती थीं। इस अंध विश्वास में सोई हुई जनता को सही रास्ते पर लाने के लिए आपने यज्ञ का सिलसिला जारी किया ताकि आस-पास के भूले-भटके जीव इसमें शामिल होकर सत्संग का लाभ उठावें, निष्काम सेवा की शिक्षा प्राप्त करें, सत् धर्म के मार्ग पर लगें और अज्ञानता के बढ़ते हुए अन्धकार से सत् उपदेशों के प्रकाश से प्रकाशवान होकर छुटकारा प्राप्त कर सकें। सत्पुरुष ने अपनी अमृत वाणी में यज्ञ की महानता वर्णन करने की कृपालुता फरमाई है और बतलाया है कि यज्ञ का स्वरूप क्या है और इसका लाभ क्या है? इस वाणी से चन्द शब्द झलक मात्र लिखे जा रहे हैं-

यज्ञ करम का ऊंच परतापा। कोट उपद्रव हरे सन्तापा॥
यज्ञ करम धरम परगासे। यज्ञ करम से शांत निवासे॥
महा करम ये ही गुनी मीता। साची जुगती में करे वरतीता॥
एह विध यज्ञ करम जो धारी। कर्ता भोगता सबका ताप निवारी॥
ऐसे यज्ञ में जो सेवा कीजे। तन मन धन सुफल कर लीजे॥
एक कौड़ी सच धाम पंहुचाए। ले सच शरधा जो सेव कमाये॥
ब्रह्म यज्ञ ये ही ब्रह्म सरुप। जो न परसे सहवे जम कूप॥
बिना कारन यज्ञशाला त्यागे। अनक पाप तिस जन को लागे॥
यज्ञशाला में जो नाहीं पधारे। जम की त्रास सहवे दण्ड भारे॥
सो मन मुखिया चंडाल सरूपा। यज्ञ सरूप नहीं परसे अनूपा॥
यज्ञ के करने हारे जोई। यज्ञ में रसना खावत जोई॥
यज्ञ की सेवा जिस विध जो धारी। परतख रूप पावें छुटकारी॥
सबको फल अमरत होये। यज्ञ करम जो प्रीत लखोये॥
निष्काम सेवा निरपख नित रसना। अद्‌वैत दृष्ट यज्ञ करम की रचना॥
समता भाव सब में दिखलाई। एको ब्रह्म सरब दरसाई॥
क्या करता क्या भोगता, सब ही प्रेम समायें॥
'मंगत' महिमा यज्ञ की, देव मुनी नित गायें॥

इस यज्ञ का खर्च आपने उस समय किसी पर नहीं डाला। बल्कि आप खुराक के मामूली खर्चों से बचाकर दीन दुःखी अनाथों की सेवा के बाद जो धन बच जाता उसे जमा करके आप यज्ञ में लगाने लगे। उस समय सामान भी दूर से लाना पड़ता था। इसे कस्बे गुजर खां से लाना पड़ता जो शुभ स्थान से बीस-बाईस मील के फासले पर था। शुरू-शुरू में आप खुद उस जगह जाकर सामान खरीदते और उसे खुद सिर पर उठाकर लाते रहे। अति सूक्ष्म खुराक के बावज़ूद इतना लम्बा

सफ़र पैदल तय करना, फिर सामान भी अपने सिर पर उठाकर लाना और इतने बड़े जनता के उद्धार का कार्य यज्ञ का आरम्भ करना कोई मामूली बात नहीं थी। सत्पुरुष कितना बड़ा निष्काम सेवा का आदर्श जनता के उद्धार की ख़ातिर पेश कर रहे थे, इसका अन्दाज़ा लगाना सहज नहीं।

11. बाहर विचरने का प्रोग्राम शुरू

अपनी माता जी के शरीर के अंत तक आप उनका ऋण चुकाने की ख़ातिर घर पर ही रहे, कभी बाहर नहीं विचरे, न ही कोई ऐसा प्रोग्राम बनाया और उनकी आज्ञा का पालन करते हुए जीवन निर्वाह की ख़ातिर हिकमत का कार्य आरम्भ किया था। माता जी के अन्तिम संस्कार हो चुकने के बाद उस भार के सिर से उतर जाने पर अब आपने हिकमत का कार्य बन्द कर दिया और जिस आनन्द-मई अवस्था को आप प्राप्त कर चुके थे उस रत्न को दूसरे भूले भटके जीवों में बांटने के लिए आपने बाहर जाने का प्रोग्राम बनाया। माह दिसम्बर, 1935 को आप अपने रिश्तेदार डा० वीर राजा राम व पंडित देवदत्त के पास कच्चा निसबत रोड, लाहौर तशरीफ़ ले गये। उन्होंने आपको अपने मकान की ऊपर वाली छत पर ठहराया। अब आपके अंदर से अमृतवाणी का प्रवाह उमड़ने लगा था। इस प्रवाह के वाणी रूपी ठंडे जल से डाक्टर साहब ने खुद ठंडक प्राप्त की और दूसरे तपे हुए जीवों तक उस ठंडक को पहुंचाने की ख़ातिर आपने वाणी और वचनों को एकत्र करके छपवा दिया और उस ट्रैक्ट (गुटका) का नाम ''पवित्र जीवन'' दिया गया। उसे छपवाकर आपने जिज्ञासुओं में बांटना शुरू कर दिया। यह कुदरती है कि जब दीपक जलता है तो परवाने भी उस पर न्यौछावर होने के लिए आ जाते हैं। सत्पुरुष के आने की सूचना पाकर जिज्ञासु भक्त भी दर्शन करने और तृप्ति की ख़ातिर हाज़िर होने लगे। उन्हीं दिनों में बाबू अमोलक राम जी भी लाहौर अपने सम्बंधी के घर में जाकर ठहरे। वहां सत्पुरुष के पास, स्थान का पता लगने पर, कच्चा निसबत रोड पर, जो सम्बंधी के मकान के नज़दीक ही था, गये और डाक्टर साहब के घर पर पहुंचकर सत्पुरुष के दर्शन किये। प्रभु की अति कृपा थी कि जीवन शुद्ध था। यद्यपि नौकरी ऐसी थी जहां काफी रिश्वत ली जा सकती थी। यानि डिस्ट्रिक्ट सेशन जज के स्टैनो थे। मगर उनके शुद्ध आचरण का कारण उनके पिताजी का उच्च जीवन था। फिर भी परमार्थ की सूझ नहीं थी और राधा स्वामी मत में शामिल थे। यानि गुरु धारण किया हुआ था। सिर्फ इतना ही पता था कि असलियत किसी सत्पुरुष से ही मिलती है। सत्पुरुष के चरणों में प्रणाम करके बैठ गये। सत्पुरुष ने अपनी अनुभवी वाणी उच्चारण फरमाई। वाणी का प्रवाह बहने लगा। मगर इसकी कुछ समझ नहीं आई। दूसरे शब्दों में इतनी अज्ञानता थी कि सत्पुरुष की अमृत वाणी को समझ न सके, यानि परमार्थ की कतई कोई सूझ नहीं थी, यद्यपि कुछ प्रेम इस तरफ ज़रूर था। कुछ देर चरणों में बैठने के बाद जब वापस होने लगे तो सेवा में प्रार्थना की-कि महाराज! आपने रावलपिंडी की तरफ ही तशरीफ़ ले जानी है,

तो कृपा करके रास्ते में उतरकर दर्शन देने की दया करें और दास के घर को पवित्र करें। आपने वायदा तो नहीं किया मगर इतना फरमायाः- समय आने पर देखा जावेगा। पंडित देवदत्त जी बाबू जी के घर के पास ही कस्बा काला गुजरां में शादी शुदा थे। जब बाबू जी महाराज जी के चरणों से जुदा होकर नीचे आये तो पंडित जी से प्रार्थना की-कि सत्पुरुष की सेवा में प्रार्थना करके उन्हें ज़रूर ही काला गुजरां भेजें। जब सत्पुरुष का लाहौर से जाने का समय आया तो पंडित देवदत्त जी ने उनकी सेवा में काला गुजरां तशरीफ़ ले जाने की प्रार्थना की और कहाः- उसकी सास को भी देखते जावें, जिसकी सेहत कुछ खराब थी। आपने प्रार्थना स्वीकार कर ली और बाबू जी को आपके आने की सूचना दे दी। जिस गाड़ी में आपके आने की सूचना थी बाबू जी स्टेशन पर पहुंच कर उस गाड़ी से श्री महाराज जी को अपने घर पर ले आये और अपने मकान की ऊपर वाली मंज़िल में आपको ठहराया। कस्बा में एक मित्र भक्त देवीदयाल फ़कीर दोस्त थे। कई संतों, महात्माओं की वाणियां उन्हें खूब याद थीं। अन्य सत्संगियों तथा भक्त जी को भी सत्पुरुष के दर्शनों के लिए बुलाया। भक्त जी आए और कई संतों की वाणियां जैसे कि कबीर साहब, दादू दयाल, फरीद, बुल्ले शाह वग़ैरा की उन्होंने उच्चारण कीं। जब वह खत्म कर चुके तो सत्पुरुष ने अमृतवाणी उच्चारण करनी शुरू कर दी। जब आपने उसे खत्म किया, भक्त देवी दयाल जी ने हाथ जोड़कर अर्ज़ कीः- महाराज जी! जो वाणी आप उच्चारण फरमा रहे हैं यह दास की समझ से परे की है। जब भक्त जी सत्पुरुष के चरणों से उठकर वापस रवाना हुए तो बाबूजी उन्हें छोड़ने के लिए साथ गये और जब दोनों दूसरे चौबारे में पहुंचे तो भक्त जी ने कहाः- बाबू जी! तुम बड़े भाग्यवान हो, ऐसे उच्च कोटि के महापुरुष को घर पर लाये हो तो इन्हें पकड़ लो। श्री महाराज जी से इस दौरान ही प्रार्थना की-कि दास को सत् मार्ग पर लगाने की कृपा फरमायें। आपने दयालुता करते हुए प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और चरणों में जगह दे दी।

उस समय आपने फरमाया था-कि दो साल के बाद आपकी ड्यूटी जनता की सेवा में लगने वाली है। कुछ दिन बाबूजी के गृह में निवास करने के पश्चात् आप शुभ स्थान गंगोठियां के लिए रवाना हो गए। बाबू जी उन्हें गाड़ी में सवार कर आये।

आप शुभ स्थान पर पहुंच कर अपने नियम के अनुसार पीर ख़्वाजा जंगल और तरेल नदी के किनारे समाधिस्त रहने लगे । दिन का बहुत सा हिस्सा आप पीर ख़्वाजा जंगल में आनन्दित अवस्था में गुज़ारते और रात के पहले पहर ही तरेल नदी के किनारे जा बिराजते।

12. कश्मीर की तरफ प्रस्थान

दो साल शुभ स्थान पर ही आपने गुज़ारने के बाद प्रभु प्रेरणा से माह मार्च, 1938 को बाकायदा विचरने का प्रोग्राम बनाया। आपका विचार पुंछ की तरफ जाकर किसी एकांत जंगल में निवास व तप करने का था। इस उद्देश्य के लिए आप शुभ स्थान से रावलपिंडी तशरीफ़ ले गये और वहां से कोहाला जाने वाली बस में सवार हो गये। क्योंकि सबसे पहले बस पर सवार हुए थे।

इसलिए आप अगली सीट पर जा बैठे। बस में जो भी सवारी आती इन्हें कह कर पीछे-पीछे कर देती। एक साहब लाला करम चन्द जी भी इस बस में सवार थे और यह सब खेल देख रहे थे। उनसे न रहा गया। उन्हें सवारियों का यह व्यवहार पसन्द न आया कि जो सवारी आती है उन्हें कहकर पीछे-पीछे कर देती है। वह लोगों के इस व्यवहार पर बोल उठे- कि जो आता है आपको कहकर पीछे कर देता है और खुद उस सीट पर बैठ जाता है। क्या उन्होंने किराया नहीं दिया हुआ है? इस पर आपने बड़े प्रेम से फरमाया:-

''प्रेमी! आपको इनसे झगड़ने की कोई ज़रूरत नहीं। इन्होंने तो लारी में ही बैठना है। आगे पीछे की कोई बात नहीं।'' प्रेमी करम चन्द पर आपकी इस निर्मानता और सहनशीलता का बड़ा असर हुआ और उन्होंने आपको अपने साथ वाली सीट पर बिठा लिया। बस रवाना हो गई। कुछ देर तो प्रेमी खामोश रहा, लेकिन बाद में उन्होंने बातचीत प्रारंभ कर दी और पूछा:- आप कौन हैं और कहां से तशरीफ़ ला रहे हैं?

सत्पुरुष ने उत्तर दिया:- प्रेमी! यह फ़कीर हैं और सुना है हिल सुरंग तहसील बाग रियासत पुंछ में एक घना जंगल है जहां तप किया जा सकता है और यह भी सुना है वहां कुछ ब्राह्मणों के भी घर हैं, और कहा:- ''चूंकि प्रेमी जी! आप उस तरफ के रहने वाले हैं इसलिए उन आदमियों से मिला दीजिये जो हिल सुरंग के रहने वाले हों, जिनका कारोबार शुद्ध हो और जो दिन में एक दफा सूक्ष्म आहार इन्हें पहुंचा सकें।'' बस इस समय चलती जा रही थी और थोड़ी देर में कोहाला पहुंच गई। यह छोटा सा कस्बा दरियाये जेहलम के किनारे ज़िला रावलपिंडी में था। इसके साथ ही ज़रा ऊपर ज़िला हज़ारा की हद मिलती थी और दरिया के पार पुल से उतरते ही कश्मीर और पुंछ रियासत की हदें मिलती थी। पुल के पार ही सामने पहाड़ की ऊँचाई पर हिल सुरंग गांव था जो रियासत पुंछ के क्षेत्र में था। जब आप बस से उतरे तो प्रेमी करमचन्द जी, जो इस इलाके में राय साहब के नाम से पुकारे जाते थे और रावलपिंडी में महकमा डाकखाने में नौकरी करते थे। श्री महाराज जी को बख्शी देवीचन्द की दुकान पर ले गए क्योंकि बख्शी जी हिल सुरंग के रहने वाले थे। बख्शी जी ने एक चादर बिछा दी और आपसे इस पर बैठने की प्रार्थना की।

महाराज जी ने उस समय फरमाया:- ''प्रेमी! आसन तो आप लोगों के लिए हैं। फ़कीरों के लिए तो भूमि ही आसन है। इसलिए यह भूमि पर ही बैठेंगे।''

यह शब्द सुनकर बख्शी देवी चंद जी ने प्रेमी करमचंद जी से पूछा:- यह कौन हैं? तो प्रेमी ने उत्तर दिया:- यह एक ब्राह्मण खानदान से हैं और साधु स्वभाव में हैं। यह शब्द सुनकर बख्शी देवी चंद के भाई भीमसेन ने पूछा:- ''क्या यह मंदिर में कोई पूजा पाठ वग़ैरा कर सकते हैं''? श्री महाराज जी ने सुनते ही फ़ौरन यह उत्तर दिया:- ''यह टल (घंटा) खड़काने वाले ब्राह्मणों में से नहीं हैं, यह तो फ़कीर हैं।''

13. जलमादा की तरफ प्रस्थान

जलमादा गांव कोहाला से मील डेढ़ मील ऊपर स्थित है। उपरोक्त वार्तालाप के बाद आप प्रेमी करम चंद के साथ ही वहां तशरीफ़ ले गये। वहां पहुंचने पर आपको एक अलग कमरे में ठहराया गया और रात को नौ बजे एक प्रेमी एक चपाती और थोड़ी सी सब्जी ले आया और आपसे भोजन पाने की प्रार्थना की। आपने अपना भोजन मेज पर रखने की आज्ञा दे दी और वह इसे मेज पर रखकर चला गया और दूसरे कमरे में जाकर सो गया। श्री महाराज जी करीबन आधी रात के समय उठकर बाहर तशरीफ़ ले गये। यह जगह पहाड़ी थी। गांव से नीचे कुछ फासले पर चश्में थे और वहां खेती वाली जमीनें थीं। उनसे और नीचे जंगल था। आप उस तरफ तशरीफ़ ले गये और जंगल में एक जगह प्रभु प्रेम का आनन्द लेने लगे। दिन निकालने पर आप वहां से उठे। शौच इत्यादि के पश्चात् आप ऊपर चश्में पर स्नान करके गांव वापस तशरीफ़ ले आये और ठहरने वाले कमरे में जाकर बैठ गये। जब प्रेमी कमरे में दर्शनों के लिये आये तो भोजन को पड़ा हुआ देखकर हैरान हुए कि श्री महाराज जी ने इसे छुआ तक नहीं और इसका उन पर गहरा असर पड़ा।

दूसरी सुबह जब प्रेमी करम चंद जी रिश्तेदारों सहित महाराज के दर्शनों के लिए आये तो भोजन ज्यूं का त्यूं पड़ा देखकर और सत्पुरुष की शारीरिक अवस्था, जो कि दुबली-पतली थी, को देखकर कईयों को शक हुआ कि आप मरीज़ हैं इसलिये खाना नहीं खाया, और प्रेमी करम चंद से कहा कि उसने आपको घर में लाकर बड़ी ग़लती की है। लेकिन प्रेमी करम चंद ने उन्हें समझाया कि आप एक उच्च कोटि के महात्मा हैं और ऐसे पूर्ण महात्मा ही पवन आहारी हुआ करते हैं। शारीरिक निर्वाह के लिए वह किसी समय मामूली सात्विक भोजन ग्रहण कर लेते हैं। श्री महाराज जी को प्रणाम करके यह प्रेमी वापस चले गये थे और वापसी पर उपरोक्त वार्तालाप हुआ।

रात को नौ बजे फिर सब प्रेमी उसी कमरे में आये। चरणों में प्रणाम करके बैठ गये और सत्पुरुष से अमृत वर्षा की प्रार्थना की।

14. आहार और व्यौहार की शुद्धता पर ज़ोर

आपने उस समय जो अमृत वर्षा की थी उसका निचोड़ इस तरह था - ''जीव शरीर की कैद में आकर भोग पदार्थ एकत्र करने लग जाता है। भोग पदार्थ एकत्र करके भोगता है। मगर फिर भी तृप्ति नहीं होती, लालसा बढ़ जाती है। कई प्रकार के भोगों को एकत्र करने में घिर जाता है और दु:खी होता है। अगर कोई वस्तु मर्ज़ी के मुताबिक प्राप्त नहीं होती तो बड़ा दु:खी होता है। जब तक यह वासना के फंदे से नहीं छूटता शांति नहीं आती। वासना के फंदे से छूटने के लिये इसे इस देह की जीवन शक्ति की खोज करनी होगी और इस उद्देश्य के लिए सबसे पहले आहार, व्यवहार को शुद्ध करना होगा। अशुद्ध आहार और मांस, मदिरा इत्यादि के त्याग से बुद्धि बलवान होती है और सही खोज में लग सकती है। शुद्ध आहार के लिए शुद्ध व्यवहार का होना भी ज़रूरी है। शुद्ध व्यवहार से कमाये हुए धन से आहार भी पवित्र होता है। अशुद्ध व्यवहार से कमाये हुए धन से

आहार भी अशुद्ध होता है। जब आहार, व्यवहार शुद्ध होंगे बुद्धि बलवान होगी और प्रभु सिमरण में लगेगी, जिससे वासना का अभाव होगा और जीवन शक्ति की अनुभवता होगी और तृप्ति प्राप्त होगी।'' इस सत्संग का प्रेमियों पर बड़ा असर हुआ। प्रेमी रात को देर तक सेवा में बैठे रहे और अपनी शंकायें निवारण करते रहे। आख़िर श्री महाराज ने सबको आराम करने के लिए कहा और सब चरणों में नमस्कार करके अपने-अपने घरों को चले गये। प्रेमियों के चले जाने के बाद आप आधी रात को उठकर नीचे जंगल में चले गये और प्रभु प्रेम में मस्त बैठ गये। दिन निकलने पर आप नौ बजे के करीब चश्में पर स्नान करके वापस कमरे में पधारे। उस समय प्रेमी करम चन्द ने भोजन के लिए प्रार्थना की। आपने फरमाया:-

''यह तो आपकी आज़माईश[1] कर रहे थे कि आपका अन्न शुद्ध कमाई का है या अशुद्ध कमाई का। अब सिर्फ एक फुलका और थोड़ा सा साग तैयार करवा लाओ। यह ग्रहण कर लिया जावेगा''। भोजन तैयार करके लाया गया और आपने ग्रहण कर लिया।

तीसरे दिन दोपहर को प्रेमी करम चंद जी का अन्न ग्रहण किया और प्रेमी को साथ लेकर हिल सुरंग तशरीफ़ ले गये। शाम को वहां पहुंचे। मंदिर में जाकर आराम फरमाया। थोड़ी देर में पुजारी ने घंटे बजाये और आरती आरंभ की। ठीक उसी समय दो मुसाफ़िर आ गये और पंडित जी से ठहरने की आज्ञा मांगी।

पंडित जी ने झुंझलाकर कहा:- ''नहीं, ठहरने की आज्ञा नहीं है। ये भगवान का घर है, मुसाफ़िर खाना नहीं है जहां ठहरने दिया जावे''। मुसाफ़िर निराश होकर चले गए। उनके जाने के बाद आपने पुजारी से पूछा:- ''पंडित जी! आप जड़ की पूजा करते हैं या चेतन की''? पंडित जी ने जवाब दिया:- ''चेतन की।'' फिर आपने पूछा:- ''पंडित जी जिस मूर्ति के आगे आप खड़े हैं यह जड़ है न?'' पंडित जी:- ''हां महाराज''! श्री महाराज जी :- ''तो फिर वह जो अभी यहां आए थे वह तो साक्षात् चेतन थे, तुमने उन्हें निराश कर दिया। जड़ की तो पूजा करते हो, चेतन को निराश करते हो। जो चीज़ प्रत्यक्ष प्रमाण है उसको तो मानते नहीं और जो चीज़ देखी नहीं उसकी कद्र करते हो, यह कहां की बुद्धिमानी है''?

पंडित जी पर आपकी साधारण व खरी बातचीत का बड़ा असर हुआ और उसके जीवन में तबदीली पैदा कर दी।

दूसरी सुबह आप हिल सुरंग से वापस जलमादा लौट आये और वापसी पर फरमाया:- आप कश्मीर जायेंगे। यह शब्द सुनकर सब प्रेमियों ने अर्ज़ की :- आप यहां ठहरने की कृपा करें। आबादी से नीचे फासले पर जिस जगह को आप पसन्द फरमायेंगे कुटिया बनवा दी जावेगी। नीचे जलमादा निवासी प्रेमी सेवा राम और प्रेमी करम चंद वग़ैरा की जमीनें थीं और वहां कुदरती चश्में भी थे। यह इलाका पहाड़ी था। और यह भी अर्ज़ की-कि आपके फ़रमान के मुताबिक सब चीज़ तैयार कर दी जावेगी और हर आज्ञा का पालन किया जावेगा।

---

1. परीक्षा

इस पर आपने फरमाया:- ''प्रेमियों! फ़कीरों का ठहराना आसान नहीं। आपको कई प्रकार की तकलीफ़ें होंगी। तप के बाद यज्ञ भी होगा और काफी जनता इकट्ठी होगी। यह सारा बोझ उठाना पड़ेगा।''

इस पर फिर सबने अर्ज़ की-कि हमें कोई तकलीफ़ नहीं होगी। आपकी दया दृष्टि चाहिए। इस पर आपने उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और खामोश हो गए।

जलमादा निवासी प्रेमियों के रिश्तेदार चौधरी रामदित्ता मल ऊपर नखेत्र पर्वत गांव में रहते थे। वह अपने पास फ़कीरों को ठहराया करते थे और उन्हें फ़कीरों की पहचान भी थी। इसलिए उन्होंने एक आदमी चौधरी जी को बुलाने के लिए भेज दिया ताकि वह आकर सत्पुरुष की परख करें कि कैसे फ़कीर हैं?

इससे अगले दिन संक्रांत थी। उस गांव के सब लोग गुरुद्वारा में, जो उन्होंने वहां बनवाया हुआ था, जाया करते थे। संक्रांत के कारण उस दिन ख़ास कीर्तन समागम था। इसलिए उन्होंने श्री महाराज जी को भी समागम में शामिल होने की प्रार्थना की-कि गुरुद्वारा में पधारने की कृपा करें। आपने प्रेमियों की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और गुरुद्वारा गए। जब आप गुरुद्वारा में दाखिल हुए तो रिवाज़ के मुताबिक आपने दंडवत नहीं की। सिर्फ नमस्कार करके बैठ गये। जब कीर्तन समाप्त हुआ आपके दंडवत न करने पर कुछ सज्जनों ने आपत्ति की। श्री महाराज जी मुस्कराए और फरमाया:- ''इनके मन में गुरु ग्रन्थ साहब की इज़्ज़त है। चूंकि यह फ़कीर हैं इसलिए यह मन से पूजा करते हैं। आप लोग गृहस्थी होने की वजह से माथा टेकते हैं। आपने जो कुछ यहां से प्राप्त किया है इसका वर्णन करें।''

आपके प्रश्न का कोई सज्जन जवाब न दे सका और सब खामोश हो गए। इतने में चौधरी रामदित्ता मल जी नखेत्र से पहुंच गये। गांव वाले आपका कोई साधुओं वाला भेष भगवे वस्त्र वग़ैरा न देखकर आपके सादा सफेद वस्त्रों की वजह से शक में थे। चौधरी साहब जब पहुंचे तो श्री महाराज जी के चरणों में हाज़िर हो गये और संक्षिप्त वार्तालाप से आपकी उच्च हस्ती को पहचान लिया और अर्ज़ की-कि प्रभु की अति दयालुता है कि आपके दर्शन हो गये हैं। इसके बाद चौधरी जी ने सेवाराम इत्यादि रिश्तेदारों को समझाया कि उनकी बड़ी खुशनसीबी है कि उच्च कोटि के महात्मा इनके पास आ गये हैं। अब इन्हें जाने न दीजिए। ऐसी हस्तियां बड़े उत्तम भाग्य हों तो मिला करती हैं और जो जगह वह पसंद करें उन्हें दे देवें और तप के लिए जैसे जगह फरमावें बनवा देवें।

इस पर जलमादा निवासी प्रेमियों ने सेवा में हाज़िर होकर प्रार्थना की-कि महाराज जी! तप के लिए आप जो स्थान पसन्द करें बतला देवें। वहां कुटिया तैयार कर दी जावेगी। आप चलकर जगह देख लेवें और वह जगह निश्चित कर देवें जहां कुटिया बनवानी हो। इस पर आप प्रेमियों के

साथ चल पड़े और गांव से नीचे ज़मीन में जहां किसी समय बगीचा हुआ करता था, इसलिए उस जगह को बगीचा के नाम से पुकारा जाता था, वहां पहुंच गये और दो घंटे तक खामोश खड़े रहे। इस तरह आपको खामोश खड़े देख कर चौधरी रामदित्ता मल और लाला सेवा राम जी ने प्रार्थना की-कि महाराज! आप आज्ञा देवें तो इस जगह कुटिया बनवा दी जावे। यह स्थान आज से हमने धर्मार्थ दे दिया। थोड़ी देर और खामोश रहने के बाद आपने फरमाया:- ''यह स्थान पहले भी ऋषि-मुनियों की तपोभूमि रह चुका है और इस जगह अवश्य चश्मा होना चाहिए''। प्रेमियों की प्रार्थना पर आपने इस स्थान पर कुटिया बनवाने की आज्ञा दे दी और जगह भी बतला दी जहां कुटिया बनवानी थी। प्रेमियों ने फौरन कुटिया बनवानी शुरू कर दी। जब कुटिया तैयार हो चुकी तो कुदरतन पिछली तरफ एक बड़ी पत्थर की चट्टान के नीचे से सुन्दर ठंडे जल का चश्मा जारी हो गया। प्रभु की इस लीला को देखकर सबको आश्चर्य हुआ। चश्मा जारी हो जाने से उस जगह की शोभा कई गुना हो गई और वह बड़ा सुन्दर रमणीक स्थान बन गया। यह स्थान वैसे भी बहुत सुन्दर था। इस जगह से नीचे करीबन कुछ मील गहराई में दरियाये झेलम बह रहा था। ज़रा आगे जाकर नीचे कोहाला कस्बा से भी नीचे बहता हुआ आगे चला जाता था। दरिया के सामने से आती हुई हवा इस जगह से ऊपर पहुंचती थी और मौसम बहुत सुन्दर था।

15. कुटिया में तप के लिए प्रवेश

23 मार्च, 1938 को सुबह तीन बजे आपने घोर तप के लिए कुटिया में प्रवेश किया और हिदायत कर दी कि कोई भी प्रेमी उनके एकान्त निवास व तप में बाधा न डाले। सिर्फ दिन के बारह बजे एक प्याली चाय तैयार करवाकर दरवाज़े में, जो उस वक्त खोल दिया जावेगा, रख जावे और वापस चला जावे। नित्य प्रति उस वक्त आप उठकर चाय पी लेते और फिर दरवाज़ा बन्द कर लेते। आपने इस तरह पैंतीस दिन घोर तप किया। तप की समाप्ति पर आपने रात को दो बजे प्रेमी सेवा राम को आवाज़ दी। वह अपने मकान की छत पर सोया हुआ था। यह मकान ऊपर फासले पर था। तब भी महाराज जी की आवाज़ प्रेमी तक पहुँच गई और वह उठकर कुटिया की तरफ चला आया। जब वह कुटिया के निकट पहुंचा तो देखा कि कुटिया का दरवाज़ा कुछ खुला हुआ है। जब प्रेमी वहां पहुंचा तो आपने फरमाया:- ''आओ प्रेमी, बैठो। आपको बहुत तकलीफ़ दी है।''

प्रेमी सेवा राम के अनुसार उस वक्त श्री महाराज जी के चेहरे पर इतना जलाल[1] था कि उस तरफ देखना मुश्किल था। उस समय के प्रकाश या जलाल का ब्यान करना सम्भव ही नहीं था। थोड़ी देर के बाद और प्रेमी आ गये और सब उस दृश्य को देखकर हैरान हुए और सबने देखा कि कितना तेजमई और आनन्दमई वातावरण हो गया था। सब प्रेमियों को श्री महाराज जी ने आशीर्वाद दिया और बैठने के लिए फरमाया। बैठ जाने के बाद सबने प्रार्थना की:- महाराज जी! आपने इस

---

1. तेज़

समय क्यों याद किया है? इस पर महाराज जी ने फरमाया:- ''जिस मकसद के लिए इधर जाना हुआ था और इस कुटिया में निवास किया था, वह हल हो गया है। इसके पूरा हो जाने पर आपको तकलीफ़ दी है।''

ध्यान देने योग्य बात यह है, जैसा पहले ब्यान हो चुका है, कि सत्पुरुष आत्म अनुभवता प्राप्त कर चुके थे, अब और क्या हासिल करना था जिसे प्राप्त करने के लिए आपने इतना कठिन तप किया? सत्पुरुष ने हर विषय पर रोशनी डालने की कृपा की हुई है। आपने विशेष हालतों के बारे में इस तरह रोशनी डाली हुई है।

आत्म सिद्धि विचार -

1. संसार से वैराग्य
2. आत्म बिरह
3. आत्म अभ्यास
4. आत्म अनुभवता
5. आत्म स्थिति
6. आत्म लीनताई

आख़िरी अवस्था आत्म लीनताई के बारे में आपने फरमाया हुआ है कि यह पूर्ण अवस्था है यानि गुणातीत स्थिति में बुद्धि निश्चल होकर परम स्वरूप में लीन हो जाती है।

प्रेमी सेवा राम ने सत्पुरुष के वचन सुनकर अर्ज़ की:- ''महाराज जी! हमें कोई तकलीफ़ नहीं हुई है। बल्कि हम बड़े खुश-किस्मत हैं जो आप जैसे महान हस्ती के दर्शन कर पाये हैं। महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! सुबह होने पर यहां से चले जाना है। अच्छा बताओ, आपने जो इतना कष्ट किया है उसके बदले में क्या दिया जाये? यह तो एक फ़कीर हैं, इनके पास रुपया पैसा तो है नहीं और न ही और सामान है। अच्छा प्रेमी, जाओ प्रसाद बनवा लाओ।''

प्रेमी सेवा राम आज्ञा पाकर प्रसाद लेने चला गया और जब प्रसाद बनवाकर लाया गया तो सुबह होने को थी। श्री महाराज जी ने अपने पवित्र कर कमलों से प्रेमियों को प्रसाद दिया। सुबह हो जाने पर जाने की आज्ञा चाही और फरमाया :-

''प्रेमी जी! चौदह साल से जिस चीज़ की तलाश थी वह इस जगह मिल गई है। यह वह स्थान है जहां किसी समय सनकादिक ऋषि ने तपस्या की थी और दरियाये जेहलम उस समय यहां पास ही बहता था। अब यह एक मील से ज़्यादा नीचे चला गया है। भविष्य में भी यह स्थान पवित्र रहेगा और तुम लोगों को प्रभु आनन्द देंगे।''

श्री महाराज जी के मनोहर वचन सुनकर प्रेमी सेवा राम ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! अगर ऐसी बात है तो दास आपकी सेवा में एक अर्ज़ करता है जिसे आप मंजूर करने की कृपा करें।''

श्री महाराज जी:- प्रेमी जी! ''हम आपसे बाहर नहीं जा सकते हैं। कहो, क्या कहना चाहते हो''?

इन वचनों को सुनकर प्रेमी सेवा राम ने अर्ज़ की–कि संगत का और दास का यह विचार है कि जिस जगह आपने इतना कठिन तप किया है, और यह जगह आगे भी ऋषियों की तपोभूमि रह चुकी है, अगर आज्ञा हो तो इस जगह यज्ञ किया जावे ताकि आस–पास की जनता भी आपके दर्शनों से लाभ हासिल कर सके।

महाराज जी:– प्रेमी! ''बहुत तकलीफ़ और खर्च होगा।''

प्रेमी सेवा राम:– ''महाराज जी! आपने ही सब कुछ करना है। हम सेवक क्या कर सकते हैं''?

श्री महाराज जी:– ''प्रेमियों! जैसी आपकी इच्छा।''

16. जलमादा में यज्ञ

सत्पुरुष की आज्ञा मिल जाने पर प्रेमियों ने यज्ञ के प्रबंध की तैयारियाँ शुरू कर दीं। 4 जेठ को यज्ञ की तारीख निश्चित कर दी गई और आस–पास के गांव व कस्बों में यज्ञ में शामिल होने के लिए पैग़ाम भेजने शुरू कर दिए। कोहाला में भी सूचना दे दी गई। यज्ञ के दिन कोहाला निवासियों के अलावा दो व्यक्ति बनारसी दास और ठाकुर दीवान सिंह भी आये। ये वे भाग्यशाली व्यक्ति थे जिन्हें आगे चलकर अधिक सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दोनों प्रेमी जब जलमादा पहुंचे तो चरणों में प्रणाम करके बैठ गए।

श्री महाराज जी ने पूछा:– ''प्रेमी! किधर से आए हैं''?

बनारसी दास:– महात्मा जी! ''कोई पता नहीं कहां से आए हैं''?

यह शब्द सुनकर श्री महाराज जी कुछ मुस्कराये और आंखें बंद कर लीं। आधे घंटे तक समाधि अवस्था में लीन रहने के बाद आपने फरमाया:– प्रेमियों! जाओ, समय अधिक हो गया है। आज्ञा पाकर दोनों चले गए। यज्ञ के दिन इन दोनों ने बड़े प्रेम और उत्साह से सेवा के कार्यों में हाथ बटाया। दूर–दूर से हर मज़हब के व्यक्ति यज्ञ में शामिल होने के लिए आने लगे और अपने–अपने विचार के मुताबक किसी ने अखंड पाठ शुरू कर दिया, कोई कीर्तन करने लगे, कोई हवन करने लगे। यहां तक कि मुसलमान भी कुरान शरीफ़ की आयतें पढ़ने लगे। समाप्ति पर अखंड पाठ करने वालों ने अखंड पाठ में शामिल होकर अरदासा सोधने के लिए सत्पुरुष से प्रार्थना की। हवन करने वालों ने हवन में अंतिम आहुति डालने के लिए कहा। कीर्तन करने वालों ने कीर्तन में शामिल होने की प्रार्थना की। इन सबकी प्रार्थनायें सुनकर आपने फरमाया :–

''प्रेमियों! यह अन्तिम आहुति दे चुके हैं। अरदासा सोध चुके हैं और कीर्तन कर चुके हैं। आप सब कृपा करके अपना–अपना काम करें और फ़ारिग होकर सब एक जगह आकर बैठ जावें ताकि कुछ सत् विचार सबके सामने रखे जावें।'' सब जनता एक जगह आकर बैठ गई। उस समय

तीन बजे थे। आपने सत् उपदेश द्वारा सबको कृतार्थ किया। आपका शरीर तो दुर्बल था मगर आवाज़ शेर की गर्ज़ की तरह बुलन्द थी। आपने जीवन के रहस्य पर रोशनी डाली। सत् उपदेश की समाप्ति पर आपने जनता को आशीर्वाद दिया और प्रसाद बांटने की आज्ञा दी। मगर प्रसाद बांटने से पहले जोर की वर्षा शुरू हो गई। संगत दूर-दूर से आई हुई थी। कुटिया के इर्द-गिर्द सब खड़े हो गये और सेवा में अर्ज़ की-कि क्या प्रबन्ध किया जावे? आपने फरमाया:- ''यह भी परमात्मा की कृपा है।'' थोड़ी देर बाद बारिश थम गई। इसके बाद काफी देर तक यज्ञ का कार्य चलता रहा। आई हुई संगत ने बड़े प्रेम से प्रसाद पाया और .फ़ारिग होकर सब चले गए। प्रसाद तकसीम करने की सेवा में लगे हुए प्रेमियों को काफी काम करना पड़ा। उन्हें काफी देर हो गई और दूर से आये हुए कई प्रेमियों को कुटिया में ही ठहरना पड़ा। रात के बारह बजे तक प्रेमी शंकायें निवारण करते रहे। एक बजे आपने सबको आराम करने की आज्ञा दी। जब प्रेमी लेट गए तो आप लोटा लेकर जंगल को चल दिए। सारे दिन की व्यस्तता और फिर रात के एक बजे तक प्रेमियों से वार्तालाप के पश्चात् भी आपने प्रोग्राम को नहीं छोड़ा और जंगल में जाकर लवलीन होकर आत्म आनन्द लेने लगे।

आप जंगल से आठ बजे वापस तशरीफ़ लाये और जो प्रेमी वहां रह गए थे उन्हें भी वापिस जाने के लिए कहा। इसके बाद आपने दस दिन और जलमादा में निवास किया और प्रेमियों को सत् विचारों से लाभ पहुंचाया। .फ़कीर की मौज़ूदगी की खबर इर्द-गिर्द फैल गई थी। लोग शंकायें निवारण करने के लिए आते रहे और तसल्ली पाकर जाते रहे।

17. निखेत्र गांव में चरण कँवल

जब फूल खिलता है खुशबू स्वयं फैल जाती है। जब सूर्य निकलता है रोशनी स्वयं फैल जाती है। इस तरह जहां कहीं कोई सत्पुरुष होता है उसकी मौज़ूदगी की खबर फैलना भी कुदरती है। इससे पहले सत्पुरुष छुपे हुए थे, मगर अब प्रकट हो चुके थे। इसके अतिरिक्त चौधरी रामदित्ता मल ने तो आपके दर्शन करके आपकी उच्च हस्ती को पहचान भी लिया था। इसलिए आपने सेवा में हाज़िर होकर निखेत्र पर्वत पर चरण कँवल डालकर अपने गृह को पवित्र करने की प्रार्थना की। यह गांव जलमादा से सोलह-सत्रह मील के फासले पर ऊपर पहाड़ में था। श्री महाराज जी ने प्रार्थना स्वीकार कर ली। निश्चित दिन चौधरी जी आपको साथ ले जाने के लिए एक खच्चर ले आए, जिस पर सवार होकर आपको साथ ले जाने का विचार था। उन्होंने श्री महाराज जी से इस पर सवार होने की प्रार्थना की, मगर आपने इंकार कर दिया और फरमाया :- इसके अन्दर भी जीव है और पैदल रवाना हो पड़े। प्रेमी जलमादा निवासी दो मील तक आपको छोड़ने के लिए साथ गये। मगर सत्पुरुष इतनी तेज रफ़्तार से चल रहे थे कि वह दौड़-दौड़ कर साथ पहुंचते थे। दो मील चल

चुकने के बाद आपने फरमायाः- प्रेमियों! आप सब काफी दूर निकल आये हो, अब वापिस जाओ। चंद दिन के संग ने इन प्रेमियों के अंदर ऐसा प्रेम का जज़्बा पैदा कर दिया था कि जब वह जुदा होने लगे तो उनकी आंखों से आंसू बहने लगे। उन्हें ऐसा महसूस हो रहा था कि कोई प्रिय वस्तु उनसे जुदा हो रही है। परम दयालु महापुरुष ने प्रेमियों को धीरज देते हुए फरमायाः- ''प्रेमियों! हम दूर नहीं हैं। हमको हर समय हृदय में देखो और आहिस्ता-आहिस्ता संसारी बंधनों की कड़ियां तोड़ो।'' इस निराली शिक्षा को सुनकर सब प्रेमियों ने चरणों में प्रणाम किया और वापिस लौट आए और आप सफ़र करते हुए निखेत्र गाँव पहुंच गये।

ऊंचे पहाड़ों से लगा हुआ निखेत्र गांव कुदरत का अजब दृश्य पेश कर रहा था। गांव के इर्द-गिर्द आबादी मुसलमानों की थी। यह फ़कीरों पर फ़िदा होने वाले लोग थे। जब आपके आने की सूचना मिली तो यह लोग बड़ी श्रद्धा से आपके दर्शन के लिए हाज़िर हुए। यह लोग आमतौर पर सेवा में हाज़िर होकर यह दुआ करने के लिए अर्ज़ करते कि खुदा इन्हें ईमान बख़्शें।

कई किस्म के आडंबर, शंकाएं इन लोगों का भी शिकार कर रही थीं। आपके सत् विचारों व सत् उपदेशों ने इन्हें दूर कर दिया। आपने सात दिन निखेत्र गांव में निवास किया और पटन निवासी प्रेमियों की प्रार्थना पर आप उस गांव में, जो वहां से थोड़ी दूर था, तशरीफ़ ले गए और दो दिन वहां ठहर कर उन्हें सत्संग की अमृत वर्षा से लाभान्वित करके जलमादा वापिस तशरीफ़ ले आये। जलमादा के प्रेमियों को आपकी वापसी की सूचना मिल चुकी थी। प्रेमी दो-तीन मील आगे आपको लेने आये हुए थे। आप संगत के साथ जलमादा पधारे और निखेत्र के प्रेमियों के समाचार सुनाये और फरमायाः-

''निखेत्र गाँव के प्रेमियों में सेवा, श्रद्धा और विश्वास तो कूट-कूट कर भरा हुआ है, मगर इतने विचारवान होने के बावज़ूद भी पता नहीं कि क्यों यह लोग बुद्धि भ्रष्ट करने वाली ख़ुराक सेवन करते हैं? जबकि हर चीज़ घी, दूध वग़ैरा काफी मात्रा में मौजूद हैं। फिर खुद ही फरमाने लगेः- ''इनका भी कसूर नहीं, इनके उपदेशक रहनुमा, मौलवी, पीर साहिबान जब खुद ऐसी ख़ुराक इस्तेमाल करते हैं तो यह कैसे शुद्ध आहारी हो सकते है? अच्छा, जिनके तुम गले काटते हो किसी समय यह तुम्हारा गला काटेंगे।''

यह सुनकर चौधरी रामदित्ता मल जी बोले, ''महाराज! हम राक्षसों में रहते हैं। लड़ाई-झगड़े बने रहते हैं। अगर ऐसी ख़ुराक न हो तो जिस्म में जोर नहीं रहता। यह लोग हमें दाल-खोर कहते हैं। इस शब्द को हम बर्दाश्त नहीं कर सकते।''

यह सुनकर हल्की सी मुस्कराहट के साथ आपने फरमायाः- ''प्रेमी! इनका मुकाबला करने के लिए अपने आचार-विचार ठीक करो। मांस खाने वाला दूसरों को धोखा देने में ही अक्लमंदी समझता है।''

चौधरी जी ने फिर अर्ज़ की:- ''महाराज जी! सुना है कि श्री रामचन्द्र जी व गुरु गोबिन्द सिंह जी भी तो शिकार खेलते थे। वे ऐसा क्यों करते थे?''

श्री महाराज जी:- ''तुम कोई उस वक्त उनके साथ रहते थे? तुम्हें ऐसा कहते लज्जा नहीं आती कि बुज़ुर्गों के नाम लेकर खोटे काम करते हो। आहिस्ता-आहिस्ता अपने आपको पवित्र करो। जिनके साथ तुमने प्रेम लगाना शुरू किया है उनकी ज़िंदगी देखो। चलने में तुम्हारे से आगे चलते हैं। फिर तुम इतने बहादुर होकर दौड़-दौड़ कर इनके साथ चलने की कोशिश करते हो। सब खुराक का असर है जो दम फूल जाता है।''

रोज़ाना सत्संग का प्रबन्ध किया गया। समय निश्चित कर दिया गया और वहां की जनता ने बहुत लाभ उठाया। चार दिन उस जगह ठहरने के बाद आप श्रीनगर कश्मीर तशरीफ़ ले गये और लगभग एक सप्ताह वहां ठहरने के बाद आप जलमादा वापिस तशरीफ़ ले आये और जलमादा निवासियों को दस दिन और सत्संग की अमृत वर्षा से तृप्त किया। इसके बाद आपने शुभ स्थान गंगोठियां ब्राह्मणां वापसी का प्रोग्राम बनाया। प्रेमियों ने अर्ज़ की-कि कुछ दिन और ठहरें। मगर आपने फरमाया:- ईश्वर आज्ञा हुई तो फिर इधर आना होगा। इस समय स्थान पर कुछ ऐसा संगत सेवा का प्रोग्राम बना हुआ है कि कार्तिक के शुरू में प्रेमी वहां एकत्र होते हैं। आप भी समय निकाल कर तीन चार रोज़ के वास्ते दर्शन देवें।

इस पर प्रेमियों ने पूछा:- इन्हें तारीख का कैसे पता चलेगा? इस पर सत्पुरुष ने फरमाया:- पत्रिकायें लिखी जावेंगी, जो प्रेमी आना चाहें बड़े शौक से आवें।

शुभ स्थान की तरफ प्रस्थान से पहले एक विशाल सत्संग हुआ और काफी देर रात तक प्रेमी विचार विनिमय करते रहे और शंकायें निवारण करते रहे। काफी रात गुज़रने पर आपने प्रेमियों को आराम करने की आज्ञा दी । जब सब चले गये तो आप उठकर जंगल में चले गये और आकर समाधिस्थ हो गये और सुबह को वापिस तशरीफ लाये। सुबह जब प्रेमी भोजन वग़ैरा कर चुके तो श्री महाराज जी संगत से विदा लेकर कोहाला की तरफ रवाना हो गये।

शुभ स्थान पर वापिस आकर आप ज़्यादा समय जंगल में जाकर आत्मलीन रहते। प्रेमियों को अब पत्र वाणी में लिखते। एक पत्र में दिये गये शब्द नीचे दर्ज़ किये जाते हैं ताकि प्रेमी पाठकों को अंदाज़ा हो सके कि आप कैसी कृपा करते हैं।

दीन ग़रीबी बंदगी, गुरुमुख का है आहार।
सत्-शील और धीरता, गुरुमुख का ब्योहार॥
दृढ़ विश्वास चित्त प्रेम स्वरूप, कोमल वचन नहीं मान मद कूप॥
सहज सुभाये नित चाले चाल। आनन्द स्वरूप में मन तन निहाल॥
आपा मेट निरगुण को कमाये। शब्द अखंड चित रहयो समाये॥
ग्रहन त्याग से रहे अतीत, परम सिख सो इन्द्रीजीत॥

जब सत्पुरुष शुभ स्थान गंगोठियां में निवास कर रहे थे भक्त बनारसी दास, कोहाला निवासी, जो आपके सत् उपदेशों और आदर्श जीवन से प्रभावित हो चुके थे, कोहाला से रावलपिंडी आये और कुछ ऐसी कशिश हो रही थी यानि ऐसा खिंचाव हो रहा था कि वहां से दर्शनों के लिए शुभ स्थान गंगोठियां पहुंच गये। सत्पुरुष हमेशा की तरह अपने प्रोग्राम के मुताबिक दिन को पीर ख़्वाजा जंगल में आत्म लीनताई अवस्था में मस्त रहते और रात को तरेल नदी के किनारे। एक दिन भक्त जी आपके साथ ही जंगल गये। जब सत्पुरुष आँखें बन्द करके आनन्दित अवस्था में बैठ गये तो आपके अन्दर से अमृत वाणी का प्रवाह बहना शुरू हो गया। सिद्धांत बताता है कि ऐसी स्थिति में ही कई महापुरुष गायन करने या नाचने लग जाते हैं और कई वैसे ही वाणी उच्चारण करने लग जाते हैं। इस तरह श्री महाराज जी के अन्दर से भी आनन्दित अवस्था में अमृत वाणी का प्रवाह उमड़ने लगा। भक्त जी पर अजीब सा इसका असर हुआ और उन्होंने अपनी नोट बुक में लिखना शुरू कर दिया। थोड़ी देर के बाद जब सत्पुरुष ने आंखें खोलीं, भक्त जी को शब्द लिखते देख फरमाने लगे:- ''प्रेमी! क्यों लिख रहे हो? यह बातें घर-घाट का नहीं रहने देंगी। जिस वास्ते संसार में आये हो, संसारियों वाले काम करो।''

भक्त बनारसी दास ने कहा:- ''महाराज जी! कुछ पता नहीं चलता, आपके चरणों में हाज़िर होने पर कुछ अजीब सी शांति मिल रही है और वाणी कुछ ऐसी प्यारी सी लग रही है कि इसे लिखने लग गया हूं। कुछ ऐसी प्रेरणा हो रही है कि हर वक्त सेवा में ही बैठा रहूं और यह वाणी लिखता रहूं।''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! फ़कीरों के पास रहना बड़ा ही मुश्किल है। अच्छा, जो अब लिखा जा चुका है उसे पढ़कर सुनाओ, क्या लिखा है''?

भक्त जी ने नोट बुक से पढ़ना शुरू कर दिया। जो निम्नलिखित है।

सत् बुद्धि धर बावरे, कर सत्गुरु पहचान ।
जां के चरण के परसते, मिटे चौरासी खान ॥
जप तप संजम साधना, मोह माया से उदास ।
पर उपकारी विरत जां, शब्द अलख चित्त बास ॥
तन मन की शोभा तजे, रहे आतम परवीन ।
वाणी निरपख बोलदे, एह सत्गुरु लक्षण चीन ॥
सब जीवों में एक दृष्ट, प्रेम समता ज्ञान ।
वर्ण कुल नहीं जानदे, केवल सत ध्यान॥

इस विचित्र वाणी में सत्‌गुरु की पहचान के लक्षण बड़े सरल व सुन्दर ढंग से वर्णन किये गये हैं और शिक्षा दी गई है कि सत्‌गुरु की पहचान करके सत् बुद्धि को धारण करके गुरु शरणागत होकर चौरासी के चक्कर से छुटकारा मिल जावेगा।

आठ-दस दिन चरणों में निवास करके भक्त जी कोहाला वापस चले गये। थोड़े दिनों में उनकी माता जी का देहान्त हो गया और भक्त जी व ठाकुर दीवान सिंह दोनों सीधे गंगोठियां श्री चरणों में हाज़िर हो गये। सत्‌पुरुषों की कशिश अजीब होती है। वह टिकने नहीं देती। इस कशिश ने चन्द दिन भी कोहाला न ठहरने दिया। उस घड़ी की इंतज़ार हो रही थी कि कब वह शुभ घड़ी निकट आवे जब चरणों में हाज़िर होकर अमृत वचन श्रवण किये जावें। जब यह दोनों साहिबान सेवा में हाज़िर हुए तो भक्त जी ने माता जी के देहान्त की ख़बर दी। इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''जो जीव मालिक के चरणों में जाने की इच्छा रखता हो उसके बंधन प्रभु आप ही काट देते हैं। सब कुछ उसकी आज्ञा जानो। मौत को याद करके अच्छे कर्म करो। इसी में तुम्हारी भलाई है। इस आने जाने के चक्कर से छूटना ही बड़ी बहादुरी है।''

इसके बाद वैराग्य के चंद शब्द उच्चारण फरमाये और सूचना दी कि इस साल 25 अक्तूबर, 1935 मुताबक 9 कार्तिक को यज्ञ होगा। जहां-जहां आपने पवित्र चरण डाले थे और सत् उपदेशों की अमृत वर्षा की थी उन सबको पत्र द्वारा यज्ञ की सूचना दी गई और पधारने के लिए लिखा गया।

18. सत्संग सम्मेलन

इस साल आस-पास की जनता के अतिरिक्त काफी संख्या में प्रेमी भी पधारे। भक्त बनारसी दास और कुछ और प्रेमी कुछ दिन पहले हाज़िर हो गये। आस-पास के सेवादार भी एक दिन पहले हाज़िर हो गये थे। शनिवार शाम को हाज़िर प्रेमी यज्ञ के सामान की तैयारी में लग गये और इतवार सुबह 8 बजे तक सामान तैयार होता रहा। सेवादार तमाम रात सामान तैयार करते रहे और ईश्वर महिमा का गायन करते रहे। सत्‌पुरुष हमेशा की तरह रात को बाहर जाकर प्रभु प्रेम में मग्न हो गये और दिन निकलने पर वापस तशरीफ़ लाये। ग्यारह बजे से एक बजे तक बाहर खुली जगह सत्‌पुरुष ने अमृत वर्षा करके जनता को निहाल किया। सत् उपदेश के विषय का निचोड़ इस प्रकार था :

''जीवन का उद्‌देश्य क्या है, जीव क्या कर रहा है, और इसे करना क्या चाहिए''?

सत्संग के बाद सब आई हुई जनता को प्रसाद खिलाया गया। आस-पास की जनता तो प्रसाद पाकर चली गई मगर जो प्रेमी बाहर से आये हुए थे वे जब गुरुदेव के पास जाने की आज्ञा लेने के लिए हाज़िर हुए तो आपने सबको एक-एक पगड़ी और दो-दो रुपये प्रसाद के रूप में दिये और जाने की आज्ञा दी। इस लीला को देखकर एक प्रेमी ने हैरान होकर प्रार्थना की:

प्रेमी:- ''महाराज जी! क्या यह देने के जगह है या लेने की?''

श्री महाराज जी:- ''बच्चू संगत नारायण का रूप है। जिनकी चीज़ है उनके आगे ही रखनी है।''

सत्पुरुष ने कितनी महानता संगत को दी है। इससे कितनी ज़बरदस्त शिक्षा मिलती है कि कैसे संगत को प्रभु रूप जानकर सेवा करनी है और संसारी वस्तुओं से आसक्ति हटानी है? आपने अमृत वाणी में इस बारे में अनुभवी शब्द प्रकट फरमाये हुए हैं-

संगत राजा संगत प्रजा, संगत करे न्याय॥
''मंगत'' संगत सत से, सब जग शांत समाये॥
साची संगत प्रभ रूप है, नित प्रभ का करे विचार॥
''मंगत'' संगत दरस से, नित हूँ नित बलहार॥

संक्षिप्त रूप में किस खूबसूरती से दर्शाने की कृपालता फरमाई है कि सही संगत का स्वरूप क्या है और कैसे ऐसी संगत शांति का कारण होती है? प्रेमियों को सिर्फ़ सत् विचारों की संपदा से ही माला-माल नहीं किया बल्कि प्रेम का प्रसाद भी प्रदान किया ताकि वह भी इस प्रसाद को ग्रहण करके शांति प्राप्त करें और इस आदर्श जीवन से शिक्षा लें। यह प्रसाद लेकर प्रेमी वापिस हुए।

19. अहमदाबाद आगमन और अनुभवी वाणी का प्रकाश

महन्त रतन दास जी पत्र द्वारा प्रार्थना कर रहे थे कि सतपुरुष सम्मेलन के बाद अहमदाबाद तशरीफ़ लावें। सम्मेलन की समाप्ति पर आपने महन्त जी की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और मघॅर में पधारने का प्रोग्राम निश्चित करके उन्हें सूचना दे दी। चलते समय भक्त बनारसी दास जी भी दर्शनों के लिए शुभ स्थान गंगोठियां आ गये। जब श्री महाराज जी अहमदाबाद के लिए रवाना हुए तो भक्त जी भी साथ चल पड़े। शुभ स्थान से मन्दरा तक आठ मील का पैदल सफ़र था। रास्ते में भक्त जी ने अर्ज़ की-कि सेवक को भी चरणों में जगह दी जाये और सेवा में रहने की आज्ञा प्रदान की जावे।

इस पर सत्पुरुष ने फरमाया:- ''तुम अभी बच्चे हो। बाहर जाने के लायक नहीं हो। ज़रा अपनी तरफ तो देखो, कैसा नुमायशी जीवन बनाया हुआ है? सिर पर अंग्रेजी बाल रखे हुए हैं। फ़कीरों के साथ ऐसी रहनी वाला आदमी नहीं रह सकता।''

गंगोठियां से चलकर करीबन चार बजे मन्दरा पहुंचे। यहां से बस लेनी थी। श्री महाराज जी गुजर खाँ जाने वाली बस का इंतज़ार करने लगे। इस बीच भक्त जी मौका पाकर बाज़ार की तरफ गये और सिर के बाल नाई से साफ करवा आये। जब वापिस आये तो श्री महाराज जी ने देखकर फरमाया:- ''यह क्या कर आया है?'' भक्त जी खामोश रहे। दोबारा कुछ देर बाद पूछा:- ''क्या सोच रहे हो?''

बनारसी दास ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! चरणों में जगह बख्शी जावे।'' इतने में बस आ गई। बस में सवार होकर गुजर खाँ पहुंच गये और बड़ी बहन देवकी देवी के घर पर पधारे। भक्त जी जल्दी से बाज़ार की तरफ गये और खद्दर खरीद कर अपने लिए कुर्ता व पाजामा बनवा लाये ताकि सत्पुरुष के वचनों का पालन हो। मगर सत्पुरुष ने साथ जाने की प्रार्थना को स्वीकार नहीं किया और फरमाया:- ''अभी साथ नहीं ले जा सकते, फिर समय आया तो देखा जावेगा।''

भोजन पा लेने के बाद श्री महाराज जी ने भक्त जी को एक पाजामा, कमीज, पगड़ी और पांच रुपये देकर फरमाया:- ''बच्चू! यह प्रसाद रख लो।'' मना करने पर फरमाया:- ''गुरु दरबार से जो कुछ मिले इंकार नहीं करना चाहिए, इसको तुम नहीं समझते।''

अहमदाबाद की तरफ चूंकि धोती आम तौर पर इस्तेमाल होती थी इसलिए श्री महाराज जी ने सलवार उतार कर रख दी और धोती बांध ली। रात को मामूली सामान जैसे कि कश्मीरी लोई, एक जोड़ा कपड़े और लाठी लेकर साढ़े बारह बजे वाली गाड़ी में सवार होकर अहमदाबाद रवाना हो गये। अहमदाबाद पहुंच कर खाड़िया गेट कबीर साहब के मन्दिर में महन्त रतन दास जी के पास पहुंच गये। इस जगह निवास के दौरान सत् उपदेश द्वारा अहमदाबाद निवासियों को कृतार्थ किया। इस जगह अमृत वाणी का आपके अन्दर से प्रवाह उमड़ने लगा और महन्त रतन दास जी ने इसे लिख लिया और बाद में इसे जनता के लाभ के लिए छपवा दिया। इस वाणी को 'चिरंजीव गोष्ठ' का नाम दिया गया। इसमें अध्यात्म बोध, सत् मार्ग की पहचान, सत् साधु की महिमा, सत्पुरुषों की महानता और जीव उद्धारक नियम इत्यादि प्रसंग हैं। इसके अलावा आपने 'योग चिंतामणी' प्रसंग भी प्रकट फरमाया, जिसमें सहज योग या राजयोग के गुप्त राज़ों को सरल शब्दों में वर्णन किया गया है। यह प्रसंग अब 'समदर्शन योग' का हिस्सा है।

आपने चन्द दिन खाड़िया गेट कबीर साहब मन्दिर में निवास किया और फिर महन्त जी से किसी एकान्त जगह का प्रबन्ध करने के लिए कहा। महन्त जी ने आज्ञा अनुसार शहर की आबादी से तीन चार मील के फासले पर एक कोठी में आपके ठहरने का प्रबन्ध कर दिया। खुद चरणों में रहकर सेवा करते रहे। श्री महाराज जी ने काफी दिन वहां निवास किया। इसके बाद महन्त जी की प्रार्थना पर, कि आप बंबई व बड़ौदा तशरीफ़ ले चलकर कबीर पंथियों के स्थान देखें। आप महन्त जी के साथ दोनों जगह तशरीफ़ ले गये। हर जगह गद्दियों के महन्तों ने आपके दर्शनों और सत् उपदेशों का लाभ उठाया। मास्टर मनी राम जी व स्वामी ब्रह्म प्रकाश जी ने सत्पुरुष के सत् विचारों द्वारा लाभ उठाकर सत् शिक्षा भी ग्रहण की।

माह फरवरी, 1939 में आप अहमदाबाद से वापिस रवाना हो पड़े और रास्ते में पंचमरी अपने चचाज़ाद भाई पंडित रघुनाथ जी के पास पधारे। इस जगह भी बड़ी सत् चर्चा होती रही और अमृत वाणी का समुन्द्र ठाठें मारता रहा। इस जगह 'सार तत्त न्याय' वाणी प्रगट हुई जिसमें कई

मज़हबों, पन्थों का निचोड़ निकालकर रख दिया गया है। इसमें संसार की उत्पत्ति, मुसलमानी भेद, गुरु-शिष्य पर विचार, ब्राह्मण की पहचान इत्यादि प्रसंग हैं।

सत्पुरुष त्रिकाल-दर्शी होते हैं। उन्हें भूत, वर्तमान और भविष्य में आने वाले सब हालात का पता होता है। मज़हबी भेद-भाव के कारण जो फूट आपस में जनता में पड़ गई थी उसका नतीजा सब आपको पता था। आपने इस सबको ध्यान में रखते हुए वाणी में सब मज़हबों की तालीम को एक सिद्ध कर दिया है। इन्हीं प्रसंगों में आपने अपनी अनुभवी वाणी में फरमाया हुआ है:

चार वेद खट शास्त्र आद। कुरान अंजील तोरीयत संवाद॥
सब में महमा तिस की गाई। पारावार न आवे प्रभताई॥
सिद्ध ऋखीशर और अवतार। पीर पैग़म्बर नबी करें पुकार॥
गुरु अचारज तपस्वी नाथ। सबका ठाकुर नाथों का नाथ॥
तिस की भक्त तन मन परगासे। तिस की सेवा सब विघन विनासे॥

आगे फरमाया :-

तिस की जात जमाईत न कोई। जैसा करतब जात है सोई ॥
उठ के साची जात पहचान। अपने ठाकुर की सिफ़त बख़ान ॥

जो मज़हबी तफ़रकात (बाद-मुबाद) पड़ रहे थे उन सबको ध्यान में रखते हुए उन्हीं में से एक प्रसंग में सदाचार यानी नेक इख़लाक को धारण करना और मज़हबी वाद-विवाद से निकलने का साधन बतलाया है और फरमाया है:

सो ही पंडित वेद का वक्ता। सो ही काज़ी कुरान का पठता॥
सो ही पोप अंजील पिछानी। सदाचार की जो सार लखानी॥
सो ही गुरु जगत निस्तारी। सो ही तपीश्वर तेज अधकारी॥
सो ही पीर हाजी है सोई। सदाचार जो मन माहीं परोई॥
सदाचार यह वाणी आकाश। साचा हुकम साहेब अवनाश॥

आगे फरमाया हुआ है:-

राज तेज और कीरती, सब ही होये उजाड़॥
'मंगत' काया जगत की, पलटे यह आचार ॥
राजा जब आचार त्यागे, जाये सिंघासन होये दुरभागे॥
जो कुल जाति देश बद-आचारी, कट-कट मरे दुःख सहवें भारी॥

आपने सदाचार का स्वरूप इस तरह कुछ वचनों में व्यक्त किया है:-

"सत् आचार या सदाचार के उलट दुराचार यानी मिथ्याचार है। सत् केवल ईश्वर यानी जीवन शक्ति है। इस वास्ते सत् के निश्चय के बग़ैर जो कुछ सोचना या करना है वह दुराचार की बुनियाद है। बग़ैर प्रभु परायण होने के और नाम चिंतन के सदाचारी होना काफी मुश्किल है। यानी प्रभु परायणता ही सदाचार का स्वरूप है।"

20. काला गुजरां में निवास

सर्दी समाप्त हो चुकी थी। आप पंचमरी से पंजाब पधारे और काला गुजरां ज़िला जेहलम तशरीफ़ लाकर मेहता अमोलक राम के घर को पवित्र किया और सत् विचारों की अमृत वर्षा से कई कस्बा निवासियों को तृप्त किया। सत्पुरुष अन्तर्यामी भी होते हैं। एक दफ़ा जब बाबू अमोलक राम चरणों में बैठा था, एक और प्रेमी राम प्रकाश दत्त भी बैठा था, आपने फरमाना शुरू कर दिया:- "छलांग लगाकर छत पर चढ़ना बहुत मुश्किल है। गिरोगे, टांगें टूट जाएंगी। सीधे होकर चलो। जो साधन का तरीका बतलाया गया है उसे धारण करो। सीधे रास्ते चलकर मंज़िल पर पहुंचा जा सकता है। मन को एकाग्र करने का यह सरल साधन है। सत् सिमरण का जो तरीका बतलाया गया है जब-तक वह पक्का न होये तब-तक मन एकाग्र नहीं होता। इसलिए सत् सिमरण लाज़मी है, फिर मन स्वयं शांत हो जाता है और ध्यान व समाधि अवस्था प्राप्त होती है। पहले ही आंखों को दबाने और कानों को बंद करके ब्रह्म को जो देखना चाहते हैं वे नादान हैं। मन को एकाग्र करना अधिक ज़रूरी है। इसलिए अपूर्ण और अधूरे साधन को छोड़कर जो दीक्षा तुम्हें दी गई है उसे धारण करो।"

बाबू अमोलक राम ने राधा-स्वामी मत की दीक्षा पहले ली हुई थी। इसके बाद श्री महाराज जी से भी सत् साधन हासिल कर लिया था। मगर साधन यानी अभ्यास वह ही करता चला आ रहा था जो पहले किया था। सत्पुरुषों से कोई बात छुपी नहीं रहती। उन्होंने बाबू जी को सही रास्ते पर लाने के लिए कृपा करते हुए स्वयं चेतावनी दे दी और आगाह कर दिया कि सही रास्ते पर चलकर ही सफलता मिल सकती है। सत्पुरुष फरमाया करते थे कि- फ़कीर चाहे हजारों कोस पर बैठे हों अपने खास शिष्यों पर हमेशा निग़ाह रखते हैं, और ऐसे अवसर भी आये जब आपने अति कृपालुता करते हुए चेतावनी भी दी।

21. शुभ स्थान गंगोठियां को प्रस्थान

चन्द दिन काला गुजरां निवासियों को कृतार्थ करने के बाद आख़िरी फरवरी को आपने चलने का प्रोग्राम बनाया और शुभ स्थान गंगोठियां के लिए रवाना हो पड़े और वहां शाम को पहुंच गये। आपके गंगोठियां पहुंचने की सूचना पाकर भक्त बनारसी दास भी चरणों में हाज़िर हो गया। श्री महाराज जी ने जो वाणी पंचमरी में प्रगट हुई थी भक्त जी को देकर फरमाया:- "यह पढ़कर सुनाओ।"

आज्ञा पाकर भक्त जी ने सारे शब्द पढ़कर सुनाये और जो गल्तियां रह गई थीं श्री महाराज जी ने उन्हें ठीक करवा दिया। इसके अतिरिक्त भक्त जी ने वह शब्द जो पत्रों द्वारा लिखकर भेजे गये थे सुन्दर तरह से लिख करके श्री चरणों में रखे। श्री महाराज जी उनको देखकर बहुत प्रसन्न हुए और फरमाया:- "कौन इनको पढ़ेगा?"

भक्त जी ने कहा, "महाराज जी, सत् के जिज्ञासु स्वयं इनकी परख करेंगे।" इस तरह भक्त जी चन्द दिन वहां चरणों में व्यतीत करके वापिस चले गये। मगर अप्रैल, 1939 में फिर गुरू चरणों में हाज़िर हुए और चार दिन हरि चर्चा श्रवण की, फिर जाने की आज्ञा मांगी।

श्री महाराज जी:– "प्रेमी किधर जाना है, क्या प्रोग्राम है?"

भक्त जी (हाथ जोड़कर):– "महाराज जी! समझ नहीं आती कि किधर जाना है और क्या प्रोग्राम है? आप तो अन्तर्यामी घट-घट के जानने वाले हैं। हम नादान अपना क्या प्रोग्राम बना सकते हैं? ख़्याल तो आपके चरणों में रहने का है, आगे आप मालिक हैं। जैसी आज्ञा होगी पालन किया जावेगा।"

महाराज जी:– "साफ-साफ कहो।"

भक्त जी (फिर हाथ जोड़कर):–"इस बार तप के दौरान सेवा के लिए ठहरना चाहता हूँ।"

महाराज जी:– "फ़कीरों के पास ज़्यादा ठहरना ठीक नहीं होता। इसलिए जाओ दुनिया का काम-काज करो। अच्छा, दो रोज़ के बाद प्रोग्राम लिखा जायेगा।"

भक्त जी वापिस चले गये। वहां पहुंच कर सोच ही रहे थे कि दो दिन के बाद भक्त जी को प्रोग्राम की सूचना मिल गई। प्रोग्राम अनुसार श्री महाराज जी रावलपिंडी पहुंच गये और 12 बजे बस में रावलपिंडी से रवाना होकर 7 बजे शाम कोहाला पहुंच गये। संगत आपका इंतज़ार कर रही थी। बस के पहुंचते ही सब प्रेमी चरणों में पहुंच गये और बारी-बारी सबने चरणों में प्रणाम किया।

22. निखेत्र पर्वत पर एकान्त निवास व तप

कोहाला से चलकर श्री महाराज जी प्रेमियों के साथ जलमादा गांव से बाहर कुटिया में तशरीफ ले गये और उसमें डेरा लगाया। रात दस ग्यारह बजे तक विचार विनिमय होता रहा। कुछ ऐसी कशिश थी कि किसी भी प्रेमी का चरणों से उठने को जी नहीं चाहता था। लेकिन आपने उस समय सबको जाने की आज्ञा फरमाई। आपने डेढ़ माह कुटिया में निवास किया। प्रेमी इस दौरान चरणों में हाज़िर होकर सत्संग का लाभ उठाते रहे और इसके अलावा अपनी शंकाओं का निवारण करते रहे।

एक दिन जब संगत के सभी प्रेमी, बग़ैर उन प्रेमियों के जो रात को चरणों में ही ठहरते थे, चले गये तो गुरुदेव मौज में आकर फरमाने लगे:–

"प्रेमियों! यह स्थान आज का नहीं है, बल्कि इससे हज़ारों वर्ष पहले सतयुग में सनकादिक ऋषि भी यहां तप किया करते थे और उस वक्त दरियाये जेहलम भी इस स्थान के साथ-साथ बहता था जो कि अब डेढ़ मील के करीब नीचे हो गया है। इस जगह कई दफ़ा बदलाव हुआ और आगे भी होता रहेगा। अब प्रभु आज्ञा से इस जगह पर सत्संग चल रहा है।" ऐसा फरमाने के बाद आपने सेवादारों को सोने की आज्ञा दी और खुद बाहर जंगल की तरफ तशरीफ़ ले गये। सूरज

निकलने पर आप कुटिया में पधारे तो आसन पर बैठते ही फरमाने लगे:- "प्रेमियों! आज ज्येष्ठ की पन्द्रह तारीख हो गई है और तप का समय निकट आ रहा है इसलिए किसी जंगल में चलना चाहिए।"

श्री महाराज जी के वचन सुनकर प्रेमियों ने आज्ञा अनुसार प्रोग्राम निश्चित किया। थोड़ी देर के बाद कहा (भक्त बनारसी दास से)-"सुना प्रेमिया, तेरा क्या प्रोग्राम है?"

भक्त जी (हाथ जोड़कर)-"महाराज जी! कृपा करके तप के समय सेवा का मौका दिया जाये, यही दास की प्रार्थना है। बेशक इस काबिल नहीं हूँ कि आपकी सेवा कर सकूँ।"

महाराज जी:-"हमारी सेवा जो इधर से बतलाया गया है उस पर तन-मन से चलने की कोशिश करने में ही है। जंगल में आगे तुझे जाने का मौका नहीं मिला। वहां कई प्रकार के जंगली दरिंदे और कई डरावनी जगहें होती हैं, जिनसे लोग डरते हैं।"

भक्त जी:-"जिस जगह आप विराजमान हों वहां मुझे क्या डर है?"

इस पर महाराज जी ने भक्त जी को साथ जाने की मंजूरी दे दी। निश्चित प्रोग्राम के अनुसार आप जगह की तलाश में बरास्ता डोमेल मुजफ़राबाद पहुंचे। वहां एक दिन ठहरकर एकान्त निवास के लिए जगह देखी। मगर कोई जगह ठीक न मिली। फिर दूसरे दिन ज़िला हज़ारा में गढ़ी उल्लाह पधारे। वहां प्रेमी गोकुल चंद पटन वाले के मकान पर ठहरे। शाम को बाहर गये और रात के लिए एक स्थान निश्चित किया। जब सत्संग समाप्त हुआ तो प्रेमियों को सो जाने की आज्ञा फरमाई। जब सब प्रेमी सो गए तो भक्त जी विचार कर रहे थे कि किस तरह महापुरुष लगातार अठारह-अठारह घंटे बैठने के बाद रात को भी तप में गुज़ार देते हैं, दास किस तरह इनकी सेवा में रहकर समय व्यतीत कर सकेगा। ऐसे विचार भक्त जी अपने मन ही मन कर रहे थे कि आपने फरमाया:- "बनारसी दास! एक घंटा बाद हमारे साथ चलना होगा। अभी कुछ देर सो जाओ।"

भक्त जी (हाथ जोड़कर):- "जैसी आज्ञा।" इतना कह कर भक्त जी सो गये। लगभग दो घंटे बाद श्री महाराज जी ने भक्त जी को जगाया और साथ चलने की आज्ञा दी। बाकी सब प्रेमियों को सोया हुआ छोड़कर जो एकान्त स्थान आप दिन को देख आये थे उस तरफ चल दिये। दरिया को पार करके पहाड़ की तरफ बढ़े और एक गहरी खड्ड में पहुंच गये। यह स्थान बड़ा सुनसान था।

खड्ड में पहुंचते ही आपने भक्त जी से लोटा अंगोछा ले लिया और फरमाया:- "जाओ डेरे पर जाकर आराम करो, सुबह आ जाना।" श्री महाराज जी और आगे चल दिये और थोड़ी देर में काफी दूर निकल गये। इस रात के अंधेरे और वीरानगी में भक्त जी के मन में कई तरह के विचार उठने लगे। खैर, प्रभु की अपार कृपा से वापस स्थान पर पहुंच गये और सो गये। सुबह सूरज निकलने पर भक्त जी और दूसरे प्रेमी श्री महाराज जी के दर्शनों के लिए चल पड़े। जब निकट पहुंचे तो देखा सत्पुरुष एक पेड़ के नीचे समता आनन्द की मग्न हालत में लवलीन बैठे हैं और प्रभु प्रेम में डूबे हुए हैं। प्रेमी कुछ फासले पर रुक गये। लगभग आधा घंटे बाद आपने नेत्र खोले और फरमाया:-

"प्रेमियों! यह जगह बड़ी एकान्त है। लेकिन इस तरफ के आदमी अजीब हैं। आधी रात के वक्त चंद एक बंदूकों वाले यहां से गुज़रे और पूछने लगे - कौन हो? इधर से कहा गया साईं लोग हैं। भक्ति के वास्ते यहां बैठे हैं। इतना सुनने पर सलाम करके आगे चल दिये।"

श्री महाराज जी प्रेमियों सहित वापिस स्थान पर पहुंचे। स्नान वग़ैरह से निवृत्त होकर आप आसन पर बिराजमान हुए और फरमाने लगे:- "कल या परसों यहां से कहीं दूसरी जगह चल पड़ेंगे।" मेहता अमोलक राम जी भी दर्शनों के लिए इस जगह हाज़िर हुए और दूसरे दिन बरास्ता मांसेहरा एबटाबाद वापिस चले गये। दरियाये कागां इस जगह साथ बहता था।

इसके बाद बूढ़ा अमरनाथ, मांसेहरा व शंखियारी वग़ैरह नये-नये स्थान देखे गये। मगर कोई भी जगह तप के लिये अनुकूल न मिली। एक दिन और रुकने के बाद चौधरी रामदित्ता मल जी ने चरणों में प्रार्थना की:

चौधरी जी:- "महाराज जी! हमारे वास्ते क्या आज्ञा है?"

महाराज जी:- सुबह तैयारी करें। (थोड़ी देर खामोश रहने के बाद) "फ़कीरों को साथ ले जाना बड़ा मुश्किल है। खुश तो किसी वक्त होंगे, नाराज़ जल्दी हो जाया करते हैं। ज़रा सी संगत सेवा में त्रुटि रह जाने पर, याद रखो, फिर आपके वास्ते बड़ी मुश्किल हो जायेगी।" महाराज जी के यह वचन सुनकर सब हाज़िर प्रेमी खामोश हो गये। मगर महापुरुष बड़े दयालु होते हैं, चेतावनी के साथ-साथ प्रेमियों पर दया दृष्टि रखते हैं। थोड़ी देर के बाद आपने फरमाया:- "अच्छा, सुबह चार बजे यहां से चल दो।" ठीक निश्चित समय पर गढ़ी हबीब उल्लाह से चन्द सेवादार प्रेमियों के साथ सत्पुरुष श्री महाराज जी ने पहाड़ी सफ़र तय करना शुरू कर दिया। आठ घंटे लगातार सफ़र करके पटन खुर्द पहुंचे। वहां प्रेमी के यहां विश्राम किया। वहां से चलकर रात को पटन कलां में प्रेमी गोकुल चंद जी के यहां विश्राम किया। सुबह सवेरे पटन कलां से चलकर निखेत्र गांव में पधारे जहां चौधरी साहब का घर था। आपके सत् विचारों और आदर्श जीवन का इतना असर हो चुका था कि यह प्रेमी अपने परिवार से अधिक आये हुए प्रेमियों की सेवा करते। निखेत्र गांव सतह समुंद्र से साढ़े पांच हजार फुट की ऊँचाई पर था। यहां हिन्दुओं की आबादी बहुत कम थी और मुसलमानों की बहुत ज़्यादा, मगर हिन्दू मुसलमानों का गहरा प्रेम था। इस जगह महाराज जी ने एक मुसलमान से वार्तालाप किया।

श्री महाराज जी:-"तुम्हारे साथ इन खत्रियों का कैसा बर्ताव है?"

मुसलमान प्रेमी:-"जैसे मां-बाप अपने बच्चों का ख़्याल करते हैं ऐसे ही यह साहूकार हमारा ख़्याल करते हैं।"

तीन दिन चौधरी रामदित्ता मल जी के यहां ठहरने के बाद श्री महाराज जी निखेत्र पहाड़ पर बाड़ागली जंगल में तशरीफ ले गये। यह स्थान निखेत्र गांव से आठ मील के फासले पर साढ़े आठ हज़ार फुट की ऊँचाई पर है। यहां बड़ा घना जंगल था। आसपास मीलों तक कोई आबादी नहीं थी। उन दिनों वहां जंगल में कटाई हो रही थी और राशन सप्लाई का ठेका चौधरी साहब का था।

कटाई के कारण खट-खट की आवाज़ आती थी। इसलिए महाराज जी ने तप के लिए वह स्थान भी पसन्द न किया। फिर सब प्रेमी महाराज जी के साथ पहाड़ की चोटी की तरफ आगे बढ़े। वहां से एक मील ऊपर जाकर एक स्थान पसंद किया। वहां छोटा सा मैदान भी था। ठेकेदार ने मज़दूरों को लगाकर दो घंटे के अंदर कुटिया इस जगह तैयार करवा दी। कुटिया के अन्दर जहां श्री महाराज जी का आसन लगाया गया वहां करीब ही अग्नि जलाने का कुंड तैयार करवाया गया, क्योंकि यहां जून के महीने में बहुत सख्त सर्दी पड़ती थी। दूसरे दिन आपने सब प्रेमियों को जाने की आज्ञा दी और तीसरे दिन भक्त जी से कहा:- प्रेमी! तुम भी जाओ।

भक्त जी:- "महाराज जी! दास को चरणों में जगह बख्शें। जितना समय आप यहां ठहरेंगे दास को सेवा का मौका बख़्शें।" भक्त जी की बात सुनकर श्री महाराज जी ने फरमाया:- जंगलों में रहने में बड़ी तकलीफें होती हैं और जंगली जानवरों का भय भी दिखलाया मगर भक्त जी डांवाडोल न हुए।

आपने फिर फरमाया:- फ़कीरों की सेवा में रहना मुश्किल होता है। "अच्छा प्रेमी! ईश्वर तुम्हारी भावना सफल करें"? इस तरह प्रभु की अपार कृपा से भक्त जी को सेवा का यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ।

तप के दौरान महाराज जी सिर्फ़ एक दफ़ा दिन में डेढ़ पाव दूध की चाय दोपहर को लिया करते थे। और चौबीस घंटे एक आसन पर बिराजमान रहते और आत्मलीनता का आनन्द लेते। इस आनन्दित अवस्था में आपके अन्दर से अक्सर वाणी का प्रवाह उमड़ने लगता। जब भक्त जी ने ये दशा देखी तो ऐसी प्रेरणा होने लगी कि क्यों न इस अमृत वाणी को लिख लिया जावे? इस मकसद के लिए सेवा में प्रार्थना की-कि महाराज जी! अगर आज्ञा हो तो मुख वाक् अमृत लिख लिए जावें। जैसे कबीर साहब, दादू, गुरु नानक देव जी वग़ैरह सन्तों की वाणियां छपी हुई हैं और प्रभु प्रेमियों को शीतल करती हैं और वह इनसे परम लाभ प्राप्त करते हैं, वैसे ही अगर इसे भी लिख लिया जावे तो प्रभु प्रेमी इसका भी लाभ उठावेंगे।

श्री महाराज जी:- "कोई शब्द पढ़कर सुनाओ।"

भक्त जी ने आज्ञा का पालन करते हुए कुछ शब्द सुनाये। शब्दों की समाप्ति पर श्री महाराज जी ने वाणी उच्चारण करनी शुरू की। आप समाधि में लीन आंखें बंद किये हुए वाणी उच्चारण कर रहे थे और भक्त जी लिखने लगे। थोड़ी देर बाद जब श्री महाराज जी ने आँखें खोलीं तो देखा कि भक्त जी ठीक नहीं लिख रहे। इस पर आपने फरमाया:- "यह काम तुमसे इस तरह न हो सकेगा।" फिर आपने वाणी आहिस्ता-आहिस्ता लिखवानी शुरू की और नेत्र खुले रखे। भगवान की परम दयालुता से भक्त जी भी तेजी से लिखने लगे। प्रभु ने ऐसी शक्ति प्रदान कर दी। रोज़ाना एक बजे रात तक लगातार श्री महाराज जी वाणी उच्चारण फरमाते। ऐसा प्रतीत होता था कि आपके अन्दर आनन्द और तपो-ज्ञान का समुन्द्र ठाठें मार रहा है। भगवान जो चाहें सो करायें। आप सर्व-समर्थ हैं। श्री समता प्रकाश ग्रन्थ में एक जगह ऐसा ही दिया हुआ है।

अपनी महमा धार के, अचरज खेल रचाई।
'मंगत' आपे आप तू, नित तेरी सरनाई॥
सूखे तरुवर को फल लावें, पाथर जन्त टिकायें।
सूखे सरोवर नीर बहावें, पिंगू गिरी चढ़ायें॥
बिंद से तू पिंड को साजें, पाथर नीर तरायें॥
गूंगा करे ज्ञान की कथना, तेरा अंत पार नहीं पायें॥
महमा सत सरूप की, रंचक कथी न जाये।
'मंगत' जिस प्रभ पाया, तिस चरनी धूड़ रमाये॥

एक दिन रात के समय कुटिया के पीछे एक शेर बड़ी भयानक आवाज़ से दहाड़ रहा था। उस समय प्रभु के अनन्य भक्त श्री महाराज जी अपनी समाधि अवस्था में बैठे आनन्द ले रहे थे। जब शेर की दहाड़ सुनी तो भक्त जी को, जो लिहाफ़ ओढ़े सो रहे थे, आवाज़ देकर पूछा:-

"बनारसी! डर तो नहीं लग रहा?"

भक्त जी ने रज़ाई में से ही जवाब दिया:-"नही प्रभु! आपकी मौज़ूदगी में बिलकुल भय नहीं लग रहा है। आपके बिना तो एक पल भी इस जगह ठहरना बहुत मुश्किल होता।"

एक दिन आपने भक्त जी को जल्दी सोने की आज्ञा दी और खुद समाधि लगाकर आनन्द के हिलोरें लेने लगे। बाहर बादल खूब ज़ोर से गरज रहे थे। बिजली खूब चमक रही थी। हवा सायें-सायें करती चल रही थी। बड़ी भयानक डरावनी रात थी। उस समय आपने भक्त जी को आवाज़ दी:

"बनारसी-बनारसी उठो। आग तेज़ करो।"

भक्त जी आंखें मलते हुए उठे और आग तेज़ कर दी। जब भक्त जी की नींद दूर हुई तो आपने फरमाया:- "कलम दवात निकालो। मालिक की मौज लिखो।" उस समय महाप्रभु की अनुभव अवस्था का आपने यूं वर्णन फरमाया:- (शब्द न०-903)

अचरज लीला घर में धारी, प्रगट होए आप मुरारी॥
उदर दीप में खुले मनी भंडारा, अधिक तेज अधिक चमकारा॥
जिस पेखा सो उपरस हूआ, जिस जाना सो जीवत मुआ॥
अपरम अपार नाद किलकारे, कोट रवी सम तेज लखारे।
गगन कुंड में अमृत कूआँ, अपरम शब्द लख निरत अखूआँ॥
बाज बजंतर बाजा बाजे, सतगुरु मिले सरे सब काजे॥
प्रेम मस धुन बाजे तूरा, अधिक चमकार लखे कोई सूरा॥
भयो मतवाला शब्द रस खाये, हाट पटन में रयो समाये॥
बस्ती जंगल भयो एका, अवगत शब्द का लखयो लेखा॥
विरत शून मन निर्मल हूआ, अखंड नाद में जीवत मूआ॥

करो अरदास परम सुखदाये, निज घट ठाकर लयो मनाये॥
जन्म-जन्म की तपन होई नासा, उदर दीप देखा परगासा॥
दीनदयाल परम आनन्दा, उदे दीप जोत परचंडा॥
मुश्क फुटी घर अन्तर माईं, रग-रग अन्दर धूम मचाईं॥
भई दीवानी सुनी धुनकार, पूरन भाग भयो कारज सार॥
उठ रे पंडत कर बखान, काज़ी बूझ तू अन्तर निधान॥
अजब रंगीला नाद नित बोले, हाट पटन कोई गुरमुख खोले॥
शब्द सार शब्द सुख थाना, ऊंचे शिखर में करे ठिकाना॥
अधिक चमकार जोत निर्वानी, गुरमुख पूजे अलख वडयानी॥
काज़ी भूला पंडत भुलाये, घर की शोभा नहीं चित्त में पाये॥
कोई गुरमुख आया उलट का भेदी, ब्रह्म ज्ञान नाद रस छेदी॥
अपने आप में गयो समाये, लखया लेख न किसे आगाहे॥
पंछी का मारग कौन दिखलावे, निर्वान भेद को कोई गुरमुख पावे॥
अजर दीप परगट घर हूआ, जो देखे सो तृप्ता समूआ॥
अकथ कथा घट में होवे, उमड़े शब्द हलोल।
'मंगत' भेदी तत ज्ञान का, परसे मन अडोल॥

कुछ दिनों के बाद जंगल का गार्ड अपने साथ कुछ गाज़ी मुसलमान और एक मौलवी को लेकर आपके दर्शनों के लिए आया। सब सज्जनों ने कुटिया के अन्दर हाज़िर होकर बड़ी विनम्रता से दुआ सलाम किया और अर्ज़ की:- "हमारे लायक कोई खिदमत हो तो फरमायें।"

यह सुनकर आपने निम्नलिखित उपदेश दिया। प्रेमी पाठकों के लिए यह अर्ज़ करना ज़रूरी है कि जलमादा से श्रीनगर तक ज़्यादातर आबादी मुसलमानों की थी और आपके सत्संगों में मुसलमान भी काफी संख्या में शामिल होते थे। इसलिए आपके भाषणों में उर्दू व फारसी के शब्द भी बहुत होते थे।

"प्रेमियों! अपने आपको अलग समझना या तास्सुब[1] रखना कुफर[2] है। सब ही उस ज़ाते कमाल का[3] मंजर[4] है। खुदा परस्ती[5] यही है कि उस ज़ात पाक को हर शै[6] में देखें और हर जगह उसे मौज़ूद समझें। सिर्फ मंदिर मस्जिद में ही वह कैद नहीं है। यह तो सिर्फ इबादत की जगहें हैं। ग्रन्थ, वेद, अंजील, कुरान पढ़ने का मतलब यह है कि अपने अन्दर सच्चाई और सफाई आवे। नफ़रत और रंजिश के ज़ज़्बा[7] से पाक[8] होकर अक्ल-सलीम[9] से खुदा की पहचान करे। मज़हब की फांसी से निज़ात हासिल करें और उस लामहदूद ताकत को समझें। जिस ताकत से सब जानवर आदि से लेकर चींटी तक चलते-फिरते नज़र आ रहे हैं उसका ज़हूर[10] सब दुनिया को जानें। अपनी ख़ुदी[11] को

1. धर्मान्धता 2. नास्तिकपन 3. ईश्वर 4. दृश्य 5. प्रभु को मानना 6. वस्तु 7. भाव 8. पवित्र
9. श्रेष्ठ बुद्धि 10. प्रगट 11. अहं

खत्म करें। तब इस जिस्म में मौज़ूद जान का पता लगे और ख़ुलासी[1] हो।"

मौलवी साहब:-"पीर जी! ख़ुलासी का क्या मतलब है? आपके कहने के मुताबिक और भी जन्म लेने पड़ते हैं। हम आवागमन को नहीं मानते।"

श्री महाराज जी:-"हां, जब-तक दिल के अन्दर ख़्वाहिश[2] पैदा हो रही है तब-तक अज़ाब[3] खत्म नहीं होता है। अज़ाब यानी दु:ख व सुख शरीर के ज़रिये ही महसूस किये जाते हैं।

एक रात वाणी लिखने से और सोने से पहले भक्त जी ने आपसे अर्ज़ की:- "प्रभु! संत तुलसी दास जी के जैसे दोहे हैं ऐसे शब्दों की भी कृपा करें।"

श्री महाराज जी:-"ज़्यादा लालच नहीं करना चाहिये। चुप करके आराम करो।"

जब सुबह स्नान इत्यादि से निवृत्त होकर भक्त जी आपके दरबार में आकर बैठे तो परम दयालु श्री महाराज जी ने कागज़ के टुकड़े, जिन पर दोहे लिखे हुए थे, भक्त जी की तरफ किये और फरमाया:- "पहले यह सुनाओ फिर नहायेंगे।"

भक्त जी ने कागज़ उठाकर देखे तो उन पर दोहे ही दोहे लिखे हुए थे। शुरू से आख़िर तक पढ़ कर सुनाये। इनमें से चंद दोहे प्रेमी पाठकों के लिए नमूने के लिए लिखे जाते हैं। (शब्द न०-907)

प्रभु का सिमरन सार है, संतौं करी पुकार।
एक घड़ी न विसरे, सो आनन्द भंडार॥
छाया बादल की ज्यों, ऐसे जग का खेल।
दुर्लभ नाम कमायो, कर साचे गुरु संग मेल॥
एह जग भरम गुबार है, केवल मन तरंग।
सिमरो साचे नाम को, सब मंसा होवे भंग॥
लख चौरासी जन्त में, मानुष देह परवान।
सिमरन साचे नाम का, इसमें मिले निधान॥
पलक-पलक औधी गई, ज्यों नदी का नीर।
बिन सिमरे हरी नाम के, आठ पहर दिलगीर॥
साचे सुख को खोजते, बीत गये वरख हज़ार।
मिली न पलक की शांति, जो भोगे भोग आपार॥
खाली हथ्थीं आया, अंत जाये खाली हाथ।
जो सम्पत सो छाडनी, रंचक चले न साथ॥
जैसे नीर तुरंग का, छिन में रूप वटाये।
ऐसे जीवन जगत में, जान लियो गुनी राये॥
नदी किनारे तरवर, कब लग बाँधे धीर।
एक लहर की धार से, जाये बिखर शरीर॥

काठ अगनी में पड़ा, पल पल होये अंगार।
'मंगत' जीवन जगत का, एह विध कियो विचार॥

भक्त जी ने अर्ज़ की:- "महाराज जी! नाद की महिमा उच्चारण, वर्णन करते समय आपने फरमाया है कि उस शब्द की बहुत घोर गर्जना होती है। करोड़ों सूर्यों से ज़्यादा प्रकाश है। मगर पेट में ज़रा सी वायु गड़गड़ाहट करे तो बाहर सुनाई देती है। दूसरे एक सूरज की तपिश सहन नहीं होती और उसकी तरफ आंख उठाकर देखना कठिन होता है तो हज़ारों सूर्यों की रोशनी और तपिश कैसे सहन हो सकती है, और शब्द की घोर गर्जना हमें बाहर क्यों सुनाई नहीं देती जबकि महापुरुष फरमाते हैं, रोम-रोम में उसका अनुभव हो रहा है?"

श्री महाराज जी:- ''बच्चू! यह मन इन्द्रियों का विषय नहीं है। इस हालत को सिर्फ़ बुद्धि अनुभव कर सकती है, वर्णन नहीं कर सकती। बुद्धि इस तत्वमई शरीर के लगाव से कुछ तपश कुछ ठंडक महसूस करती है, जब उस परम तत्व में लीन होती है न तपश का पता रहता है न ठंडक का। वह परम तत्व तीन गुणों के दोषों से अलग है। निर्गुण आत्म तत्व को न तपश तपा सकती है न हवा सुखा सकती है, न पानी गीला कर सकता है। बाकी उस आवाज़ को शारीरिक कोट से बाहर नहीं निकलने दिया जाता। यह समर्थ सत्पुरुषों में ही होती है। इस भेद को वह ही जानता है जो हर समय उस हालत में उठते-बैठते, खाते-पीते मस्त मग्न रहता है। नींद, आलस्य और भूख यह तीनों दोष वाली चीज़ें शब्द के अनुभव के बाद ख़त्म हो जाती हैं। सिर्फ संसार से बचने के वास्ते महापुरुष थोड़ी ख़ुराक सूक्ष्म रूप में रखते हैं ताकि शक्ति बनी रहे। यहां बनावटी काम नहीं है।''

इतना फरमाने के बाद आपने भक्त जी पर अपार कृपा की और उनको अपनी शक्ति द्वारा ऐसी स्थिति का साक्षात्कार अनुभव करवाया।

फिर श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''कमाई करो कमाई। जब-तक इस हालत को खुद अपने अंतरविखे अभ्यास द्वारा अनुभव नहीं करोगे तब-तक यह परम खुशी सिर पर हाथ धरने से प्राप्त नहीं होगी। दो मिनट के वास्ते ऐसी हालत अगर तुम्हारे अन्दर पैदा कर भी दी जाये, तुम उसको संभाल ही नहीं सकोगे। दौलत कमाओ, संभालो और संसार में आने का परम लाभ प्राप्त करो। दूसरों के वास्ते आदर्श बनो। मगर यह मोह माया का जाल ऐसा है कि इस जीव को इस ज़ाहरी दृश्य से उपराम नहीं होने देता। बारम्बार संसार की नश्वरता, शरीर की तबदीली को विचार में लावें। अभ्यास, वैराग्य द्वारा बुद्धि अंतरमुख होकर अपने आपको समझ सकेगी कि वह मैं ही हूं। जब-तक ऐसा बोध न होवे तब-तक खुलासी[1] बड़ी कठिन है और ऐसी एकाग्रता मन, पवन, नाम के एक रूप में हो जाने से ही प्राप्त होती है।''

भक्त जी:- ''महाराज जी! यह महान शत्रु काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार हर समय हर जीव को घेरे हुए हैं, चाहे मानव है चाहे पशु है, चाहे पंछी है। इन विकारों को एक-एक करके मारा जावे या यह पाँचों इकट्ठे ही मरेंगे तब मुक्ति होगी।''

श्री महाराज जीः– '' बहुत बातें न किया करो। सिर्फ संसार चक्कर को ईश्वर आज्ञा में चलते हुए देखो और ऐसा समझो, तू ही तू है। तू करता, तू हरता, सर्व तेरी आज्ञा। ऐसे-ऐसे सत् भावों द्वारा मन को बारम्बार उधर ले जाओ, अभ्यास में लगाओ।''

भक्त जीः– ''महाराज जी! यह वाणी जो आप उच्चारण फरमाते हैं कब और किस तरह जल्दी-जल्दी प्रकट होती जाती है?''

श्री महाराज जीः– ''जब अन्तर शब्द प्रगट होता है और प्रगट शब्द के बाद बुद्धि जब गगन यानी कपाल में स्थित होती है उस समय सब हालात उसे समझ आ जाते हैं। प्रकृति क्या है? जीव कहां से आया है? कहां जाना है? बन्धन क्या है? निर्बन्ध क्या है? सब गुण-अवगुण लम्ह[1] भर में समझ जाती है। बहिर्मुख होती है या अंतर्मुख होती है हर हालत में सत् चित्त आनन्द में लीन रहती है। वाणी उच्चारण करते समय पद्यों में ईश्वर महिमा इसलिए ब्यान की जाती है ताकि असली भावों को मनमुखी जीव तबदील न कर सकें। महापुरुष की नज़र में जड़-अजड़ एक ही रूप हैं कोई भेदभाव नहीं। सब जड़, चेतन उस ब्रह्म का रूप हैं। लेकिन समझाने के वास्ते सब कुछ कहना पड़ता है। तुम अपना अभ्यास करो। वक्त निकाल कर जो बात हो पूछ लिया करो।''

भक्त जीः– ''कई गुरु लोग कहते हैं कि पहले उपदेश सिमरण ध्यान कर लो फिर भजन अभ्यास की युक्ति बताई जावेगी और कई गुरु कहते हैं कि सिमरण नाम का करो और ध्यान गुरु महाराज की मूर्ति का करो, जो हाज़िर गद्दी पर हों, और भजन आंखें दबाकर कानों में उंगलियां देकर, कुछ इस तरह शब्द सुनने के वास्ते फरमाते हैं। ध्यान त्रिकुटी में करो। जो आंख दबाने से रोशनियां पैदा होती हैं यह उस परम ज्योति का अंग हैं और नीचे के छः चक्करों को छोड़कर एक दम सुरति त्रिकुटी में एकाग्र करने के वास्ते जोर देते हैं। स्वासों के सिमरण को ठीक नहीं बताते। मेरी समझ में यह लम्बा चौड़ा किस्सा नहीं आया।''

श्री महाराज जीः–''आंखें निकलवा दी जायें, कानों में सिक्का डलवा दिया जाये, मुंह सिलाई से सी दिया जावे तब भी मन एकाग्र नहीं होता। जिस करके मन चलायमान हो रहा है, यानी जब-तक प्राणों के निरोध की तरफ नहीं आया जावेगा तब-तक जुगा-जुग तक की असलियत का पता नहीं लग सकता। हां, श्रद्धा विश्वास से सदाचारी जीवन हो जाता है। आज तक जब से योग विद्या शुरू हुई तब से प्राण-अपान की संधि द्वारा ही महापुरुषों ने सत् पद पाया है। चाहे पश्चिम में, चाहे पूर्व में, हिन्दू चाहे मुसलमान हकीकत की पहचान का रास्ता एक ही है, मूर्खो का अलग-अलग है।''

''सब संतों जैसे कि कबीर साहब, नानक जी, पलटू जी, दादू दयाल, दया बाई, सहजो बाई, चरणदास और भी अनेक उस ज़माने में पर-उपकारी पुरुष हुए हैं सबका एक ही सत् उपदेश है। जो अनुभवी सतपुरुष नहीं, जो उनके वचनों को सुना-सुना कर गुरु बनते फिरते हैं वह जूठी पतलें चाटने वाले हैं। हां, सतों के वचनों का श्रवण, मनन, निद्यासन करके निर्मान भाव से सेवक रूप में विचरने

1. पल

वाले भक्तजन मान प्रतिष्ठा से अलग रहकर कुछ न कुछ सुधार कर जाते हैं। बाकी इस तरह सत्पुरुषों के वचन गा-गा कर गुरु बनना ज़्यादा देर तक नहीं रहता। जैसे बरसाती नाले नदियां समय पाकर ख़त्म हो जाते हैं इस तरह उन लोगों का प्रभाव सौ, दो सौ या पचास वर्ष बाद ही ख़त्म हो जाता है।''

भक्त जी:- ''फिर वह कहते हैं कि राधा स्वामी सत्पुरुष वहां पहुंचे हैं जहां राम, कृष्ण, मुहम्मद, गोरख, दत्त, मछन्दर नहीं पहुंच पाये।''

महाराज जी:- ''हां, जिस अवस्था को वह प्राचीन सत्पुरुष पहुंचे हैं उस परम स्थिति को यह हज़ार जन्म पाकर भी नहीं पहुंच सकेंगे। यह ज़बानी जमा खर्च करने वाले इस मार्ग पर चल भी नहीं पाये। जिस गीता ज्ञान को बड़े-बड़े तत्ववेत्ता अभी तक नहीं समझ पाये उसके ब्यान करने वाले क्या कम स्थिति के मालिक थे? यह उनसे बड़े बन बैठे हैं। जो लोग ऐसे अपने मुंह से अपनी बड़ाई करने वाले हैं, जिनका अपना अनुभव कोई नहीं, उनका अंदाज़ा खुद लगा लो। उस परम तत्व की थाह किसने आज तक जानी है। बेअंत प्रभु की माया है। जिसके अंदर रंचक भर भी प्रभु की प्रभता आई उसकी रहनी, कथनी और करनी हैरान कर देती है। वह संसारी माया को एकत्र नहीं करते, वह संसारियों के काम हैं। हर वक्त दीन दयाल की आज्ञा में समय व्यतीत करना ही परम तप, भक्ति और योग है। बाकी 'योग चिंतामणी' प्रसंग के अंदर गुप्त भेद का वर्णन अच्छी तरह किया गया है। उसे किसी वक्त पढ़ना।''

भक्त जी:- ''महाराज जी! आपके गुरु कौन हैं?''

महाराज जी:- ''बच्चू! इनके गुरु परमेश्वर आप ही हैं। संसारी गुरु तब धारण करने की ज़रूरत होती है जब कमी हो। शुरू से यानी बचपन से ही प्रभु ने जागृति बख़्शी है। इनका शरीर जब तीन वर्ष का था तब से ही ऐसी हालत है। अन्दर से हर बात की सूझ थी। मगर संसार में मर्यादा के साथ चलना पड़ता है। प्रारब्धवश आख़री जन्म ऐसी जगह हुआ जिस जगह के लोग व साथी आम संसारी थे। उन जैसा बनकर रहने की आज्ञा रही। इनको कोई पता नहीं, कौन गुरु है कौन चेला? यह संसारी रीति है लेकिन कथन में वह ताकत नहीं आ सकती। चार जुग उस महाप्रभु की महिमा का वर्णन होता रहे तब भी अंत समझ नहीं आता। अथाह, बेअंत मालिक की ज़ात है। इस महा-अवस्था में ख़त्म हो जाने के वास्ते सारी आयु है। उसकी मौज में सुबह-शाम दिखाई नहीं दे रही है। तेरह वर्ष की आयु में एक दिन पानी के किनारे खड्ड में बैठे हुए थे कि इस महामंत्र के तीन शब्द ''ॐ ब्रह्म सत्यम्'' प्रगट हुए। दूसरे दिन ''निरंकार अजन्मा अद्वैत पुरखा'' और तीसरे रोज़ ''सर्व व्यापक कल्याण मूरत परमेश्वराए नमस्तं'' प्रगट हुए। रोज़ाना एक कागज़ पर नोट करते रहे। फिर जब जंगल में या एकान्त में बैठते अथाह विचार अंतर से प्रगट होते लेकिन किसी के आगे नहीं बोलते थे। अकेले ही समां गुज़रता था। जब वक्त आया प्रभु आज्ञा से पहली दफ़ा अहमदाबाद की तरफ जाना हुआ। तब महंत ने कुछ सवाल किये जिन पर कुछ बोलना हुआ, जो

कि उसने लिख लिए। अब तुमने प्रभु प्रेरणा से मौज को बाहर निकाला है। लिखने वाले बनो, यहां किसी बात की कमी नहीं है। अपने आपको भाग्यशाली जानो, यह भी प्रभु की ख़ास कृपा समझें जो कि बैठकर पढ़-लिख रहे हो। सिमरण करो। जब-तक नाद प्रगट नहीं होता तब-तक असली ध्यान नहीं बनता और तब-तक समाधि होनी बड़ी दूर है।

शाह शर्फ पौ ना अतावला।
इक चोट न थीसी चावला॥

भक्त जी:- ''महाराज जी! इसका क्या मतलब है?''

महाराज जी:- ''नानक जी का एक प्रेमी था शाह शर्फ़। वह भी हर वक्त तेरी तरह यही कहते थे कि जल्दी ही हो जावे, तो नानक जी ने फरमाया कि:- चावल का दाना चोटें खाने के बाद साबत और साफ निकलता है। तुम एक चोट भी त्याग, वैराग्य की सहारने के काबिल नहीं हो। धीरे-धीरे मर्यादापूर्वक चलो। इधर तो लेखा साफ है।''

''मुक गया लेना-देना, खू विच पे गईयाँ बहियां''

भक्त जी:- ''महाराज जी! इसका क्या मतलब है?''

महाराज जी:- ''फिर बतायेंगे। अभी तो शुरू हुए हो। इसके बाद आपने वाणी निखेत्र पर्वत पर उच्चारण फरमाई। इस प्रसंग का नाम 'निखेत्र पर्वत गोष्ठ' रखा गया। तप का समय अब समाप्त हो चुका था। लेकिन चौधरी रामदित्ता मल जी की प्रार्थना पर एक विशाल सत्संग, जाने से पहले 16 जुलाई, 1939 को रखा गया। इस सत्संग में दिये गये विचारों का सार शब्दों में यूं रखा जा सकता है:

''हर एक जीव नाम, रूप, गुण, कर्म या हिर्स, फ़ेल, उम्मीद की कैद में गिरफ़्तार है। इस कैद से छूटने के वास्ते खुदा की परस्तिश है। जब-तक जिस्म के बनाव-शृंगार में फंसा हुआ है तब-तक ख़्वाहिशात[1] में जकड़ा हुआ है, वहदत परस्त[2] नहीं हो सकता, यह बुत परस्त[3] ही बना रहता है। जब रूह यानी ज़िदंगी की तलाश शुरू करता है तब वहदत परस्त कहलाता है। चाहे हिन्दू है या मुसलमान, चाहे पारसी है। हिर्स[4] करके फ़ेल[5] करता है। फ़ेल के नतीजे नफ़ा, नुकसान, खुशी और ग़मी में हर समय परेशान रहता है। जब-तक हवस[6] उठ रही है कभी भी वहदत परस्त नहीं बन सकता। नबी, पैग़म्बरों, अवतारों के हुक्म की तामील[7] में सच्ची खुशी भरी हुई है। उनके शरीर यानी जिस्म की परस्तिश[8] फायदेमंद नहीं है।''

23. पश्चिमी पंजाब में आगमन

19सावन के करीब आप निखेत्र पहाड़ से उतर कर निखेत्र गांव में पधारे। रास्ते में आपको वह मुसलमान प्रेमी मिला जो आपके तप के दौरान रोज़ाना दूध पहुंचाया करता था। उसने झुक कर

1. इच्छा 2. ईश्वर परायण 3. शरीर परायण 4. इच्छा 5. कर्म 6. इच्छा 7. अपनाना 8. पूजा

सलाम किया।

श्री महाराज जी:- ''क्या चाहते हो ?''

मुसलमान प्रेमी:- ''पीर जी! दुआ करें, खुदा ईमान बख़्शें।''

महाराज जी:- ''(जवाब सुनकर प्रसन्न हुए और फरमाया) दुनिया की दौलत और बाल-बच्चे क्यों नहीं मांगते?''

मुसलमान प्रेमी:- ''खुदा के तफ़ैल[1] वक्त गुज़र रहा है। दुनिया की चीज़ें फ़कीरों से नहीं मांगनी चाहिए। ईमान मिला तो सब कुछ मिल जावेगा।''

महाराज जी:- ''(मुस्करा कर) खुदा यकीन पाक[2] देवें।'' फिर भक्त जी से इशारा करते हुए कहा, ''बनारसी! इसको दो रुपये दे दो बच्चों के वास्ते।''

मुसलमान प्रेमी:- (रुपये लेकर) ''मैं हर चीज़ से माला-माल हो गया हूं।''

इस वार्तालाप से कितनी महान शिक्षा मिलती है। अगर संतों के दरबार से मांगना हो तो मांगें प्रभु भक्ति।

इसके बाद निखेत्र गांव पहुंचे और चार दिन इस गांव में निवास किया। सत् विचारों द्वारा प्रेमियों को कृतार्थ किया। निखेत्र गांव से आप जलमादा तशरीफ़ ले आये। अभी आप जलमादा गांव की आबादी से फासले पर थे कि काले-काले बादल आसमान पर छा गये और अंधेरा हो गया। ज्यूं ही जलमादा पहुंचे और कुटिया में कदम रखा बारिश बड़े ज़ोर से शुरू हो गई। आपने फरमाया:- ''मेघराज ने बड़ी इंतज़ार की, कि कब दाखिल हों और हम आयें।''

दीनदयाल कृपा सिन्धु भगवान अपने भक्तों की हर समय रक्षा करते हैं। जब कोई प्रभु भक्त महाप्रभु को कर्ता-हर्ता जानता है और सब कुछ प्रभु चरणों में सौंप देता है, जब ऐसा भाव दृढ़ करता है तो कोई कमी नहीं रहती। जो थोड़ी श्रद्धा भी रखता है प्रभु उसके भी सब कार्य सिद्ध करते हैं।

आपने लगभग दस दिन जलमादा में सत् उपदेशों की वर्षा की। सालाना सम्मेलन का समय करीब आ रहा था इसलिए आप 9 भादों को जलमादा से चलकर कोहाला, नथिया गली, हतगतोड़, नवां शहर (ज़िला एबटाबाद, पाकिस्तान) से होते हुए टैक्सला पहुंचे। टैक्सला में जब आपने प्राचीन सामान व चीज़ें देखीं तो फरमाने लगे:-

''किधर गये यह साज़ व सामान बनाने वाले। किसी समय यह चीज़ें बड़ी मेहनत से बनाई गयीं। न बनाने वाले रहे, न उनके इस्तेमाल करने वाले रहे, न ही यह किसी समय रहेंगी। वाह आश्चर्यजनक प्रभु की लीला है।''

जब आप म्यूज़ियम से बाहर निकले तो एक चपरासी खड़ा था। आपने उससे पूछा:- ''कितनी तनख्वाह[3] लेते हो?''

---

1. कृपा 2. ईश्वर विश्वास 3. वेतन

चपरासी:- ''खुदा की फ़ज़ल से 22 रुपये मिलते हैं।''

श्री महाराज जी:- ''गुज़ारा किस तरह करते हो?''

चपरासी:- (ऊपर हाथ उठाकर) ''अल्लाह राज़क[1] है।''

श्री महाराज जी ने प्रसन्न होकर भक्त जी से दो रुपये उसको दिलवाये। टैक्सला स्टेशन पर पहुंच कर देखा कि भक्त जी का चेहरा लाल हो रहा है और पूछा:

श्री महाराज जी:- ''बनारसी! मुंह क्यों लाल हो गया है?''

भक्त जी:- ''बिस्तरा उठाने की वजह से लाल हो गया है।''

श्री महाराज जी- (थोड़ी देर खामोश रहने के बाद) ''बच्चू, प्रभु तुझे सुमति देवें। भगवान के दरबार में तेरा नाम लिखा गया है। अब चाहे चूं कर चाहे चां कर, जाना पड़ेगा। फ़कीरों की सेवा खाली नहीं जाती। दिल से तंगी महसूस न किया कर। खुले दिल हर समय हर हालत में गुज़ारने की कोशिश करो।

''रंग लागत लागत लागत है।
भ्रम भागत भागत भागत है।''

श्री महाराज जी के वचन सुनकर भक्त जी ने प्रार्थना की-कि दास सेवा के सही स्वरूप को नहीं जानता और न ही समझ सका कि किस प्रकार और किस जगह नाम लिखा गया है?

आपने मौज में आकर चंद शब्द उच्चारण फरमाये- जिनको सुनकर भक्त जी के आंसू निकल आये।

फिर आपने भक्त जी की पीठ पर हाथ फेरा और फरमाने लगे:- ''रोने से काम नहीं बनता। विचार की आंखें खोलो। संसार क्या है? किधर से आये हैं? तुम्हारे माता-पिता किधर गये, जिन्होंने तुझे पैदा किया?''

जब पंजा साहब जाने वाली गाड़ी में सवार हुए तो फरमाया:- यही हिसाब है सत् मार्ग का भी। नाम रूपी टिकट संभाल कर रखने में सहूलियत रहती है, निर्भयता से सफ़र तय हो जाता है। ठिकाने पर कभी न कभी पहुंच जाता है।''

जब पंजा साहब पहुंचे तो भक्त जी ने पूछा:- ''महाराज जी! लाखों लोग यहां मुक्ति के वास्ते नहाते हैं। क्या यह ग़लती है?''

श्री महाराज जी:- ''इस तरह मुक्ति नहीं होती। पानी शरीर की मैल को साफ करता है। मन की मैल मन पवन की शुद्धि से और गुरु वाक्य द्वारा साफ हुआ करती है। मन की मैल इन ऊट-पटांग रिवाज़ों से नहीं दूर होती। सत्पुरुष जिस जगह बैठते हैं उस जगह से संसारी जीव बेकार में ही प्रेम बना लेते हैं। यह जगह आज की नहीं बनी हुई, पुरातन समय से यह स्थान चला आता है। यह पाणिनी ऋषि का आश्रम है। इस जगह उस ऋषि के ज़माने में दस हज़ार विद्यार्थी हर समय

1. पालन कर्ता

व्याकरण पढ़ने के वास्ते रहते थे। यह जल उस वक्त भी था। फिर यह जगह बौद्धों के कब्जे में रही है। टैक्सला बड़ी भारी यूनिवर्सिटी थी। पेशावर परशुराम का स्थान था। जमरूद जमदग्नि ऋषि का आश्रम था। इस तरह ज़माना बदलता है और पुरानी जगहों का रूप-रंग बदल जाया करता है। इस जगह गुरु नानक देव जी का बाबा वली कंधारी से संवाद हुआ था। वली कंधारी बड़ी ही रिद्धि-सिद्धि का मालिक था। गुरु नानक बड़े सत्पुरुष थे, उनके पंजे से वह न निकल सका। आख़िरकार बड़े नम्र भाव से सेवा में पेश आया। यह पंजा महाराजा रंजीत सिंह के वक्त खुदवाया गया था ताकि हिन्दू धर्म में जागृति हो। ग़ैर इलाका में हमला करते वक्त आते-जाते एक दो दफ़ा उनका निवास यहां भी रहा है। सुन्दर जगह देखकर उन्होंने पक्की करवा दी, क्योंकि इतिहास में यह जगह आ चुकी थी। जिसका ज़ोर होता है वह कुछ न कुछ कर ही लेता है। बाकी वली कंधारी का जो पत्थर फेंकने की बाबत कहा है वह ग़लत है। पत्थर उसके स्थान से इधर आने का सवाल ही पैदा नहीं हो सकता। पीरों को मुरीद उड़ाया करते हैं। इन बातों में जीवों की कल्याण नहीं। कल्याण सत्पुरुषों के वचन मानने में है। इस संसार का चक्कर चलता रहता है, ''जिसकी लाठी उसकी भैंस।'' वक्त आने पर यह भी बदल जावेगा। एक जैसी सदा प्रकृति की हालत नहीं रहती, तबदीली होती रहती है। एक रस केवल निरंकार परमात्मा ही है।''

आप किसी एकांत स्थान देखने के लिए पंजा साहेब तशरीफ़ ले गये थे ताकि कुछ समय तप में उस तरफ भी व्यतीत किया जावे मगर कोई ठीक जगह नहीं मिली इसलिए आप वहां से चलकर रावलपिंडी तशरीफ़ ले आये और मौसम सर्दी के शुरू में शुभ स्थान गंगोठियां ब्राह्मणां पधारे क्योंकि सम्मेलन का शुभ अवसर निकट आ रहा था।

24. यज्ञ के हालात

शुभ स्थान पर वापस पहुंचने पर आपका प्रोग्राम पहले की तरह चलना शुरू हो गया। सेवादार प्रेमियों ने आज्ञा अनुसार सामान एकत्र करना शुरू कर दिया। सामान कस्बा गुजर खां से ही खरीद कर लाया गया। आस-पास के और दूर-दराज़ से प्रेमी आने लगे। सबको यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए पत्र द्वारा सूचना भेजी गई थी। यज्ञ के दिन हज़ारों की संख्या में जनता श्रद्धा प्रेम से सत्पुरुष के सत् उपदेश श्रवण करने के लिए एकत्र हुई। जो सत् उपदेश वाक्य अमृत आपने फरमाया, उसका साराँश इस प्रकार है:-

सत् उपदेश अमृत

''हर एक जीव चाहता है कि मुझे सुख मिले। मुझे ऐसा आनन्द शांति मिले जिसमें कमी न होने पाये और वह सुख हमेशा बना रहे। जीव इसकी कायमी के लिए कई तरह के यत्न-प्रयत्न

करता है लेकिन उसकी चाहना पूरी नहीं होती। इसका कारण यह है कि वह आत्म परायणता को छोड़कर देह परायणता धारण किये हुए उसकी तलाश कर रहा है। जब-तक देह परायणता को छोड़कर इस देह के अन्दर जीवन शक्ति आत्मा की प्राप्ति का यत्न नहीं करता उसे सुख नहीं मिल सकता। इसके लिए उसे सत्पुरुषों की सत् शिक्षा को धारण करना होगा। देह के भोगों में मर्यादा धारण करनी होगी। प्रभु सिमरण द्वारा मन का पर्दा दूर करना होगा। जब उस परम तत्व की अनुभवता होगी तब उसे तृप्ति होगी। इसके बग़ैर परम सुख की प्राप्ति कठिन है।''

गंगोठियां के आस-पास ज़्यादातर आबादी ब्राह्मण जाति की थी। इस जाति के अन्दर अन्धकार भी बहुत ही ज़्यादा था। यह लोग अनेक प्रकार के तोहमात[1] में फंसे हुए थे। आहार भी अशुद्ध था। मांस मदिरा का प्रयोग अधिक था। बलियां भी देते थे। ब्राह्मण जाति की गिरी हुई हालत का खाका आपने ब्राह्मण की पहचान के प्रसंग में खूब प्रकट फरमाया हुआ है। इस प्रसंग से चंद शब्द बतौर नमूना नीचे दर्ज़ किये जाते हैं:-

मुख से ब्राह्मण अंतर चंडाल।
लोभ धार काढ़ें सब की खाल॥
झूठ तिलक जनेऊ धारे।
झूठा पंडित वेद पुकारे॥
और जीवों को देवे उपदेश।
अपने अन्तर कपट कलेश॥
सन्ध्या तरपन अगनहोतर कीजे।
सरूप विसार पाखंड वरतीजे॥
आतम छोड़ पाखान को पूजे।
सो ब्राह्मण नरक दर सूझे॥
दम्भ फरेब फैलाया जाल।
पित्री करम बहु भांतक भाल॥
प्रभ की पूजा को गुप्त कर दीना।
भूत प्रेत देव पुजीना॥

इस दशा का वर्णन एक पत्र द्वारा भी यूं फरमाया हुआ है :-

''ब्राह्मण जाति का वह आदर्श, जो कि आसमान पर चमक रहा था, आज पाताल की तरफ जा रहा है। इसका कारण क्या है? इसका अच्छी तरह विचार करें। इस कमज़ोरी का कारण यह है कि आत्मिक उन्नति, जो कि असल धर्म का स्वरूप है, अलोप हो गई है और ब्राह्मण कई तरह से तोहमात में मुस्तग़रक (डूबकर) होकर अपनी सामाजिक शक्ति और बुद्धि बल खो बैठे हैं। प्रेमी

जी, ज़माना की हालत देखकर असलियत की तरफ करवट बदलनी चाहिए जिससे कमज़ोरी कतई नाश हो जावे।''

''निखेत्र पर्वत गोष्ठ'' वाणी के प्रकट होने पर जब मेहता अमोलक राम जी को पता लगा तो उन्होंने इसको छपवाने की सेवा के लिए चरणों में प्रार्थना की, जिसे आपने अति कृपा करते हुए स्वीकार कर लिया और इसके छपवाने के लिए भक्त बनारसी दास की ड्यूटी लगा दी।

25. अंधकार व अज्ञानता की हद

जब ''निखेत्र पर्वत गोष्ठ'' पुस्तक छप चुकी तो श्री सत्‌गुरु देव जी की आज्ञानुसार यह बिना कीमत की बांटी जाती रही। उस वक्त आम जीवों की अज्ञानता को दूर करने के लिए एक विचित्र वस्तु सत्‌पुरुष द्वारा प्रगट हुई थी जो कि समता सिद्धान्त का सार थी। इसके अलावा कई संतों व महापुरुषों ने भी ऐसी ही विचित्र वाणियां प्रकट फरमाई हुई थीं। जैसे कि कबीर साहब की वाणी, महात्मा दादू दयाल, महात्मा चरणदास और गुरु नानक देव जी वग़ैरह की वाणियां मौजूद थीं। मगर कई एक व्यक्तियों और बाबू अमोलक राम के रिश्तेदारों ने यह आवाज़ उठाई कि बाबू जी ने रुपया बेकार खर्च किया है। इस वाणी की तो समझ ही नहीं आती। मगर बाद में जब सत्‌पुरुष के अमृत वचन उनके कानों में पहुंचे और उनकी बुद्धियों पर से सत् उपदेशों ने परदा उतारा यानी अंधकार दूर हुआ तब उनको पता लगा कि कितनी बहुमूल्य वस्तु उनके हाथों में आई है जो कि जन्म-जन्म की जलन को दूर करने वाली है।

26. मटोर पहाड़ की चोटी पर ब्राह्मण जाति के सुधार के लिए कठिन तप

यज्ञ का कार्य समाप्त होने पर जब सब संगत चली गई तो एक दिन निकट क्षेत्र के प्रेमियों ने बारी-बारी आपके चरणों में प्रार्थना की-कि उन्हें सत्‌संग की अमृत वर्षा से तृप्त करने के लिए उन पर कृपा करें ताकि आपके शुभ विचारों द्वारा अपना सुधार कर सकें। एक ब्राह्मण के प्रेम भरे वचन सुनकर आप मुस्करा दिए और फिर धीमी आवाज़ से फरमाने लगे:-

''आप लोगों को सत्‌संग का काफी समय मिल चुका है। मगर आप लोग फ़कीरों के वचन मानने वाले नहीं हैं, सिर्फ देखा-देखी चाल चलते हो। जो कुछ फ़कीरों के वचन सुनते हो उन पर अमल करो तो आप लोगों की ज़िन्दगी में सुधार हो सकता है। बग़ैर अमल के क्या हो सकता है? कुल आमल[1] बनने की कोशिश करो। बेकार में इनका समय व्यर्थ न करो, और भी जनता काफी है जो इन फ़कीरों के वचन सुनने की हकदार है। सम्मेलन का कार्य ईश्वर आज्ञा से समाप्त हो गया है

अब सत्संग का समय किसी को नहीं मिलेगा। किसी एकान्त जगह तप के लिए चले जावेंगे। हां, आप प्रेमी तप के लिए किसी जंगल में जगह की खोज करें ताकि तप का प्रोग्राम पूरा कर सकें।''

आपकी आज्ञा को सुनकर लहड़ी नामक गांव के प्रेमियों ने उस गांव से एक मील के फासले पर जंगल में एक पानी की बावली, जो बाबा बड़खंडी शाह के तप की जगह रह चुकी थी, बतलाई।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''उस बावली के साथ जो रास्ता चलता है उस पर आना-जाना काफी रहता है।'' इस प्रकार सब प्रेमियों ने बारी-बारी अपनी तज़वीज़ें पेश करके जगहें बतलाईं। सबके विचार सुनने के बाद आपने फरमाया:-

''जो ईश्वर की आज्ञा। अभी यह कुछ नहीं कह सकते कौन सी जगह तप की ख़ातिर जायेंगे''? सत्पुरुष बड़े दयालु होते हैं। आपके आस-पास की ब्राह्मण जाति के सुधार की ख़ातिर कुछ दिनों के बाद माह कार्तिक के आख़िर शुभ स्थान से चलकर बस के द्वारा मटोर पहुंचे। वहां के बमयाला गांव की पहाड़ी का पता पूछा। झाड़ियों से घिरे और पत्थरों से ढके रास्ते को तय करके शाम साढ़े चार बजे के करीब आप उस पहाड़ी की चोटी पर पहुंचे। वहां इधर-उधर देखकर आपने बैठने का एक स्थान निश्चित किया। इधर बमयाला के बख्शी हीरानंद जी अपने जंगल में एक अजनबी को घूमता देखकर जंगल की तरफ बढ़े और अपने साथ एक और आदमी को भी साथ लेते गये। जब ऊपर जंगल में पहुंचे तो क्या देखते हैं कि श्री महाराज जी एक बबूल के पेड़ के नीचे पत्थरों और कंकड़ों के आसन पर विराजमान हैं? आपको देखकर दोनों प्रेमी हैरान हो गये। बख्शी हीरानंद जी वही थे जिनके साथ पेशावर में प्रहलाद भक्त के बारे में संशय को दूर करने के लिए श्री महाराज जी ने टाँग तन्दूर में डाली थी। इसलिए हैरान होकर बख्शी जी ने पूछा:

बख्शी हीरानंद:- ''महाराज जी! आप किस रास्ते से यहां जंगल में पहुंचे? रास्ता तो हमारे गांव से ही गुज़रकर आता है और तो कोई रास्ता नहीं है।''

महाराज जी:- (मुस्करा कर) ''प्रेमी! रास्ता दिखाने वाले तो भगवान आप ही हैं। उसकी कृपा से यहां पहुंच गये हैं।''

बख्शी हीरानंद जी:- (हाथ जोड़कर) ''महाराज जी! आप हमारे घर को चलकर पवित्र करें। कुछ दिन वहां ठहरें। यहां जंगल में कुटिया तैयार करवा दी जावेगी, फिर आप यहां आ जाना। इस सर्दी के मौसम में यहां बग़ैर कुटिया के समय नहीं गुज़र सकेगा। आप कृपा करें और मेरे साथ मेरे मकान पर तशरीफ़ ले चलें।''

महाराज जी:- ''प्रभु कृपा से सब अच्छा होगा। तुम चिंता किसी किस्म की न करो। फ़कीरों को झोंपड़ियों की ज़रूरत नहीं है। यहां सिर्फ़ माह मघॅर गुज़ार कर दूसरी जगह चले जावेंगे।''

गांव में चलने की प्रार्थना अस्वीकार हो जाने पर प्रेमी हीरानंद ने जाकर गांव निवासियों से ज़िकर किया और गांव से बहुत सज्जन इकट्ठे होकर श्री चरणों में हाज़िर हुए। गांव में चरण कंवल डालने की प्रार्थना की, मगर आपने जाने से इंकार कर दिया और फरमाया:-

महाराज जीः- ''ऐसा नहीं हो सकता। आप लोगों को सर्दी की चिंता नहीं होनी चाहिए। अगर इनको सर्दी के मौसम का खतरा होता तो यहां न आते। यह तो प्रभु प्रेम में मस्ताने हो चुके हैं। इनको किसी किस्म की चिंता नहीं है। अगर सर्दी की चिन्ता होती तो घर में बैठे रहते। आप लोगों के दर्शन करने से सर्दी इनके नज़दीक नहीं आयेगी। यह तो सिर्फ़ प्रेम भाव के भूखे हैं और किसी वस्तु की चाहना नहीं है। सबको पता होना चाहिये कि यह तप की ख़ातिर जंगल में आये हैं। इसलिए कोई भी व्यक्ति यहां इनके पास नहीं आ सकेगा। सिर्फ़ एक प्रेमी को सेवा का समय मिलेगा। इसलिए सब पुरुषों, माताओं और बच्चों से प्रार्थना है कि यहां आने की तकलीफ़ न करें और न किसी और को यहां आने की इज़ाज़त दें। आप लोग घबरायें नहीं, तप के प्रोग्राम के बाद कुछ दिन सत्संग का समय मिल जायेगा। अब रात्रि का समय हो चुका है इसलिए आप सबसे हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि आप सब लोग वापिस तशरीफ़ ले जावें।''

यह वचन सुनकर किसी को बोलने की हिम्मत न हुई। सब लोग घरों को वापिस चले गये। सिर्फ बख़्शी हीरानंद जी को सेवा का शुभ अवसर बख़्शा गया। आप सुबह पानी ले जाकर श्री महाराज जी को स्नान करवा देते और फिर नौ बजे के करीब सिर्फ़ चाय श्री महाराज जी की आज्ञा अनुसार देकर वापस लौट आते।

आपने पहली मघॅर से कठिन तप शुरू किया और सख़्त सर्दी के बावज़ूद भी एक लोई में ही मघॅर का महीना एक पहाड़ी की चोटी पर गुज़ारा। इस तरह यह अंखड तप पूरा माह जारी रहा।

आपके तप के दौरान जब वहां के पीरों को पता लगा कि कोई हिन्दू फ़कीर पहाड़ी की चोटी पर आ बैठा है तो उन्होंने निश्चित किया कि उस रात आपको ख़त्म कर दिया जावे। जब रात हो गई और अंधेरा हो गया तो चार आदमी कुल्हाड़ियों वग़ैरह से लैस होकर पहाड़ी की तरफ बढ़े। जब वह लोग श्री महाराज से कुछ फासले पर पहुंचे तो उन्हें कुछ ऐसा भयानक दृश्य दिखलाई दिया कि उनकी बढ़ने की हिम्मत न रही और वापिस भाग गये। दूसरी रात फिर इस तरह वह कत्ल के विचार से गये। लेकिन पहले से भी अधिक भयानक दृश्य नज़र आये और वह डर कर वापिस भाग गये। तीसरे दिन फिर गये। लेकिन फिर भी ऐसा ही उन्होंने देखा कि कोई डरावनी चीज़ उन्हें खत्म करने वाली है। जब इन लोगों ने देखा कि सत्पुरुष को कत्ल करना असम्भव है तो उन्होंने सारा किस्सा पीरों को सुनाया और जो-जो भयानक दृश्य देखे थे ब्यान किये। पीरों ने यह बात सुनी तो कहने लगे कि-इनको पता नहीं था कि वह बड़ी करनी वाले फ़कीर हैं। हमने बड़ा गुनाह किया है। इसलिए पीर और वह लोग जो कत्ल करने जाते रहे कदमों में जाकर गिरे और अर्ज़ कीः- साईं जी! हमने बड़ा गुनाह किया है। हम बड़े गुनाहगार हैं। आप हमें बख़्श देवें। आपने फरमायाः-

''प्रेमियों! आपने कोई गुनाह नहीं किया है जिसके लिए फ़कीर आपको बख़्श दें।'' यह शब्द सुनकर उन्होंने तीन रात कत्ल करने के लिए आने का किस्सा सुनाया और माफ़ी मांगी। इस पर परम दयालु सत्पुरुष ने फरमायाः- ''प्रेमियों! कोई बात नहीं, फ़कीर किसी का बुरा नहीं चाहते।''

पीर और वह लोग आपके इस फ़रमान से बड़े प्रभावित हुए और अदब से दुआ सलाम करके वापिस लौट गये। कुछ समय बाद इन सब बातों का पता लगने पर मेहता अमोलक राम जी ने, जिन्हें सत्पुरुष बाबू कहकर बुलाते थे, आपसे पूछा:-

बाबू जी:- ''महाराज जी! जब वह लोग आपको कत्ल करने आते थे तो क्या आप वह डरावने रूप बना लेते थे जो उन्हें दिखायी पड़ते थे?''

श्री महाराज जी:- ''नहीं प्रेमी! फक़ीर कुछ नहीं करते थे। यह तो अपनी आनन्दित अवस्था में बैठे रहते थे। उन लोगों की अपनी अशुद्ध भावनायें ही वैसी डरावनी शक्लें उनके सामने खड़ी कर देती थीं।''

एक दिन प्रेमी हीरानंद जी ने बमयाला की संगत की तरफ से श्री महाराज जी की सेवा में प्रार्थना की:- महाराज जी! कृपा करके एक दिन हमें सत्संग से निहाल करें। थोड़ी देर विचार करने के बाद आपने संगत की प्रार्थना स्वीकार कर ली और 25 मघॅर, इतवार शाम के तीन बजे से चार बजे तक का समय निश्चित कर दिया और बख़्शी हीरानंद से कह दिया- ''प्रेमी फ़कीरों के सिर्फ दर्शन से मुक्ति चाहते हैं। फ़कीरों के सिर्फ दर्शन से कैसे मुक्ति मिल सकती है? जब-तक यह लोग फ़कीरों के सत् उपदेश सुनकर उनके वचनों पर अमल नहीं करेंगे, उनका भला नहीं हो सकता है।''

बख़्शी हीरानंद जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! ईश्वर कृपा से आपके आदर्श जीवन का इन लोगों पर काफी असर हो चुका है। काफी समय से आपके अमली जीवन से यह लोग प्रभावित हो रहे हैं।''

सत्संग वाले दिन प्रेमी लगातार पहाड़ी की चोटी की तरफ आने लगे। हिन्दू, मुसलमान, सिख सब जातियों के लोग सत्संग में हाज़िर हुए और सत्संग का लाभ उठाया। सत्पुरुष के सत् विचारों को सार रूप में नीचे दिया जाता है।

सत् उपदेश अमृत

''जीव शरीर रूपी संसार को धारण करके हर समय तृष्णा की अग्नि में जलता रहता है। जब-तक तृष्णा का रोग लगा है। शांति का कुछ पता नहीं लग सकता। पांच तात्विक शरीर तृष्णा का सागर है। जितनी तृष्णा अधिक है उतना ही कष्ट अधिक है। जितनी तृष्णा कम है उतना ही सुख है। तृष्णा एक गहरा दु:ख है जिससे छूटने के वास्ते ही साधन किये जाते हैं। ज्यूं-ज्यूं साधना में दृढ़ता हासिल होती है त्यों-त्यों तृष्णा के रोग से मुक्ति मिलती जाती है। देखो, इन्सान की ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं, इसलिए प्रभु की इबादत बंदगी करनी बहुत ज़रूरी है। बग़ैर इबादत और रियाज़त के इस अमूल्य समय को खोकर जीव कई जन्म धारण करता है। जितने भी ईश्वर के प्यारे संसार में प्रगट हुए हैं वह स्थायी खुशी को प्राप्त करके हमेशा के लिए तृप्त हुए और संसारी लोगों की बेहतरी की ख़ातिर यत्न-प्रयत्न करते रहे। वह खुश-नसीब लोग हैं जिनको असली आनंद प्राप्त हुआ है। इस आनन्द को पाकर संसार में किसी वस्तु को प्राप्त करने की तृष्णा नहीं रहती। उनका

जीवन ही पूर्ण हुआ है और ऐसे महापुरुषों का जीवन दुर्लभ है। वह ही रहनुमा या गुरु की पदवी के हकदार हुए हैं। संसारी लोगों ने कई मज़हब और पंथ धारण कर रखे हैं। मगर ईश्वर के प्यारों का एक ही रास्ता होता है। वह किसी मज़हब से वास्ता नहीं रखते। बल्कि सबके लिए एक सा सच्चा हुक्म लेकर आते हैं। उन्होंने हकीकत को जाना है। ऐसे महात्मा सत् कर्मों के वास्ते सूर्य के समान रोशन होते हैं। तुम लोग खुशनसीब हो जो सत्संग में शामिल हुए हो। कृपा करके अपने जीवन को पवित्र बनाओ। अपने आदर्श के सही रक्षक बनो। पाप, कपट और दुराचारी जीवन से तब ही रिहाई हासिल कर सकोगे जब तुम लोग रोज़ाना सत्संग में एकत्र होकर अपने जीवन को निर्मल करने का यत्न करोगे। अगर रोज़ाना सत्संग न कर सको तो हफ़्तेवारी सत्संग लाज़मी (अवश्य) होना चाहिये और महापुरुषों की पुस्तकों द्वारा शुभ विचार हासिल करो ताकि सही धर्म ईमान को जान सको।''

सत्संग समाप्त होने पर जब जनता को प्रसाद देने का वक्त आया तो बांटने वाले प्रेमियों के दिल में संशय पैदा हो गया कि सत्संग में मुसलमान भी शामिल हैं इसलिए हिन्दू, सिख प्रसाद नहीं लेंगे। वह कुछ सोचने लगे। श्री महाराज जी इन प्रेमियों के अन्तर की भावना को समझ गये और फिर निम्नलिखित वचनों द्वारा उनको सत् उपदेश दिया।

''एक दूसरे के मुंह की तरफ क्या देखते हो? प्रसाद क्यों नहीं तकसीम[1] करते? अगर किसी प्रेमी को एतराज़ होवे तो वह प्रसाद न लेवे। यहां फ़कीरों की निग़ाह में सब लोग समान हैं और तोहमात[2] को छोड़कर पवित्र जीवन की तरफ आओ। पवित्र जीवन तब ही होगा जब तुम लोगों में एक दूसरे की सेवा करने वाली बुद्धि जागृत होगी। दूसरे की सेवा करने वाले बनो। अपने सुख को हासिल करने की कोशिश न करो। जितने भी ईश्वर के प्यारे संसार में प्रगट हुए हैं सबका मिशन एक था। वह प्रभु प्रेम में लीन रहे। इनके अनुयाईयों ने कई मतभेद बनाये। विचार करो कि दूसरे के साथ नफ़रत करना कितनी बड़ी जहालत[3] है।''

मुसलमान जनता पर इसका बड़ा गहरा असर हुआ। इस पर मटोर शहर के मुसलमानों ने आपको शहर में ठहरने और रोज़ाना सत्संग शुरू करने की प्रार्थना की। इस पर आपने फरमायाः- ''जन्म से इनका स्वभाव ऐसा चला आ रहा है कि ज़्यादा रबी[4] मौज में डूबे रहते हैं और सच्चे मालिक के ध्यान में मग्न रहते हैं, इसलिए शहरों और आम आबादियों से फासले पर ही ठहरते हैं। आप लोगों के बड़े नेक ख़्याल हैं जो इतनी श्रद्धा से फ़कीरों के वचनों को सुनकर अपने अन्दर जगह दी है। इसलिए यही प्रार्थना है कि अपने जीवन यानी ज़िन्दगी को खुशबूदार बनाओ। दूसरों की ख़िदमत[5] करो। संसार में पाने योग्य एक ईश्वर का दीदार[6] है। इसलिए इस जिस्म में ही असलियत की तहकीकात[7] करो। जो कुछ सुना है उस पर अमल करो। मालिक की कृपा से एक हफ़्ते के करीब यहां जंगल में और ठहरेंगे। तप के प्रोग्राम के बाद बमीयाला गांव में सम्मेलन होगा। उस

---

1. बाँटना 2. आडम्बर 3. मूर्खता 4. ईश्वरीय 5. सेवा 6. दर्शन 7. खोज

समय सब दर्शन देवें। सम्मेलन के बाद किसी दूसरी जगह चले जायेंगे। इनकी न तो दौलत इकट्ठा करने की ख़्वाहिश है, न किसी और चीज़ की। सिर्फ रबी शौक में दीवाने हुए फिरते हैं।''

आपके इन वचनों को सुनकर संगत शांत सी हो गयी। जब दोबारा जंगल में सत्संग करने की प्रार्थना की गई तो आपने फरमाया :

''फ़कीरों को ज़्यादा मजबूर नहीं करना चाहिये। फ़कीर श्रद्धा और प्रेम के भूखे होते हैं। इसलिए आप लोगों को, जब-तक यहां हैं समय मिलता रहेगा।''

27. बमीयाला में सम्मेलन

अगले इतवार बमीयाला गांव में सत्संग रखा गया। इसमें न सिर्फ बमीयाला व मटोर निवासी ही शामिल हुए बल्कि आस-पास की जनता भी शामिल हुई। इस सत्संग में आपने जो सत् उपदेश की वर्षा की वह इस तरह थी।

सत् उपदेश अमृत

''यह कालब (शरीर) कर्मों का जंतर[1] है। इसलिए कर्म या फेल हर घड़ी हर लम्ह होते रहते हैं। कर्मों का अभिमानी होने से जीव को कई शरीर अख़्तियार[2] करने पड़ते हैं, जिससे जन्म- मरण के गहरे अज़ाब[3] में फंस जाता है। विचार करो कि ये जन्म का सिलसिला क्या है? यह शरीर पैदाईश के समय कितना था? नेक व बद[4] की कितनी तमीज़[5] थी? शरीर की अवस्था के साथ-साथ तृष्णा यानी हिर्स का रोग कितना बढ़ता गया? इस रोग का इलाज यह तमाम ज़िंदगी न कर सका। जवानी से लेकर बुढ़ापे तक तृष्णा का रोग उसे नाच-नचाता रहा। ज़रा सोचो, इस नापायेदार[6] शरीर के भोगों से क्या तृप्ति हासिल हुई है? इस गहरे अज़ाब से छूटने के वास्ते असलियत की तहकीकात[7] करो। असली खुशी जो आत्म तत्त्व या ज़िंदगी है उसे कोशिश करने से एक न एक दिन हासिल कर लोगे। इसलिए सत्पुरुषों, पीर, पैग़म्बरों ने जो उसे हासिल करने के साधन बतलाये हैं, उन्हें धारण करो। आपसे प्रार्थना है कि अपने जीवन को खुशबूदार बनाओ और आत्म तत्त्व को प्राप्त करके दायमी[8] सुख का जीवन बसर[9] करो।''

इस सत्संग के बाद आप तकरीबन एक सप्ताह बमीयाला गांव में रहे और इसी निवास के दौरान आपने ''विज्ञान मात्रा'' अनुभवी वाणी उच्चारण फरमाई, जो श्री समता प्रकाश ग्रन्थ का हिस्सा बन चुकी है। इसका नमूना नीचे दर्ज है।

---

1. यंत्र 2. धारण 3. दु:ख 4. बुरा 5. पहचान 6. नश्वर 7. खोज 8. स्थायी 9. व्यतीत

कलह कलेश संकट हरे, रिद्ध सिद्ध आवे हाथ।
विज्ञान मात्रा श्रवण करे, निर्भय परसे नाथ॥
जां से उत्पत होया, तां में भये लवलीन।
'मंगत' कथा विज्ञान की, कोई गुरमुख लेवे चीन॥
मन जीतया जग जीतया, भयो शाहन का शाह।
'मंगत' काटी कर्मगत, टूटे भरम असगाह॥
इस सागर संसार में, सुनयो सत् परसंग।
'मंगत' नाम प्रभ सार है, जो व्यापे सभी रंग॥
नित ध्याओ अंतरगत माहीं, एक नाम अगाध।
'मंगत' तत विज्ञान से, परसी सुन्न समाध॥

28. कोहाला, जलमादा की तरफ प्रस्थान

माह दिसम्बर, 1939 में मटोर बमीयाला से शुभ स्थान गंगोठियां वापिस तशरीफ़ ले आये और गंगोठियां में निवास के दौरान आपने अपना प्रोग्राम जारी रखा, यानि दिन के समय भोजन से फ़ारिग होकर आप पीर ख़्वाजा जंगल में तशरीफ़ ले जाते और रात को तरेल नदी के किनारे वाली जगह तशरीफ़ ले जाकर समाधिस्त हो जाते। जड़-महलों से, जो कस्बा गूजर खां के कुछ फासले पर था, कुछ प्रेमियों ने सेवा में हाज़िर होकर उस जगह पर चरण कंवल डालकर पवित्र करने की प्रार्थना की। आपने स्वीकार कर लिया और कुछ दिन वहां के प्रेमियों को सत् उपदेशों द्वारा तृप्त किया और चंद दिन के बाद वापिस तशरीफ़ ले आए। इस दौरान कोहाला, जलमादा के प्रेमियों ने सेवा में प्रार्थना की:- आप उस तरफ तशरीफ़ ले आएँ और सत्संग की अमृत वर्षा से इन्हें निहाल करें। आपने प्रार्थना स्वीकार की और मई, 1940 में रावलपिंडी तशरीफ़ ले गये।

अन्न का त्याग

रावलपिंडी में आप प्रेमी लक्ष्मण दास के गृह पर कुछ देर ठहरे। उनकी धर्मपत्नी ने बड़े प्रेम से बहुत से पकवान तैयार करके थाल में परोसकर श्री महाराज जी के आगे रखे। आप देखकर हैरान हुए। आप बड़ी सूक्ष्म ख़ुराक के रूप में थोड़े से अन्न को ग्रहण करते थे। आपने इस थाल में से थोड़ा सा अन्न लेकर ग्रहण किया जिसे देखकर पंडित जी की धर्मपत्नी की आंखों से आंसू उमड़ आये। उसे देखकर आपने विचार किया कि तीन चार घंटे इस अन्न को तैयार करने में लग गये और इनका थोड़ा सा अन्न ग्रहण करना दु:ख का कारण हुआ और मन को ठेस लगी। आपने उस समय से अन्न का ग्रहण करना बंद कर दिया और वहां से बस द्वारा कोहाला पहुंचे। कोहाला, जलमादा निवासी प्रेमियों ने चरणों में प्रणाम करके आपको ले जाकर जलमादा कुटिया में ठहराया। आपने यहां

भी प्रोग्राम के मुताबिक ही समय तप में व्यतीत किया। आप पहले की तरह रात को नीचे जंगल में तशरीफ़ ले जाते और दिन को कुटिया में आनंदित अवस्था में बिराजमान रहते। 25 मई को इस जगह 'सत्सार प्रकाश' वाणी प्रकट फरमाई।

इस ''सतसार प्रकाश'' प्रसंग में, जैसा कि प्रसंग के नाम से ही पता चलता है, आपने बतलाने की कृपा फरमाई हुई है कि सत्सार का प्रकाश कैसे होता है? और इसमें वर्णित साधनों को धारण करने से आसानी से जीव आवागमन के चक्कर से मुक्ति पा सकता है। इस प्रसंग के चंद शब्द भी बतौर नमूना दर्ज़ किये जाते हैं।

सत् सार निध्यास से, मन तन आवे शांत।
जन्म मरन जाये दूषना, कलविख हरे भरांत॥
सत साधन ही सार है, मानुष जनम की मौज।
मिल सत संगत नित गुनी, सत की कीजो खोज॥
भरम गुबार अति दुःखदाई, जीव को देवे त्रास।
सत औखद जो जन खाये, तिन की मिटी प्यास॥
सत औखद प्रभ रूप है, जो नित आनंद की खान।
जिस जन ने सेवन किया, जो तीन लोक परवान॥
परम जतन परम रतन, परम तेज परकाश।
परम गति सत रूप है, निर्भय पद अबनास॥
परम ज्ञान परम ध्यान, परम विवेक विचार।
परमारथ तत सार है, परम धाम निरधार॥
परम भक्ति परम युगती, परम योग निर्वास।
परम सिद्धता जगत में, सत सार परकाश॥
पूरन भाग सो जीव है, जो सत में रहे परवीन।
तप योग और साधना, केवल सत आधीन॥
गुरमुख विरले जगत में, नज़र सराफ़ी पाई।
मानक लख हरि नाम का, त्रिखा जीव बिनसाई॥
अचरज सत का खेल है, खेले कोई गुनवन्त।
'मंगत' नित बल जात है, सत साधे जो संत॥

इन शब्दों की अमृत वाणी से साफ पता लगता है कि कोई विरला गुरुमुख ही सत् की तलाश करता है। गीता में भी भगवान कृष्ण ने फरमाया हुआ है कि लाखों में से कोई एक इस मार्ग पर चलता है और उनमें से कोई ही इसमें कामयाब होता है। सत्पुरुष ने भी फरमाया है कि कोई

गुणी ही यह खेल खेलता है और आगे यह भी फरमाया है कि जो सत् की साधना करता है वह ही संत है।

एक दिन आप आपनी मौज में बिराजमान थे कि कोहाला निवासी प्रेमियों ने प्रार्थना की:- प्रभु! आपकी परम दयालुता से हम आपके सेवक दिन व दिन बढ़ रहे हैं और ऐसा विचार है कि आपस में मिलते समय हमें भी किसी महावाक्य का उच्चारण करना चाहिये। चूंकि आपने परम कृपालुता करते हुए हम अंधमति जीवों के कल्याण के लिए अनुभवी वाणी प्रकट फरमाई है इसलिए यह भी ज़रूरी मालूम होता है कि सबका एक सांझा महावाक्य होना चाहिये जिसका संबंध किसी मज़हब सम्प्रदाय से न हो बल्कि मानव मात्र के लिए प्रिय हो।

श्री महाराज जी:- ''प्रेमियों! जल्दी न करो, लोग कहेंगे एक और नया पंथ बन गया है, फिर इसके वास्ते बड़ी कुर्बानी की ज़रूरत है। जहां तक परस्पर सत्कार का संबंध है यह अभी निश्चित हो सकता है।''

इस पर आपने हाज़िर संगत के सामने कुछ शब्द काग़ज पर लिख कर रखे। संगत ने उन शब्दों में से ''ॐ ब्रह्म सत्यं सर्वाधार'' को चुन लिया। जिसका सरल अर्थ समझाते हुए फरमाया:

''पैदा करने वाला, पालनहार, मंगलकारी ईश्वर सत् है और सर्व आधार है'' यानी वह ही तीन काल दायम कायम[1] है और सबका आधार है।''

अब समदर्शन योग वाणी पूर्ण हो चुकी थी। मेहता अमोलक राम जी को पता लगने पर उन्होंने चरणों में इसकी छपवाई की सेवा प्राप्त करने की प्रार्थना की। बड़ी कृपा करते हुए आपने इसे स्वीकार कर लिया और भक्त जी की ड्यूटी इसकी छपवाई के लिए भी लगा दी।

29. चिनारी में सत् प्रचार

माह जून, 1940 को जलमादा में विशाल सत्संग का प्रबंध वहां के प्रेमियों ने करके सत्संग में शामिल होकर सत् उपदेशों की अमृत वर्षा से तृप्ति प्राप्त की। इसके बाद श्री महाराज जी चिनारी की तरफ रवाना हो गये। चिनारी कस्बा श्रीनगर कश्मीर की तरफ जाते हुए रास्ते में पड़ता था। आस-पास की आबादी मुसलमानों की ज़्यादातर थी जो कि सामान कपड़ा वग़ैरह यहीं से खरीदते थे, इसलिए यह कारोबारी मंडी थी।

यहां पहुंच कर आपने मंदिर में निवास किया। चूंकि आपका लिबास साधुओं की तरह भगवे रंग का नहीं था, बल्कि सफेद खद्दर के कपड़े पहने हुए थे और शरीर भी दुबला-पतला था, इसलिए चिनारी निवासियों को यह निश्चय न हुआ कि आप महात्मा हैं। अक्सर अमरनाथ जाते हुए साधु इसी रास्ते से गुज़रते थे और वह भगवे कपड़े पहने होते थे और आमतौर पर होते भी हृष्ट-पुष्ट थे। इसके अलावा उनमें बहुत से भंग, तम्बाकू चरस वग़ैरह का भी सेवन करते थे।

---
1. स्थित

चिनारी निवासी भी शराब, मांस व तम्बाकू का इस्तेमाल करते थे। इसलिए चिनारी निवासियों का जीवन भी दूषित था और धर्म से कोसों दूर थे। इस मंदिर का पुजारी भी हर समय तम्बाकू पिया करता था। श्री महाराज जी को देखकर कहने लगा :-

''महात्मा जी! यहां आपकी बात कोई नहीं सुनेगा। यहां के सब शहरी मांस, शराब का इस्तेमाल करते हैं और जुआ खेलते हैं। आपको तो उगराही (दान) भी कोई नहीं देगा।'

यहां आपके साथ जलमादा निवासी प्रेमी सेवा राम जी भी आये हुए थे। उन्होंने बाज़ार में कुछ चिनारी निवासियों को बतला दिया था कि श्री महाराज जी किस वास्ते चिनारी पधारे हैं। इसलिए थोड़े समय के बाद ही वहां के प्रसिद्ध सज्जन गोकल शाह जी भोजन बनवा कर ले आये और श्री चरणों में भोजन पान करने की प्रार्थना की।

महाराज जी:- ''प्रेमी! बग़ैर पूछे भोजन क्यों ले आये हो?''

गोकल शाह जी:- ''महाराज जी! यह सब कुछ आपकी बख़्शीश है इसमें पूछने वाली कौन सी बात है।''

इस पर गोकल शाह जी को समझाया गया कि पूज्य महाराज जी सिर्फ़ चाय पीते हैं, अन्न ग्रहण नहीं करते। इस पर बाकी प्रेमियों को भोजन कराया गया और शाम को मंदिर में सब प्रेमी सत्संग में एकत्र हो गये। इस सत्संग में श्री महाराज जी ने मांस, शराब जैसे तमोगुण और राक्षसी आहार पर विचार प्रकट फरमाया। कहते हैं कि कुछ प्रेमियों ने आपका दुबला-पतला शरीर देखकर शक किया कि आप तपेदिक के मरीज़ हैं और हवा-पानी की तबदीली (बदलाव) के लिए यहां पधारे हैं। इसलिए बावज़ूद बुलाने के उन्होंने परवाह न की और शुभ विचारों को श्रवण करने का प्रयत्न न किया। जब श्री महाराज जी ने वहां के लोगों की यह विचारधार देखी तो फरमाया:-

''प्रेमियों! जिस मर्ज़ के यह फ़कीर मरीज़ हैं वह आप में से कई एक को लाहक[1] होगी।''

आपने चिनारी में दरियाये जेहलम के किनारे बने हुए उस कमरे में विश्राम किया जिसे लाला गोकल शाह ने बनवाया हुआ था यह स्थान बड़ा सुन्दर व रमणीक था। कश्मीर की घाटी वैसे ही सुन्दर व मन मोहनी है, मगर इस स्थान की शोभा दरियाये जेहलम की वज़ह से थी जो ज़रा नीचे बह रहा था। सामने पहाड़ से एक और नदी आकर मिल रही थी और साथ ही लोगों को आर-पार जाने के लिए लोहे का रस्सा लगा हुआ था।

इस जगह यानी चिनारी की जनता कि गिरे हुए जीवन को ध्यान में रखते हुए सत् जागृति लाने के लिए आपने सत्संग निश्चित कर दिया और अपने पास से प्रसाद बनवा कर मंगवाया। सत्संग में शामिल होने के लिए चिनारी निवासी प्रेमियों को सूचना दी। जब वे आये तो उन्हें पता लगा कि सत्पुरुष ने अपने पास से ख़र्च करके प्रसाद बनवा कर मंगवाया है। तो उनमें से एक ने अर्ज़ की-कि जितने पैसे आपने प्रसाद पर ख़र्च किये हैं वह उससे ले लेवें।

---

1. लगना

श्री महाराज जीः- (हँसकर) ''प्रेमियों! फ़कीरों ने तो अपना खून कोहाला में पिलाया है, आपको तो प्रसाद ही खिलाया है। आप लोग इनके नज़दीक आने से क्यों डरते हो? फ़कीर तो घर-घर जाकर आप लोगों को नया जीवन दे रहे हैं। आगे आप लोगों की किस्मत है।''

इन वचनों का चिनारी निवासियों पर बड़ा असर हुआ जिससे कुछ सज्जनों की रुचि सत्संग में बढ़ने लगी।

श्री महाराज जी को दरियाये जेहलम के किनारे वाली कुटिया में निवास किए अभी एक-दो दिन ही हुए थे कि कठाई वाले लाला जीवन्दा शाह आपके दर्शनों के लिए आए। चिनारी से कठाई जाते हुए वह वहां ही नीचे दरिया को रस्से से पार करते थे। लाला जीवन्दा शाह पर आपके सादा जीवन और सादा रहनी, तप और त्याग का बड़ा असर हुआ और कठाई ले जाने की प्रार्थना की। सत्पुरुष उनकी प्रार्थना पर कठाई तशरीफ़ ले गये। चूंकि आपका विचार किसी एकांत जगह तप में समय व्यतीत करने का था इसलिए प्रेमी जीवन्दा शाह आपको नड़धज्जियां ले आया और आपको वह जगह दिखाई। यह गांव चारों तरफ से ऊंचे-ऊंचे काले रंग के पहाड़ों से घिरा हुआ था और आबादी ज़्यादातर मुसलमान जनता की ही थी। यहां एक नदी के किनारे कुटिया बनी हुई थी जो आबादी से कुछ फासले पर थी। आपने इस जगह को पसंद किया और वहीं डेरा लगा दिया। इस शुभ स्थान पर ''सत तत महिमा'' नामी वाणी का प्रकाश हुआ। इसके चंद एक दोहे नीचे दर्ज़ किये जाते हैं ताकि प्रेमी पाठकों को पता लग जावे कि सत-तत क्या है और इसका लाभ क्या है? इस अनुभवी वाणी के लिखने का सौभाग्य मास्टर करमचंद को बख़्शा गया जो उस जगह प्राइमरी स्कूल के मुख्य अध्यापक थे और जिन्हें सत्पुरुष ने अपनी आकर्षण शक्ति से खींचा था।

सत तत सर्व आधार है, नित-नित करो विचार।
'मंगत' जीवन निरबंध होवे, घट अगम जोत उजियार॥

इस दोहे में बतलाने की कृपालुता फरमाई है कि सत-तत ही सर्व आधार है और जो हर समय इसका विचार करता है उसका जीवन निरबंध हो जाता है और अगम ज्योति यानी ऐसी ज्योति जिसकी पार नहीं पाई जा सकती, यानी जिसे वर्णन करना कठिन है, उसे इस देह के अन्दर ही अनुभव कर लिया जाता है।

मोह माया के बन्ध में, सब ही जीव दुःख पाये।
'मंगत' सत तत खोजना, परम शांत अगाहे॥
सत् परमेश्वर ध्याये लो, जो आद अंत सहाई।
'मंगत' दुर्लभ जगत में, सिमरन साहब वडियाई॥
नाम साहब का सिमरिये, बंध खुलासी होये।
'मंगत' सिमरन सार है, पल-पल लयो परोए॥

बाकी दोहों की व्याख्या करने की ज़रूरत नहीं है। बड़े सरल तरीके से सत्पुरुष ने रोशनी डालने की कृपा की है कि बंधन क्या है? इससे छुटकारा पाने का साधन क्या है जिसे धारण करके मुक्ति मिल जाती है?

एक दिन चौधरी रामदित्ता मल, निखेत्र पर्वत निवासी, व प्रेमी अमीर चंद जी आपके दर्शनों के लिए नड़धज्जियां तशरीफ़ लाये और कोहाला संगत का एक प्रार्थना पत्र लाये जिसे सेवा में भेंट किया। इसमें प्रेमियों ने प्रार्थना की थी कि संगत का नाम क्या रखा जावे?

श्री महाराज जी (पत्र पढ़कर):- ''इन प्रेमियों ने बड़ा तंग किया है। कोई न कोई नई बात रच देते हैं।''

चौधरी साहब:- ''महाराज जी! हम भी जिस समय कोई नया कार्य आरम्भ करते हैं तो पहले उसका नाम रखते हैं। इसलिए हम सब सेवकों की प्रार्थना है कि संगत किसी अच्छे नाम से पुकारी जाये। ऐसा नाम हो जो सर्व प्रिय हो और सबसे उत्तम और एकता पैदा करने वाला हो।'

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! नाम तो आ जायेगा लेकिन छोटी बुद्धि वाले लोग समझ नहीं पायेंगे। अच्छा जो ईश्वर आज्ञा।'' तीन दिन पश्चात् आपने हाज़िर प्रेमियों के सामने तीन-चार नाम यानि :-1. समतावाद 2. समता सत्संग 3. समता समाज 4. संगत समतावाद रखे। आखिर प्रेमियों की राय से समता समाज नाम रखा गया। नाम रखे जाने के बाद आपने प्रेमियों से फरमाया:- ''इस समता शब्द से ऊंचा नाम अनुभव नहीं हो सका। तीन बार यही पवित्र नाम अनुभव हुआ है। समता के बग़ैर इख़लाकी[1] व रूहानी[2] तरक्की नहीं हो सकती और यह समता भाव ही आज से कुर्रा-हवाई[3] में फैल गया है। आहिस्ता-आहिस्ता पवित्र अंत:करण वालों के हृदय में असर करेगा। समता के आधार पर ही देश और दुनिया तरक्की कर सकेंगे और कोई रास्ता नज़र नहीं आया। आगे तुम्हारे जीवों के भाग्य। 'समता' का उर्दू नाम मुसाबात यानी एकता है।''

कुछ देर बाद आपने भक्त बनारसी दास जी से फरमाया:-

''बनारसी! अब समता के अनुरूप लेख आवे तब नाम पुख़्ता[4] हो। इस जगह रात को सत्संग के बाद आ जाना, फिर जो ईश्वर की आज्ञा से आवाज़ आई लिखकर संगत को पहुंचाना।''

रात के समय जब आप बाहर आकर आसन पर बिराजमान हो गये तो भक्त जी लैम्प लेकर आपकी आज्ञा अनुसार वहां श्री चरणों में पहुंच गये। आपने प्रसंग 'सम तत विचार' उच्चारण फरमाया। लगभग तीन सौ पद लिखवाने के बाद भक्त जी को वापिस कुटिया में जाने की आज्ञा दी और आप प्रभु आनन्द में लीन हो गये। इस तरह रात को शेष एक सौ पद लिखवाने की कृपा की। इसके बाद भक्त जी ने चरणों में प्रार्थना की:- कुछ कर्म और निष्कर्म की पहचान के वास्ते भी शब्द होने चाहिये। आपने प्रार्थना को स्वीकार करते हुए दो दिन में दो-दो घंटे लिखवाकर कर्म की पहचान का प्रसंग उच्चारण फरमाया। यही नहीं बल्कि वहीं एक सुन्दर चबूतरे पर बिराजमान होकर

---

1. चारित्रिक 2. आध्यात्मिक 3. वायुमंडल 4. पक्का

आपने 'मंगलाचरण' के शब्द भी लिखवाये। इसके बाद आपने ईश्वर महिमा के शब्द लिखवाये। यह दोहे हैं जिनकी संख्या चौदह सौ है। इन शब्दों के कुछ दोहे प्रेमी पाठकों के हित के लिए नीचे लिखे जाते हैं:- (शब्द न०-468)

तूं करता करतार है, सब जग सरजनहार।
पल-पल कीजूं बंदना, तू साखी पुरख अपार॥
बार-बार करुं बंदना, तूं दीनानाथ दयाल।
नेहमानयां का मान तू, सरब काल रछपाल॥
अपनी कला को धार के, रचियो जगत पसार।
अनंक भांत उस्तत करूं, तूं दीन बन्धु दातार॥
सरब जगत का रखयक, नित ही करे प्रतिपाल।
निमख-निमख सिमरन करो, गोबिन्द सरब किरपाल॥
चार वेद जस गांवदे, गुनी मुनी जन अनेक।
सब जग तुमरा खेल है, नित राखूं तुमरी टेक॥
अनमत मूढ़ा आया, प्रभ तोरे दर भिखार।
दीजो भगती दान प्रभ, नित मन करूं पुकार॥
आठ पहर तुम प्रेम में, मनुआ रहे लवलीन।
दीनदयाल दया करो, हरयो बुद्ध मलीन॥
शेष सहंस मुख गांवदा, पल-पल नाम अपार।
महमा तेरी क्या कथूं, तू आपे सरब आधार॥
पाप कूप भस्मत करो, दीजो सत विचार।
नित सिमरूं तेरे नाम को, नित चरनी सुख धार॥
कलयुग घोर आ वरतया, सत धरम भयो नाश।
कूड़ कपट की संपदा, सब घट कियो परगास॥
राखनहार आपार तूं, नित ही तेरी आस।
'मंगत' नित सरनागती, हरयो भरम की प्यास॥

ईश्वर महिमा का प्रसंग समाप्त होने पर आपने फरमाया:- ''प्रेमी! यह तालीम मानव मात्र के वास्ते है। जो भी पढ़ेगा, अमल करेगा, उसको परम सुख देगी। युग-युग तक तुम्हारी महिमा होती रहेगी।''

आपने इस स्थान पर लगभग एक माह विश्राम किया और ईश्वर प्रेम का आनंद पान करते रहे।

जब चिनारी निवासी प्रेमियों को कठाई और नड़धज्जियां जाने की ख़बर मिली और प्रेमियों के वहां दर्शनों के लिए जाने के बारे में पता लगा उन्हें बड़ा पश्चाताप हुआ कि ऐसी उच्च कोटि के सत्पुरुष को उन्होंने नहीं पहचाना और उनसे लाभ नहीं उठाया बल्कि मौका हाथ से गंवा दिया, तो वह नड़धज्जियां चरणों में हाज़िर हुए। अपनी ग़लती को मानते हुए आपकी सेवा में प्रार्थना की:- प्रभु! हमारी त्रुटियों की तरफ ध्यान न देते हुए चिनारी पधारने की कृपा करें। उनकी नम्रता, श्रद्धा और प्रेम को देखकर उस दया के भंडार ने चिनारी चलना स्वीकार कर लिया।

चिनारी में सत् उपदेश

दूसरे दिन ही आप चिनारी निवासी प्रेमियों के साथ नड़धज्जियां से रवाना हो पड़े और चिनारी पधारे। इस समय तक आपकी रहनी और आदर्श जीवन का वहां के निवासियों पर गहरा असर हो चुका था और उनके विकारी जीवन को पलटना शुरू कर दिया था। आपने चिनारी 18 दिन निवास किया। आपके निवास ने चिनारी निवासियों के जीवन में इंकलाब ला दिया। अब उनका विकारमई जीवन पर-उपकारी और परमार्थिक बन गया। उन्होंने सत्मार्ग की शिक्षा ग्रहण करके अपने जीवन का सुधार किया और अति सेवा भाव का सबूत विशाल यज्ञ के प्रबन्ध के रूप में दिया जिसमें कि आस-पास की जनता ने भी शामिल होकर लाभ प्राप्त किया। चिनारी से चलने से पहले आपने फरमाया:-

"प्रेमियों! यह फ़कीर बीमार थे। सेहत के वास्ते आये थे। जो बीमारी इन्हें थी वह ऐसी छूत की बीमारी थी कि जो भी इनके पास आयेगा वह उसे लग जावेगी। इनके करीब सोच समझ कर आना चाहिए। प्रभु सत् बुद्धि देवें। फ़कीर तुम्हारी बेहतरी के वास्ते ही आये थे।" इतना फ़रमाने के बाद श्री महाराज जी खामोश हो गये।

30. जलमादा में विशाल सत्संग

यज्ञ के बाद चिनारी से आपने रवाना होकर हट्टियां दुपटा चार दिन निवास किया। वहां से रवाना होकर कोहाला पहुंचे जहां बस से उतरकर आप ऊपर जलमादा कुटिया पर पधारे। कुछ दिन यहां ठहरकर और जलमादा व कोहाला निवासियों को सत्संग की अमृत वर्षा से तृप्त करके आपने शुभ स्थान का प्रोग्राम बनाया। सम्मेलन का समय नज़दीक आ गया था जिसकी तारीख 21-22 अक्तूबर, 1940 की निश्चित हो गई थी। आप जलमादा से नीचे तशरीफ़ लाकर कोहाला से बस में सवार होकर रावलपिंडी पहुंचे और रावलपिंडी से शुभ स्थान गंगोठियां पधारे।

निवास के दौरान जलमादा में आपको पता लगा कि एक प्रेमी उस तरफ जाकर प्रेमियों से प्रचार के लिए धन एकत्र करता रहा है। इस पर आपने निम्नलिखित नियम बनवाए।

31. समता समाज के वास्ते उपदेश

1. समता समाज का हर एक मैम्बर समता के लिट्रेचर से वाकफ़ीयत (जानकारी) हासिल करने की बड़ी से बड़ी कोशिश करे और समता के असूलों पर हर समय चले।

2. किसी समता समाज को किसी दूसरी समता समाज से दान मांगने का हक नहीं है।अगर कोई समतावादी मैम्बर खुशी से किसी समता समाज को दान देवे तो दे सकता है।

3. अगर कोई समता समाज रिसाला (पत्रिका) अख़बार या ट्रेक्ट समता के प्रचार की ख़ातिर छपवाना चाहे तो यह अपनी सोसाईटी के खर्च पर छपवा सकती है। दूसरी समता समाजों से उगराही[1] कोई नहीं कर सकती।

4. जो प्रचार की ख़ातिर पर्चा होवे वह कीमतन[2] दूसरी समता समाजों को दे सकता है, अगर मुफ़्त सेवा न कर सके तो।

5. पहले तो हर एक समता समाज का निष्काम भाव से सेवा करना फर्ज़ है, अगर सामर्थ्य से बाहर हो तो महज़[3] अपनी मेहनत की जायज़[4] कीमत वसूल कर सकता है।

6. अगर समता अनुकूल ट्रैक्ट हो तो हर एक समतावादी लेकर मुताला[5] कर सकता है। अगर बर खिलाफ़[6] हो तो किसी को मुताला करने या खरीद करने का कोई हक नहीं।

7. अगर किसी ख़ास मौके पर किसी समतावादी मैंम्बर को समता की उन्नति की ख़ातिर ख़ास ज़रूरत पड़े तो उस वक्त समता समाज में अपील कर सकता है और हर एक समतावादी अपनी हसब मंशा[7] ज़रूरी सेवा करे।

8. अगर कोई समतावादी मैम्बर उगराही (एकत्रित धन) से अनुकूल समता की कार्यवाही न करे तो उसका असर उसकी अपनी ज़िंदगी पर है न कि किसी समता समाज पर आईंदा[8] ऐसे हालात को मद्देनज़र रखना ज़रूरी है।

9. हर एक समतावादी मैम्बर अपने आपको हर एक समता समाज में मैम्बर बना सकता है। यानी तमाम समता समाजों का दायरा एक ही है।

10. सोसाईटी की सेवा निष्काम भाव से करनी हर एक मैम्बर का फ़र्ज़ है। समता की रोशनी निष्काम सेवा ही है।

11. हर एक समता समाज का मैम्बर दूसरी समता समाजों के मैम्बर से, सत्संग विचार ज़रूरी किया करें, हाज़िर संगत होकर या बज़रिया पत्रिका।

12. जिस समतावादी मैम्बर को ईश्वर ने सामर्थ्य दी होवे वह अपनी सच्ची अकीदत (श्रद्धा) से हर एक समता समाज और दूसरे अधिकारियों (पात्र) की सेवा करनी अपना फ़र्ज़ समझे।

13. हर एक समता समाज के रिकार्ड में तमाम जगह के समता समाजों के मैम्बरों की सूची होनी चाहिए।

---

1. दान लेना 2. लागत मूल्य पर

14. अपनी श्रद्धा से समता धर्म की ख़ातिर चाहे बड़ी से बड़ी तन, मन, धन से सेवा करें, कोई मुमानियत (मना) नहीं बल्कि फ़र्ज़ है। मगर सामाजिक कार्यवाही इन असूलों के मुताबिक होनी ज़रूरी है। इससे खुद्दारी और खुदग़र्जी पैदा नहीं होती और हर एक को अपना आप याद रहता है।

32. शुभ स्थान गंगोठियां में यज्ञ

श्री महाराज जी ने शुभ स्थान पर पधार कर पहले की तरह अपना प्रोग्राम शुरू कर दिया यानि दिन का बहुत सा हिस्सा पीर ख़्वाजा जंगल में और रात तरेल नदी के किनारे अपनी आनन्दित अवस्था में व्यतीत करना शुरू कर दिया। प्रेमी सेवादार भी आने शुरू हो गये और इस दफ़ा भी सम्मेलन के वास्ते सामान गुजर खां से ही खरीद कर लाया गया। इस बार आस-पास की जनता के अतिरिक्त ज़्यादा प्रेमी बाहर से आये। रावलपिंडी, कोहाला, जलमादा, निखेत्र, पटन, चिनारी इत्यादि स्थानों से प्रेमी यज्ञ में शामिल हुए। 21 अक्तूबर शाम से ही प्रसाद तैयार होना शुरू हुआ। प्रेमी तमाम रात शब्द उच्चारण करते हुए प्रसाद तैयार करते रहे। सुबह तक सब सामान तैयार हो गया। ज़मीनों में खुली जगह सत्संग का प्रबंध किया गया। सत्संग में इस दफ़ा पहले जो वाणी छप चुकी थी पढ़ी गई। फिर कुछ इलाके के प्रेमियों ने विचार रखे। इसके बाद भी महाराज जी ने सत् उपदेश अमृत वर्षा से निहाल किया जिसका अर्थ संक्षिप्त रूप से इस प्रकार है:

''जीव त्रिगुणमई वासना को धारण करके शरीर की कैद में आ जाता है। यानी शरीर को धारण कर लेता है और इसके भोगों में तृप्ति प्राप्त करने के यत्न में लग जाता है। ज्यूं-ज्यूं भोगों को पूर्ण करने का यत्न करता है वासना बढ़ती जाती है और उसे पूर्ण करते-करते शरीर ख़त्म हो जाता है और जीव को उसे पूर्ण करने के लिए दूसरा शरीर धारण करना पड़ता है। यह सिलसिला (चक्र) बराबर चलता रहता है। सत्पुरुषों ने इस रोग का इलाज बतलाया कि जब यह जीव शरीर के अन्दर जीवन शक्ति की तलाश करेगा, इसकी तहकीकात[1] मुकम्मल[2] होगी तो इसे तृप्ति हासिल होगी। इस तलाश के लिए इसे देह परायणता को छोड़कर आत्म परायणता को धारण करना होगा। सत् सिमरण करते-करते जीवन शक्ति को तलाश कर लेने पर इसे तसल्ली हो जावेगी और जन्म-मरण के चक्र के छुटकारा मिलेगा।''

सत्संग की समाप्ति पर प्रसाद बांटा गया और फिर सब आई हुई जनता से प्रार्थना की गई वह वहीं जमीनों में पंक्ति बना कर बैठ जायें और सबको भोजन खिला दिया गया और आस-पास की संगत चली गई। प्रेमी अहिस्ता-अहिस्ता आज्ञा लेकर वापिस गये।

33. हृदय की बात जानना

सम्मेलन में प्रेमी मास्टर कर्मचन्द भी शामिल हुआ था। इस प्रेमी ने नड़धज्जियां अमृत वाणी

1. खोज 2. पूर्ण

को, जो प्रकट हो रही थी, लिखा था। उसके पास उस समय, जब वापसी का समय आया, कुछ रुपयों की कमी थी क्योंकि उसका वेतन सिर्फ 20 रुपये था। सब प्रेमी बारी-बारी महाराज जी से जाने की आज्ञा ले रहे थे। उसने साहस करके आज्ञा मांगी तो सत्पुरुष ने यकायक आठ चांदी के रुपये निकालकर उसकी जेब में डाल दिये। प्रेमी शर्मिन्दा होकर खड़ा था कि सत्पुरुष ने किसी को देखे बिना बुलाकर फरमाया:- ''प्रेमी! तुम्हारे पास वापसी किराया कम है, यह ले जाओ।'' प्रेमी हैरान हुआ। उसके अन्दर ऐसे विचार उठ रहे थे कि किससे मांगा जाये। प्रेमी ने कभी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया था। मगर सत्पुरुष ने उसकी अंदरूनी अवस्था को जानकर कृपा कर दी।

34. शाहपुर कंडी में एकान्तवास

पंडित देव दत्त जी, जो श्री महाराज के बुज़ुर्ग भाई के रिश्तेदार थे और राय बहादुर रामसरन दास जी रईस लाहौर के कार मुख़्तार भी थे, ने श्री महाराज जी को एकांत निवास के लिए शाहपुर कंडी जगह बतलाई और वहां तशरीफ़ ले जाने की प्रार्थना की। इस जगह एक पुराने किले के अन्दर कमरा बना हुआ था। राय बहादुर रामसरन दास जी इसके मालिक थे। पंडित जी ने उसमें आपके ठहरने का प्रबंध कर दिया। इस कमरे के आगे कोठी थी जो बहुत बड़ी थी। दरअसल यहां पुराने वक्तों में एक किला था। कोठी के आगे काफी गहराई में नीचे रावी नदी बहती थी। इस स्थान पर आपने तीस दिन एकांत निवास और घोर तप किया। आप सिर्फ़ चाय का ही सेवन करते थे। फल इत्यादि सब बंद थे। शरीर रूपी मशीनरी को थोड़ा सा तेल देने वाला हिसाब था। इस जगह आपने ''जीव गति सिद्धांत'' प्रसंग उच्चारण फरमाया जिसका आरम्भ मघॅर मास की संक्रांति को किया गया। आप रोज़ाना एक अध्याय भक्त जी को रात के समय लिखवाते। दूसरे दिन भक्त जी श्री चरणों में बैठकर लिखा हुआ पढ़कर सुनाते और गल्तियां ठीक करवा लेते।

एक दिन भक्त जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! आप पढ़े हुए तो सिर्फ़ उर्दू हैं लेकिन वाणी करीबन हिन्दी में ही उच्चारण फरमाते हैं।''

इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''मालिक की आज्ञा से जैसे प्रसंग आ रहा है वैसे ही तुम्हारे आगे रखा जा रहा है। जिस समय दोबारा पढ़कर सुनाते हो तो उस समय हमें खुद भी अश्चर्ज होता है कि यह प्रसंग किस समय बोला गया था, यह बोलना चाहिये था या नहीं। प्रेमी, यह भी मजबूर हैं। इनके बस की बात नहीं । जीवों के कल्याण के वास्ते अमर लोक से वाणी आती है। देश काल के मुताबिक दीनदयाल कृपा करते हैं। कहो तो वाणी संस्कृत और अंग्रेजी में भी आ सकती है। लेकिन जैसा प्रवाह चल रहा है वैसा ही तुम्हारे आगे रखा जाता है। तुम्हें पसन्द आता है तो रखो। यह ही आसान भाषा आईदा[1] देश की भाषा होगी। मिली-जुली भाषा आम लोगों के सुधार के लिए है। सत्पुरुष जिस-जिस देश में होते हैं उस समय उस जगह के रहने वाले लोगों के

1. भविष्य में

वास्ते वैसी ही वाणी उच्चारण फरमाया करते हैं। सत्पुरुष हर ज़माने में हर जगह होते आये हैं और आते रहेंगे। यह नहीं कि मोहम्मद के बाद या गुरुओं, अवतारों के बाद बंदिश हो गई है न बंदिश होती है न होगी। जब कभी जीव असूलों से पतित होने लगते हैं तब कोई न कोई अवतारी पुरुष भी आ जाया करते हैं। बैठे हुए चाहे वह कहीं हों लेकिन उनकी आवाज़ सारे कुर्रा हवाई (ब्रह्मांड) में फैलकर खुद-ब-खुद (स्वयं) सतोगुणी जीवों के अंदर जज़्ब[1] हो जाती है। यह आज इतना असर नहीं करेगा जितना चालीस-पचास वर्षों के बाद। महापुरुषों द्वारा ही संसार को चेतावनी मिला करती है। जो समता भाव को ग्रहण नहीं करेगा वह कौम व देश नष्ट हो जावेगा। समता के बग़ैर जो नीति (कानून) बनाई जावेगी वह सुखदाई नहीं होगी। अति ख़ुदगर्ज़ी[2] का जमाना आ रहा है। गांधी जैसे महापुरुष उच्च जीवन वाले निष्काम देश सेवा में बलिदान होंगे तब कुछ अग्नि थमेगी।

इस दौरान 11 जनवरी, 1941 को आपने ''समता निधान'' के 101 वचन अपने कर कमलों से लिखकर प्रेमी भक्त बनारसी दास को दिये ताकि वह साथ ही इन वचनों को लिखकर प्रेमियों को पहुंचायें।

एक दिन इसी तरह भक्त जी ने प्रार्थना की:- महाराज जी! महामंत्र की व्याख्या होनी चाहिए। आपने फरमाया:- ''ज़्यादा लम्बे झगड़े न डाला करो।''

कुछ समय बाद आपने महिमा महामंत्र अपने कर-कमलों से लिखकर भक्त जी के आगे रख दिये। यह दोनों प्रसंग ''समता निधान'' और ''महिमा महामंत्र'' एक ही दिन लिखे गये थे।

आप जहां भी एकांत निवास फरमाते अमृत वाणी का स्रोत आपके अन्दर से फूट-फूट कर निकलने लगता। जो गिरावट आम जनता में आ चुकी थी और बढ़ती जा रही थी उसका नक्शा जो इस अमृत वाणी में खींचा हुआ है। उसका नीचे लिखे शब्दों से पता लग जावेगा।

सत सरूप का निश्चय विनासया, भयो अधर्म परचार।
'मंगत' पूजा माया की, करे सकल संसार॥
सत् सरूप का निश्चय सब टूटा, बादमुबाद का कुंभ घर फूटा॥
गरभ गुमान वैर वरताया, प्रेम का जीवन नहीं दृष्टि आया॥
मंदिर मस्जिद करे गिरजे पुकार, खोटी वासना खोटा वापार॥
सिनेमा थियेटर बहु रंग तमाशे, गादी गुरु वां करे निवासे॥
जीबा की रसना अधिक चित लागी, अनयुक्त पदारथ खाये अपराधी॥
बुद्ध मलीन भयो नास विचारा, चार दिसा में व्यापे अंधकारा॥
भयो तपीश्वर करे बन खंड वासा, अंतर धारी विखे भोग की आसा॥

1. समा जाना 2. स्वार्थ

इस गिरावट के चक्र से निकलने के साधन भी आपने ब्यान करने की कृपा फरमाई हुई है। वाणी नमूना के तौर पर पेश की जाती है।

सेव बंदगी प्रेम आचारा, दया ग़रीबी का करे ब्यौहारा॥
समदृष्ट का सबक विचारे, महागुनी सो उतरे पारे॥
एक सरूप में नित जीवन जीवे, एक आधार मन अंतर लेवे॥
कर्ता हर्ता ठाकर पहचाने, तिसकी आज्ञा छिन-छिन चित माने॥
भरम विनासे सतरूप समाए, जां से आया ताहीं मेल मिलाए॥
दुर्मत भरम का खंडन कीजे, सत शब्द अमीरस पीजे॥
मुकत महासुख गुर शब्द विचारे, सो सत साधू नित हूँ बलिहारे॥
बार-बार विचारया, सब जग विख की खान।
'मंगत' शबद कमावना, जग जीवन सार निधान॥

शाहपुर कंडी निवासी भी इस समय अति अज्ञानता के अंधकार में फंसे हुए माया की पूजा में लगे हुए थे। इनके अंदर अति अंध-विश्वास था। भूत-प्रेतों का भय और उनकी पूजा बड़ी करते थे। इस इलाके के विद्वान पंडित भी इसी माया की दौड़ में लगे हुए थे और भूत-प्रेत आदि की पूजा के साधन बतला कर अपना जीवन निर्वाह करते थे। छूत-छात का रोग भी इस तरफ बहुत लगा हुआ था।

जब सूरज उदय होता है रोशनी खुद-ब-खुद (स्वयं) फैल जाती है। सत्पुरुष के आने की ख़बरें चारों ओर फैल गईं और उनका फैलना भी स्वाभाविक था। आस-पास के प्रेमी आपके दर्शनों के लिए आने लगे और सत् के स्रोत से ठंडक प्राप्त करने लगे। सत् उपदेशों का असर होना लाज़मी था। इन लोगों ने शाहपुर निवासी प्रसिद्ध सज्जनों को भी आपकी मौज़ूदगी की सूचना दी। तप की समाप्ति पर सत्संग हुआ जिसमें आस-पास के प्रेमियों के अतिरिक्त शाहपुर कंडी से भी प्रेमी आये और सत्संग में शामिल हुए। सत्पुरुष के सत् उपदेशों का उन पर बड़ा असर हुआ। इस पर कस्बे के निवासियों ने सेवा में प्रार्थना की:- आप कस्बे में तशरीफ़ ले चलें ताकि वहां की आम जनता भी आपके सत उपदेश से तृप्ति कर सके। सत्पुरुष ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और कस्बे में चलने और निवास के लिए प्रबंध करने के लिए फरमाया।

श्री महाराज जी की आज्ञा प्राप्त करके शहर निवासी प्रेमियों ने श्री लक्ष्मण दास के गृह में आपके ठहरने का प्रबन्ध किया। भक्त जी इस बीच में श्री महाराज जी की चाय भी कस्बे से तैयार करके लाते थे। उस दिन रात के समय भक्त जी जब वापिस शहर से चाय लेकर आ रहे थे रात बड़ी अंधेरी थी। जब वह किले के करीब पहुंचे तो उनके मन की अवस्था जिस कदर भयभीत हुई उसका वर्णन इस तरह करते हैं:-

''उस रोज़ रात को जब दास नौ बजे चाय बनवाकर और रोटी खाकर वापिस आ रहा था, घुप अंधेरी रात थी। बादल छाये हुए थे। रोशनी का कोई इंतज़ाम नहीं था। हालांकि रोज़ाना

आने-जाने की वजह से रास्ता तो मालूम था लेकिन शहर निवासियों की दिन के समय भूत-प्रेत वाली बातों का बार-बार ख़्याल आ रहा था। इस तरह विचार करता हुआ जब किले के पहले गेट के पास पहुंचा तो अन्दर की तरफ एक लम्बा सा बुत दिखाई दिया, जिससे दास के कदम आगे बढ़ने से रुक गये। विचार पर विचार उठने लगे कि आज मेरी ख़ैर नहीं। उधर चाय को देरी हो रही थी इधर डर के मारे आगे कदम न उठता था। अनेक प्रकार की डरावनी शक्लें मन बनाकर खड़ा कर रहा था। बड़े गेट से कमरा दूरी पर था। रास्ते में एक और दीवार थी जिसके कारण दी हुई आवाज़ अन्दर कमरे तक नहीं पहुंच सकती थी। इस तरह आधा घंटा गुज़र गया। फिर ख़्याल आया कि श्री महाराज जी के चरणों का ध्यान करो और महामंत्र उच्चारण करो। ऐसा करते ही बिजली चमकी जिसकी रोशनी से सारा संशय दूर हो गया। वह बुत अन्दर वाले दरवाज़े का टूटा हुआ थम्बा था। मन की ऐसी हालत देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ, फिर बेधड़क अन्दर दाखिल हो गया और उस जगह तक पहुंच कर आहिस्ता से दरवाज़ा खोला और देखा, श्री महाराज जी मौज में विराजमान हैं। चाय रख करके जब बैठा तो श्री महाराज जी फरमाने लगे:-

''जीव सत् को भूलकर किस कदर वहमों में गिरफ़्तार हो जाता है। वास्तव में जीव को अपना भ्रम ही दु:ख देता है। मूर्ख, तू किस चक्र में पड़ गया था। हर समय नाम और नामी को चित्त में रख। अभी तो तेरे पास ही थे। बार-बार सत् परायण होने का यत्न करो। यह असत् भ्रम तब ही नाश होगा।''

घट-घट के जाननहार अंतर्यामी श्री सद्गुरुदेव मंगत राम जी ने किस तरह अपने सेवक की आंतरिक हालत को जानकर निर्भयता का कितना सुन्दर उपदेश दिया।

18 जनवरी, 1941 की रात को मौज की हालत में आपने ''सत् अनुराग सरोवर'' प्रसंग प्रगट फरमाया, जिसका पहला दोहा निम्नलिखित है:

सत् अनुराग प्रभ चरण का, जब चित आन समाये।
'मंगत' दुस्तर जाल से, जीव शांत तब पाये॥

यानी जिस जीव के अन्दर चित्त में प्रभु चरणों का सत् अनुराग पैदा हो जाता है वह ही इस कठिन जाल के बंधन से छूटकर शांति को प्राप्त होता है।

जैसा प्रोग्राम निश्चित हो चुका था श्री महाराज जी कस्बे में पधारे और कस्बा निवासियों को छूत-छात की बीमारी से आगाह किया, समझाया और ख़बरदार किया कि अछूत जिन्हें तुम समझ रहे हो और उनसे नफ़रत करते हो अगर वह तुमसे हटकर ईसाई वग़ैरह बन गये तो वह तुम्हारे विरुद्ध हो जावेंगे और तुमसे नफ़रत करने लग जावेंगे। इस वक्त ज़माना बदल चुका है। तुम भी बदलो और छूत-छात ख़त्म करो और उन लोगों को छाती से लगाओ। नफ़रत से नफ़रत पैदा होती है। इसका असर उन लोगों पर खूब हुआ और उन्होंने अपने अछूत भाईयों को भी अपने साथ मिला लिया और प्रेम का उदाहरण पेश किया। हिन्दुओं के अन्दर प्रेम और उत्साह आ जाने से इसका प्रभाव मुसलमान जनता पर भी पड़ा और उन्होंने भी सत्संग में शामिल होना शुरू कर दिया। एक

दिन मुसलमान प्रेमियों ने मिलकर अर्ज़ की:- आप मस्जिद में तशरीफ़ ले चलें और हमें भी हिदायत देवें । प्रेम और समता यानी बराबरी की मूर्ति ने उनकी अर्ज़ को मान लिया।

जैसा कि पहले भी ज़िक्र आ चुका है कि सत्-पुरुष ने अपनी अमृत वाणी में यह साबित कर दिया है कि मज़हब पंथ वह रास्ता है जिस पर चलकर उस मालिके कुल (प्रभु) से मिलाप हासिल कर सकते हैं या दूसरे लफ़्ज़ों (शब्दों) में ब्रह्म ज्ञान हासिल कर सकते हैं। वह रास्ता सबका एक ही है और एक प्रसंग में जिसका नाम ''सत्पुरुषों की समानता'' है सब मज़हबों की तालीम का संक्षिप्त शब्दों में ज़िक्र किया हुआ है। हज़रत मसीह, हज़रत मोहम्मद, महात्मा बुद्ध, महात्मा ऋषभदेव और ज़रोदस्थ की शिक्षाओं का संक्षिप्त शब्दों में उसी प्रसंग में ज़िक्र किया हुआ है और साबित किया है कि लक्ष्य सबका एक ही है। इसके बारे में शुरू के चंद दोहे नीचे लिखे जा रहे हैं ताकि पाठक प्रेमी इसके बारे में खुद देख लेवें और अंदाज़ा लगा लेवें।

सब सिद्धन की सार सुन, सब गुनियां दा ज्ञान।
सत् सरूप प्रभ एक है, सब में भया परवान॥
जैसे जिसने प्रीत करी, पायो सरजनहार ।
बंधन से मुक्ता भये, जग से भये उद्धार॥
समां देश विचार के, नीति करें बखान।
भेद-भाव कछु नहीं, केवल सार निधान॥

सब सिद्ध पुरुषों की तालीम के सार या निचोड़ और सब गुणियों के ज्ञान को सुनो। वह फरमाते हैं :- ''प्रभु या सत् एक ही है और सबमें वह ताकत मौज़ूद है। जिसने जैसी उससे प्रीत की है, उस सरजनहार यानी इस दुनिया के बनाने वाले से मिलाप किया''। ऐसी हस्तियों ने अपने बंधन तोड़े और दुनिया का उद्धार किया और वक्त और देश यानी समय और देश के हालात के मुताबिक नीति या कानून व असूल बनाये। सबमें कोई भेदभाव नहीं। सबने निचोड़ निकाल कर रख दिया है। ऐसे सत्पुरुष जो उस ला मज़हब जलाल (ईश्वर) से एक हो चुके होते हैं ला मज़हब (मज़हब रहित) ही होते हैं। वह सबमें उसी मालिक को मौज़ूद देखते हैं और सबको उसी मालिक का रूप समझ कर सबसे प्रेम करते हैं। जो लोग उनके सम्पर्क में आते हैं उन्हें भी ऐसा करने की हिदायत (शिक्षा) करते हैं।

श्री महाराज जी प्रोग्राम के अनुसार मुसलमान प्रेमियों के साथ मस्जिद में तशरीफ़ ले गये। मस्जिद में जाकर पहले ''सत् विश्वास'' यानि यकीने पाक प्रसंग के शब्द पढ़े गये। मस्जिद में मुसलमान प्रेमियों के अतिरिक्त हिन्दू, सिख भी पहुंचे हुये थे। जब वाणी का पढ़ना समाप्त हुआ तो आपने सब संगत को निम्नलिखित सत् उपदेश द्वारा निहाल किया।

एक ही वाहद ज़ात[1] का ज़हूर[2] यह सब दुनिया है। महापुरुष समय-समय पर आकर अपनी अमली ज़िंदगी द्वारा भूली भटकी जनता को सच्चाई का रास्ता दिखाया करते हैं। उनके फरमाए हुए नेक असूल ही बाद में रिवाज़ की सूरत इख़तियार[3] कर लिया करते हैं। जिस्म के ज़ाहिर[4] भेषों को धारण करने में उस जीव को निज़ात[5] नहीं है। कालब[6] की सफाई के वास्ते जनेऊ पहनना, धोती बांधना, तिलक लगाना, रुंड-मुंड रहना, केस या जटा धारण कर तसबीह के दानों की माला बनाकर धारण करना, कानों में कुंडल डालना, और भी अनेक प्रकार के भेष बनाकर फिरना, धर्म या ईमान नहीं है। राहते-अबदी (सत शांति) तो उनके सत् असूलों को धारण करने में है। नेक असूलों को धारण करने वाली रूहों यानी जीवों के अन्दर तास्सुब[7] नाम को भी नहीं होता। जहां तास्सुब होता है वहां खुदा की बंदगी यानी ईश्वर भक्ति हुआ ही नहीं करती। जीव महज़ अपनी-अपनी खुदगर्ज़ियों को पूरा करने में लगे रहते हैं। जब यह खुदगर्ज़ी पूरी होती दिखाई नहीं देती तब यह आपस में लड़ते-झगड़ते हैं। यह ही दुनिया का चक्कर है। तमाम मज़हब के रहनुमा दो रास्तों की हिदायत करते आये हैं। एक लागर्ज़ फ़ेल यानी निष्काम कर्म, दूसरा ज़ात इलाही का तसव्वर[8]। एक ईश्वर आज्ञा में यानी रज़ा में समय व्यतीत करना और हालते बख़्वाहिशी प्राप्त करनी, खुदी[9] से निज़ात पाने का वाहद[10] तरीका है। यह खुदी रियाज़त[11] और तप करते-करते ख़त्म हो जाती है। तब आप ही खुदा यानि मालिक हो जाता है जैसे :-

मन तू शुदम तू मन शुदी, मन तन शुदम, तू जां शुदी॥
तकस ना गोयद बाद अज़ीं, मन दीगरम तू दीगरी॥

अर्थ- मैं तू हो गया, तू मैं हो गया। मैं तन हो गया तू जान हो गया। ताकि बाद में यह कोई न कहे मैं और हूं, तू और है।

खुदा आप सबको यकीन-ए-पाक बख़्शें और ईमान देवें।

35. ग़लत रस्मों को दूर करना

इस इलाके में देखा गया कि अज़ीब रस्म-रिवाज़ चल रहे थे। जिनमें एक यह भी था कि ब्राह्मण लोग महाजनों के हाथ का बना हुआ लंगर ग्रहण नहीं करते थे। बल्कि ब्राह्मणों को जिस महाजन के घर में खाने का न्योता मिलता था वहां जाकर वह खाना खुद ही पकाते थे। जब ब्राह्मण भोजन खा चुकते थे तब रसोई, घर वालों के सुपुर्द की जाती थी। श्री महाराज जी को जब इस बात का पता लगा तो आपने ब्राह्मणों को निम्नलिखित उपदेश दिया :-

''प्रेमियों! चाहिये तो यह था कि घर वाले लंगर बनाते और ब्राह्मण मिलकर एक जगह बैठकर खाते। यह क्या स्वांग बनाया हुआ है कि इनके घर की सब चीज़ें, रुपया, पैसे दक्षिणा तक

1.ईश्वर 2.प्रकाश 3.धारण 4.बाहरी 5.मुक्ति 6. शरीर 7. धर्मांधता 8. प्रभु स्मरण 9. अहंकार 10. उत्तम 11. भक्ति

ले लें लेकिन उन महाजनों के हाथ से बनी हुई रसोई नहीं खाते? अछूतों की तरह अलग रखना यह कहां की नीति है''?

सब अच्छे-अच्छे ब्राह्मण मान गये। सबने मिलकर कहा:- ''महाराज जी! जैसी आप आज्ञा देवेंगे वैसा ही हम करेंगे। इस पर आपने फरमाया:-

''यह कैसे-कैसे ब्राह्मणों ने कड़े[1] डाल रखे हैं। अभी तक उनका राज्य उसी तरह चलता आ रहा है। कोई भी उनकी नीति को तोड़ नहीं सकता। संत भी कितना ज़ोर लगा चुके हैं। यह छूतपना नहीं जाता। अब राज्य का डंडा ही ठीक करेगा।'' आपके मुखारबिंद से यह वचन सुनकर वहां एक बड़े शुद्ध आचारी पंडित ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! यह पुराना सिलसिला चला आता है। आहिस्ता-आहिस्ता आप जैसे संतों की कृपा से यह अंधकार दूर हो सकता है। न हम खुद इसे तोड़ने की कोशिश करते हैं, न यह वहम निकलने में आता है। आपके तेज़ के आगे हम इंकार नहीं कर सकते। क्या मज़ाल यहां कोई बोल जाये? महाराज जी, गुस्ताखी[2] माफ़ करें।''

आपने इस पर फरमाया:- ''प्रेमियों! सबके साथ प्रेम भाव पैदा करने की कोशिश करो। बेटी और रोटी का बेशक संबंध न करें मगर सबसे प्रेम भाव से मिलने का यत्न करें। किसी को अछूत न समझो। ज़माना ऐसा आ रहा है यह वैर-भाव क्या-क्या तबाही लाता है। ईश्वर ही सबको सुमति दें।''

इस तरह श्री महाराज जी ने शाहपुर कंडी के लोगों को अंध-विश्वास और छूत-छात की बीमारी से छुड़ाया।

36. चिनारी में दोबारा सत् प्रचार

आप शाहपुर कंडी से रवाना होकर लाहौर ठहरते हुए शुभ स्थान गंगोठियां पधारे और पहुंचने पर अपना प्रोग्राम पहले की तरह जारी कर दिया। कुछ ही दिनों बाद चिनारी निवासी प्रेमी नंदलाल ने प्रार्थना की:- ''चिनारी में चरण कंवल डालकर इसे फिर से पवित्र करने की कृपा कीजिये।'' आपने इसे स्वीकार कर लिया और 16 अप्रैल, 1941 को शुभ स्थान से चलकर रावलपिंडी होते हुए वहां से बस में सवार होकर कोहाला डोमेल के रास्ते चिनारी पहुंचे। चिनारी की संगत आपके स्वागत के लिए चिनारी से एक मील आगे आई हुई थी और सड़क के किनारे बैठी इंतज़ार कर रही थी। जब बस वहां पहुंची तो आपने बस खड़ी करवा ली और उससे उतर पड़े और संगत के साथ पैदल चल कर चिनारी पहुंचे और धर्मशाला में निवास किया।

सत्संग का सिलसिला वहां प्रेमियों ने जारी कर दिया। रोज़ाना शाम सात बजे से दस बजे तक सत्संग होता। उसके बाद आप नीचे दरिया के किनारे लाला गोकल शाह की कुटिया में तशरीफ़ ले जाते और नियम अनुसार रात का समय एकांत में प्रभु प्रेम में मग्न रहकर व्यतीत करते। इस

1. बन्धन 2. ग़ल्ती

जगह डोमेल और उड़ी बग़ैरह आस-पास के प्रेमी भी सत्संग में शामिल होकर लाभ उठाते रहे।

कुछ समय इस जगह निवास करने के बाद आपने आगे श्रीनगर जाने का प्रोग्राम बना लिया। आपकी रवानगी से पहले चिनारी निवासियों ने विशाल सत्संग का प्रबन्ध किया। इस सत्संग में इर्द-गिर्द के इलाके के मुसलमान और सिख साहिबान भी शामिल हुए। इस समय जो सत् उपदेश दिया वह अहं यानी खुदी के रोग से छुटकारा प्राप्त करने के साधन थे। संक्षिप्त शब्दों में इसे नीचे लिखा जाता है। आपने फरमाया :-

''गुरु, पीर, अवतारों को मानना और उनके उपदेश व आज्ञाओं का पालन करना इसलिए ज़रूरी है कि खुदी का बड़ा अज़ाब[1] जो इंसान को लगा हुआ है इसकी बू को दिल के अन्दर से निकाला जा सके। जब-तक इंसान में ख़ुदी मौज़ूद है वह महापुरुषों के मानने वाला नहीं कहला सकता। सबसे बड़ी बंदगी या रियाज़त यह ही है कि हर जीव या रूह के साथ अच्छे से अच्छा बर्ताव किया जाये। किसी को मन, वचन, कर्म यानि दिल, ज़बान व फेल, कर्म से दु:ख या अज़ाब न दिया जाये। जब इंसान खुदी से रहित हो जाता है तब किसी के वास्ते तकलीफ़ का कारण नहीं होता। बल्कि हर एक के वास्ते खुशी और सुख देने वाला हो जाता है। इस चार रोज़ा मुसाफिरखाने में जहां तक हो सके आपस में मिलजुल कर रहो और वक्त काटो। ज़्यादा से ज़्यादा अच्छे कर्म करके अपने आपको पवित्र करो। आपस में तास्सुब व वैर-विरोध न रखो। नेक फेल (कर्म) करके अपने भविष्य को सुधारो। ख़ुदा आप सबको नेक औसाफ़[2] बख़्शें।''

सत् उपदेश के बाद एक मौलवी साहब ने अपने विचार संगत के सामने रखे। इसके बाद आई हुई जनता में प्रसाद बाँटा गया और सबको भोजन खिलाया गया। फिर बाहर से आई हुई जनता वापिस चली गई। प्रेमी काफी देर तक सेवा में बैठे हुए अपनी शंकायें निवारण करते रहे और काफ़ी रात हो जाने पर श्री महाराज जी उठकर नीचे कुटिया में चले गये। उस जगह एक प्रेमी को पत्र लिखा गया जो पदों में था और जिसे नीचे दिया जा रहा है।

औषध खाये से रोग विनासे। नाम ध्याये से बंधन नासे॥
वेद पढ़े से बुद्ध परगासे। दया करे तब धर्म निवासे॥
गुरु चरण प्रीति प्रभ मेल कराये। परम लाभ जीवन का पाये॥
धर्म की नौका गुरुदेव से मांगे। भव जल दुस्तर कठिन को लांगे॥
दृढ़ विश्वास गुरु वचन में राखे। सकल कर्म का पूरन फल चाखे॥
गुरु चरणी जब प्रीत अधकाई। सब साधन का पूरन फल पाई॥
मांगो साचा धर्म पुनीता। सतगुरु दयाल होवें सुखरीता॥
जैसी मन की भावना। ऐसा ही फल पाये॥
'मंगत' सत परतीत से। नित ही धरम कमाये॥

1. दु:ख 2. गुण

37. गोपी तीर्थ में तपस्या

आपका प्रोग्राम, जैसा ज़िकर आ चुका है, आगे जाने का बन रहा था। आप चिनारी से रवाना होकर श्रीनगर तशरीफ़ ले गये और वहां से सात मील ऊपर गोपी तीर्थ में तप के लिए डेरा लगाया। यहां ढाई माह आपने कठिन तप में गुज़ारे। कुछ प्रेमियों को आपने निम्नलिखित चेतावनी तहरीर[1] फरमाई :-

सोना मनों विसार के, मारग धरम में जाग।
साहेब दा फरमान सुन, ये लिख लेखा वडभाग॥
घर फूंका जिन अपना, तिन संग करे परीत।
आसा राखे जीवन की, तिन बुद्धी विपरीत॥
जैसा मित्तर खोजिये, ऐसा नेहों निभाईये।
मारग प्रेम का कठिन है, सिर दीजे रसना पाईये॥
कथनी से कुछ न सरे, तन मन दीजो वार।
'मंगत' जीवन जगत में, केवल दिन है चार॥

गोपी तीर्थ में एकांत निवास के दौरान आपने 'अथ भक्ती मार्ग' प्रसंग उच्चारण फरमाया जिसको बख़्शी मनी राम जी नम्बरदार ने, जो कोहाला से पार रियासत जम्मू कश्मीर में रहते थे और इन दिनों चरणों में मौज़ूद थे, लिख लिया। यह 'समता स्थिति योग' का प्रसंग है। इसमें एक जगह फरमाया हुआ है:

एही योग और तप है, एही साधना ज्ञान।
'मंगत' साचे नाम को, नित प्रति हिये विखान॥
जिसने सब रचना रची, सिमर सो ही तत रूप।
'मंगत' नित रखया करे, प्रभ दीनदयाल अनूप॥

38. पश्चिमी कश्मीर का दौरा

आप तप की समाप्ति पर अगस्त, 1941 को गोपी तीर्थ से रवाना होकर उड़ी पहुंचे। इस जगह चंद दिन निवास किया। इस जगह मेहता अमोलक राम जी आपके दर्शनों के लिए हाज़िर हुए। भक्त बनारसी दास जी इन दिनों में 'सम दर्शन योग' की छपवाई करवा रहे थे। इस जगह कस्बा से दूसरी ओर कुछ फासले पर एक मकान था, उसके चौबारे में आप रह रहे थे। उड़ी के प्रेमियों ने प्रार्थना की:- आप गुरुद्वारे में तशरीफ़ ले जाकर सत् उपदेशों से संगत को निहाल करें। आपने स्वीकार कर लिया और गुरुद्वारे में तशरीफ़ ले गये। सत् उपदेश में आपने अमली जीवन पर ज़ोर दिया और फरमाया कि सिर्फ़ वाणी पढ़ने का कुछ लाभ नहीं जब-तक उस पर विचार करके उस पर

1. लिखना

अमल न किया जाये। महापुरुष ने बतलाया हुआ है कि यह संसार का खेल सब झूठा है। जब-तक सच की खोज न की जाये इस चक्कर से जीव नहीं निकल सकता और छुटकारा नहीं होता।

इस जगह निवास करने के बाद आप चिनारी तशरीफ़ ले गये। चंद दिन वहां रुक करके फिर आप हटियां दूपटा पहुंचे और वहां से डोमेल तशरीफ़ ले गये। डोमेल से कोहाला और ऊपर जलमादा जाकर एक हफ्ता कुटिया में निवास फरमाया।

चूंकि सम्मेलन का समय नज़दीक आ रहा था इसलिए आप इस जगह से रवाना होकर शुभ स्थान गंगोठियां पधारे। सम्मेलन के हालात एक कापी में दर्ज़ थे। कापी गुम हो जाने की वजह से इन्हें यहां नहीं दिया जा रहा। इसके अलावा यह हालात पत्रिका मारतंड में भी छपे थे, लेकिन पाकिस्तान बन जाने पर पत्रिका की कापी भी प्राप्त नहीं हो सकी।

'समता स्थिति योग' की छपवाई की ड्यूटी भी भक्त बनारसी दास जी की लगी।

39. थट्टा में तप

कुछ समय शुभ स्थान पर निवास के दौरान आपने बाहर जाने का प्रोग्राम बनाया। भक्त बनारसी दास छपवाई के काम से फ़ारिग होकर सेवा में हाज़िर हो गये थे। इस दफ़ा प्रोग्राम थट्टा का बना। प्रेमी चानन शाह ने सेवा में प्रार्थना की थी कि इस दफ़ा उस तरफ का प्रोग्राम बनाया जावे, जिसे आपने स्वीकार कर लिया। चलने से पहले आपने निम्नलिखित वचन लिखकर दिये-

''ईश्वर आज्ञा से आमदा[1] तप के दौरान जिन प्रसंगों पर मालिक की मौज प्रगट होगी 'समता सार योग' उस वाणी का नाम होगा।''

इसके बाद आपने प्रेमी हरबंस लाल कोहाला निवासी का पत्र दिखलाकर भगत जी को फरमाया कि:- अभी चंद दिन हुए प्रेमी इस जगह से होकर गया है उस समय तो कुछ नहीं बोला। फिर निम्नलिखित शब्द उच्चारण फरमाये।

देह ममता को धार के, नहीं कुछ सार पहचानी।
संशे में अवधि गई, उठ चला निरासा प्राणी॥
देह के सुख के कारने, यतन किये बहु भांत।
पलक में सब बिनस गई, नहीं चित पाई शांत॥
अंधमत भोला अत धना, नहीं सरजनहार विचारया।
मोह माया को धार के, विच जुए जनम को हारया॥

इन शब्दों में आपने टकोर लगाई है और बतलाने की कृपालुता फरमाई है कि जीव देह ममता को धारण करके सार या असलियत को पहचान नहीं सकता। संशयों में ही उमर गुज़र जाती है और आखिर ना-उम्मीद या निराश ही इस दुनिया से कूच करता है। इस जिस्म के सुख के लिए दिन-रात

1. आने वाले, आगामी

कोशिश करता है मगर एक पल में यह जिस्म ख़त्म हो जाता है। इसे शांति नहीं मिलती। अंधमति सख़्त भूला हुआ है। जिस ताकत ने इसे खड़ा किया था या बनाया था उसकी पहिचान नहीं करता और न ही उसके बारे में विचार करता है। बल्कि मोह माया धारण करके जुए में जन्म को हार देता है। अगले शब्दों में जो शिक्षा दी गई है वह इस तरह है:

सुन सत्पुरुषों की सीख मन, अब तो हो सुचेत।
सरजनहार पहचान के, नित राखो तिस की टेक॥
ज्यों चलावे सुखकर मानें, निमर भाव चित्त धार।
पल पल कर तिस को बंदना, जाये बंधन संसार॥
सब कुछ हुआ तिस का जान, अपना त्याग गुमान।
'मंगत' भगती रंग रंगे, तब पावें कल्यान॥

सत्पुरुषों की शिक्षा को सुनकर ऐ मन अब तो सुचेत हो और उस बनाने वाले मालिक की पहचान कर, हमेशा उसकी टेक रख। जैसा वह चलावे उसे सुखकर मान। चित्त में नम्रभाव या आज़ज़ी धारण कर। पल-पल उसकी वंदना कर, तब संसार के बंधन से छूटेगा। सब कुछ उस मालिक का हुआ जान, अपना ग़ुमान छोड़ तब भक्ति के रंग में रंग कर कल्याण को प्राप्त होगा।

प्रोग्राम बन चुका था। उसके अनुसार शुभ स्थान से रवाना होकर रावलपिंडी पहुंचे और वहां से 7 नवम्बर, 1941 को रवाना होकर थट्टा पहुंच गये। अगले दिन एकांत निवास के लिए उपयुक्त जगह देखने के लिए तशरीफ ले गए, मगर कोई स्थान पसन्द न आया। प्रेमी चानन शाह की प्रार्थना को स्वीकार करके उनके घर के निकट सत्संग किया गया जिसमें प्रेमियों को सत् विचारों की वर्षा करके तृप्त किया। मगर दूसरे दिन सत्संग में थट्टा निवासी प्रेमी बहुत कम शामिल हुए। इस कम हाज़िरी को देखकर आपने फरमाया:-

"तुम लोगों ने जुलाहों की कमाई खा-खा कर अपनी बुद्धियों को भ्रष्ट कर रखा है। इस वास्ते संतों के सत् विचार सुनने की चाहना नहीं रखते। आप लोगों से कुछ लेने के लिए नहीं आए हैं बल्कि कुछ देकर ही जावेंगे। सीधे होकर आना हो तो आवें नहीं तो फ़कीरों का वक्त ज़ाया[1] न करें। ईश्वर तुम सबको सुमति देवें।"

अगले दिन एकान्त स्थान देखने के लिए वहां से चलकर दरियाये सिंध के किनारे जाने का प्रोग्राम बनाया और विचार किया कि अगर उस तरफ स्थान पसन्द आ गया तो वहां ही ठहरा जायेगा और जगह पसन्द न आई तो शाम को थट्टा वापिस आकर फिर विचार किया जावेगा। सुबह तांगे आ गये। करीबन 12 मील के फासले पर नारह सग्री कस्बे से होते हुए और घने जंगल से गुज़रते हुए दरियाये सिंध के किनारे बनी हुई कुटिया पर पहुंचे। अच्छी ऊंची जगह पर दो-तीन कमरे बने हुए थे जिनमें एक बैरागी साधु रहता था। उस स्थान से काफी गहराई में दरियाये सिंध बह रहा था। दरियाये सिंध से पार पहाड़ी का दृश्य बड़ा ही सुन्दर था। बैरागी थोड़ा सा अपना काम

1. नष्ट

करके गांव की तरफ चल दिया। श्री महाराज जी वहां ठहर गये और निम्नलिखित शब्द प्रेमियों को पढ़ने के लिए दिए।

तू बेअंत परमेश्वर मेरा, नित जाऊं बलहार।
अचरज कौतक जगत का रचया, सत कादर करतार॥
कुदरत देखी तेरी कादर, जल थल तूं भरपूर।
देख-देख तृप्त चित भया, मंसा भई काफूर॥
अंतर सबके परगट स्वामी, नहीं रूप वरण आकारा।
जां पर किरपा तेरी होवे, सो सिमरे सचयारा॥
नदियां नीर चले असगाह, अत ही वेग को धारी।
कोट बरख यह खेल खेलन्ता, तूं साहिब बनवारी॥
घाट न पावे महमा तेरी, सत् ठाकुर सुखदेवा।
जल थल अंदर पूर समाया, तूं देवन का देवा॥
तपन बुझावें शीतल करें, रूप धार उपकारी।
एह बिध जीवन जग में पावें, ज्यों नदी नीर वरतारी॥
अपना आप त्याग करें तूं, पर सुख देवन ताईं।
धूड़ रमावें जगत की, तब परसे सुख थाईं॥
सेवक रूप हो विचरें जग में, सबका हेत लखायें।
तीरथ रूप तूं ही जग आया, सब ही सेव कमायें॥
पलक घड़ी का खेल है मीता, खोज जीवन सुखरासी।
पर उपकार मारग को सोधो, सब भरमन मिटे चौरासी॥
सतगुर सेव साध की संगत, साचा नाम विचारो।
तन मन धन तीनों को अरपो, पर की सेवा धारो॥
अवगुनकारी मनुवां धोयो, निमख निमख पल सार।
परमारथ परतीत में, तन मन दीजो वार॥
मानुष जनम अमोलक जग में, नित खोजो कल्यान।
अंतकाल सब भये विछोड़ा, जब होवें धूड़ समान॥
उठत-बैठत भज गोबिंदा, सत शरधा चित्त लाए।
निर्मल उद्यम यह जग माहीं, संत वेद बतलाये॥
पर उपकार तीरथ को परसो, प्रेम नीर से नहाई।
जनम-जनम की तपन विनासे, मारग गुर दिखलाई॥
साचा तीरथ पर की सेवा, निष्काम भाव चित्त धारी।
'मंगत' जिस जन जुगत कमाई, तिस चरन बलहारी॥

इसके बाद आपने फरमाया कि:- यह शब्द इस जगह की याद के लिये काफी है, बाकी किसी दूसरी जगह लेखा बाहर आवेगा। इस जगह के स्नान हो गये हैं। तुम जल्दी-जल्दी रोटी बनाकर खा-पी लो फिर यहां से चला जावेगा। सब हालात विचार करने होते हैं। हमारे ठहरने में वैरागी खुश नहीं है। सिर्फ एकांत को ही नहीं देखना, और भी हालात देखने होते हैं। अच्छा, जो ईश्वर आज्ञा। अब थट्टा पहुंच कर ही विचार होगा।

सब प्रेमी जब भोजन वग़ैरह कर चुके तो वहां से आप वापिस चल पड़े। चलते-चलते आपने फरमाया:- ''वैरागी कितना हठी आदमी है। किस कदर बियाबान जंगल में बैठा हुआ है और कितना कठोर चित्त है। सिर्फ़ अपने पेट की ख़ातिर यह लोग बिल्कुल अलग रहते हैं। बस, इनकी बंदगी यही है। पूड़े, खीर खाना, तिलक लगाना वग़ैरह। न ही निर्मान भाव अंदर है, न ही किसी आये-गये का सत्कार है। नित ही शरीर के सांगोपांग[1] में ग़र्क[2] हैं। न किसी की सुनते हैं, न मानते हैं। ईश्वर इनको सत् बुद्धि देवें।''

सिंध नदी से वापसी पर आपने थट्टा शमशान भूमि में बने हुये बरामदे में विश्राम किया और एक मघॅर, संवत् 1998 से आपने घोर तप आरंभ किया।

यहां आपने 'समता सार योग' वाणी का आरंभ किया और 'निर्वाण सिद्धि' प्रसंग का पहला भाग लिखवाना शुरू किया। वाणी शुरू करने से पहले आपने भक्त जी को निम्नलिखित आज्ञा फरमाई:-

''प्रेमी! पहले महामंत्र लिखो। फिर 'सत्गुरु प्रसाद अमृत' लिखो, क्योंकि यह ही सत्पुरुषों का प्रसाद है जो कि जुग-जुग तक चलता रहता है। इससे हालते बेख़्वाहिशी[3] पैदा होती है, तभी संसारी भोगों से उपरामता प्राप्त होती है। प्रभु ने तुम्हें लिखने का यह भाग्य बख़्शा है। लिखकर समझो और अमल भी करो।'' इतना फरमाने के बाद आपने सबसे पहले निम्नलिखित दोहा उच्चारण फरमाया:

समता अखंड शांति, कुल विगन दोख से न्यार।
'मंगत' रूप नारायण का, तत समता विचार॥

इसके बाद 'नाद विवेक' प्रसंग लिखवाना शुरू किया। मघॅर का महीना था। गज़ब की सर्दी पड़ रही थी। आप आनन्दित अवस्था में मग्न होकर वाणी उच्चारण करते जाते और भक्त जी तेज़ी से लिखते जाते थे। आपने भक्त जी से कह रखा था कि जब उन्नीस पद ख़त्म हो जावें तो दोहे के लिये कह दिया करो और वह ऐसा ही करते थे। सर्दी इतनी थी कि भक्त जी को हर दस मिनट के बाद लैम्प पर हाथ गर्म करने पड़ते थे। वाणी रात 2 बजे से सुबह 6 बजे तक लगातार उच्चारण फरमाई जाती थी। जो वाणी लिखी जाती वह दूसरे दिन भक्त जी पढ़कर सुनाते थे और लिखने में अगर कोई ग़लती रह जाती तो आप ठीक करवा देते थे। एक दिन सत्पुरुष ने भक्त जी से पूछा:- ''प्रेमी! क्या लिखा-पढ़ा है?''

---

1. बनावट 2. डूबे हुए 3. निष्कामता

भक्त जी:- ''महाराज जी! सब उस नाद सरूप शब्द की महिमा है। इसकी खोज सब देवता, ऋषि, मुनि करते आये हैं। सबके अन्दर यही ज्योति प्रकाश कर रही है। लेकिन ऐसा भ्रम पड़ा हुआ है यानि मोह माया की ऐसी भूल में पड़ गये हैं कि उस परम आनंद हालत को न समझ सकते हैं, न उस तरफ जाने का प्रयत्न करते हैं।''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! पहले उस तत्त्व को बुद्धि द्वारा विचारना चाहिए, फिर दृढ़ होकर उसके बोध के वास्ते अधिक से अधिक यत्न करना चाहिए। इस माया के बंधन से छुटकारा पाना कोई आसान काम नहीं है। लेकिन जो प्रभु शरणागत हो गये वह जल्दी छुटकारा पा जाते हैं। सत्पुरुषों के मेल से ही सत् कीर्ति का पता लगता है और फिर दृढ़ विश्वास से सत् यत्न द्वारा परम लाभ प्राप्त होता है। आहिस्ता-आहिस्ता कोशिश करो। छलांग न मारो।''

इस तप के दौरान आप दोनों वक्त सिर्फ़ थोड़ी सी चाय सेवन करते। सख़्त सर्दी होने पर भी सिर्फ़ एक लोई ओढ़ते थे। तप का जीवन भी व्यतीत करते और वाणी भी उच्चारण फरमाते थे। प्रभु प्रेम में हर वक्त डूबे रहते। शाम के समय आई हुई संगत को सत् उपदेश द्वारा कृतार्थ करते। एक दिन सतसंग की समाप्ति पर जब आप वहां वापिस आकर आसन पर बैठे तो वहां एक बुज़ुर्ग प्रेमी बैठे थे। आपने उन्हें देखकर पूछा:- ''प्रेमी! आप यहां ही रहते हैं?''

प्रेमी:- ''जी हां! मैं हर जगह रहता हूं। मैं परमेश्वर हूं। रब हूं। विष्णु, महेश, राम, कृष्ण, सब मेरे ही नाम हैं। यहां तक इसलिए आया हूं कि आपको भ्रम से निकाला जाये। आपने जो अन्न पानी छोड़ रखा है मेरी प्राप्ति के वास्ते, अब आपका तप पूरा हो चुका है। अब आप खा-पी सकते हैं। किसी चीज़ की मनाही नहीं है। बेकार ही अपने शरीर को कष्ट न दें। मैं आप पर खुश हूं।''

श्री महाराज जी:- ''महाराज! आपका हुक्म मानने की कोशिश की जाएगी। फ़िकर न करें। लेकिन यह रब, परमेश्वर बनने का सर्टिफिकेट कब से मिला है, रब किसने बनाया है?''

बुज़ुर्ग प्रेमी:- ''मैं ही आदि पुरुष हूँ। मेरे सिवा और कुछ नहीं है। मैं ही सबको बनाता हूँ, बड़ा करता हूँ, पालता हूँ। मेरे हुक्म से ही सारे संसार का चक्कर चलता रहता है।''

श्री महाराज जी:- ''तब फिर एक मक्खी बनाकर दिखलाओ और नहीं तो अपने सिर के सफेद बाल ही पहले की तरह काले करके दिखलाओ, तब तुम्हारी उच्चता समझ आवेगी।'' वह व्यक्ति ठिठक कर खामोश हो गया।

श्री महाराज जी:- (ज़रा क्रुद्ध होकर) ''ख्वाह-म-ख्वाह[1] कलंकी अवतार बने फिरते हो। जाओ, दिमाग़ की ख़राबी का इलाज कराओ।''

बुज़ुर्ग प्रेमी के चेहरे पर उदासी छा गई और ब्रह्म विद्या को बग़ल में दबाये वहां से फौरन चल दिया। महापुरुष ठीक फरमाते हैं :-

''ब्रह्म ज्ञान कथनी का विषय नहीं, अनुभव का विषय है। फिर ज़बान से कौन करे दावाए खुदाई।''

---

1. व्यर्थ में

आप शाम को सत्संग की समाप्ति के बाद अपने स्थान पर वापिस आ गये और रात को फिर वाणी उच्चारण शुरू कर दी और सुबह होने तक 'नाद विवेक' का प्रसंग पूरा हो गया। दूसरे दिन जब श्री महाराज जी एकान्त में आनन्द ले रहे थे भक्त जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! यह क्या बात है कि आप वाणी उच्चारण करते समय तो लगातार ही बोलते चले जाते हैं, मिनटों में कितने ही पद बोल जाते हैं लेकिन ज़रा सी गलती निकालने में दो-तीन मिनट लगा देते हैं?''

श्री महाराज जी:- ''मालिक की मौज का प्रवाह जब चल पड़ता है और चलता जाता है उस समय बुद्धि ग़लत और सही सोच के द्वंद्व विचार से परे होती है। उस समय लगातार बेदारी[1] हालत से ग़लत शब्द उच्चारण नहीं होता। तेरी कलम या बेहोशी ग़लती कर जाती है। उस बे-परवाह हालत का अनुभव वह ही सत्पुरुष जान सकता है जिसके अन्दर आनन्दमयी मौज तारी[2] है। जब सत् स्वरूप से अलग बाहरमुखी होकर विचार होता है तब ज़ेर-ज़बर मात्राओं का विचार आता है। अंतर सत् शब्द के सम्पर्क में आई हुई बुद्धि के अन्दर अपने आप आत्म तत्त्व के सही विचार उठते हैं। ज़रा भी सोचने के वास्ते कोशिश करनी नहीं पड़ती है। अपने आप ही अमृत वाणी प्रगट होनी शुरू हो जाती है। जैसा भी जिस विचार का संकल्प उठा उसकी महिमा शुरू होने लग जावेगी। करतार की भी, संसार की भी नई बातों का पता चलता है। लेकिन संसार की मालूमात खेद युक्त होती है, इस वास्ते इधर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया जाता। जिस करके तपे हुए हृदयों के अंदर ठंडक शांति आवे वह ही विचार सत्पुरुष प्रगट कर जाते हैं। सबको अपना-अपना सत् विश्वास और श्रद्धा ही इस सत्मार्ग में उन्नति देने वाले हैं।''

जब दिन के तीन बजे तो क्या देखते हैं कि शहर के लोग शमशान की तरफ चले आ रहे हैं और कंधों पर एक मृतक शरीर उठाये हुए हैं। उसका दाह संस्कार करके और स्नान वग़ैरह से फ़ारिग होकर सब सज्जन चरणों में हाज़िर हुए। पहले एक प्रेमी रामचंद ने शब्द पढ़ा, उसके बाद श्री महाराज जी ने निम्नलिखित सत् उपदेश देकर सबको कृतार्थ किया:

''प्रेमियों! यह ही सबका ठिकाना है, चाहे कोई अमीर है या ग़रीब- जो भी संसार में आया है। यह जीव तृष्णा की आग में तप रहा है। जिस दु:ख को लेकर आया है उसी दु:ख को लेकर चला जाता है। दु:ख को दूर करने का उपाय हर एक जीव करता है लेकिन फिर इससे भी अधिक अशांति पाता है। वास्तव में इस जीव को जन्म-मरण का रोग लगा हुआ है। बिना सत् प्रतीत के उससे खुलासी[3] नहीं मिल सकती। इसलिए जीव का सारा यत्न-प्रयत्न अकार्थ चला जाता है। मानुष जन्म की यही उच्चता है जो जीते जी अपने असली ठिकाने की खोज कर लेवे, तब इस दीर्घ रोग से छुटकारा मिलता है। प्रारब्ध अनुसार दु:ख और सुख जीव को मिलता ही रहता है लेकिन फिर शुभ-अशुभ कर्म करके नये से नये फलों की मांग करता रहता है, जो इसके वास्ते फिर आवागवन का कारण बनते हैं। जब-तक सत्पुरुषों के कहने के मुताबिक जीव नहीं चलता तब-तक अशांति के

1. जागृत 2. जारी, प्रगट 3. मुक्ति

जाल से छुटकारा नहीं प्राप्त होता। ईश्वर आप सबको सुमति देवें। और दो घड़ी का वैराग्य आपको सत् मार्ग की तरफ ले भी जाये मगर शहर पहुंचने तक सब विचार ख़त्म हो जावेंगे। यह फ़कीर आपकी सेवा के वास्ते आये हैं। समय निकाल कर सत्संग में आया करो।''

एक प्रेमी:- ''महाराज जी! इस तरफ तो लोग दिन के समय भी नहीं आते। आज मजबूरी में आना पड़ गया है और आपके दर्शन हो गये हैं।''

श्री महाराज जी:- ''इधर आने का नाम न लो। अपने आप ही यह लोग कभी न कभी ले आयेंगे या कोई छोड़ने खुद आवेगा। यह जगह सबक[1] देने वाली है। डरना किस बात से? तुम लोग शरीर के पुजारी हो, प्रभु चरणों में प्रेम हो तो फिर इस तरफ आया जावे। तुम्हारे वास्ते हम शहर में ही ठहरे हुए हैं, सत्संग भी रात को होता है। वक्त निकाल कर वहां तो आ सकते हो। खैर, तुम्हारी मर्ज़ी।''

40. सिमरण सम्बंधी संवाद

एक दिन जब आप अनुभवी वाणी लिखवा चुके तो आपने भक्त बनारसी दास से पूछा:- ''क्या समझा है?''

भक्त जी:- ''महाराज जी! दास का ख़्याल ज़्यादातर तो लिखने में ही रहता है। इस तरह लगातार लिखने-पढ़ने से समझ में बात कम बैठती है। (कुछ देर सोचने के बाद) महाराज जी, नाम जपते समय अक्सर स्वास भी और नाम भी भूल जाता है। मन नये से नये रूप खड़ा कर देता है और उनसे रंगरलियाँ करने लग जाता है। इसका यह खेल किस तरह बंद हो सकता है?''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! सुरति एक दम कैसे एकाग्र हो सकती है? जन्म-जन्मांतर से ये बुद्धि वासना को पूर्ण करने में लगी हुई है। निर्वास होने की कोशिश ही नहीं करती। बड़े भाग्य से गुरमुख जीव को भक्ति प्राप्त होती है। जब- तक इसमें चित्त न दे तब-तक कैसे एक धारा पर आ सकती है? हर समय स्वांस के साथ नाम उच्चारण करो। मुंह बिल्कुल बंद रहे। रीढ़ की हड्डी बिल्कुल सीधी रहे। आसन ठीक तरह पहले बिछा कर बैठना चाहिये। गर्दन बिल्कुल न झुकने पाए, गर्दन का झुकना ग़फ़लत[2] की निशानी है। गर्दन उस समय झुक जाती है जब अभ्यास के समय आलस्य निंद्रा आ घेरते हैं।

भक्त जी:- ''महाराज जी! आप भी तो किसी समय बिल्कुल झुक जाते हैं। बड़ी देर के बाद असली हालत में आते हैं।''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! यह अवस्था और चीज़ है। यह जल्दी नहीं आती। यह निर्भय अवस्था है। जब सुरति शरीर को बिल्कुल भूल जाती है तब ऐसा होता है।''

भक्त जी -(किसी प्रेमी का नाम लेकर) ''वह भी ऐसे झुक जाता है और बाज़-औकात[3] गर्दन हिलाता रहता है।''

---

1. शिक्षा 2. बेहोशी 3. कभी-कभी

महाराज जी:- ''प्रेमी! यह अपने साथ भी ठगी करता है और दूसरों को भी धोखा देता है। जब सुरति नाम और स्वांस के आने-जाने को अच्छी तरह समझ कर आ-जा रही है, नाम लगातार उच्चारण कर रही है, झुकने का मतलब ही क्या है? जब किसी समय भाग्य से बड़ी मेहनत करके नाद प्रगट होता है तब जाकर शरीर में भूलने वाली अवस्था आने लगती है। अभ्यास के समय चौकन्ने होकर कमर सीधी रखकर पूरे होश से नाम उच्चारण करना चाहिये।''

भक्त जी:- ''महाराज जी! जो प्रेमी सत्संगों में ही समाधि लगा कर बैठ जाते हैं उनके बारे में आपका क्या फरमान है?''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! भरा हुआ घड़ा छलकता नहीं। थोड़े पानी वाला ही आवाज़ दिया करता है। यह सब एक दिखावा है। इससे दूसरों पर प्रभाव डाला जाता है कि मैं बड़ा तपस्वी हूँ। अभ्यास में हर समय लगा रहता हूँ। असल में सत्संग में बाहोश होकर निर्मान चित्त से बैठना चाहिए। आँखें खोलकर विचार सुने सुनाए। भूलकर भी संगत में दिखावे वाली बात न करें। अभ्यास बिल्कुल गुप्त रूप से करना चाहिये। बरसों गुज़र जायें किसी को पता न लगे यह क्या करता है''?

भक्त जी:- ''महाराज जी! आप कृपा करेंगे तब ही इस मन की चंचलता ख़त्म होगी। ऐसा होना तो हम से बहुत मुश्किल है।''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! उच्च कोटि के सूरज नामी महात्मा पोठोहार के इलाके चोहा भक्तां में हुए हैं। अब भी उनका खानदान भक्तों का खानदान कहलाता है। बाबा सूरज की सेवा में एक सेवादार आपसे कहने लगा:- 'साईं जी! मुझे अल्लाह वाला रास्ता बतलायें।'

आपने फरमाया:-

नाम शहानी ज़ात अहीर। सूरज मिलया सच्चा पीर॥
अल्लाह कहो न कहो। सूरज सेती सच्चा रहो॥

'मतलब यह कि तुम अल्लाह को याद करो या न करो सिर्फ़ जितना समय हमारी हाज़री में रहते हो सच्चे दिल से ख़िदमत (सेवा) की हुई तुमको निज़ात (मुक्ति) बख़्शेगी। तुम्हारी यह ही इबादत और बंदगी है।'

''सच्चे जिज्ञासु को चाहिये कि मन, वचन, कर्म से गुरु भक्ति कमावे। उसका नाम शहानी था। गऊएँ चराया करता था और दूध वग़ैरह बेचना उसका रोज़गार था। सच्चे पीर श्री सूरज महाराज जी उसे मिल गये थे। गुरु परायणता का ही सबक दिया गया। उसकी कौम के लोगों ने उसकी काफी मुख़ालफ़त (विरोध) की, लेकिन वह आख़री दम तक पक्का रहा। आशिक हमेशा पक्के ही रहते हैं। महापुरुषों की ऐसी बातें धर्म के मार्ग में सबक देने वाली हुआ करती हैं। ज़रूर सबक लेना चाहिये।''

भक्त जी:- ''महाराज जी! आप इस कदर दीन भाव के शब्द प्रभु चरणों में उच्चारण करते हैं, क्या कारण है? आपने तो अंतिम स्थिति यानी परम स्थिति प्राप्त कर ली है।''

इस पर आपने उत्तर दिया:- ''प्रेमी! इनका हिसाब-किताब ख़त्म है। यह सब तुम्हारे वास्ते बोला जा रहा है। जो-जो प्रेमी सत्संग में विश्वास रखने वाले होंगे इस देव वाणी को पढ़ कर बार-बार अपना आना-जाना बंद करेंगे। इन शब्दों के द्वारा ही प्रेमी के अंदर प्रेम पैदा होता है। सत् पद प्राप्ति के बाद और भी अधिक निर्मान भाव ही प्रगट करना उचित है। तब ही ऐसी आनन्दमई स्थिति प्राप्त हो सकती है।''

इसके बाद आपने भक्त जी को फरमाया:- ''चलो, संगत की सेवा करो।'' इस समय सत्संग का समय हो चुका था। कस्बा में पहुंच कर आप आसन पर विराजमान हुए तो प्रेमी चानन शाह ने यूं प्रार्थना की :

चानन शाह जी:- ''महाराज जी! हमको भी किसी रास्ते पर डालें। चरणों में जगह बख़्शें।''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! आगे जो कुछ कर रहे हो क्या वह ठीक नही?''

चानन शाह:- ''आगे पीछे क्या कर रहे हैं, साल में एक दफ़ा जाकर खानदानी गुरु स्थान पर प्रणाम कर आते हैं। उस जगह तो ग्रंथ पड़ा हुआ है। अगर उसके दर्शन करने हों तो 101 रुपये भेंट रखकर दर्शन कर लिये जाते हैं। बग़ैर भेंट के दर्शन नहीं करने देते। न मालूम कैसी पिछले गुरु मर्यादा चला गये हैं। इसे पढ़ना तो दूर, दर्शन भी इस जुर्माने के दिये बग़ैर नहीं होते। आप भी ग्रंथ की रचना कर रहे हैं, इसकी ऐसी मर्यादा न कायम कर देना।''

श्री महाराज जी प्रेमी की इन बातों को सुनकर हँस पड़े। फिर फरमाने लगे:- ''प्रेमी! यह तालीम खुली रखी जावेगी। भेंट, श्रृंगार या चढ़ावा वग़ैरह के बारे में सब नियम लिखकर कलम बंद कर दिये जावेंगे। इस तरह वाणी उच्चारण होगी जिस तरह रोज़ाना सत्संग में सुनते हो। बाकी आप के वास्ते यही भजन बंदगी है कि इस महामंत्र का सुबह-शाम अंदर ही अंदर में नियमपूर्वक सिमरण कर लिया करो। ज़्यादा बैठने का अभ्यास आपसे बन नहीं सकता। शारीरिक तकलीफ़ से बैठ नहीं सकते। टेक लगाकर जैसे भी हो सके समय पूरा कर लिया करो।''

सत्संग समाप्त होने पर वापिस शमशान भूमि में तशरीफ़ लाये और रात को 'निष्काम कर्म साधन' का प्रसंग उच्चारण फरमाया। दूसरे दिन सुबह भक्त जी ने निष्काम कर्म के बारे में कुछ पूछा तो- आपने निम्नलिखित निष्काम और सकाम कर्म का भेद बतलाया।

''एक कर्म करके जीव बंधन में पड़ता है और एक कर्म करके छुटकारा पाता है। एक पलक भी कर्म क्रीड़ा से छूट नहीं सकता। मन में फल की आशा रखकर जो कर्म किया जाता है उसको सकाम कर्म कहते हैं। सकाम कर्म ही इसको आवागमन के चक्कर में ले जाते हैं। भाग्य से सत्संग और सत्पुरुषों की संगत द्वारा सूझ पाकर निष्काम कर्म के भेद को जानकर सत् मार्ग में दृढ़ होता है। सिर्फ 'इधरों पुटना उधर लगाना' यानी वृत्ति को संसार की तरफ से हटाकर करतार की तरफ लगाना है। यानी जो भी कर्म इससे बन आवे सबको ईश्वर आज्ञा में समझते हुए फल की आशा न रखकर करता जावे। तब बुद्धि निर्मल होते-होते असली तत्त्व को जानने लगेगी। असली निष्कामता उस

समय उसके अंदर आती है, जब नाद स्वरूप परमेश्वर को अपने घट के अंदर प्रगट देखता है। सकाम कर्म की भावना उस समय नष्ट हो जाती है। आकारमई बुद्धि निराकार में तबदील हो जाती है। सब कुछ प्रभु आज्ञा में विचारने लगता है।''

यह सत् उपदेश सुनाने के बाद आपने भक्त बनारसी दास से कहा:- ''अब तू बता, किस धारणा को मन में धारण करके तू सेवा कर रहा है?''

भक्त जी:- ''महाराज जी! मैं नहीं समझा कि आपने क्या फरमाया है?''

श्री महाराज जी:- ''किन धन-दौलत, मान-बड़ाई और संसारी पदार्थों की ख़्वाहिश (इच्छा) रख कर सेवा कर रहा है?''

भक्त जी:- ''महाराज जी! दास तो किसी दुनियावी पदार्थ की ख़्वाहिश रखकर शरण में नहीं आया है, बल्कि उस शांति की तलाश में आया है जिस शांति को पाकर राम, कृष्ण, कबीर, बुद्ध आदि अवतार कहलाये। इसके अलावा और कोई विचार नहीं। इसके वास्ते जो ज़रूरी हिदायत हो करें।''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! विचार तो तुमने बहुत ऊंचा धारण कर रखा है। हां, कोई गोल[1] निशाना जब-तक सामने न रखा जाये तब-तक इधर नहीं जाता। ऐसी ख़्वाहिश के वास्ते बड़ी कुर्बानी की ज़रूरत है। बाकी इधर से जो कृपा करनी थी वह कर दी गई है। अब तुम्हारी अपनी मेहनत है। यह सेवा वग़ैरह भी इस सत्मार्ग में सहायक होती है। पहुंचाने वाली अपनी अभ्यास की कमाई है । इस तरह से चलते रहो, खुद ही मालिक सब सबब[2] बना देता है।''

जब साहिब कोई करनी लोड़े, सौ सबब इक पल विच जोड़े।।

'तू करता सत् तेरी आज्ञा' इस पवित्र निश्चय को दृढ़ करो। इसी से शुरू होना है, इसी में ख़त्म होना है। ऐसा सत् भाव चिरकाल के बाद समझ आता है और फिर दृढ़ होता है। पूछने से बेहतर[3] है कि मन में विचार को बिठाओ। अच्छा, अब जाओ।''

इसी तरह एक दिन कस्बे में सत्संग के बाद आपने संगत से प्रश्न किया।

श्री महाराज जी:- ''प्रेमियों! जो कुछ पढ़ा जाता है समझ आती है या नहीं?''

प्रेमी:- ''महाराज जी! वाणी बड़ी आसान और साफ है, लेकिन भाव मुश्किल हैं। इन वचनों के अपनाने के वास्ते आपकी कृपा होनी चाहिये तब ही इन पर हम लोग चल सकते हैं।''

श्री महाराज जी:- ''कोई सुनने वाला बने तो सही। इनका आना तो आपकी जागृति के वास्ते ही हुआ है। जिसने आंखें बंद की हों उनको कौन जगाये? लुंगियों के व्यापार के वास्ते इधर नहीं आये। यह तो गुरुमुख जीवों की तलाश में आये हैं। यहां के लोग तो बहुत ही मोह-माया में घिरे हुए हैं, जिनको सत्संग की रग़बत[4] ही नहीं। ईश्वर की माया अपार है। जिन जगहों पर सत् सिमरण, सेवा भाव कम हो जाते हैं वह जगह उजाड़ का रूप जानें।''

---

1. लक्ष्य 2. साधन 3. अच्छा 4. इच्छा, लगन

भक्त जी:- ''महाराज जी! आप हिन्दी, संस्कृत वग़ैरह तो पढ़े नहीं, फिर भी ऊंचे-ऊंचे हिन्दी के शब्द उच्चारण करते हैं।''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! जब दिल की तख़्ती साफ हो जाती है इल्म[1] का भंडार सामने आ जाता है। अभी तो मुश्किल शब्द बोलने की आज्ञा ही नहीं है। एक-एक भाव को कई तरीकों से इस वास्ते समझाया जाता है कि परमार्थ का मार्ग छोटी बुद्धि वालों को समझ में आ जाये। प्रभु आज्ञा से तेरे आगे जो आ रहा है उसे अच्छी तरह विचार करने की कोशिश किया कर। परम पद की प्राप्ति तो पीछे होती है, पहले इन विचारों को समझ कर अभ्यास में रुचि बढ़ती है। मोह-माया का जाल ऐसा है, समझते हुए भी जीव भ्रम में फंस जाता है। ख़्वाह-म-ख़्वाह[2] कर्म का अभिमानी बनकर इच्छा चक्कर में गिरफ्तार हो जाता है। कर्म करके फल को प्राप्त करता है, फिर उसे भोग कर राग-द्वेष की अग्नि में जलता रहता है। अनेक प्रकार के यत्न करने पर भी मन का कर्तापन ख़त्म नहीं होता। सत्पुरुषों ने दीन ग़रीबी का मार्ग अल्पज्ञ जीवों के वास्ते निकाला है। जो जिज्ञासु निर्मल प्रीति से सत्मार्ग पर चलता है आहिस्ता-आहिस्ता उसका कर्तापन निवृत्त हो जाता है। जो भी प्रभु आज्ञा हो, उसकी रज़ा में रहने वाला एक न एक दिन चित्त की ठंडक प्राप्त कर लेगा।''

इसी तरह एक दिन स्नान वग़ैरह से .फ़ारिग होकर जब आप आसन पर विराजमान हुए तो भक्त जी से कहने लगे:- ''आज क्या लिखा है?''

भक्त जी:- ''महाराज जी! आज के प्रसंग में तो पहली अवस्था का ब्यान किया है। जब बुद्धि पूर्ण तौर पर अंतर्मुख होती है तो निष्कर्म यानी शून्य अवस्था का अनुभव होता है, जहां कोई संकल्प-विकल्प नहीं उठता। इस हालत की प्राप्ति के वास्ते ही सब यत्न-प्रयत्न हैं। फिर आगे तो आसानी हो जाती है।''

महाराज जी:- ''बेईमान! आसानी ढूंढता फिरता है। क्या शरीर का अभिमान आसानी से जाता है? कोई ही कोटों में से एक इस अवस्था तक पहुंचता है। अगर इस जगह पहुंच कर मान प्रतिष्ठा में फंस गया तो फिर गया। फिर मेहनत करता है। ज्यों-ज्यों स्थिति बढ़ती जाती है त्यों-त्यों संसार से अलग होता जाता है। बाज़[3] बिल्कुल अवधूत अवस्था में रहते हैं। इस अवस्था वाले बहुत कम संसारी जीवों को सत् उपदेश से कृतार्थ करते हैं। तुमको इनकी स्थिति का क्या पता लगे? राम और कृष्ण ही इन विचारों की कदर कर सकते हैं।''

भक्त जी:- ''महाराज जी! एक शंका है। पूछने की गुस्ताखी[4] करूं तो माफी बख़्शें। आप जिस समय भी फरमाते हैं कृष्ण, बुद्ध, मोहम्मद, नानक, ईसा का नाम अकेला ही उच्चारण फ़रमाते हैं। बाकी सब दुनिया पहले कुछ भगवान या गुरु वग़ैरह लगाकर फिर सत्पुरुषों का नाम उच्चारण करती है।''

महाराज जी:- ''प्रेमी! आत्म स्थिति में वे न इनसे बड़े हैं न छोटे। जैसे तुम अपने हम-उमरों[5] का नाम पूरा नहीं बोलते हो, उनके आधे नाम उच्चारण करने पर भी वह आपसे प्रेम बनाये रखते हैं,

---

1. ज्ञान 2. व्यर्थ में 3. कोई 4. दुस्साहस 5. साथियों

इसी तरह इनका उनसे सम्बंध है। यह सब एक ही समता धाम के निवासी हैं। तुम बेफिकर रहो। खाली नाम उच्चारण करने पर इनसे वह सत्परायण पुरुष नाराज़ नहीं हो सकते। अच्छा, आख़री दोहा पढ़कर जाओ।''

भक्त जी ने आज्ञा पालन करते हुए निम्नलिखित दोहा पढ़ा।

नित ही नित सिमरन करूं, साचा नाम अखंड।
'मंगत' निर्मल प्रीत से, मन के मिटे द्वन्द्व॥

उस दिन एक मुसलमान प्रेमी श्री महाराज जी के चरणों में हाज़िर हुआ और उसने ख़ुदा परस्त यानी प्रभु भक्ति वाली औरत राबिया का किस्सा सुनाया, जो मिश्र में हुई थी। उसकी ज़िंदगी के वाक्यात व हालात ब्यान किये और बतलाया कि उसका मालिक उसे तकलीफ़ें देता और कितना काम लेता और ज़ुल्म करता, मगर राबिया इस कदर मज़बूत इरादे की थी कि बावज़ूद इतने ज़ुल्म बर्दाश्त करने के ज़रा नहीं डगमगाई। बल्कि उस मालिक की रज़ा में रहते हुए रात को ख़ुदा की बंदगी में सरशार (मस्त) रहती और अंत में कैसे उसके मालिक को उसके सामने झुकना पड़ा।

राबिया के इस दु:खमयी ज़िंदगी के हालात से प्रभावित होकर सत्पुरुष की आंखों में भी आंसू आ गये और आपने फरमाया, ''उस मालिक की याद करने वाले चाहे पूर्व में हों या पश्चिम में कितनी भी मुसीबतें उन पर आयें वह ज़रा नहीं डगमगाते और मालिक की रज़ा को मानते हुए हर मुसीबत को बर्दाश्त करते हैं और उनकी ज़िंदगी सबक देने वाली होती है।''

जब वह मुसलमान प्रेमी चला गया तो आपने फरमाया:- ''देखो प्रेमी! किस कदर यकीन वाले यह लोग हैं। बुज़ुर्गों के इतिहास को किस तरह श्रद्धा से वह ब्यान करता रहा है। जिस राबिया का प्रसंग उसने सुनाया है वह उस शून्य अवस्था में स्थित थी जिसे पाकर फिर कुछ पाना बाकी नहीं रहता। सबसे बड़ी बंदगी प्रभु भाने यानी ख़ुदा की रज़ा में रहना ही है। आज उसी प्रसंग को तू लिख रहा है जिसमें अल्लाह वाले लीन रहते हैं। ख़ुद-ख़ुदा यानी ब्रह्ममई हो जाते हैं। वहां यह कहना ही नहीं बनता कि मैं ख़ुदा हूं, ब्रह्म हूं। 'सम अवस्था' इसी का नाम है। उठो, चलो नगर की तरफ। आज तुमको नींद की भी कसर लगी है। इस तरह के प्रसंग कभी-कभी सुनने में आते हैं। ऐसे प्रसंग चित्त में बिठाने की कोशिश किया करो। यह विचार मन में न लाना कि यह मुसलमान है, यह हिन्दू है, यह पारसी है। सबको अपनी आत्मा जानो। पूर्व के हों या पश्चिम के हों जहां भी उस मालिक के प्यारे होते हैं सब ही नमस्कार योग्य हैं।''

शाम के समय जब शहर में सत्संग हुआ काफी संगत उसमें शामिल हुई। सत्संग समाप्त होने पर फिर वापिस शमशान भूमि तशरीफ़ ले आये और निश्चित समय पर प्रोग्राम अनुसार आपने 'शून्य कर्म साधन' प्रसंग उच्चारण फरमाया जिसे भक्त जी ने लिख लिया।

दूसरे दिन सुबह जब भक्त जी उसे पढ़कर सुना रहे थे तो एक प्रेमी ने आपसे प्रश्न किया।

प्रेमी:- ''महाराज जी! त्रिगुण माया का जाल क्या है?''

महाराज जी:- ''जो भी कर्म जीव करता है उनका मानी बन जाता है कि मैंने किया। ऐसा

कहना ही जुर्म है। इच्छा से कर्म और कर्म से इच्छा रूपी लहरें नित ही चित्त में प्रगट होती चली जाती हैं। यह ही माया भरम असगाह है। नित ही जीव कर्मफल की आशा रखकर कर्म करता हुआ सुख-दु:ख, खुशी-ग़मी, राग-द्वेष को प्राप्त होता रहता है। उस दुविधा से निकलने के वास्ते केवल एक मात्र इलाज यह है कि 'मैं कर्ता' भाव को भूलने की कोशिश करे। बार-बार 'तू कर्ता' का सत्भाव जब-तक दृढ़ नहीं होता तब-तक निष्कर्म अवस्था प्राप्त नहीं होती। जीव इस तरह अनेक शरीरों को धारण करता हुआ कर्मगति में फंसा रहता है। जब सत्कर्मों को शुरू करता है तब जाकर किसी समय ख़ुलासी (मुक्ति) पाता है।''

भक्त जी:- ''महाराज जी! कर्म भी तो विकारों द्वारा ही पैदा होते हैं। इन विकारों को पूरा करने के वास्ते भी तो हर वक्त अंदर लालसा बनी रहती है। कोई इच्छा पूरी हो जाती है तो खुशी होती है, नहीं तो दु:ख। यह लालसा कैसे ख़त्म हो? जो पांच विकार जीव को लगे हुए हैं इनको अलग-अलग करके मारा जाये या एक ही दफ़ा मर जायेंगे? एक काम ही ऐसा दुश्मन है जिसके दबाने के वास्ते बड़ी कोशिश की जाती है। यह मन उस तरफ से हटता ही नहीं, उसी तरफ़ जाता है। यह किस तरह ख़त्म हो?''

श्री महाराज जी:- ''बेईमान! बार-बार मन को भटकाया न करो। यह विचार किसी न किसी समय तुम्हें ऐसा ख़राब करेगा कि याद करोगे। बाकी सब संसार कामना रूप ही है। कामना के नष्ट होने पर क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार अपने आप विदा हो जावेंगे। जाओ, ईश्वर का सिमरण करो। अपने आप ही किसी समय दुष्ट भाव कमज़ोर हो जायेंगे।'' शाम को शहर में सत्संग हुआ। पहले एक प्रेमी ने वाणी पढ़ी जिसका पहला और आखरी दोहा निम्नलिखित थे :

अंतर दुर्मत वासना, मुख से कथे ज्ञान।
'मंगत' सो जन जगत में, जानो रूप स्वान॥
दुर्मत भरम को धार जो, आप को ब्रह्म कहलाये।
'मंगत' सो ही मनमुखी, पावें घनी सज़ाये॥

इसके बाद सत्पुरुष ने सत् उपदेश देते हुए फरमाया :-

''प्रेमियों! यह ज़बानी जमा ख़र्च का काम नहीं कि 'अहं ब्रह्म अस्मि' कहने से पार हो जाओगे। जब-तक अंतर्विखे शब्द की धारा जारी नहीं होती तब-तक यह वासना का वेग ख़त्म नहीं होता, चाहे करोड़ जन्म बीत जाएं। कर्म करने की वासना जब-तक मौज़ूद है तब-तक उसके अंदर प्रकाश नहीं होगा। यह इनके अनुभव की बात है। जिस समय शरीर को तीन काल निश्चय कर मिथ्या समझेगा उस समय वह योगी खुद ही जान जायेगा कि मैं कहां खड़ा हूं? अंतर तो बुद्धि हर घड़ी विषयों को पूर्ण करने के वास्ते सोचती रहे और बाहर से ब्रह्मवादी बन जाये, इससे पूरी तसल्ली नहीं होती। मुख की कथनी कभी धीरज नहीं देती और ज़्यादा वहमों में फंसाती है। इससे साधारण जीव ही अच्छे हैं जो मेहनत करके निर्वाह करते हैं और दो घड़ी श्रद्धा विश्वास से सिमरण

भी कर लेते हैं। इनसे वक्त पर सेवा सत्संग भी हो जाता है। नित ही भय में रहकर अच्छे कर्म करने की कोशिश करते हैं। ब्रह्मवादी तो उल्टे विकारों में फंस जाते हैं। सब कुछ 'ब्रह्म अस्मि' समझकर हर एक चीज़ को लपेटने की कोशिश करते हैं। ऐसी अंधमति विकारों में फंसी हुई बुद्धि कभी भी परम शांत निर्वाण पद को प्राप्त नहीं हो सकती। यह कथनी का मार्ग नहीं, रहनी का है। पहले यत्न-प्रयत्न करके चिरकाल के बाद निर्देह अवस्था का बोध होता है। तब इसमें स्थित रहे और मुंह से कुछ न कहे ''मैं ऐसा हूं''। अंदर प्रकाश तब होगा जब मंसा (इच्छा) ख़त्म हो जावेगी। सब से अच्छा तरीका यही है कि नित ही प्रभु सिमरण में अपने आपको ले जाने वाली भावना पैदा करो। जिस कृपालु ने चमड़े, हड्डी, मांस का शरीर जीवित कर रखा है इसको मूर्ख मन क्यों नहीं विचारता? बार-बार 'मैं-मेरी', राग-द्वेष की अग्नि में जलता रहता है। जब इसको यह समझ आ जाती है कि तन, मन, धन वग़ैरह कुछ भी मेरा नहीं है किसी दूसरी वस्तु द्वारा प्रकाश हो रहा है, उस वक्त मान ख़त्म हो जाता है और परम शांति को प्राप्त होता है। प्रेमियों! ज़्यादा ज्ञान ध्यान को छोड़कर सादगी, सत्, सेवा, सत्संग, सत् सिमरण वग़ैरह असूलों को धारण करो। सब कुछ उसमें आ जाता है। इन असूलों को धारण करने वाले ही पूर्ण अवस्था को प्राप्त होते हैं। चलते चलो, चलते चलो, कभी न कभी कृपा हो जावेगी। ईश्वर आप सबको निर्मल बुद्धि देवें।''

यह सत् उपदेश सुनने के बाद सब प्रेमी अपने-अपने घरों को चले गये। उस दिन आप नित के प्रोग्राम अनुसार रात को एक बजे शमशान पर पहुंचे। शमशान में एक चिता जल रही थी जिसे देखकर श्री महाराज जी फरमाने लगे :-

जिन्हां दे घर लाल ते हीरे, उन्हां नू खा गये कीड़े॥
जिन्हां दे घर झूमते हाथी, उन्हां नूं खा गई माटी॥

उस रात आपने 'नाद ध्यान' प्रसंग उच्चारण फरमाया। दूसरे दिन वाणी की दुरुस्ती के समय भक्त बनारसी दास ने श्री महाराज जी से पूछा:

भक्त जी:- ''महाराज जी! हर पद नये रूप में आता है, यह बड़ी अश्चर्ज की बात है। वाणी आसान बहुत है, भाव बड़े गहन हैं।''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! सब उस मालिक की अपनी लीला है। यह साढ़े तीन हाथ का पिंजर क्या हस्ती रखता है? जो भी उस मालिक को याद करता है उसके अंदर यह गुप्त भेद अपने आप ही प्रगट होता चला जाता है। सिर्फ अंतर्गत विचार करने की ज़रूरत है। वह अमृत अंदर है बाहर नहीं। वैसे अंतर भी वही, बाहर भी वही है, लेकिन अंतर्मुख होवे तो उस सार वस्तु का अनुभव होता है। अनुभव बुद्धि ने करना है, शरीर ने नहीं। नित प्रकाश अखंड ज्योति तीन काल मौज़ूद है। शरीर तीन काल ही नाश स्वरूप है। लेकिन यह जीव सुख के वास्ते कहां-कहां दूर दराज़ टक्करें मारता है। आख़िरकार नतीजा यही निकलता है जो सामने (जलती हुई चिता की तरफ इशारा करके) देख रहे हो। कल खड़ा था आज आग में जलकर राख हो गया है। हर एक जीव

अपने-अपने शुभ-अशुभ कर्मों अनुसार जन्म-जन्मांतर तक दु:ख-सुख भोगता हुआ हर वक्त अशांत रहता है। ऐसे द्वन्द्व भाव में भरमता हुआ अविनाशी सुख से दूर रहता है। इसलिए जो लिखते हो समझा करो, तब चित्त में बात ठहरेगी।''

भक्त जी:- ''महाराज जी! आलस्य, निद्रा विकारों से न जाने कब मुक्ति होगी?''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! जब तक शरीर है शरीर के धर्म भी साथ हैं। यानी सोना, खाना, पीना, पैदा होना, बढ़ना, बूढ़ा होना, सब कुछ साथ लगे हुए हैं। बाकी विकार भी इसमें तब-तक रहते हैं जब-तक शरीर है। इनसे छुटकारा आहिस्ता-आहिस्ता पाया जा सकता है।''

शाम के समय नियम के अनुसार पहले वाणी पढ़ी गई। इसके बाद श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमियों! कुछ विचार करो।'' इस पर एक प्रेमी ने अर्ज़ की :

प्रेमी:- ''महाराज जी! नाद के क्या मायने हैं?''

श्री महाराज जी:- ''आवाज़ शब्द, जिसको ऋषियों, मुनियों ने परमेश्वर, जगदीश, सर्व प्रकाश, अंखड, अद्वैत, परिपूर्ण कह कर बतलाया है। अनन्त स्वरूप जिस करके खड़े भास रहे हैं, हर एक का मालिक, ठाकुर सरजनहार वह नाद ही है। सबकी ज़िंदगी या जान है। इसको जानकर जीव जन्म-जन्मांतर के दु:खों से मुख़लसी (मुक्ति) पा जाता है। उसके जानने से ही तृष्णा अग्नि समाप्त हो जाती है।''

निर्भयता भी नाद स्वरूप को पाकर आती है। इन मादी (भौतिक) आंखों से वह अदृष्ट वस्तु नज़र नहीं आती। जब तमाम आशा, तृष्णा, कामना से न्यारी होकर बुद्धि नाद स्वरूप में स्थित होती है तब यह आकार में फंसी हुई बुद्धि निराकार अवस्था को प्राप्त होकर केवल ब्रह्म आनन्द को अनुभव करती है। इस हालत को नाद ध्यान कहते हैं। इस हालत में प्रवेश करके जब बुद्धि सत्-असत् के निर्णय को अच्छी तरह समझ जाती है तब जाकर मोह-माया के जाल से सही मायनों में छुटकारा होता है। सब वेद, शास्त्र, कुरान, अंजील उस नाद स्वरूप की महिमा गा रहे हैं। लेकिन जितनी-जितनी बुद्धि स्वरूप में स्थित होती जाती है उतनी-उतनी ही उसकी महिमा को वर्णन करती जाती है। उसी अवस्था को पाकर ख़ामोश हो जाते हैं। कोई विरले ही संसारी जीवों के लिए समय निकाल कर दया व मेहर करते हैं। उनके अमली जीवन को देखकर फिर से लोगों के अंदर उत्साह बढ़ता है। उन्हें प्रतीत होने लगता है कि ऐसी कोई वस्तु ज़रूर है जिसे पाकर महान योगी अडोल, अचाहक होकर मस्ती में आप विराजमान होते हैं। इसलिए इस चीज़ की तलाश ज़रूरी है क्योंकि यही परम सुख और अखंड शांति का भंडार है।''

इधर 'समता सार योग' नामक अनुभवी वाणी ईश्वर आज्ञा से समाप्त हुई उधर तप की भी समाप्ति हो गई। इसके बाद आप गांव वालों की बार-बार प्रार्थना पर थोड़े दिन और वहां ठहर गए और रोज़ाना सत् उपदेशों द्वारा लोगों को कृतार्थ करने लगे। आख़री माह दिसम्बर, 1941 को आप थट्टा से मेहता अमोलक राम जी की प्रार्थना पर काला गुजरां ज़िला जेहलम तशरीफ़ ले गये।

41. काला गुजरां में सत् उपदेश

काला गुजरां में आपने मेहता अमोलक राम जी के घर पर निवास किया। रात के बारह बजे तक घर पर रहते, उसके बाद आप बाहर तशरीफ़ ले जाते। शहर से करीबन आधे मील के फासले पर बनी-बादयां एक स्थान था जो बहुत एकांत था और किसी वक्त उस जगह बड़े करनी वाले महात्मा रह चुके थे। आप रात को इसके साथ वाले स्थान पर समाधिस्त हो जाते। सुबह स्थान से उठकर कुछ देर बनी-बादयां के अहाते में धूप में बैठते और फिर काफी दिन चढ़ आने पर गृह पर वापिस तशरीफ़ लाते। दिन को काला निवासी दर्शनों को आते, गुरुदेव उनकी शंकायें निवारण करते। शाम को आम तौर पर सत्संग होता और शहर निवासी काफी शामिल होकर लाभ उठाते। जब भी आप काला गुजरां तशरीफ़ लाने की कृपा करते ऐसा ही सिलसिला चलता रहता।

इस जगह निवास के दौरान 'समता सार योग' के पूर्ण होने के बारे में पता लगने पर मेहता अमोलक राम के साहेबज़ादे मेहता हरबंस लाल ने इसकी छपवाई की आज्ञा मांगी। आपने बड़ी कृपा करते हुए उसे यह सेवा बख़्शी।

42. काहनूवान में एकांत निवास

हकीम जसवंत राय जी के पत्र सेवा में आ रहे थे कि आप कृपा करके काहनूवान निवासियों को दर्शन देकर कृतार्थ करें और सत् उपदेशों द्वारा निहाल करें। आपने हकीम जी की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। प्रोग्राम निश्चित करके आप एक जनवरी, 1942 को काला गुजरां से रवाना होकर लाहौर से गाड़ी बदल करके गुरदासपुर पहुंचे और वहां से तांगों के द्वारा काहनूवान तशरीफ़ ले गये।

हमेशा की तरह आपने शहर से बाहर निवास किया। आम काहनूवान निवासी सत्संग में शामिल होकर लाभ उठाते रहे। बड़े-बड़े विद्वान आपके उपदेशों को सुनकर हैरान होते कि अज़ीब ढंग के सत् उपदेश हैं। न कोई संस्कृत का श्लोक बोला जाता है, न किसी ग्रन्थ या शास्त्र का हवाला दिया जाता है बल्कि सत्पुरुष साधारण लफ़्ज़ों में रूहानियत (अध्यात्म) की मुश्किल से मुश्किल समस्याओं पर बड़े सुन्दर ढंग से रोशनी डालते हैं और होता वही कुछ है जो शास्त्रों, वेदों वग़ैरह में ब्यान होता है। सत् पद प्राप्ति से साधनों को बड़े सादा लफ़्ज़ों में समझाते। हर व्यक्ति चाहे पढ़ा हुआ है या अनपढ़, अकलमंद है या मूर्ख सब आपके उपदेशों को आसानी से समझ जाते। इन सत् उपदेशों ने असर किया और कई प्रेमियों ने चरणों में हाज़िर होकर सत् शिक्षा ग्रहण करके आत्मिक उन्नति का मार्ग अपनाया। आपकी सूचना पाकर प्रेमी बिशनदास सेवा में हाज़िर हुए और शाहपुर कंडी तशरीफ़ ले चलने की प्रार्थना की।

43. शाहपुर कंडी में सत् प्रचार

लगभग एक माह आपने काहनूवान निवासियों को सत् उपदेशों की अमृत वर्षा से कृतार्थ किया और शुरू फरवरी, 1942 को आपने शाहपुर कंडी में पधारने की कृपा की।

जब आप शाहपुर कंडी तशरीफ़ ले जा रहे थे तो पठानकोट स्टेशन पर गाड़ी से उतरकर स्टेशन से बाहर तशरीफ़ ले गये। भक्त बनारसी दास सामान एक तरफ रखकर श्री महाराज को वहीं छोड़कर शहर कुछ चीज़ लेने गये। सामान में दो-तीन लोईयाँ भी थीं। आपका लिबास सादा ही था और शरीर भी दुबला-पतला था। इस लिबास और सादा जीवन को देखकर कोई अंदाज़ा नहीं लगा सकता था कि आप कोई महात्मा हैं। जब आप वहां खड़े थे तो एक राहगीर ने लोईयाँ पड़ी हुई देखकर अंदाज़ा लगाया कि आप शायद लोईयाँ बेचने वाले हैं, इसलिए उसने पास आकर लोईयों की कीमत पूछी। आपने यह फरमाया:- लोईयां बेचने वाला बाहर गया हुआ है। राहगीर को टाल दिया। थोड़ी देर बाद जब भक्त जी बाज़ार से वापस आये तो आपने फरमाया:-

''प्रेमी! आज तुम हमको लोईयाँ बेचने वाला बना गये। जो आता है हम से पूछता है लोईयाँ बेचते हो। बोलो, अब बेचनी हैं या रखनी हैं। जैसे तुम्हारी मर्ज़ी हो करो। इधर से कह दिया गया है लोईयों वाला बाहर गया हुआ है, अभी आता होगा। ''महाराज जी के वचन सुनकर भक्त जी बहुत हँसे। थोड़ी देर बाद आपने खुद ही फरमाया:- ''प्रेमी! इसी तरह कृष्ण, कबीर के ज़माने में उनको किसी ने नहीं पहचाना। जब-तक वचन-बिलास न हो कैसे स्थिति का पता लग सकता है? ज़ाहरी भगवे भेष को इसलिए अपनाया गया था कि बिना बोले-चाले ही साधु का पता चल जाये। ख़ैर! चलो, अब चलने वाली बात करो।

44. शाहपुर कंडी में छुआ-छूत का सुधार

शाहपुर कंडी पहुंचने पर रोज़ाना शाम को सत्संग का प्रोग्राम प्रेमियों ने निश्चित कर दिया और शाहपुर कंडी निवासी प्रेमी सत् उपदेश का लाभ उठाने लगे। एक दिन सत्संग की समाप्ति पर एक प्रेमी ने छूतछात पर सत्पुरुष के विचार लेने के लिए निम्नलिखित अर्ज़ की :

प्रेमी:- ''महाराज जी! हरिजनों के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिये? हम उनसे दान वग़ैरह ले लेते हैं लेकिन ब्याह शादियों के समय उनके साथ वरतने से परहेज़ करते हैं।''

श्री महाराज जी:- ''इस बात ने तो हिन्दुस्तान का बेड़ा ही डुबो दिया। इसलिए जो भी बाहर के देश से आते हैं वह इस जगह के मालिक बनते जा रहे हैं। वह हरिजनों को अपने में मिलाते जा रहे हैं, हम धिक्कराते जा रहे हैं। बेटी, रोटी का परहेज़ रखो लेकिन और जो भी कार्य उनका हो वह करो। उनके घर की रोटी न खाओ लेकिन मंत्र पढ़ने में तुम्हारा क्या लगता है?''

इस पर एक प्रेमी बोल उठा:– ''महाराज जी! आज एक शादी हो रही है। हरिजनों ने हमको बुलाया है कि आकर ब्याह पढ़ जाओ। हमारे बुज़ुर्ग जाने नहीं देते। आप हमे आज्ञा दें, क्या करें? वह कहते हैं तुम नहीं आओगे तो हम मुल्ला काज़ी को बुलाकर ब्याह कर देंगे। आप फरमायें क्या करना चाहिये?''

श्री महाराज जी:– ''प्रेमी! एक मिनट भी देरी न करो। अगर इस काम को कर सकते हो तो फ़ौरन जाओ। किसी की न सुनो। काम करके उनसे कुछ न लो। निष्काम भाव से सेवा करो। आपस में प्रेम बनाये रखो। आज काज़ी से ब्याह पढ़वा कर कल वह तुम्हारा साथ थोड़ा देंगे। मुसलमान बन जायेंगे। भक्ष-अभक्ष करने वाले हो जायेंगे। जो बिल्कुल शुद्ध भावना वाले हैं, राम, कृष्ण का नाम लेने वाले हैं, तुमने उनको बिल्कुल अलग कर रखा है। यह कहां की नीति हैं?''

आपके सत् और अनोखे वचन सुनकर किसी को तर्क-वितर्क की ज़रूरत न पड़ी बल्कि सेवा कार्य के लिए दोनों जवान फ़ौरन चल दिये। वहां पहुंचने पर पता चला कि शादी का कार्य वह किसी और जगह से पंडित बुलवाकर कर चुके हैं। इस पर उन नौजवानों ने हरिजनों के चंद खास आदमियों को पास बुलाकर अपने आने का सारा हाल सुनाया। इसका उन लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा और उनका तमाम गुस्सा ठंडा हो गया। यही नहीं बल्कि दूसरे दिन हरिजन काफी संख्या में श्री महाराज जी के दर्शनों के लिए पधारे। एक हरिजन ने हौंसला करके बात छेड़ी, ''महाराज, हमारा क्या कसूर है जो हमको आप अपने पास बिठाने से परहेज़ करते हैं? क्या हम राम, कृष्ण के नाम लेवा नहीं? आज तक जितनी रक्षा हिन्दू कौम की हरिजनों ने की है बड़ी-बड़ी ज़ात बिरादरी वालों ने नहीं की। जब गुरु गोबिन्द सिंह ने पांच प्यारे बनाये तो उनमें कितने बड़ी ज़ातों वाले थे?'' उस वक्त गांव के बड़े-बड़े पंडित भी आपके चरणों में बैठे थे।

प्रेमी के सब विचार सुनने के बाद पंडितों की तरफ दृष्टि करके आपने फरमाया:– ''प्रेमियों! सुन रहे हो। जवाब दो।'' सबको खामोश देखकर फरमाने लगे:– ''प्रेमियों! अब ज़माना रोशनी का है। कुछ अंग्रेज़ों ने कृपा की, बहुत सारा झमेला साफ ही कर दिया। कुछ गांधी बाबा भी आपके वास्ते मरण-व्रत रखकर आपस में मिला रहे हैं। यह पाकिस्तान वाला झगड़ा जो जिन्ना ने खड़ा कर रखा है कुछ अक्ल ठिकाने लायेगा।'' फिर गांव के प्रसिद्ध पंडित दीनानाथ जी की ओर देखते हुए आपने फरमाया :–

''इनको तसल्ली दो ताकि आईंदा यह आराम से समय काट सकें।''

पंडित जी ने आज्ञा पालन करते हुए सबसे अर्ज़ की-कि आईंदा किसी को शिकायत का मौका नहीं दिया जायेगा। यह सुनकर हरिजन प्रेमियों को इतनी प्रसन्नता हुई कि वे खुशी-खुशी चरणों में प्रणाम करके लौट गये।

हरिजनों के चले जाने के बाद पंडितों की ओर देखते हुए फरमाया:– ''देखो, कितना भयानक समय आ रहा है। जो कड़े बंधन तुमने डाल रखे हैं कहां तक आपस में प्रेम संबंध बनने देंगे? यह

लोग असल में सेवादार हैं। तुम गुरु बनकर हलवे मांडे खा रहे हो तो इनके सिरों पर। तुम्हें गुरु इसलिए बनाया गया था कि सत्-असत् का निर्णय करके क्षत्रियों, वैश्यों और शूद्रों को समझाओ ताकि यह भी सही कर्म करें। तुम्हें तो तप में समय गुज़ारना चाहिए ताकि कोई रोटी पहुंचा जाये, कोई लक्कड़ पानी की सेवा कर जाये। दरिन्दों और दुश्मनों से रक्षा करने वाले क्षत्री थे। धन की सेवा करने वाले महाजन लोग थे, तुम्हारे आगे पीछे छोटा-मोटा कार्य करने वाले यही हरिजन हैं। यह पांव जो हर वक्त गंदी या अच्छी जगह चलने वाले हैं शूद्र के समान हैं। इनको क्या अलग कर सकते हो? तुम महाजनों से भी नफ़रत करते हो। अज़ीब तुम्हारे हिसाब बने हुए हैं। पंडित जी, अब वह ज़माना नहीं रहा, आंखें खोलो। सबको मिलाने वाला सबक पढ़ाओ। ईश्वर आपको निर्मल बुद्धि बख्शें।''

आपके इन वचनों को सुनकर पंडित बहुत लज्जित हुए और जवाब में अर्ज़ की:- ''महाराज जी! अब बहुत कुछ बदनामी हो चुकी है। एक वो वक्त था कि हमारे बुज़ुर्ग इनको अपनी गलियों में नहीं आने देते थे। अब आईंदा आपकी कृपा से ऐसा नहीं होगा। ख़ास ख़्याल रखा जायेगा।''

उस दिन, रात को सत्संग की समाप्ति के बाद सत्पुरुष ने फरमाया:- ''प्रेमियों! कुछ विचार करो।'' इस पर एक प्रेमी ने प्रश्न किया।

''महाराज जी! गति किसको कहते हैं?''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! वासना से निर्वास होना यह असली गति है। जब सत् स्वरूप परमेश्वर चित्त से दृढ़ हो जाता है, संसार की इच्छा, कामना ख़त्म हो जाती है, कर्म बंधन टूट जाते हैं, सब कुछ कर्ता-हर्ता उस प्रभु को मानता है, अपनी ''मैं'' भावना बिल्कुल निकल जाती है यानी अंहकार ख़त्म हो जाता है, इस अवस्था को गति कहते हैं। ऐसी गति तो जीव अपने आप ही कर सकता है। अगर खुद वासना की गिरफ्तारी में है तो दूसरों को गति कौन दे सकता है? गति पैसे, पाईयाँ, लौंग, इलायचियों द्वारा कैसे हो सकती है? हर एक जीव को सुख-दुःख अपने शुभ-अशुभ कर्मों अनुसार मिलता है। इसलिए करनी मलीन होने पर मेरी गति मेरे बच्चे, भाई-बंध या पंडित कैसे करवा देंगे? जब-तक अपने कर्म साफ नहीं, तीर्थों का भ्रमण, देवी-देवताओं का पूजन, पिंड आदि गति नहीं दे सकते। प्रेमी, जाकर सत् विश्वास द्वारा सिमरण, ध्यान, सेवा, सत्संग करो जिनसे चित्त ठंडा रहे। जो पुराने वहम व तोहमात[1] में फंसा रहता है उसकी कभी गति न होगी, न कोई उसकी गति कर सकता है। ईश्वर विश्वासी लोग सत्कर्मों में प्रवृत्त रहते हैं। निर्मल चित्त से ईश्वर की याद में रहना, संसार को नित असत् मानना, उस महाप्रभु को कर्ता-हर्ता जानकर नित सब जीवों से प्रेम करना, यह ही सत् कर्म जीव को गति देने वाले हैं। ऐसा हर एक प्रेमी को विश्वास होना चाहिए। जो ज़िंदगी में कुछ नहीं करते उनके वास्ते आगे परमात्मा ने गति देने वाला दफ़्तर नहीं खोल रखा है। इस वास्ते अपनी गति आप करनी होगी। दूसरे के भरोसे रहने वाला कभी सुखी नहीं होता। ईश्वर आपको सत् बुद्धि देवें।''

---

1. आडंबर

45. दोरांगला ज़िला गुरदासपुर में चरणकंवल

शाहपुर कंडी प्रोग्राम की समाप्ति पर आपने किसी नई जगह जाने का विचार किया। दरअसल सत्पुरुष का किसी जगह जाना बिना उद्देश्य के नहीं होता। किसी व्यक्ति या व्यक्तियों का सुधार होना होता है तो ऐसी हस्तियों की ड्यूटी उस तरफ लग जाती है और वह उधर चल देते हैं। आप शाहपुर कंडी से चलकर पठानकोट तशरीफ़ ले आये और वहां से गुरदासपुर होते हुए तांगे द्वारा दोरांगला पधारे। वहाँ एक मंदिर में निवास किया।

इस मंदिर में सुबह चार बजे ही लोगों ने आकर घड़ियाल खड़काना शुरू कर दिया। तम्बाकू पीने वाले चिलमें पीने लगे और कुछ लोग हँसी-मख़ौल में लग गए। इनमें कुछ बुज़ुर्ग लोग भी थे। आप यह दृश्य देखकर बड़े हैरान हुए। आपने लोगों को बुलाने के लिए भेजा, मगर वह नहीं आये। आख़िर में एक बुज़ुर्ग आपके पास आ गये। आपने उससे पूछा:

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! यह मंदिर सत्संग की जगह है या तम्बाकू, चरस पीने का अड्डा है।''

बुज़ुर्ग प्रेमी:- ''महाराज जी! साधु संत आते हैं, उनकी धूनी बनी हुई है। शहर के लोग भी यहां आकर दम लगा जाते हैं। बाकी आप कौन महात्मा हैं?''

श्री महाराज जी:- ''ये बीमारों का इलाज करने वाले डाक्टर आये हैं। आप सब बीमार हैं, बाकी कोई जगह ठहरने के वास्ते फ़कीरों को बताओ जहां ठहरकर आपको देख सकें?''

महाराज जी के वचन सुनकर उस बुज़ुर्ग प्रेमी ने एक दो जगहें बतलाईं, फिर साथ भी ले गया। कस्बे से बाहर खेतों में एक एकांत कमरा आपने पसन्द किया जहां आपके ठहरने का इंतज़ाम कर दिया। शाम होने से पहले-पहले आपने उस प्रेमी द्वारा शहर में सन्देशा भेज दिया कि शाम को चार बजे सत्संग होगा। सब प्रेमी दर्शन देवें। शाम को काफी लोग सत्संग में शामिल हुए। सत्संग की समाप्ति पर प्रसाद बांटा गया जो शहर से बनवाकर मंगवाया गया था। सब लोग प्रसाद लेकर घरों को गये। एक देवी ने ज़रा निकट होकर चरणों में नमस्कार करके प्रार्थना की:- महाराज जी! यहां के लोग आपके सत् विचारों को नहीं समझेंगे। आपके विचार तो बहुत ऊंचे हैं। बड़ी कृपा की जो आप हमारे नगर में पधारे हैं। आज रात को भोजन की कृपा हम पर करें।

श्री महाराज जी:- ''देवी! जब तुम्हारे सम्बंधी आयेंगे तो देखा जायेगा। यह भोजन इस तरह खाने वाले नहीं हैं और न ही भोजन ग्रहण करते हैं।''

श्री महाराज जी के वचन सुनकर जब देवी चली गई तो आपने भक्त बनारसी दास को फरमाया:-

''इस तरफ लोगों की क्या हालत है? ख़ैर, कागों में हंस भी हुआ करते हैं। देखो, प्रेमी किस बात में राज़ी हैं।'' दूसरे दिन सुबह आप स्नान वग़ैरह से फ़ारिग होकर आसन पर विराजमान हुए ही थे कि एक बुज़ुर्ग प्रेमी आये और आते ही दूर से नमस्कार करके फरमाने लगे:- ''आप महाराज अद्वैतवादी हैं या द्वैतवादी?''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! बैठकर बात करो। (उनके बैठने पर) देखो, यह द्वैत को अद्वैत में देखते हैं और अद्वैत को द्वैत में। जब-तक ऐसा भाव न होगा, बुद्धि समता यानी स्थित प्रज्ञ की हालत प्राप्त नहीं कर सकती। ख़ैर प्रेमी, तुम्हारा नाम क्या है?''

प्रेमी:- ''मेरा नाम गुर प्रसाद डोगरा है। रिटायर्ड सब इंस्पेक्टर हूं। रात को मेरी बहन सरस्वती देवी ने बतलाया था कि कस्बा के बाहर बड़े उच्च कोटि के करनी वाले महाराज आये हुए हैं। सुबह सैर के बाद सीधा इधर ही चरणों में आया हूं। प्रार्थना है कि आज से भोजन दोनों वक्त घर से ही आया करेगा। कृपा करके इज़ाज़त बख़्शें और किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो फरमावें।''

महाराज जी:- ''इधर बाकी सब लेखा ख़त्म है। सिर्फ दर्शन दिया करो।''

प्रेमी गुरु प्रसाद:- ''महाराज जी! जो आपके सेवक साथ हैं आप इनको आज्ञा दें, दूध चाय ले आयें।''

महाराज जी:- (कुछ देर उनके श्रद्धा भाव को देखकर) ''जाओ प्रेमी! इनका लेना-देना भी चुका आओ। जब इनके दर पर आये हैं तो कुछ ग्रहण करना ही पड़ेगा।''

भक्त जी साथ गये। जब वापिस आये तो आपने पूछा:- ''प्रेमी! यह कैसे लोग दिखे?''

भक्त जी:- ''महाराज जी! इनकी बहन तो साक्षात् देवी है। जाने से पहले ही चाय का इंतज़ाम कर रखा था। पंडित जी भी बड़े प्रेमी हैं और शुद्ध आहारी मालूम होते हैं।''

श्री महाराज जी:- ''इससे विश्वास बढ़ता ही है कि इन्होंने खाने-पीने का इंतज़ाम पहले ही किया हुआ है। फ़िकर न कर, जितनी इस मार्ग में बेफिक्री है शायद यह राजाओं, महाराजाओं को बेशुमार सम्पत्ति मिलने पर भी न होगी।''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! इस तरह विचार करते रहा करो। यह ही बुद्धि को भटकाने से बचाने वाले हैं। हर वक्त तेरे पास हैं, जो विचार पूछना हो बे खटके पूछ लिया करो।''

शुभ स्थान को वापसी

चंद रोज़ दोरांगला ठहर कर और सत् प्रचार द्वारा दोरांगला निवासियों को कृतार्थ करके आप वहां से 7 मार्च, 1942 को रवाना होकर काला गुजरां पधारे और मेहता अमोलक राम के गृह को पवित्र किया। कुछ रोज़ काला निवासियों को सत् उपदेशों की अमृत वर्षा से तृप्त करके आप जंड महलों, हरनाल, मोहड़ा जग्गू कुछ दिन हर मुकाम पर ठहरकर शुभ स्थान गंगोठियां तशरीफ़ ले गये। यहां दो सप्ताह निवास किया। आपके आने की सूचना मिलने पर आस-पास के प्रेमी चरणों में हाज़िर होकर अपनी शंकायें निवारण करते रहे। आप यहां अपने हमेशा के प्रोग्राम के मुताबिक ज़्यादा समय ख़्वाजा पीर जंगल में दिन के वक्त और तरेल नदी के किनारे रात के समय अपनी आनन्दित अवस्था में लीन रहते थे।

46. चिनारी में सत् प्रचार और सत्संग सम्मेलन

चिनारी निवासी प्रेमी सेवा में प्रार्थना कर रहे थे कि आप कुछ दिन चिनारी पधार कर उन्हें सत् उपदेशों से कृतार्थ करें। आपने उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और शुभ स्थान से रवाना होकर कोहाला होते हुए 11 अप्रैल, 1942 को चिनारी पधारे। चिनारी निवासी प्रेमियों ने वहां सत्संग हाल बनवाया था, इसलिए आपके आने पर संगत ने 20 अप्रैल, 1942 को विशाल रूप से सत्संग सम्मेलन का प्रबन्ध किया और आस-पास की जनता को सत्संग का लाभ उठाने के लिए बुलाया। हज़ारों की संख्या में जनता आसपास के इलाके से सत्संग सम्मेलन में शामिल हुई और सत् उपदेशों का लाभ उठाया। सत्संग के बाद प्रसाद बांटा गया और आने वाली संगत को लंगर भी खिलाया गया।

47. जंगल सरूपा में कठिन तप

चौधरी फ़कीर चन्द शारियां निवासी भी इस सत्संग सम्मेलन में तशरीफ़ लाये हुए थे। अब समय एकांतवास व तप का आ गया था। उन्होंने चरणों में प्रार्थना की:- आप इस दफ़ा उस तरफ़ तशरीफ़ ले आएँ और शारियां से ऊपर जंगल में आपके एकांत निवास का प्रबन्ध कर देंगे। आपने चौधरी जी की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और आख़िर माह अप्रैल चिनारी से रवाना होकर तांगे द्वारा पूल नीली तक तशरीफ़ ले गये। दो दिन वहां ठहर कर शुरू माह मई में आप चौधरी फ़कीर चन्द के साथ 13 मील पैदल सफ़र करके सरूपा जंगल पधारे। यह जगह आठ हज़ार फुट की ऊँचाई पर थी। वहां जंगल से बाहर कुछ खुली जगह थी जिसे आपने पसंद किया और कुटिया बनाने की आज्ञा फरमाई। उस जगह पहुंचने का रास्ता बड़ा कठिन था। चौधरी जी ने एक बड़ी चट्टान से आगे दोनों तरफ दीवारें खड़ी करवाकर जंगल से ही लकड़ियां लाकर ऊपर डालकर घास-फूस उनके ऊपर डलवाकर छत खड़ी कर दी और कुटिया बन गई। आस-पास देखा गया, पानी कहीं नज़र नहीं आया। श्री महाराज जी कुटिया से नीचे तशरीफ़ ले गये जहां पास ही पेड़ों और झाड़ियों के झुंड थे। इस जगह आपने निशान बनाया और खोदने की आज्ञा दी। जब जगह खोदी गई नीचे से बड़े ठंडे पानी का साफ चश्मा निकल आया। पानी इतना ठंडा था कि नहाना तो एक तरफ इसमें मुंह हाथ धोना भी मुसीबत मोल लेना था। जंगल बड़ा घना था और रीछ, चीते वग़ैरह ख़ौफनाक दरिन्दे इसमें बेअंदाज़ थे। चौधरी जी ने सीमेंट वग़ैरह मंगवाकर इस जगह बावली बनवा दी और ऊपर 'ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार' लिखवाया।

इस जगह बावज़ूद सख़्त सर्दी के सत्पुरुष ने एक लोई में ही समय व्यतीत किया। आपने एक जेठ, संवत 1999 को कुछ प्रार्थना के शब्द उच्चारण फरमाये जिन्हें लिख लिया गया। 10 जेठ को 'तिथि विवेक' प्रसंग उच्चारण फरमाया, वह भी लिख लिया गया।

21 जेठ को आपने 'समता धाम' वचन लिख करके दिए।

इस तप के दौरान बख़्शी लेख राज साई निवासी का एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें शिकायत की हुई थी कि उन्हें पीरों पर बलियां चढ़ाने के लिए मजबूर किया जा रहा है और यह भी लिखा:-

"प्रभु, आपके पवित्र विचारों से कई दूर-दराज़ के लोग लाभ उठा चुके हैं। मगर आपके गंगोठियां में रहने वाले लोग ठीक रास्ते पर नहीं आ रहे। कितने छोटे ख़्याल के हैं यह लोग जो दास के इंकार करने पर भी पीर ख़्वाजा के स्थान पर बकरा भेंट करने के लिए मजबूर कर रहे हैं।"

उस जगह का रिवाज़ था कि जब किसी गंगोठियां निवासी की लड़की की शादी होती थी तो उसके माता-पिता या दादा से पीर ख़्वाजा पर बकरे की बली चढ़वाते जिसे वहां ही पकाया जाता और सब मिलकर खाते। बकरों की खालें पेड़ों पर लटका देते। कई बकरों की खालें मेहता अमोलक राम ने भी लटकती हुई देखीं।

श्री महाराज जी ने इस पत्रिका का निम्नलिखित उत्तर फरमाया:

"प्रेमी जी! जो कुछ तुमने लिखा है यह उन लोगों के तमाम हालात से वाकिफ़ (परिचित) हैं। तुम अपनी बेहतरी का यत्न करो। मांस खाने वाले लोग ऐसे तरीकों को जारी रखना चाहते हैं जिनसे उनको मांस मिलता रहे। तुम प्रेमी ऐसा करो, अगर तुम को निश्चय है कि जीव हत्या पाप है तो अपने हृदय को मज़बूत रखो। कभी भी ऐसा कर्म न करो। यह लोग तो कह कर चुप हो जायेंगे। अगर तुमने अपने रिश्तेदारों के कहने पर कायरता दिखलाई तो फ़कीर भी पास नही बैठने देंगे। तुमने फ़कीरों के पास जो हालात तहरीर (लिखे) किये हैं कि आपके गंगोठियां निवासी वहमात में जकड़े हुए हैं। प्रेमी! वह लोग तो वहम में पड़े हैं, तुम तो बाहोश हो। चिन्ता क्यों करते हो? खुद अपने हृदय को मज़बूत रखो। इस तरह तुम्हारा साथी और भी कोई न कोई बन जावेगा और यह रस्म कुछ समय बाद बंद हो जायेगी। प्रेमी! तुम धर्म मार्ग पर चलो और ईश्वर नाम का चिंतन करते रहो। इसमें ही सुख है। समय पर वह लोग राह-ए-रास्ते (ठीक) पर आ जावेंगे। ईश्वर उन लोगों को नेक बुद्धि देवें ताकि वे सत्मार्ग को पहचान सकें। अब जल्दी ही गंगोठियां आने वाले हैं। सम्मेलन का समय नज़दीक आ रहा है।

48. जलमादा में सत प्रचार

एक माह के कठिन तप के बाद आप 29 असाढ़ को यानी जून, 1942 को सरूपा जंगल से रवाना होकर शारियां तशरीफ़ ले आये और दो दिन वहां ठहरने के बाद आप चिनारी, डोमेल एक-एक, दो-दो दिन रुकते हुए कोहाला बस से उतर कर जलमादा कुटिया में निवास किया। आपके इस जगह निवास के दौरान रात को नौ बजे से एक बजे तक सत् विचारों का प्रवाह चलता रहा। कोहाला निवासी प्रेमी अपने कारोबार से फ़ारिग होकर इस जगह सेवा में हाज़िर हो जाते और चरणों में बैठकर सत् विचारों से लाभ उठाते।

जंगल सरूपा में निवास के समय एक प्रेमी का पत्र पहुंचा जिसमें शिकायत की गई थी कि महाराज! इस जगह चश्में सूख गए हैं, आप कृपा करें। जब यह पत्र पहुंचा और पढ़ा तो आपके मुख से यह वचन निकले, ''अपनी नीयतें ठीक करो''। कभी-कभी देखा गया है कि सत्पुरुषों के मुख से अजीब वचन निकलते हैं, जिनका उस समय पता नहीं लगता। बाद में पता लगता है कि क्यों ऐसे वचन निकले थे? दरअसल प्रेमियों ने जितनी जगह देने का वायदा किया था मौका आया तो विचार बदल गया और कम ज़मीन देने का इरादा बना लिया। मगर कुदरत के खेल भी विचित्र होते हैं। बारिश खूब बरसी और कुदरतन इतनी ज़मीन जितनी देने का वायदा किया था स्वयं फट गई। जब वह मिट्टी हटाई गई तो नीचे से एक बड़ा सुन्दर जल का चश्मा निकला जिसके आगे प्रेमियों ने कुंड बनवा दिया जिसका नाम अमर कुंड रखा गया। इस चश्मे ने कुटिया वग़ैरह के दृश्य को और भी सुन्दर बना दिया।

26 सितम्बर, 1942 को प्रेमियों ने विशाल सत्संग सम्मेलन किया। इसमें आपने जो सत् उपदेश की वर्षा की उसका सार इस प्रकार है- ''जो भी जीव शरीर रूपी संसार को धार कर आया है सुख की तलाश में और हर एक जीव इस तलाश में दिन-रात यत्न कर रहा है। हर एक शरीरधारी जीव की बुद्धि स्वभाव वश भोगों में गिरफ़्तार रहती है और उसे ज़रा भी शांति प्राप्त नहीं होती। आख़िरकार दौड़-धूप में जीव एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को धारण कर लेता है लेकिन चाहना ज्यूं की त्यूं बनी रहती है। वास्तव में शारीरिक भोगों का ज्ञान बुद्धि को पैदायश से होता है। यानि खाना-पीना, सोना-जागना, लेना-देना, सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख, सज्जन-दुश्मन को अच्छी तरह समझती है। इसलिए नित ही भोगों को अधिक इकट्ठा करने और इस्तेमाल करने में लगी रहती है । यही हर एक जीव का संसार है।

''सत्पुरुषों ने इस खेद रूपी संसार से छुटकारा हासिल करने के वास्ते धर्म का रास्ता निकाला है। बड़े आसान से आसान साधन जीवों के आगे रखे। इस पवित्र जीवन के भेद को सिर्फ़ मानुष ही समझ सकता है। पशु, पंछी इत्यादि की रूहें सिर्फ़ कैद भोगने के वास्ते आती हैं। परन्तु पशु, पंछी भी मर्यादा के अनुकूल चल कर अपना समय व्यतीत कर जाते हैं। एक इंसान ही ऐसा है जिसने अच्छा-बुरा सब कुछ अपना रखा है। खाते-पीते कहता है सुख कुछ नहीं। भक्ष-अभक्ष खान-पान को ही सेहत समझता है। सत्पुरुषों ने ख़ुराक की पवित्रता पर ज़ोर दिया। लेकिन आये दिन मांस को महाप्रसाद और शराब को गंगा जल का नाम देकर सेवन किया जा रहा है। पहले रास लीला की बीमारी थी, अब सिनेमा ने उसकी जगह ले ली है जिसने रहा सहा सदाचारी जीवन भी नष्ट कर दिया है। जब-तक खाने, पहनने और बोलने के तीन व्यवहार पवित्र रूप में नहीं किये जाते तब-तक मानसिक शांति प्राप्त होनी कठिन है। जहां तक हो सके सत् बोलना चाहिये। जो आदमी सत्वादी नहीं वह कभी भी सच्ची खुशी हासिल नहीं कर सकता। जो भी पीर, पैग़म्बर, नबी, अवतार हुए हैं सत् पर ही चल कर बने हैं। इस वास्ते नित सच्चाई का रास्ता धारण करना चाहिए। ईश्वर सबको सत् बुद्धि दें।''

49. शुभ स्थान गंगोठियां ब्राह्मणां में सत्संग सम्मेलन

सलाना सम्मेलन का समय नज़दीक आ रहा था इसलिए आपने शुभ स्थान का प्रोग्राम बनाया और 28 सितम्बर, 1942 को जलमादा से रवाना होकर रावलपिंडी पहुंच गये। सम्मेलन की तारीख 25 अक्तूबर, 1942 की निश्चित की गई। शुभ स्थान गंगोठियां पहुंचकर आपने एक दिन प्रेमी भीम सेन के गृह पर सत्संग रख दिया और आपने उस अवसर पर पीरों की बलियों के बारे में ज़िक्र छेड़कर निम्नलिखित विचार प्रगट फ़रमाये:

''प्रेमियों! आप लोग ज़रा गहरी ग़ौर करें कि वैसे तो आप लोग अपनी लड़कियों के घर का अन्न जल ग्रहण करना पाप समझते हैं मगर आपका पीर ख़्वाजा आपकी लड़कियों के घर का बकरा क्यों ग्रहण करता है? पीर को लड़कियों के घर का बकरा लेने से पाप नहीं लगता। क्या फ़िज़ूल वहम में पड़े हो? इनको मालूम है कि यह रिवाज़ बड़ी देर से चला आ रहा है। मगर लकीर के फ़कीर बनने से कुछ हासिल नहीं होगा। इसमें असलियत नहीं है। यह रिवाज़ मन घड़ंत हैं। समय पर रिवाज़ तबदील हो सकते हैं। इसलिए कृपा करके इस नाजायज़ रस्म को बंद कर दें तो अच्छा है।''

आपके इन वचनों को सुनकर दो आदरणीय प्रेमी आग बबूला हो उठे और एतराज़ करने लगे कि महाराज जी, यह जो वचन आपने कहे हैं यह ठीक नहीं हैं। हम लोग बाल बच्चेदार हैं इसलिए पीर ख़्वाजा से डरते हैं। ऐसा न हो कि पीर ख्व़ाजा हमको नुकसान पहुंचाये। आपका इसमें क्या नुकसान है? भेंट बंद कर देने से पीर जी तमाम गांव के लोगों को नष्ट कर देंगे। अगर आप हर तरह की जिम्मेदारी उठायें तो हम आपका कहना मान सकते हैं, वर्ना आपके वचन मानने के लिए हरगिज़ तैयार नहीं हैं। अगर आप ऐसे उपदेश करोगे तो जो लोग आपके पास आते हैं वह आना बंद कर देंगे। आप भी तो फ़कीर हैं। आप पीर के पीछे क्यों पड़े हैं? आप भी तो जंगल में भजन बंदगी करते हो। आपको पीर ख़्वाजा का आदर करना चाहिए।

श्री महाराज जी:- ''क्या मूर्खों वाली बातें करते हो? कुछ तो अक्ल की बात करो। पीर किसी किस्म का नुकसान नहीं पहुंचायेगा। जो पैदा हुआ है उसने ज़रूर मरना है। मौत तो सबके सिर पर खड़ी है। मौत की जिम्मेदारी तो यह उठा नहीं सकते। अगर पीर आकर तुम्हारे लोगों से बकरे मांगेगा तो यह पीर से वचन विलास करेंगे कि कैसी भेंट लेते हो? असल में तुम लोगों की जैसी ख़ुराक है वैसी ही तुम्हारी बुद्धि है। पाप कर्मों के फलस्वरूप ही तुम भय मानते हो। बकरे का मांस तो खुद खा जाते हो और नाम पीर का करते हो। अगर ख़्वाह-म-ख़्वाह[1] पीर को भेंट देना ही चाहते हो तो और कोई प्रसाद तकसीम[2] करते रहो। जीव हत्या तो अति पाप कर्म है। जितने भी पीर, फ़कीर, वली, औलिया हैं उनका जीवन निहायत ही पवित्र रहा है। उनकी ख़ुराक निहायत सादा और शुद्ध होती थी। वह सारी उम्र इबादत, रियाज़त में गुज़ार देते थे। ऐसे पर-उपकारी महापुरुषों के

1. व्यर्थ में 2. बांटना

नाम को क्यों कलंक लगाते हो? पीर ख़्वाजा के कई स्थान देखने में आये हैं। यह बकरे की भेंट कब से और क्यों शुरू हुई थी? पीर ख़्वाजा किस जगह पैदा हुए थे और कौन सी जगह देह का त्याग किया था कोई तो सबूत बताओ? उनकी ख़ुराक क्या थी? क्यों मनघंड़त रिवाज़ों में अपना जीवन नष्ट करते हो? इनका इस जगह जन्म हुआ है इसलिए यह तुम्हारे लोगों की बेहतरी के लिए यत्न करते रहते हैं कि तुम्हारा भला हो जाये। बताओ! वेद, शास्त्रों में कहीं बकरे की भेंट का ज़िक्र आया है? मांस, मदिरा और इस किस्म की ख़ुराक राक्षसों की ख़ुराक थी जिनका ज़िक्र कई ग्रंथों में मिलता है। इतना यत्न-प्रयत्न करने पर भी मानते नहीं हो। अब साक्षात् पीर तुम्हारे सामने मौज़ूद हैं, इनके वचन मानने में तुम्हारी कल्याण होगी। हर साल सम्मेलन के समय देखो कितने-कितने दूर से श्रद्धावान लोग आकर सेवा करते हैं। तन, मन, धन, करके पूरा-पूरा सबूत पेश करते हैं, उन लोगों ने क्या देखा है? इनके बचपन से लेकर आज तक के हालात तुम लोगों को मालूम हैं। बाहर के लोगों को कितना विश्वास है। इनके वचनों को स्वीकार करके लाभ उठाते हैं। यह सम्मेलन का कार्य आप लोगों की उन्नति की ख़ातिर ही है। आप लोगों की बेहतरी होगी और आईंदा की नस्लें भी नेक ख़्याल वाली होंगी। इनको तुम्हारे लोगों के हालात देखकर अफ़सोस आता है। इनके सब हालात देखते और सुनते हुए भी आप मूर्खताई को नहीं त्याग सकते। बेज़ुबान बकरे पर छुरी चलाने से क्यों ख़ौफ नहीं करते? अनर्थ कर्म को धारण करते हो, फिर कहते हो हम पीर के पुजारी हैं। एक भेंट देने की सूझ आई है, कोई और चीज़ तो नकल करो। जब इन्होंने (अपनी तरफ इशारा करके) अन्न त्याग किए हुए कई साल गुज़ार दिये हैं तो क्या ईश्वर के प्यारों ने मांस खाया होगा? या तो इनके सामने वचन दो कि आईंदा ऐसा खोटा कर्म नहीं करोगे या इनके शरीर को भी काट कर खा लो। शायद तुम्हारे लोगों का कुछ बन जाये।''

श्री महाराज जी के यह वचन सुनकर लोगों के रोंगटे खड़े हो गये। यह सब लोग हाथ जोड़कर माफ़ी मांगने लगे और कहने लगे:- ''भक्त जी! (आपको, आपके इलाके के लोग शुरू में भक्त जी कहा करते थे) आईंदा पीर को भेंट नहीं देंगे। आप नाराज़ न हों। जो कुछ आगे करते रहे हैं क्षमा करें। आईंदा ऐसा कर्म कोई भी नहीं करेगा। हम लोग आपको पूरी तसल्ली देते हैं कि जैसी आज्ञा होगी वैसा ही करेंगे।''

इस तरह इस सत्पुरुष ने इस इलाके के लोगों को तोहमात परस्ती (अंध विश्वासों) से छुटकारा दिलाया।

25 अक्तूबर को सम्मेलन में भारी संख्या में प्रेमी शामिल हुए और श्री महाराज जी के सत् विचारों की अमृत वर्षा से तृप्त हुए। प्रसाद लेने के बाद जब लंगर बांटा जा रहा था तो भक्त बनारसी दास ने बांटने वालों को समझाना शुरू किया कि तरीके से वरताओ, ऐसा न हो कि प्रसाद सब तक न पहुंच सके। श्री सत्गुरु देव बात को भांप गये और फ़ौरन लंगर में जाकर भक्त जी को फरमाने लगे:-

"प्रेमी, तेरा लंगर कम नहीं होगा। घबरा नहीं, यह फ़कीरों की रसोई है। यह न कह कि मैं तैयार कर रहा हूं, फिर करना पड़ेगा। दिल को तंग न करो।" इतना फ़रमाने के बाद आप अपने आसन पर चले गये। वही लंगर जो पहले कम होता नज़र आ रहा था आपके आशीर्वाद से ज़रूरत से ज़्यादा निकला और आई हुई जनता प्रेमपूर्वक लंगर पाकर खुशी-खुशी लौट गई।

सम्मेलन की समाप्ति के बाद आपने करीबन तीन सप्ताह शुभ स्थान पर निवास किया और हमेशा की तरह आप दिन को ख़्वाजा पीर जंगल में और रात को तरेल नदी के किनारे समाधिस्त रहते।

50. वज़ीराबाद में चरण कंवल

पंडित बिहारी लाल जी ऋषि, जो पंडित प्रेम दत्त जी टिम्बर मर्चेन्ट व ठेकेदार जंगलात के कार मुख़्तार थे, श्री महाराज जी के काला गुजरां पधारने की खबर पाकर सेवा में हाज़िर होकर दर्शन कर चुके थे सत्संग व सत् उपदेशों से लाभ प्राप्त करके सत्मार्ग प्राप्त कर चुके थे, सेवा में प्रार्थना की:- "श्री महाराज जी! वज़ीराबाद तशरीफ़ ले चलें। वहां एकांत निवास का प्रबन्ध कर दिया जावेगा।" श्री महाराज जी ने उनकी सेवा को स्वीकार कर लिया और 15 नवम्बर, 1942 को बाबू अमोलक राम जी को साथ लेकर वज़ीराबाद पहुंचे। पंडित प्रेमदत्त जी के गृह पर आपने ठहरना पसंद नहीं किया। पंडित जी खुद वहां मौजूद नहीं थे। आपके निवास का प्रबन्ध उनके भाई पंडित गोबिन्द राम के बाग में किया गया। वह जगह भी ठीक नहीं पाई। सिर्फ दो दिन वहां ठहरे और प्रसंग 'समता धर्म' अपने कर कमलों से लिख करके दिया।

51. कुठाला ज़िला गुजरात में एकांत निवास

चूंकि पंडित गोबिंद राम जी का बाग ठीक नहीं था इसलिए आपके एकांत निवास का प्रबन्ध कुठाला राय बहादुर केदारनाथ जी गुजरात निवासी के बाग में कर दिया गया और आप वहां तशरीफ़ ले गये। किसी समय दरियाये चनाब इस बाग के पास बहता था मगर अब कुछ फ़ासले पर चला गया था। इस जगह आप परम आनन्दमई अवस्था में मग्न रहते। इस जगह 'आनन्द सार' व 'समता शांति' प्रसंगों की वाणी प्रगट हुई जिसे लिख लिया गया।

ज़माना बदल रहा था। अंग्रेज अफ़सर कम होते जा रहे थे। देसी अफ़सरान ज़्यादा आने लगे थे। बाबू अमोलक राम जी की तरक्की के हाई कोर्ट से आर्डर हो गए थे, मगर देसी अफ़सरान उन्हें तरक्की नहीं देना चाहते थे। एक अफ़सर आ गये जिन्होंने उन्हें रीडर लगा तो दिया मगर उन्हें फेल करने की कोशिश में लग गया। कत्ल के मुकदमात चल रहे थे। कभी शहादत[1] बड़ी तेज लिखाने लग जाता और कभी बहुत आहिस्ता लिखवाता। तीन दिन की कोशिश में कामयाब नहीं हो

सकता। चौथे दिन मुकदमा कत्ल में एक टेकनिकल अफ़सर की शहादत थी। उस मुकदमे में लाहौर से मियां तसदक हुसैन मुलज़िम की तरफ से पेश हो रहे थे। अफ़सर मज़कूर ने शहादत अंग्रेजी में लेनी शुरू कर दी। मियां तसदक हुसैन ने एतराज़ किया कि शहादत उर्दू में होनी चाहिये क्योंकि बड़े साहेबान ने भी सुननी है। मगर अफ्सर मज़कूर ने कह दिया कि उन्हें पीछे सुना दी जावेगी। शहादत अंग्रेजी में ली। जब शहादत ख़त्म हो चुकी तो स्टेनोग्राफर को उसे पढ़ने के लिए कहा। मगर शहादत इतनी तेज लिखवाई थी कि वो उसे लिख नहीं सका था और इसलिए वह इसे पढ़कर सुना न सका। फिर बाबूजी को पढ़ने के लिए कहा। उनके लिए लिखना ज़रूरी नहीं था इसलिए उन्होंने लिखी नहीं थी। उन्होंने कह दिया कि नहीं लिखी गई है। इस पर तीसरे-चौथे दिन उन्हें रिवर्ट (अवनत) कर दिया। चूंकि अंग्रेजी में ली हुई शहादत का लिखना रीडर के लिए ज़रूरी नहीं होता इसलिए बाबू जी हाई कोर्ट में अपील कर सकते थे। वह सत्पुरुष के चरणों में कुठाला पहुंचे। जब उन्होंने सत्पुरुष के सामने सारे हालात अर्ज़ किये तो आपके मुंह से एकदम निकला, ''छोड़ो रीडरी को।'' लेकिन उनके फ़ौरन बाद ही फ़रमाने लगे कि घरवालों को पूछ लो। कल वह यह न कहें कि गुरु ने काम छुड़ा दिया है। लेकिन बाबू जी ने सत्पुरुष के पवित्र मुख से जो वचन निकल चुके थे उन्हें ईश्वरी हुक्म मान लिया था। उस समय हालात भी ऐसे थे कि सफ़ाई और सच्चाई का ज़माना जा चुका था। अब रिश्वत और झूठ-फ़रेब बहुत बढ़ गया था। यहां सब हालात का देना ठीक नहीं। अंतर्गत भी बाबू जी ने जो पवित्र आज्ञा मुख से निकली थी उसे ईश्वरी आज्ञा माना। वह नौ साल और नौकरी कर सकते थे। 28 साल उनकी नौकरी हो चुकी थी। तीस साल की नौकरी हो जाने पर उनको हक था कि खुद रिटायर्ड हो जावें। इसलिए उन्होंने चार माह के पूरे वेतन पर और एक साल कुछ माह के आधे वेतन पर छुट्टी की अर्ज़ी दे दी और तीस साल पूरे हो जाने पर पेंशन के लिए भी लिख दिया और सत्पुरुष की सेवा में सब हालात अर्ज़ कर दिये। इस पर सत्पुरुष ने कृपा करते हुए आज्ञा फरमाई:- ''जैसी तुम्हारी मर्ज़ी।'' इस पर उपरोक्त कदम ही उठाया गया।

कुठाला में निवास के दौरान एक दिन आप मौज में विराजमान थे। आपके चरणों में ठहरे हुए प्रेमी खाना खाने के लिए एक तरफ जाने लगे तो आपने फरमाया:-

''प्रेमी! फ़कीर तुम्हारी रोटी नहीं छीनते। इनके सामने ही खाओ।''

आज्ञा का पालन करते हुए प्रेमी सामने ही बैठकर खाना खाने लगे तो आपने आहिस्ता से हाथ बढ़ाकर एक टुकड़ा रोटी का ले लिया और फ़रमाया:- ''यह ही हमारी ज़मीदारों की ख़ुराक है।''

प्रेमी यह देखकर शार्मिन्दा हुए कि महाराज जी ने जूठी रोटी ले ली है। मगर अंतरयामी सत्पुरुष ने प्रेमियों की हैरानी और परेशानी को देखकर फरमाया:

''हैरान और परेशान क्यों होते हो? सब बड़े छोटे मिलकर खायें तब ही प्रेम बढ़ता है। भीलनी के जूठे बेर रामचन्द्र जी ने भी खाये और एक अनोखा आदर्श कायम किया।'' इस तरह से आपने बड़े-छोटे के भेद को ख़त्म करके प्रेम का आदर्श कायम किया।

उसी दिन महंत रतन दास का अहमदाबाद से पत्र सेवा में पहुंचा जिसमें उन्होंने सत्पुरुष से कोई प्रश्न पूछा था। उसे पढ़कर आपने नीचे लिखे शब्दों द्वारा उसका उत्तर दिया :-

प्रभ दाता सब कुछ कर रह्या, हरजन न होयें अधीर।
जीव उद्धारन कारने, गुरमुख सहबें पीड़॥
जो होनी सो होत है, सरब प्रेरक आप।
भाग उदय तिनके भये, जिन जीवत सेव कमात॥
जैसी जो करनी करी, नित चित्त में रसना पाये।
सत करनी जग सार है, कोई गुनी पुरुष उठ धाये॥
बनी बनाई न रही, गढ़ लंका सा मीत।
चली कहावत जात है, यह भव मारग की रीत॥
स्वारथ और परमारथ, दो मारग परगट भये।
इक भोगे निज सुख को, इक पर को सुख नित दे॥
पर सुख को जिस सेवया, सो चले जगत को जीत।
निज सुख मोहित जो भये, सो रोवत चले हैं मीत॥
सतपुरुषों की कीरती, नित मारग साच विचार।
'मंगत' करनी सो करो, जो जीव का करे उद्धार॥

पत्र लिखने के बाद आपने हाज़िर प्रेमियों को सत् उपदेश देते हुए फरमाया :

''सत् पुरुषार्थ को धारण करके जब-तक जीव कर्म क्षेत्र से जीत नहीं पा लेता तब-तक निष्कर्म अवस्था आनी बड़ी कठिन है। उस परम तत्त्व को अनुभव करने के वास्ते आत्म विश्वास होना ज़रूरी है। इसके वास्ते सही गुरु की तलाश और सही कोशिश लाज़मी है, इसलिए शारीरिक क्रिया से आज़ाद होकर सत् की तलाश में दृढ़ होकर शरीर के मोह से ख़ुलासी (मुक्ति) पाने की कोशिश करो। एक तरफ से आसक्ति को हटाओ तब दूसरी तरफ मन लगेगा, नहीं तो जीव फिर मोह में ही ग्रस (फंस) जाता है। सही यत्न जारी रखना ही शूरवीरों का काम है। जहां तक हो सके उसको प्रेरक मानते हुए सत्मार्ग पर चलो और अभ्यास करते जाओ। इस तरह धीरे-धीरे निश्चय दृढ़ होता जावेगा।

जब लग जाने मैं कुछ करता। तब लग गर्भ जून में फिरता॥

यानी जब-तक प्रेरक शक्ति को कर्ता नहीं मानता तब-तक मैं, मेरी के चक्र से ख़ुलासी नहीं पा सकता। ईश्वर ही सबको सत् यत्न बख़्शें।''

आपने 21 दिसम्बर तक कुठाला में कठिन तप और एकांत निवास में समय व्यतीत फरमाया।

52. काला गुजरां में चरण कंवल

बाबू अमोलक राम जी कुठाला हाज़िरी के समय सेवा में प्रार्थना कर आये थे कि वापसी पर काला गुजरां तशरीफ़ लाकर उनके गृह को पवित्र करें। आपने प्रार्थना को स्वीकार करते हुए प्रोग्राम उस तरफ़ का बनाया और 22 दिसम्बर, 1942 को आप काला गुजरां तशरीफ़ ले गये और काला निवासियों को सत् उपदेश द्वारा कृतार्थ किया। आपने 6 दिन काला गुजरां बाबू जी के गृह पर निवास किया। एक दिन सत्संग के बाद आपने फरमाया:- ''प्रेमियों! कुछ विचार करो।''

इस पर बाबू जी ने अर्ज़ की:

बाबू जी:- ''महाराज जी! हर रोज़ सत्संग में सादगी, सेवा, सत्, सत्संग और सत् सिमरण पर विचार सुनते हैं, चित्त में बात बैठती क्यों नहीं? समय पर सब ज्ञान-ध्यान भूल जाता है।''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! जिसने अपने पापों को छोड़ने की कोशिश यानी सत् यत्न शुरू कर दिया है वह तो ज़रूर कुछ न कुछ कर पावेगा। जो खाली सुनता ही रहता है, किसी साधन या असूल को धारण नहीं करता, उसने क्या प्राप्त करना है? सत्पुरुष विश्वास बख़्शते हैं। जिनको प्रभु चरणों में विश्वास है और शरीर पात (अन्त) को आख़री दम तक याद में रखते हैं और निर्मान भाव से सर्व की सेवा की भावना मन में बनाये रखते हैं वह ही भले कर्मों को विचारते हुए ईश्वर आज्ञा को मुख्य रखकर नित सत् कर्मों में प्रवीण रहते हैं। हर समय ही प्रार्थना किया करो, प्रभु सुमति देवें।''

बाबू जी:- ''महाराज जी! आजकल ईश्वर को न याद करने वाले बड़े आराम की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। याद करने वाले रोटियों से भी लाचार हैं।''

श्री महाराज जी:- ''जो पुरुषार्थ छोड़ देता है लाचार रहता है। दूसरे देशों के लोग कुछ असूलों वाले हैं। पुरुषार्थ को नहीं छोड़ते। लाभ-हानि में घबराते नहीं। सत्कर्म करते जाते हैं। झूठ कम बोलते हैं। चीज़ों को बनाने भेजने में छल-कपट नहीं करते। सत् व्यवहार ही निर्मल कर्म है। यह किसने उनको सिखाया, जैसी चीज़ बनाओ वैसा ही ऊपर लिखो। तुम लोग धर्म के मानने वाले कैसे हो? न ही पुरुषार्थ करते हो, न ही अच्छे असूल धारण करते हो। आ जा रामा, आ जा, मुंह में कड़ा पा जा। तुम लोग कथनी हो। वह लोग कुछ कर दिखलाते हैं। राम को नहीं पावेंगे तो राम की माया का तो सही रूप में इस्तेमाल करते हैं। विलायत में कमाई करके हिन्दुस्तान में अस्पताल खोल रखे हैं। तुम्हारे यहां खाने वाली चीज़ों में मिलावट, पहनने वाले कपड़ों में दग़ाबाजी, मतलब यह कि कोई काम भी शुद्ध रूप में नहीं। ईश्वर तुम सबको सत् बुद्धि देवें।''

इस जगह ही बाबू जी के गृह पर चौधरी मुकंद लाल जी दत्त कुंजा निवासी, जो गुजरात में हैड क्लर्क इन्कम टैक्स में लगे हुए थे और बाबू जी के मित्र थे, सेवा में हाज़िर हुए। सत् विचारों की वर्षा से प्रभावित होकर चरणों में शीश झुकाया और सत्मार्ग का रत्न प्राप्त किया। प्रार्थना की:- आप कुछ समय उनके कुंजा में पवित्र चरण डालकर कुंजा निवासियों को भी कृतार्थ करें। आपने इस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया।

बाबू अमोलक राम जी अभी तक रिटायर नहीं हुए थे यद्यपि अर्ज़ी दी हुई थी। पहली जनवरी, 1943 को वह गुजरात दौरे पर जा रहे थे। श्री महाराज जी से भी प्रार्थना की-कि वह भी गुजरात तशरीफ़ ले चलें और वहां से चौधरी मुकंद लाल जी कुंजा ले जावेंगे। सत्पुरुष भी बाबू जी के साथ ही उसी बस में गुजरात तशरीफ़ ले गये। बाबू जी ने श्री महाराज जी को भी गुजरात शेसन हाउस में ठहराया। एक अलग कमरे में दरी बिछवाकर आपका आसन लगवा दिया गया शाम को वहां पहुंचे थे। चौधरी मुंकद लाल जी भी वहां प्रोग्राम अनुसार सेवा में हाज़िर हुए थे। चौधरी जी दर्शन करके अपने गृह पर, जो शहर गुजरात में था, चले गये।

काफ़ी देर तक बाबू जी व बाकी बाबू लोग सत् उपदेशों का लाभ उठाते रहे। जब रात काफ़ी हो गई तो आज्ञा हुई कि जाकर आराम करो। जब बाबू जी कपड़े उतार रहे थे तो आपने बाबू जी को आवाज़ दी। बाबू जी दौड़कर सेवा में हाज़िर हुए तो आपने फरमाया:- कुंजा नहीं जावेंगे। इन्होंने श्रद्धा बढ़ानी है, श्रद्धा तोड़नी नहीं। झगड़ा हो रहा है। सुबह तांगे मंगवा लो, फकीर गोलड़ा जावेंगे। बाबू जी 'बहुत अच्छा' अर्ज़ करके कमरे में आ गये और सो गये।

सुबह उठकर गाड़ी में सवार कराने के लिए ले जाने की ख़ातिर आपने वक्त पर तांगे मंगवा लिए जो उस कमरे के आगे खड़े किए गए जिसमें महाराज जी विराजमान थे। इतने में चौधरी मुकंद लाल जी तशरीफ़ ले आये और तांगे खड़े देखकर हैरान हुए और बाबू जी से पूछा:- "क्या बात है?" बाबू जी ने एक तरफ़ ले जाकर उनसे पूछा कि तुम्हारे घर रात को क्या हुआ था? चौधरी जी ने माना कि उनके पिता नाराज़ हो रहे थे और कह रहे थे कि कल गुरु धारण किया है और आज साथ ले आया है। कैसे यह गुरु हैं? बाबू जी ने अर्ज़ की-कि रात को ही सत्पुरुष ने झगड़े का इशारा दे दिया था। अब वह कुंजा नहीं जा रहे, बल्कि गोलड़ा तशरीफ़ ले जा रहे हैं।

बाबू अमोलक राम जी 2 जनवरी, 1943 को गुजरात स्टेशन पर साथ जाकर श्री महाराज जी को गाड़ी में बिठा आए और वापिस शेसन हाउस में आ गए।

गोलड़ा शरीफ़ में अमृत वर्षा

श्री महाराज जी 2 जनवरी को ही साढ़े चार बजे शाम गोलड़ा शरीफ़ पहुंचे और प्रेमी गोकल शाह जी के मकान पर पधारे। आपको बाहर की तरफ बनी हुई बैठक में बिठाया गया। आपके सादा लिबास और दुबले-पतले शरीर को देखकर लोग यह अंदाज़ा नहीं लगा सकते थे कि यह कोई महान हस्ती हैं। जब प्रेमी गोकल शाह जी थोड़ी देर बाद वहां पधारे और आपको वहां पर विराजमान पाया तो कुछ बेरुखी से प्रणाम किया। इस समय भक्त जी ने महसूस किया कि क्या ही अच्छा होता कि यह लोग खुद आपको लाते? श्री महाराज जी भक्त जी की विचारधारा को भांप कर बोल उठे:- "प्रेमी! ज़्यादा विचार न किया करो। इन लोगों को क्या मालूम संत किसे कहते हैं? देखकर किस तरह लेट-लेट कर सजदे करेंगे।"

कुछ देर बाद वहां के मुख्य प्रेमी पाल शाह जी ने अपनी रिहाईश वाली जगह पर आपका आसन लगाया और वहां चलने की प्रार्थना की। इस पर आपने फरमाया :-

''प्रेमी! बाहर किसी एकांत जगह पर ले चलते तो बेहतर होता।'' पाल शाह जी ने कहा:- ''महाराज जी! अब देर हो गई है। सुबह बारहदरी की तरफ चलेंगे। जो जगह पसन्द आ गई वहां इंतज़ाम कर देंगे। ''रात को इसी जगह सत्संग हुआ। पाल शाह जी शराब, मांस के बड़े आदी थे। रोज़ाना शराब पिया करते थे। कुदरत का करना ऐसा हुआ कि जिस जगह श्री महाराज जी का आसन लगाया गया उसके पीछे अलमारी में पाल शाह जी की शराब की बोतल पड़ी थी। पाल शाह जी ने सोचा कि महाराज जी के सो जाने के बाद आहिस्ता से बोतल निकाल कर अपना अमल पूरा कर लिया जावेगा। मगर ऐसा न हो सका। श्री महाराज जी तो रात को सोते ही नहीं थे। सारी रात समाधि लगाये बैठे रहते थे। प्रेमी पाल शाह जी भी इंतज़ार करते रहे कि कब सत्पुरुष सोयें और वह बोतल निकालें। न सत्पुरुष लेटे न पाल शाह बोतल निकाल सके। बल्कि सारी रात इस कशमकश में व्यतीत कर दी। सत्पुरुष के प्रताप से मनमानी न की जा सकी। सुबह होने पर आप बाहर जाने के लिए उठे और पाल शाह जी को भी साथ जाना पड़ा ताकि निवास के लिए जगह दिखलाई जाये। वह श्री महाराज जी को एक बग़ीचे में बने हुए कमरों में ले गए जो पसन्द आ गया और वहीं आसन लगा दिया। शाम को सत्संग में आपने पाल शाह जी से फ़रमाया:-

''प्रेमी! कस्बे में सबको सूचित कर दो कि वह व्यौपार के वास्ते नहीं आए। कुछ सत् विचार सुनाने आए हैं। इस तरह सत्संग का सिलसिला जारी हुआ। एक दिन सत्संग की समाप्ति पर विचार चला कि गोलड़ा शरीफ़ निवासी प्रेमी सादा जीवन वाले और बड़े मेहमान निवाज़ हैं। मगर शराब मांस वाली बीमारी सबको लगी हुई है। इस पर आपने फरमाया:

''बाहर से तुम प्रेमी बड़े सादा और भक्ति वाले मालूम होते हो, अंदर कैसे विचार धारण कर रखे हैं?''

प्रेमी:- ''महाराज जी! यहां पर जो संत आते हैं कथा-कीर्तन करके चले जाते हैं। जिस तरह आप ज़ोर देकर फ़रमाते हैं कि मांस, शराब छोड़ दो इस तरह आज तक किसी ने नहीं कहा। शायद आपकी कृपा हुई तो यह छूट जावें।''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमियों! कल छोड़कर आओ और सब प्रेमी कल सुबह दस बजे हाज़िर हों। दूसरे प्रेमियों को भी ऐसा कह दो। यह वचन सुनने के बाद प्रेमी चले गए तो आपने भक्त बनारसी दास को बुलाकर कहा कि प्रेमी, रात को जब खाना खाने जाओ तो सुबह के वास्ते चाय रोटी बंद कर आना और पाल शाह जी के घर कह आना कि आप जब-तक इन चीज़ों को नहीं छोड़ोगे तुम्हारे घर की रोटी नहीं सेवन की जावेगी।''

आपकी आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन किया गया। दूसरे दिन सुबह जब सब प्रेमी चरणों में हाज़िर हुए तो आपने एक कागज़ का टुकड़ा सबके आगे रखते हुए फरमाया:-

''सब प्रेमी हस्ताक्षर करो कि आज से मांस, शराब और दूसरी नशे वाली चीज़ों का सेवन नहीं करेंगे, वर्ना बिना खाये पीये ही वापस चले जावेंगे।''

आपके इस मज़बूत व्यवहार का प्रेमियों पर बड़ा असर हुआ। इनमें से एक बूढ़े प्रेमी रामधन जी ने हाथ जोड़कर चरणों में प्रार्थना की:

प्रेमी रामधन:- ''महाराज जी! पिछला खाया-पिया कौन बख़्शेगा?''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! पिछले पापों को इधर भेंट कर दो। आगे के वास्ते विचार करो।''

सब प्रेमियों ने आज्ञा का पालन करते हुए आईंदा नशे वाली चीज़ों का सेवन और मांस के न इस्तेमाल करने का प्रण किया। जब कस्बे में यह ख़बर फैली तो लोग हैरान हुए कि यह कैसा संत है जिसने ऐसा जादू किया है कि सब लोग मांस, मदिरा त्याग कर सत् पर चलने लगे हैं? इस तरह आपके थोड़े दिनों के निवास ने गोलड़ा निवासियों की काया पलट कर दी।

गोलड़ा शरीफ़ में निवास के दौरान आपने सादगी, सत्, सेवा, सत्संग और सत् सिमरण इन पांचों नियमों पर वचन लिखवाए जो 24 मॉघ, संवत 1999 को समाप्त हुए। यही अनमोल वचन समतावाद की फिलास्फी की बुनियाद और अमली जीवन के सूत्र हैं।

53. रावलपिंडी में सत् उपदेश

11 मार्च, 1943 को गोलड़ा से रवाना होकर थट्टा ज़िला कैम्बलपुर तशरीफ़ ले गये। वहां एक सप्ताह निवास के बाद आप रावलपिंडी तशरीफ़ ले आये। रावलपिंडी में आपने प्रेमी नन्द लाल जी बिंद्रा के गृह पर ऊपर चौबारा में निवास किया और सत्संग का सिलसिला जारी हो गया। रात को आप बारह बजे के बाद नाला लई की तरफ शहर से बाहर तशरीफ़ ले जाते और काफी दिन निकलने पर वहां से वापिस तशरीफ़ लाते। एक दिन सत्संग में जो अमृत वर्षा फरमाई वह इस प्रकार थी।

सत् उपदेश अमृत

''प्रेमियों! जब से यह जीव शरीर रूपी संसार में दाखिल हुआ है रात-दिन इसकी पूजा में लगा रहता है। मालिक ने इंसान को बुद्धि दी है जिससे वह सोच सकता है कि मैं संसार में क्यों आया हूं? आज से दस, बीस, पचास वर्ष पहले कहां था और कुछ समय गुज़रने के बाद किधर चला जावेगा? मेरे बाप, दादा, पड़दादा किधर चले गए? ज़िंदगी क्या चीज़ है? मरने वाली वस्तु क्या चीज़ है? पैदा क्या हो रहा है? ख़त्म क्या चीज़ हो रही है? कौन-सा विचार धारण किया जावे जिससे मन के अन्दर शांति आए? खाते-पीते, उठते-बैठते, बेचैनी मन में बनी रहती है। खाते हैं, शाम को फिर भूख लग जाती है, यह क्या चक्कर बना हुआ है? जिसके पास नहीं है वह भी लाचार है, जिसके पास सम्पत्ति है वह भी लाचार है। बार-बार मन भोगों की तरफ दौड़ता चला जा रहा है।

''इन सब बातों का विचार संत लोगों ने किया। इन बुद्धिमान लोगों ने विचारा, अचरज रचना जिस मालिक ने बनाई है उसे जाना जाये। इस विचार को लेकर सही पुरुषार्थ द्वारा अपने मकसद को हासिल किया। इनको आज हम गुरु, पीर, अवतार, ऋषि, मुनि के नाम से पुकारते हैं, जिनके आदर्श को लेकर बड़े-बड़े राजे, महाराजे संसारी ऐश्वर्य पर लात मार कर जंगल में जाकर उस दायमी (स्थायी) खुशी को हासिल करने लगे। वह मूर्ख न थे। उन्होंने समझा संसार संशयों का समुन्द्र है। इसमें जिस जीव ने गोता लगाया वही ग़रक (डूब) हो गया। जिसने सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया उसने जाना कि हर एक चीज़ जिससे ज़िन्दा हो रही है, जिस करके मेरी हड्डी, रोम, बाल, खाल में प्रकाश हो रहा है अगर वह शक्ति इस शरीर में न हो तो इसका क्या हाल हो जाये? दो मिनट के बाद इससे दुर्गन्ध जारी हो जाती है। इसलिए उन्होंने इस शरीर के चलाने वाली शक्ति की तलाश की। इसी तलाश को भक्ति, बंदगी, रियाज़त वग़ैरह नामों से पुकारा जाता है। महापुरुषों ने उस शक्ति की तलाश की और उसका आधार लेकर विश्व का कल्याण किया। उन्होंने बतलाया कि तुम भी उसकी तलाश करो। ईश्वर सबको सुमति देवें ताकि वे भी उसे तलाश करके इस चोले को सफल कर लेवें।''

इस तरह दूसरे सत्संग में आपने कुछ इस प्रकार सत् उपदेश देने की कृपा फ़रमाई।

''हर समय जीव की वास्तविक चाहना यही बनी रहती है कि सुख मिलना चाहिये। दु:ख मेरी जगह कोई और भोगे, मेरे नज़दीक दु:ख न आये। इसके बनाव श्रृंगार में फ़र्क न आये। लेकिन यह सब कुछ करते हुए भी आख़िर एक दिन यह चर्ख़ा पुराना और बोसीदा[1] होकर लड़खड़ाने लग जाता है। तब जाकर उसकी अंतिम गति का विचार आता है। महापुरुष इसकी अंतिम दशा का विचार पहले ही रखते हैं। ऐसा ही विचार करके कबीर जी ने बतलाया:

चर्ख़ा घड़दे वे तरखाना। असां सोहरे घर जाना॥
चंगी लकड़ी लगाईं दिल देके। असां बैठ नहीं रहना पेके॥
मेरा चर्ख़ा रंग रंगीला। पीढ़ी मेरी राती॥
केड़े बेले दी कतन लगी। इक न पूनी काती॥
चर्ख़ा टुट फुट होया बालन। चर्ख़ा अंदरू बाहर निकालन॥
चर्ख़ा जंगल जाये समाया। चर्ख़ा दास कबीरे गाया॥

''यह सत्पुरुषों की खोज है। शरीर की कैसी बनावट है यह हमेशा रहने वाला नहीं है बल्कि नाशवान है। जिसने निश्चय करके शरीर को नाश रूप समझा उसने असली तहकीकात (खोज) की और इस नतीजे पर पहुंचे कि बिना यत्न के किसी ने भी आज-तक कल्याण हासिल नहीं की। इसलिए सबसे पहले जिस मार्ग पर सत्पुरुष चले उसे धारण करना चाहिए और इसलिए नित ही उनके वचनों को धारण करना चाहिये। देखना चाहिये उनके अंदर कितना त्याग, कितना वैराग्य था, कितनी उनके अंदर सत्मार्ग की खोज के वास्ते तड़प थी, कैसी उनकी रहनी कहनी थी?

गलीं असी चंगियां, आचारीं बुरियां। रीसां करन तिनाड़ियां, जो सेवें दर खड़ियां॥
कलर दया बंजारया, झूंगे मुशक मंगीन। बिना अमलां तूं 'नानका', कीवें कंत मीलीन॥

''नकल तो उन महापुरुषों की करें जो नित ही उस परम तत्त्व में बिना खाये पिये मग्न रहा करते थे, अंदर करतूतें चंडालों जैसी हैं। गुरु बनना आजकल बड़ा आसान हो गया है। दस श्लोक इधर कबीर के पढ़े, दस बुल्ले शाह के, पांच नानक के, बस सत्‌गुरु बन गये। जब ऐसे गुरु हो गये तो शांति का मार्ग कौन दिखाये? जिनके अंदर ऐसी इच्छा हो कि मैंने परम संत बनना है, मालिक के पास पहुंचना है तब उन महापुरुषों के असूलों को धारण करके और करनी करके बड़ा बने। करनी ही देवता बनाने वाली है, करनी ही राक्षस बनाने वाली है। अगर करनी मलीन है लाख देवता भी उसे उठा कर पार नहीं ले जा सकते। वह भी जब प्रकट होकर दर्शन देंगे तो यह ही उनका आदेश होगा, करनी निर्मल करो। गुरु, पीर, अवतारों के मानने का मतलब यह है कि पाखंड को छोड़कर सत् करनी चित्त में धारण की जावे। सत्पुरुषों के जीवन का आधार इस वास्ते लिया जाता है कि सत् विचार, सत् श्रद्धा, सत् विश्वास, सत् करनी प्राप्त हो। सत् की धारा पर चल कर विकारों की अधिक चेष्टा से मुक्ति प्राप्त हो। इस वास्ते नित पुरुषार्थ धारण करो। नित ही ऐसे सत्कर्म करो जिनके द्वारा लोक-परलोक में सुख बना रहे। तीन काल परम सुख, अखंड शांति रूपी परम धन मिलता रहे। जिस धन को पाकर फिर निर्भय, निर्चाहक और निर्वास हो जाये। इस कलयुग में क्या सतयुग में भी सूरज, पवन, पानी, धरती और आकाश यही थे? उस वक्त सतयुग के लोग कुदरती सादा थे। झूठ का नाम व निशान न था। तन, मन, धन से सेवा करना परम धर्म कहा जाता था। हर समय मालिक की याद में मग्न रहते थे। इसलिए ऐसे असूलों को जो धारण करेगा वह ही सतयुगी जीव बन सकता है। आज अशांति का कारण ही यह है। जो लोग पहले आये उन्होंने सारी आयु घास-फूस की झोपड़ियों में गुज़ार दी। उनका रहन-सहन कितना सादा था और विचार कितने ऊँचे थे। जो नीति और कानून उन्होंने बनाये उन्हीं की बुनियाद लेकर आज के साईंस-दान (वैज्ञानिक) खोज कर रहे हैं। प्रकृति की खोज करना वह ही जानते थे लेकिन वह यह भी जानते थे कि प्रकृति की खोज में सुख नहीं। इसलिए उन्होंने गहरी खोज करके इस अशांतमई संसार में शांति पाई। प्रभु सबको निर्मल बुद्धि बख़्शें।''

54. शुभ स्थान पर एकांतवास

जंड महलो में सत् उपदेश

14 अप्रैल, 1943 तक आपने रावलपिंडी में निवास किया। 15 अप्रैल को आप वहां से रवाना होकर शुभ स्थान गंगोठियां तशरीफ़ ले गए जहां एक सप्ताह करीबन आपने समय एकांत निवास में व्यतीत किया। इस दौरान जंड महलो निवासियों ने सेवा में प्रार्थना की:- आप वहां तशरीफ़ लाकर

सत् उपदेशों द्वारा उन्हें कृतार्थ करें। ख़ासकर उन्हीं दिनों में इस जगह ब्राह्मण कांफ्रेंस भी थी। आपने इस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और 23 अप्रैल को आप जंड महलो तशरीफ़ ले गये। बाबू अमोलक राम जी भी उस जगह सेवा में हाज़िर हो गये। अब उनकी लम्बी छुट्टी शुरू हो गई थी। इस जगह एक सत्संग में जो सत् उपदेश देने की कृपा फरमाई उसका खुलासा निम्नलिखित है:

''प्रेमियों! देखना है कि प्रभु की भक्ति का क्या लाभ है? बुद्धिमान लोग प्रभु की आराधना क्यों करते हैं? प्रभु की भक्ति या सिमरण इस वास्ते है कि चित्त ठंडा हो। जितने संकल्प-विकल्प उठ रहे हैं उनसे ख़ुलासी (छुटकारा) मिले। मन का काम सिमरण करना है। हर वक्त रात हो या दिन यह कोई न कोई सिमरण करता रहता है। किसी के साथ मित्रता, किसी के साथ वैर-भाव मन ही मन में बनाता है। संयोग से खुशी और वियोग से ग़मी हासिल करके राग-द्वेष की अग्नि में तपता रहता है। जब-तक सत् स्वरूप जीवन शक्ति की पहचान नहीं कर लेता तब-तक चित्त ठंडा नहीं होता। इसलिए महापुरुषों ने चित्त की शांति के साधन खोजे और सेवा को शांति का साधन बतलाया। उन्होंने ईश्वर भक्ति को मुख्य रखा। उन्होंने बतलाया कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे अवगुणों से छुटकारा तब ही प्राप्त होता है जब प्रभु की शरण ले लेवे। यह भी फरमाया कि प्रभु के सिमरण से चित्त के अंदर प्रसन्नता आती है। धैर्य और संतोष प्राप्त होता है और अंदर के विकार धीरे-धीरे ग़ायब हो जाते हैं और फरमाया कि इस मकसद (उद्देश्य) के लिए प्रभु भक्ति में नित ही प्रवीण रहना चाहिये। ईश्वर सबको सुमति देवें।''

55. उस्मान खट्टर में चरण कंवल

चंद दिन जंड महलो निवास के बाद आप शुरू माह मई, 1943 को यहां से उस्मान खट्टर तशरीफ़ ले गए। उस वक्त काल चक्र खूब उल्टा चल रहा था। हालात ख़राब हो रहे थे। जंग की वजह से खाने-पीने का सामान तंगी से मिलता था। इन सब हालात को मद्देनज़र (ध्यान में) रखते हुए आपने चाय के दो वक्त इस्तेमाल की बजाये एक वक्त कर दिया। मगर आपके प्रोग्राम में यानी रात को बाहर खेतों या जंगलों में एकांत जगह आनन्दित अवस्था में विराजमान रहना और दिन को सारा दिन सत्विचारों द्वारा जनता को निहाल करना, इसमें कोई तब्दीली नहीं आई। मगर वातावरण का असर भक्त बनारसी दास पर ज़रूर हुआ।

एक समय सत्पुरुष के चरणों में जब सिर्फ़ एक प्रेमी और बैठा था, मौका अनुकूल जानकर भक्त जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! छपवाई वग़ैरह का काम संपूर्ण हो चुका है। अब आप आज्ञा देवें तो दास कोई दुनियावी कारोबार शुरू करके कुछ कमाई कर ले, संगत की सेवा भी कर सके और संगत का बेकार में बोझ का कारण न बने।''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! संसारियों के पास जाकर बैठते हो तो संसारी छाया पड़ ही जाती है। जो कमाई तुम कर रहे हो क्या यह कम है? सेवा करके दो रोटी खा लेते हो, तुम्हारा क्या बोझ

संगत पर पड़ गया है? किसी ने तुमसे कुछ कहा है? गुरु सेवा में हाज़िर रहकर आने जाने वाले प्रेमियों की सेवा क्या यह कम कमाई है? संगत तुम्हारा एवज़ाना (बदला) नहीं दे सकती। जो सेवा तुम कर रहे हो यह ही बुनियादी सेवा है। जिस तरह सूरज, चांद अटल हैं इसी तरह तेरा नाम भी अटल रहेगा। गिरने लगेगा तब भी संगत तुम्हें संभाल लेगी। गुरु चरणों में अभी तुम्हें किसी बात की चिंता नहीं करनी चाहिये। संसारी चाहते हैं संसारी बनायें। यह तो चाहते हैं कि तुम इन जैसा बनो। इन जैसा न बन सको तो तृप्त होकर जाओ। बार-बार गुरु सेवा नहीं मिला करती, चाहे मानुष जन्म मिलता भी रहे। संसारी हर समय बन सकते हो, मगर यह ऐसा सेवा का मौका तुमको शायद फिर न मिल सके। तुम्हारा स्वभाव जानते हैं, चिकनी चुपड़ी बातों में आकर फंदे में आ जाते हो। इनको तुमसे कोई गर्ज़ नहीं, लेकिन तेरी भलाई चाहते हैं। लोक परलोक की भलाई चाहते हैं। सत्गुरु जैसी भलाई चाहने वाला संसार में कोई नहीं। तुम दो प्रेमियों को नज़दीक आने की इज़ाज़त न मालूम क्यों दे रखी है, नहीं तो फ़कीर लोग किसी को ज़्यादा नज़दीक नहीं आने देते।''

इतना फरमाने के बाद खामोश होकर समाधिस्थ हो गए। थोड़ी देर बाद फिर फरमाया:

''सुना प्रेमी! अब तुम्हारा क्या विचार है? कल या परसों आगे का प्रोग्राम निश्चित किया जावे। तेरी इंतज़ार थी कि बनारसी आये तब आगे का विचार किया जावे।'' इन सत् वचनों को सुनकर भक्त जी की आंखों में आंसू आ गए। फिर भी अपने आपको संभाल कर अर्ज़ की:- ''जैसी आज्ञा होगी वैसा ही करेगा। वैसे ही विचार रखा गया था, अलग होने पर ऐसा पुख़्ता इरादा करके नहीं आया था।''

श्री महाराज जी:- ''पक्के विश्वास से सेवा करते जाओ। डावांडोल चित्त से की हुई सेवा मन में शांति नहीं देती। अच्छा, अब बताओ किधर चलना है?''

भक्त जी:- ''जिधर आप कृपा करेंगे।''

महाराज जी:- ''सराये सालहा से प्रेमी चुन्नी लाल चौपड़ा की पत्रिका आई हुई है। इस दफ़ा कश्मीर की तरफ नहीं जाना चाहिए। नाग़ा भी देना चाहिए। रोज़ाना जाने से प्रीति कम हो जाती है।

''प्रीत घटे नित मीत के जाइयां''

''मर्ज़ी तुम्हारी हो तो अभी पत्र लिख दो कि फलां दिन यानी 23 मई को सराये सालहा पहुंच जावेंगे।'' उस्मान खट्टर निवासी प्रेमियों को जब पता लगा कि आपने जाने का प्रोग्राम निश्चित कर लिया है तो सबने हाज़िर होकर और समय देने की प्रार्थना की। मगर आपने बड़े प्रेम से समझाते हुए अपना प्रोग्राम तबदील न किया। आपने फरमाया:-

''प्रेमियों! थोड़ा-थोड़ा समय सबको मिलना चाहिये। अब किसी नदी, नाले के किनारे थोड़ा समय एकांत में भी गुज़ारने दो। तुम्हारे नज़दीक ही सराये सालहा है, दिन में दो बार आ जा सकते हो। प्रोग्राम पुख़्ता हो गया है, फ़कीरों को ज़्यादा देर तक एक जगह नहीं ठहरना चाहिए।''

56. पूर्व-पश्चिम सीमा ज़िला

सराये सालहा में सत् प्रचार

निश्चित प्रोग्राम अनुसार उस्मान खट्टर से रवाना होकर आप सराये सालहा पधारे। यहां भी जनता के लाभ के लिए सत्संग का प्रबंध किया गया। इस जगह सत्संग में हिन्दू, सिख व मुसलमान बग़ैर, जात-पात सत्संग में शामिल होकर सत् उपदेशों का लाभ उठाते रहे। एक दिन प्रेमियों की प्रार्थना पर आपने सराये सालहा बाज़ार में सत् उपदेश देकर हज़ारों की संख्या में हर मज़हब के मौज़ूद प्रेमियों को कृतार्थ किया। सबने बड़े ग़ौर से सत्पुरुष के सत् विचारों को सुना और इसका इतना असर हुआ कि मौलवी अब्दुल वाहद लोधी ने आपकी सेवा में अर्ज़ की-कि आप मस्जिद में चलकर अपने आला ख़्यालात से उन्हें भी कृतार्थ करें। आपने उनकी अर्ज़ को मान लिया और मस्जिद में तशरीफ़ ले गये। वहां जो सत् उपदेश सुनाया उसका सार निम्नलिखित है :

''खुदा के हुक्म से जब से इस दुनिया का निज़ाम शुरू हुआ है रूहें (आत्मायें) ख़ाकी[1] जिस्म में कैद होकर आ जा रही हैं। जब-तक जिस्म है तब-तक अपनी-अपनी दुनिया कायम है। हर एक रूह चाहे इंसान की है चाहे हैवान की इस ख़ाकी वज़ूद में हैरान व परेशान है। इस हैरानी व परेशानी का इलाज करने वाले पूर्व और पश्चिम में होते चले आये हैं और आगे भी आते रहेंगे। उनके नक्शे कदम (बताये गए रास्ते) पर चलकर हज़ारों रूहों ने निज़ात[2], हयात-ए-अबदी[3], लाफ़ानी खुशी[4] और दिल की तसकीन (खुशी) हासिल की। मगर ऐसी निज़ात पाने वाली रूहें यानी हुक्म-ए-खुदाई सुनाने वाली रूहें जब भी दुनिया में आईं उनको बड़ी तकलीफ़ात का सामना करना पड़ा। लेकिन उनके सिदक कामिल[5] ने सबको गिरविदा (मोह लिया) बना लिया। किसी भी मुतबर्रिक (पवित्र) किताब में ऐसा नहीं लिखा कि अपने नफ़्स[6] के वास्ते रूहों को बेजा[7] तकलीफ़ दी जाये। उनमें सही ख़िदमत[8] का ही ऐलान किया हुआ है। ईश्वर या खुदा किसी की मलकियत नहीं। उस ज़ाते आला[9] से ही सब रोशन हो रहे हैं। इस ज़ात से जो मुनकिर[10] हुआ है वह काफ़िर[11] है। मालिक के नूर को वह ही मोमन[12] या तालिब समझ सकता है जिसकी निग़ाह में दुई या ग़ैरियत[13] नहीं है। जो सब चरिंद-परिंद, इंसान-हैवान में मालिक की ज़ात को देखता है। वह अपने पीरों, पैग़म्बरों को मानने वाला है। हर एक से मोहब्बत, प्रेम का बर्ताव करने वाला है। जिस हाल में खुदा रखे उसमें रहने वाला है। यानी राज़ी व रज़ा होकर धन, दौलत, दिल और जिस्म सब खुदा की चीज़ है जो खुदा के नाम पर उसे दे सकते हैं। नफ़्स की खातिर मेहर[14] को छोड़कर कहर को अपनाना, जिन्दा चीज़ को मार कर हलाल कह कर खाना, अपना मारा हुआ हलाल और खुदा का मारा हुआ हराम करार देना कहां की अकलमंदी है। यह तेरी हिरस[15] का सारा तमाशा है, जिसका नतीजा खुशी और ग़मी है। तकबीर पढ़नी है तो हिरस और ख़ुदी पर पढ़ जिस पर साहिब राज़ी हो।

---

1. मिट्टी का 2. छुटकारा 3. स्थाई जीवन 4. स्थाई खुशी 5. सत् विश्वास 6. भोग 7. व्यर्थ 8. सेवा 9. ईश्वर 10. इन्कारी 11. नास्तिक 12. भक्त 13. द्वैत भाव 14. त्रै कृपा 15. तृष्णा

जो हमेशा की रज़ा अल्लाह में गुस्तग़र्क (डूबे हुए) रहने वाले हैं उनकी गफ़लत खत्म हो जाया करती है। जो खुदी में रहने वाले हैं वह कभी भी दिल की राहत को न पा सकेंगे। खुदा आप सबको ईमान, सब्र और आजज़ी बख़्शे।''

इस सत् उपदेश का लोगों पर और ख़ास कर मुसलमान भाइयों पर गहरा असर पड़ा और लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि अगर रोज़ाना ऐसे वाहिज़ (उपदेश) हों तो दिलों से तास्सुब[1] की आग व कदूरत[2] ख़त्म हो सकती है। लेकिन जो एक बार सुनकर आमल हो जाता है वही दिल का ग़नी[3] और राज़ी ब रज़ा रहने वाला बन जाता है, बाकी तो महज़ सुनकर अपना जीवन बसर करके चले जाते हैं और आवागवन का चक्कर काटते रहते हैं।

सराये सालहा से दूसरे दिन आप तप के लिए शंकयारी की तरफ़ रवाना हुए। ऐबटाबाद होते हुए आप नथिया गली पहुंचे जहां रात को एक गुरुद्वारे में निवास किया। गुरुद्वारे के भाई जी ने आकर पूछा:– आप किधर से आये हैं? क्या काम करते हैं? यह सवाल उसने इसलिए किया कि वह आपके सादा लिबास से आपको पहचान न सका। जब भक्त जी ने भाई जी को श्री महाराज जी की हस्ती के बारे में जानकारी दिलाई तो आपसे पूछा:–

''महाराज जी, कोई सेवा।'' महाराज जी ने उत्तर दिया:– ''प्रेमी! सुबह की ख़ुराक पा आये हैं।''

भाई जी– ''इस जगह बड़ी तंगी है। कोई ख़ास आमदनी नहीं । संक्रान्ति या और कोई गुरु पर्व वग़ैरह दिन आ जाये तो कुछ बन जाता है, वर्ना वाहेगुरु की कृपा से लंगर मस्ताने रहते हैं।''

यह सुनकर आपने पूछा:– घर कहां है?

भाई जी:– ''पुंछ, ब्राह्मण सिख हूं।''

यह सुनकर आपने भाई जी से फरमाया:–

''ब्राह्मण ही बेड़ी डुबोते आए हैं। ब्राह्मण ही तारते भी हैं। जिधर भी जायेंगे नया ही स्वांग बना लेंगे। वाणी प्रकट हुई थी कल्याण के वास्ते, आपने गुज़रान के वास्ते बना ली है। किसी वक्त बाबा नानक जी ने फरमाया था:–

'भुखे मुलां घर मसीत'

उस समय उन्होंने यह न सोचा कि कभी बात यूं बन जायेगी।

'भूखे भाई घर गुरुद्वारा'

वाणी की कीमत पैसा-पैसा पड़ेगी।

दस रूमाल चढ़ाये के, लई दुकान सजाये।
इस विध मन मलन न उतरे, देखो ग्रंथ मिलाये॥
मध पीये कर मांस पाये, पढ़न अंबरी बानी।
होये कभी न निस्तारा, एह डूबन की निशानी॥

---

1. मज़हबी द्वेष 2. ईर्ष्या 3. मालदार

जब लग रहत कहत, निर्मल न होवे।
''मंगत'' बुद्ध शुद्ध बिना, सत् शब्द बोध न पावे॥

''वाणी प्रकट हुई थी सब जीवों के कल्याण के वास्ते, आज वाहिद मालिक बनकर नफ़रत की आग अंदर दाखिल कर ली है। हिन्दू कौम की रक्षा के बजाये आप नाशक बन रहे हैं। क्या यही ग्रंथ साहेब का उपदेश है? गुरु साहब इस तरह नहीं फरमा गए थे जैसा कि आप करने लग गए हैं। प्रेमी, नाराज़ न होना। विचार करके और कोई निर्वाह कर धंधा शुरू करें जिससे पेट भर के रोटी मिले। आप भी खाओ और कोई भूखा प्यासा मिले तो उसकी भी पवित्र कमाई से सेवा करो। जीवन सदाचारी बनाओ। यह ही जीवन का लाभ है। सत्, सेवा, नाम सिमरण तब ही बन सकता है जब पेट भर के रोटी मिले। वाहेगुरु नाम दान बख़्शें।''

घट घाल कुछ हथों दे, 'नानक' राह पिछाने से।

भाई जी:- ''महाराज जी! आपने जो कुछ फरमाया है ठीक है, मगर एक आदमी के इस तरह हो जाने से सिलसिला किधर सुधर सकता है?''

महाराज जी:- ''प्रेमी! तंद[1] नहीं तानी[2] ही बिगड़ी हुई है। तुम्हारा इसमें क्या कसूर? अच्छा, अब भी प्रभु सुमति देवें।''

इतना कह कर आप वहां से चलने लगे तो भाई जी कहने लगे:- ''आपको इस जगह तकलीफ़् बिल्कुल नहीं होगी।'' यह सुनकर आपने उत्तर दिया:- ''प्रेमी! यह आने-जाने वाली जगह पर नहीं ठहरते। फ़कीर जंगलों में ठहरा करते हैं।''

इतना फरमाते हुए आपने भक्त बनारसी दास से दो रुपये भाई जी को दिलवा दिये और फिर रात पास ही एक कुटिया में निवास करने के बाद दूसरे दिन आप हवेलियां तशरीफ़् ले गए। वहां नाला दौड़ के किनारे डेरा लगाया। शाम के समय सूरज डूब ही रहा था कि आपके चरणों में बैठे भक्त जी ने आपसे प्रश्न किया :

प्रश्न- ''महाराज जी, ये जो सिख पढ़ते हैं, 'राज करेगा खालसा' इसका क्या मतलब है?''

उत्तर- ''प्रेमी, खालिस आदमी ही राज किया करते हैं, जो सच्चे मायनों में निष्काम देश भक्त होते हैं, सभी जीवों का हित चाहने वाले होते हैं। यह नहीं कि सिख राज करेंगे। समय आयेगा गांधी, नेहरू, पटेल और बड़े-बड़े जीवन देने वाले ही देश की बागडोर संभालने वाले होंगे। अब वह तलवार का ज़माना नहीं रहा। अब सही विचार, सही अक्ल वाला जो होगा वह ही हकूमत के काबिल होगा। शख़्शी हकूमतें[3] खत्म हो जायेंगी। यह नहीं कि लाठी उठा ली और छोटी सी रियासत बना ली। अब वह ज़माना खत्म हो गया है। बेशक मान मद जब हासिल हो जाता है

1. ताना 2. बाना 3. राजशाही

बुद्धि उलट जाया करती है। यह प्रकृति का नियम है। खालसा पंथ इस वास्ते नहीं बनाया गया था कि मांस, शराब खाना-पीना और मार-कुटाई करनी, बल्कि सत् असूलों की रक्षा के वास्ते बनाया गया था। हिन्दू जाति क्या, सब मनुष्यों को मिलकर बैठने की शिक्षा दी गई थी। ऊंच-नीच का भेद ख़त्म किया गया था। आज अलग अपने आपको समझने लगे हैं। गुरुद्वारों की कमाई पर बहुत ही जनता अपना गुज़रान कर रही है। देखते हैं जिस जगह चढ़ावा ज़्यादा चढ़ाया जाता है वहां ही कब्ज़ा कर लिया जाता है। यह धर्म स्थान नहीं रहे, फ़सादगाहें बन गई हैं। अभी तो क्या आगे-आगे देखना क्या-क्या लच्छन करते हैं? लेकिन सत्पुरुषों के वाक्य जुगा-जुग तक रोशनी बख़्शते रहते हैं। गुरुओं ने बड़ी से बड़ी कुर्बानी करके सत्धर्म को फिर से खड़ा करने की कोशिश की थी। आज तरट्टी चौड़[1] हो रही है। गुरुद्वारों का दान श्री गुरु गोबिन्द सिंह ने दरिया में फैंकवा दिया था। दान का पैसा ग़रीब, अनाथ, यतीम और देश सेवा में ख़र्च के वास्ते होता था न कि गुज़रान के वास्ते। जैसे ब्राह्मणों ने पत्थर के ठाकुर बनाकर पेट पूजा कर रखी है उन्होंने दरबार साहब सजा लिया है। दरबार में तत्त्व ज्ञान भरा है, इसे निर्मल बुद्धि से विचार करके ही निर्मल पद पाया जाता है। संतों की वाणी, वाक्य तास्सुब से खाली होते हैं। आज मज़हब तास्सुब[2] का रूप बन गया है। ईश्वर ही सत् बुद्धि देवें।''

यह विचार सुनने के बाद भक्त जी ने पूछा:

भक्त जी:- ''महाराज जी! ये एक शब्द है-

''हंसदियां खिंलदियां पंहदियां विचे होवे मुक्त''

इसका क्या मतलब है?''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! इसका यह मतलब नहीं कि सब अच्छी, बुरी ख़ुराक का सेवन करते हुए, लूटमार और अय्याशी की ज़िंदगी बसर करते हुए जीवन मुक्ति प्राप्त हो जाये। मुक्ति या सुख तो सादा से सादा लिबास और ख़ुराक का इस्तेमाल करते हुए सत् विचार, मीठे वचन और सत्नाम का सिमरण करने से प्राप्त होता है। निरंकार बेशक सब जगह है मगर यह सत्पुरुषों को बोध है। खाली ज़बानी सब जगह ब्रह्म विचार करने से भ्रष्टाचार फैल जाया करता है। माई-भाई, बेटा-बेटी, नारी, गाय, बैल, बकरी, हिरनी, सूरनी, मुर्गी, मछली सबमें निरंकार या ब्रह्म है मगर जीभा की रसना में सबके साथ एक जैसा सलूक कोई नहीं करते। सबमें एक आत्मा को ही देखकर मन, वचन कर्म से सुख देने की कोशिश करनी चाहिए। जैसे यह जीव खुद अच्छे से अच्छा दूसरों से सलूक, सुख चाहता है वैसे सबके साथ बर्ताव करे, इसमें इसकी सफलता है।

''सभनां जीयां का इको दाता, सो मैं विसर न जाई''

रोज़ाना इसका पाठ जपजी में से करते हैं। यह उस समय नहीं याद रहता जब बेज़बान जीवों के गले पर छुरी या तलवार रखी जाती है। जिस तरह अपने बेटे को अज़ीज़ समझता है इसी तरह

1. सत्यानाश 2. धर्मान्धता

दूसरे जीवों को अपना अज़ीज़ समझे, द्वैत भावना, खुदगर्ज़ी (स्वार्थ) मन में न लाये। खुदगर्ज़ी ही सब पापों की जड़ है। कबीर जी ने खूब फरमाया है:

''हिन्दू अन्धा तुरको काना''
''उस झटका, उस बिसमिल कीनी, दया दोहा ते भागी''।

महापुरुष सदाचारी जीवन बसर[1] करने का उपदेश देते आये हैं। लेकिन मोह, माया के लोभी जीव अपना-अपना रास्ता इख़्तियार[2] कर लिया करते हैं। प्रभु हर जीव को सुमति बख़्शें।''

इसके बाद चंद पत्थरों को सिरहाने रखकर भक्त जी सो गये और श्री महाराज जी समाधिस्थ हो गये। जब सुबह हो गई और सूरज निकलने लगा तो आपने भक्त जी को आवाज़ देते हुए फरमाया:-

''बनारसी-बनारसी! उठो, बेईमान इस वक्त तक सोया हुआ है।'' (जल्दी-जल्दी उठकर) भक्त जी बोले:- ''महाराज जी! ठंडी जगह पर नींद ने काम ख़राब किया है।''

श्री महाराज जी:- ''इन पत्थरों पर इस तरह तुम्हें नींद कैसे आई?''

भक्त जी:- ''महाराज! नर्म बिस्तरे से भी आनंद ज़्यादा आया है।''

वहां से जम्मू की तरफ चलने का विचार करके आप रेलवे स्टेशन हवेलियां पर तशरीफ़ ले आये और गाड़ी के आने का इंतज़ार करने लगे। जब गाड़ी आई तो उसमें सराये सालहा के एक प्रेमी मुंशी ज्ञान चंद जी मिल गए। उसने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! ''हमने एकांत जगह देख ली है। इस विचार में थे कि आपको किस जगह लिखा जाये। अब हम जम्मू नहीं जाने देंगे।'' प्रेमी की श्रद्धा और प्रेम को देखकर आपने सराये सालहा चलने की आज्ञा दे दी। प्रेमी मुंशी राम जी टिकट वापिस करके बाज़ार चले गए और वापसी पर तांगा ले आये। तांगे में सवार होकर सब हवेलियां से सराये सालहा तशरीफ़ ले आये।

57. सराये सालहा में एकांत निवास

सराये सालहा शहर से कुछ फ़ासले पर नाला दौड़ के करीब नहर के किनारे एक छोटा सा मंदिर था। इससे ऊपर पेड़ों का एक जंगल सा था, उसमें दो-तीन कुटियां बनवा दी गई थीं। यह चटाइयों की ही बनी हुई थीं। यहां श्री महाराज जी को ठहराया गया था।

इस जगह एक मुसलमान पीर सैयद रिंदशाह दरवेश थे। वह कई दफ़ा दर्शनों के लिए आये। जब भी आते कई किस्म के सवाल करके अपने दिल को तसल्ली देते और जब भी आते सजदा (नमस्कार) करते। सत्पुरुष ने पीर साहब को सजदा करने से मना किया, मगर वह न माने, बल्कि आपकी तारीफ़ के साथ-साथ अपनी भूतपूर्व हिस्ट्री भी खोलकर ब्यान कर दी और अर्ज़ की:

"मेरे पास ऐसे शब्द नहीं जिनके ज़रिये आपकी तारीफ़ कर सकूं। आप चौदह तबक[1] के मालिक हैं। आपकी एक निग़ाह ही हमें बड़ी तसल्ली दे रही है। बेवकूफ लोग तास्सुब[2] की वज़ह से आपकी पहचान नहीं कर सकते। आप जैसे ला मज़हब[3] ही पैग़म्बर होते हैं। हमारे मज़हब में यह शब्द कहना जाइज़ नहीं लेकिन यह कहे बग़ैर मैं रुक नहीं सकता। यह आपका ग़ुलाम अंग्रेज़ सरकार का खास बंदा है, जो काफ़ी अर्से तक ख़ुफ़िया महकमे में काम करता रहा है। हर मज़हब के अच्छे-अच्छे आदमियों से वास्ता रहा है। लड़ाईयाँ आपस में करवाईं। फूट डलवानी हमारा काम रहा है। नेक बंदा दरअसल कहीं देखने में नहीं आया। काबुल, कंधार, कश्मीर, गिलगित ज़िला हज़ारा यह सब इलाका मेरे ही हल्के में था। कोई ऐसा काम नहीं, अच्छा या बुरा, जो हमने नहीं किया। तबियत को चैन अब आपको देखकर आया है। वली अल्लाह लोगों से दुनिया ख़ाली नहीं है, अब यकीन हुआ है। मेरे लिए जो हुक्म हो करने को तैयार हूं। अगर हुक्म हो तो हिन्दू बन जाऊं।"

पीर साहब के विचार सुनकर आपने फ़रमाया:- "हिन्दू, मुसलमान मत बनो। सही इंसान बनो। मज़हब की तबदीली[4] में हकीकी[5] खुशी नहीं है। दिल को राहत हर एक रूह को सुख देने से मिलती है। आराम चाहते हो तो दूसरों को आराम दो। तास्सुब छोड़ दो। जिस तरह वली अल्लाह हस्तियों ने दिल की तसकीन[6] हासिल की है वह ही तरीका इख़्तियार[7] करो। आहिस्ता-आहिस्ता रंग लग जावेगा। खुदा आपको अक्ले सलीम[8] बख़्शें।"

इस जगह बाबू अमोलक राम जी भी सेवा में हाज़िर हुए और बाहर ही एक अलग कुटिया में जो चटाइयों की बनी हुई थी उसमें ठहरे। इस जगह इतने सांप थे कि ब्यान नहीं हो सकता। कितने ही सांप इधर-उधर दौड़ते देखे। ज़मीन पर चटाइयों पर ही रात को सोते, मगर किसी सांप ने किसी को नुक्सान नहीं पहुंचाया। सत्पुरुष इस जगह रात को बाहर तशरीफ़ ले जाते और अपनी आनंदित अवस्था में मग्न रहते। सुबह निकलने के बाद वापिस तशरीफ़ लाते। चौधरी फ़कीर चंद जी भी इस जगह शारियां से दर्शनों के लिए हाज़िर हुए। जब चौधरी जी वापिस जाने लगे तो आपने फरमाया:- "चौधरी जी! बाबू जी को साथ ले जाओ और सरूपा जंगल दिखाओ।"

चौधरी फ़कीर चंद जी बाबू अमोलक राम जी को साथ लेकर सराये सालहा से हवेलियां गाड़ी द्वारा गए और वहां से बस द्वारा ऐबटाबाद मांसेरा से होते हुए मुज़फ़राबाद डोमेल पहुंचे। रात डोमेल विश्राम किया गया। वहां से दूसरे दिन दूसरी बस में सवार होकर चिनारी पहुंचे। रात चिनारी आराम किया गया। दूसरे दिन चिनारी से तांगा द्वारा पूल नीली पहुंचे और वहां से पैदल शारियां पहुंचे। दो दिन वहां निवास किया फिर चौधरी जी ने तीन खच्चरों का इंतज़ाम किया। दो पर सामान, बिस्तरे व ख़ुराक लदवाया गया और एक बाबू जी की सवारी के लिए दिया। आपने दो साहबज़ादे और नौकर को साथ दिया और सरूपा जंगल को रवाना हुए। बाबू जी थोड़ी दूर ही

---

1. लोक 2. धर्मान्धता 3. मज़हब रहित 4. परिवर्तन 5. सच्ची 6. शांति
7. अपनाओ 8. श्रेष्ठ बुद्धि

ख़च्चर पर सवार होकर गए। एक जगह ख़च्चर झाड़ियों में घुस गया। बाबू जी की पगड़ी झाड़ियों में फंस गई। बाबू जी वहां से उतर पड़े और पैदल रवाना हो पड़े। शाम को यह काफ़िला सरूपा जंगल पहुंचा। कुटिया पर पहुंचे। हालत ख़राब सी थी। सफाई की गई। घास वग़ैरह उखाड़ा गया। छत भी ठीक की गई और सूखी घास जंगल से लाकर नीचे बिछाई गई। ऊपर छटींस बिछाई गई और कुटिया के सामने आग जला दी गई। चौधरी साहब के साहबज़ादों ने रोटी बनाई और खाकर बिस्तरों में लेट गए। एक मुसलमान लड़का भी आ गया। वह भी साथ ही सोया। दो-दो प्रेमी एक-एक बिस्तर में सोये। ऊपर लिहाफ़ और उनके ऊपर लोईयाँ थीं। कपड़े भी नहीं उतारे गए। बाहर आग जल रही थी फिर भी सर्दी लग रही थी। ख़च्चरों को एक दीवार के साथ कीलें गाढ़कर बांध दिया गया। रात के दो बजे थे। ख़च्चरें बेचैन हो रही थीं और नाक से फर-फर कर रही थीं। सबसे पहले बाबू जी जागे। आग को तेज किया गया। इतने में अन्य प्रेमी भी जाग उठे। एक ख़च्चर खुल गई थी, उसे पकड़कर बांधा गया। टार्च पास थी। जंगल में इसकी रोशनी डाली गई थी। ऐसा नज़र आता था जैसे अज़दाह[1] शायद मुंह खोले खड़ा है। अंधेरा ही अंधेरा नज़र आता था। दीगर प्रेमियों का विचार हुआ कि शायद रीछ है जिसकी वजह से ख़च्चरें डर रही हैं। नीचे देखा गया कि वहां के बाशिंदे अपने खेतों में मचान बनाये ऊपर बैठे चीखें मार रहे हैं, मचान के नीचे आग जल रही है। बतलाया गया कि अपनी फसल को रीछों से बचा रहे हैं। मक्की की फसल लगी हुई थी। कुटिया पर भी छोकरों ने चीखें मारीं, मगर जानवर नीचे की तरफ से चलता हुआ ऊपर की तरफ जाता हुआ मालूम हुआ। जिस तरफ वह जाता उस तरफ खच्चरें मुंह करके फर-फर करतीं। बतलाया गया कि चीता है। चीते की बू-खच्चरों को आ जाती है और बेचैन होती हैं। आधा घंटा चीता वहां रहा, खच्चरें बेचैन रहीं। जब वह चला गया तो शांत हुईं।

ऊपर लिखे हालात अर्ज़ करने का उद्देश्य यह था कि किस कदर ख़तरनाक यह जंगल था। दरिंदों से भरपूर था और सत्पुरुष यहां, भी रात को जंगल में आनंदित अवस्था में विराजमान रहते और जंगली दरिंदे भी निश्चिन्त हो जाते। जैसा पहले ज़िक्र आ चुका है, मटोर के प्रसंग में, सत्पुरुष के अंदर से उस आनन्दित अवस्था की करंट निकलती रहती थी जो आसपास असर डालती रहती थी।

58. छज्जियां निवासियों का सुधार

अभी आप सराये सालहा में ही थे कि छज्जियां नामक गांव से प्रेमी भगत दीवान चंद जी आपके दर्शनों के लिए आए। दर्शन करने के बाद आपने श्री महाराज से छज्जियां तशरीफ़ ले चलने की प्रार्थना की।

यह गांव पांच हज़ार फुट की बुलंदी पर स्थित है। सराये सालहा से लगभग तेरह मील के फ़ासले पर है। ऊपर जाने के लिए चढ़ाई बड़ी सीधी थी। उस जगह उन दिनों एक भेषधारी महात्मा

आये हुए थे, जिन्होंने खूब पाखंड फैलाया हुआ था। स्त्री, पुरुषों को अलहेदा-अलहेदा उपदेश देते। यानी स्त्री अगर कुछ सेवा में भेंट करे तो पति को पता न लगे। घरों में फूट पैदा कर दी थी और हर घर में लड़ाई-झगड़े शुरू हो गये थे। यह सब हालात भगत दीवान चंद ने अर्ज़ किये और बार-बार आपकी सेवा में छज्जियां पधारने की प्रार्थना की ताकि यहां के लोगों का सुधार हो सके। सत्पुरुष ने भक्त जी की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। सराये सालहा निवासियों ने 18 जुलाई, 1943 को विशाल सत्संग का प्रबन्ध किया और हज़ारों की संख्या में आस-पास की जनता ने सेवा में हाज़िर होकर सत् उपदेश का लाभ उठाया और प्रसाद पाकर वापिस गये।

21 जुलाई, 1943 को आप सराये सालहा से रवाना होकर छज्जियां तशरीफ़ ले गये और सत् उपदेशों द्वारा वहां की जनता को ही निहाल करना शुरू कर दिया। प्रेमियों को ज़िन्दगी के गुह्य राज़ों से आगाह किया और यह भी बतलाया कि उनके खोलने का तरीका किन हस्तियों से हासिल होता है। एक दिन एक प्रेमी ने पूछा:- क्या आपने असल और नकली गुरुओं की पहचान के वास्ते कोई प्रसंग लिखा है? इस पर आपने फरमाया:-

''प्रेमी! अभी तो नहीं, कल आपके सामने आ जावेगा।''

दूसरे दिन 28 जुलाई, 1943 मुताबिक 3 सावन, संवत् 2000 दोपहर के समय आपने अपने कर कमलों से गुरुपद सिद्धांत लिखकर संगत के सामने रख दिया, जिसे राय साहेब दीवान राम लाल जी ने, जो उन दिनों में अफ़सर माल लगे हुए थे, बड़ी दिलचस्पी से पढ़ा और शाम के सत्संग में सब प्रेमियों को पढ़कर सुनाया गया। इस सत्संग में कुछ भेषधारी गुरु के शिष्य भी थे। यद्यपि उन्होंने उसे पसंद तो न किया मगर सत्य होने के कारण इस पर कोई एतराज़ न कर सके।

59. कूरी में सत् उपदेश

छज्ज़ियां का प्रोग्राम पूरा करने के बाद आपने 26 अगस्त, 1943 को चलने का प्रोग्राम बना लिया और उस दिन वहां से चलकर सराये सालहा तशरीफ़ ले आये। रात वहां निवास किया और 27 अगस्त को वहां से चलकर आप रावलपिंडी पहुंचे और रात में बुज़ुर्ग भाई पंडित किशन चंद जी के गृह पर ठहरे। दूसरे दिन रावलपिंडी से चलकर कूरी तशरीफ़ ले गये।

इस जगह प्रेमी नंदलाल जी बिंद्रा के बुज़ुर्ग दादा साहब ने आपके निवास का प्रबन्ध एक हवेली में, जिसका दालान बड़ा खुला था, किया। इस जगह भी सत्संग का सिलसिला शुरू हो गया। एक दिन सत्संग में आपने निम्नलिखित अमृत वर्षा की:

सत् उपदेश अमृत

''हर एक जीव को तृष्णा रूपी रोग लगा हुआ है। तृष्णा की पूर्ति के लिए राजा, राना, रंक भिखारी सब ही दिन-रात लगे रहते हैं। बावज़ूद यत्न-प्रयत्न के यह रोग बढ़ता जाता है और सबको लाचार करता है। सत्वादी यानी सही समझ वाले जीव ही इस रोग को समझते हैं और समझ कर

इसका सही इलाज करते हैं। शहर वाले कहते हैं कि गांव वाले सुखी हैं। गांव वाले कहते हैं कि शहर वाले लोग बड़े आराम से ज़िन्दगी व्यतीत करते हैं। असल में उतराई और चढ़ाई दोनों ही दु:ख के रूप हैं। जितनी आशा तृष्णा बढ़ती जाती है उतना ही दु:ख बढ़ता जाता है। इस आस में कि आज सुख मिलेगा, कल मिलेगा, जीव यत्न प्रयत्न करके भोगों को भोगता जा रहा है। तृष्णा भी बढ़ती जा रही है। तृष्णा रूपी अग्नि में विषय भोग रूपी लकड़ियां जितनी डालते जाओगे उतनी ही यह आग बढ़ती जावेगी। इस तरह यह आग कभी भी शांत नहीं होगी। तृष्णा रूपी आग में पड़कर आज-तक कोई भी जीव सुख को प्राप्त नहीं हुआ। चाहे लाख वर्ष की आयु क्यों न प्राप्त हो जाये, जीव को आख़िरकार खाली हाथ ही इस संसार से जाना पड़ता है। आख़री समय कोई चीज़ सहायक नहीं होती। जितने भी सामान जीव दिन-रात एकत्र करता है जब इनको छोड़ने का समय आता है उस वियोग के समय जो उसे दु:ख प्राप्त होता है उसे वह ही जानता है। जो पैदा हुआ उसे मरना ज़रूरी है। यह निश्चय जिनको आ गया उन्होंने अपना रास्ता ठीक कर लिया। जो आख़री समय को भूल गये वह ही अंत समय पछताये। इस वास्ते नित ही सत् की खोज करो। ग़ौर करो मेरा संसार में आने का क्या प्रयोजन है? पूरों के पूर[1] आ रहे हैं, पूरों के पूर जा रहे हैं। यह सराये है जहां ठिकाना नहीं। आख़िर इस दुनिया को छोड़कर जाता है।

लिखया शाह चन चिराग़ ने दिवान को।
टूटेगी पींग जो चढ़ी आसमान को॥

रावलपिंडी में मकबरा शाह चन चिराग़ का आप सबको पता है। उस फ़कीर ने एक दफ़ा अपने मित्र को यह शब्द लिख कर दिया था कि यह रुक्का कश्मीर राजा के दीवान साहब के पास ले जाओ। उस रुक्का का मतलब था कि जो ऊंचा हुआ है वह ज़रूर गिरेगा। इसलिए प्रभु ने जो कुछ तुम्हें धन-दौलत वग़ैरह बख़्शी है उसमें मस्त न हो जाओ बल्कि दीन, दु:खी, अनाथ की सेवा में ख़र्च करो। न यह बाग़, बहार, शान व शौकत रहेगी न तुम रहोगे। जीवन रूपी नदी बह रही है, इससे फ़ायदा उठा लो। यह सब शान-बान हमेशा रहने वाली नहीं। सब कुछ होते हुए मालिक की याद करो और माल धन को ग़रीबों की सेवा में लगाओ। यही परम लाभ जीवन का है। जब वज़ीर ने इस रुक्के को पढ़ा तो सारा माल व ज़र[2] जो उसके पास था वह उस रुक्के[3] लाने वाले को दे दिया और आप जंगल में जाकर तपस्या करने लगा। बाकी सारी ज़िंदगी रब की याद में गुज़ार दी। ऐसे बुद्धिमान लोगों ने समझा कि जब यह सब कुछ एक दिन छोड़ ही जाना है तब छोड़ने से पहले क्यों न खुद ही सब कुछ छोड़ दिया जाये?

प्रेमियों! तुम लोग सादा तो हो ही, बोल-तोल सत्य रखते हो। सादा ख़ुराक इस्तेमाल करते हुए सत्संग सिमरण में भी समय दिया करो। इसी में सबकी कल्याण है। सत्संग द्वारा ही निर्णय प्राप्त होता है। ईश्वर सबको सत् बुद्धि देवें।''

---

1. जत्थे के जत्थे 2. रुपया 3. प्रजा

सत्संग की समाप्ति पर आपने फरमाया:- ''प्रेमियों! कुछ विचार करो।'' ये वचन सुनते ही दो प्रेमियों ने बारी-बारी से प्रश्न पूछे। एक ने पित्रों के श्राद्ध करने के बारे में पूछा, दूसरे ने भूत-प्रेत के बारे में। आपने साधारण शब्दों में फरमाया:

''प्रेमी! श्राद्ध करना तो बड़ा पुण्य नहीं बल्कि बुज़ुर्गों की याद मनाने का एक तरीका है। आप रोज़ाना ही उनकी याद दिल में रखें। हर वक्त ग़रीबों की अन्न पानी से सेवा श्रद्धापूर्वक करने में कोई हर्ज़ नहीं। बाकी भूत-प्रेत लोगों की कहानियां ही समझें। पंच भूत यानि तत्त्वों के बग़ैर किसी का शरीर आज तक नहीं बना। यह एक किस्म की डिग्री है। अच्छे कर्म करने वाले को देवता कहा जाता है। ख़राब कर्म करने वाले को भूत-प्रेत, चंडाल के नाम से पुकारा जाता है। यह फ़कीर भी कई वर्षों से भयानक जंगलों, बियाबानों, शमशानों में समय काटते आये हैं। दरअसल अपने मन के खोटे संकल्प ही जीव के वास्ते हैरानी व परेशानी का बाइस (कारण) बनते चले जाते हैं। तुम्हें तो सिर्फ़ अपनी उन्नति का विचार करना ही ज़रूरी है। ऐसे वहमों में बिल्कुल चित्त नहीं लगाना चाहिए।

इस जगह निवास के दौरान सत्संग में सरदार दयाल सिंह और प्रेमी नंदलाल जी बिंद्रा के बुज़ुर्ग दादा साहब शामिल होते । दोनों साहब ज़रा ऊँचा सुनते थे। वह बहुत करीब बैठते थे। सत्संग ख़त्म होने के बाद जब प्रेमी चले जाते थे तो सरदार दयाल सिंह जी बैठे रहते। प्रार्थना करते:- महाराज जी! आप समर्थ हैं सिर पर हाथ रखकर पार उतारने की कृपा करें। रोज़ाना उनकी यह प्रार्थना होती। सात-आठ दिन यह सिलसिला चलता रहा। सत्पुरुष या तो हँस देते या ख़ामोश रहते और कोई उत्तर नहीं देते। प्रेमी ने ख़्याल किया कि शायद उसकी प्रार्थना का असर हो रहा है। आख़िर उसने गणिका, अजामिल, गज इत्यादि की मिसाल देकर अर्ज़ की:- महाराज जी! कैसे भगवान ने कृपा करके उनका उद्धार कर दिया। उस पर आपने फरमाया:- ''प्रेमी! गणिका के हालात पता हैं कैसे उसने भगवान की कृपा को प्राप्त किया है? गणिका वैश्या थी, पेशा करवाया करती थी। उन दिनों में लोग तीर्थ यात्रा पर काफ़िले बनाकर जाया करते थे। सड़क उसके मकान के पास से गुज़रती थी। एक दिन एक काफ़िला उसके मकान के पास से गुज़र रहा था। वह अपने मकान में बैठी हुई सड़क पर निग़ाह डाले ग्राहक का इंतज़ार कर रही थी। एक राह गुज़र से पूछा:- ''यह लोग किधर जा रहे हैं?'' उसने जवाब दिया:- ''ये काफ़िला तीर्थ यात्रा के लिए जा रहा है।'' उसने फिर पूछा:- ''इसका क्या लाभ होता है?'' उस शख़्स (व्यक्ति) ने जवाब दिया:- तीर्थों पर जाकर स्नान वग़ैरह करने से पाप धुल जाते हैं। ऐसा सुनकर उसे ख़्याल आया कि उसने बड़े पाप किये हैं, क्यों न वह अपने पाप धो ले? ऐसा ख़्याल आते ही उठकर वह भी उस काफ़िले के साथ हो ली। बाकी काफ़िले वाले तो सामान, ख़ुराक व बिस्तरे साथ लिए जा रहे थे, उसने कुछ नहीं लिया। जहां रात पड़ती ज़मीन पर ही सो जाती। किसी ने दे दिया तो खा लिया वर्ना भूखी ही सो जाती। काफ़िले वाले रहम करके कभी-कभी रोटी खाने को दे देते। चलते-चलते रास्ते में रेगिस्तान आ गया। दूर-दूर तक पानी नहीं था। काफ़ी दिनों के बाद एक कुआं दिखाई दिया। लोगों

ने बर्तनों से, जिनको रस्सियां बांधी हुई थीं, पानी निकाल कर पिया और बर्तन भरकर चल दिये। गणिका ने देखा एक कुत्तिया मय तीन बच्चों के पानी की प्यास से लाचार हो रही है। उसे बड़ा रहम आया और कुछ काफ़िले वालों से प्रार्थना की:- गड़वी और रस्सी वग़ैरह देवें ताकि वह पानी निकाल कर कुत्तिया और बच्चों को पिलावे, मगर सबने इंकार किया और कहा:- काफ़ी सफ़र करना है वक्त ज़ाया (व्यर्थ) होता है और उसको गड़वी देने से इंकार कर देते हैं और चले जाते हैं। गणिका की यह हालत थी कि उस कुत्तिया और बच्चों की प्यास की वज़ह से कष्ट को सहन न कर सकी। अपने ऊपर से दुपट्टा उतार कर कुएं में लटकाया। मगर पानी बहुत गहरा था। वह कहां पहुंच सकता था। उसे फाड़कर टुकड़े करके बांधे। मगर वह भी पानी तक न पहुंच सके। फिर कमीज़ उतारी उसे भी फाड़ कर टुकड़े करके बांधा, फिर भी पानी तक कपड़ा न पहुंच सका। फिर सलवार भी उतारकर फाड़कर बांधी। अपने नग्न होने की भी सुध नहीं थी। तब कपड़ा पानी तक पहुंचा, उसे निकाला और पानी को निचोड़ा। मगर नीचे रेत थी। पानी उसमें जज़्ब हो गया। कुत्तिया और बच्चे न पी सके। फिर ऐसे तरीके से बैठी की लात को जोड़कर घुटने के साथ जगह बनाई। पानी निकाल कर उसमें निचोड़ कर डालती और कुत्तिया और बच्चों को पानी पिलाती। ऐसी मानसिक अवस्था और एकाग्रता की वज़ह से प्रभु की कृपा हो गई और उसका उद्धार हो गया। प्रेमी! उसकी कृपा को प्राप्त करना कोई आसान काम नहीं। अगर फकीर सिर पर हाथ रखकर कुछ दे भी देवें तो संभाला ही नहीं जायेगा।'

इस बीच बाबू अमोलक राम जी सरूपा जंगल से होकर चिनारी, डोमेल, कोहाला, जलमादा ठहरते हुए वापिस काला गुजरां आ गये थे और श्री चरणों में जाने का प्रोग्राम बना रहे थे कि लाहौर से उनके परम मित्र लाला बख़्शी राम जी, रीडर हाईकोर्ट, का पत्र पहुंचा कि उन्हें श्री महाराज जी के चरणों में ले चलो। दरअसल जो-जो पुस्तकें या ग्रन्थ छप चुके थे वह सब बाबू जी ने उन्हें पहुंचाये हुए थे और जैसा लाला बख़्शी राम जी ने बतलाया- स्वत: कुछ ऐसी कशिश उनके अंदर हुई कि चलकर सत्पुरुष के दर्शन करें। इस कशिश की वज़ह से उन्होंने बाबू जी को पत्र लिखा था जिस पर बाबू जी ने जाने का प्रोग्राम बना लिया था।

उन्होंने जवाब में लिखा कि मैं जा रहा हूँ, आप भी जावें। तीसरे दिन लाला बख़्शी राम जी काला गुजरां पहुंच गए और दो दिन काला ठहरकर बाबू जी के साथ रवाना हो लिए। काला गुजरां से चलकर रावलपिंडी पहुंचे और रावलपिंडी से तांगा द्वारा दोनों कूरी पहुंचे और श्री चरणों में हाज़िर हो गए। प्रेमी बख़्शी राम जी सत्संग की अमृत वर्षा का लाभ उठाते रहे लेकिन सत्पुरुष के जीवन को देखकर कि वह सिर्फ़ एक वक्त थोड़ी सी चाय इस्तेमाल करते हैं और सारा दिन बिना कुछ और वस्तु इस्तेमाल किए बैठे रहते हैं और रात को बाहर चले जाते हैं, यह जीवन उनके लिए हैरानी और संशय का कारण बना। उनके अंदर ख़्याल पैदा हुआ कि शायद रात को बाहर जंगल में जाकर यह कुछ अन्न वग़ैरह इस्तेमाल करते हैं। सत्पुरुष जब रात को नौ-दस बजे जाते तो सब प्रेमियों को सोने की आज्ञा देते और थोड़ी देर वहां बैठते। जब प्रेमी सो जाते तो उठकर बाहर

तशरीफ़ ले जाते। तमाम रात बाहर रहते और सुबह दिन निकलने के बाद वापिस तशरीफ़ ले आते। जिस दिन लाला बख़्शी राम जी के अंदर शक खड़ा हो गया उस रात जब सत्पुरुष ने सबको सोने की आज्ञा दी और सब लेट गए तो लाला बख़्शी राम जी भी लेट गए। बाकी सब तो सो गए मगर लाला बख़्शी राम जी लेटे तो रहे मगर जागते रहे। जब श्री महाराज जी उठकर बाहर जाने के लिए रवाना हुए तो प्रेमी बख़्शी राम जी भी उठकर पीछे-पीछे हो लिए। आप गांव से बाहर निकल कर काफ़ी फ़ासले पर बरसाती नदी के किनारे सरकंडा की झाड़ में आनंदित अवस्था में बैठ गए। कुछ फ़ासले पर लाला बख़्शी राम जी भी बैठ गए और इंतज़ार करने लगे कि कब वह कुछ चीज़ ग्रहण करते हैं। सारी रात श्री महाराज जी अपनी समाधि अवस्था में मग्न रहे और तमाम रात लाला बख़्शी राम जी ने भी पहरा देते हुए गुज़ार दी। सुबह जब दिन निकल आया तो लाला बख़्शी राम जी श्री महाराज जी से कुछ पहले ही उठकर गांव में वापिस आ गए। थोड़ी देर के बाद श्री महाराज जी भी वापिस तशरीफ़ ले आए। जब सत्पुरुष चाय इस्तेमाल कर चुके तो लाला जी ने चरणों में सत्मार्ग पर लगाने की प्रार्थना की और चरणों में शीश भेंट कर दिया। निम्नलिखित हालात उन्होंने बाद में बतलाए।

एक दिन कुछ बुज़ुर्ग प्रेमी आपके चरणों में बैठे थे कि आपने उनसे प्रश्न किया:- ''बुज़ुर्गो! आपने संसार में क्या देखा है?''

एक बुज़ुर्ग प्रेमी ने उत्तर दिया:- ''महाराज जी! हमारा ज़माना बड़ा ही सच्चाई-सफ़ाई का था। अब सच्चाई तो नाम लेने को ही रह गई है। जो बातें आज के बच्चे जानते हैं यह हमें अभी तक भी मालूम नहीं। चतुराई, फ़ैशन परस्ती को जो ज़्यादा अपनाने वाले हैं वह ही प्रधान हैं। न वह ख़ुराकें रही हैं न वह लिबास, बोल-चाल भी वैसा नहीं रहा। अब भी इस उम्र में पैदल चलकर रावलपिंडी शहर तक पहुंच जाते हैं और वापिस भी आ सकते हैं। बीस वर्ष के जवान एक मील चलकर थक जाते हैं। जिस सादगी के वास्ते आप फ़रमाते हैं, वह खाने की, बोलने की, पहनने की कुदरती सादगी थी। सत्य बोलना, सत्संग, सत् सिमरण सब ही थे। आजकल ही आग लगती जा रही है, हमारे मोहल्ले में तो अब भी कोई स्त्री नंगे सिर नहीं गुज़र सकती। आपके उपदेश से कुछ फ़र्क पड़ जाये तो कह नहीं सकते, लेकिन आम सिलसिला बिगड़ा हुआ है। यह सब सुनकर आपने फरमाया:-

''यह सब सिनेमा की कृपा है। शहरों से गांव में ऐसे विचार आ जाते हैं।''

60. शुभ स्थान गंगोठियां सम्मेलन के लिए रवानगी

श्री महाराज जी कूरी से 15 सितम्बर, 1943 को सम्मेलन यज्ञ के इंतज़ाम के लिए रवाना हो पड़े। कूरी निवासी प्रेमी सेवा में अर्ज़ करते रहे कि आप कुछ दिन और ठहरकर अमृत वर्षा से लाभ पहुंचावें। मगर आपने सम्मेलन की ख़ातिर प्रोग्राम में तबदीली नहीं की और वहां से चलकर रावलपिंडी पहुंच गए। दो दिन रावलपिंडी की संगत की प्रार्थना पर उन्हें सत्संग द्वारा लाभ

पहुंचाया। इस जगह सैयद रिंद शाह दरवेश भी सेवा में हाज़िर हुए और अर्ज़ की:- ''महाराज! दिल की तख़्ती पर जो हरफ़ (शब्द) लिखा जाता है, चाहे अच्छा है या बुरा, वह किस तरह साफ़ हो सकता है? हमने बड़े-बड़े उपद्रव किये हैं, वह किसी वक्त बड़ी बेचैनी का कारण होते हैं।''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! दिल की तख़्ती खुदा की बंदगी के बग़ैर साफ़ होनी बड़ी मुश्किल है। जो भी अच्छा व बुरा कर्म हो गया उसका इवज़ाना (फल) दु:ख या सुख ज़रूर मिलेगा। चाहे वह खाकी वज़ूद (शरीर) में मिले या किसी और वज़ूद में।''

यह जवाब सुनकर दरवेश साहब ने अर्ज़ की:- ''मौलाना रूम ने लिखा है कि मैं कई दफ़ा घास हुआ, पत्ते बना, चरिंद-परिंद और कई किस्म के जिस्म मिले, अब आकर असल में मिला हूं। दिल की तख़्ती साफ हो गई है, अब न मौत का डर, न अच्छे कर्म से लगाव, न बुरे कर्म से नफ़रत। उसकी रज़ा में रहकर खुश हूं। आब[1], ख़ाक[2], बाद[3], आतिश[4] सब में मेरा ज़हूर[5] है।''

इस पर आपने फरमाया:

''हां, यही आख़िरी मंज़िल है जिस पर पहुंचने का पैग़ाम दिया गया है। जो कोशिश करेगा वही मौलाना रूम बन सकता है। जितने ख़राब कर्म किये हैं उससे दुगने अच्छे कर्म करो। जिस खुदा के बन्दों को दु:ख दिया है अब उस ख़लकत (जीव जगत) की ख़िदमत करो। सही तरीके से दूसरों के दु:खों को दूर करने वाले पीर बनो।''

दो दिन रावलपिंडी निवास करके 18 सितम्बर को आप शुभ स्थान तशरीफ़ ले आए। इस जगह से आपने एक प्रेमी को पत्र लिखा जिसे नीचे दिया जाता है।

61. पत्र

पत्रिका में जो हालात लिखे हैं उस नुक्ते की तलाश हक है। कामिल उस्ताद की रहनुमाई से कामयाबी होती है। जिस तरह दूध में घृत मौज़ूद है, मगर यथार्थ यत्न से हासिल होता है, इस तरह इस वज़ूद में वह लाज़वाल[6] ताकत मौज़ूद है, सही कोशिश करने से हासिल होते हैं। कभी दर्शन हुए और यकीन कामिल हुआ तो हालते ग़ैबी[7] समझा दिया जायेगा। पत्रिका द्वारा ऐसे हालात लिखे नहीं जाते। यह तालीम कामिल उस्ताद की ख़िदमत से हासिल होती है। किताबों के मुतालह (अध्ययन) से सही पता नहीं लगता। ऐसा विचार कर लेवें। जिसने अपने सत्सरूप को अनुभव कर लिया उसकी सभी कमज़ोरियां रफ़ा (दूर) हो गईं, यानी अपने आप आनन्द सरूप हो गया। वही जगह इंतहाई कयाम (अंतिम स्थिति) है। हर कोशिश से उस तरफ़ राग़ब (लगाव) होना चाहिये। जितना भी लाभ हो जाये वही मानुष ज़िंदगी का सही फल है।

---

1. पानी 2. मिट्टी 3. हवा 4. आग 5. प्रकाश 6. नष्ट न होने वाली 7. ईश्वरीय

62. दूसरा पत्र

अज्ञान या माया और उससे छुटकारा

जितना भी सिलसिला चल रहा है, संकल्प-विकल्प या पाप-पुण्य वग़ैरह, यह सब अज्ञान का सरूप है। अपनी फ़ायलियत (कर्तापन) ही माया है। फ़ायलियत की तीन हालतें हैं आग़ाज़[1], दरम्यानी (बीच की) और इख़तताम (आख़िरी)। पहली हालत में इल्म और ज्ञान हर एक चीज़ का हासिल होता है। दूसरी हालत में ख़्वाहिश और कोशिश पैदा होती है। तीसरी हालत में भोग से राग-द्वेष पैदा होता है। यानी सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण इन्हीं गुणों में बुद्धि फिरती रहती है। पहले एक चीज़ पर तसव्वर पैदा होता है। फिर उसके प्राप्त करने की ख़्वाहिश होती है। फिर प्राप्त करके दुःख-सुख महसूस करता है। किसी वक्त भी इस तसलसुल[2] से बुद्धि आज़ाद नहीं होती। जीव का अज्ञान में आ जाना यानी फ़ायलियत को धारण करना यह ला-सबब[3] मसला है कि कैसे और क्यों? क्योंकि फ़ायलियत का सरूप तहलील[4] होने के बाद एक मसरूर[5] हालत मनव्वर[6] बाकी रह जाती है। वह ही ब्रह्म स्वरुप है, ईश्वर कोई गर्ज़ या खुशामद नहीं चाहता। यह सिर्फ़ जीव का अपना अज्ञान है। फ़ायलियत की हालत में सब तबदीली, बड़ाई या भलाई, फ़ना (मृत्यु) या पैदाईश का सरूप देखता है।, इस फ़ायलियत से मुबर्रा (मुक्त) होना ही ईश्वर प्राप्ति और आनंद है। जब-तक फ़ायलियत में गिरफ़्तार है तब-तक फ़ेल (कर्म) की बुरी या भली हालत को महसूस करता है। दुःखी और सुखी होता है। जिस वक्त इस माया के अंधकार से मुख़लसी (मुक्ति) हासिल करता है यानी ग़ैर फ़ायलियत हालत को प्राप्त होता है। बंधन में ही मोक्ष दिखाई देता है, जब बंधन से आज़ाद हो गया तब मोक्ष का भी भेद नहीं पाया यानी खुद पूर्ण हो गया। यह मसला बड़ा दकीक[7] है। जब-तक खुदशनासी[8] न कर लेवे तब-तक इस अज़ाब का पता नहीं लगता। ग़ैर फ़ायलियत ही असली आनंद और प्रकाश है। हर वक्त वज़ूद (शरीर) के अंदर चमक रहा है। मगर ख़ुदी (अहं) की कैद में आकर कर्म के चक्कर में फिरता रहता है और दुःख व सुख महसूस करता रहता है। जब-तक फ़ायलियत से खुलासी हासिल न करे कभी भी फ़ेल की कैद से छूट नहीं सकता। इसके वास्ते अभ्यास के सही तरीके की ज़रूरत है जिसके ज़रिये मन को एक शुग़ल[9] में लगाकर उस मेराज़ (मंज़िल) को हासिल कर लेवे। इस फ़ायलियत यानी अज्ञान का सरूप वास्तव में कोई नहीं। मगर ज़ाहरी (बाहर) बड़ा विस्तार है और इसके पैदा होने का सबब (कारण) भी कोई नहीं है। मगर नाश करने का बड़ा यत्न है। चूंकि पहले भी मौज़ूद नहीं है और आख़िर कोशिश से नाश भी हो जाता है इस वास्ते इस जाल को ज्ञानियों ने भ्रम ही तसव्वर[10] किया है। खुदी की कैद में संसार है, बेखुदी ही राहते अबदी[11] है। इस वास्ते हर वक्त सही तरीके से अपनी रूह का इलाज करो तब ही खुशी होवेगी। अच्छी तरह विचार कर लेवें। जब अमली ज़िंदगी हासिल होती है तब सब राज़ इस वज़ूद के अंदर पा लेता है। सबसे ज़्यादा कोशिश प्रैक्टीकल जीवन की करो।

---

1. प्रारम्भ 2. चक्र 3. बिना कारण 4. घुल जाना 5. मस्ती 6. रोशन 7. गहरा
8. आत्म अनुभव 9. अभ्यास 10. समझना 11. हमेशा की खुशी, अखंड शांति

63. तीसरा पत्र

मसला रज़ा या ईश्वर परायणता

शरीर मिथ्या कर्म का झंझट है जिसमें जीव मोहित होकर दुःखी रहता है। जब आत्म निश्चय दृढ़ हो जाता है और अभ्यास में प्रत्यक्ष अपने अंतर आत्म धुन को अनुभव करता है और तमाम शरीर के कर्म आत्म समर्पण करता है उस वक्त जीव की सब कल्पना भेद नाश हो जाती है और शरीर के विकारों से छूटकर बुद्धि आत्म स्थिति में लीन हो जाती है। सही कोशिश और सही अमल की ज़रूरत है। जो कुछ भी मन, शरीर से होवे वह ईश्वर की आज्ञा में देखना चाहिये। दुःख और सुख को बर्दाश्त (सहन) करना चाहिये। इस भावना से असली संतोष प्राप्त होता है जो परम आनन्द सरूप है। हर वक्त आत्मा के आधार शरीर को देखना चाहिये। तमाम शरीर की कान्ति उस परम शक्ति में देखनी चाहिये। वह ही ताकत सब में प्रकाश कर रही है। ऐसा निश्चय धारण करने से शरीर का मद नाश हो जाता है और आज़ज़ी प्रकट होती है, जो परम सुख है। हर वक्त ईश्वर सत् विश्वास देवे।

बाबू अमोलक राम जी भी आपके आने की सूचना पाकर सम्मेलन की व्यवस्था हेतु सेवा में हाज़िर हो गए थे। एक दिन बाबू जी ने पूछा:

बाबू जी:- ''क्या वेदांत लोगों को अपाहिज़[1] बनाता है?''

श्री महाराज जी:- ''वेदांत लोगों को अपाहिज़ नहीं बनाता बल्कि शुजाअत[2] दिलेरी और पर उपकार सिखलाता है। जो बातूनी वेदांती हैं वह वाकई दुःखदाई हैं। इसका विचार कर लेवें कि वेदांत के फ़िलास्फ़र ही दुनिया के उस्ताद हुए हैं और हर तरीके ज़िंदगी लोगों को सिखलाया है। मूर्ख लोग हैं जो बे-अमल होकर सिर्फ़ बातें बनाते हैं। जब-तक बुलंद ख़्याली न आवे तब-तक कोई काम भी सर अंजाम नहीं हो सकता है। वेदांत के कई पहलू हैं। आख़िरी अवस्था किसी खुशनसीब को ही हासिल होती है। भक्ति, निष्काम कर्म और नेहचलता ज्ञान ही हालते हैं। जो करनी वाले हैं उनको हासिल होती हैं। जो वेदांत को अपाहिज़ करते हैं उनको वेदांत का पता ही नहीं है और जो कथनी वेदांती हैं वे न दीन के, न दुनिया के, वह पाखंडी हैं, वह तबाही का वायस (कारण) हैं। वेदांत का भेद किसी को होता है। वेदांत का अंग भक्ति है और भक्ति का अंग निष्काम कर्म है। निष्काम कर्म विचार से पैदा होता है, ये सब पहलू मिले-जुले हैं। इस वास्ते सब औसाफ़[3] हासिल होने से वेदांत की असलियत को समझ सकता है।''

प्रश्न- ''अगर हर एक मुक्ति की तलाश में लग जाये तो दुनिया का कारोबार कैसे चले?''

उत्तर- ''मुक्ति की चाहना न हर एक कर सकता है और न किसी को ज़रूरत है। किसी महापुरुष को ही मुक्ति की चाहना होती है और सही कोशिश करता है और कोई ही हासिल कर

---

1. पंगु 2. बहादुरी 3. गुण

सकता है। बाकी तमाम नुमाईश है। दिल में और है और ज़ुबान से और कहते हैं। यह दुनिया दो-रंगी है। जब-तक ख़्वाहिशात नफ़सानी (इन्द्रिय भोग) का ग़ुलाम है तब-तक मुक्ति बहुत दूर है। हालते बेख़्वाहिशी को मुक्ति कहते हैं। कोई ही हासिल कर सकता है। कायर लोग ज़बानी वाद-विवाद में वक्त गंवाते हैं। हासिल कुछ नहीं कर सकते। सही तरज़े- ज़िंदगी को इख़्तियार (अपनाना) करना ही मुक्ति की शाहराह (सही मार्ग) है। इसके बग़ैर सब ज़हालत (मूर्खता) है।''

प्रश्न- ''क्या आख़री वक्त यानी बवक्त मौत ईश्वर का नाम लिया जावे तो मुक्ति हासिल हो सकती है? एक दफ़ा एक शख़्स अजामल के पास एक साधु आया। उसने उसकी मेहमान नवाज़ी की। साधु ने उसको सलाह दी कि अपने बेटे का नाम नारायण रखे। उसकी राय के अनुसार उसने अपने बेटे का नाम नारायण रखा। जब उसका वक्त नज़दीक आया उसने नारायण को बुलाया। उसके बाद वह मर गया। यमदूत उसको लेने के वास्ते आए। दूसरी तरफ़ से भगवान ने विमान उसको लेने के वास्ते भेजा। दोनों का आपस में झगड़ा हो गया। विमान उठाने वाले ने यमदूतों को मारा। यमदूतों ने यमराज के पास शिकायत की-कि उनको भगवान के दूतों ने मारा है और उनको उस शख़्स को लाने नहीं दिया। यमराज ने कहा कि- वह मुक्त हो चुका है क्योंकि उसने आख़िरी वक्त नारायण का नाम लिया है।''

उत्तर - ''यह दुनियावी कहानियां हैं। ईश्वर के स्वरूप में मिलाप होना मुक्ति है। बाकी ईश्वर नाम का अंलकार है, जितना किसी ने कहा। रोचक बातें दुनिया को पसंद आती हैं। यथार्थ बात कोई ही जान सकता है। ठीक ईश्वर के नाम से मुक्ति मिलती है। बग़ैर सही तसल्ली के उसका नाम भी नहीं लिया जा सकता। सही तसल्ली के बग़ैर विचार नहीं हो सकता है। वह मूर्ख लोग हैं जो यह कहते हैं कि आख़िरत में नाम लिया जावे तब ही भला हो सकता है। आख़िरत (अन्त समय) में नाम लेना अच्छा है, आईंदा की जिंदगी अच्छी होती है। मगर कर्मों से निज़ात नहीं हो सकती है जब-तक कि आत्म दर्शन न कर लेवे। सब दुनिया ही ज़हालत में है जब-तक कि आत्म निश्चय न होवे। इस वास्ते बहुत बातों को छोड़कर अपनी बुद्धि को आत्मा में लगाना चाहिए। इसमें कल्याण है।''

64. सत्संग सम्मेलन का संक्षिप्त वर्णन

श्री महाराज जी के शुभ स्थान पहुंचने पर सम्मेलन के लिए सामान जमा होना शुरू हुआ। युद्ध के कारण चीनी, तेल वग़ैरह पर पाबंदी लगी हुई थी और परमिट के ज़रिये यह चीज़ें मिलती थीं। बाबू अमोलक राम जी कहूटा जाकर दोनों के लिए तहसीलदार साहब से परमिट ले आए और कल्लर से जाकर उन्हें लाया गया। दालें वग़ैरह सागरी से खरीदी गईं और ऊँटों पर लदवाकर लाई गईं। इस दफ़ा घी पर भी पाबंदी लग गई। रियासत कश्मीर से उसका निकलना बंद हो गया था। डोमेल निवासी प्रेमियों ने घी वहां से खरीद कर नीचे दरिया के किनारे पहुंचा कर और लकड़ियों के

टले[1] पर रखवाकर दरिया से पार पहुंचाया। यह ज़िला हज़ारा का क्षेत्र था। ख़च्चरों का प्रबन्ध किया हुआ था। ख़च्चरों पर लदवाकर कोहाला पहुंचाया। कोहाला भी कस्टम वालों की बड़ी कड़ी निगरानी थी। यहां से बड़ी सावधानी से ट्रक द्वारा रावलपिंडी पहुंचाया गया और रावलपिंडी से शुभ स्थान पर पहुंचाया। दस-बारह पीपे घी सम्मेलन पर इस्तेमाल होना था। सामान, दरियां, शामियाने वग़ैरह बाबू जी जाकर रावलपिंडी से लाये। बड़े-बड़े बर्तन भी इस दफ़ा खरीदे गये थे।

प्रेमी 16 अक्तूबर, 1943 से जमा होने शुरू हो गए। 20 अक्तूबर को प्रेमियों ने मीटिंग की और इसके बाद 9 बजे कार्यवाही शुरू की गई। सबसे पहले महामंत्र व मंगलाचरण सबने मिलकर उच्चारण किये। इसके बाद प्रेमी राम किशन जी चिनारी निवासी ने, जो सेक्रेटरी थे, गुज़रे साल की कार्यवाही पढ़कर सुनाई। इसके बाद नये साल का चुनाव हुआ जिसमें सर्वसम्मति से प्रेमी बख़्शी राम जी, रिटायर्ड रीडर हाई कोर्ट लाहौर, को प्रधान बनाया गया। राय साहब लाला राम लाल जी आनन्द, रिटायर्ड रेवीन्यू मिनिस्टर अलवर स्टेट, उपप्रधान, बाबू अमोलक राम जी सेक्रेटरी व लाला राम किशन जी चिनारी निवासी जायेंट सेक्रेटरी व लाला फ़कीर चंद जी महाजन दोरांगला निवासी खजांची चुने गए। इसके बाद सत्संग किया गया जिसमें प्रेमी रतन चंद जी महाजन दोरांगला निवासी व प्रेमी दौलत राम जी महाजन दोरांगला निवासी व लाला हीरानंद जी आनन्द रावलपिंडी निवासी, राय साहब लाला राम लाल जी आनन्द व लाला बख़्शी राम जी कपूर, महंत रतन दास जी अहमदाबाद गुजरात निवासी ने अपने-अपने विचार संगत के सामने रखे और आरती व समता मंगल उच्चारण करने के बाद सत्संग समाप्त हुआ और प्रसाद बांटा गया।

चूंकि रात को लंगर का सामान तैयार होना था इसलिए प्रेमियों के भोजन का प्रबन्ध दूसरी जगह कर दिया गया। एक तरफ यज्ञ का सामान तैयार हो रहा था और दूसरी तरफ संगत का भोजन तैयार किया जा रहा था। जब वह भोजन तैयार हो गया तो संगत को भोजन उसी तरफ खिलाया गया। बारह बजे रात तक संगत के प्रेमी आते रहे और उन्हें भोजन खिलाया जाता रहा। इस जगह पानी की समस्या थी। पानी नीचे नदी से लाना पड़ता था। भूरियां निवासी प्रेमी आसपास के प्रेमियों के साथ नदी से बड़े-बड़े डोल या ड्रम भरकर सिरों पर उठाकर काफी चढ़ाई चढ़कर ऊपर लाते। इनको तमाम रात यह सेवा करनी पड़ती। सेवादार प्रेमी अपने-अपने काम में बड़ी तल्लीनता से लगे हुए नज़र आते थे। इस जगह आठ पूर[2] हलवे के बनते थे। बीस सेर सूजी एक वक्त डाली जाती थी। प्रसाद तैयार करने वाले प्रसाद तैयार कर रहे थे। दालें तैयार करने वाले दालें तैयार कर रहे थे। रोटियां पकाने वाले रोटियां पका रहे थे। आटा गूंधने वाले आटा गूंध रहे थे और सामान तोलकर देने वाले यह सेवा कर रहे थे। रात-रात सेवादारों ने सारा सामान तैयार कर दिया और अंदर रख दिया।

---

1. लकड़ी की चपटी नाव 2. घान

दूसरे दिन 21 अक्तूबर को सत्संग सम्मेलन की कार्यवाही पंडाल में, जो खुली जगह लगाया गया था, शुरू हुई। 9 बजे महामंत्र व मंगलाचरण संगत ने मिलकर उच्चारण किये। सम्मेलन में मौलवी अब्दुलवाहद लोधी सराये सालह निवासी को भी शामिल होने के लिए पत्र लिखा गया था उसने ग़ैर हाज़िरी के लिए निम्नलिखित कविता लिखकर भेजी जो सबसे पहले पढ़कर सुनाई गई।

सराये सालह
14.10.1943

श्री सत्गुरु देव जी,

निकल जाता है पहलू से, उस मंज़िल पे दिल अपना।
कि जिस मंज़िल का हर ज़र्रा, सआदत का आइना है॥
उंमगों की हज़ूरी में हो रहा है, शौक दामनगीर।
हज़ारों जलवे देखेंगे, इल्म ग्र अपना जीना है॥
यह कहना बायकीन जायें, वह साहिल आंखें देखेंगी।
हां अशकों के समुंद में, सर अज़्म अपना सफीना है॥
तज़ावीज़ें तो लाखों हैं, मगर तकदीर ग़ालिब है।
हर एक हरकत का लेकिन वक्त, मुकर्रर है मईना है॥
जनों परवर व दिमागों को, मसायब से भला क्या काम।
मुझे आने पर देखोगे, न चक्कर न पसीना है॥
कभी खामोश आयेगा, वह दिन मुर्शिद को पायेंगे।
वफा दर्द मंदी का, के मरकज़ जिनका सीना है॥

सबसे पहले प्रेमी नंद लाल जी रावलपिंडी निवासी ने मीठे स्वर से वाणी पढ़ी। उसके बाद कुछ प्रेमियों ने, जिनमें दोरांगला निवासी प्रेमी लाला बख़्शी राम जी वग़ैरह भी थे, अपने-अपने विचार संगत के सामने रखे। बारह बजे सत्पुरुष तशरीफ़ लाये और आकर संगत में ही भूमि पर बैठ गए। संगत के प्रेमियों ने इस कृपालुता को देखकर कि कितनी महानता संगत को दी और एक विनम्रता का आदर्श पेश किया, सेवा में प्रार्थना की-कि आप आसन पर, जो आपके लिए लगाया गया था, विराजमान हों। संगत के ज़ोर देने पर आप आसन पर विराजमान हुए और निम्नलिखित सत् उपदेश की अमृत वर्षा की।

सत् उपदेश अमृत

वास्तव में यह संसार जो है उसका विचार करना है कि यह है क्या, कहां से इसका प्रारंभ होता है और कहां नाश हो जाता है? जैसे बादल प्रगट होकर आकाश पर छा जाते हैं और समय पर नाश भी हो जाते हैं इसी तरह यह संसार चक्र है। यह हर वक्त कई सूरतें धारण करता रहता है।

इस संसार में हर एक जीव अपनी आदत का ग़ुलाम है। आदत को ही स्वभाव कहा जाता है। स्वभाव क्या चीज़ है? जो कर्म जीव दिन-रात करता है उससे स्वभाव बनता है। कर्म का असर तो अंदर दाखिल होता है उसी असर से स्वभाव बनता है। शरीर जब छूट जाता है स्वभाव नाश नहीं होता। स्वभाव ही नया शरीर धारण करता है। इसी को आवागमन कहते हैं। जैसा स्वभाव लेकर जिस वज़ूद (शरीर) में दाखिल होता है उस स्वभाव के मुताबिक ही खेल करता है। जैसा जीव का स्वभाव होता है वैसे ही कर्म करने की ख़ातिर वह मजबूर होता है। स्वभाव ही को भावी कहते हैं, कर्म रेख कहते हैं। भावी टल नहीं सकती, यानी कर्म रेख मिट नहीं सकती। कर्म की वासना से जीव शरीर में आता है और कर्मों की सज़ा-जज़ा को भोगता है। एक लम्ह (पल) भी रंज व ग़म से छूट नहीं सकता है। एक इंसान के चार लड़के हैं लेकिन आप देखेंगे हर एक का स्वभाव अलग-अलग है। एक अमीर है, नेक इख़लाक (चरित्र) है, नेक कार्यों में लगा हुआ है। दूसरा कज़ाक[1] है, डाके मारता है, लोगों को दुःख देता है। तीसरा सेवा करने वाला है, दूसरों की भलाई की ख़ातिर खुद तकलीफ़ उठाता है। चौथा ऐश परस्त है। संसार के दुःख की उसे कुछ परवाह नहीं। वह अपने ऐश व इशरत[2] में ग़लतान (मस्त) है। सब अपने-अपने स्वभाव के मुताबिक कर्म करते हैं और उनके स्वभाव के मुताबिक फल लगता है। कोई हँस रहा है, कोई रो रहा है। जीव स्वभाव से ही लाचार है।, स्वभाव के वश है। सोचता है कि ग़लती नहीं करनी चाहिए मगर स्वभाव से मजबूर होकर फिर ग़लती करता है। स्वभाव ही उसे ग़लती करवाता है। जीव अच्छे कर्म करके सुख पाता है, बुरे कर्म करके दुःख पाता है। शरीर के नाश हो जाने पर भी जीव की प्यास बनी रहती है। तृष्णा के वश होकर नई योनि में दाखिल होता है। जैसा स्वभाव लेकर आता है वैसा ही सिलसिला शुरू कर देता है। संसार के सब पदार्थ स्वभाव के वश में हैं। धरती, आकाश, पवन, पानी, अग्नि सब स्वभाव के वश हैं। आकाश का स्वभाव है शून्यता, पवन का स्वभाव है झलना, अग्नि का स्वभाव है जलाना, पानी का बहाना, धरती का जड़ता। इसी तरह फल आदि का हाल है, कोई चीज़ मीठी, कोई कड़वी तो कोई तीक्ष्ण होती है। इसी प्रकार जानवरों का भी हाल है, बाज़[3] का स्वभाव शीतल होता है, बाज़ का कमज़ात[4], बाज़ इतने असील[5] होते हैं कि यदि चारा न भी डाला जावे तो दूध दे देते हैं, लेकिन बाज़ इतने कामज़ात होते हैं कि चारे का ज़रा सा भी फ़र्क लग जावे तो वे लातें मारते हैं और दूध देना दरकिनार नज़दीक नहीं आने देते। यह सब स्वभाव वश होकर ही ऐसा करते हैं। यह ही हाल इंसानों का है। एक इंसान दूसरे को दुःखी देखकर दुःखी होता है और उसकी मदद करने को तैयार हो जाता है। एक ज़ालिम है दूसरे को दुःखी देखकर खुश होता है। हर वक्त दूसरे को दुःख देता है।

एक आसुरी संपदा है और दूसरी दैवी संपदा है। आसुरी संपदा वाला पुरुष यानी चंडाल स्वभाव वाला हमेशा उल्टे काम करता है। हमेशा दूसरे के नाश करने की कोशिश करता है।

---

1. कसाई 2. किसी 3. कमीना 4. सुशील

वैर-वख़ीली अंदर रखे हुए होता है। चंडाल के यह लक्षण हैं। अपनी बड़ाई चाहता है। बग़ैर मतलब के किसी से बात भी नहीं करेगा। उसका आचार-विचार बहुत बुरा होता है, उपद्रव करता है, लापरवाह होता है। उसके ख़्यालात पशु से भी बुरी हालत वाले होते हैं। ऐसे पुरुष के शरीर को ऐसे-ऐसे रोग लगते हैं कि एड़ियाँ रगड़-रगड़ कर जान निकलती है। ऐसे आसुरी स्वभाव वाला पुरुष हमेशा परेशानी में गिरफ़्तार रहता है।

दैवी संपदा स्वभाव वाला पुरुष दूसरे की भलाई चाहता है। अपना सुख दूसरे पर कुर्बान कर देता है। दूसरे को खिलाकर खुश होता है। बड़ी संपदा होने पर भी निर्मान होता है। हमेशा नेकी का ख़्याल उसके अंदर होता है। दूसरे का दुःख उसे दुःखी करता है। दूसरे को सुख देकर खुश होता है। हमेशा साफ़ बात करता है। जो कुछ अंदर बात होगी वही करेगा। ऐसा जो इंसान है उसकी आत्मा सुखी है। वह बड़ी कीर्ति को प्राप्त होता है। हर जगह उसकी उपमा होती है। यह देवता पुरुष के लक्षण हैं। मरने के बाद फिर किसी बड़े घराने में पैदा होता है नेक काम करते-करते आख़िर ईश्वर भक्ति को प्राप्त हो जावेगा।

जैसा स्वभाव होता है वैसे ही कर्म करता है। एक स्वभाव है कि दर-दर मांग रहा है, एक स्वभाव है कि करोड़ों रुपये संभाले हुए है। स्वभाव के मुताबिक ही जीव गुज़ारा करता है। यही स्वभाव ज़माने की ऊंच-नीच को देखता है। जिस खानदान में चंडाल वृत्ति वाले पुरुष पैदा हों वह खानदान कायम नहीं रहता, आख़िर तबाह हो जाता है लेकिन जिस खानदान में देवता स्वभाव वाले जीव पैदा हों वे उजड़ा हुआ भी आबाद हो जाता है। हर एक चीज़ इस संसार में नियम पर खड़ी है। नियम के मुताबिक ही तरक्की करती है। जब पूरी ताकत पर होती है तब बुलन्दी पर पहुंचती है। नेक स्वभाव वाले जीव की आदत से पहले ही पता लग जाता है कि किसी वक्त वह कामिल बुज़ुर्ग बनेगा। बुरे स्वभाव वाले की आदत से मालूम हो जाता है कि वह किसी वक्त खानदान की जड़ काट देगा। अपनी आदत को समझने की ख़ातिर नेक लोगों की संगति है जिसको सत्संग कहा गया है। जैसे पानी के करीब जाने से ठंडक महसूस होती है, आग के पास जाने से तपश महसूस होती है वैसे ही संगत का असर होता है। नेक असर होने से इंसान सुखी हो जाता है। यही किस्मत है। हर एक जीव अपनी किस्मत आप बनाता है। जैसे कर्म करेगा वैसी ही किस्मत बनती जावेगी, इसलिए ज़रूरी है कि इंसान सोचे कि ज़िंदगी में उसने किस कदर बुरा किया है और किस कदर भला किया है। जब वह भलाई-बुराई के बारे में सोचता है ज़मीर खुद ब खुद (स्वयं) आवाज़ देती है। ज़मीर (अन्तर्आत्मा) ही धर्मराज का स्वरूप है जो हर वक्त अंदर बैठा हुआ है। अंदर से जवाब मिल रहा है कि कौन सी नेकी की है, कौन सी बुराई की है? बीज कीकर के बो कर फल आम की ख़्वाहिश करनी बिल्कुल नामुमकिन है। जीव अपनी करनी का फल ज़रूरी पाता है। बाज़ दफ़ा देखा जाता है कि पुत्र बाप का विरोधी होता है। सोचो, यह क्यों है? यह अपनी करनी का फल है। जो कमाई रिश्वतें लेकर या धोखेबाजी से दूसरों का खून चूसकर रुपया पैसा जमा करके की जाती है

उस खोटी कमाई के इस्तेमाल से अपवित्र खून बनता है। उस खून से वीर्य बनता है। वीर्य से वंश (सन्तान) भी वैसी पैदा होती है जो खोटे स्वभाव वाली होती है। ज़हर से जो चीज़ पैदा होती है वह अमृत कैसे हो सकती है? बुरी कमाई से जो बच्चा पैदा होता है यह बच्चा वंश नाश करने वाला है। यह अपनी करनी का फल है।

जिस मानुष की नेक कमाई होती है उसका परिवार भी नेक होता है। उसमें नेक व्यवहार, सत्संग, नेक विचार का चर्चा हर वक्त बना रहता है। जिसके घर में घोड़े, हाथी, भैंस बंधी थीं चंद साल के बाद देखा गया कि कुछ भी नहीं रहा। इसका कारण यह ही है कि बुरे आचार वाले पैदा होकर उन्होंने अपने बुरे अहमालों (कर्मों) से उस ऊंचे ख़ानदान को ख़ाक (धूल) के साथ मिला दिया।

इंसानी ज़िंदगी का मकसद है नेकी या बदी (बुराई) को समझना। नेक इंसान कदम-कदम पर नेकी करता है, बुरा आदमी कदम-कदम पर बदी करता है। दुर्योधन और पांडवों का हाल देखो। हालांकि राज पांडवों का था, पांडव दुर्योधन से पांच गांव माँगते थे। मगर वह पांच गांव भी देने को तैयार नहीं हुआ जिसका नतीजा महाभारत का जंग हुआ और उसमें दुर्योधन और सब कौरव तबाह हो गए। अति लालच, अति लोभ में आकर नेक चलनी को छोड़ देना ज़मीर की ख़्वारी (बर्बादी) है। अपनी ज़मीर[1] को तबाह करना है। पाप कर्म अंधेरे गड्ढे में फेंकता है। इस बुद्धि को शुद्ध करने की ख़ातिर जप, तप, सेवा का धर्म माना गया है। सेवा करने से पाप नाश होते हैं। दूसरे की ख़िदमत करने से अपने पापों का नाश होता है। भगवान कृष्ण और भगवान रामचन्द्र ने सेवा का आदर्श पेश किया है। सेवा से निर्मानता व आज़ज़ी से घना आनन्द प्राप्त होता है।

बड़ा कौन है? जिसके अंदर आज़ज़ी और पर उपकार है। जिसकी आदत नेक है वही बुज़ुर्ग है। कमीना कौन है? जो हर वक्त अपनी खुदगर्ज़ी में ग़रक (डूबा रहता) है। और हर दाव करके अपने सुख की ख़ातिर लोगों को दु:ख देता है और अपने पापों से बिल्कुल डरता नहीं है। ऐसी खोटी भावना ही नरक का स्वरूप है। जीव को सुख और दु:ख अपनी करनी के मुताबिक मिलता है। कोई कर्म-चक्र को जीत नहीं सकता। हर वक्त अपनी करनी नेक करनी चाहिये जो हर हालत में सुख देने वाली होवे।

इसके बाद आरती व समता मंगल संगत ने उच्चारण किये और प्रसाद बांट करके संगत को कतारों में बैठने की आज्ञा हुई और हज़ारों की संख्या में संगत को प्रसाद खिलाया गया।

संगत ने सत्पुरुष के चरणों में प्रार्थना की:- ''महाराज जी! हज़ारों की तादाद में इस जगह अब संगत जमा होने लगी है, आप कृपा करके इस जगह सत्संग हाल बनवाने की आज्ञा देवें। शुभ स्थान आपकी जन्म भूमि और तपोभूमि होने की वज़ह से एक तीर्थ है। यह जगह भी तंग है, इसे मद्देनज़र (ध्यान में) रखते हुए आपकी सेवा में प्रार्थना है कि सत्संग हाल बनवाने की आज्ञा

1. अंत:करण

बख़्शें।'' श्री महाराज जी ने फरमाया:- ये जगह जंगल है, किसी बड़ी आबादी से बहुत दूर। इस इलाके के बाशिंदे पढ़े-लिखे नहीं हैं, जो बजाये मदद करने के उल्टे रास्ते में रोड़े अटकायेंगे। सामान इस जगह एकत्र करना बहुत मुश्किल है और किसी को फ़ायदा न होगा, बल्कि उल्टा रुपया ज़ाया (व्यर्थ) करना होगा। इसलिए संगत इन बातों पर ग़ौर करे। लेकिन सब प्रेमियों ने ज़ोर दिया कि चूंकि उनके लिए यह जगह तीर्थ है और उनके ठहरने के लिए जगह भी तंग है और शुभ स्थान निवासियों को यज्ञ के मौके पर तकलीफ़ भी बहुत होती है इसलिए प्रार्थना की-कि उनको सत्संग शाला बनवाने की आज्ञा दी जावे। सत्पुरुष ने इस शर्त पर आज्ञा दी कि संगत के मुख्य प्रेमी मैम्बर इसका भार अपने कंधों पर लेवें और अपनी श्रद्धा और सेवा का सबूत देवें। संगत ने स्वीकार कर लिया और श्री महाराज जी ने सिर्फ़ पांच प्रेमियों को आज्ञा दी जिन्होंने निहायत श्रद्धा व अकीदत[1] से इसे स्वीकार कर लिया, मगर किसी को पता नहीं लगने दिया कि वह कौन पांच प्रेमी थे जिनको सेवा बख़्शी गई और इस तरह सेवा का आदर्श कायम कर दिया।

दरअसल पहले जगह आबादी से पिछली तरफ दी गई थी, जो एक प्रेमी ने दी थी। उसके साथ नीचे श्री महाराज जी की ज़मीन थी। श्री महाराज जी ने अपने करकमलों से सारी संगत के सामने ज़मीन में कसी से फट (निशान) मार कर उद्घाटन भी कर दिया था। मगर बाद में प्रेमी तुलाराम ने अपनी ज़मीन से ढाई कनाल ज़मीन दी । ऊपर वाली जमीन बराबर नहीं थी और वहां इसे दूसरी ज़मीन से मिलाने के वास्ते बड़ा खर्च करना पड़ता और जो प्रेमी इमारती काम के जानकार थे उन्होंने भी बराबर न होने के कारण इसे पंसद न किया। इसलिए सत्पुरुष ने प्रेमी तुला राम वाली ज़मीन की पेशकश को स्वीकार कर लिया। ज़मीन समतल भी थी और उस जगह पत्थर रखकर अराज़ी की हद भी निश्चित कर दी गई।

इस ज़मीन में श्री महाराज जी एक दिन बाबू अमोलक राम जी को साथ लेकर चक्कर लगा कर उसे देख रहे थे। वहां पर ज़मीन के नीचे एक काले कीड़ों की खुड्ड (बिल) देखी। जो बहुत पुरानी थी और काफी कीड़े उस जगह चक्कर लगा रहे थे। आप उस जगह खड़े हो गए और फरमाया:- प्रेमियों! अब यहां आश्रम बनने लगा है, आपको तकलीफ़ होगी। बेहतर (अच्छा) होगा अगर आप अपना डेरा किसी दूसरी जगह ले जाते। यह कहकर आप आगे चले गए। बाबू जी की ड्यूटी निर्माण कराने पर आपने लगा दी और इन्हें साथ ही हिदायत भी दे रहे थे। ख़ास हिदायत यह थी कि इस जगह के प्रेमियों को यानी वहां के निवासियों को खुश रखना वर्ना यह लोग काम नहीं करवाने देंगे। बाबू जी को यह भी पता लग चुका था कि इससे पहले एक दफ़ा सत्पुरुष के रात को जाने वाले रास्ते में बाड़ देकर बंद भी कर दिया था। सत्पुरुष चक्कर काटकर बाहर जाया करते थे और वापिस भी चक्कर काट कर ही आप गांव में अपने गृह पर तशरीफ़ लाते।

दूसरे दिन फिर बाबू जी को साथ लेकर आप उस ज़मीन से गुज़रे जहां कीड़ों की खुड्ड थी वहां पहुंचे तो देखा कि एक भी कीड़ा वहां मौजूद नहीं था और खुड्ड खाली पड़ी थी। उस वक्त

1. विश्वास

आपने फरमायाः- ''आत्मा की आवाज़ आत्मा सुनती है।'' इस जगह निवास के दौरान आपने एक दिन निम्नलिखित अमृत वर्षा भी की।

65. आत्मा की खोज

जीव हर वक्त खुशी की चाह कर रहा है। खुशी की ख़ातिर पदार्थ इकट्ठे करता है। कोशिश करके राजा भी बन जाता है। इस शरीर के सुख की ख़ातिर गले में हार डाल लेता है। ताज भी सिर पर रख लेता है। हाथी, घोड़े दरवाज़े पर बंधवा रखे हैं। सब सामान ऐश व इशरत के मुहिया (इकट्ठे) हैं, मगर चित्त में शांति नहीं। सब कुछ हासिल किया है मगर बेसबरी (असंतोष) दरवाज़ा पकड़े खड़ी है। सुख की आस में लगा है मगर सुख नहीं मिला। आख़िर जीव ना-उम्मीद हुआ। जीव को धोखा लगा है। देह रूपी खान को देखकर भूल गया है। उसके बनाने की शक्ति नहीं। उसके बनाने वाले के बारे में ग़ौर नहीं किया। न ही यह विचार किया कि बनाने वाली ताकत कितनी सुखदाई होगी। शरीर उस ताकत के पराधीन है। जो चीज़ पराधीन होती है वह सुख नहीं दे सकती। आशा हमेशा सुख की लगी रहती है लेकिन सुख नहीं मिलता। यह चक्कर बराबर चल रहा है। बालक से जवान होता है। जवानी ढल जाती है, बुढ़ापा आ जाता है। संसारी पदार्थ तबदील हो रहे हैं। सूरज, चांद, पख, मास, तबदील हो रहे हैं। जिस तरह मेघ नाना प्रकार के प्रगट होकर वर्षा करके नाश हो जाते हैं इसी तरह हर एक चीज़ वक्त पर प्रगट होती और नाश हो जाती है। जिसके अंदर ऐसा विचार नहीं आया कि दुनिया क्या चीज़ है और मैं क्या हूं, मेरा इस संसार में आने का क्या मकसद है, महापुरुष क्या कह गए हैं, ग्रन्थ व पुस्तकें क्या बयान कर रहे हैं, आख़िरत (अंत) क्या होगी, धन सम्पत्ति किस काम के हैं, वह मूर्ख है? जिस खुशी को वह खुशी मान रहा है दरअसल वह खुशी नहीं, वह ग़मी का सामान है। उस खुशी से ग़मी प्रगट हो रही है। जब उसको एक चीज़ मिल गई तब दूसरी की ख़्वाहिश शुरू हो जाती है। लाखों रुपये जमा कर लिए, करोड़ जमा करने की ख़्वाहिश पैदा हो जाती है। हर्ष की प्यास कम होने के बजाये ज़्यादा होती जाती है। इस वास्ते यह ऐश व इशरत खुशी नहीं दे सकते हैं।

खुशी किस चीज़ में है? अगर शरीर में खुशी तलाश करता है तो इस जीव के इख़्तियार (वश) में कोई बात नहीं। ज़रा निग़ाह अपने शरीर पर डालो। शरीर का बाल तक इसके इख़्तियार में नहीं है। एक बाल तक नहीं बना सकता। यह भी मालूम नहीं कि संसारी पदार्थ किस तरह अंदर हल हो रहे हैं। जिस्म के पुर्जे किस तरह सावधानी से चल रहे हैं। अक्लमंदों ने उनकी तहकीकात (खोज) की है, मगर उसको बना नहीं सके। जीव मोहताज (पराधीन) है। इस मोहताजी की मजबूरी में राजे राज कर रहे हैं, ग़रीब मांग कर अपना पेट पाल रहे हैं, धनी धन इकट्ठा कर रहे हैं। लेकिन सब तृष्णा के ताबे (गुलाम) हैं। यह ही इसकी लाचारी है। पैदाईश से लेकर मरने तक इस दुविधा में वक्त गुज़र गया लेकिन शांति नहीं मिली।

शरीर तत्त्वों का बना है। तत्त्व चक्कर लगा रहे हैं। तत्त्वों के हेल-मेल से कर्म प्रगट हो रहे हैं। तत्त्व तबदील हो रहे हैं, जिसका नतीजा यह होगा कि यह शरीर एक दिन पाश-पाश (टुकड़े-टुकड़े) हो जायेगा। इस वक्त जीव जो सुख की चाह कर रहा है मज़ीद (और अधिक) सुख की ख़्वाहिश करेगा और फिर गिरफ़्तारी में आ जावेगा और आवागमन के चक्कर में फंसा रहेगा। जो चीज़ बनती व बिगड़ती है वह हरगिज़ तसल्ली नहीं दे सकती।

जीव शरीर रूपी मकान में सुख की चाह कर रहा है। इस जेल के नौ दरवाज़े हैं। इस नौ दरवाज़े की जेल में सुख की तलाश कर रहा है। मगर सुख उसे हासिल नहीं होता। असली सुख उन्होंने देखा जिन्होंने शरीर की जीवन शक्ति की तलाश की, जिसकी वजह से यह पिंजर बनता है उसकी तलाश की है। यह शक्ति शरीर में ऐसे व्यापी हुई है जैसे दूध में घी। ध्यान करके उसको हासिल कर सकता है। अपनी कीर्ति की हर एक जीव चाह कर रहा है। जिस्म को हर एक ने जाना मगर जान कोई ही जानता है। वही इंसान सच्चा आस्तिक है जिसने जान को जाना है। वही धर्मवान है। उसने संसार को जाना है। न गुज़रे हुए हालात की कुछ ख़बर है न आने वाले की, दरमियान (मध्य) में तृष्णा नदी में बुदबुदे की तरह फिर रही है। इस जान की तहकीकात की ख़ातिर सत्संग, सत् विचार, सत् विश्वास है। दिल के आईने को साफ करने की ख़ातिर यह सब मसाले हैं।

महापुरुषों ने जो रास्ते खुशी को हासिल करने के लिए इस्तेमाल किये ग्रंथों में ब्यान किये गये हैं, जिनका सारांश यह है कि शरीर में जीवन शक्ति का विचार करना, उसी का विश्वासी होना और उसी का मुतलाशी (जिज्ञासु) होना। जीव जब शरीर को अति सुख देता है तब उस सुख से दुःख पैदा हो जाता है। जैसे बरसात की वज़ह से नाना प्रकार की औषधियां पैदा हो जाती हैं वैसे ही शरीर को अति सुख देने से दुःख प्रकट होते हैं। ज़रा किसी अमीर की ज़िंदगी की तहकीकात करो उसको सख़्त दुःखी पाओगे। हकीम उसकी नब्ज़ पकड़े खड़े हैं। शारीरिक सुख उसके लिए दुःख का कारण बन रहे हैं। अति सुख रोग पैदा करता है। करोड़पति भी रो रहे हैं। सब ही मुसीबत में फंसे हुए हैं। हाहाकार मचा रहे हैं। रूह भूखी है। इसलिए जो कुछ भी कर रहा है पुरउम्मीद (आशावान) नहीं हो सकता। आख़िर पिंजर ख़ाक में मिल जाता है। इसमें चक्रवर्ती राजे भरम रहे हैं। जो खुद अपने आप पर मजबूर हैं, कैसे दुनिया के मालिक बन सकते हैं? जीव अंदर से आज़ादी की चाहना करता हुआ उल्टा मोह में फंसकर कई रिश्ते नाते सुखों के वास्ते बनाता है। जब हर एक जीव अपने-अपने हालात में मजबूर है यानी कमी दर कमी को लिए हुए है तब कैसे एक दूसरे का कोई सहायक हो सकता है? यह मोह जाल है। असलियत में जीव को अपनी नेक व बद करनी का ही फल सुख व दुःख प्राप्त होता है ख़्वाहे जिस ज़रिये (साधन) से भी मिले। इस तरह सुख व दुःख शारीरिक विकार हैं। जीव भोग-भोग कर कई शरीर बदलता है, मगर अखंड शांति को प्राप्त नहीं हो सकता है, जब-तक कि निहकर्म सरूप अविनाशी जीवन शक्ति को अपने अंदर पहचान न लेवे।

66. छूत-छात की बीमारी का इलाज

इमारत का काम शुरू करने से पहले राय लेने की ख़ातिर श्री महाराज जी की आज्ञानुसार बाबू अमोलक राम जी जेहलम गए और वहां से मिस्त्री सखी मोहम्मद, जो इमारती काम के माहिर थे और काला गुजरां के ही रहने वाले थे और बाबू जी के साहबज़ादे के कारोबार के हिस्सेदार थे, को साथ ले आए। गाड़ी से मानकयाला स्टेशन पर उतरकर पैदल शुभ स्थान पर पहुंचे। गांव से कुछ फ़ासले पर थे कि अंधेरा हो गया और रास्ता भूल गए। इलाका पहाड़ी था। रास्ता ऐसा भूले कि कुछ पता न लगे। मिस्त्री जी दो तीन बार ऊंची जगह से नीचे नालों में गिरते रहे मगर प्रभु कृपा से कोई चोट न आई। काफी खराब होकर एक जगह खड़े थे कि कुछ फ़ासले पर ऊंटों के जाने की आवाज़ आई। उनके गले की घंटियां बज रही थीं। बाबू जी ने आवाज़ दी कि रास्ता भूल गए हैं ज़रा आकर रास्ता बतला जाओ। एक ऊंट वाला आ गया। आगे बढ़कर उसने गांव वालों को आवाज़ दी और कहा:- तुम्हारे आदमी रास्ता भूल गए हैं, आकर इन्हें ले जाओ। दो आदमी शुभ स्थान से लालटेन लेकर आ गए। जब वह आदमी पहुंचे तो बाबू जी ने देखा कि जंगल पीर ख़्वाजा के पास पहुंचे हुए हैं और वहां खड़े हुए हैं। उन आदमियों के साथ गांव में पहुंचे। श्री महाराज जी के चरणों में जब पहुंचे मिस्त्री जी को सख़्त प्यास लगी हुई थी। उन्होंने पानी मांगा। एक गिलास में पानी लाकर दिया गया। उन्होंने पानी पीकर गिलास वापस दे दिया। सत्पुरुष के कानों में यह ख़बर पहुंची कि एतराज़ हो रहा है कि एक मुसलमान ने पानी पिया है। गिलास ख़राब हो गया है। आपने फौरन आज्ञा फ़रमाई कि गिलास में पानी ले आओ। जब पानी उसमें डाल दिया गया तो आपने उसमें से एक घूंट पीकर गिलास वापिस देते हुए फरमाया:- ''जाओ इसे ले जाओ, गिलास सुच्चा हो गया है।''

आप इस छूत-छात के रोग को दूर करने के वास्ते काज़ी साहब इलाका हिज़ा को भी सत्संग में बुलाया करते थे और अपने पास बिठाया करते थे। आस-पास के मुसलमान जो सम्मेलन में आते उन्हें भोजन भी खिलाया करते थे। यह था आदर्श जो आपने पेश किया और यह था अमली समता भाव का नमूना।

67. तरनतारन में सत् उपदेश

लाला अनंत राम जी कुन्द्रा एडवोकेट, तरनतारन ने जब श्री महाराज जी के उच्च जीवन के हालात मारतंड पत्रिका में पढ़े तो उनके अंदर सत्पुरुष के दर्शनों की तड़प पैदा हो गई और इस मकसद के लिए उन्होंने सत्पुरुष के चरणों में पत्र लिखे। यह प्रार्थना की-कि उन पर कृपा करते हुए तरनतारन दर्शन देकर कृतार्थ करें। उन्होंने यह भी लिखा कि अगर आज्ञा हो तो वह खुद सेवा में हाज़िर होकर साथ ले चलने के लिए तैयार हैं। सत्पुरुष ने उनकी नम्र भावना व प्रेम से की हुई प्रार्थना को ध्यान में रखते हुए उन्हें इस कठिन पहाड़ी इलाके में आने का कष्ट देना पसंद नहीं किया

और 15 नवम्बर, 1943 को जाने का प्रोग्राम निश्चित करके लाला अनंत राम जी कुन्द्रा को सूचित कर दिया और लिख दिया कि आपके निवास का प्रबन्ध शहर से बाहर किसी एकांत जगह पर कर देवें। आप 15 तारीख को प्रोग्राम के अनुसार शुभ स्थान से पैदल रवाना होकर मांकयाला स्टेशन पर 8 मील सफ़र करके पहुंचे और गाड़ी में सवार होकर तरनतारन के लिए चल पड़े।

आपने बाबू अमोलक राम जी को भी साथ ले लिया और फरमाया:- जेहलम से रुपया लाकर भट्टे वाले को देकर साठ हज़ार ईटों का सौदा कर लें। बाबू जी भी उसी गाड़ी में सवार होकर जेहलम तक साथ आये और वहां उतर कर रुपये का प्रबन्ध करके वापस जाकर भट्टे वाले को रुपया पेशगी देकर साठ हज़ार ईटों का सौदा कर लिया और शुभ स्थान पर चले गये। दूसरे दिन ही उनको सूचना मिली कि ईटों का भाव बढ़ गया है क्योंकि उस समय में दूसरी जंग लगी हुई थी। मगर भट्टे वाले को पुराने भाव से ही ईटें देनी पड़ीं क्योंकि वह रुपया ले चुका था।

श्री महाराज जी दूसरे दिन 6 नवम्बर को तरनतारन पहुंच गये। प्रेमी कुंद्रा जी तरनतारन निवासियों के साथ स्टेशन पर आये हुए थे और आपको शहर से बाहर पौना मील के फ़ासले पर एक बाग में ले गए जहां आपके ठहरने का प्रबन्ध किया हुआ था और टैन्ट लगवाया हुआ था, उसमें ले जाकर ठहराया। इस जगह प्रेमी कुंद्रा जी ने कुटिया भी बनवा दी, मगर उसमें अभी आसन नहीं लगाया गया था क्योंकि वह गीली थी। अभी आप मय भक्त बनारसी दास जी टैन्ट में ही बिराजमान थे कि रात को खूब ज़ोर की आंधी व बारिश शुरू हो गई। भक्त जी को उस समय बुख़ार हो रहा था। आंधी से टैन्ट उखड़ गया, मगर सत्पुरुष ने अपने शारीरिक कष्ट की परवाह न करते हुए भक्त जी को ढांप लिया और बारिश व हवा अपने ऊपर झेले। कितना अजीब आदर्श आपने पेश फरमाया। अपने शिष्य की ख़ातिर तमाम कष्ट अपने ऊपर ले लिया और उसे ज़रा भी कष्ट नहीं होने दिया। आपने रात एक वृक्ष के नीचे ही गुज़ार दी।

सुबह जब प्रेमी आये तो उन्होंने हालात देखकर अर्ज़ की:- महाराज जी! आपको रात को बड़ी तकलीफ़ हुई होगी। उस पर आपने फरमाया:-

''प्रेमी! फ़कीरों के साथ यह सिलसिला आये दिन बना रहता है। इधर इसमें आनन्द है। आप बंगलों में बे-आराम रहते हैं। फ़कीर झोपड़ियों में परम सुख मानते हैं।''

एक दिन शाम को सत्संग के बाद एक प्रेमी संत आत्मा सिंह जी ने फरमाया:- ''महाराज जी! आप जैसे सत् वचन कहने वाला आज तक इस नगर में कोई नहीं आया। महाराज, नानक जी की वाणी सत्-सत् कहती है या आपके मुख से असली बात श्रवण की है।'' इसके बाद प्रेमी अनंत राम जी एडवोकेट ने अर्ज़ की:

प्रश्न- यह कर्तापन या अभिमान 'मैं करता हूँ' ऐसा भाव किधर से आया? ईश्वर को क्या जरूरत पड़ी थी इतनी लम्बी चौड़ी सृष्टि बनाने की?

उत्तर- प्रेमी! कर्तापन कहां से आया इसका कारण आज तक किसी ने नहीं बताया। यह भाव तो ऐसे पैदा हुआ जैसे जल में तुरंग पैदा होती है। इसका कारण कौन बताये? ऐसे ही आत्म

सत्ता में से स्वयं कर्तापन यानी माया का स्वरूप पैदा हो रहा है। कर्तापन में ही जन्म-मरण यानी पैदाईश और नाश का सिलसिला भरा हुआ है। जिसका न आद है न अंत, दरमियान (बीच) में विस्तार दे रहा है और हमेशा ही रंग बदलता रहता है और जब इस प्रभु सत्ता, आत्मानंद में बुद्धि प्रवेश करती है उस समय संसार का नाम व निशान नहीं रहता। यह आश्चर्य जनक, अवस्था है। जब-तक आंख खुली है जीव इसमें ग़लतान (मग्न) है। जन्म से लेकर मरण तक असली खुशी समता शांति को प्राप्त नहीं हो सकता। जब-तक लगाव व नफ़रत का सिलसिला जारी है तब-तक दु:खी रहता है।

एकाग्रचित्त होने के वास्ते सब साधन, क्रिया, नियम व संयम बने हैं। जिन गुरुओं ने यह नगरी आबाद की थी आज अगर वह हों तो उनसे पूछना चाहिए कि किस तरह आपने संसार का मुकाबला किया? धर्म का स्वरूप उन महापुरुषों ने समझा था। आज लम्बी-लम्बी सुरों में महापुरुषों के वचनों को गाकर सारे मतलब को हवा में हवा कर दिया जाता है। क्या कभी मन इस तरह एकाग्र हो सकता है? जब-तक सही साधन को न अपनाया जाये तब-तक मन स्थिर होना नामुमकिन है। आप लोग तो वकील हैं। बाल की खाल उतारने वाले हैं। ज़िन्दगी मौत का मसला बातों द्वारा थोड़ा हल हो सकता है। इस तरह विचार करते रहा करें, और सज्जनों को भी पता देना। थोड़ा ही समय इधर ठहरना है।

संगत की संख्या आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ने लगी और बड़े-बड़े विचारवान प्रेमी आपके सत् उपदेशों द्वारा लाभ प्राप्त करने लगे। एक दिन सत्संग के बाद जब संगत चली गई तो एक प्रेमी जगजीत सिंह ने प्रश्न किया:-

''महाराज जी! आपने वाणी किस तरह उच्चारण की है?'' आपने फरमाया:- ''प्रेमी! आज रात इस जगह ठहर कर देख लो।''

जगजीत सिंह ने आज्ञा का पालन किया। रात दो बजे आपने उस आत्म आनन्द स्थिति में लीन होकर वाणी उच्चारण करनी शुरू की जिसे भक्त बनारसी दास जी लिखते रहे। सुबह सात बजे तक यह सिलसिला जारी रहा। इस दिन 29 नवम्बर, 1943 तदनुसार 14 मघॅर सं० 2000 तारीख़ थी। इस अमरवासी वाणी को 'ज्ञान निष्ठा प्रबोध' नाम दिया गया। नीचे इस अमृत वर्षा के कुछ शब्द दर्ज़ किये जाते हैं ताकि प्रेमी पाठक भी इसका लाभ उठा सकें।

दृढ़ निश्चय प्रभ नाम का, देह मद करे विनास॥
'मंगत' अन्तर ध्यान में, तब सत तत भयो परगास॥
अमृत नाम सिमर भगवाना, निर्भय धाम पावे निर्वाना॥
घट अंतर सो रह्या समाई, मूढ़ा जीव उठ बाहर धाई॥
मिथ्या भरमन में नित लागा, तत् सरूप नहीं जपे अभागा॥
अनंक वासना जिया जलावे, भोग-भोग नहीं धीरज पावे॥
चार खानी भरमे भरमाई, गुरमुख साजन कोई भेद लखाई॥

अबनाशी तत परगट भयो, जब देह अंतर मीत।
'मंगत' मन तब मानया, नित सिमरे नाम पुनीत॥

आपने इस जगह 15 दिसम्बर, 1943 तक निवास किया।

68. दोरांगला ज़िला गुरदासपुर में निवास

आप 16 दिसम्बर, 1943 को तरनतारन से दोरांगला तशरीफ़ ले गए। आपके निवास का प्रबन्ध गांव की आबादी से बाहर एक कुएँ पर बने हुए कमरे में किया गया था। रोज़ाना सत्संग का सिलसिला इस जगह भी जारी हो गया। सत्संग का समय शाम को रखा गया। इस जगह के प्रेमियों की प्रार्थना पर आपने जो अमृत वाणी फरमाई उसका नाम अलखवाणी रखा। तीन सौ पद आपने ढाई घंटे में भक्त बनारसी दास को लिखवाये और फरमाया:-

"प्रेमी! अलख-अगम अवस्था को जानकर ही जीव निर्भय हो सकता है। जब-तक वज़ूद (शरीर) में लावज़ूद (ईश्वर) का बोध नहीं होता, ऐसी अद्‌भुत अश्चर्ज अवस्था बड़े ही भागों से प्राप्त हुआ करती है। अदृश्य वस्तु के देखने समझने के वास्ते निर्मल भावों की ज़रूरत है। जब अंत:करण शुद्ध हो जायेगा तब स्वयं ही अपने आपको समझ जावेगा। यहां बातों का काम नहीं। यत्न में ही रत्न है। कमाई करो और परम सुख पाओ। यह सब उस महाप्रभु की महिमा है। चिन्ह-वर्ण से न्यारा सर्वआधार पुरख जो है उस निराकार को निराकार होकर ही बोध किया जा सकता है। जब सुरती अन्तर में लवलीन होकर उस परम रस को पान करती है तब सही मायनों में संसारी भोगों से उपरस होती है। जिस अवस्था की महिमा वेद, ग्रन्थ, गुणी, मुनी गा रहे हैं उसको समझने की कोशिश किया करो। समझ आने पर ही सत्मार्ग से प्रीति बन सकती है, तब प्रीति से किया हुआ साधन खुद-ब-खुद सत् पर यकीन पैदा करता है। ईश्वर सत् बुद्धि बख्शें। अब इस लेख को लिखकर प्रेमियों को रवाना कर दो।"

ईटें अभी तैयार नहीं थीं। उनका सौदा करके बाबू अमोलक राम जी शुभ स्थान पर गए और कुछ दिन ठहर करके फिर वापसी काला गुजरां चले गए। जितना समय भट्टे वाले ने दिया हुआ था कि उस समय में ईटें निकल आवेंगी, उस समय की समाप्ति पर बाबू जी फिर शुभ स्थान पर गए। जब वहां पहुंचे तो देखा कि जिस जगह श्री महाराज जी की मौज़ूदगी में ज़मीन में पत्थर रख कर निशान कायम किया गया था वहां से पत्थर उठाकर आगे कर दिये गये थे और जमीन कम कर दी गई थी। पूछने पर मालूम हुआ कि गांव वालों ने प्रेमी तुला राम को उभारा है कि क्यों इतनी ज़मीन देता है? और उनके कहने पर उसने ज़मीन कम कर दी है और भर्ती होकर मांसर कैम्प, अटक के पास चला गया है। बाबू जी ने यह हालत देखकर उसके साले प्रेमी बृज लाल को गैंह ब्राह्मणां पत्र भेजा और सब हालात से उसे लिखकर शुभ स्थान पर आने को लिखा। वह प्रेमी संगत में शामिल हो चुका था। बाबू जी सत्पुरुष को इसकी सूचना देने के लिए रवाना हो पड़े। उस वक्त श्री महाराज जी दोरांगला तशरीफ़ ले गए थे।

रवानगी से पहले बाबू जी को निचली भकटाल का एक मुसलमान प्रेमी मिला। तमाम इलाके में इस ज़मीन के कम करने की ख़बर फैल चुकी थी। उसने बाबू जी से कहा कि तुम श्री महाराज जी के पास जा रहे हो मेरी तरफ से अर्ज़ कर देना कि उस ज़मीन से दूसरी तरफ नदी के पार मेरी ज़मीन है जितनी ज़मीन वह चाहें उसमें से ले लेवें और आश्रम वहां बनवाएं। अगर उसी जगह आश्रम बनवाना है तो तुला राम को कहें कि दूसरी ज़मीन मेरे से ले लेवें और वह आपको अपनी ज़मीन दे देवें। अगर सड़क के किनारे आश्रम बनाने का विचार हो तो दस बीघे मेरी ज़मीन स्कूल के सामने है, जितनी ज़मीन चाहें वहां से ले लेवें, और ज़ोर दिया कि यह अर्ज़ ज़रूर उसकी तरफ से श्री महाराज जी की सेवा में कर दी जावे।

बाबू अमोलक राम जी शुभ स्थान से चलकर मांकयाला पहुंचे और वहां से गाड़ी में सवार होकर लाहौर, लाहौर से गाड़ी तबदील करके गुरदासपुर पहुंचे और वहां से तांगे द्वारा दोरांगला पहुंचे। कस्बे से पता करके श्री चरणों में पहुंचे। उस वक्त अंधेरा हो चुका था। बाबू जी को देखकर श्री महाराज जी ने पूछाः– ''तुम किधर''! बाबू जी ने सारे हालात अर्ज़ किये और उस मुसलमान प्रेमी का पैग़ाम भी दिया। उस पर आपके पवित्र मुख से जो वचन निकले वह निम्नलिखित हैंः–

''सात पुश्तों की बादशाही नानक मुगलों को दे गया था। अब फ़कीर कैसे बादशाही दे देवें?'' सत्पुरुष को, जैसे आगे ज़िकर आवेगा, आने वाले हालात का भी पता था।

थोड़ी देर बाद आपने एक रुक्का (पर्चा) लिखा और बाबू जी को हुक्म दिया कि सुबह चले जाओ और बृज लाल को लेकर मांसर कैम्प जाओ और तुला राम को यह रुक्का दो।

दिसम्बर का महीना था। सख़्त सर्दी थी और सुबह खूब धुंध फैली हुई थी। बाबू जी सवेरे ही तांगे द्वारा दोरांगला से रवाना हो पड़े और गुरदासपुर से सुबह 6 बजे वाली गाड़ी पकड़कर शुभ स्थान के लिए रवाना हो गए। लाहौर से गाड़ी बदल कर मांकयाला उतरकर शुभ स्थान पर पहुंच गए। पूछने पर पता लगा कि तब-तक प्रेमी बृज लाल नहीं आया था। यह पैग़ाम देकर, जब वह आ जावे उसे काला गुजरां भेज दिया जावे, बाबू जी काला गुजरां चले आये। दूसरे दिन प्रेमी बृज लाल भी काला गुजरां पहुंच गया उससे अगले दिन दोनों गाड़ी में सवार होकर अटक पहुंचे। वहां गाड़ी से उतरकर बस द्वारा मांसर कैम्प पहुंचे। बाबू जी ने श्री महाराज का रुक्का तुलाराम को दिया। पढ़कर प्रेमी तुला राम ने बृज लाल को कहा कि जिस जगह पहले वह निशान लगवा आया था उतनी जगह ही दे दी जावे। दूसरी बस में दोनों सवार होकर रावलपिंडी पहुंचे। वहां से शुभ स्थान पर पहुंचे और बृज लाल ने निशान सही करवा दिया।

ईटें तैयार हो गई थीं। उनके मंगवाने का ऊंटों द्वारा प्रबन्ध करके जेहलम जाकर लकड़ी वग़ैरह का प्रबन्ध किया गया। चिरवाई अपने ही आरों पर करवाई गई। उस वक्त जंग के कारण लकड़ी मिलनी बड़ी मुश्किल थी। चूंकि बाबू जी के साहबज़ादे का काम टिम्बर का ही था इसलिए लकड़ी मिल गई, फिर गड्डों (बैलगाड़ी) पर लदवाकर चिरवाई के बाद उसे शुभ स्थान रवाना कर दिया।

दौरांगला में एक इतवार को कस्बा की एक सराये में प्रेमियों ने विशाल सतसंग किया और उस सतसंग में आपने निम्नलिखित अमृत वर्षा फरमाई:-

''जब से जीव पांच तात्विक शरीर को धारण करके आया है, सुख की तलाश में लगा हुआ है। दिल के बहलाने के लिए अनेक प्रकार की सामग्री व सामान एकत्र करता रहता है, फिर भी तृष्णा ख़त्म नहीं होती। तृष्णा को ख़त्म करने के वास्ते ही जीव अनेक प्रकार के यत्न-प्रयत्न, पूजा-पाठ, सिमरण-ध्यान करता है। लेकिन जब तृप्ति नहीं मिलती तब सोचता है कि यह क्या बीमारी जीव को लगी हुई है? जब इसका इलाज दरयाफ्त (पूछना) करके दवाई का इस्तेमाल करता है और परहेज़ भी करता है तब जाकर रोग से छुटकारा मिलता है। इस पांच तात्विक शरीर में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार यह पांच विकार हर समय प्रगट हो रहे हैं। जब-तक इन विकारों से ख़ुलासी (मुक्ति) नहीं होती सत् शांति प्राप्त होनी कठिन है। इसलिए इन विकारों से मुक्ति पाने के यत्न का नाम महापुरुषों ने धर्म करके फरमाया है। यह धर्म न कोई मज़हब है और न पंथ। जिस यत्न करके मानसिक शांति प्राप्त होती है वह ही धारण धर्म कहलाती है। किसी भी महापुरुष ने आज-तक यह नहीं फरमाया कि चोरी, ठगी, निन्दा करना धर्म है या शराब पीना, मांस खाना, ग़रीबों को तंग करना सवाब (पुण्य) है। न सर जटा बढ़ाने में कल्याण है, न लम्बे-लम्बे तिलक लगाने में मन को शांति मिलती है। महापुरुषों के जाने के बाद यह लोकाचार रिवाज़ बन जाते हैं। रिवाज़ों को धर्म मानना बड़ी भारी ग़लती है। इसलिए बड़े-बड़े समझदार ज्ञानी, दाने-बीने, विचारवान, पंडित, काज़ी, मुल्ला इस वाद-विवाद की आग में जल रहे हैं। सत् धर्म की सार को न समझते हुए खुद भी अशांत रहते हैं और दूसरों को भी ग़लत रास्ते पर लगाने के यत्न में लगे रहते हैं। धर्म का मार्ग तो सबको सुख देने वाला है और जिस तरीके को इख़तियार (अपनाकर) करके मन पाप कर्मों को छोड़कर सत्कर्मों को धारण करे उसको निर्मल धर्म कहा गया है। ईश्वर सत् धर्म में प्रवृत्त करे और प्रवीण रहने की दृढ़ता बख़्शें।''

अक्सर महात्मा लोग आपके दर्शनों को आते । एक दिन सुबह जब आप धूप में बिराजमान थे तो अच्छी उमर के महात्मा भी वहां आ गए। जब बड़े आदर सत्कार से उन्हें बिठाया गया तो उन्होंने आपसे प्रश्न किया।

प्रश्न- जिस आनन्द में महात्मा लोग रहते हैं उसकी महिमा क्या है? क्या इन आंखों से देखा जा सकता है? ज़बान से ब्यान कहां तक कर सकते हैं?

इस प्रश्न का उत्तर आपने फ़ौरन अपनी अनुभवी वाणी द्वारा इस तरह कह दिया।

जां सरूप को अखै गत कहिये। तां की उस्तत ऐ बिध लहिये॥
कहे कोई जन परम तत् ऐसा। जो जो बूझे सो होये वैसा॥
कहत सुनत कुछ अचरज बाता। सदा स्थिर नहीं दोष को खाता॥
तन मधे सो रहे समाई। बिना स्वभाव नित रमनाई।
तन की ममता मन को भरमावे। मन की अस्थिरता देह बंजावे॥
तन मन दोनों शब्द में लीना। 'मंगत' तब भेद तत्व ज्ञान का चीना॥

यह सुनते ही महात्मा ने आपके चरणों में नमस्कार किया और अर्ज़ की:- ''बड़े उच्च भाग्य हुए, ईश्वर कृपा से आज आपके खुद-ब-खुद दर्शन हो गए। ऐसे तत्त्व भेदी सत्पुरुषों के दर्शन कब मिलते हैं? धन्य है यह समां, जगह और यह लोग जो आपके दर्शन पा रहे हैं। प्रभु कृपा करें।'' दरअसल महापुरुष हर एक बात दूसरे की स्थिति देखकर ही फरमाया करते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण ऊपर किये गये प्रश्न और आपके उत्तर से मिलता है। एक और महात्मा के सामने आपने इसी मसले पर इस तरह रोशनी डाली।

''देवता जी! कहना बनता ही नहीं, क्या कहा जाये? जिसने प्राप्त किया उसी का रूप हो गए। कहने-सुनने में परम तत् आ ही नहीं सकता। इन्द्री अगोचर इस वास्ते इसको कहा गया है। इस आनन्दमई अवस्था का ब्यान किसके आगे किया जावे। कौन इन बातों पर ध्यान देता है? पहले समय में संत मंडलियां बैठकर सत् तत्त्व ज्ञान का आपस में विचार करती थीं, आज वह समां आ गया है जहां चार संत होंगे तम्बाकू की ख़ैर नहीं। बड़े भाग्य, गुरमुखों के दर्शन हो गए। जिस सुख के वास्ते जीव दिन-रात यत्न कर रहा है वह सुख नहीं दु:ख हैं। शरीर तो समय पर नाश हो जाने वाली चीज़ है। यह उसका धर्म है। मूर्ख जीव इसमें मुस्तग़र्क (मग्न) होकर असली सुख से दूर रहते हैं। कोई ही भाग्यशाली जीव सतसंग से प्रीति रखता है। अब तो लेखा ही ख़त्म है। जब साधु समाज ने ही जप, तप, त्याग, नियम, धर्म छोड़ दिया है तब जनता क्या करे? ईश्वर ही सबको सत् बुद्धि बख्शें।''

इन शुभ विचारों को सुनने के बाद महात्मा जी वहां से चले गए। जब भक्त जी उन्हें कुछ दूर छोड़कर आए तो आपने फरमाया:-

''प्रेमी, कोई-कोई किसी न किसी जगह दाना है ही। अच्छा खोजी प्रेमी है।''

69. काहनूवान में एकान्त निवास

17 जनवरी, 1944 मुताबिक 12 माघ संवत् 2000 आप दोरांगला से काहनूवान तशरीफ़ ले गए। काहनूवान से हकीम जसवंत राय ने सेवा में हाज़िर होकर वहां पधारने की प्रार्थना की थी जिसे आपने स्वीकार कर लिया। आपको राय साहब देवी दयाल के बाग में ठहराया गया। यह जगह शहर से बाहर फ़ासले पर थी और बहुत एकांत थी। इस जगह के बारे में आपका फरमान भी है, ''यह जगह बड़े आराम की है क्योंकि यहां ज़्यादा लोग आकर तंग नहीं करते जिनको परमार्थ की चाह नही।''

बुल्या उथे रहिये, जिथे बोहते अनहे ।
न कोई साडी रमज़ पहचाने, न कोई सानू मन्ने॥

ऐसी जगहों पर फ़कीरों को आराम रहता है। यानी मालिक की मौज में ज़्यादा से ज़्यादा समय दे सकते हैं। सतसंग रोज़ाना रात को होता था। चूंकि इलाका जमींदारी था इसलिए आम लोग

अपने-अपने धंधों में व्यस्त रहते थे। सिर्फ़ चंद एक प्रेमी ही सतसंग में शामिल होते थे। आपका इन लोगों के मुताबिक फरमान भी है:

''मिट्टी खोदने वाले मोटी बुद्धि के होते हैं। श्रद्धा बन गई तो अच्छी तरह चल पड़ते हैं वर्ना ऐसे ही बैलों की तरह जीवन व्यतीत करते हैं।''

इस जगह लाहौर से प्रेमी राम लाल जी, एडीटर मार्तण्ड पत्रिका, भी दर्शनों के लिए तशरीफ़ लाये। कुछ दिन चरणों में निवास किया। उन्होंने आपके रोज़ाना प्रोग्राम के बारे में निम्नलिखित वर्णन किया है।

''श्री महाराज जी सुबह दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर ग्यारह बजे तक पत्र व्यवहार में व्यस्त रहते हैं। इसके बाद सारा दिन सतसंग में गुज़रता है। सतसंगी सज्जन आते जाते रहते हैं। सायंकाल में कस्बे के नौजवान व अन्य श्रद्धालु हाज़िर होकर अपने संशय दूर करते हैं। काहनूवान के सतसंगी सज्जन अमूमन रात के बारह बजे तक बैठे शंका निवारण करते और धार्मिक मामलात में वार्तालाप करते रहते हैं। रात को एक बजे तक यह चर्चा चला करती है। सतसंगियों के चले जाने के बाद श्री महाराज जी वहीं आसन पर मुंह ढांपे बैठे रहते हैं। सोते हैं या नहीं इस बात को वही जानें। हमने जब देखा इनको ऐसे ही मुंह ढांपे देखा। हम लोग तीन चार दिन इस कमरे में सोये।''

एक दिन प्रेमियों ने आपसे प्रार्थना की:- ''महाराज जी! रोज़ाना पाठ के वास्ते थोड़ी वाणी अलग गुटके की सूरत में होनी चाहिये।'' इस पर आपने फरमाया:

''प्रेमियों! स्वांग न बनाओ। दूसरों की नकल क्यों करते हो?''

प्रेमी:- ''महाराज जी! आजकल ज़माने के साथ भी तो चलना चाहिये। ऐसी चीज़ हो जो जेब में पड़ी रहे। आख़िर प्रेमियों के इस आग्रह पर एक दिन मौज में आकर ''सिमरन दीपक'' नामी प्रसंग अपने कर-कमलों से लिख दिया और बनारसी दास को पढ़कर सुनाने की आज्ञा दी। सुनने के बाद पूछा:- ''प्रेमी! क्या समझा?''

भक्त जी:- ''अगर चित्त देकर केवल इन वचनों को ही विचारा जाये तो यही काफी हैं। मगर इतना पढ़ने के बावज़ूद मन नहीं मानता। क्या कारण है?''

श्री महाराज जी:- ''प्रेमी! लाखों पद ईश्वर महिमा के, वैराग्य के, अनुराग के, साधन के, प्रेम के, विश्वास के महापुरुषों ने उच्चारण फरमाये हैं। उनमें से यदि कोई एक पद भी चित्तवृत्ति पकड़ ले तो मन दुर्गति को त्याग करने के यत्न में लग जाता है। किसी को वैराग्य के पद अच्छे लगते हैं, किसी को प्रेम-अनुराग के, किसी को साधन के। हर एक जीव के वास्ते सत्पुरुष इख़्लाकी (सत् व्यवहार वाली), रूहानी ख़ुराक छोड़ जाते हैं। लोभ, मोह में फंसा हुआ जीव बड़ी मुश्किल से सत्मार्ग की सूझ प्राप्त कर सकता है।

माया भरम विकार में, नित ही जीव भरमाये।
'मंगत' भरमन तब मिटे, जब सतनाम चित्त गाये॥

आदर्श विवाह

आपके काहनूवान में निवास के दौरान 15 फागुन, संवत 2000 को हकीम जसवंत राय की सुपुत्री की शादी निश्चित हुई। सबकी प्रार्थना पर आपने अनुभवी सत् शिक्षा उच्चारण फरमाई, जिसे भक्त बनारसी दास ने वेदी में दोनों दुल्हा-दुल्हन को पढ़कर सुनाई। इसमें 'पुरुष धर्म' और 'पतिव्रत धर्म' दोनों के मुताबिक शिक्षा है। समता विलास में यह छप चुकी है। शादी के बाद दुल्हा-दुल्हन दोनों चरणों में प्रणाम करने के लिए हाज़िर हुए तो आपने दोनों को गृहस्थ धर्म का उपदेश दिया और फरमाया:- ''असूलों की खिलाफ़ वर्ज़ी (विरुद्ध व्यवहार) के कारण ही गृहस्थी लोग अशांत हो रहे हैं।''

70. मारतंड भवन लाहौर में सतसंग

परमार्थी जी जब काहनूवान दर्शनों के लिए तशरीफ़ लाये थे तो सत्पुरुष के चरणों में प्रार्थना की थी कि लाहौर दर्शन देने की कृपा करें और प्रोग्राम बनायें। आपने उनकी प्रार्थना को स्वीकार करके प्रोग्राम बना लिया। आप काहनूवान से चलकर पहली मार्च, 1944 को लाहौर मारतंड भवन पर पधारे। लाहौर निवासी प्रेमियों यानी प्रेमी लाला बख़्शी राम जी, डा० भक्त राम जी, सेठ ताराचंद व अन्य सब प्रेमियों को परमार्थी जी ने सूचना भेज दी। दूसरे दिन सुबह सब प्रेमियों ने चरणों में हाज़िर होकर प्रणाम किया और सतसंग का प्रोग्राम शाम चार बजे से पांच बजे तक निश्चित किया गया। आपने इस जगह ख़ुराक के मसले पर ही सबसे पहले सत् उपदेश दिया जो निम्नलिखित है:

''मांस इंसान की ख़ुराक नहीं। यह तो उन जानवरों की ख़ुराक है जिनके दांत भी लम्बे चीरने-फाड़ने वाले होते हैं और पांव के नाखून भी और ही किस्म के होते हैं। ईश्वर ने इंसान के दांत मांस खाने के लिए बनाये ही नहीं इसलिए मांस आहारी मानुष की बुद्धि का तवाज़न (संतुलन) कभी ठीक हो ही नहीं सकता। मांस खाने वाला हमेशा धोखा देने वाला ही होगा, चाहे बाहर से क्यों न भला नज़र आए। चीता, चोर, कमान जैसे झुक कर दूसरे पर वार करते हैं ऐसी ही बुद्धि मांस आहारी की हुआ करती है। मांस खाने से जिस्म ही बढ़ता है। ऐसी बुद्धि सही सोच वाली बुद्धि नहीं हो सकती, न ही यह बात की तह में पहुंच सकती है। जितनी सूक्ष्म और पवित्र ख़ुराक बुद्धि को निर्मल बना सकती है उतनी ही स्थूल ख़ुराक बुद्धि को खोटे विचारों की तरफ ले जाती है। महापुरुषों ने कहा है:

जे रत लगे कपड़े, जामा होये पलीत।
जो रत पीवें मानसा, तिन क्यों निर्मल चीत॥

''जब लहू लगने पर वस्त्र अपवित्र हो जाता है तो जिस मांस से गन्दगी, खून निकलता है उसको खाने से कब मनुष्य में पवित्रताई आ सकती है चित्त कैसे निर्मल हो सकता है? मांस का असली रस दूध है। मांस फोग (व्यर्थ पदार्थ) है। क्या फोग भी कभी फायदेमंद चीज़ हो सकती

है? मांस खाने वालों की सांस की गति बढ़ जाती है। रफ़्तार बढ़ जाने से उम्र अपने आप कम होनी शुरू हो जाती है। जिगर ख़राब हो जाता है। मोतियाबिंद, कुकरे, पथरी वग़ैरह कई शारीरिक रोग आ घेरते हैं। ब्लड प्रेशर वग़ैरह नये रोग इस मांस की ही देन है। जैसी ख़ुराक खाई जाती है वैसा ही वीर्य बनता है। जिस कारण औलाद भी कपटी पैदा होती है। बाहर से शरीर की सुन्दरताई कुछ मायने नहीं रखती। बुद्धि की पवित्रता ही पवित्र खोज की तरफ़ ले जा सकती है। डाक्टरी असूल न मालूम क्यों मांस को अच्छा समझता है? हालांकि और कई वनस्पत्तियाँ मांस से ज़्यादा लज़ीज़ (स्वादिष्ट) बनती हैं। घी, मसाला न डाला जाये तो मांस क्योंकर स्वादिष्ट हो सकता है? सब स्वाद घी मसाले का है।

मांस-मांस सब एक है, क्या हिरनी क्या गाय।
आंख देख नर खात है, ते नर नरकी जाये॥
बकरी खाती पात है, ताकी काढ़ी खाल।
जो बकरी को खात है, उस तन का क्या अहवाल॥

''चाहे झटका करके खाया जावे, चाहे हलाल करके बनाया जावे सबसे बड़ा पाप तो जीव को दुःख देना है। जिस पीड़ा में वह शरीर छोड़ता है वह ही आहें और ख़्याल उसके मांस के साथ वाबस्ता (समाए) रहते हैं जिसके कारण मारने वाले, खाने वाले, पकाने वाले सबकी बुद्धियां भ्रष्ट होती चली जाती हैं। मांस, शराब, भ्रष्ट आहार बुद्धि को भ्रष्ट करने वाला है। जैसी ख़ुराक होगी वैसे ही कर्म होंगे। नित विकारों को सोचेगा। जो जीव अपनी सफ़ाई यानि पवित्रता को चाहता है पवित्र आहार ग्रहण करता है। वह ही दीर्घ आयु और अरोग्य शरीर को प्राप्त करेगा। किसी भी महापुरुष ने मांस खाने की आज्ञा नहीं दी। मोहम्मद साहब ने भी फरमाया है- पेट को ग़ोर (कब्र) मत बनाओ। जिसकी अपनी सारी उम्र की ख़ुराक का अंदाज़ा 67 सेर का है। उन्होंने कब मांस खाया होगा या कब ऐसी हिदायत की होगी। यह सब खाने वालों के प्रसंग हैं। हमारे देश के महापुरुषों ने तो सबसे बड़ा पाप इसके इस्तेमाल को ही दिखाया है। लेकिन फिर भी दुनिया अपने-अपने रंग में चली जा रही है। ख़ैर परमार्थ पर चलने वालों को इससे बहुत ही परहेज़ करना चाहिये।

जीभा की रसना माहीं, मत होवो ग़लतान।
'मंगत' कूंडी नरक की, जीव करे हैरान॥

ईश्वर आप सबको विवेक बुद्धि बख़्शें।''

इस सत् आदेश को सुनकर डाक्टर भक्त राम जी ने मांस इत्यादि त्याग दिया और कुर्बानी का सही सबूत पेश किया। इसका असर बाकी प्रेमियों पर भी खूब पड़ा।

उसी रोज़ शाम को सतसंग में आपने संगत को निम्नलिखित विचारों द्वारा निहाल किया।

''हर एक जीव के अन्दर यह ख़्वाहिश हमेशा बनी रहती है कि किसी तरह शांति, सुख, आनन्द प्राप्त हो। ख़्वाहिशत नफ़सानी (इन्द्रिय) पूर्ण हो जायें। कभी-कभी ऐसे ऊंचे विचार भी उठा करते हैं कि सब विकारों से निज़ात मिल जाये। मगर ऐसा अखंड सुख मिले किस तरह? वह तो

तमाम ज़रूरतों और कामनाओं के त्याग करने से मिल सकता है। जीव हर समय शरीर के बनाव श्रृंगार में लगा रहता है और उसे कायम रखने के यत्न-प्रयत्न करता है। यह ही दु:खों का कारण है। सुख तब प्राप्त होगा जब यह जीव मर्यादा धारण करेगा, ग़ैर ज़रूरी ख़्वाहिशात (इच्छा) को त्याग करेगा और ईश्वर आज्ञा को मानते हुए सत्कर्म को धारण करेगा। ज्यूं-ज्यूं जीव इन साधनों को धारण करता जावेगा अंत:करण धीरे-धीरे शुद्ध होता चला जावेगा। सही उन्नति वही जीव कर सकता है जो सत् परायण होकर नाम सिमरण में दृढ़ होता है। जो गुणी अपनी कल्याण करता है वह ही परिवार, देश, समाज और पंथ के सुधार का मूजिब (कारण) हो सकता है। इसलिए अपने अंदर निष्काम भावना पैदा करके ईश्वर परायणता में अपने आपको दृढ़ करो। जब अपने दोष नाश हो जावेंगे तब जाकर दूसरे जीवों के लिए आदर्श बनेगा और उनके भी सुधार का मूजिब (कारण) होगा। ईश्वर सबको सत् बुद्धि देवें।"

71. सतसंग शाला का निर्माण

जैसा पहले ज़िकर आ चुका है आज्ञा अनुसार बाबू अमोलक राम ने सतसंग शाला निर्माण हेतु सामान एकत्र करना शुरू कर दिया था। सीमेंट की समस्या थी। उन दिनों जंग चल रही थी। सत्पुरुष की कृपालुता से यह समस्या भी हल हो गई और सीमेंट भी मिलना शुरू हो गया। अंग्रेज़ अफ़सरान मदद करने लगे। ईटें तो ऊंटों के जरिये पहुंच रही थीं।सामान लकड़ी जेहलम से भकड़ाल तक पहुंचाया गया और आगे ऊंटों पर शुभ स्थान पहुंचाया। सीमेंट का परमिट यद्यपि लाहौर से मिलता था मगर सीमेंट रावलपिंडी से लेना पड़ता था। रावलपिंडी से बस द्वारा भकड़ाल पहुंचाया गया और वहां से ऊंटों पर शुभ स्थान ले जाया गया। जब सामान जमा हो गया राज मिस्त्री काला गुजरां से, त्रिखान जेहलम के पास से और कुछ कश्मीरी मज़दूर जेहलम से ले जाये गये 24 फरवरी, 1944 को निर्माण का काम शुरू करवा दिया गया। कुछ शुभ स्थान निवासी और कुछ मुसलमान मज़दूर यहां से भी काम पर लगा लिए। सत्पुरुष ने जिन-जिन रुकावटों का ज़िकर सतसंग शाला निर्माण की आज्ञा देते समय किया था वह सब रुकावटें बाबू अमोलक राम के रास्ते में आईं और इन की रुकावटों को मद्देनज़र रखते हुए राज, त्रिखान वग़ैरह जेहलम से लाये गये थे।

उन दिनों में लोहे के गार्डर मिलने असम्भव थे। जेहलम में एक अमरीकन फ़र्म भी लकड़ी का काम कर रही थी। उसमें अमरीकन इंजीनियर काम करवा रहे थे। अपनी फ़र्म के जरिये उनसे इसके बारे में वार्तालाप किया गया। उन्होंने लकड़ी के टुकड़ों के ही गार्डर बनाने का तरीका बतला दिया और अपनी फ़र्म के ज़रिये लम्बी लकड़ी भी मिल गई। चिरवाई भी वहीं करवाकर शुभ स्थान पर ले जाकर लकड़ियों को जोड़कर गार्डर भी तैयार करवा लिए। मियां सखी मोहम्मद जी काम शुरू कराने के वक्त भी शुभ स्थान पर तशरीफ़ लाये और कभी-कभी आकर काम की देखभाल करते और सामान की पड़ताल भी कर जाते।

72. कुठाला ज़िला गुजरात व रावलपिंडी में आगमन

एक हफ़्ता लाहौर ठहरकर और लाहौर निवासियों को सत् उपदेश अमृत से निहाल करके आप 7 मार्च, 1944 को कुठाला तशरीफ़ ले आए। आप अभी लाहौर से रवाना नहीं हुए थे कि एक पार्सल प्रेमी हरबंस लाल कोहाला निवासी ने भेजा। उसे खोलने पर उसमें से एक चादर निकली। जब कुठाला आप पहुंचे तो प्रेमी को आपने निम्नलिखित शब्दों द्वारा पत्र लिखवाया।

ऐसी चादर दात करो, मैं ओढ़ूं नग्न सरीर।
जन्म-जन्म का मिटे संदेसा, काल चक्कर तकसीर॥
जत का ताना सत् का पेटा, मत धीर जुलाहा बनावे।
प्रेम की नाली से बुनत करीजे, मन पवन की खैंच लगावे॥
बुने अति अत गाढ़ा कपड़ा, वैराग की ठोक लगाई।
नाम व्योपारी कपड़ा लेवे, नित बिरह का माप कराई॥
कहन कथन विच आवे नाहीं, जो कपड़ा चमक दिखाई।
तीन लोक में ढूंढत फिरी, कोई बिरला मोल चुकाई॥
हरजन साजन कपड़ा लेवे, त्रैबेनी घाट में धोवे।
तीन ताप की मैल को हरे, नित सत यत्न परोवे॥
सतगुरु दरजी सीवे चादर, सुरत निरत दोऊ पाट मिलाई।
विवेक की सूई ध्यान का धागा, तप योग धारे कठिनाई॥
निर्वान शब्द की आखण्ड चादर, कोई गुरमुख साजन ओढ़े।
'मंगत' तिस के चरण कंवल में, नित-नित प्रीति जोड़े॥

यह पत्र लिखवाने के बाद आपने वह चादर भक्त बनारसी दास को दे दी और आज्ञा की-कि प्रेमी हरबंस लाल को लिख दो कि आईंदा इस तरह पार्सल न किया करे। भेंट हाज़िर होकर ही करनी चाहिये।

कुठाला में आपने राय बहादुर लाला केदारनाथ जी के बाग़ में ही कोठी की ऊपर वाली छत पर निवास किया। इसी तरह एक बार आप शुभ स्थान से कोई बारह-चौदह मील के फासले पर किसी गांव में तशरीफ़ ले गए हुए थे कि पीछे दो प्रेमी बाहर से दर्शनों के लिए आ गए। पहुंचने पर जब उन्हें पता लगा कि श्री सत्गुरु देव जी स्थान पर नहीं हैं तो उन्होंने श्री महाराज जी को बुलाने के लिए गांव से आदमी भेज दिया और खुद उस गांव तक जाने की तकलीफ़ गवारा न की। जब पैग़ाम लेकर सत्पुरुष के चरणों में शुभ स्थान वासी पहुंचा तो शाम हो चुकी थी। संदेशा मिलते ही आपने चलने की तैयारी कर ली। इन विचारों की सूचना मिलने पर आपने फरमाया:-

''राम नाम को मिलने वाला कोई प्रेमी आए तो सही, उसके वास्ते तो सिर के बल भी चलकर जाना बड़ी बात नहीं। यह आने वाले की नासमझी है। चाहिये तो यह था कि वह चलकर आते और यहां पहुंचते। ख़ैर कलयुग ने सबकी बुद्धि कमज़ोर कर रखी है।''

आप रात के दो बजे वहां से पैदल रवाना हो लिए और सुबह आठ बजे शुभ स्थान पर पहुंच गए। जब आए हुए प्रेमियों को पता लगा कि श्री महाराज जी पैदल चलकर आए हैं तो उन्होंने बहुत दु:ख महसूस किया और हाथ जोड़कर माफी मांगी।

आपने फरमाया:– ''प्रेमी! जिस तरह तुम दु:ख महसूस कर रहे हो अब सेवा, सिमरन करके प्रसन्न करो। बस माफी हो जावेगी। क्या अभी तुम बच्चे हो? यह समझ नहीं आई कि खुद ही पैदल चलकर जाना चाहिये। चलो अच्छा हो गया। अब पश्चाताप न करो। आइंदा ख़्याल रखो। किसी का भला हो जाये और अंधमति जीव राहे रास्ते पर आ जाए।''

इसी तरह एक दिन बैठे हुए भक्त जी ने प्रश्न किया।

प्रश्न– महाराज जी, हम अंधमति क्यों हैं?

श्री महाराज जी:– प्रेमी! जब-तक जीव कर्तापन के चुंगल में फंसा हुआ है यानी हौमें के रोग में मुबतला (ग्रस्त) है तब-तक तृष्णा की अग्नि से शीतल नहीं हो सकता। तृष्णा द्वारा हर समय कर्म शुभ-अशुभ हो रहे हैं। इस द्वन्द्व विकार कर्म जड़ से तब ही छुटकारा होगा जब मन से सत्नाम का उच्चारण करेगा। द्वन्द्व विकार से राग-द्वेष पैदा होते हैं। राग-द्वेष, ग्रहण-त्याग, प्राप्ति-अप्राप्ति से जीव लाचार होता है। इस भरम की फांसी में मुबतला (फंसा) हुआ जीव सत्नाम के बिना खुलासी (छुटकारा) नहीं पा सकता। सत्नाम, सत्श्रद्धा, दृढ़ विश्वास से लिया जाता है। नाशवान दु:ख भरे संसार से तब ही जाकर छुटकारा प्राप्त होता है जब किसी महापुरुष के चरणों में जाने का सौभाग्य प्राप्त हो, नम्र भाव से उनसे शिक्षा ग्रहण करे। फिर बड़े यत्न-प्रयत्न द्वारा चिरकाल के बाद विवेक बुद्धि पैदा होती है, तब जाकर द्वन्द्व चक्कर से आज़ाद होती है। पूर्ण यत्न द्वारा ही भरम का नाश होता है। सच्ची प्रीति ही मुक्ति प्रदान करती है, तब जाकर कर्म के बंधन से छुटकारा पाकर निष्कर्म अवस्था में प्रवेश करता है। बस फिर आगे जाने का रास्ता खुल जाता है। लेकिन यत्न यानि त्याग, वैराग्य, अभ्यास के बग़ैर कुछ नहीं बन सकता। मैं-पन यानि अभिमान गंवाना आसान बात नहीं।

जंगल बेले ढूंढत फिरी, बहु विध जतन कमानी।
'मंगत' खाक खलक सर डारी, तब वा घर भेद पछानी॥
बिन गुरु भेद न पाया, लखी न नाम तत् सार।
'मंगत' जब सत्पुरुष भेंटया, गई त्रिखा संसार॥
अंतर शब्द परगासया, भेंट हुई भगवान।
'मंगत' उपरस मनवा भया, पाया पद निर्वान॥
कहता हूं कह जात हूं, परसो नाम तत्सार।
'मंगत' सत यत्न सत विश्वास से, परगट हुए मुरार॥

पांच दिन कुठाला ठहरकर आप रावलपिंडी तशरीफ़ ले गए। 12 मार्च को आप कुठाला से रवाना हुए। आगे रावलपिंडी निवासी प्रेमी नन्दलाल जी बिन्द्रा, मेहता अमरनाथ जी इत्यादि अनेक प्रेमी स्टेशन पर आए हुए थे और श्री महाराज जी को गंज मंडी श्री गोवर्धन दास जिया लाल,

गवर्नमेंट कन्ट्रेक्टर के चौबारा में ठहराया। जब आप इस जगह पहुंचे रात के नौ बज गए थे। मगर पहुंचने पर ही सत्संग शुरू हो गया। 10 मार्च तक रावलपिंडी निवासी प्रेमी, सत्संग व सत् उपेदशों का लाभ उठाते रहे। इस जगह बाबू अमोलक राम जी दर्शनों के लिए शुभ स्थान से हाज़िर हुए। सत्पुरुष किसी से कोई सेवा स्वीकार नहीं किया करते थे, लेकिन एक प्रेमी जबरदस्ती चरणों में पांच रुपये का नोट रख गया। वह आसन के पास ही पड़ा था। एक सूट पहने हुए जेन्टलमेन आ गया और चरणों में प्रणाम करके उसने वह नोट उठा लिया। मगर सत्पुरुष ने उस तरफ देखा तक नहीं। ऐसा प्रतीत होता था कि वह सत्पुरुष की परीक्षा कर रहा था। मगर भूला हुआ था कि सत्पुरुष बिल्कुल बेलगाव हैं। थोड़ी देर बाद वह उठकर चला गया। बेलगाव की ऐसी मिसाल मिलनी मुश्किल है। आपने एक हफ़्ता यहां निवास किया।

आख़िरी दिन प्रेमियों ने कड़ा प्रशाद का प्रबन्ध किया जिसे सुबह से दोपहर दो तीन बजे तक बांटते रहे। गोलड़ा से प्रेमी हकीम दुनी चंद जी तशरीफ़ लाये और चरणों में हाज़िर होकर गोलड़ा तशरीफ़ ले चलने की प्रार्थना की। आपने संगत गोलड़ा की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया।

73. गोलड़ा आगमन

श्री महाराज जी 20 मार्च, 1944 को गोलड़ा तशरीफ़ ले गए। यहां पर भी सत्संग का सिलसिला जारी हो गया। आप हमेशा की तरह बाहर आबादी से फासले पर एक खड्ड के किनारे तशरीफ़ ले जाया करते थे और सुबह को वापस तशरीफ़ लाते। खड्ड के किनारे एक कुटिया बनी हुई थी। उसी समय पता लगा कि उस जगह महात्मा ठहरे हुए हैं जिन्होंने बारह वर्ष से मौन धारण किया हुआ है। सारा दिन वह कुटिया के अंदर ही रहते हैं, रात को किसी समय बाहर निकलते हैं। एक दिन आपने भक्त जी से कहा कि प्रेमी चलो महात्मा के पास चलें। स्नान वग़ैरह से फ़ारिग होकर कुटिया का दरवाज़ा खोलकर आप अंदर गए जहां मौनी बाबा बैठे थे। वह महात्मा किसी पुस्तक का स्वाध्याय कर रहे थे। बड़ा कोमल शरीर था। सफेद धोती बंधी थी और ऊपर एक चादर ओढ़ी हुई थी। बड़ा कशिश वाला तपस्वी चेहरा था। आपने पास बैठते ही नमस्कार किया । मौनी संत ने हाथ के इशारे से कुशलता पूछी फिर आपने कागज़ पेंसिल उठाकर एक प्रश्न लिखकर उस मौनी संत के आगे रख दिया।

प्रश्नः कौन देश किस ज़ाँ से तुम आई।
किस कारण यह भेख बनाई॥
उत्तरः न कोई देश न विदेश से आई।
सम त्त भेख में नित रमनाई॥
कारण अकारण कोई न सूझा।
तुम कृपा से पाई सम पूजा॥

प्रश्नः किस जुगत यह परम पद पाया।
किस गुरु ने गुह्य ज्ञान समझाया॥
उत्तरः प्रान उपान ने सत सुख लाया।
शब्द गुरु मिले परम गत पाया॥

''समता तत् से आगे केवल चिद्घन ही है। ड्यूटी न होने के कारण इसी तरह खामोशी से समय व्यतीत किया जा रहा है। अब न जाने का ग़म न आने की खुशी।''

महात्मा जी के उत्तर सुनकर आपने उनको नमस्कार किया और कुटिया से बाहर आ गए। मगर महात्मा जी भी आपके पीछे कुटिया से बाहर तशरीफ़ लाए और आपको नमस्कार करके वापस अंदर चले गए और दरवाज़ा बंद कर लिया। आपने वहां से लौटते हुए भक्त जी से पूछा:– ''प्रेमी! क्या देखा है?''

भक्त जी:– महापुरुषों से दुनिया खाली नहीं है। मगर आपने जीवों पर बड़ी दया कर रखी है। आप भी इस तरह खामोशी इख़्तियार (धारण) करके किसी कोने में विराजमान हो जाते तो हम जैसे मूढ़ों को किसने ठिकाने पहुंचने का सबक देना था।

महाराज जी ने फरमाया:– ''प्रेमी! यह अच्छी ऊंची रहनी और स्थिति वाले महात्मा हैं। शहर में जाकर नहीं कहना कि इस तरह वार्तालाप हुआ था। इनको अपनी मौज में ही रहने दो।'' आपने बीस दिन गोलड़ा निवासियों को सत्उपदेशों द्वारा निहाल किया।

74. शुभ स्थान गंगोठियां में एकांत निवास

9 अप्रैल, 1944 को आप गोलड़ा से शुभ स्थान तशरीफ़ ले आये। आपकी आने की ख़बर पाकर आसपास इलाके से प्रेमी सेवा में हाज़िर होने लगे। प्रेमी लाला बख़्शी राम जी व चौधरी फ़कीर चंद जी भी सत्पुरुष की आज्ञानुसार बाबू जी की मदद के लिए शुभ स्थान तशरीफ़ लाए हुए थे। सत्संग शाला निर्मित हो रही थी और यह दोनों साहिबान बाबू जी की मदद कर रहे थे। ठाकुर याद राम सिंह जी ने, जो कि उन्नाव यू०पी० में प्रासीक्यूटिंग सब इंस्पेक्टर लगे हुए थे, सत्पुरुष के बारे में मारतंड पत्रिका में ज़िकर पढ़ा। उससे उनके अंदर दर्शनों की चाह प्रगट हुई। उन्होंने विदा ली और दिल्ली से होते हुए लाहौर परमार्थी जी के पास पहुंचे और उनको साथ लेकर शुभ स्थान पर पहुंचे। जब यह साहिबान शुभ स्थान पर पहुंचे श्री महाराज जी उस समय बाहर जंगल में तशरीफ़ ले गए हुए थे। प्रेमी लाला बख़्शी राम जी को साथ लेकर दोनों साहिबान महाराज जी की सेवा में हाज़िर हुए और सत्संग का लाभ उठाया। तीन दिन सत्संग में शामिल होने से ठाकुर जी को सत्पुरुष की उच्च स्थिति का विश्वास हो गया और सेवा में सत्मार्ग पर डालने के लिए प्रार्थना की। उस समय आपने फरमाया:–

''प्रेमी! अच्छी तरह विचार कर लो। जब दो पैसे की हांडी ली जाती है तो बड़ी देखभाल करके ठोक बजाकर ली जाती है। इधर सारी ज़िंदगी के वास्ते अपने आपको सौंपना है। पहले जांच पड़ताल कर लेना बेहतर है।''

ठाकुर जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! आप नारायण रूप हैं। करनी वाले सत्पुरुष हैं। इसलिए प्रार्थना है कि शिक्षा से कृतार्थ करें। श्री महाराज जी ने ठाकुर जी की श्रद्धा व विश्वास को देखकर उन्हें चरणों में जगह दे दी और दीक्षा दे दी। ठाकुर जी 15 अप्रैल को मय परमार्थी जी वापस अपनी नौकरी पर चले गए।

आप समय-समय पर कुछ प्रेमियों को पत्र द्वारा सत् उपदेशों से कृतार्थ करते रहे। दो पत्र नीचे दिए जा रहे है। यह दोनों पत्र आपने प्रेमी परमार्थी जी को लिखे थे, एक दौरांगला से, दूसरा रावलपिंडी से।

''ईश्वर सत् नाम प्रतीत देवें। प्रेमी जी, यह संसार एक सराये है और जीव कर्म संस्कार का बांधा हुआ मुसाफ़िरी में फिर रहा है। जब-तक सत्सरूप का बोध न होवे तब-तक कर्म चक्कर से शांति नहीं है। इसलिए बड़ी से बड़ी कोशिश करके अपने अंत:करण में नाम की औषधि प्रवृत्त करते रहें। इस निश्चय से मन मिथ्या नाम-रूप कल्पना से अलेहदा (अलग) हो जाता है और सत्सरूप में लीन हो जाता है। हर वक्त नाम का ही आधार और नाम का ही विचार दृढ़ करना चाहिये। अगर कभी फुर्सत होवे तो दर्शन देना। ईश्वर, गुरु चरणों में अधिक प्रीति देवें और गुरु वचन में अटल विश्वास बख़्शें।''

''ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। तमाम कुनबे को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत् धर्म प्रतीत देवें। हर वक्त हमको हृदय में देखें। प्रेमी जी, धर्म की हालत सख़्त गिरावट की तरफ जा रही है इसलिए प्रभु इच्छा से समता का प्रचार प्रगट हुआ है जिससे मनुष्य अपने सही जीवन को प्राप्त कर सके। हर वक्त समता के भाव को रिसाला (पत्रिका) में दिया करें। इस वक्त जनता इस सही तालीम की तलाश में है। दीगर तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी, ईश्वर आज्ञा से तुम्हारी सच्ची श्रद्धा से लाहौर संगत के दर्शन का मौका मिला। जो कुछ ईश्वर का हुक्म था वह संगत को पेश किया गया। आप सतसंग, समता के मुतालिक (बारे में) ज़रूर कायम करें और जो सेवा तुमने की है वह ईश्वर सफल करें। हर वक्त ईश्वर परायण होना चाहिए। यह मनुष्य जीवन प्रभु की शरणागत की ख़ातिर है। ईश्वर सत् विश्वास देवें। हर वक्त हमको हृदय में देखें।''

75. चिनारी की तरफ प्रस्थान

शुभ स्थान पर निवास के दौरान श्री महाराज जी को साथ ले जाने के लिए प्रेमी चिनारी से श्री दीनानाथ जी, हरी पुर से लाला आसानन्द जी एडवोकेट और सराये सालहा उस्मान खट्टर व कहुटा से हाज़िर हुए थे। कहुटा में प्रेमियों ने 25 बैसाख को यज्ञ भी करना था। जो-जो प्रेमी आए

हुए थे सबने प्रार्थना की–कि सत्पुरुष उसके साथ तशरीफ़ से चलने की कृपा करें। श्री महाराज जी ने फरमाया:– मौके पर जिस तरफ आज्ञा हुई उस तरफ चल पड़ेंगे। चुनाँचे 23 अप्रैल, 1944 को एतवार के दिन श्री महाराज जी मय संगत के प्रेमियों के सुबह चार बजे पैदल चलकर बरास्ता डेरा खालसा मांकयाला स्टेशन पर पहुंचे और ट्रेन में सवार होकर रावलपिंडी पहुंचे। वहां से बस में सवार होना था। श्री महाराज जी ने वहां फरमाया:– इस समय ईश्वर आज्ञा से चिनारी जा रहे हैं। वापसी पर हरी पुर हज़ारा वग़ैरह निवासियों को वक्त दिया जायेगा। रावलपिंडी निवासी प्रेमियों को अपने आने की सूचना नहीं दी हुई थी। मगर बावज़ूद इसके मलिक भवानी दास जी, डाक्टर शानी लाल जी दीवान दर्शनों के लिए हाज़िर हो ही गए। प्रेमी लाला बख़्शी राम जी भी शुभस्थान से साथ ही मांकयाला तक आये थे। वहां से आज्ञा लेकर आप लाहौर तशरीफ़ ले गए।

रावलपिंडी से आप बस में सवार होकर चिनारी के लिए रवाना हो पड़े। जब बस कोहाला पहुंची तो बस स्टाप पर खड़े हुए किसी प्रेमी ने आपको बस में देख लिया और फौरन बाकी प्रेमियों को ख़बर दे दी। फौरन ही सब प्रेमी इकट्ठे होकर आ गए और प्रार्थना की:– आप कृपा करें और कुछ समय उन्हें भी कृतार्थ करते जावें। प्रेमियों ने सत्पुरुष को बड़े नम्र भाव से प्रार्थना करके उतरने के लिए मनवा लिया। आप वहां उतर पड़े। प्रेमी आपको एक खुली जगह छत पर ले गए और सत्संग व सत् विचारों से लाभान्वित होने लगे। श्री महाराज जी के उतरने की सूचना जलमादा भी पहुंच गई और रात के ग्यारह बजे वहां से भी प्रेमी आ गए। प्रेमी प्रार्थना करने लगे कि एक माह यहां ही ठहरें। मगर महाराज जी ने वापसी पर उन्हें वक्त देने को कह कर दूसरी सुबह साढ़े सात बजे की बस में सवार होकर डौमेल पहुंचे जबकि डौमेल का प्रोग्राम नहीं था। बस नौ बजे वहां पहुंची।

प्रेमी ईश्वर दास की निग़ाह चलती बस में श्री महाराज जी पर पड़ गई। फौरन ही सारे डौमेल में आपके आने की खबर पहुंच गई और डौमेल निवासी अपनी श्रद्धा के फूल लेकर चरणों में हाज़िर हो गए और उतरने की प्रार्थना की। इन प्रेमियों की श्रद्धा को देखते हुए आप बस से उतर पड़े और प्रेमियों के साथ चल दिये और लाला गुरांदित्तामल जी के चौबारे में निवास किया। आपके आने की सूचना मुजफ़राबाद भी, जो वहां से डेढ़ मील के फासले पर था, पहुंच गई और मुजफ़राबाद के प्रेमी भी दर्शनों के लिए हाज़िर हो गए। रात के बारह बजे तक प्रेमी सत् विचारों की अमृत वर्षा से तृप्ति पाते रहे। यद्यपि यहां के प्रेमी भी कुछ समय और रुकने की प्रार्थना करते रहे मगर आपने वापसी पर वक्त देने को कहकर दूसरे दिन साढ़े ग्यारह बजे वाली बस में सवार होकर चिनारी तशरीफ़ ले गए। आपके चिनारी पधारने की सूचना पहले पहुंच चुकी थी। चिनारी निवासी प्रेमी डेढ़ मील चिनारी से चलकर आगे आए हुए थे और आपके आने का इंतज़ार कर रहे थे। जैसे ही बस वहां पहुंची, चिनारी निवासियों ने ''ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार'' के नारे बुलन्द किए। प्रेमी बिशनदास जी महाजन, (प्रधान संगत) ने आपके पधारने और दर्शन देने के लिए धन्यवाद किया। और सबके साथ सत्पुरुष पैदल ही चलकर चिनारी पहुंचे और सत्संग हाल में निवास किया। रात के डेढ़ बजे तक

चिनारी निवासी प्रेमी सत्‌विचारों का लाभ प्राप्त करते रहे और ऐसा असर आपकी कृपा का हो रहा था कि नींद भाग गई थी। डेढ़ बजे आपने सबको जाकर आराम करने की आज्ञा फरमाई और आप दरिया के किनारे वाली कुटिया की तरफ तशरीफ़ ले गए।

76. जंगल फैलां में एकांत निवास

आपने चिनारी निवासी प्रेमियों को एक हफ्ता सत् उपदेशों से तृप्त किया। प्रेमी मंसा राम जी ऊपी निवासी ने आपके निवास का प्रबन्ध जंगल फैलां में फारेस्ट डाक बंगला में किया जो छः हज़ार फिट की ऊँचाई पर था, और चरणों में हाज़िर होकर वहां तशरीफ़ ले चलने की प्रार्थना की। यह बंगला लकड़ी का ही बना हुआ था और ऊपी से पांच मील ऊपर पहाड़ में जंगल के बीच स्थित था। प्रेमी मंसा राम जी सेवा में हाज़िर होकर आपको ऊपी एक बस में ले गए और वहां से खच्चर द्वारा आपको फैलां बंगला में पहुंचाया। आपने इस जगह एकांत निवास शुरू किया। आप हमेशा की तरह इस जगह भी रात को जंगल में तशरीफ़ ले जाते और दिन निकलने के बाद वहां से वापस तशरीफ़ लाते।

इस अर्सा में सत्संग शाला का निर्माण मय चार दीवारी अहाता पूर्ण हो चुका था। और बाबू अमोलक राम जी इसे पूर्ण करवाकर काला गुजराँ चले गए। ईंटें भी खत्म हो चुकी थीं इसलिए कमरा लंगर नहीं बन सका था। प्रेमी भाई मंसा राम की पत्रिका भी आ गई कि बाबू जी इधर तशरीफ़ लाकर दर्शन देवें। सत्पुरुष के चरणों में हाज़िर होकर उनके सत् उपदेशों से तृप्ति प्राप्त करने की चाह अंदर दृढ़ हो गई। प्रेमी लाला बख़्शी राम जी और परमार्थी जी से भी पत्र व्यवहार का सिलसिला चल रहा था। वह साहिबान भी तैयार हो गए। बाबू अमोलक राम जी के जाने के प्रोग्राम की सूचना पाकर वह दोनों साहिबान भी काला गुजरां 27 मई को तशरीफ़ ले आए। दोनों साहिबान ने बाबू जी के गृह पर दो दिन ठहरकर उसको पवित्र किया। काला गुजराँ निवासियों को सत्संग द्वारा लाभान्वित किया। 29 मई प्रातःकाल जेहलम स्टेशन से होकर आठ, नौ बजे रावलपिंडी पहुंचे। प्रेमी मलिक भवानी दास जी, डाक्टर शानी लाल जी दीवान व प्रेमी इन्द्रराज जी स्टेशन पर तशरीफ़ लाए हुए थे। बाबू जी दोनों साहिबान लाला बख़्शी लाल जी व परमार्थी जी को उनके सुपुर्द करके शुभ स्थान पर गए। दूसरे दिन वहां से वापस आकर सरदार बूड़ सिंह जी व लाला बख़्शी राम व परमार्थी जी कोहाला के लिए रवाना हो पड़े। कोहाला उतरकर जलमादा गए और वहां कुटिया वग़ैरह के दर्शन करवाये गए। इस जगह चौधरी रामदित्ता मल जी भी नखेत्र पर्वत से तशरीफ लाए हुए थे। यहां से दूसरे दिन डौमेल पहुंचे। प्रेमियों को वहां पर सत्पुरुष के एकांत निवास स्थान भी दिखलाए गए। दूसरे दिन वहां से रवाना होकर चिनारी पहुंचे। इस तरह वहां के दृश्य और सतपुरुष के एकांत निवास की जगह भी दिखलाई गईं। 3 जून को चिनारी से तांगा द्वारा सुबह आठ बजे ऊपी पहुंचे और प्रेमी मंसा राम जी को लेकर जंगल फैलां रवाना हुए। प्रेमी मंसा

राम जी प्रेमियों को एक छोटे रास्ते से ले गए। पुल के करीब तक तो रास्ता ठीक था, जंगल के महकमे की सड़क थी, आगे पगडंडी से ले जाया गया। नदी में उतरकर इससे पार होकर ढाई मील की सीधी चढ़ाई थी। रास्ते में चीड़ का जंगल था। चीड़ के पत्ते जिन्हें छलाफू कहा जाता है, उनकी वजह से फिसलन थी। बाबू जी तो ऐसे रास्तों पर चलने के आदी थे, मगर बाकी प्रेमियों के लिए चढ़ना मुश्किल था। किसी-किसी को पांव से बूट भी उतारने पड़े। बड़ी मुश्किल से यह ढाई मील की चढ़ाई चढ़के दो बजे बाद दोपहर चरणों में पहुंचे और प्रणाम किया। सत्पुरुष के परम सुखदाई चरण कंवलों के स्पर्श से सबके मन को शांति मिली।

77. जंगल फैलां, डाक बंगला और आसपास का विवरण

जिस जंगल में यह बंगला बना हुआ था चीड़ का जंगल था। बंगला लकड़ी का बना हुआ था। इसमें एक छोटा कमरा था और एक बड़ा, और दोनों तरफ बरामदा था। लंगर का कमरा पास ही ज़रा ऊपर बना हुआ था। बंगले के पास ही चश्मा पानी का आता था। पानी बड़ा ठंडा था। यहां नहाने की भी जगह बनी हुई थी। जून का महीना था मगर सर्दी इतनी थी कि दिन के दस ग्यारह बजे तक धूप में बैठना पड़ता था। रात को लिहाफ़ और कंबलों के ओढ़ने से सर्दी से बचाव होता था। आसपास जंगल बड़ा घना था। आबादी आसपास मुसलमान गूजरों की थी। सामने दूसरे पहाड़ पर सिखों का गांव था जिसका नाम शैखजी था। दूध चाय वग़ैरह गूजर पहुंचाते थे। वह मक्खन भी दे जाते थे। गूजर और शैखी निवासी गर्मी के मौसम के कारण अपने माल, मवेशी लेकर ऊपर पहाड़ की चोटियों पर चले गए थे।

श्री महाराज जी से आज्ञा लेकर बाबू अमोलक राम जी ऊपर भी देखने के लिए गए। चीड़ के जंगल से ऊपर आठ हजार फुट की ऊँचाई पर तुंग के पेड़ शुरू होते थे। यह पेड़ बड़ी ऊंचाई तक जाते थे। बड़े पेड़ों का फैलाव इस कदर था कि उनके नीचे बकरवाल अपनी बकरियां लेकर रहते थे। यह पेड़ मकान का काम देते। बारिश का कतरा भी वहां नहीं पहुंच सकता था। जंगल बहुत घना था। इसमें से गुज़रना मुश्किल था। महकमा जंगलात ने सड़क बनाई हुई थी। जहां खत्म होती थी इससे आगे बिना जानकार के जाना मुसीबत मोल लेना था। भूल जाने पर रास्ता मिलना कठिन था। पीर कंठी चोटी सामने थी। पहली पाकिस्तान के साथ जंग में भारत की फौजों ने इसे फतह किया था यह चोटी बर्फ से ढकी हुई थी।

इस जगह एक दिन आपने 'समता बोध' प्रसंग अपने कर-कमलों से लिख करके दिया। सबसे पहले यह बाबू अमोलक राम जी को सत्संग में पढ़ने के लिए दिया। उसे बाबू जी पढ़ रहे थे। जहां लिखा था 'जब तमोगुन प्रधान होता है तो लोग एक दूसरे का हक हासिल करने के लिए कट-कट के मरते हैं। स्वार्थ अंधकार बहुत बढ़ जाता है। कोई शांति का रास्ता दिखाई नहीं देता। एक दूसरे के नाश की ख़ातिर दिन रात लगे रहते हैं। इस कदर वासना अधंकार हर एक जीव को घेर लेता है

कि छल-कपट के बग़ैर एक वचन भी करना कठिन हो जाता है। तब अधिक उपद्रव संसार में प्रगट होने लगते हैं और जीव तमोगुणी वासना के जाल में आकर हर प्रकार की उन्नति को नष्ट करके अधिक दु:खी होते हैं।'' जब प्रसंग का यह हिस्सा पढ़ा तो आपके मुख से यह वचन निकले कि अब यह वक्त आने वाला है।

एक दिन भक्त जी ज़रा देर से चाय लेकर आए और चाय भी मात्रा से ज़्यादा थी। इस पर आप नाराज़ हुए और फरमाया:-

''तुम कोई अपना असूल नहीं बना सकते। इनका असूल भी बिगाड़ते हो। बे वक्त चाय लाये हो, फिर जितनी ली जाती है उससे ज़्यादा ले आए हो। फ़कीरों को ख़्वाह-म-ख़्वाह (व्यर्थ ही) तंग कर रखा है।''

भक्त जी:- यह भी आपकी मेहर ही है (गुस्सा के लहजे से)।

महाराज जी:- सोने को जिधर से काटोगे सोना ही निकलेगा। फ़कीर गुस्सा करेंगे तब भी तुम्हारे वास्ते फायदा ही है।

भक्त जी:- महाराज जी! जब आप क्रोध में होते हैं तब हमारे अंदर भी क्रोध आना लाज़मी है। हम कैसे दिल में कहें कि आप कृपा कर रहे हैं?

महाराज जी:- प्रेमी! फ़कीर शिष्यों के वास्ते जाहरण (बाहरी रूप से) ज़ालिम होते हैं, दूसरों के वास्ते बड़े प्रेम का समुन्द्र। इसमें तुम्हारी बेहतरी है। ख़्वाह-म-ख़्वाह (व्यर्थ में) हम को क्या पड़ी है। तुम हमारे प्रोग्राम में तबदीली न किया करो। वैसे जब कभी साग की ज़रूरत होती है कह देते हैं। तुम्हारा मतलब है कि ज़्यादा से ज़्यादा खिलाकर मोटा-तगड़ा किया जाए। दो तोले दूध तुम ज़्यादा ले आओगे तो क्या बन जायेगा। प्रेमी, इधर से जो कहा जाए सुना करो। यह भी तेरे प्रेम करके शरीर को तेल दिया जा रहा है। वर्ना इसकी भी कोई ज़रूरत नहीं। संगत में विचरने करके पर्दा बना रखा है। वर्ना तीन पाव दूध क्या मायने रखता है। तुम जो मर्ज़ी हो खाओ, पिओ, सेवन करो। इधर से जो कहा जाये वह ही किया करो। थोड़ा खायेंगे तो यह भूखे रहेंगे, तुमको क्यों तकलीफ़ होती है?

एक दिन निम्नलिखित उपदेश आपने अपने कर-कमलों से लिखकर आई हुए संगत के प्रेमियों को दिया।

सत् उपदेश

''आप लोग इतना कष्ट करके इस कठिन जगह पधारे हैं जिस जगह एक नाजुक अंदाज़ आदमी का पहुंचना मुश्किल है। यह आपने अपनी सच्ची श्रद्धा का सबूत दिया है। ऐसी जगह में हाज़िर होकर जो विचार हासिल किया है उसको अच्छी तरह से चित्त में बार-बार विचारने से ज़िन्दगी के असली मकसद का पता लगता है। एक ईश्वर विश्वास ही सर्व सुख देने वाला है। यानि ग़मी में खुशी का प्राप्त होना, कठिन में सहज भाव का हो जाना, ना उम्मीदी में पुरउम्मीदी प्राप्त

होनी और संसार की विचरित हालत में विनाश का निश्चय होना एक प्रभु विश्वास से ही प्राप्त होता है। एक प्रभु विश्वास ही सब सिद्धि के देने वाला है और यह ही करामात सत्पुरुषों की है। सब संसार का विस्तार एक प्रभु शक्ति के आधार पर ही है। इसलिए जिसने एक प्रभु विश्वास प्राप्त किया है वह ही सर्वाजीत पुरुष है।

''किसी को अपनी चतुराई पर विश्वास है, किसी को अपनी प्रभुता पर विश्वास है, किसी को अपनी शारीरिक शक्ति पर विश्वास है, इसलिए अपनी-अपनी कल्पना के मुताबिक हर एक जीव कुछ न कुछ भरोसा लिए हुए विचर रहा है। सत्पुरुषों के अंदर केवल एक सर्व शक्तिमान परमेश्वर का ही विश्वास है जिसके बल से तमाम दुनिया उनके पीछे मारी-मारी फिर रही है। जिस जगह भी यह दृढ़ निश्चय वाला गुणी पुरुष विराजमान होता है उस जगह तीन लोक की संपदा आकर उसके चरण छूती है और चरण चूमती है। यह ही आदर्श एक परमेश्वर की शक्ति का सबूत है। ईश्वर से मन निर्भय और तृप्त हो जाता है, यानी सर्व आनन्द को प्राप्त होता है। यह ही निर्भय अवस्था हर एक जीव अंतर से चाहता है। इस वास्ते गहरी ग़ौर करके विचार करें और एक ईश्वर विश्वास का प्रशाद फ़कीरों की संगत से हासिल करें। यह ही सर्व सिद्धि और सर्व शांति के देने वाला है। बग़ैर ईश्वर विश्वास के कभी भी तृष्णा रूपी अंधकार नाश नहीं होता। इस वास्ते मानुष जीवन की प्रभुता को विचार करके और कर्म संग्राम से विजय हासिल करने की ख़ातिर एक प्रभु विश्वास होना चाहिये। यह ही निर्मल ज्ञान की सार है। ज्यूं-ज्यूं प्रभु विश्वास प्राप्त होता है त्यूं-त्यूं अनात्म पदार्थों से उपरामता हासिल होती है और कर्म फल द्वन्द्व की आसक्ति से मुखलसी (मुक्ति) मिलती है। केवल यह ही ज्ञान सत्स्वरूप आनन्दघन आत्मा को अनुभव करने का है, जो अखंड शांति है। यह जो सार विचार है इसको निर्मल बुद्धि से धारण करके अपनी कल्याण करनी चाहिये। इस संसार की यात्रा में परम फल प्राप्त करने की ख़ातिर एक प्रभु विश्वासी होकर नित ही सत् सिमरण में मन को लगाकर और शरीर से सब जीवों की सेवा की भावना को धारण करके अपने जीवन को व्यतीत करना चाहिये। ऐसी साधना जब अंतःकरण में दृढ़ हो जाती है तब प्रेम अनुराग केवल परमेश्वर का चित्त में प्रकाश करता है जो सब तापों के नाश करने वाला है। ईश्वर निर्मल बुद्धि देवें और सत् विश्वास प्राप्त होवे और नित ही अपने जीवन कल्याण की ख़ातिर इस मार्ग संसार में प्रवीण रहें। जो सत्संग इस जंगल में श्रवण किया है उसको चित्त में धारण करें। प्रभु नित ही कल्याण देवेंगे। सब प्रेमियों को ईश्वर निर्भय जीवन देवें।''

पन्द्रह दिन सत् उपदेशों का लाभ उठाकर और अन्य प्रेमियों के, जो समय-समय पर दर्शनों के लिए आते रहे और सत्संग का लाभ उठाते रहे, भी दर्शन करके 18 जून को वापस लौटे।

एक दिन एक विचारवान महात्मा स्वामी प्रेम दयानंद जी आपके दर्शनों के लिए जंगल में पधारे। खाना वग़ैरह खाने के बाद स्वामी जी ने आपसे अर्ज़ की:- ''महाराज जी! हमारे इधर ठहरने में आपको एतराज़ तो नहीं होगा?''

महाराज जी:- नहीं! खुशी से ठहरो। हां, आपकी सेवा शायद इस जगह ठीक तरह न बन सके। बाकी नशे वग़ैरह तो आप करते ही न होंगे। अगर नहीं, तो ठहर सकते हैं।

स्वामी जी:- रोटी दो तीन फुलके का देन लगा हुआ है। फरमायें तो पत्तों पर भी गुज़ारा चल सकता है। जंगल में इस वास्ते आये हैं एक तो आपके चरणों में ठहरकर कुछ प्राप्त होगा दूसरा गीता उर्दू शेरो शायरी में लिखनी है। बाकी हमारा जीवन अनुभवी नहीं इलमी (किताबी ज्ञान) है। आगे जैसे आपकी आज्ञा।

महाराज जी:- (कुछ ठहर के) देख लो, इधर कोई एतराज़ नहीं।

एक दिन एक मुसलमान मौलवी भी आपके दर्शन करने आये। शाम को लंगर के समय सबको इकट्ठा लंगर दिया गया। दूसरे प्रेमियों ने इस बात को बुरा मनाया कि एक मुसलमान को हमारे साथ ही खाना इन्हीं बर्तनों में खिलाया गया है। उनमें से एक प्रेमी ने महाराज जी से प्रश्न किया।

प्रश्न- महाराज जी! यह तरीका ठीक नहीं। उन्हीं बर्तनों में यह लोग भी खायें और हम भी।

महाराज जी:- प्रेमी! फ़कीरों के दरबार में अलेहदगी नहीं हो सकती। इस जगह सब एक ही हैं। यह तुम्हारे अपने मामले हैं। घरों में जैसे मर्ज़ी हो करो। यहां भी अलेहदापन होने लगा तो आपस में प्रेम कैसे बढ़ेगा? एक थाल में न खाओ, अलग-अलग खाने में तुमको क्या होता है? क्या तुमने इनको नीच समझा हुआ है? ऐसी तुम्हारी तंग ख़्याली ने कहां तक नौबत पहुंचाई है। अपना ऐसा विशाल विचार बनाओ कि यह तुम्हारे में ही जज़्ब (लय) हो जायें। ख़ैर, अब तो सूरत ही और बन रही है। ईश्वर ही मालिक है।

आपके सत् उपदेश किसी ख़ास मज़हब या फिरका के लिए नहीं हुआ करते थे और न ही आपके दरबार में किसी किस्म की पांबदी थी। आपका दरबार बिना मज़हबी भेदभाव के हर एक प्राणी के लिए खुला था। आपने करीबन दो माह इस जंगल में निवास किया।

24 असाढ़, 2001 आप तीन बजे बाद दोपहर जंगल से संगत के साथ पैदल ही नीचे की तरफ चल पड़े। प्रस्थान करने से पहले आसपास के रहने वाले मुसलमान भाई भी ज़्यारत के लिए हाज़िर हुए और उनमें से एक ने अर्ज़ की:- ''पीर जी! हम पर मेहर कर जाओ। हमारी गाय, भैंस, माल, डंगर कभी-कभी दूध देना बंद कर देते हैं, रोड़ा यानि पांव उगल जाते हैं, मुंह से राले छोड़ते हैं। यह बीमारी तंग करती है। इस वास्ते दुआ कर जायें।''

वैसे तो आप रिद्धि-सिद्धि के हक में न थे, लेकिन लोगों की तमन्ना और प्रेम को देखकर और दूध वग़ैरह की जो सेवा उन्होंने की हुई थी इसको ध्यान में रखते हुए आपने थोड़ी देर खामोश रहकर उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया।

एक बड़े पत्थर पर जल गिरवाकर संगत से महामंत्र उच्चारण करवाया और उन्हें कहा कि इस पर दूध डालकर मालिक से ख़ैर मांगा करो। खुदा शफ़ा (दया) बख़्शने वाला है। इसके बाद प्रेमियों से फरमाया:-

''देखा, लोग स्वार्थ की भक्ति के कितने चाहक हैं। वैसे इनका अपना यकीन ही इनको फायदा देगा। स्वभाव से हर एक जीव स्वार्थ की पूर्ति के लिए यत्न-प्रयत्न कर रहा है। कोई ही विरला दिल की अबदी-राहत (स्थायी शांति) के वास्ते कोशिश करता है। सिर्फ़ आशिक ही इसको पाने की कोशिश करते हैं।''

78. चिनारी में सत् उपदेश व सम्मेलन

आप जंगल फैलां से रवाना होकर रास्ते में एक दिन ऊपी ठहरने के बाद चिनारी तशरीफ़ लाए और दरिया के पास कुटिया में डेरा लगाया। लगभग एक महीने तक चिनारी निवासियों को सत्उपदेश से निहाल किया। एक दिन शाम के सत्संग में आपने निम्नलिखित उपदेश देकर संगत को कृतार्थ किया।

जेह सर रुच रुच बांधी पाग।
सो सर चूंडन लागे काग॥

''प्रेमी जीवो! यह संसार संशयों का सागर है। जितने ही मन के अंदर संशय होंगे उतना ही बड़ा उसका संसार होगा। जब-तक विचार नहीं आता विवेक नहीं मिलता, तब-तक भटकता ही रहता है। एक समय कबीर साहब कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक जवान एक पेड़ के नीचे बैठा शीशा सामने रखकर कस-कस के पगड़ी बांध रहा था। कबीर साहब एक तरफ खड़े देख रहे थे। उनके देखते-देखते नज़दीक से एक सांप पास से निकलकर उस नौजवान को डस लिया। नौजवान देखते ही देखते गिर पड़ा और पांच तात्विक शरीर से हवा निकल गई। उस समय काग आये, उन्होंने आते ही सिर और आंखों को नोचना शुरू कर दिया। इतने में गिद्ध भी आ गए। सबने मिलकर मांस खाकर हड्डियां निकाल कर रख दीं। इस जगह कबीर साहब ने यह दोहा पढ़ा।

''जिस शरीर की रक्षा मन-मई होकर करता है उसकी यह हालत। महापुरुष तो हर घड़ी हर चीज़ से शिक्षा लेते रहते हैं । न जीव के अंदर से संशय ख़त्म होते हैं, न उसको शांति मिलती है। यह शांति, सुख इसी में समझता है कि ज़्यादा से ज़्यादा धन मिल जावे, परिवार बढ़ जावे। माल, इकबाल, कोठियां वग़ैरह हो जायें। जिनके पास सब साज व सामान हैं उनसे जाकर पूछो, कहां तक उन्हें शांति मिली है? कोई न कोई संशय हर एक को अशांत बनाए रखता है। चाहे करोड़पति है चाहे कंगाल सबका यही हाल है। जब संशयों को छोड़कर एक हरि का निश्चय हृदय में धारण करता है तब मन संसार से उचाट होता है। ऐसा त्यागी और अनुरागी जीव ही कोशिश करके सर्व विश्राम को प्राप्त होता है। जिसने मन की सही शांति को समझा है वही वडभागी जीव है। दो घड़ी मालिक की याद में रहकर ही सफलता मिल सकती है वर्ना भोगों को भोगकर किसी ने आज तक शांति प्राप्त नहीं की। जितनी दुनियावी चीज़ें अपनी मान रखी हैं एक रोज़ एक पलक में दूसरों की हो जायेंगी। कौन किसका बनता है और कौन किसका है? यह माल, धन, इकबाल, भाई-बन्धु, स्त्री, सुपुत्र, सुन्दर शरीर, यह सब तेरे नहीं हैं। हर एक चीज़ को आख़िर त्यागना पड़ता है। शरीर का

आख़री ठिकाना आग या मिट्टी है। जो भी संसार में आया है पीर, पैग़म्बर, अवतार, गुणी, मुनि, साधु, दरवेश सबने इस संसार को छोड़ा है। पैग़म्बरों का पैग़ाम ही बाकी रह जाता है जिसको सत्संगी, बुद्धिमान जीव पढ़-सुनकर अपनी आकबत (ज़िंदगी) संवार लेते हैं। बाकी जीव जैसे निराशे आये वैसे ही निराशे चले गए। वह भाग्यशाली जीव हैं जिनको सत्पुरुषों का संग मिला और उनके वचनों पर विश्वास आया। तुम सबको ईश्वर सत बुद्धि प्रदान करें। कुछ न कुछ करते रहा करो, मालिक इसमें बरकत डालेगा। कुदरती तौर पर तुम लोग बहुत सारी नुमायशी बातों से बचे हुए हो और कुछ स्वभाव तुमने अपना तबदील कर लिया है। फ़कीरों के वचनों पर अमल करने से ही तुम्हें सुख मिल सकता है। इसलिए इन्हें हृदय से धारण करके सफलता प्राप्त करें। फ़कीर हमेशा किसी के पास बैठे नहीं रहते। ईश्वर आज्ञा से संदेशा देकर चले जाते हैं। प्रभु तुम सबको सत् यत्न बख़्शें।''

सावन की दो तिथि को चिनारी निवासियों ने विशाल रूप से सत्संग सम्मेलन किया जिसमें दूर-दूर से सत्संग के जिज्ञासु पधारे। इस अवसर पर स्वामी प्रेमी दयानन्द जी ने ग्रन्थों, शास्त्रों के हवाले देकर जनता को समझाया कि समता ही वह गोल है जिसको पाने के लिए सब ऋषियों-मुनियों ने कठिन तपस्या की।

इसके बाद श्री महाराज जी ने आई हुई जनता को सत् उपेदशों द्वारा निहाल किया और फरमाया:- संसार की इस वक्त अधिक अशांति का कारण ज़रूरयात का बढ़ जाना है। अशांति तब ही दूर हो सकेगी जब लोग अपनी ज़रूरयात को कम करके सत्पुरुषों के बतलाये हुए साधन धारण करके इस देह की जीवन शक्ति की खोज करेंगे और सत्पुरुषों के कायम-करदा (किए हुए) नियमों को अमली जामा पहना देंगे। यह भी फरमाया कि जिस मनुष्य का अपना जीवन ठीक नहीं, आहार, व्यौहार दुरुस्त नहीं वह ही दुराचारी, पाखंडी और नास्तिक है, ख्वाहे (चाहे) वह अपने आपको ईश्वर का भक्त क्यों न ज़ाहिर करे?

स्वामी प्रेमी दयानन्द जी ने निम्नलिखित कविता भी पढ़ी।

शहनशाह रूहानियत का, अकदस मोजज़ा देखा।
किसी ने अरब में जैसे हो, पानी बे बहा देखा॥
करशमा कौल व ऐमाल था, अस्बाब हैरानी।
वहां एबाब में इख़लाक, व सिदक व सफ़ा देखा॥
फ़ज़ा में हाल और माजी की निस्बत, रात और दिन थी।
ज़हालत का किला, क्लब से ही इलविदा देखा॥
मोहब्बत बाहमी ख़िदमत खलक, नेकी बुरद बारी।
विसाले पाक का इस बुतकदा में, अजतमा देखा।
वहां सत्संग का दरिया, रवां था एक अर्सा से।
ज़हे किस्मत प्रेमी ने भी, इक गौता लगा देखा॥

ज़माना मुझसे गर पूछे नशर वो, गुसल क्या देखा।
कहूंगा बे शुबा खलदें, बरीं से भी मजा देखा॥
वहां थी प्रेमी की बस्ती, व भक्ती का नज़ारा था।
चमन बाग अरमसा, उस जगह मैने खिला देखा॥
श्री महाराज मंगत राम जी, गुलशन के बानी हैं।
महकता हर गुल गुलशन तो, क्या फलको व ख़ला देखा।
सर्व आधार ब्रह्म सत्यं का, नगमाए हक नूरी।
वहां हर एक सज्जन की, जंबा पर बरमला देखा॥
वह सब सत्संग सेवा, सादगी सच संगठन धारी।
जमायत थी मलायक की, बखूबी आज़मा देखा॥
चिनारी में समता समाज, अब रूहे आलम है।
श्री महाराज मंगत राम, जिसका रहनुमा देखा॥
करूं किस जबां से, आफ़ताबे हक का शुक्रिया।
नगाए प्रेम ने कूजां में, दरिया ही छुपा देखा॥

79. पश्चिमी पंजाब व हज़ारा में समता संदेश

यज्ञ की समाप्ति के बाद श्री महाराज जी डोमेल तशरीफ़ ले आए और यहां प्रेमियों को सत् उपदेशों से निहाल किया। डौमेल से 4 अगस्त, 1944 को आप रवाना होकर कोहाला बस से उतर कर जलमादा कुटिया तशरीफ़ ले गए। इस जगह आपने 20 अगस्त तक निवास किया। डोमेल में रवानगी से पहले आपने निम्नलिखित अमृत वचन उच्चारण फरमाये:-

''प्रेमियों! थोड़ा सा समय इधर दिया जा रहा है। क्योंकि सम्मेलन नज़दीक आ रहा है इसलिए समां निकाल कर सत् विचार फ़कीरों के सुन लो। फ़कीरों का आना फिर शायद इधर न हो सके।

''याद रखो, जीवन कल्याण का केवल उपाय सत्संग ही है। सत्संग में शामिल होकर बन्धन व मुक्ति के भेद का पता लग सकता है। संसार में आना किस वास्ते हुआ है? माया क्या है? ईश्वर क्या है? मैं क्या हूं? शरीर के विनाश होने पर जीव किधर चला जाता है? इन सब विचारों का पता सत्संग से ही लग सकता है। राग-रंग द्वारा इस भेद को समझा नहीं जा सकता। सबसे श्रेष्ठ महाकारज संसार में सत्संग ही है। मेरा वास्तविक स्वरूप क्या है? इस गुह्य भेद को समझने के वास्ते सत्संग और सत्पुरुषों की संगत ज़रूरी है। महापुरुष ही इस भेद को समझा सकते हैं जिन्होंने अपने अमली जीवन द्वारा पहले अपने आपको पहचान कर फिर दूसरों के कल्याण के यत्न किए। हर एक जीव ख़्वाहे (चाहे) मशरिक (पूर्व) के रहने वाला है या मग़रिब (पश्चिम) का, अपने शारीरिक

भोगों, कामनाओं व कल्पनाओं को समझता हुआ फिर रहा है और यह भी जानता है कि सुख-दु:ख किस-किस कर्म करके प्राप्त होते हैं। लाभ-हानि, खुशी-ग़मी, मित्र-शत्रु, ज़िन्दगी-मौत, इज़्ज़त-बेइज़्ज़त, लज्जा, भय इस द्वंद्व चक्र में जीव ऐसा फंसा हुआ है कि निकल नहीं सकता। इससे खुलासी पाने की कोशिश करता है मगर मोह, माया का जाल ऐसा है कि इससे निकल नहीं सकता। हर पहलू को अच्छी तरह जानते हुए फिर इस अश्चर्ज संसार के गेड़ (चक्र) में आ जाता है। हर एक जीव की आन्तरिक चाहना निर्भय शांति प्राप्ति की है लेकिन यत्न ग़ल्त होने के कारण शांति की बजाय अशांति को प्राप्त कर लेता है। यह ही अज्ञान, भ्रम या अविद्या है। कल्याण, सत्‌विचार, सत् सेवा, साधन को इखतियार (धारण) करने में है। दूसरों के दु:खों को निवारण करने की कोशिश करना, अपने सुखों को तकसीम (बांटना) करना, असत् विचारों को त्यागना, सत्‌भावों को ग्रहण करना, नित ही महापुरुषों के वचनों को विचारते रहना, नित आत्म विश्वासी होना, यह सत्‌भाव, मन का भरम निवारण करने वाले हैं। इस तरह बुद्धि शुद्ध होकर अपने सही सत् प्रकाश को जान सकती है। पूर्ण निश्चय ही कल्याण स्वरूप है। ईश्वर सबको सत् बुद्धि बख़्शें।

''प्रेमियों! सूरज का काम है रोशनी देना, ख़्वाहे (चाहे) इससे फ़ायदा उठाओ या न उठाओ, यह तुम्हारी मर्ज़ी। इन्होंने ईश्वर आज्ञा से संदेश देकर चले जाना है। कोई उन्हें अपनायेगा तो अपनी कल्याण करेगा, अगर नहीं अपनायेगा अपना ही नुकसान करेगा।'' डोमेल निवासियों को रवानगी का जब पता लगा तो उन्होंने हाथ जोड़कर और समय देने की प्रार्थना की। इस पर आपने फरमाया:- ''जितना सुना है पहले इसको हज़म कर लो फिर देखा जायेगा। घरों में तुम्हारी मजबूरी करके ठहरते हैं वर्ना एक दिन भी न ठहरा जाये। हर समय इनको हृदय में देखें।''

17 अगस्त, 1944 को सुबह ही डोमेल से चलकर कोहाला होते हुए शाम को जलमादा पधारे और कुटिया में, जो प्रेमियों ने बना दी थी उसमें निवास किया और सत् उपदेशों द्वारा जनता, इलाका हजा, को कृतार्थ करने लगे।

एक दिन दोपहर के समय आपने मौज में आकर भक्त बनारसी दास को फरमाया:- ''शेरों के मुकाम पर शेर ही आकर ठहरा करते हैं। कभी यह जेहलम इस स्थान के पास ही बहता था। ऋषि लोग आपस में यहां तत्त्व की बातें किया करते थे। जगह-ब-जगह तप के स्थान बने हुए थे। जगह-ब-जगह पानी के झरने थे। इस वज़ह से इस जगह का नाम जलमादा है। अब फिर सदियों के बाद देखने का मौका आया है।'' इस पर भक्त बनारसी दास ने पूछा:-

प्रश्न- महाराज जी! क्या हम भी इस तरह जन्म-जन्मांतर से शरीरों को धारण करते चले आ रहे हैं?

उत्तर - प्रेमी! यह लेखा अथाह है। कई दफ़ा मिले, फिर बिछड़े। बिछड़-बिछड़ के लेखा पूरा करो ताकि छुटकारा मिले। कमी रह जाती है तब ही संसार में बार-बार आना-जाना पड़ता है। जब अपना आप जान लिया तो फिर वेद-पुराण क्या? जिस रास्ते पर चल रहे हो चलते चलो। अपने आप ही समझ आ जायेगी। यह घोलकर पिलाने वाली चीज़ नहीं। प्रभु आज्ञा से सेवा का

मौका मिला है। सेवा और सिमरण रूपी पदार्थ मिल जायें तो संसार में इससे दुर्लभ वस्तु और क्या है? हर वक्त निग़ाह-सत्पुरुषों के जीवन पर रखो। जिस तरफ वह जा रहे हैं हमने भी उसी तरफ जाना है। जिस आनन्द को हासिल करके वह सेहतयाब हुए वह ही सेहत (स्वास्थ्य) हमने भी हासिल करनी है। ऐसे सत् भाव ही ऊपर उठाने वाले होते हैं। इतना फरमाने के बाद आपने भक्त जी से कहा:- ''प्रेमी! दो घूंट पानी लाओ।''

भक्त जी पानी लाये। आपने इसमें से दो घूंट पानी पिया और बाकी भक्त जी के हवाले करते हुए फरमाया:

''पी जाओ, बुद्धि निर्मल हो। मोह-माया चक्कर अथाह है। इससे बचना ही शूरवीरों का काम है। प्रेमी, यत्न करने से ही जीव इस फंदे से निकल सकता है।''

यहां यह ज़िकर करना ज़रूरी है कि आप पानी नहीं पिया करते थे। शरीर में नुक्स होने पर दो-चार घूंट पी लिया करते थे। उस दिन भी इसी वज़ह से पानी मंगवाया था। तीन दिन तक आपकी तबियत खराब रही और फिर आराम आया।

27 अगस्त को जलमादा कुटिया में विशाल सत्संग सम्मेलन हुआ जिसमें आपने फरमाया:

सत् उपदेश

''ज़हालत, तास्सुब, अज्ञानता, बादमुबाद, खुदग़र्जी सब सत्संग में आने से ही खत्म हो सकते हैं। जो खुशी और सुख एकता में है वह अलग-अलग होकर अपना-अपना राग अलापने में नहीं। जितने भी महापुरुष, पीर, पैग़म्बर, अवतार और गुरु इस संसार में आए सबका शरीर पांच तत्त्वों का ही था। चाहे मशरिक (पूर्व) में हुए या मग़रिब (पश्चिम) में सबका संदेश एक ही ढंग का था। सबने खुदा की ख़लकत (जीव जगत) की खिदमत पर ज़ोर दिया और एक ख़ुदा पर यकीन रखना समझाया। मुख़तलिफ़ (भिन्न-भिन्न) मुल्कों के अलग-अलग लिबास या अलग-अलग ज़बान होने से एकता यानी समता ख़त्म नहीं हो सकती। एकता को ख़त्म करने वाली खुदग़र्ज़ी है। जिस जगह खुदग़र्ज़ी (स्वार्थ) ज़ोर पकड़ जाती है वहां पर लड़ाई-झगड़े शुरू हो जाते हैं। फ़ानी (नाशवान) दुनिया में आकर हर एक इंसान ने अपनी आकबत (अंतकाल) का विचार करना है। किसी ने मस्जिद में बैठकर कर लिया किसी ने मंदिर या गुरुद्वारे में, यह स्थान खुदा की बंदगी, इबादत के वास्ते हैं। यहां ही इंसान नेक विचारों या ख़्यालात को धारण कर सकता है। यह लड़ाई-फसाद की बातें सोचने के वास्ते नहीं बनाये गए। बार-बार इंसानी चोला नहीं मिला करता। इस वास्ते जहां तक हो सके सादगी, जो देवताओं का असूल है, उसे धारण करें। सत्य या सच्चाई, ख़िदमत, सेवा और सत्संग यानि आपस में बैठकर ख़ुदा की बातें सोचना, फिर जितना वक्त हो सके सिमरण यानि खुदा की इबादत में गुज़ारना, यह ही भाव एकता पैदा करने वाले हैं। बाकी दुनिया की हवा इस समय ख़राब चल रही है। शायद फिर इस तरफ फ़कीर न आ सकें। इसलिए फ़कीरों के इन वचनों को याद रखें। आपस की मोहब्बत ही सबको शांति प्रदान कर सकेगी। ईश्वर सबको अक्ले सलीम (श्रेष्ठ बुद्धि) बख़्शें।''

इस सत्संग में हिन्दू, मुसलमान, सिख सबने हाज़िर होकर लाभ उठाया। इन विचारों के बाद सत्संग की कार्यवाही ख़त्म हुई और लंगर तकसीम किया गया। रात को जब सारी संगत चली गई और थोड़े से प्रेमी रह गए तो आपने उनसे फरमाया:

''प्रेमियों! अब सम्मेलन नज़दीक आ रहा है तन, मन, धन से सेवा करने का समां आ गया है। सेवादार प्रेमी पहले पहुंचने की कोशिश करें, क्योंकि इस दफ़ा बाहर से और भी कई नये प्रेमी आवेंगे।''

प्रेमी:- महाराज जी! सब आपकी कृपा से होगा। बच्चों की सलाह क्या हो सकती है?

महाराज जी:- प्रेमी जी! आपको परमेश्वर का रूप समझकर बात की जा रही है। वैसे सब कुछ मालिक ने ही करना है। सिर्फ़ तुम्हारे सत्भाव ही देखे जाते हैं।

रात सब प्रेमियों ने आराम किया। दूसरे दिन सुबह बाहर से जब आप आसन पर पधारे और प्रेमी बाहर से भी दर्शनों के लिए आने लगे उस वक्त आपने भक्त जी से फरमाया :

''बनारसी! बिस्तरा बांधो, अब क्या देखते हो?''

किधर गया भोर, जो उठावे पहाड़ नूं।
जांदी वार न मिलया, महरम यार नूं॥

''यह संसार चलो-चली का मेला है। राहगीर को मंज़िल पर पहुंचने की कोशिश करनी चाहिए। उसे राह की चीज़ों से मोह नहीं बढ़ाना चाहिये, नहीं तो अपने असल ठिकाने पर नहीं पहुंच सकेगा। विचार हो या चोट लगे तब वैराग्य होने से किनारे लग सकता है।''

भक्त जी:- महाराज जी! इस दोहे का क्या मतलब है?

महाराज जी:- प्रेमी! एक डाकू था। माल-ख़जाना लूटकर काबुल की तरफ जा रहा था। सरदार एक आला ऊंट पर सवार होकर सबसे आगे जा रहा था। बाकी डाकू पीछे थे और ऊंटों पर ही सवार थे। एकदम सरदार के ऊंट को ठोकर लगी। ऊंट गिरने ही लगा था कि सरदार ने छलांग लगा दी। ऊंट ने गिरते ही प्राण छोड़ दिये। सरदार के पीछे वाले सब डाकू उतरकर खड़े हो गए। सरदार बड़ा हैरान था कि किसी जगह चोट नहीं आई, सिर से पांव तक सारा सही सलामत था। एक दम इसमें से कौन सी चीज़ निकल गई। इतना बड़ा जिस्म पत्थर बन कर रह गया। वक्त रुख़सत (विदाई के समय) अपने मालिक को सलाम भी न करके गया। मेरे साथ उसकी बड़ी मोहब्बत थी। बड़ी सोच में पड़ गया, जो चीज़ कफ़से अंसरी (शरीर) से परवाज़ (निकल) कर गई है वह क्या है? हो सकता है मेरा भी यही हाल हो। मैंने अभी तक कोई नेक काम नहीं किया। ऐसा कह ही रहा था कि बाकी साथी कहने लगे, ''आज सरदार साहब किस सोच में पड़ गए हैं। दुनिया में आना-जाना लगा हुआ है इसमें सोचने वाली क्या बात है?'' मगर सरदार ने उनकी बातों की परवाह न करके हथियार वग़ैरह उतारकर फैंक दिये। सिर्फ़ एक कपड़ा जिस्म पर रहने दिया। सबको सलाम करके जंगल की राह ली। प्रेमी, जिसने भी पाया उसने वैराग्य द्वारा ही पाया। इस वास्ते हर वक्त सफ़र में तैयार रहना चाहिये, किसी घड़ी भी काल का बिगुल बज सकता है।

80. सहर बगला में निवास

28 अगस्त को आप जलमादा से चलकर कोहाला बस में सवार हुए और वहां से सहर बगला पहुंचे। आपने उस जगह बख़्शी कुन्दन लाल जी के गृह पर तीन दिन निवास किया और सत् उपदेशों द्वारा उन्हें निहाल किया।

81. सराये सालहा हरीपुर में आगमन

सहर बगला से आप 2 सितम्बर को रवाना होकर नदिया गली, ऐबटाबाद होते हुए सराये सालहा पहुंचे। इस जगह भी आपने प्रेमी चुन्नी लाल चोपड़ा के गृह पर निवास किया। प्रेमी आसानन्द जी एडवोकेट, हरीपुर से सेवा में हाज़िर हुए और वहां चलने की प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना को स्वीकार करके आप 5 सितम्बर को हरीपुर तशरीफ़ ले गए और एक हफ़्ता उनके बंगले पर ठहरे। इस जगह सत् उपदेशों का लाभ उठाने के लिए काफी संख्या में जनता हाज़िर होती और उनका इतना असर हुआ कि काफी लोगों ने मांस, शराब इत्यादि नशे वाली चीज़ों का त्याग किया। एक दिन आपने फरमायाः- ''ये लोग पुराने ख़्यालों में दबे हुए हैं। वैसे श्रद्धा भाव वाले हैं, लेकिन राक्षसी स्वभाव भी साथ है। ईश्वर ही सबको सुमति देवें। भ्रष्ट आहार ही सब बुराइयों की जड़ है। इधर काफी समय देने की ज़रूरत है।''

इस जगह सत्संग आठ बजे शुरू होता था। एक दिन आपने निम्नलिखित सत् उपदेश देने की कृपा की।

सत्उपदेश अमृत

''प्रेमियों! इस समय सत्सरूप का निश्चय अलोप होता जा रहा है। कभी ऐसा समय था घर-घर में आत्म ज्ञान का विचार होता था। आज धर्म का सारा स्वरूप ही ग़ायब हो गया है। हर एक जीव रात-दिन माया की पूजा में लगा हुआ है। शरीर की बनावट, सजावट में ही सारा समय लगा देते हैं। सही सत् विचार न होने करके हर जीव अशांत हो रहा है। गो (यद्यपि) लोग मंदिरों, गुरुद्वारों में जाकर प्रार्थना करते हैं मगर अन्तर में खोटी वासना के होने से किसी को भी मानसिक शांति प्राप्त नहीं हो रही। हर एक का धर्म आजकल सिनेमा देखना, खाना-पीना ही बना हुआ है। ख़ासकर साधु प्रणाली ने भी इसमें प्रवेश कर रखा है तो बाकी ग़रीब जनता किधर जाये, कहां से सबक ले? साधुओं का ही बुरा हाल है, गृहस्थियों को क्या कहा जाए? जीभा की रसना में गृहस्थी, विरक्ती सब ही फंसे हुए हैं। दिन-रात सब करूर (बुरे) कर्म ही कर रहे हैं। चाहे कोई वन में रहने वाला है चाहे शहर में, हर एक को तृष्णा की आग जला रही है। ऐसे घोर कलियुग में धर्म का निश्चय किस तरह दृढ़ हो सकता है। ख़ैर, प्रभु कृपा से बीज नाश नहीं हुआ। अंधकार के साथ प्रकाश भी होता है, तभी ऋषियों के तपोबल से संसार की मर्यादा कायम रहती है। हर जीव को चाहिए कि मन की मलिन को दूर करने के वास्ते दीन-ग़रीबी, सत्, सील, संतोष आदि शुभ गुणों

को धारण करे, खोटे भाव त्यागे, सादगी को धारण करके मन, वचन, कर्म शुद्ध करे। दीन, दु:ख़ी, अनाथों की यथा शक्ति सेवा करे। समां निकाल कर सुबह-शाम दो घड़ी मालिक की याद करके बुद्धि को निर्मल करे। ईश्वर ऐसी ही निर्मल बुद्धि सबको बख़्शें।''

उस्मान खट्टर से प्रेमी सेवा में हाज़िर होकर प्रार्थना कर रहे थे कि कुछ समय वहां भी देने की कृपा करें। आपने उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और 11 सितम्बर, 1944 को वहां तशरीफ़ ले गए। बाबू अमोलक राम जी भी इस जगह सेवा में हाज़िर हो गए थे। इस जगह आपके कान में तकलीफ़ शुरू हो गई। बावज़ूद इलाज के कोई लाभ न हुआ। लेकिन बावज़ूद तकलीफ़ के आपने अपना प्रोग्राम नहीं तोड़ा। आप नियम अनुसार सुबह से लेकर रात तक एक आसन पर बैठे सत्‌विचारों द्वारा प्रेमियों को लाभ पहुंचाते और रात को नदी के किनारे तशरीफ़ ले जाते और समाधि ग्रस्त रहते। दिन निकलने के बाद स्नान करके वहां से वापस गांव में तशरीफ़ लाते।

चूंकि सम्मेलन का प्रोग्राम निश्चित हो गया था इसलिए 19 सितम्बर को आप उस्मान खट्टर से रावलपिंडी तशरीफ़ ले आए। इस जगह आप मर्यादा को कायम रखने के लिए अपने बड़े भाई के घर पधारे और उनसे सम्मेलन की आज्ञा ली और प्रार्थना भी की-कि सम्मेलन में ज़रूर शामिल हों। जब आपने बड़े भाई पंडित ठाकुर दास जी से प्रार्थना की तो वह फरमाने लगे:-

''प्रभु के कामों में हम क्या राय दे सकते हैं? मान रखने के लिए आप कृपा करते हैं। ईश्वर आपकी सहायता कर रहे हैं। शरीर रहा तो आने की कोशिश की जायेगी।''

यहां यह अर्ज़ कर देना ज़रूरी है कि आपके बड़े भाई भी बड़े साधारण और पवित्र ख़्यालात वाले इंसान थे। वह भी ज़्यादा समय नाम सिमरण में लगाते थे।

रावलपिंडी संगत को भी सम्मेलन की सूचना दी गई और सम्मेलन में हाज़री के लिए कहा गया कि सम्मेलन का सारा बोझ इस संगत पर है। रावलपिंडी से 22 सितम्बर को आप शुभ स्थान के लिए रवाना हो गए। आपके कान में तकलीफ़ बराबर चल रही थी। इधर सम्मेलन के दिन नज़दीक आ रहे थे। बाहर से संगत आनी शुरू हो गई। सामान एकत्र होना शुरू हो गया, मगर आपके कान की तकलीफ़ बराबर चल रही थी जो प्रेमियों को उदास कर रही थी। सम्मेलन से एक दिन पहले यानि 21 अक्तूबर, 1944 को, जबकि सेवादार अपने-अपने सेवा के कार्य में लगे हुए थे, तब आपके कान की तकलीफ़ बढ़ गई। फिर भी आपने प्रेमियों को अपने पास नहीं बैठने दिया और उन्हें अपनी-अपनी सेवा जारी रखने की आज्ञा दी। बावज़ूद तकलीफ़ के आपने अपने प्रोग्राम में तबदीली नहीं आने दी। आप काफी रात रहते ही जंगल में तशरीफ़ ले जाते। 22 अक्तूबर सुबह जब प्रेमी सेवा में हाज़िर हुए और स्वास्थ्य के बारे में पूछा तो आपने उत्तर दिया:-

''सबको ईश्वर आज्ञा में रहना पड़ता है। इसमें घबराने की ज़रूरत नहीं। इस दफ़ा संगत की सेवा अच्छी तरह न हो सकेगी। थोड़ा विचार सबके आगे रखा जायेगा। सब जाकर इंतज़ाम करो।''

इस दफ़ा पंडाल सत्संग हाल के अहाते में लगाया गया था। शामयाने वग़ैरह रावलपिंडी से लाये गए थे। सत्संग ठीक वक्त पर नौ बजे महामंत्र और मंगलाचरण के उच्चारण से शुरू किया

गया। इसके बाद प्रेमी लाला बख़्शी राम जी व लाला अनंत राम जी कुन्द्रा व प्रेमी राम लाल जी परमार्थी ने अपने-अपने विचार संगत के सामने रखे। कुछ प्रेमियों ने वाणी पढ़ी और कुछ ने भजन पढ़े।

श्री महाराज जी ने कान दर्द के कारण सिर्फ लिखकर निम्नलिखित संगत को आशीर्वाद दिया जो बाबू अमोलक राम जी ने संगत को पढ़कर सुना दिया।

''सब संगत का धन्यवाद है जो दर्शन दिये। चूंकि तबीयत अलील (ख़राब) है इसलिए कुछ विचार सेवा में नहीं हो सकते। सिर्फ आपको आशीर्वाद दी जाती है। ईश्वर सत् श्रद्धा, भक्ति देवें और तमाम तकलीफ़ को नज़रअंदाज करके सब शांतिपूर्वक जावें।''

इसके बाद प्रशाद तकसीम किया गया और फिर सारी आई हुई संगत को कतारों में बिठाकर प्रशाद खिलाया गया। आसपास की जनता तो प्रशाद खाकर रवाना हो गई और इसके बाद आहिस्ता-आहिस्ता बाहर से आये हुए प्रेमी भी रवाना हो गए।

शुभ स्थान पर बावज़ूद इलाज के कान की तकलीफ़ में कोई कमी नहीं हुई बल्कि शरीर में काफी कमज़ोरी आ गई। इसलिए आपने प्रेमी कश्मीर चंद जी तलवाड़ की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया कि रावलपिंडी उनके गृह पर तशरीफ़ ले आवें, वहां डाक्टरों को दिखलाकर इलाज करवाया जावेगा। इस पर श्री महाराज जी को ख़ास साधन द्वारा मांकयाला स्टेशन पर पहुंचाया गया। वहां से गाड़ी द्वारा रावलपिंडी पहुंचे और प्रेमी कश्मीर चंद जी तलवाड़ के गृह पर निवास किया। जब प्रेमियों ने डाक्टर बुलाने की अर्ज़ की, तो आपने फरमाया:

''दिखा लो जिसको दिखाना है, आराम तो वक्त पर ही आवेगा।'' कई डाक्टरों को दिखाया और इलाज भी किया गया, मगर कोई लाभ नहीं हुआ। इसके बाद डाक्टर शानी लाल ने होम्योपैथिक दवाई दी, उससे कुछ लाभ हुआ। एक दिन आपने खुद ही प्रेमी कश्मीर चंद जी से फरमाया:

''प्रेमी! तुम्हारे पिता बड़े हकीम थे। उनका कोई ग्रंथ निकालो शायद कोई कान दर्द का तेल लिखा हो।''

आज्ञा पाकर कश्मीर चंद जी फौरन दो-तीन किताबें उठा लाए। तलाश करने के बाद दो-तीन नुस्खों में से एक नुस्खा आपने तजवीज़ किया और उसे बनाने के लिए फरमाया। पहली बार जब कान में वह तेल डाला गया तो अग्नि पर बर्फ की ठंडक जैसे पड़ जाती है ऐसे ही कान का दर्द भी दूर हो गया। फरमाने लगे:

''प्रेमी! जो टीस उठती थी वह बंद हो चुकी है। शायद कुछ लाभ दे जाये।''

यह वचन सुनकर एक प्रेमी ने सेवा में अर्ज़ की:- ''महाराज जी! आप ही बताने वाले हैं। आप ही सबका इम्तहान ले रहे थे। हमारी चालाकियां क्या फ़ायदा दे सकती हैं?'' ख़ैर दो-तीन दिन और तेल डालने से काफी आराम हो गया। उन्हीं दिनों कश्मीर चंद जी की भैंस गिरकर मर गई। इस पर आपने फरमाया:

''एक जीव ने इस घर से जाना था। अच्छा, जैसी आज्ञा।'' बाबू अमोलक राम जी ने, जो इस दौरान साथ ही सेवा में रहे, एक दिन सेवा में अर्ज़ की:

बाबू जी:- महाराज जी! जहाँ तक दास ने धार्मिक पुस्तकों में, जो योग से सम्बंध रखती हैं, पढ़ा है, योगीराज अपना दु:ख-सुख स्वयं निवारण कर सकते हैं। आप क्यों ऐसा नहीं करते? और दूसरा सवाल जो पूछा वह यह था कि आप का जीवन इतना पवित्र है, तमाम उम्र में आपने कोई पाप नहीं किया बल्कि इतनी जबरदस्त तपस्या की और आला मेहराज़ (लक्ष्य) को हासिल कर चुके हैं, फिर आपको इतना दु:ख क्यों हुआ है?

श्री महाराज जी:- महापुरुष कुदरत के किसी काम में दखल नहीं देते। गो (जबकि) वह सब कुछ कर सकते हैं मगर ईश्वर इच्छा में दखल नहीं देते।

दूसरे प्रश्न के उत्तर में फरमाया :

''कई जन्मों के कर्मों के फल भोगने होते हैं। शायद किसी जन्म के कर्मों का फल भोगना पड़ गया हो, जिसे भोगना ज़रूरी होगा। महापुरुष जो निर्वान अवस्था को प्राप्त कर चुके हैं वह अपना सब हिसाब बेवाक (समाप्त) करके चोला छोड़ते हैं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस को कंठ माला के आर्जा (रोग) ने बहुत दु:खी कर रखा था, स्वामी राम तीर्थ को संग्रहनी का आर्जा हो गया था, वग़ैरह! लेकिन उन्होंने प्रभु के हुक्म को नहीं तोड़ा। बाज़-औकात महापुरुष अपने शिष्यों के करूर (बुरे) कर्मों की सजा अपने ऊपर ले लेते हैं और शिष्यों के तमाम ताप हरण कर लेते हैं। यह उनकी बड़ी उदारता और दयालुता है। यानि बाज़ दफ़ा महापुरुषों ने संसार के सुधार की ख़ातिर बड़े से बड़े कष्ट अपने शरीर पर उठाये। यह उनकी परम उच्च अवस्था का लक्षण है। आप भी इस वक्त के शारीरिक कष्ट को अपनी और संसार की कुछ कल्याण का ही मूज़िब (कारण) जानें। ईश्वर की आज्ञा पूर्ण हुई।''

82. स्वस्थ होने पर सत् उपदेश

कान के दर्द में लाभ होने पर भी शरीर में कमज़ोरी बहुत थी जो आहिस्ता-आहिस्ता दूर होनी शुरू हुई। जब जिस्म में कुछ शक्ति आई तो प्रेमियों की प्रार्थना पर श्री महाराज जी ने सत्संग के लिए दिन निश्चित किया और शहर रावलपिंडी में सूचना दे दी गई। निश्चित समय पर काफी संगत प्रेमी कश्मीर चंद तलवाड़ के मकान पर जमा हो गई। महामंत्र व मंगलाचरण से, जिसे सब प्रेमियों ने मिलकर पढ़ा, सत्संग शुरू हुआ। उसके बाद वाणी पढ़ी गई। फिर श्री महाराज जी ने निम्नलिखित उपदेश से संगत को निहाल किया।

सत् उपदेश

''प्रेमियों! प्रार्थना यह है कि आज का सत्संग कोई नया सत्संग नहीं है। इससे पहले भी कई दफ़ा प्रेमी लोग सत्संग सुन चुके हैं, उनको असलियत का पता है। आज का सत्संग प्रेमियों ने इस

वास्ते तजवीज़ किया है कि काफी अर्सा से यह शरीर कष्ट में था। यह कष्ट ढाई माह तक रहा। इसका कारण कुदरत कामला (प्रकृति) ही जानती है। कई हकीम व डाक्टर बुलाए गए लेकिन वह इस मर्ज़ की तशख़ीस (खोज) न कर सके। आख़िर इसकी निवृत्ति उस ईश्वर की तरफ से हुई। सिर्फ जिन-जिन प्रेमियों ने इम्तहान देना था उनको मौका मिल गया। इनका ख़्याल है कि जहां तक जीवन व्यतीत हुआ वह महज़ हवा और पानी पर कायम था। मगर जनता की दुखित हालत को देखकर इतना फाका कशी (निराहार) के बावज़ूद इस शरीर से काम बहुत लिया गया और कुछ पुर्ज़ों में नक्स वाका (खराबी) हो गया था, या किसी कर्म चक्कर का भोग भोगना पड़ा या प्रभु इच्छा ही ऐसी थी। गो, प्रेमियों ने निहायत कोशिश की, डाक्टरों व हकीमों ने देखा लेकिन उनकी समझ में कुछ न आया। आख़िर प्रभु कृपा से खुद ब खुद सेहत हो गई। बाबू कश्मीर चंद ने बहुत कष्ट उठाया, यानि कुदरत की प्रेरणा पर उसने सेवा का जिम्मा लिया। उसने अपने सुख को त्याग करके असली खुशी से अपने चित्त को प्रसन्न किया। प्रभु ही इनके इस कार ख़ैर का अज्जर (फल) देंगे। ज्ञानी, पीर, अवतार, गुरु सब अपने-अपने कर्म संस्कार की सज़ा पाते हैं, कर्म दंड अमिट है। फ़र्क सिर्फ इतना है कि मूर्ख इसको लाचारी से भोगता है और ज्ञानी लोग सबर और सन्तोष से भोगते हैं।

''हर जीव जो इस संसार में आया है ख़्वाह अमीर हो ख़्वाह ग़रीब हो, राजा हो या भिखारी हो सबके अन्दर खुशी की चाह या तलब है। मगर यत्न, प्रयत्न करते हुए अपनी दानाई (बुद्धिमानी) और लियाकत (बुद्धि) का ज़ोर लगाते हुए भी दुःख या ग़मी की ग़ार (कीचड़) में धकेले जाते हैं। जब शरीर की विनाश हालत होती है। उसकी सब खुशियां ग़मों में बदल जाती हैं। आख़िरी फैसला यह है कि संसार में जो देखने मात्र सुख है असल में वही दुःख है। जितना बड़ा दौलतमंद है उतना ही ज़्यादा उसका चित्त जलता रहता है क्योंकि यह शरीर की कैद से मजबूर है। बावज़ूद सब सामान होते हुए उसको शांति नहीं, लेकिन फिर भी इस घंबर-घेरे (भूल-भुलइयां) से निकलना मुश्किल है। कर्म दंड ज़बरदस्त और अमिट है।

''फ़िलास्फ़रों, ज्ञानियों और महापुरुषों ने सोचा कि दुनिया क्या चीज़ है? इसका आगाज़ अंजाम (नतीजा) क्या है? दुनिया का ग़लत प्रयोग क्या है जिससे लोग सज़ा पा रहे हैं? इन सब बातों को विचार कर ज्ञानियों ने अपना अनुभव ग्रन्थों में ज़ाहिर किया और जीवों के कल्याण की ख़ातिर इनको छोड़ गए। इन पुस्तकों के पढ़ने से मालूम होता है कि संसार में पैदाईश और फ़ना (मौत) का सिलसिला जारी है अर्थात यह संसार द्वन्द्व रचना है, एक तरफ खुशी है तो दूसरी तरफ ग़मी, कोई अमीर है तो कोई ग़रीब। अलगर्ज़ (आख़िरकार) जो दुनिया में आया आख़िर ग़म में ही इस दुनिया से गया, शांति नहीं पाई। ज्ञानियों ने शांति का रास्ता लोगों को दिखलाया जिससे इंसान कल्याण प्राप्त कर सके। जो रास्ता असली शांति का है उसको स्वीकार करना ही कल्याण का मार्ग है। जीव पांच अनासर (तत्त्व) के शरीर में कैद है और इसके सम्बन्ध में ही सुख-दुःख पा रहा है। शरीर के नाश होने पर भी यह बहुत दुःखी होता है इसलिए उन्होंने सार निकाला कि धर्म मार्ग ही

एक तरीका है जिसको इख़्त्यार (अमल) करने से जीव को दु:खों से निज़ात (मुक्ति) मिल सकती है।

''धर्म किसको कहते हैं? पवित्र धारणा को। जिसको ग्रहण करके मन उपाधियों से निकल कर ईश्वर या कुदरत कामला की तरफ जावे। मनुष्य जीवन में ही परम शांति को पाया जा सकता है और इसका एक मात्र साधन है तन, मन, धन का त्याग।

''धन का त्याग– धन के बग़ैर जीवन का निर्वाह होना कठिन है और धन का ज़्यादा होना भी जीव को क्लेश देने वाला है। इसलिए महापुरुषों ने कल्याण का मार्ग यह तजवीज़ फरमाया कि जो संपत्ति अपनी पवित्र कमाई से प्राप्त होवे उसका कुछ हिस्सा अपनी जीविका में सर्फ़ (खर्च) करे और कुछ हिस्सा निष्काम भाव से अधिकारी जीवों की सेवा में लगा दे। ऐसा निश्चय करने वाला जो पुरुष है वह नाज़ायज़ तरीके से कभी भी धन के मोह में आसक्त न होवे। यह साधन तमाम पापों के नाश करने वाली है।

''तन का त्याग– जो इस रीति को धारण करता है वह अपने जीवन को परम शांति की तरफ ले जाता है, अर्थात् जो दूसरों के दु:खों को मिटाने के लिए अपने शारीरिक सुखों का त्याग करता है वह ही परम भक्त भाग्यवान पुरुष शरीर के तमाम विकारों से छूट कर आत्म निश्चय को प्राप्त होता है।

''मन का त्याग– यह है कि मिथ्या संकल्प-विकल्प जो अंत:करण में उदय होते हैं उनके नतीजे को प्रभु इच्छा में समर्पण करके हर वक्त अपने आपको ईश्वर परायण बनाना और सत् पुरुषार्थ को धारण करके हर एक जीव को सुख देना अपना धर्म जाने।

''ऐसी भावना जिस पुरुष को प्राप्त होती है यानि जो अपने तन, मन, धन की आसक्ति को त्याग कर अपने आपको हर घड़ी हर लम्ह प्रभु परायण बनाता है वह ही परम ज्ञानी आत्म आनन्द अर्थात अबनाशी सुख पाता है, जिस सुख की वास्तव में चाहना हर एक जीव को हर वक्त लगी रहती है।

''इंसान को चाहिये कि यथार्थ धर्म पर चलकर अपना कल्याण करे। इस संसार चक्कर में भांति-भांति के जीव विचर रहे हैं। मगर सभी अपनी-अपनी बुद्धि के मुताबिक अनेक प्रकार के सत् असत् कर्म करके हृदय में क्लेशवान ही रहते हैं और उनको सच्ची शांति प्राप्त नहीं होती। इस अशांतमई जीवन का विचार करके अपने आप को पर-उपकार के मार्ग में दृढ़ करना चाहिये जिससे असली त्याग प्राप्त होवे और संसार की विनाश हालत का निश्चय आवे और प्रभु की परम शक्ति में दृढ़ अनुराग प्राप्त हो। मतलब यह कि जब प्रभु चरणों में परम श्रद्धा पैदा होती है तभी जीव सब क्लेशों से मुक्त होकर निर्भय हो जाता है।

''यह संसार मार्ग बड़ा विकट है। सब कुछ जानते हुए भी जीव अनर्थक कल्पना के वश होकर नाना प्रकार के उपद्रव धारण कर लेता है। इसलिए लाज़मी है कि अपने सही जीवन का विचार करे।

''विचार करने से मालूम होता है कि जीव अपनी कामना के अनुसार शरीर को धारण करके संसार में विचरता है और अपनी बुद्धि के द्वारा अनेक प्रकार के कर्म करके हर वक्त अशांत रहता है। जिसने अपने जीवन का सही विचार नहीं किया और संसार को सत् जानकर जो मान-मद में गिरफ़्तार होकर बहुत ही विलक्षण कर्म करता है वह आखिकार अनन्त पश्चाताप को ही साथ ले जाता है।

''शरीर एक बिगड़ने वाली वस्तु है। इस वास्ते जो भी समय जीवन का है उसको धर्म मार्ग में दृढ़ करके अपने कल्याण में कौशा (लगे) रहना चाहिए। स्वार्थ सम्बन्ध में मोह वश होकर नाना प्रकार के यत्न-प्रयत्न से मनुष्य अपने कबीले (कुनबे) की परवरिश करता है। मगर जब अपने कष्ट का समय या आख़िरी वक्त आता है तब उसका कोई सहायक नहीं होता। आख़िर अपनी करनी का दंड आप ही भोगना पड़ता है। इन सब बातों को मद्देनज़र (ध्यान) रखकर गुणी पुरुष नज़ायज़ मोह को तर्क (छोड़) करके अपने फ़र्ज़ मंसबी (कर्तव्य) को जानते हुए साधारण तरीके से अपने स्वार्थी संबंध और दीगर (अन्य) जीवों के कल्याण में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसे ही पुरुष ईश्वर के सत् नियम का पालन करने वाले हैं। एक दिन वह ही परम शांति को प्राप्त होते हैं।

''शरीर एक मियाद (सीमित समय) तक रहने वाली चीज़ है। जिसने ज़िंदगी में इस बात का विचार नहीं किया वह बड़े से बड़े संसारी ऐश्वर्य को प्राप्त करके भी आखिर इस संसार से बहुत ही क्लेशवान होकर जाते हैं। जिन्होंने मानुष जन्म लेकर फ़र्ज़ को पूरा नहीं किया है वह संसार के पशु के समान विचरने वाले हैं। इस वास्ते शरीर की विनाश हालत का विचार करके और संसार की नापायेदारी (नश्वरता) को ध्यान में रखते हुए नित्य ही अपने आपको ईश्वर परायण बनाकर तन, मन, धन से सब जीवों की सेवा करना और चित्त में हर वक्त निर्मान और उपराम रहना ही परम धर्म है और यह ही आत्म स्वरूप अखंड शांति के देने वाला साधन है।

''हर वक्त जीवन को समान हालत में रखना यानि न अति मोह में आसक्त होना और न ही नारवा (अनुचित) तरीके से संसार का त्याग करके दुनिया के वास्ते अपने आपको बोझ बनाना चाहिये। बल्कि सत विश्वास द्वारा अपनी ज़रूरियात पर काबू पाकर दूसरों के जीवन का उद्धार करना अपना फ़र्ज़े मंसबी (मुख्य कर्तव्य) समझकर जीवन व्यतीत करना ही असली कल्याण का मार्ग है। तमाम बुज़ुर्गों और पेशवाओं के जीवन को मद्देनज़र रखकर अपने आपको सादगी, सेवा, सत, सत्संग और सत सिमरण आदि महागुणों में प्रवृत्त करना ही मानुष जन्म की सार है। इसलिए सब प्रेमियों को अपना-अपना जीवन अमली बनाना और दूसरों के वास्ते एक आदर्श स्वरूप में पेश करना ही समता का सिद्धान्त है। बस पूरी कोशिश करके इन्हीं सत् असूलों को धारण करके अपना और दूसरों का कल्याण करना चाहिये।

''चूंकि शरीर कमज़ोर है इसलिए ज़्यादा विचार नहीं किया जा सकता। जो बातें ब्यान की गई हैं उन पर अमल करना ही असली धर्म और अपने कल्याण का मार्ग जानना चाहिये।'' आरती व समता-मंगल उच्चारण करने के बाद सत्संग सम्पूर्ण हुआ और प्रशाद बाँटा गया।

83. काला गुजरां में एकांत निवास

श्री महाराज जी ने 15 दिसम्बर, 1944 तक रावलपिंडी में तलवाड़ साहब के मकान पर निवास किया। यद्यपि कमज़ोरी काफी थी मगर बाबू अमोलक राम जी की प्रार्थना को स्वीकार करके उनके साथ काला गुजरां तशरीफ़ ले आए। 16 दिसम्बर गाड़ी में सवार होकर दोपहर बाद काला गुजरां पहुंच गए। दो-तीन दिन बाबू जी के गृह को पवित्र करके नबी बादियां, जो एक एकांत स्थान आबादी काला गुजरां से आधा मील बाहर था, तशरीफ़ ले गए। वहां ऊपर छत पर एक कमरा था उसमें आपके ठहरने का प्रबन्ध कर दिया गया था। यह जगह आगे ही सत्पुरुषों की तपोभूमि थी और यह स्थान बड़ा सुन्दर व रमणीक था। श्री महाराज जी ने कुछ दिन संगत को दर्शनों के लिए आने से मना कर दिया ताकि स्वास्थ्य ठीक हो जावे और कमज़ोरी दूर हो। आपने इस जगह से रावलपिंडी की संगत को अमृतवाणी द्वारा निम्नलिखित शिक्षा फरमाई :

अत दुस्तर यह संसार है, नित-नित करो विचार।
सत् संगत सतनाम में, नित निर्मल प्रीति धार॥
छिनभंगर सब रचना, जो भांत-भांत दरसाये।
तिसके मोह में जीवड़ा, तीन काल भरमाये॥
निज आनन्द सत् शब्द है, बिन परसे नहीं ठौर।
काल करम की वासना, यह चक्कर चौरासी घोर॥
इन्द्री भोग के सुख में, नित जिया उठ धाये।
बहुरंग संपत पाये के, तो भी तिरखा अधिकाये॥
देह विनासे भोग विनासे, सब रचना होये विनास।
अंतरगत होये सोधिये, एक साहब रूप अबनाश॥
सत् स्वामी घट-घट परगट, नित ही धरो ध्यान।
साचा सुख निर्भय पद सो ही, परम आनन्द की खान॥
मानुष जन्म की कीरती, अत दुर्लभ यह ही विचार।
सत् स्वामी की खोज में, तन मन दीजो वार॥
प्रभ आज्ञा में विचरिये, होयें ताप सब दूर।
जीवन में जीवन मिले, नित आनन्द सरूर॥
मारग पर-उपकार का, जीवन करे सुचेत।
प्रभ चरन विश्वास हो, सब स्वारथ मिटे विखेप॥
अंतर चित इक नाम में, निर्मल प्रेम लखाए।
गुप्त सरूप नारायन, घर परगट सो दरसाये॥
पूरन आसा जीव की, पूरन परसे धाम।
सत सेवा सत नाम में, नित कीजे बिसराम॥

मानुष से भए देवता, नित निर्भय सुख समाई।
सत मारग को धार के, अत निर्मल शोभा पाई॥
जाग सवेरा साजना, खोज मारग तत् ज्ञान।
पूरन सत् विश्वास से, नित निर्मल नाम बखान॥
आदी शक्त सरब परकाशी, तीन काल भरपूर।
तन मन धन सरब सुखदाता, सो ही सत् हज़ूर॥
हृदय माहीं सिमरिये, सकली आन त्याग।
'मंगत' भाओ दीन से, सत् शब्द मिले अनुराग॥

बनी-बादियां में निवास के दौरान वाणी 'जीवन सार बोध' का आपके अंदर से प्रकाश हुआ जिसे भक्त बनारसी दास ने लिख लिया। यह अमृत वर्षा रात के दो बजे शुरू होती और आठ बजे सुबह तक जारी रहती। तीन चार दिन में हज़ारों की संख्या में शब्द प्रगट हो गए।

यह वाणी 'समता विज्ञान योग' ''समता प्रकाश'' ग्रन्थ का सातवां अंग है और इसकी छपवाई का सौभाग्य भी बाबू अमोलक राम जी को प्राप्त हुआ। यह प्रसंग 10 पोह को समाप्त हुआ।

84. अहमदाबाद, गुजरात में एकांत निवास

पंजाब में सर्दी बहुत शुरू हो गई थी। शरीर में कमज़ोरी मौज़ूद थी। अहमदाबाद, गुजरात की तरफ मौसम ठीक था। प्रेमी महंत रतन दास जी, मास्टर मनी राम जी के पत्र आ रहे थे इसलिए आपने अहमदाबाद का प्रोग्राम निश्चित कर लिया और 7 जनवरी, 1945 को आप जेहलम स्टेशन से अहमदाबाद के लिए रवाना हो गए। इसी समय में प्रेमी हरबंस लाल जी, कोहाला से दर्शनों के लिए आए हुए थे, वह भी अमृतसर तक साथ गए। आप 9 जनवरी को अहमदाबाद पहुंच गए, वहां दो दिन मंहत जी के पास मंदिर कबीर साहब में निवास किया। इसके बाद अहमदाबाद से आठ मील के फासले पर एक एकांत जगह, जिसका नाम गतराल था, एकांत निवास किया। इस जगह का प्रबन्ध महंत जी ने किया हुआ था। श्री महाराज जी ने डेढ़ माह इस जगह एकांत सेवन अपनी आनंदित अवस्था में सरशार (मग्न) रह कर किया।

नवधा भक्ति के बारे में गल्त विचार करते कुछ प्रेमियों को देखकर बाबू अमोलक राम जी ने इस पर रोशनी डालने की प्रार्थना की। इस पर आपने 'नवधा भक्ति का निर्णय' प्रसंग लिख करके दिया। अब यह 'समता विलास' का हिस्सा बन चुका है। कत्राल में एकांत निवास करते हुए अभी 25 दिन ही गुज़रे थे कि भक्त जी के बहनोई श्री कश्मीर चंद जी मय आपकी बहन दर्शनों के लिए हाज़िर हुए और तीन-चार दिन ठहरे। जब वह वापस आज्ञा लेकर गए तो भक्त जी उन्हें छोड़ने गए। रास्ते में उन्होंने भक्त जी को कहा कि वह गृहस्थ में भी प्रवेश करके भक्ति कर सकते हैं

और दान की चीज़ें इस्तेमाल करने से भी बच सकते हैं। भक्त जी उनकी चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गए और वापस आकर महाराज जी से छुट्टी मांगी और जो कुछ बहनोई और बहन ने कहा था उसका ज़िक्र किया। इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''तुम्हारा चित्त ऐसा है जिधर कोई लगाए लग जाता है।'' इस पर भक्त जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! किसी हद तक वह भी ठीक कहते हैं। कमज़ोर आदमी का क्या चारा है, आपके तपोबल से कुछ हो सकता है? श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''प्रेमी! तुम्हें इस वास्ते कहते हैं कि रिश्तेदारी की संगत छोड़ दे, यह लोग हर समय अपनी ओर खींचते हैं। आज तुम्हें घर ले जाएंगे, कल ताने देंगे, गया था भक्ति करने, क्या वहां से मिला है? कुछ बुद्धि से सोचो। फ़कीरों को कोई ग़र्ज़ नहीं। तुम आज जा सकते हो मगर बाद अंजा (में) तुम पछताओगे और कहोगे कि महाराज जी ने क्यों न मना किया? इस वास्ते अच्छी तरह विचार कर लो। यह तुम्हारे सच्चे हितकारी हैं। संसारियों का हित डुबोने वाला है। यह संसारियों को अच्छी तरह जानते हैं। इनको जो संबंधियों ने सेवा करने के बाद इनाम दिया वह तुम से छिपा नहीं। प्रेमी! काम, क्रोध की तपन आहिस्ता-आहिस्ता सेवा सिमरण से दूर होती है। खुद विचार करके देख लो या अगर तजुर्बा करना है तो करके देख लो।''

फिर प्रेमी मंहत रतन दास जी और ब्रह्म प्रकाश जी आ गए। कुछ विचारों के बाद श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! दो रोज़ के बाद इधर से चलना है।'' महंत जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! अहमदाबाद में भी कुछ दिन कृपा करें।

इस पर आपने फरमाया, ''दो-चार दिन ठहर कर पंजाब की तरफ जावेंगे।'' 11 फरवरी के रोज़ श्री महाराज जी अहमदाबाद तशरीफ़ ले गए और कबीर मंदिर में निवास किया।

एक रोज़ आप मनी नगर मास्टर मनी राम जी के गृह पर उनकी प्रार्थना पर पधारे। वहां मास्टर जी ने अपने दोनों साहबजादों गुनवंत राय व बलवंत राय को चरणों में जगह देने की प्रार्थना की। इस पर श्री महाराज जी ने दोनों को शिक्षा प्रदान करने की कृपालुता की और वापिस तशरीफ़ ले आए।

दूसरे दिन प्रेमी सेठ प्राण लाल ने प्रार्थना की:- उसके गृह को भी पवित्र करने की कृपालुता करें। श्री महाराज जी ने मान लिया और उसके गृह पर तशरीफ़ ले गए। उस जगह प्रेमी ने गले में फूलों का हार डालना चाहा जिसे महाराज जी ने हाथ में ले लिया। उसने चरणों में काफी नोट भेंट किए और प्रणाम किया और सत्पुरुष ने प्रशाद की सूरत में वापस कर दिये।

इस जगह श्री महाराज जी ने देखा कि बड़े बर्तन पड़े हैं और पूछा:- यह क्यों रखे हैं? मास्टर जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! हर दिवाली के त्यौहार पर हर घर में सैकड़ों बर्तन खरीद कर लाए जाते हैं और घर को खूबसूरत बनाते हैं।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''हर जीव अपनी नई से नई रचना बनाता है। जब जुदाई होती है तब अति लाचार होता है।'' फिर प्रेमी मनी राम जी ने वाणी का पाठ किया और इसके बाद महाराज जी ने प्रवचन द्वारा निहाल किया।

85. तरनतारन में सत्उपदेश

संगत तरनतारन सत्पुरुष के सत् उपदेशों का लाभ प्राप्त करने की अति इच्छुक थी। उन पर आपके सत् उपदेशों का काफी असर हो चुका था, जब आप पहली दफ़ा इस जगह तशरीफ़ लाए थे। इसलिए प्रेमियों ने अहमदाबाद पत्र द्वारा प्रार्थना करनी शुरू कर दी कि वापसी पर आप उन्हें कृतार्थ करें। सत्पुरुष ने इसे स्वीकार कर लिया और प्रोग्राम बनाकर तरनतारन निवासियों को सूचित कर दिया। आप 17 फरवरी, 1945 को अहमदाबाद से रवाना होकर 19 फरवरी को दोपहर तरनतारन पधारे। तरनतारन निवासी प्रेमियों ने श्री महाराज जी के निवास के लिए उसी बाग में, जहां पहली दफ़ा ठहराया था, आपके ठहरने का प्रबन्ध किया हुआ था और टैन्ट लगवा दिया था। सत्उपदेशों की अमृत वर्षा से न सिर्फ़ तरनतारन निवासी बल्कि आसपास के प्रेमी भी तृप्ति प्राप्त करने लगे। श्री ईश्वर दास जी भंडारी, जलालाबाद निवासी ने सत्पुरुष के त्यागमई जीवन का खाका बड़े सुन्दर वचनों में इस तरह खींचा हुआ है। यह वचन ''रिसाला मारतंड'' में छपे थे।

''महाराज जी के दर्शन दो रोज़ रहकर कर आया हूं। सत्संग सारा दिन होता रहता था। लोग आकर शंका समाधान करते रहते थे। धन्य हैं महात्मा जी, कि सारा दिन फ़र्श पर चौकड़ी लगाये बैठे रहते हैं और ज्ञान चर्चा से ज़रा नहीं उकताते। एक दिन सूरज ग़रूब (अस्त) होने तक सत्संग होता रहा। तीन-चार रोज़ से सर्दी ज़्यादा हो गई है। आप वहां छोलदारी में ही रहते हैं। सिर्फ़ एक लोई में रात बसर करते हैं। परमात्मा के प्यारों को सर्दी-गर्मी असर नहीं कर सकती। हम तो मकानों के अंदर भी लिहाफ़ ओढ़े ठिठर रहे हैं। इनकी भक्ति की गर्मी इतनी है कि इतनी सख़्त सर्दी में मैदान में सिर्फ़ एक कंबल में बसर करते हैं। उनकी लीला वही जानें। फरमाते हैं, अब लाहौर जाने का प्रोग्राम है। एक प्रेमी के साथ शायद अमृतसर भी तशरीफ़ ले जावें।''

86. लाला अनन्त राम जी एडवोकेट के विचार पत्र द्वारा

तरनतारन में एक माह के अंदर विभिन्न इलाकों के सत्संगी उपदेश की ख़ातिर हाज़िर होते रहे। लाहौर, अमृतसर, दौरांगला, काहनूवान, काला गुजरां और जलालाबाद वग़ैरह से बहुत से लोग इन दिनों आए। तरनतारन और आसपास के देहात के लोग भी महाराज जी की आकर्षण शक्ति से खिंचे हुए आते रहे। आपकी मौज़ूदगी से जंगल में मंगल हो गया। तारीक (अन्धकार) बगीचा महाराज की रूहानी रोशनी से प्रकाशित हो गया। जो खाकी था आसमानी बन गया और जो आसमानी था वह नूरानी बन गया और जो नूरानी था वह वजदानी (विभोर) बन गया।

महाराज जी की कृपा से बगीचा पुरफ़िजा (रमणीक) हो गया था। इस बगीचे के दरख़्त, चरिन्द-परिन्द, शाख व टहनी रूहानियत की महक से भर गए। एक माह तक रूहानियत की तुगयानी (बाढ़) ने सब्जा-जार (हरियाली) को खुशबूदार बना दिया। सुबह से लेकर शाम तक सैंकड़ों की तादाद में लोग वहां जमा होते थे और उपदेशों से महज़ूज़ (लाभान्वित) होते थे। पुरुष

और स्त्रियों के गिरोह के गिरोह महाराज जी की पवित्र गंगा रूपी वाणी से शाद-काम (प्रसन्न) होते और शान्ति पाते रहे। इस एक माह की महिमा का ब्यान करना कलम की ताकत से बाहर है। क्या हिन्दू, क्या सिख, क्या मुसलमान, क्या ईसाई सब बिना तमीज़, मज़हब व मिल्लत रूह की लासानी गिज़ा हासिल करते रहे? शहर के मर्द, स्त्रियों के लिए यह छोटा सा बगीचा रूहानियत का सर चश्मा बना रहा। जो भी आया महाराज जी की दरगाह से शांत होकर जाता। बड़े-बड़े आलम, विकला, ज्ञानी, ध्यानी अपने-अपने सवालात लेकर आते और तसल्ली पाकर वापस जाते रहे। यह बगीचा बहुत मुबारक है जहां अमृत रूपी वर्षा होती रही जिससे हरकस व नाकस (अच्छे-बुरे) ने शांति हासिल की। महाराज का उपदेश धार्मिक मजामीन (विषय) के मुतालिक था। लेकिन उसमें सामाजिक नीति के असूल बहुत थे। यह उनका अनुभवी उपदेश था जिसका ब्यान करना मेरी यादाश्त से बाहर है। संक्षेप में यह कि आत्मा, अनात्मा, पुनर्जन्म, नेकी और बदी, मुक्ति का आसान तरीका, अभ्यास का मुख़्तसिर (संक्षिप्त) लेकिन मुअस्सर (असरदार) नुस्खा वग़ैरह मज़ामीन पर बहस होती रही। हर एक सवाल का मुकम्मल जामा और मुख़्तसिर जवाब सीधे शब्दों में महाराज जी देते रहे।

महाराज जी का सादा जीवन और सरल उपदेश, लासानी, त्याग, मधुर और प्रेम भरी वाणी और एक सा बर्ताव ने जनता पर बहुत असर किया। सब लोग उस वक्त को याद करके प्रसन्न हो रहे हैं।

महाराज जी के उपदेशों का खुलासा इस प्रकार है। ''फायलियत या कर्तापन ही तनासख (पुनर्जन्म) है। यही बंधन है और यही जीवन है। यही महदूदियत (सीमाबद्धता) है। इसका मुखालफ़ (विरुद्ध) निष्कामपन है। जब-तक फायलियत (कर्तापन) है तब-तक जन्म-मरण का चक्कर है। इसको तनासख कहते हैं। अंत:करण के अंदर फायलियत या कर्तापन का भाव ही जन्म का हकीकी बीज है। जब-तक यह बीज रहता है जिस्म की कैद कायम रहती है और हकीकी खुशी नामुमकिन है। तरह-तरह की तृष्णा से जीव जलता रहता है यानि खुशी मफकूद (बन्द) रहती है। अकर्तापन या ग़ैर फायलियत की हालत में चित्त से यह सब कुछ दूर हो जाता है। यह ग़ैर फाली हालत सिर्फ ईश्वर परायण होने से ही पैदा हो सकती है। ईश्वर परायण होकर काम करना ही सहज उपाय है। यही भक्ति है। शुद्ध आचरण, सादा जीव, पब्लिक सेवा और गुरु भक्ति के बग़ैर ईश्वर प्राप्ति नामुमकिन है। निष्कामता ही समता योग है। इससे सच्ची खुशी मिल सकती है। इसके लिए ही पुरुषार्थ करना योग्य है।''

महाराज जी ने शुद्ध आचरण पर बहुत ज़ोर दिया है और फरमाया है-कि जब-तक इंसान पहले सच्चा इंसान नहीं बनता ईश्वर का मिलना मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन है। महज़ धार्मिक किताबें पढ़ते रहना ज़िंदगी का मकसद नहीं है। मौत को हर वक्त याद रखना और महापुरुषों के वचनों पर सही अमल करने से ज़िंदगी का सफर कम हो सकता है। महापुरुषों के आचरण को अपनाना और उसके मुताबिक अमल करना ही मंज़िलें मकसूद का सीधा रास्ता है।

इसके वास्ते और कोई तरीका नहीं है। अमल के बग़ैर और सही पुरुषार्थ के बग़ैर इंसान के अपने स्वभाव में स्थिति नामुमकिन है।

प्रार्थना है कि अगर इसी तरह श्री महाराज जी कृपा करते रहे और कभी-कभी इस इलाके के कदम रंजा फरमाते रहे तो हम आहलीयान कस्बा व नवाही इलाके को हकीकी (ईश्वरीय) उपदेश से अजहद (अत्याधिक) फायदा होगा। तो हम-परस्ती (स्वार्थ) काफूर (समाप्त) हो जावेगी। धार्मिक जीवन का पौधा सर सब्ज हो जावेगा जिससे तमाम इलाका मुस्तफैस (लाभ) होता रहेगा और महाराज जी का अटल उपदेश शिवजी महाराज की अमर कथा की तरह अमर बन जावेगा।

जब बाबू अमोलक राम जी इस जगह दर्शनों के लिए हाज़िर हुए तो उन्होंने निम्नलिखित प्रश्न श्री महाराज जी से पूछे।

प्रश्नः - ईश्वर और जीव में क्या भेद है?

उत्तरः - प्रेमी! पहले शरीर को समझोगे तब इस नुक्ता का हल होगा। जिस वक्त शरीर को कष्ट होता है उसमें से वाणी उठती है कि मुझे तकलीफ़ हुई। अगर शरीर का कोई अंग टूट जाता है तो कहता है मेरा अंग टूट गया है। इससे मालूम हुआ कि शरीर में एक चीज़ है जो शरीर को मेरा-मेरा कहती है जैसे मेरी आंखें, मेरे हाथ, मेरे रिश्तेदार, मेरा कुन्बा वग़ैरह। इससे साबित हुआ कि मेरा कहने वाला वह असल शरीर से अलहेदा है वर्ना वह कहता वह ही शरीर है, न कि शरीर मेरा है। जो शक्ति शरीर के कर्मों की अभिमानी है उसको जीव कहा गया है। जो शरीर के दुःखों-सुखों को महसूस करती है वही जीव है। जब-तक बुद्धि शरीर की ममता में है तब-तक उसका बोध नहीं हो सकता। सत्पुरुषों की वाणी और लेखों को पढ़कर इसको मानता है मगर अंतर से न प्रीत है, न प्रतीत। जब-तक अन्तर विखे बुद्धि शरीर और शरीर के दुःखों में गिरफ़्तार है वह इसको अनुभव नहीं कर सकती। लेकिन जब बुद्धि गंभीर हो जाती है और शरीर के दुःखों - सुखों पर अबूर (काबू) पा जाती है तब उसको बोध हो जाता है कि शरीर तत्त्वमई है। मैं शरीर से भिन्न हूं। शरीर किसी ख़ास शक्ति के सहारे चल रहा है। मुझे उस पर कोई ज़ाबता (नियंत्रण) नहीं। तब यह जीव और शरीर को जानती है। यह ही फ़ना फ़िल्लाह का मसला है। जब शरीर की ममता से अलहेदा होता है तब वह परम तत्त्व अंदर प्रगट होता है। वास्तव में ईश्वर और जीव में कोई भेद नहीं है। विज्ञान को पहुंचा हुआ ईश्वरवादी है। संसार को जीतने वाला वही है जो शरीर को जीतने वाला है। शरीर को मजबूरी से आज़ाद होना ही सही मार्ग है। जब इस पर पूरा कंट्रोल हो गया तब यह सब दुनिया का मालिक हो गया। चक्रवर्ती राजे भी ऐसे गुणी पुरुष की गंभीर अवस्था को देखकर उसके चरणों में झुकते रहे हैं।

शरीर पांच तत्त्वों के हैं। कई एक उच्च कर्म कर रहे हैं, कई एक नीच कर्म कर रहे हैं। जो उच्च कर्म कर रहे हैं उनकी बुद्धि तीव्र है। वह उनको सही रास्ते पर ले जा रही है। नीच कर्म करने वाले विवेक से हीन हैं। दुनिया का निज़ाम (प्रबंध) बुद्धि की गंभीरता और तुच्छपने पर खड़ा है। सब जप-तप बुद्धि को सही करने के लिए हैं।

प्रश्नः सिमरण का स्वरूप क्या है?

उत्तरः मन का स्वरूप है मनन करना या दूसरे शब्दों में सिमरना। यह कर्तापन ही संसार है। मन ज़िन्दा वाणी करके है। जब-तक ठिकाने नहीं आता सिमरती यानी वाणी जारी रहती है। जब-तक इसको ठिकाने पर लाने का प्रबन्ध न हो तब-तक यह ठिकाने पर नहीं आता। जब सिमरती का नाका फिराया निर्वाण अवस्था का बोध हो गया। वाणी भूल गया। सिमरण हृदय करके होता है, सेवा शरीर करके होती है। यह साधन देह पर काबू पाने के हैं। मुंह बंद करके जब सत्नाम का सिमरण किया जाये तब बंधन से मुक्ति मिलती है। यह गुरु से हासिल होता है। जो संसार को सिमरता है वह संसारी है, जो देह को सिमरता है वह व्योपारी है।

87. प्रेमियों को मान देना

पिछले सम्मेलन का यज्ञ के समय सत्संग हाल बन चुका था जिसकी सेवा का सौभाग्य सिर्फ चंद प्रेमियों को प्राप्त हुआ था। मगर ईटें वग़ैरह ख़त्म हो गई थीं इसलिए लंगर का कमरा न बन सका था। यज्ञ के समय लंगर व प्रशाद जो तैयार होता रहा उसे शामयाने लगाकर आसपास लोईयाँ बांध कर कमरे की शक्ल बनाकर रखना पड़ता था। बावज़ूद इसके इंतज़ाम तसल्ली बख़्श नहीं था। संगत के प्रेमियों ने इस तकलीफ़ व कमी को महसूस करते हुए यह विचार करके निश्चय किया कि अगर श्री महाराज जी इजाज़त देवें तो कमरा लंगर भी बनवा दिया जावे। जब बाबू अमोलक राम जी शुभ स्थान पर गए तो उन्हें पता लगा कि कल्लर भट्टे में ईटें पकाई जा रही हैं। तो उन्होंने श्री महाराज जी की सेवा में, जो इस समय अहमदाबाद में ठहरे हुए थे, आज्ञा लेने के लिए पत्र लिखा। इस पर सत्पुरुष ने जवाब देने की कृपा करते हुए लिखा कि अगर वह उसे ज़रूरी ख़्याल करता है तो बनवा देवे। यह भी लिखा कि उस जगह यानि शुभ स्थान पर इतना रुपया खर्च करना ठीक नहीं है। जब ईटें तैयार हो गईं तो बाबू जी ने कल्लर जाकर भाव वग़ैरह ठहराया। इस पर ठेकेदार भट्टा ने वक्त निश्चित कर दिया और अगर इस समय तक बयाना उसे दे दिया जावे तो वह सौदे का पाबंद होगा, अन्यथा नहीं। क्योंकि दूसरी जंग के कारण इनकी कमी हो गई थी और खरीदारी बहुत थी, इसलिए श्री महाराज जी की सेवा में, जो उस समय तरनतारन पहुंच चुके थे, तार भेज करके सौदा करने की आज्ञा मांगी। इस पर श्री महाराज जी ने प्रेमी लाला अनन्त राम जी कुंद्रा, एडवोकेट से पूछा कि क्या उस जगह रुपया लगवाना ज़रूरी है? तो उन्होंने बाबू अमोलक राम की बात स्वीकार की और उसे तार द्वारा ही सौदा कर लेने की आज्ञा दे दी गई। इस पर बाबू जी ने बावज़ूद कई रुकावटों के ईटों की खरीद करके शुभ स्थान पर ऊंटों के द्वारा पहुंचाने का प्रबन्ध कर लिया और अन्य सामान भी जमा कर लिया। शुरू मार्च में निर्माण का काम शुरू करवा दिया, यद्यपि उस समय मज़दूर वग़ैरह मिलना कठिन था सत्पुरुष की दया दृष्टि से फसल की कटाई से पहले-पहले कमरा तैयार हो गया। सीमेंट ख़त्म हो जाने के कारण प्लास्टर न हो सका।

88. संगठित जीवन शिक्षा

इस जगह निवास के दौरान एक विचित्र शिक्षा मिली। जिस स्थान पर आप विराजमान थे वहां एक बड़े आम के पेड़ पर शहद की मक्खियों का छत्ता लगा हुआ था। किसी कारण मक्खियों ने वहां से उड़ना शुरू कर दिया और आगे-पीछे आनी शुरू हो गईं। गुरुदेव ने जब देखा तो फरमाया:- ''प्रेमियों! इनकी तरफ न देखो, न ही इनको हाथ से मारने या हटाने की कोशिश करो और न ही उंगली उस तरफ करें।''

पास बैठे प्रेमियों ने इस बात की परवाह नहीं की और दो-तीन मक्खियों को हाथ से मार डाला। इस पर मक्खियां छत्ते से उड़कर उन्हें चिमट गई और खूब डंक मारे। सब उठ के भाग गए। मगर जिधर वह जाते मक्खियां भी उनके पीछे जाती। काफी देर बाद उनसे छुटकारा मिला। भक्त जी को डंकों की वजह से बुखार आ गया। रात को आपने फरमाया कि इन मक्खियों का आपस में कैसा सलूक (व्यवहार) है। इससे सबक लेना चाहिये। अगर किसी प्रेमी को दु:ख या तकलीफ़ हो तो प्रेमियों को इतफाक (व्यवहार) रखना चाहिये। आपस में प्रेम भाव बनाये रखें और कोई सत्संग का भी प्रोग्राम बनावें जिससे परस्पर विचार मिलता रहे।

89. लाहौर में आगमन

एक माह तरनतारन ठहरने के बाद 19 मार्च, 1945 को सत्पुरुष लाहौर तशरीफ़ ले आए और मारतंड भवन में निवास किया। श्री महाराज जी के आगमन की ख़बर लाहौर निवासियों तक पहुंच गई और उसी दिन से सत्संग का सिलसिला जारी हो गया। सत्संग का समय शाम 4 बजे से 8 बजे तक रखा गया। मगर दर्शन अभिलाषी सज्जन सुबह से शाम तक सत्पुरुष को घेरे रहते और संशयों को मिटाते। सत्पुरुष के पास अगर कोई विद्वान आ गया और प्रश्न पूछे तो उत्तर भी विद्वता के मिलते और कोई साधारण व्यक्ति अपनी शंकाएं निवारण के लिए प्रश्न करता तो उत्तर भी साधारण ही होते। दूसरे शब्दों में हर सज्जन को उसकी योग्यता के अनुसार ही जवाब मिलते और उनकी तसल्ली होती। जो सज्जन शुद्ध हृदय से कुछ ग्रहण करने के लिए शंकायें सामने रखते और शिक्षा हासिल करने के मकसद से प्रश्न पूछते वह सन्तुष्ट हो करके जाते और जो ज्ञान का घमंड लिए हुए आते और इम्तहान के लिए प्रश्न करते वह एक तो लाजवाब होते और दूसरे खाली हाथ जाते। यह सिलसिला और सत् उपदेश अमृत की वर्षा 9 अप्रैल तक जारी रही। इस दौरान प्रेमी तरनतारन, दौरांगला, काहनूवान, सखोकी, रावलपिंडी, डोमेल इत्यादि से भी सेवा में हाज़िर हुए। दो-तीन दिन सत्संग के श्रवण से डाक्टर भक्त राम जी, जो कि लाहौर के मशहूर डाक्टर थे, उनके जीवन पर इतना असर हुआ कि उन्होंने मांस आहार का परित्याग कर दिया था और अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए शिक्षा ग्रहण करने की ख़ातिर सत्पुरुष के शुभ स्थान पर तशरीफ़ ले जाने का इंतज़ार करने लगे।

90. शुभ स्थान गंगोठियां में बैसाखी का सत्संग

रावलपिंडी में निवास के दौरान सेहत ठीक होने पर प्रेमियों ने चरणों में विचार रखा था कि बैसाखी के दिन शुभ स्थान पर सत्संग का प्रोग्राम रखा जाये ताकि वह किसी दूसरी जगह समय व्यर्थ करने की बजाय सत्संग से लाभ उठा सकें। सत्पुरुष ने उन्हें बाकी प्रेमियों से इसके मुतालिक मशवरा लेने की हिदायत फरमाई थी। उन्होंने इसके बारे में जगह-जगह के प्रेमियों से पत्र द्वारा विचार ले लिया था और सत्पुरुष की सेवा में सब संगत की उनसे सहमत होने की सूचना दे दी थी और अर्ज़ की थी कि सत्पुरुष भी आज्ञा देने की कृपा करें। इस पर श्री महाराज जी ने भी आज्ञा दे दी और प्रेमी परमार्थी जी ने मारतंड पत्रिका में इसे छपवा दिया।

बैसाखी का दिन करीब आ गया था इसलिए श्री महाराज जी लाहौर से सीधे शुभ स्थान पर पधारे। श्री महाराज जी रात को ग्यारह बजे वाली गाड़ी से मांकयाला स्टेशन पर उतरे और मय भक्त बनारसी दास रात को ही पैदल चलकर सीधे शुभ स्थान पर पधारे। सुबह सवेरे जब बाबू अमोलक राम जी ने भक्त जी को देखा तो पता लगा कि श्री महाराज जी तशरीफ़ ले आए हैं और पीर ख़्वाजा जंगल में तशरीफ़ ले गए हैं। अपने प्रोग्राम के अनुसार आप जंगल से काफी दिन निकल आने पर पधारे। प्रेमी भी आने शुरू हो गये और 13 अप्रैल, 1945 को विशाल सत्संग सम्मेलन हुआ। इसमें डाक्टर भक्त राम जी व श्री राम नारायण जी तिवारी कैथल निवासी भी तशरीफ़ लाये। सत्संग, महामंत्र और मंगलाचरण से शुरू हुआ। उसके बाद प्रेमी मलिक भवानीदास ने सत्संग का उद्देश्य और आवश्यकता ब्यान की और यह भी बतलाया कि सालाना सत्संग के अवसर पर श्री महाराज जी की सेहत की खराबी की वज़ह से संगत सतपुरुष के पवित्र मुखारबिंद से अमृत वचन सुनने का लाभ नहीं उठा सकी थी इसलिए रावलपिंडी की संगत ने ख़ासतौर पर इस वर्ष सत्संग का प्रबन्ध किया है और पूज्य श्री सत्गुरु देव जी ने अगाध कृपा से संगत की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और अपने प्रोग्राम को तबदील करके शुभ स्थान पर पधारने की कृपा की है।

इसके बाद चौधरी फकीर चंद ने 'समता स्थिति योग' से मीठे स्वर से कुछ वाणी पढ़ी। इसके बाद सत्पुरुष ने निम्नलिखित सत् उपदेश द्वारा संगत को कृतार्थ किया।

सत् उपदेश अमृत

''शरीर रूपी संसार को धारण करके जीव पैदा होने से मरने तक कुछ न कुछ करता रहता है एक लम्ह भी फ़ारिग नहीं होता। महापुरुषों ने इसके मुतालिक विचार किया और बतलाया कि शरीर करके ही दुनिया है। शरीर ख़त्म हो गया तो दुनिया ख़त्म हो गई। शरीर रूपी फिल्म का अक्स (प्रतिबिंब) बाहर सृष्टि को देख रहा है। ज्यूं-ज्यूं शरीर बढ़ रहा है सृष्टि बढ़ रही है। जाग्रत में संसार का और रूप है, स्वप्न में और देखता है। असल में दुनिया का कोई रूप नहीं है। जिस-जिस अवस्था में जो जीव है उसको वैसी ही सृष्टि भासती है। जितनी भी याददाश्त और मालूमात अंदर है उतनी ही दुनिया है। जीव की याद ही दुनिया है। जो चीज़ याद है वह मौज़ूद है, जो याद नहीं है

वह मौज़ूद नहीं है। कल्पना के मुताबिक ही जीव दुनिया को देखता है। गुणी पुरुषों ने सोचा कि दुनिया क्या है? दुनिया का आगाज़ (प्रारंभ) व अंजाम (अंत) कहां है? उन्होंने पता निकाला कि दुनिया का आगाज़ ख़्याल में है। मेरे मन की कल्पना ही मेरी दुनिया है। जैसी-जैसी जीव की कल्पना होती है वैसी ही उसकी दुनिया होती है। ज्यूं-ज्यूं शारीरिक तबदीली होती है बचपन बदल कर जवानी आती है, जवानी बदल कर बुढ़ापा आता है, उसके मुताबिक ही दुनिया बदल जाती है। इससे साबित हुआ कि अपने ख़्यालात करके सृष्टि नज़र आ रही है, असल में सृष्टि का कोई वजूद नहीं। फिर गुणी पुरुषों ने विचार किया कि जीव के अंदर आराम क्यों नहीं? आराम की ख़ातिर बड़े-बड़े यत्न किए, सब सिलसिला बनाया मगर दिल को आराम नहीं। अंदर से लाचार है। सब कुछ मौज़ूद है। धन-दौलत, बाल-बच्चे, परिवार मौज़ूद है, मगर दिल को तसल्ली नहीं, लाचार है। जब मौत आवेगी तब दिल का क्या हाल होगा?

''जीव को हर वक्त चाह है कि मुझे सुख मिले और मेरा मान सारी दुनिया करे, यह प्रधान कामना उसके अंदर है। महापुरुषों ने सोचा कि सुख भी सदा नहीं रहेगा, बड़ा भी हमको कोई न मानेगा, सुख प्राप्ति की कामना, उसके लिए कोशिश और सुख की स्थिति की आग लगी रहेगी। यह रोग कभी मिटने का नही। इस बात को सोचकर उन्होंने इसका इलाज निकाला कि अगर वह सर्व सुख चाहता है तो अपने आपको ही मिटा दे अर्थात् नित ही सेवा कर। अगर तू सेवा करेगा मान और सुख पायेगा। गांधी ने व्रत रखा, जब दुनिया को उसके व्रत से परेशानी हुई तो सारी दुनिया ने व्रत रखा, क्यों? इसलिए कि उसने लोगों के दिलों पर फ़तह (जीत) पाई हुई थी। इसलिए सेवा की दवाई ठीक है। सेवा करके सुख है। सब दुनिया का सुख उसका सुख है। अपनी खुशी को दूसरों की खुशी में ख़त्म करे। जब तू अपनी खुशी को दूसरों की खुशी में तर्क (ख़त्म) करेगा लाखों की खुशी को पायेगा। जितने भी गुरु, पीर, अवतार और महापुरुष हुए हैं उनमें ये ही बड़ाई थी। उनका भाव निर्मल था। उनका संकल्प निर्मल था। उन्होंने यकीनी तौर पर यह समझा था कि एक दिन हमने खत्म हो जाना है, ज़िन्दगी के वक्त को अच्छे तरीके से गुज़ारना चाहिये। उन्होंने सोचा कि दूसरों को सुख व आराम देना ठीक है। यह खुद दुःख उठाकर दूसरों का भला चाहते रहे। ऐसे ही महापुरुष संसार में नारायण का रूप हैं। असली खुशी उन्हीं को हासिल हुई।

"दुनिया का असली रूप फ़ना (नाशवान) है। मगर जिन महापुरुषों ने अपने कर्तव्य को पूरा किया युगों पर्यन्त उनका मान हो रहा है। बुद्धिमान पुरुषों ने यह भी बतलाया है कि तुमको मौत नहीं छोड़ेगी, सुख सदा नहीं रहेगा, शरीर वफ़ा नहीं करेगा। इसलिए ऐसे कर्म धारण न करो जो बायसे (कारण) ग़म हों बल्कि ऐसे अच्छे मार्ग पर चलो जो कि महापुरुष बतलाते हैं। श्रद्धावान होकर उनके वचनों पर अमल करो ताकि तुम भी उन जैसी खुशी हासिल कर सको। भर्तृहरि जब लाहौर आए तब वहां के राजा ने उनसे पूछा कि क्या पागलों जैसा रूप बनाया है? भर्तृहरि ने जवाब दिया:- 'जो बेफिकरी और आराम मुझे इस गूदड़ी में मिला है सिंहासन पर नहीं मिला।' ज़िन्दगी का सच्चा सुख त्याग में हैं, वह त्याग जो दूसरों की भलाई के लिए किया जावे।"

कथनी से कछु न सरे, तन मन दीजो वार।
'मंगत' जीवन जगत में, केवल दिन है चार॥

इसके बाद लाला बख्शी राम जी, प्रधान समता समाज, ने निम्नलिखित विचार संगत के सामने रखा।

"इस सर्व व्यापक, सर्व शक्तिमान, सर्व आधार परमात्मा का बार-बार धन्यवाद है कि जिसने अपनी अगाध कृपा और दया से श्री सत् गुरुदेव जी को शारीरिक कष्ट से बचाकर और नया जीवन प्रदान करके हम तुच्छ बुद्धि और निर्मल जीवों को कृतार्थ किया है, जिन्होंने एक तरह से अपने गुरुदेव जी को ही परमात्मा के तुल्य मानकर अपना जीवन आधार बनाया है।

"श्री गुरुदेव जी महाराज ने अपनी घोर तपस्या और बल से इस कदर अमृत वाणी या खुदाई कलाम प्रगट कर दी है जिसका मुस्तकिल (स्थायी) लाभ दुनिया मौका व मौका उठा रही है और हमेशा उठाती रहेगी। उनकी मौज़ूदगी में इस अद्‌भुत वाणी के सार या सत का उनके अपने मुखारबिंद से ज़्यादा प्रयत्न पूर्वक लाभ उठाया जा सकता है। जिस कुदरती मिशन को पूरा करने के वास्ते श्री सत्‌गुरु देव जी महाराज जगह ब जगह भ्रमण करके इस कद्र कष्ट और तकलीफ़ उठा रहे हैं उनका रोम-रोम इस काम को सर अंजाम देने के वास्ते काम करता रहा है और कर रहा है और करता रहेगा। ऐसी सूरतें हालात को ध्यान में रखते हुए ऐसे सुनहरी मौके का फ़ायदा उठाने के लिए हम सेवक जनता का क्या कर्तव्य है इस पर सोच विचार करना चाहिए? अपना अमली जीवन बनाकर अपना सुधार करना ही हमारा लाज़मी फ़र्ज़ है। सत् गुरुदेव जी ने हमारे जीवन सुधार के लिए पांच बुनियादी असूल कायम करके, यानी सादगी, सत्य, सेवा, सत्‌संग और सत् सिमरण, उन पर अमल करना लाज़मी करार दिया है। अपने सत् गुरुदेव जी की असली पूजा, मान और इज़्ज़त कुदरती तौर पर एक सच्चे सेवक के वास्ते यही बताई गई है कि अपने गुरुदेव को ईश्वर तुल्य जानें और उनके वचनों को ईश्वरीय वचन जान करके उन पर तन, मन, धन से पूरा-पूरा अमल करें।"

इसके बाद बख्शी डिप्टी लाल जी ने एक कविता पढ़ी जिसमें सत्‌पुरुष के उच्च जीवन पर रोशनी डाली गई। इसके बाद सत्‌पुरुष से प्रेमी शंकायें निवारण करते रहे और आरती व समता मंगल उच्चारण करने के बाद सत्‌संग समाप्त हुआ। इस जगह डाक्टर भक्त राम जी व श्री राम नारायण जी तिवारी सकना कैथल ने दीक्षा ग्रहण की।

91. सरूपा जंगल में एकांत निवास

सम्मेलन में गोलड़ा, शारियां, रावलपिंडी वग़ैरह से प्रेमी शामिल हुए थे। चौधरी फकीर चंद गोलड़ा निवासी प्रेमियों ने सेवा में प्रार्थना की:- श्री महाराज जी! गोलड़ा चंद समय के लिए चरण-कंवल डालकर सरूपा जंगल में एकांत निवास, तप का प्रोग्राम बनावें। डेरा गोपीपुर ज़िला कांगड़ा से लाला शंकर दास जी, धर्मशाला से पंडित लक्ष्मण दास पत्र द्वारा प्रार्थना कर रहे थे कि

सत्पुरुष उधर का प्रोग्राम बनाकर दर्शन देवें। उन्होंने बाबू अमोलक राम जी की ड्यूटी लगा दी थी कि श्री महाराज जी को अपने साथ उस तरफ लावें।

दोनों साहिबान करोबार व नौकरी के कारण सेवा में हाज़िर नहीं हो सकते थे। चौधरी फकीर चंद जी खुद तशरीफ़ लाये हुए थे। उन्होंने चिनारी निवासी प्रेमियों को भी अपने साथ शामिल कर लिया कि सत्पुरुष की सेवा में प्रार्थना करें कि एकांत निवास व तप के लिए उस तरफ का प्रोग्राम बनाया जावे। सत्पुरुष ने प्रोग्राम बनाने की जिम्मेदारी बाबू अमोलक राम जी पर डाल दी। चौधरी जी व अन्य सब प्रेमी बाबू जी के पास आ गए और सबने मिलकर सरूपा जंगल की तरफ का प्रोग्राम बनाने के लिए ज़ोर देकर उन्हें मनवा लिया और उस तरफ का प्रोग्राम बनवा लिया।

सत्पुरुष ने हर प्रेमी के जज़्बात का ख़्याल रखते हुए ऐसा आदर्श पेश किया और ऐसा तरीका निकाल दिया कि किसी को शिकायत का मौका ही न मिले और सबके जज़्बात भी पूर्ण हो जावें।

इस प्रोग्राम के निश्चित होने पर आप आख़िर माह अप्रैल शुभ स्थान से रवाना होकर गोलड़ा तशरीफ़ ले गए और गोलड़ा निवासी प्रेमियों के हृदय रूपी खुश्क खेतों को सत् उपदेश रूपी जल से खूब एक हफ़्ता तक सींचा। उसके बाद अज़ीज़ मदन लाल सुपुत्र चौधरी फकीर चंद जी, श्री महाराज जी को साथ ले जाने के लिए हाज़िर हो गए थे। श्री महाराज जी उसके साथ कोहाला, डोमेल होते हुए शारियां आ गए।

शारियां गांव चिनारी से दो मील नीचे पुल नीली से जेहलम दरिया को पार करके तीन मील ऊपर है। सत्पुरुष की इस जगह आने की सूचना चिनारी निवासियों को भी पहुंच गई और वह दूसरे दिन शारियां दर्शनों के लिए हाज़िर हो गए और सत्संग का लाभ उठाया।

दूसरे दिन 29 बैसाख मुताबिक 16 मई, 1945 को श्री महाराज जी शारियां से तप के लिए जंगल सरूपा तशरीफ़ ले गए। इस जगह चौधरी फकीर चंद जी ने पहली वाली जगह पर ही फिर कुटिया बनवा दी थी। इस जगह जंगल के हालात व जंगली जानवरों की अधिकता जैसे रीछों वग़ैरह की मौज़ूदगी के बारे में पहले ज़िक्र आ चुका है और यहां पर रीछों के अजीब-अजीब हालात भी सुनने में आए थे। मगर देखा गया कि यह जंगली जानवर भी सत्पुरुषों के आधीन होते हैं। रात को सत्पुरुष हमेशा जंगल में आत्म आनन्द में मग्न रहते।

इस कुटिया से ज़रा परे एक और चट्टान के साथ चौधरी जी ने एक और कुटिया भी लंगर के लिए बनवा दी थी। यह जगह आठ हज़ार फुट की ऊँचाई पर थी और इसके सामने काफरखन चोटी बारह हज़ार फुट ऊँची थी। इस जगह पानी की तंगी थी। उस जगह को वहां के लोकल मुसलमान बाशिंदे भारी गिनते थे। सत्पुरुष ने एक जगह खोदने की आज्ञा फरमाई और वहां पानी निकल आया और वहां चौधरी जी ने बावली बनवा दी थी। पानी बड़ा ठंडा था। इसके दो घूंट पीने मुश्किल थे। काफरखन चोटी मारखोर जानवरों के शिकार के लिए मशहूर थी।

सत्पुरुष कठिन तप में मशगूल हो गए तो चौधरी जी ने लाहौर डाक्टर भक्त राम जी, प्रेमी राम लाल जी परमार्थी, लाला बख्शी राम जी और बाबू अमोलक राम जी को काला गुजरां पत्र लिखे ताकि यह प्रेमी भी जंगल सरूपा पधार कर सत्पुरुष की कृपा दृष्टि का लाभ प्राप्त करें।

चौधरी जी के पत्र मिलने पर प्रेमी परमार्थी जी व लाला बख्शी राम जी एक जून, 1945 को लाहौर से रवाना होकर काला गुजरां तशरीफ़ ले आए और बाबू अमोलक राम जी के गृह पर ठहरे। यह दोनों साहिबान दो दिन काला गुजरां ठहरे और काला निवासियों को सत्संग से लाभान्वित किया। इसके बाद 4 जून को गाड़ी द्वारा रावलपिंडी के लिए रवाना हो पड़े। रावलपिंडी गाड़ी से उतरकर प्रेमी भाई नन्द लाल जी बिन्द्रा के गृह पर ठहरे और रात वहां विश्राम किया। दूसरे दिन यह काफिला वहां से रवाना होकर बस द्वारा चिनारी के लिए रवाना हुआ और शाम को चिनारी पहुंच गया। 6 जून को चिनारी निवास किया गया और दरिया के किनारे वाली कुटिया और आसपास के सुन्दर दृश्य का आनन्द उठाते हुए सत्संग में शामिल होकर 7 जून को वहां से रवाना होकर तांगे द्वारा पुल नीली पहुंचा। पुल से दरिया पार करके तीन मील का सफर पैदल तय करके शारियां पहुंचे। रात शारियां व्यतीत की और दूसरे दिन सुबह पैदल वहां से रवाना होकर बारह बजे के करीब जंगल सरूपा पहुंच गए। ज़रूरी सामान चौधरी जी ने खच्चरों पर लदवाकर वहां भिजवा दिया। सबने चरणों में हाज़िर होकर डंडवत प्रणाम किया। चौधरी जी उस जगह सेवा में मौज़ूद थे और भक्त बनारसी दास जी का हाथ बंटा रहे थे। चौधरी जी, जब से सत्पुरुष उस जगह पधारे थे, वहीं सेवा में ठहरे हुए थे। लाला बख्शी राम जी, परमार्थी जी आठ मील चढ़ाई पैदल चलने की वज़ह से बहुत थक गए थे, मगर सेवा में हाजिर होने से सब थकावट दूर हो गई।

25 जून को डाक्टर भक्त राम जी, लाला चुन्नी लाल जी सुपुत्र बख्शी राम जी व रावलपिंडी से मलिक भवानी दास जी भी वहां पहुंच गए। चौधरी जी ने डाक्टर साहब के लिए टेंट का प्रबन्ध किया हुआ था, वह लगवा दिया और कुछ प्रेमी उसमें ठहरे।

92. सरूपा जंगल का दैनिक प्रोग्राम

सत्पुरुष रात को जंगल में चले जाते और अपनी आनन्दित अवस्था में मग्न रहते। काफी दिन निकलने पर आप जंगल से वापिस आते और स्नान करके चाय पीते। चाय सिर्फ़ दिन के वक्त ही लेते। इस दौरान सब प्रेमी रफ़ा हाज़त से फ़ारिग होकर वापिस आकर चाय वग़ैरह इस्तेमाल करते। चौधरी जी ने इस जगह मक्खन इत्यादि का भी इंतज़ाम किया हुआ था। वह भी प्रेमियों को दिया जाता। जब श्री महाराज जी चाय वग़ैरह से फ़ारिग होकर जंगल में एक जगह, जहां धूप थी, जाकर बैठ जाते तो प्रेमी भी वहां पहुंच जाते और कभी-कभी अन्य महापुरुषों की वाणियां भी, जिनके काफी नोट वह साथ लाए थे, पढ़ते। उसके बाद श्री महाराज जी अमृत वर्षा करके सब प्रेमियों को निहाल करते। यह सिलसिला करीबन एक बजे तक जारी रहता। उस वक्त तक लंगर तैयार हो जाता और सब प्रेमी लंगर पाने के लिए जाते।

इस जगह जंगल में कई किस्म की सब्जियां भी चौधरी जी मुहैया कर देते। ख़ास तौर पर हीडें, जो सब्ज-डींगरी होती हैं, वह भी जंगल से मंगवा लेते और उसकी सब्जी आम तौर पर बनाई जाती। बड़ी स्वादिष्ट बनती थीं। इस जगह जंगली लहसुन भी देखा गया। चौधरी जी ने एक आदमी की ड्यूटी चिनारी से डाक लाने के लिए लगाई हुई थी। वह रोज़ाना डाक वहां से लाता। प्रेमी लंगर पा लेने के बाद अपनी-अपनी जगह आराम करते और साथ ही स्वाध्याय भी करते। शाम को चार बजे कश्मीरी चाय या कहवा मिल जाता। चार बजे फिर सत्संग होता जो आठ बजे तक चलता। इसके बाद रफ़ा हाज़त से फ़ारिग होकर प्रेमी अभ्यास करते। उसके बाद भोजन तैयार होता। भोजन पा लेने के बाद फिर सत्संग होता।

चूंकि उन दिनों प्रेमी परमार्थी जी सब हालात मारतंड पत्रिका में छाप दिया करते थे इसलिए सत्पुरुष के सत् उपदेशों का रिकार्ड नहीं रखा गया। पाकिस्तान बनने पर बटवारे पर पत्रिकाओं का सब रिकार्ड उधर ही रह गया।

93. एक ख़ास वाक्या

एक ख़ास वाक्या जो उस जगह देखने में आया उसका ब्यान करना भी ज़रूरी मालूम होता है। वह इस तरह है। एक दिन सत्संग हो रहा था। प्रेमी परमार्थी जी वाणी पढ़ रहे थे। श्री महाराज जी सामने अपनी आनन्दित अवस्था में बैठे हुए थे और बाकी प्रेमी गोल दायरे में बैठे सुन रहे थे। जंगल में से एक बड़ा सांप आया और परमार्थी जी के पांव से छूता हुआ आगे निकल गया। ज्यों ही वह आगे निकला तो उस पर निग़ाह पड़ी। दहशत में मुंह से सर्प शब्द निकला और सब प्रेमी डर के कारण छलांगे लगाकर इधर-उधर हो गए। सत्पुरुष की आंखें खुल गई थीं, मगर आप अपनी जगह पर शांतमई अवस्था में बिना किसी किस्म के डर के बैठे रहे। सांप उनके चरणों तक पहुंच कर वापस जंगल में चला गया। यह थी सत्पुरुष की अवस्था जिसे निर्भय अवस्था कहा जाता है और फिर सत्पुरुष की इस अवस्था का असर सांप पर भी हुआ। वह भी शांतमई सत्पुरुष की शक्ति के कारण चरणों तक पहुंचकर वापिस लौट आया। ऐसा ही एक और वाक्या जलमादा में भी देखने में आया था। सत्पुरुष कुटिया के पास ही किनारे पर बिराजमान थे। उसके साथ पिछली तरफ छोटा सा रास्ता आता था जो एक पत्थरों के डंगे पर था। पिछली तरफ से सांप आया। श्री महाराज जी के चरणों तक पहुंच कर फिर स्वयं ही वापिस चला गया। डंगे के करीब बैठे हुए प्रेमियों ने यह वाक्या देखा।

सत्पुरुष की जंगल में मौज़ूदगी उसे मंगल बना रही थी। इलाके में आबादी तमाम मुसलमानों की थी। एक खुदा रसीदा फ़कीर की मौज़ूदगी की सूचना का फैलना कुदरती था, इसे सुनकर अक्सर लोग दर्शनों के लिए आते। एक दिन 125 साल की आयु का एक बुज़ुर्ग भी दर्शनों के लिए आया और उसने कई पुराने वाक्यात सुनाये जो उसके अपने देखे हुए थे और दर्शन करके वापिस चला गया।

94. यात्रियों की वापसी

28 जून, 1945 को सबसे पहले प्रेमी लाला बख़्शी राम जी ने जाने की आज्ञा मांगी। उन्होंने अपने पुत्र चुन्नी लाल के साथ श्री नगर जाना था। इज़ाज़त मिल जाने पर वह दोनों उस दिन रवाना हो गए और प्रेमी मलिक भवानीदास जी भी उनके साथ ही आज्ञा लेकर गए, क्योंकि उनका प्रोग्राम भी श्री नगर जाने का था। इसके बाद एक जुलाई को प्रेमी परमार्थी जी व डाक्टर भक्त राम जी ने वापसी की आज्ञा मांगी, जो मिल गई। बाबू अमोलक राम जी को आज्ञा हुई कि उनके साथ जाकर चिनारी कुटिया व जलमादा की कुटिया वग़ैरह उन्हें दिखलाता हुआ साथ ले जावे। जंगल से चलकर सब पहले शारियां पहुंचे और खाना वग़ैरह वहां खाया। वहां से रवाना होकर पुल नीली से गुज़रकर सब सड़क पर पहुंचे। वहां तांगा वग़ैरह न मिलने के कारण सब पैदल ही चलकर रात नौ बजे चिनारी पहुंचे। दूसरे दिन दरिया के किनारे कुटिया दिखलाई गई और दोपहर को वहां से बस द्वारा रवाना होकर कोहाला पहुंचे। कोहाला से पैदल जलमादा कुटिया पहुंचे। उस जगह के शुद्ध वातावरण और कुदरती चश्मों की मौज़ूदगी और आसपास का सुन्दर दृश्य और नीचे दरिया का ज़ोर-शोर से बहना अजब समां बांध रहा था और अजीब असर पैदा कर रहा था। कितनी शांत जगह थी। वहां से हिलने को तबियत नहीं चाहती थी। जलमादा निवासी प्रेमियों ने अब वहां पक्की कुटिया बनवा दी थी। 13 जुलाई को सब साहिबान वहां से रवाना होकर रावलपिंडी पहुंचे और वहां से परमार्थी जी और डाक्टर साहब लाहौर चले गए और बाबू अमोलक राम जी काला गुजरां चले गए।

95. सरूपा जंगल से वापसी

दो माह जंगल सरूपा में कठिन तप व एकांत निवास के बाद सत्पुरुष ने वापसी का प्रोग्राम बनाया। मौसम बरसात नज़दीक आ गया था। बरसात इस जगह बहुत होती थी। इस जगह एक और ख़ास कुदरत का खेल भी इन ही दिनों में होता है। इस जगह पहाड़ों पर बिजली जिसे पांभज कहते हैं गिरती है। जब वह गिरती है तो पहाड़ से स्याह रंग का अथाह पानी उमड़कर नीचे नदियों में चला जाता है और बाढ़ का कारण बनता है। श्री महाराज जी 15 जुलाई को जंगल से रवाना होकर शारियां पहुंचे। रात चौधरी जी के गृह पर व्यतीत की और दूसरे दिन चिनारी पधारे। चिनारी निवासी प्रेमियों की प्रार्थना पर उन्हें चंद दिन सत् उपदेशों द्वारा निहाल किया।

96. कान में दोबारा दर्द

इस जगह कान में दोबारा दर्द शुरू हो गया। वाह री सहनशीलता, बावजूद दर्द के सत्संग के सिलसिले और रात आनन्दित अवस्था में बाहर जाकर मग्न रहने में कोई फर्क नहीं पड़ा। फिर

चिनारी से रवाना होकर डोमेल तशरीफ ले आए। दर्द बराबर चल रहा था। डोमेल निवासी प्रेमी एक डाक्टर को बुला लाये और सत्पुरुष को दवाई इस्तेमाल करने पर मजबूर किया। मगर दवाई ने उल्टा असर किया और सेहत खराब हो गई। 'मर्ज़ बढ़ता गया ज्यूं-ज्यूं दवा की' की कहावत सही साबित हुई।

उस समय सत्पुरुष ने फरमाया:- प्रेमियों! यह शरीर कई वर्षों से सिर्फ एक वक्त तीन पाव चाय पर खड़ा किया हुआ है और कोई चीज़ वर्षों से इस्तेमाल नहीं की, इस बीच में आप लोग दवाईयों का इस्तेमाल करवाते हैं उनका उल्टा असर होना ज़रूरी है। दवाई ने बहुत कमज़ोरी शरीर में पैदा कर दी है। इसलिए आपने वहां से चलने का प्रोग्राम बना लिया और रवाना होकर जलमादा पधारे। सत्पुरुष दरअसल अपना हिसाब-किताब चुकाते हैं। जलमादा पहुंचकर आपने नीबू शर्बत इस्तेमाल किया जिससे तकलीफ़ दूर हो गई। इसके साथ ही वहां की आबो-हवा का असर भी शामिल हो गया। सत्पुरुष अपनी लीला आप ही जानें। एक तरफ तो सिद्धान्त यह बतलाता है कि ऐसी हस्तियां सर्वसमर्थ होती हैं और आम जीव ऐसा विचार करते हैं, क्यों न वह अपना कष्ट निवारण कर सकें? दूसरी तरफ ऐसी मिसालें मौजूद हैं कि ऐसी हस्तियां कानूने-कुदरत में दख़ल नहीं देतीं। जैसे कि गुरु अर्जुन देव जी गरम लोहे के तवे पर बैठे हैं, गर्म रेत ऊपर डाली जा रही है। फ़कीर मियां मीर आता है और कहता है कि अगर हुक्म हो तो लाहौर की ईंट से ईंट बजा दी जावे। मगर जवाब मिलता है कि नहीं और मुंह से शब्द निकलते हैं, ''तेरा भाना मीठा लागे'' । ईसा सूली पर चढ़ाया जा रहा है, कीलें जिस्म में ठोकी जा रही हैं और मुंह से जो शब्द निकलते हैं वह यह हैं, ''ऐ खुदा इन लोगों को बख़्श दे। ये नहीं जानते यह क्या कर रहे हैं?''

97. सम्मेलन के लिए शुभ स्थान को प्रस्थान

चूंकि सम्मेलन का समय नज़दीक आ रहा था इसलिए सत्पुरुष ने तारीखें निश्चित करके बाबू अमोलक राम को लिख दिया कि शुभ स्थान पर पहुंच कर लंगर वग़ैरह के कमरों में जो पलस्तर इत्यादि की कमी रह गई है उसे पूरा करवा देवे और खुद 25 सितम्बर, 1945 को रवाना होकर शुभ स्थान पर पधारे। आपके वहां पधारने पर संगत के प्रेमी रावलपिंडी व आसपास के इलाके से आने शुरू हो गए। उस समय शरीर में कमज़ोरी थी। शुभ स्थान पर पहुंचने से पहले नदी से गुज़र कर आगे चढ़ाई चढ़ते समय तीन दफा रुके मगर रोज़ाना के प्रोग्राम में कोई तबदीली नहीं आने दी। सत्संग होना शुरू हो गया और रात के समय तरेल नदी पर और दिन को ख़्वाजा जंगल में आत्म स्थिति का आनन्द लेना शुरू कर दिया। आपके अनुसार आत्म लीनताई प्राप्त की हुई सतपुरुष की बुद्धि इस शरीर में नहीं फैली हुई होती बल्कि आत्मा में लीन होकर आत्म रूप हो चुकी होती है, इसलिए उन्हें इस अवस्था में शारीरिक कष्ट महसूस नहीं होता।

शुभ स्थान पर निवास के दौरान आपके कुछ सत् उपदेश, जिनकी अमृत वर्षा आपने फरमाई, नोट कर लिए गए थे। वे संक्षेप में लिखे जा रहे हैं। प्रत्येक शब्द नोट करना तो मुश्किल था, फिर भी उसका सारांश प्रस्तुत किया जा रहा है।

98. सत्संग 15 अक्तूबर, 1945

फ़िल्सफ़ा स्वभाव

गुणी पुरुषों का विचार होता है कि पाप क्या चीज़ है? पुण्य क्या चीज़ है? 'यह जग मिट्ठा अगला किस डिट्ठा,' काम से फुर्सत नहीं, रब को क्यों याद किया जावे इत्यादि? (अर्थात् जब यह जग ही मीठा लग रहा है तब परमात्मा के बारे में क्यों सोचा जाए?

दरअसल ज़िन्दगी का विचार करना बड़ा मुश्किल है। वैसे शरीर, प्राण धारा पर चल रहा है। इसको ख़ास चीज़ धकेल रही है। यह जानते हुए भी कि यह ग़ल्त है और इसका नतीजा दुःख है मगर फिर भी करता है। कारण यह है कि शरीर रथ है। इसके अंदर जो जीव है वह स्वभाव के बस हुआ रथ को चला रहा है। इस आदत के बस चोर चोरी करता है, डाकू डाके डालता है, दानी दान करता है और सेवक सेवा करता है। बुराई, भलाई, नेकी, बदी सबका जीव को पता है। बावज़ूद इसके वह भलाई की तरफ रज़ूह (रुख) नहीं करता, बुराई की तरफ ही जाता है क्योंकि संस्कार अंदर उसको बदी (बुराई) की तरफ राग़ब (लगा) कर रहे हैं। बुरे ख़्यालात की लहरें उठ रही हैं जो पाप करवाकर सजा व क्लेश दिलाती हैं। मगर वह मजबूर है। उसके मुकाबले में दूसरा जीव है जो हमेशा नेक काम करता है। उसके संस्कार उसको भलाई की तरफ ले जाते हैं और भला करा कर यश और कीर्ति दिलाते हैं। कुदरत ने ऐसा निज़ाम कायम किया है कि लम्हे ब लम्हे बदों को सज़ा और नेकों को जज़ा (इनाम) मिल रही है। बुद्धिमान पुरुषों को पता लगा कि कर्म से स्वभाव बनता है और स्वभाव के मुताबिक शरीर बनता है। एक आदमी के तीन लड़के हैं। तीनों अपना-अपना स्वभाव रखते हैं लेकिन वह अपने-अपने स्वाभाविक कर्म लेकर आये हैं। मां-बाप ने उनको जन्म दिया मगर बुद्धि नहीं दी। इसलिए बच्चा अपने स्वभाव के मुताबिक चेष्टा करता है। तालुकात (सम्बन्ध) भी स्वभाव के मुताबिक होते हैं। उनको कौन बदले? एक बाप के दो बेटे हैं। एक शहनशाह बनता है। उसको सब सामान मुहैया (प्राप्त) हैं। दूसरा गदागर (भिखारी) है जो रोटी के लिए लाचार है। बाप लेखा बांट कर नहीं देता। यही हाल वनस्पति का है। कोई कड़वी है, कोई मीठी। पानी, सूरज, चन्द्रमा, हवा दोनों के लिए एक सा है मगर गन्ना मीठा है और मिर्च कड़वी है। गन्ने के बीच का स्वभाव मीठा है। मिर्च के बीच का स्वभाव कड़वा है। दोनों के बीच स्वभाव के मुताबिक ही अपनी खुराक ले रहे हैं। इसी तरह अन्न-पानी महापुरुषों और डाकुओं का समान है लेकिन महात्मा परमेश्वर को याद करता है और डाकू डाके डालता है। दोनों अपने स्वभाव वश ही ऐसा करते हैं।

कर-कर देखे कीता अपना, ज्यूं तिस की वडयाई।

''भ्रष्ट बुद्धि वाले को कौन रास्ता बतलायेगा? करनी की सज़ा जब-तक न मिल चुके रास्ता बंद नहीं होता। भला पुरुष अपना रास्ता साफ कर रहा है। दुनिया के बाहर कोई दुःख नहीं, दुःख व सुख अंदर से पैदा होते हैं। बुद्धि के निश्चय के मुताबिक सुख-दुःख मिलता है। एक इंसान ऐसा है कि जिसके लिए दुनिया प्राण तक न्योछावर करती है और दूसरा ऐसा है कि उससे नफ़रत करती है। महापुरुषों ने कहा है- कि जैसा बीजोगे वैसा काटोगे। भगवान कृष्ण ने भी कहा है- कि शरीर रूपी खेत है, जीव रूपी किसान है, कर्म रूपी फसल है। जैसा-जैसा शरीर कर्म करता है वैसा-वैसा काटेगा। जिसके दिल का आइना साफ है उसके अंदर परमेश्वर का अक्स (प्रतिबिंब) पड़ता है। जिसका दिल पत्थर है उसमें अक्स नहीं पड़ सकता। अगर अपने आइना दिल को साफ करोगे तो रब नज़दीक ही मिल जायेगा।

''दुर्योधन की जब टांगें टूटी हुई थीं, वीरानगी की हालत में पड़ा था, उस वक्त कृष्ण पाण्डवों को लेकर उसके पास गए। उस वक्त दुर्योधन ने कहा- कि मैं नेक-बद (बुरा) को अच्छी तरह समझता था। मगर मेरे अंदर एक दैत्य था जो मुझे नेकी की तरफ नहीं जाने देता था।

''महापुरुषों ने बतलाया कि एक चक्रवर्ती राजा है मगर उसको सुख नहीं। अगर तुम्हारे संकल्प पवित्र हैं तो तुम सुखी हो। जीव को अपने भाग्य ही ऊंचा या नीचा कर रहे हैं। इस कर्म क्षेत्र रूपी संसार में जैसा करोगे वैसा भरोगे। मनुष्य जीवन में आकर हौंसला बुलंद रखो। बड़ा दिल रखो। परमेश्वर का विश्वास रखो। दुनिया का भला चाहोगे तो तुम्हारा भला होगा। परमात्मा तुम्हारा भला करेगा। जान-बूझ कर अपना रास्ता खोटा न करना। अगर आपको रास्ता नहीं आता तो भले पुरुषों से पूछ कर चलो। सत्पुरुषों के विचार लो। उनके वचनों पर श्रद्धा रखकर मानते जाओ।''

99. प्रेरक और प्रकाशक शक्ति का निर्णय

सृष्टि त्रिगुणमई है। गुणों के अनुसार ज़माने का चक्र बदलता रहता है। कभी सतोगुण प्रधान होता है, तो कभी रजोगुण और कभी तमोगुण। जब सतोगुण प्रधान होता है तब सत् धर्म का प्रकाश होता है और तमाम जीव शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं और शारीरिक भोग वासना से त्याग हासिल करने का यत्न करते हैं। परिणाम स्वरूप मानसिक शांति को प्राप्त करना परम धर्म जानते हैं।

सत् उपदेश दिनांक 16 अक्तूबर, 1945

1. इस सृष्टि का स्वरूप गुणी पुरुषों ने विचार द्वारा ब्यान किया है। इनमें से बाज़ (किसी) की तहकीकात (खोज) यहां तक है कि संसार तत्त्वों के हेर-फेर से बन रहा है। तत्त्व हमेशा कायम हैं। इनको बनाने वाला कोई नहीं है। इन गुणी पुरुषों को नास्तिक कहते हैं।

2. बाज़ का ख़्याल है कि तत्त्वों में कोई ताकत है जो काम करती है। वह ताकत फेल या कर्म शक्ति है। जैसे कि अनेक तंदों करके कपड़ा बनता है, संसार अनेक परमाणुओं से मिलकर बना है। इसको कर्ममई सृष्टि या तत्त्वमई सृष्टि कहते हैं।

3. बाज़ की तहकीकात का नतीजा यह है कि कर्म और तत्त्व एक और ताकत के ताबे (आसरे) काम कर रहे हैं। उस ताकत को जीव कहते हैं। हर एक कर्म के पीछे जो कर्ता शक्ति काम कर रही है वह जीव है। यह संसार कलहम (कुल) जीव ही जीव हैं। मिट्टी, हवा, पानी, ज़ाहर (प्रगट), बातन (गुप्त) सब जीव ही जीव है। इसे जीवमई सृष्टि कहते हैं।

4. बाज़ गुणी पुरुषों का यह ख़्याल है कि जीव अल्पज्ञ है। उसमें पूर्ण शक्ति नहीं है। इसके पीछे एक और ताकत है जो इसको धकेल रही है। इसको ब्रह्म कहते हैं। इसको ब्रह्ममई सृष्टि कहते हैं।

अपने-अपने ख़्याल में यह सब सच्चे हैं। जैसे एक कायदा पढ़ने वाले की मालूमात कायदे तक ही महदूद (सीमित) है, वह बी०ए० की तालीम के मुतालिक ब्यान नहीं कर सकता। इसी तरह इन गुणी पुरुषों का हाल है।

हकीकत में कर्म, तत्त्व और जीव सब प्रभु शक्तियां हैं। प्रभु शक्तियों में हैं और शक्तियां प्रभु में हैं। जैसे सूरज किरण रूप है और किरणें सूरज रूप, बीज वृक्ष में है और वृक्ष बीज में है। सिर्फ समझ का भेद है। एक ही चीज़ में सब तब्दीलियां दिखलाई दे रही हैं। जब ईश्वर को अनुभव कर लिया तब एक ही ताकत सबमें काम करती हुई मालूम होती है। संसार का मरकज़ (स्रोत) और मसदर (मूल) वह एक ही है। अगरचे (यद्यपि) प्रभु शक्ति किरण तक में एक जैसा काम करती है मगर मानुष चोले में आकर बुद्धि कुदरत-कामले (प्रकृति) को समझ सकती है, बाकी योनियों में समझ नहीं सकती। वैसे तो पशु और मानुष सब की पैदाईश एक ही तरह हो रही है मगर सत् को समझने वाला और उसके मुताबिक कर्तव्य करने वाला मानुष प्रधान है। हर एक चीज का नाम सिलसिला चलाने के वास्ते रखे गए हैं जैसे भेड़-बकरी चराने व पालने वाले भेड़ बकरियों के नाम रख लेते हैं। जैसे-मोटरों, साईकलों और गाड़ियों पर नम्बर लगते हैं, नम्बरों के बग़ैर सिलसिला नहीं चलता इसी तरह नाम रखकर सिलसिला चलता है। नाम इंसानों ने ज़रूरत को सही तरीके से पूरा करने की ख़ातिर रखे हैं। शरीर पांच तत्त्वों का बना है। जीव शक्ति उसके अन्दर काम कर रही है। जीव अपने शरीर के अन्दर कैद है। कर्म भोग उसके दु:ख-सुख बन रहे हैं।

सत्पुरुषों ने बतलाया कि ईश्वर सत् है और सब जीव अपने-अपने स्वभाव करके शरीर में कैद हैं। शरीर के अंदर एक है प्रेरक शक्ति और एक है प्रकाशक शक्ति। प्रेरक शक्ति तृष्णा है। जीव तृष्णा को समझता है। प्रकाशक शक्ति को नहीं समझता। प्रकाशक शक्ति ईश्वरी ज्योति है। प्रेरक शक्ति यानि घकेलने वाली शक्ति धकेल रही है। भूख-प्यास लग रही है। प्रेरक शक्ति करके माया है। जब प्रकाशक शक्ति को समझेगा, प्रेरक शक्ति पर काबू पायेगा। प्रकाशक शक्ति को ही ईश्वर, गॉड, अल्लाह वग़ैरह नाम दिये गये हैं। प्रेरक शक्ति में भेद है। यह कोशिश करनी

है कि इसके अन्दर प्रकाश किस चीज़ का है। स्वप्न व सुषुप्ति में यह शक्ति अंदर प्रकाश कर रही है। इसकी रोशनी करके शरीर चल रहा है। इसी को कर्ता मानो। वह आख़िरी चीज़ है। जब-तक बुद्धि उस प्रकाशक शक्ति को नहीं देखती शरीर का झगड़ा ख़त्म नहीं होता। इस मानुष जन्म में आकर उस हस्ती का कायल न होगा तो तू माया के चक्कर में फंस कर बहुत खराब होगा। इसलिए प्रकाशक शक्ति की खोज करो, सब झगड़े ख़त्म हो जायेंगे।

100. वार्षिक सम्मेलन और यज्ञ के संक्षिप्त हालात

वार्षिक सम्मेलन के दिन आ गए। उस समय में सामान का एकत्र करना काफी कठिन था। मगर सत्पुरुष की दया सृष्टि से सब सामान काफी मात्रा में जमा हो गया।

नीयत शुद्ध रखने की चेतावनी

जब दालें वग़ैरह सागरी से लाई गईं और उन्हें साफ करने के लिए बरामदे में रखी गईं तो एक प्रेमी पुरानी दाल अंदर से निकाल लाया। यह दाल पिछले साल की रखी हुई थी। सम्मेलन ख़त्म होने पर दालें बच जाया करती थीं जिन्हें इस्तेमाल के लिए अन्दर रख दिया जाता था। उस प्रेमी ने दाल लाकर कहा कि यह दाल नई दाल में मिला दो और नई में से निकाल कर उसे अंदर रख लिया जावे। सत्पुरुष फौरन वहां पहुंच गए और आकर फरमायाः- ''प्रेमियों! खबरदार, अपनी नीयत खराब न करो वर्ना यज्ञ में विघन पड़ जायेगा। खुद नाकस चीज़ें इस्तेमाल करो। साफ और सुथरी चीज़ें संगत को इस्तेमाल करवाओ।'' साफ ज़ाहिर है कि सत्पुरुष को दिलों के हालात पता लग जाते थे। किसी के अन्दर कोई ख़्याल पैदा होता आपको फ़ौरन पता लग जाता और आप चेतावनी दे देते।

प्रेमी भी विभिन्न स्थानों से आने शुरू हो गए। शामियाने, टेंट वग़ैरह रावलपिंडी से आ गए। शुभ स्थान गंगोठियां एक छोटा सा गांव था जिसमें चंद घर ही आबाद थे। मगर गांव का हर व्यक्ति संगत के प्रेमियों के निवास के लिए कमरे खाली कर देता। टेंटों वग़ैरह का इंतज़ाम भी हो जाता। हाल में भी प्रेमी डेरा लगा लेते। इस दफा सम्मेलन में प्रेमी अहमदाबाद, हरिद्वार, अबोहर, मंडी, तरनतारन, काहनूवान, दौरांगला, लाहौर, दौलतानगर, काला गुजरां, जेहलम, गुजर खां, रावलपिंडी, कोरी, गोलड़ा, उस्मान खट्टर, खसरू, सराय सालाह, हरिपुर, छज्जियां, बरोर मोड़ा, झईया, कोहाला, जलमादा, नखेत्र, गढ़ी हवीबुल्ला, शारियां, गढ़ी दोपटा, चिनारी, ऊपी, इलाका कारू, इलाका पठवार से काफी संख्या में शामिल हुए।

शुभ स्थान गंगोठियां एक ऊंची जगह पर बना हुआ था। वहां एक कुआं बनवाया गया था जो बहुत गहरा था और सत्संग हाल से फासले पर था। नीचे गहराई में नदी थी। उसमें चश्में भी थे। पानी बड़ा शुद्ध और हाज़िम भी था। सम्मेलन के लिए पानी वहां से लाना पड़ता। प्रेमी तमाम रात ड्रम लिए हुए उनमें पानी भरकर सिरों पर रखकर नीचे से ऊपर लाते। कड़ाह प्रशाद भी काफी

मात्रा में बनता था। पन्द्रह पूर कड़ाह जिसमें बीस सेर सूजी एक वक्त डाली जाती, तैयार होता था। कड़ाह तैयार करने वाले सेवक कड़ाह (हलवा) तैयार करते, दाल तैयार करने वाले प्रेमी दाल तैयार करते। मातायें तमाम रात रोटियां पकाती। सूरज निकलने तक तमाम सामान तैयार हो जाता।

24 अक्तूबर को सत्संग सम्मेलन हुआ। सुबह सबसे पहले झंडा चढ़ाया जाता। महामंत्र उच्चारण करने के बाद शब्द उच्चारण किये जाते और झंडा चढ़ाकर प्रशाद बांटा जाता।

सम्मेलन की कार्यवाही 9 बजे शुरू हुई। सारी संगत ने महामंत्र व मंगलाचरण मिल कर उच्चारण किए। उसके बाद प्रेमी लाला राधा कृष्ण हरिपुर निवासी ने ब्रह्म सत्यं पर नज़्म पढ़ी। उसके बाद बख़्शी जोगिन्दर लाल जी ने 'समदर्शन योग' से वाणी बड़े सुर में पढ़ी। उसके बाद महाराज कृष्ण ने एक नज़्म पढ़ी और फिर 'समदर्शन योग' से कुछ जबानी शब्द सुनाये। उसके बाद प्रेमी राम लाल परमार्थी ने अन्य महापुरुषों के शब्दों को मीठे सुर से उच्चारण करके संगत को निहाल किया और साथ ही उनकी व्याख्या की और बतलाया कि आम व्यक्ति ईश्वर को बाहर ढूंढते हुए भटक रहे हैं लेकिन श्री कृष्ण भगवान ने भगवत गीता में फरमाया है:

'भगवान जीवों के हृदय में बैठा है'

फिर अठारवें अध्याय में साफ-साफ बतलाते हैं कि ऐ अर्जुन! ईश्वर सब भूत प्राणियों के हृदय में निवास करता है और सबको जीवन दे रहा है। अगर तू ईश्वर को पाना चाहता है तो उस हृदय निवासी भगवान की शरण ले। उसकी शरण में जाने से उसकी कृपा से तू परम शांति को प्राप्त करेगा। उसके बाद आपने हृदय में भगवान की शरण में जाने का सही रास्ता बतलाया।

इसके बाद मेहता हंसराज जी एडवोकेट, लाहौर निवासी ने अपने हवाई जहाज के सफ़र के अनुभव के आधार पर सत्गुरु की ज़रूरत की अहमियत बतलाई और कहा कि हमें अपने सत्गुरु पर पूरा भरोसा और विश्वास रखना चाहिए। उसके बाद मेहता नरसिंह देव जी, रेलवे इंस्पेक्टर ने अपने भाषण में इंसान की उम्र का खास हिस्सा ईश्वर की याद में व्यतीत करने की हिदायत की ताकि उसका लोक और परलोक सुधर जाये, मगर अफ़सोस है कि यह जीव ज़िंदगी में तृष्णा को नहीं छोड़ता। हम सबको, जो यहां इकट्ठे हुए हैं, सत्गुरु देव जी की शरण लेकर अपना जीवन सुधार करना चाहिये।

इसके बाद बख़्शी डिप्टी लाल अबोहर निवासी व रोशन लाल जी हरयाल हाल लाहौर और लाला राम शरण जी सूरी ने नज़्में पढ़ीं। उसके बाद लाला राधा कृष्ण जी हरिपुर निवासी ने श्री महाराज जी के जीवन के हालात पर नज़्म सुनाई। उस वक्त पूज्य श्री महाराज जी तशरीफ़ लाए और दो घंटे अमृत वर्षा की। आपने फरमाया, जिसका सार यह है- कि इस संसार में हर एक जीव दुःखी है गो (यद्यपि) वह सुख के लिए दिन रात यत्न कर रहा है। वह सांसारिक वस्तुओं में सुख की तलाश कर रहा है। चूंकि संसार की हर वस्तु बदलने वाली है इसलिए उसे सुख नहीं मिल रहा। सुख उस वस्तु में है जो हमेशा है और दायम-कायम एक रस है और वह जीव का अपना आप है और फरमाया कि ख़्वाबे गफ़लत से जागो, जो रास्ता बतलाया गया है उस पर चलकर अपना

कल्याण करो। जो वक्त गुज़र रहा है उसकी कद्र करो। सत् नियमों का पालन करते हुए इस जिंदगी के मकसद को पूरा कर लो।

उसके बाद आरती व समता मंगल सब संगत ने उच्चारण किये। फिर प्रशाद बांटा गया और उसके बाद सब आए हुए प्रेमियों ने संगत को कतारों में बिठा कर लंगर बांटा। इसके अलावा मुसलमान भाई भी, जो आए हुए थे उन्हें भी प्रशाद खिलाया गया। सम्मेलन के दूसरे दिन डाक्टर फतेह चन्द जी सकना मियांवाली, सेठ करोड़ीमल जी सकना अबोहर, सेठ तारा चन्द जी लाहौर निवासी और लाला जसवंत राय जी सकना काहनूवान ने दीक्षा ली और अपने जीवन के सुधार का मार्ग ग्रहण किया। सम्मेलन के बाद सिलसिला सत्संग जारी रहा। उन सत्संगों में से कुछ प्रसंग जो नोट किये गए थे वह नीचे दर्ज़ किये जा रहे हैं।

101. धर्म की महिमा

सत् उपदेश दिनांक 3.11.1945

धर्म की महिमा शास्त्रों में गाई गई है, ऐसा क्यों है? और जीव को इससे क्या फायदा पहुंचता है? आओ, अब इन बातों पर विचार करें।

जिस तरह हर एक चीज़ किसी बुनियाद पर खड़ी है, वृक्ष जड़ पर खड़ा है, मकान बुनियाद पर खड़ा होता है इसी तरह मानुष की ज़िंदगी भी किसी असूल पर ही तरक्की कर सकती है। पहले इंसान पैदा होता है फिर होश संभालता है। जब जवान होता है जवानी के नशे में सरशार (मस्त) होता है। अभिमान में आकर कहता है कि मेरे बराबर कोई नहीं। धरती को रौंदता है। अगर सत् पर चलकर सही कदम नहीं रखा तो इस दुनिया से पश्चाताप लेकर जाता है। खाना-पीना, सोना-जागना आदि विकार मानुषों और पशुओं में एक जैसे हैं। मानुष में बड़प्पन तब ही है कि वह सही असूल को समझे और अपना जीवन सही बनाए और अपना सुख लोगों में तकसीम करे। जैसे-चीज़ों के बढ़ने का पता नहीं लगता, मसलन फसल बोई जाती है, उगती है, जवान होती है, पकती है और काट ली जाती है, शरीर भी इसी तरह पैदा होता है, जवान होता और बूढ़ा हो जाता है, मगर पता नहीं लगता कि कैसे बढ़ा? इस तरह जब धर्म पर चला जावे वह ही बढ़ता है, मगर पता नहीं लगता। जब फैल जाता है तब पता चलता है! मूर्ख लोग कहते हैं रब किसने देखा है? अगर काम-काज न किया जावे रोटी अपने आप मुंह में नहीं पड़ती। यह आम ख़्याल है। एक ही खेत में कमाद (गन्ना) और मिर्च बोई जाती है, किसान हिफ़ाजत भी एक जैसी करता है, पानी भी एक सा देता है। बावज़ूद इसके कमाद मीठा है और मिर्च कड़वी होती है। कमाद इस जमीन से मिठास ले रहा है और मिर्च कड़वाहट लेती है। इसी तरह दुनिया में कोई मीठे विचर रहे हैं, कोई कड़वे जहरीले विचर रहे हैं। इनमें से मीठे को जयकार और ज़हरीले को फटकार मिल रही है।

धर्म क्या है? धर्म वह धारणा है जिससे मन को शांति मिले। पाप क्या है? पाप वह कर्म है जिससे मन जले। जीव को इख़्तियार (अधिकार) है ख़्वाहे (चाहे) ठंडक हासिल करे ख़्वाहे जलन। धर्म ठंडा करेगा, नेक नामी होगी, पाप जलवायेगा और बदनामी देगा। महापुरुषों ने तजुर्बा (अनुभव) किया और बतलाया कि धर्म से कल्याण होता है और पाप का असर बुरा होता है। कठोर बुद्धि वाले को पता नहीं लगता कि क्या असर दिल पर हुआ है? मगर असर ज़रूर होता है। ज़रा ग़ौर करके देख लो, इस इलाका में ब्राह्मण कितने अमीर हैं कितने ग़रीब। देख लो, उनकी क्या करतूते हैं? धर्म के अभाव से अमीर भी जल रहे हैं और कंगाल भी। दोनों अशांत हैं। लेकिन जहां धर्म है वहां कंगाल भी खुश हैं, दौलत मंद भी खुश हैं। इसलिए धर्म बड़ी चीज़ है। धर्म पर चलने वाले की नसल सवाई होती है। उसके ख़ानदान में बुद्धिमान पुरुष पैदा होते हैं। तेज़ बढ़ता है। शांति बढ़ती है। मगर जहां अधर्म डेरा लगाता है तीसरी पुश्त में नस्ल ख़त्म हो जाती है। ख़त्म न हो तो भी उस ख़ानदान में कायर, लूले, लंगड़े आदमी पैदा होते हैं।

धर्म वह असूल या नियम है जिनकी वज़ह से जीव को शांति मिलती है। ज़रा इस इलाका में निग़ाह डालो, सौ में से तुमको एक भी न मिलेगा जो मांस शराब इस्तेमाल करने वाला न हो। कहते हैं मांस ताकत देता है। मगर कोई इलाका फतह करके तो नहीं दिखाया। लिबास तुम्हारा क्या है? ज़रा उसको तो देखो। यह बीमारी जो तुम्हें लगी हुई है उसका ब्यान हो रहा है। संगत तुम्हारी कैसी है? जब दो इकट्ठे बैठेंगे निंदा बख़ीली शुरू हो जावेगी। भलाई की बात एक मिनट भी न सोचोगे। आम शुगल (साधना) यही है कि जब बातें करने बैठे दो घंटे वहीं सरफ़ (व्यतीत) कर दिए। अन्दर सोचा क्या? बदी और निंदा। हीरे जैसा जन्म कौड़ी बदले खो दिया। भली सोसाईटी में बैठना चाहते ही नहीं। भली बात सुनना नहीं चाहते। विचार की हालत यह है कि अगर कोई दूसरा राय पूछने आया, ऐसी पट्टी पढ़ाई कि पैरों के बल चलकर आया सिर के बल चलकर गया। ऐसी हालत में सुख कहां से मिले। सुख जो धर्म से मिलता है। सुख सेवा भाव में है, चित्त की निर्मानिता में है। ऐसे ही उत्तम गुणों को धारण करने से धर्म बढ़ता है और सुख-शांति मिलती है। ईश्वर सुमति देवें ताकि सत् धर्म पर चलो।

102. सुख

सत् उपदेश दिनांक 4 नवम्बर, 1945

पैदाईश से ही जीव अपनी-अपनी याचना लेकर विचर रहा है। इस संसार की लीला अजब है, इसका सिरा कोई नहीं है। वासना, तृष्णा के अम्बार अंदर भरे पड़े हैं। ज्यूं-ज्यूं शरीर बुलन्दी की तरफ जाता है यह बढ़ते जाते हैं। आख़िर जीव दुनिया छोड़कर चला जाता है, लेकिन प्यासा ही जाता है क्योंकि वासना ख़त्म नहीं होती। यह सृष्टि का असली रूप है। जीव को पता नहीं कि कहां से आया, कहां जाना है? शरीर की कैद में शरीर को सुखी बना रहा है। शरीर बजाते खुद (स्वयं)

कोई चीज़ नहीं है। यह दूसरी ताकत के सहारे खड़ा है। इसीलिए इसके सब यत्न-प्रयत्न गल्त हैं। महापुरुषों ने इस जीवन पर ग़ौर करके विचार किया कि जीव तृष्णा के वश होकर जल रहा है। जितना यत्न-प्रयत्न संसार में करता है तृष्णा बढ़ती जाती है, शरीर घटता जाता है। आख़िर अशांत ही इस दुनिया से जाता है। चक्रवर्ती राजे भी लाचार हैं, भिखारी भी लाचार हैं। परिवारी भी तंग हैं। बूढ़े आदमी हाय-हाय कर रहे हैं। जवान उनसे ज़्यादा दु:खी हैं और शोर मचा रहे हैं। बच्चे अनयुक्त हालत में इख़तियार (धारण) करके रो रहे हैं। तसल्ली किसी को भी नहीं है। जीव शरीर की ममता में फंसा हुआ शरीर की कायमी के तरीके सोच रहा है और खुश हो रहा है। मगर जब जानता है कि शरीर ख़त्म हो जावेगा और बाकी कुछ नहीं रहेगा, उस वक्त सोचता है कि क्या हालत होगी?

तमोगुणी बुद्धि वाले के लक्षण यह हैं- वह हर वक्त स्वार्थ की ख़ातिर तदबीरें व तज़वीज़ें सोचता है। तृष्णा उसके हृदय को सख़्त जलाती है। जब हृदय में सख़्त तकलीफ़ होती है और जब कल्पना अनंत प्रकार की बढ़ती है उस वक्त नशा, शराब, भंग, चरस वग़ैरह का इस्तेमाल करता है या मानसिक अशांति को दूर करने की ख़ातिर सिनेमा या थियेटर देखता है। लेकिन फिर भी दिन की बेकरारी आराम नहीं करने देती। यह निहायत ही अज्ञान अवस्था है।

रजोगुणी बुद्धि वाला ज़्यादा कष्ट नहीं करता लेकिन शारीरिक उन्नति की ख़ातिर बड़े-बड़े यत्न करता है। नौकरी करता है। कोयले बेचता है। दूध फरोख़्त करता है। पुलिस वालों से दोस्ती बनाता है। अफ़सरों से मुलाकात करता है। कोशिश करता है कि एम०एल०ए० बन जावे। दिन-रात यत्न कर रहा है, मगर शांति एक लम्ह (क्षण) भी नहीं। रात को भी तज़वीज़ें सोच रहा है कि कैसे पैसा हासिल हो? यह अति कृपण हालत है। हर वक्त जलता रहता है। धन वग़ैरह बहुत इकट्ठा किया, ख़जाने का मालिक बन गया, लेकिन दिल को तसल्ली नहीं। यही हालत ज़हालत है। मरना उसको याद नहीं, उसका धर्म-कर्म जीवन गर्ज़ है। आख़िर सब कुछ छोड़ कर चला जाता है।

सतोगुणी बुद्धि वाला पुरुष इससे ऊपर सोचता है कि जैसे एक दिन पैदा हुआ, एक दिन मर भी जाना है। इस दिल को तसल्ली किसी तरह नहीं। बड़े-बड़े धनाड्य तंग हैं। ऐसा विचार करने वाला और जुस्तज़ू (कोशिश) करने वाला पुरुष सतोगुण बुद्धि वाला होता है। ऐसे नेक भावना वाले पुरुष की करनी व सोच पवित्र होती है। संगत भी पवित्र होती है। वह गुरु भक्त होता है। वह दिल की तसल्ली के यत्न करता है, जो प्रति-फलित (सफल) हो जाते हैं।

यह सृष्टि का रंग है। जीव अपनी करनी की सज़ा पा रहा है। जब यह जेलखाना ख़त्म होता है दूसरा जेलखाना हासिल करता है। इसी तरह कई जेलखाने बदलता रहता है। जीव खुशी की चाहना करता है। खुशी की ख़ातिर यत्न-प्रयत्न करता है। सत्पुरुषों ने खोज की क्या खुशी धन-दौलत में है, परिवार में है? क्या करोड़पति खुश है? जब तहकीकात की तो पता लगा कि जीव खुशी की उम्मीदें बांध रहा है। उम्मीद करता है कि फलां बात करूं खुशी मिल जावेगी, मगर दुनियावी पदार्थों में खुशी नहीं मिलती। संसार में सही खुशी को समझने वालों ने बताया कि

दुनियावी पदार्थों में खुशी नहीं मिलती। शरीर की जो प्रकाशक शक्ति है जब-तक बुद्धि उसको न पहचाने तब-तक उसको असली खुशी हासिल न होगी। मानुष जन्म में इसका समझना दुर्लभ माना गया है। सर्व प्रकाशक शक्ति आनन्द स्वरूप है। महापुरुषों ने बार-बार कहा है कि इस शरीर में आकर भक्ति सेवा वग़ैरह द्वारा परमार्थ सिद्ध करने की कोशिश कर। कोई खुशनसीब ही मानसिक शांति का यत्न करता है।

आख़िरी फैसला यह है कि मानुष ज़िन्दगी का मिशन सुख है। वह ईश्वर आराधना के बग़ैर नहीं मिल सकता। मौत जैसा ग़नीम (शत्रु) नहीं। मौत जैसा इम्तेहान नहीं। मौत जैसे संसार की तबदीली के वाक्यात नहीं। मौत के इम्तेहान में सब फेल हो गए, मगर सोचा नहीं। शरीर ही अपना नहीं और कौन सी चीज़ अपनी बनाओगे? दुनिया का इम्तेहान पास करना है जो बड़ा मुश्किल है। शांति ईश्वर के स्वरूप को समझने में है। उसकी प्राप्ति के लिए यत्न करो। जब उसे अनुभव कर लोगे शांति हो जावेगी।

103. लोक सेवा

सत् उपदेश दिनांक 5 नवम्बर, 1945

ईश्वर की उपासना कई निश्चय करके सांसारिक जीव करते हैं। पहले जीव जड़ बुद्धि वाले मूर्ख वह हैं जिन्होंने परमेश्वर के मुतालिक सुना है मगर अन्दर विश्वास नहीं है। वह अपनी नेकी-बदी को सोच नहीं सकते हैं। उनकी ज़मीर (अंतर्आत्मा) अंधी और मोटी होती है। वह किसी वक्त कहीं मुंह से परमेश्वर का नाम किसी पीर गुरु से सुनकर निकालते हैं। मगर पता नहीं है कि परमेश्वर क्या चीज़ है? उन्होंने ज़िदगी का मुद्दा यह समझ रखा है कि खूब ऐश व इशरत (मौज) की जावे। सत्-असत् कर्म करके मन और इंद्रियों के भोगों में ग़र्क (डूबे) रहना ज़िंदगी का मिशन समझा है। ऐसे लोग हर किस्म की चाल चलने वाले होते हैं। अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के वास्ते अपनी लड़कियां तक बेच कर अपना लालच पूरा कर लेते हैं। उनको लज्जा, शर्म, ग़ैरत नहीं होती। वह मन के दोषों में ऐसे गिरफ़्तार हैं कि हर वक्त दुराचार करके इनको निवृत्त करने की कोशिश करते हैं। जब दुराचार करके चलते हैं, कहते हैं कि हम सफेदपोश हैं, हमने कोई गुनाह नहीं किया। ऐसी सूरत वालों को चंडाल का दर्जा दिया गया है। ऐसे लोग हमेशा बेवफ़ा होते हैं। किसी से हमदर्दी करने वाले नहीं होते। साक्षात् राक्षसी बुद्धि वाले पुरुष हैं। उनका कोई इलाज नहीं। उनका मर्ज़ ला-इलाज है। उनका कोई गुरु पीर नहीं। गवर्नमेंट ही उनको कोई दंड दे तो दे या कुदरत कर्म दंड दे सकती है।

दूसरे दर्ज़े के जीव वह हैं जिन्होंने रब के मुतल्लक (बारे में) सुना है। वह ईश्वर को मानते हैं। मगर इसलिए कि संसार के सुख और संपदा मिले, धन मिले। वह स्वार्थ की ख़ातिर रब को याद भी करते हैं। उसकी कुछ-कुछ खुशामद भी करते हैं। दो-चार साल भजन बंदगी भी करते हैं।

अगर संसार का सुख होने लगा तो उनकी रूह उस तरफ लगी रहती है और अगर संसार की गर्दिश आ गई तो भजन बंदगी छोड़ देते हैं और कहते हैं कि हमें भजन बंदगी से क्या मिला? जो लोग बुरे काम करते हैं और धोखे करते हैं वह फल-फूल रहे हैं, लेकिन जो अच्छे काम करते हैं, भजन भी करते हैं, फिर भी दुःखी हैं।

इनके ऊपर पंडित, काज़ी, मुल्ला हैं। वह दिखलावे की ख़ातिर माला फेरते हैं ताकि लोग उन पर एतबार करें और अपना उल्लू सीधा करें। बड़े-बड़े सजदे करते हैं। मंदिरों में बड़ी-बड़ी आरतियां करते हैं। जनेऊ वग़ैरह खूब पहनते हैं। ज़रा सा कपड़ा किसी से छू गया फ़ौरन स्नान करते और कपड़े धोते हैं। लकड़ियां तक वह धोकर जलाते हैं। मगर जानवरों को पर व बाल सहित हड़प कर जाते हैं। यह सब धर्म के ज़रिये संसारी सुख एकत्र करते हैं। इस तरीके से रब को मानने वाले दरअसल रब को नहीं मानते, वह माया के मोह में जकड़े हुए हैं।

रब के मानने वाले वह हैं जिन्होंने संसार की नाशवान हालत का विचार किया और सोचा कि संसारी सुख ख़त्म हो जायेंगे। उन्होंने सोचा मन को ऐसी जगह लगाया जावे जहां सच्चा सुख हासिल हो। वह शारीरिक सुख की ख़ातिर ईश्वर को नहीं मानते बल्कि मन की शांति की ख़ातिर उसका सिमरण करते हैं। उनकी भक्ति अटूट होती है। वह रब से व्यौहार नहीं करते। सुख और दुःख में ईश्वर को याद करते हैं। वह दिखलावे की ख़ातिर ईश्वर को याद नहीं करते। बल्कि वह इरादे को पुख़्ता करने की ख़ातिर रब को याद करते हैं। वह चाहते हैं कि उनकी ज़िन्दगी जनता की बेहतरी के लिए सरफ़ (व्यतीत) हो। ऐसे पुरुष ही ईश्वर महिमा को जानने वाले हैं। लोक सेवा का भाव उनके अंदर पैदा होता है। दूसरों का दुःख वह अपना दुःख जानते हैं। वह निष्काम सेवा करते हैं। वह ईश्वरवादी पुरुष हैं। जनता की सेवा उनका असूल है। जिस पुरुष में जनता का प्रेम और सेवा हो वह ईश्वर को मानने वाला है।

गुरुओं ने जो रास्ता बतलाया, खुद उस रास्ते पर चलकर कामयाबी हासिल करके जनता को रास्ता दिखलाया और उन्होंने बतलाया कि ईश्वर को वह समझ सकता है जिसके अन्दर ख़लकत (जीव जगत) का प्रेम है। हर एक जीव चाहता है कि मुझ को दुःख न मिले, इसलिए उन्होंने बतलाया कि अगर तू सुख चाहता है तो सब जीवों को सुख देने वाला बन, अपना सुख दूसरों में तकसीम (बाँट) कर, तुझे खुद ब खुद सुख मिलेगा। अगर तू ऐसा बनेगा दुनिया में नाम रोशन होगा। अपनी रोटी में से अतिथि, अभ्यागत, यतीम, अनाथों को दे, तेरे अम्बार भरे रहेंगे। तुम्हारा भला दूसरे के भले में है। ऐ मानुष! तेरी कल्याण दूसरे की कल्याण में है। अगर तू दूसरे की नाश का यत्न करेगा तेरा अपना नाश होगा। आत्मा जैसे तुममें प्रकाश कर रही है वैसा दूसरों में भी प्रकाश कर रही है। अगर तू दूसरे से दुश्मनी करेगा तो अपने से दुश्मनी करेगा। लेकिन यह ऊंची तालीम है, इसकी समझ मुश्किल है। कुलक्षण रूप बुद्धि दूसरों के दोष तलाश करके अपने अंदर दोष भर लेती है। अपने अंदर बे-इतबारी (अविश्वास) है इसलिए दूसरों को बे-इतबार समझता है।

नेक स्वभाव, फ़र्माबरदारी (आज्ञा पालन), सेवा, सत् वग़ैरह धर्म के रूप हैं। कानून मुताबिक चलने वाले लोग कामयाब होते हैं। मंदिर वग़ैरह संगत के इकट्ठा होने के वास्ते बनाये गए हैं ताकि वहां जाकर नेक अमल सीखें। जो पुरुष अपने शरीर की ताकत व धन दूसरों की भलाई की ख़ातिर सरफ़ (खर्च) करता है वह दिल का मालिक बन जावेगा। दिल के मालिक नेक स्वभाव वाले बनते हैं। जिनके अंदर जनता की प्रीत, जनता की सेवा और उपकार नहीं उनको रब का पता नहीं है। महापुरुष सोचते हैं कि जैसे अपने बच्चे वैसे दूसरों के बच्चे हैं। वह उनकी भी सेवा करते हैं।

एक दफा स्वामी रामतीर्थ एक गांव से गुज़र रहे थे। देखा, एक औरत रो रही है। रोने का सबब दरयाफ्त (कारण पूछा) किया। उस औरत ने बतलाया- कि मेरा बच्चा मर गया है। स्वामी रामतीर्थ एक बच्चे को पकड़ कर लाये, उसे औरत के सामने करके कहा- कि यह देख बच्चा ज़िंदा है और तू कहती है वह मर गया है। उस औरत ने जवाब दिया- कि यह मेरा बच्चा नहीं है। स्वामी रामतीर्थ ने जवाब दिया- कि तू 'मेरे' को रो रही है, बच्चे को नहीं रो रही है।

जो जीव औलाद की सेवा में लगे रहते हैं और नेक लोक सेवा की तरफ राग़िब नहीं होते उनको आख़िर तजुरबा होता है कि उनकी औलाद उनको अहसान फ़रामोश (भूल जाना) कर देती है। अगर किसी दूसरे जीव का अहसान किया जावे वह तमाम उम्र उसके अहसान को याद रखता है। एक पुरुष अपनी लड़की की शादी पर लाखों रुपया देता है मगर लड़का उसका अहसान नहीं मानता बल्कि कहता है कि थोड़ा दिया है। अगर तुम ग़रीब की लड़की पर एक हज़ार रुपया भी सरफ़ (खर्च) कर दो वह तमाम उम्र तुम्हारा यश गाता रहेगा। जब-तक कुर्बानी न की जाये दुनिया कायल नहीं होगी।

नौ शेरवां आदल (इंसाफ) क्यों मशहूर था? नौशेरवां का बाप एक तिरखान औरत को ज़बरदस्ती निकाल लाया और उसके बदन से नौशेरवां पैदा हुआ था। जब नौशेरवां का बाप मर गया और नौशेरवां तख़्त पर बैठा उस तिरखान ने दरबार में आकर इंसाफ़ के लिए दरख़्वास्त दी और कहा-कि पहला बादशाह उसकी औरत को ज़बरदस्ती निकाल लाया था, वह औरत मुझे दिलाई जावे। नौशेरवां ने अपनी मां को दरबार में बुलाया और दरयाफ्त किया कि क्या बादशाह उसको ज़बरदस्ती निकाल लाया था या उसकी मर्ज़ी से निकाल लाया था? जब उसकी मां ने जवाब दिया कि- वह उसको ज़बरदस्ती निकाल लाया था! उसने उसी वक्त हुक्म दिया कि वह उसे पकड़कर ले जाये। तिरखान नौशेरवां की मां को पकड़कर ले गया। जब बाहर निकला तो लोगों ने समझाया कि अब तू इस औरत को ले जाकर क्या करेगा? तू कैसे इसका खर्च बर्दाश्त करेगा? तेरा इंसाफ़ हो गया। अब तेरे लिए बेहतर है कि तू इसको वापस कर दे। तुझे इसके बजाये नकद रुपया मिल जावेगा। उसने वापस आकर ऐसा ही किया तो नौशेरवां ने उसको अपनी वालदा (माँ) के तोल के बराबर धन दे दिया। इसलिए नौशेरवां का आदल मशहूर है।

हरीशचन्द्र की शमशान में नौकरी लगी थी। उसके पुत्र को जलाने के लिए लाते हैं, मगर वह अपने फ़र्ज़ का पाबन्द उसे जलाने नहीं देता। उसको अपना कर्तव्य याद है। गुरु गोबिन्द सिंह के

चारों बच्चे शहीद हो गए। दो चमकोर की रण भूमि में शहीद हुए और दो सरहिन्द में वक्त के हाकिम ने दीवार में चुनवा दिये। उस वक्त गुरु गोविन्द सिंह ने कहा कि क्या हुआ जो चार बच्चे शहीद हो गए?

बुद्धिमान पुरुषों के दिल में कभी नहीं आया कि ये मेरा है या पराया है। तंग दिल कमीने लोगों की क्या ज़िन्दगी है? जिस तरह तू अपने सुख को चाहता है उसी तरह दूसरों के सुखों को समझ। लोक सेवा की तालीम कृष्ण ने गीता में दी है, मगर वह ग़ायब हो गई। यतीम, अनाथ, अन्धे, लूले, लंगड़े जीवों की सेवा का किसी को ख़्याल नहीं। सिर्फ गऊ ब्राह्मण की सेवा का ज़िक्र आता है। पुरातन तालीम ग़रूब (लुप्त) हो गई इसलिए भारत को जवाल (पतन) आया। मग़रबी (पश्चिमी) तालीम ने आंखें खोलीं। कांग्रस ने रोला डालना शुरू किया। तब पुराने ग्रन्थ खोले और अपनी तालीम को देखा। कानूने-कुदरत को जो कौम छोड़ जाती है वह तबाह हो जाती है। दूसरी कौमें आकर उसको दबा लेती हैं। अधिकारी की सेवा जिस मुल्क में नहीं होती उसका भला नहीं हो सकता। हिन्दू कौम असलियत से बहुत दूर चली गई है। इसलिए तबाह हो रही है।

104. अपना सुधार

सत् उपदेश दिनांक 7 नवम्बर, 1945

जागृत, स्वप्न तथा सुषुप्ति हालत में जीव सृष्टि के कई रूप देखता है। जागृत में और दुनिया देखता है, स्वप्न में और देखता है और सुषुप्ति में और दुनिया देखता है। हर वक्त यह रचना रचता रहता है। जंगल में बैठा हुआ शीश महल बनायेगा। किसी घड़ी यह अपनी रचना से न्यारा नहीं होता। खुद रचना रचकर आप ही मोहित हो जाता है और आप ही उसे पकड़ने की कोशिश करता है। अगर नहीं मिलती तो रोता है और अगर मिल जाती है तो हँसता है। जब-जब सुनता है कि फलां नगर बड़ा सुन्दर है, पहले उसका मन घड़ंत नक्शा बनायेगा, फिर चाह पैदा हो गई कि चलकर देखे। आख़िर अपनी कामना पूरी करता है। यह सृष्टि है।

गति बहुत दूर है। गति उस हालत को कहते हैं कि एक चीज़ दूसरी चीज़ में लय हो जावे, जैसे मिट्टी-मिट्टी में मिल जावे, पानी-पानी में मिल जावे। दरिया समुन्द्र में जब मिल जाता है उसकी गति हो जाती है। जीव जब-तक ईश्वर में न मिल जावे उसकी गति नहीं होती। जीव को शांति तब ही होती है जब अपना असली ठिकाना तलाश कर लेवे।

परमेश्वर शरीर में मौज़ूद है मगर इस आंख से नहीं दिखाई देता। वह अंदरूनी आंख है जिससे उसे देख सकता है। बुद्धि दुनिया को देख रही है, ईश्वर को नहीं देख रही। ईश्वर को देख लेवे तो संसार गायब हो जायेगा। उसकी दुनिया तृष्णा है। जब-तक तृष्णा ख़त्म नहीं होती दुनिया बनायेगा। जब एक शरीर मर गया शरीर का व्यौहार बन्द हो गया। दूसरे जन्म में जाकर वह फिर नई रचना शुरू करता है, इसी तरह शरीर मरने पर इस जन्म के काम छोड़कर फिर आगे काम शुरू

कर देगा। जीव का काम जब-तक ख़त्म न हो इसका झगड़ा ख़त्म नहीं होता। रब की अदालत उसके लिए खुली है। कर्म चक्कर ही रब की अदालत है। वह कहता है कि तुम्हें जिस चीज़ की चाह है वह तुम्हें मिलेगी। मसलन अगर तुम कत्ल करना चाहते हो तो करो, जब कत्ल करोगे पकड़े जाओगे, सजा फांसी मिलेगी। जब सजा मिलती है तब रोता है जीव करने में सयाना (चतुर) है मगर जब फल मिलता है लाचार होता है।

कर्म कैसे खत्म होता है? मन दिन-रात किसी वक्त भी बेकार नहीं रहता। कुछ न कुछ करता ही रहता है। जब-तक उसका नाचना-कूदना बंद नहीं होता उसकी गति नहीं होती। यह नाचना कूदना तब बंद होता है जब यह आत्म रूपी समुन्द्र में मिलेगा। जैसे दरिया बह रहा है, उसके आगे बाँध बांधा जावे वह उन्हें भी तोड़ देगा, उसके आगे पहाड़ खड़े कर दिए जायें तो उन्हें भी तोड़कर निकल जावेगा, लेकिन जब समुन्द्र से मिल जावेगा शांत हो जावेगा। जीव की कामना कल्पना खत्म नहीं होती जब-तक परमेश्वर को प्राप्त न कर लेवे। उसका ज़ोर-शोर कम नहीं होगा, जब परमेश्वर पूर्ण रूप उसको मिल जावेगा तब उसको शांति होगी। जब-तक वहां नहीं पहुंचता रगड़-झगड़ लगी रहती है। अपने-अपने कर्मों के संस्कार देख रहा है। इस दुनियावी जेल में एक टोकरी ढो रहा है, एक थैलियों में खेल रहा है। यह अपने-अपने कर्मों का नक्शा है। अच्छे कर्म से अच्छा फल मिलता है। बुरे कर्म करने से बुरा फल मिलता है। महापुरुषों ने बतलाया है कि जो कुछ तू कर रहा है वह सब कुछ परमेश्वर देख रहा है। तुम्हारी बुद्धि उसे समझती है। जब वह समझ रही है तू कैसे निकल सकता है? क्योंकि शहादत देने वाला साथ है। तेरी अपनी ज़मीर तेरी मुख़ालफ़त (विरोध) भी करती है, मदद भी करती है इसलिए तू सीधे रास्ते चल। सोचना और मौके के मुताबिक कर्म करना ख़ास बात है। अगर तू अच्छा सोचेगा अच्छे फेल (कर्म) करेगा। अगर तू बुरा सोचेगा बुरे फेल करेगा। इसलिए बुरी सोच न सोच, बल्कि जब सोच नेक सोच। सत्संग वग़ैरह में शामिल हो ताकि तेरी सोच ठीक बने और तू नेक काम करे। जीव अगर अंधेरे की तरफ जा रहा है दूसरा उसकी क्या रखवाली कर सकता है? विचार दीपक है। जीव अन्दर से कहता है कि किसी की चीज़ न उठा मगर उसकी परवाह नहीं करता। हक-नाहक जो कुछ करता है जीव को पता है। अपने पराये का किसको नहीं पता है? जानवरों के अन्दर भी अक्ल है। बैल की मिसाल ले लो। दो बैल इकट्ठे बंधे हैं। एक उनमें ताकतवर है। दोनों के आगे चारा डालो। जो जोरावर (शक्तिशाली) है वह कमज़ोर के आगे का चारा खायेगा। भैंस को जब-तक पेट भरकर न खिलाओगे दूध नहीं देगी। बाज़ (कोई) बग़ैर मालिक दूध नहीं देती। बकरी अपने बकरोट (बच्चे) को दूध पिलायेगी हालांकि इधर में और भी उस किस्म के बकरोटे मौज़ूद हैं, शक्ल भी उनकी एक जैसी है। मज़ाल नहीं कि दूसरे बकरोटे को दूध पिलाये। कुदरत ने हर एक चीज़ को अक्ल दी है। अक्ल से हर एक चीज़ बढ़ती फैलती है। मानुष में विशेषता यह है कि उसमें विचार हैं, बाकी जानवरों में नहीं।

गुणी पुरुषों ने हिदायत दी, तू ऐसा कर्म कर कि तेरी रूह खुश हो। सत्कर्म, सेवा, दान-पुण्य करो। मौत को याद रखो। किसी का बुरा न सोचो। तब तुम्हारी रूह खुश होगी, अन्दर से खुशी पैदा होगी। इसकी प्रतीक्षा करो।

एक अभ्यागत तुम्हारे दरवाज़े पर आ जाता है, तुम उसे गालियां देते हो। वह चला जाता है। तुम्हारी रूह तप्ती रहेगी। लेकिन अगर एक रोटी दे देते तुम्हारी रूह खुश हो जाती। चित्त खुश हो जाता है। दिल की खुशी जीवन है। राजाओं-महाराजों का दिल जलता-तप्ता रहता है, उनको खुशी नहीं है। फ़कीरों का दिल खुश रहता है। उनसे खुशी लेने की ख़ातिर बड़े-बड़े राजे उनके पास आते हैं। गुणी पुरुषों ने बतलाया- सब चीज़ों को रब की समझकर तू लोगों में बांट दे, तब सुख होगा। तेरा शरीर ढाई हाथ का है। उसके अन्दर तृष्णा का भावड़ जल रहा है। वह उसको लाचार कर रहा है। महापुरुषों ने बतलाया कि गफ़लत में वक्त मत गंवा, अच्छे काम कर। दुनिया को तूने छोड़ जाना है। वक्त पर शरीर ख़त्म हो जावेगा। मौत नहीं छोड़ेगी। ज़िन्दगी में आयु को सुनहरी कर दे। अच्छे कर्म कर ताकि तेरी आत्मा अंदर खुश हो। अगर आत्मा अंदर नाराज़ है बाहर कोई खुशी न होगी।

जिस नीयत से तुम दूसरे को देखोगे उस नीयत से वह तुम्हें देखेगा। दुश्मन को दुश्मन देखोगे वह भी दुश्मन देखेगा। अगर मित्र को मित्र देखोगे वह तुम्हें मित्र देखेगा। अगर तुमको सुख की ख़्वाहिश है तो दूसरे को सुख दो। अगर गति चाहते हो तो रब की लड़ (माला) पकड़ लो। जब रब के परायण हो जाओगे तुमको खुशी ही खुशी होगी। इसके बग़ैर ठिकाना नहीं। वर्ना एक मकान से निकला दूसरे मकान में दाखिल हुआ, एक शरीर छोड़ा दूसरा शरीर धारण कर लिया।

यह दुनिया कष्ट रूप है। तृष्णा रोग जीव को लगा हुआ है। ईश्वर की कृपा हो, सच्चा रास्ता मिले, तब दिल को सबर आयेगा। सांप जलता रहता है और जलन से उसके अंदर ज़हर पैदा हो जाता है। जब सांप काटेगा ज़हर दाखिल कर देगा। इसी तरह दुराचारी जलता रहता है। जब करेगा बुरा काम करेगा। चूंकि वह खुद जल रहा है दूसरे को आराम कैसे देगा? गुणी पुरुषों ने इसलिए फरमाया- ''तू अपना आप अच्छा कर''।

105. दूसरों के नुकसान का दुःख

शुभ स्थान निवासी जमींदार थे, अपनी ज़मीनें थीं। फसल काट कर दाने निकाल कर भूसा व टांडे बाहर जमीनों के किनारे लगाकर खड़े कर देते थे। उन दिनों में भी जब बाजरा व ज्वार की कटाई हो चुकी तो सिट्टे तोड़कर टांडे गड्डियाँ बांधकर बाहरी ज़मीनों में खड़े कर दिये गए। सत्पुरुष के गृह के सामने गली के दूसरी तरफ प्रेमी लखमी दास का गृह था। उस मकान के पिछली तरफ उसकी ज़मीन थी। बाहर ज़मीन में उसने अपने टांडे वग़ैरह एक जगह और साथ ही ज्वार की भरियां दूसरी जगह लगाकर खड़ी की हुई थीं। यह देखा गया है कि गांव वालों की आपस में दुश्मनी होती है। इसी तरह प्रेमी लखमी दास की भी दुश्मनी थी। रात अभी काफी बाकी थी। सब

सोये हुए थे। किसी ने दुश्मनी की वजह से उन दोनों फवाड़ों को आग लगा दी। टांडें वग़ैरह खुश्क थे। आग ने आनन-फानन दोनों को लपेट में ले लिया। गांव में शोर मच गया। लोग उस तरफ दौड़े और जमा हो गए। मगर आग इतनी तेज़ थी कि कुछ नहीं कर सकते थे। चंद लम्हों में दोनों फवाड़े जलकर ख़ाक हो गए। उस समय सत्पुरुष बाहर नहीं गए थे कमरे में थे उनकी आंखों से इस दुर्घटना को देखकर आंसू चल रहे थे। जीवन की गिरावट, दुर्भावना व नुकसान से इतने दुःखी हुए कि आंसुओं की धारा बह रही थी।

106. काहनूवान को रवानगी

सत्संग सम्मेलन व यज्ञ की समाप्ति पर जब प्रेमी जाने लगे तो काहनूवान निवासी प्रेमियों ने सेवा में प्रार्थना की:- महाराज जी! इस दफा कृपा करके उस तरफ का प्रोग्राम बनावें। एक तो उस जगह की आ-बो-हवा सुन्दर है इसलिए कान में दर्द की वज़ह से जो कमज़ोरी बाकी रह गई थी वह दूर हो जावेगी और दूसरे वह जगह भी बहुत एकांत है, ख़ास कर जहां आप ठहरा करते थे। तीसरे उन प्रेमियों ने उसके आगे नहर के किनारे एक बहुत ही एकांत जगह में कुटिया भी बनवा देने का वायदा किया। जब प्रार्थना की गई तो सत्पुरुष ने इतना ही उत्तर दिया- कि समय आने पर देखा जावेगा। प्रेमियों ने वहां पहुंच कर पत्र भी लिखा और काहनूवान तशरीफ़ लाने के लिए प्रार्थना की। सत्पुरुष ने प्रार्थना स्वीकार कर ली और एक मघॅर रवानगी की तारीख निश्चित करके सूचना दे दी।

107. कृपा दृष्टि का असर

रवानगी से पहले भक्त बनारसी दास ने आज्ञा मांगी कि जम्मू जाकर अपनी बहन व बहनोई कश्मीर चन्द तलवाड़ को मिल आवे। आपने आज्ञा दे दी, मगर साथ ही कह दिया कि रवानगी से दो-तीन दिन पहले वापिस आ जावे। प्रेमी वायदा करके चला गया, मगर रवानगी तक भी वापिस न आया। सत्पुरुष अपने प्रोग्राम के मुताबिक रवाना हो गए चूंकि आप प्रोग्राम के बड़े पाबंद थे। बावज़ूद भक्त जी के वापस न आने के भी आपने अपने प्रोग्राम को नहीं तोड़ा। मांकयाला स्टेशन पर प्रेमी मलिक रणबीर देव चावला के क्वार्टर पर पहुंच गए। मलिक साहब रेलवे डिपार्टमेंट में पी०डबल्यू०आई० लगे हुए थे। वहां पहुंचकर बाबू अमोलक राम को तार दी कि जल्दी वहां पहुंचें। बाबू जी तार के मिलते ही काला गुजरां से रवाना होकर मांकयाला गाड़ी द्वारा पहुंच गए। बाबू जी के पहुंचने पर आपने फरमाया:- देख मूर्ख! वहां जम्मू जाकर बैठ गया है। उसे उसका बहनोई सांसारिक चक्कर में फंसा देगा और कोयले की खान पर भेजेगा। प्रेमी कश्मीर चंद तलवाड़ ने जम्मू से आगे कोयले की खान ली हुई थी। जाओ, जाकर उसे जम्मू से साथ लेकर काहनूवान पहुंचाओ। दूसरे दिन 2 मघॅर मुताबिक 17 नवम्बर, 1945 को सत्पुरुष गुरुदासपुर के लिए रवाना

हुए और बाबू जी भी साथ उसी गाड़ी में जम्मू के लिए सवार हो गए। वजीराबाद गाड़ी जम्मू के लिए बदलनी थी। बाबू जी वजीराबाद उतरकर जम्मू के लिए दूसरी गाड़ी पकड़कर उसमें सवार होकर चले गए।

गाड़ी से उतरकर जब बाबू जी प्रेमी कश्मीर चंद जी तलवाड़ के गृह पर जम्मू पहुंचे तो भक्त जी वहीं मौजूद थे। बाबू जी ने भक्त जी से कहा:- सत्पुरुष गुरुदेव जी ने उन्हें साथ लेकर काहनूवान पहुंचाने के लिए आज्ञा दी है और यह भी कहा है कि प्रेमी क्यों वायदा करके शुभ स्थान पर नहीं पहुंचा। भक्त जी के बहनोई तलवाड़ साहब उस समय वहां मौज़ूद नहीं थे, लाहौर गए हुए थे। भक्त जी ने कहा:- जब तलवाड़ साहब आ जावें वह साथ चले चलेंगे।

बाबू जी ने पूछा:- ''वह कब वापस आवेंगे?'' भक्त जी ने कहा:- दो दिन में आ जावेंगे, इंतज़ार कर लिया जावे। उनकी वापसी पर वह साथ रवाना हो जावेंगे। बाबू जी ने पुख्ता वायदा ले लिया कि वह सिर्फ दो दिन इंतज़ार करेंगे। तलवाड़ साहब वापस नहीं आये। बाबू जी ने भक्त जी से कहा कि वायदा पूरा करो और चलो।

भक्त जी चल पड़े और बाबू जी भक्त जी को साथ लेकर रवाना हो पड़े और काहनूवान श्री सत्गुरु देव जी के चरणों में राय साहब देवी दयाल जी के बगीचे में पहुंचा दिया। सत्पुरुष की कितनी दया दृष्टि भक्त जी पर थी और कितने वह उसके उत्थान के चाहतक थे, यह उस समय जो दृश्य सामने आया वह बतलाता था। जब दोनों चरणों में हाज़िर हुए तो उस वक्त सत्पुरुष ने फरमाया:- प्रेमी! तू नहीं जानता कि फ़कीर कितनी तेरी उन्नति के चाहतक हैं और यह कहकर आपकी आंखों से आंसू जारी हो गए। यहां तक कि सत्पुरुष ने भक्त जी के चरणों को हाथ लगाकर फरमाया:- तू गुरु हम चेले। सत्पुरुष ने अपने निम्नलिखित अनुभवी शब्द को पूरा सिद्ध कर दिया।

गुरु की महिमा अपार है, कथ-कथ गए ग्रंथ।
गुरु नीवें शिष चरण पर, धारे उल्टा पंथ॥

और फिर फरमाया:

''बतला, क्या चाहता है? कोई यह न कहे कि ऐसे गुरु के साथ रहकर तेरा दुनियावी कुछ नहीं बना। फ़कीर तो तेरी खुशी के लिए सब कुछ करने को तैयार हैं। अगर तुम्हारा दुकान करने का विचार है तो तुझे दुकान करवा देते हैं।'' और बाबू अमोलक राम को फरमाया:- बाबू! इससे पूछ कर बता कि यह क्या चाहता है? इस पर भक्त जी ने कहा:- नहीं, महाराज जी! मुझे कुछ नहीं चाहिये। मैं आपके चरणों में रहकर सेवा करूंगा। श्री महाराज जी ने फिर फरमाया:- नहीं प्रेमी, सोच ले। अगर दुनियावी चीज़ें चाहता है उनका तेरे लिए प्रबन्ध कर दिया जावेगा। मगर फिर भी भक्त जी ने यह अर्ज़ की- कि नहीं महाराज जी। आपने यह भी फरमाया:- प्रेमी! तू नहीं जानता कि फ़कीरों का तेरे साथ क्या संबंध है? फ़कीर इसे जानते हैं।

भक्त जी ने फिर चरणों में ही रहकर समय व्यतीत करने की प्रतीज्ञा की और आपने इसे स्वीकार कर लिया। इसके बाद बाबू जी चंद दिनों चरणों में रहकर और सत उपदेश अमृत पान करके, जिनके कुछ नोट भी ले लिए, वापस लौट गए। सत् उपदेश नीचे प्रेमी पाठकों के लाभ के लिए दर्ज किये जा रहे हैं। दिनांक 27 नवम्बर, 1945 को आपने ज़िन्दगी के लक्ष्य पर सत् उपदेश फरमाया।

108. ज़िन्दगी का लक्ष्य

इस मानुष ज़िन्दगी यानि जीवन यात्रा का मिशन क्या है? जीव के अंदर चाहना क्या है? जीव क्या कर रहा है? मानुष ने जब से होश संभाला है दुनिया की चहल-पहल में लग गया है और संसार के तालुकात (संबंध) देखता भालता है। अंदर से शरीर सुख की कायमी (स्थिरता) चाहता है और उनकी कायमी में हमेशा की शांति चाहता है। यह अंतर से इसका भाव है। मगर ज़माने की गर्दिश इस शरीर को तबदीली दर तबदीली (परिवर्तन) में लाकर संसारी जिम्मेदारियां सर पर डालती हैं। दिल में जिम्मेदारियां फ़र्क करती हैं। बुद्धि फैल जाती है और बिखर जाती है और परिणाम स्वरूप हृदय में अति जलन उठती है। दिन की तकलीफ़ का मारा दिन-रात नाना प्रकार के शुगल (साधन) धारण करता है और बेबस हो जाता है और कहता है कि दुनिया कुछ नहीं। सिर्फ़ उसकी उम्मीद है कि जो कुछ बना रहा है मुमकिन है कि उसमें कुछ निकल आवे। लेकिन जब शरीर खत्म हुआ ना उम्मीद हो गया। जैसा जलता-जलता पैदा हुआ था, जलता-जलता खत्म हो गया। दिल को इतमिनान (तसल्ली) नहीं मिला। महापुरुषों ने तहकीकात (खोज) करके समझाया कि जीव शरीर रूपी जन्तर में कैद है। कर्म की सज़ा उसको मिल रही है। दुःखी-सुखी हो रहा है। शरीर के खत्म होने पर दुःख-सुख खत्म नहीं होते बल्कि झगड़ा बढ़ते-बढ़ते दूसरा जन्म लेता है।

जीव एक लम्ह भी कर्म रहित नहीं हो सकता। जन्म-मरण वग़ैरा के चक्कर में प्रवीण रहता है, पल भर के लिए इनसे अलेहदा नहीं होता। इस चक्कर के मुताबिक महापुरुषों ने दो नुक्ते दरयाफ्त किए। एक लागर्ज़ी फेल यानि निष्काम कर्म दूसरी अलगर्ज़ी फेल यानि स्वार्थ कर्म। स्वार्थ कर्म रूह को तंग व स्वाह करते हैं, बंधन में डालते हैं। इसके खिलाफ़ लागर्ज़ कर्म रूह को आज़ाद करने वाले हैं। अगर फ़र्ज़ में डटे रहोगे रूह खुश होगी। जब फ़र्ज़ को छोड़ दोगे ज़िल्लत (परेशानी) उठाओगे। फ़र्ज़ को समझने वाले झुके। ग़र्ज़ में फंसे हुए पशुओं की तरह पैदा हुए और मर गए। लाग़ार्ज़ कर्म करने वाले के मन में खौफ़ यानि भय पैदा होता है, भय से भाव यानि प्रेम पैदा होता है और भाव से ईश्वर भक्ति पैदा होती है। जब भक्ति अति निश्चय में बैठ जाती है और यकीन हो जाता है कि शरीर नाश हो जायेगा तब चाहता है कि उस मालिक की तहकीकात करूं। तब दृढ़ भक्ति में लग जाता है। मालिक की तलाश करता है। आख़िर वह निष्कर्म अवस्था में ठहरता है। यह ही असली मम्बा (मंज़िल) है।

ग़र्ज़ का बांधा हुआ ग़लती कर जाता है और पछताता है। दरिया की लहरें गिनता है। घुमरघेर में फंस जाता है। लाचारियां, मजबूरियां शरीर खा जाती हैं। आया था लेने के वास्ते लेकिन यहां आकर डूब गया। न अपना भला न देश का भला, न कौम का भला। गृहस्थी, विरक्ती निश्चय वाले असूल बनाकर कुर्बानी करते हैं। गुरु गोबिन्द सिंह ने बच्चे कुर्बान कर दिये। किला आनन्दपुर, में साज व सामान छोड़ दिया, लेकिन असूल नहीं छोड़ा। दुनिया इम्तेहान लेती आई है। कृष्ण भगवान की हालत देखो, वंश खत्म हो गया, कुटुम्ब अर्जुन के हवाले कर दिया, तप करने के लिए चले गए। महिगीर ने बाण मारा, प्राण पखेरू उड़ गए।

महापुरुष संसार को अच्छे तरीके से व्यतीत करते हैं। वह जानते हैं कि हमेशा नहीं रहना। विवेकी पुरुष, शुद्ध अन्तःकरण वाले, कुर्बानियां करके ज़िदंगी रोशन करते हैं।

109. भेदभाव

सत्उपदेश दिनांक 29 नवम्बर, 1945

कानूने-कुदरत के उलट जितना जीव विचरता है उतनी उसके अंदर ख़ुदगर्ज़ी, ईर्ष्या-द्वेष पैदा होता है। उतनी वही तंग ख़्याली लेकर मानसिक ताकत, रूहानी ताकत को ख़त्म कर देता है और नाश को प्राप्त हो जाता है।

कुदरत का कानून क्या है? जिस तरह सूरज, चन्द्रमा, पवन, पानी बिना तफ़रीक (भेद भाव) और बिना औज़ाना (बदला) हर एक के जीवन की उन्नति कर रहे हैं उसी तरह मानुष ईश्वरवादी होकर ग़ैरियत (स्वार्थ) को छोड़कर हर एक जीव का बिना तफ़रीक भला चाहने वाला बने। ऐसे मानुष का जीवन सब जीवों के वास्ते कल्याणकारी है। उसका आचरण दुनिया में फैलने वाला है। जो राजा इस तरीके से इस भाव को लेकर जीवों की व जनता की वृद्धि करता है उसका राज्य फैलता है।

कानूने-कुदरत के खिलाफ विचरने वाले के अंदर ख़ुदग़र्जी, ईर्ष्या-द्वेष पैदा होते हैं। उस वक्त दुश्मन अंदर से पैदा होकर नाश का कारण होते हैं। तुम्हारा भला दूसरे के भले में है। अपनी ज़िन्दगी की वृद्धि चाहते हो तो दूसरे की वृद्धि करो। जो दूसरे का विरोधी है उसको शांति नहीं मिलेगी, आराम नहीं मिलेगा। जिस वक्त जो सोसाइटी ख़ुदगर्ज़ी इख़तियार (धारण) करती है उस वक्त उसको दबाने के वास्ते दूसरी ताकत खड़ी हो जाती है और उसकी तबाही का कारण होती है। असल धर्म, ब्रह्म ज्ञान सर्वत्र जीवों की खैर मांगने में है। ईश्वर शक्ति सब में विचर रही है। जब कुदरत में तफ़रीक नहीं तो तू तफ़रीक क्यों करता है? तंगदिली तुझे किसी मेराज़ (लक्ष्य) पर नहीं पहुंचने देगी। बड़े-बड़े महापुरुष दुनिया में हुए हैं। वह सब जीवों की भलाई चाहते थे। मगर उनके तरफदार व ग़ैर-तरफदार माया के गेड़ (बंधन) में आकर उनके विरोधी हुए। हालांकि वह नीयत से

भलाई चाहने वाले थे। अगर तेरी नीयत शैतान जैसी है तो तू सोच तेरी क्या हालत होगी? तू अपनी तबाही का कारण होगा।

इसके बाद भी महापुरुष अपने अमृत वचनों द्वारा काहनूवान निवासी प्रेमियों को अमृत वर्षा से निहाल करते रहे और इस दौरान सत्पुरुष ने प्रेमी डाक्टर भक्त राम जी खन्ना, निस्बत रोड, को निम्नलिखित आदेश अमृत वाणी द्वारा लिख कर भेजा।

सार उपदेश

मान त्यागी जग को जीते, माया त्यागी देसा।
मोह त्यागी पाये बैरागा, तत् रूप करे परवेसा॥
काम त्यागी प्रभ रसना पीवे, चित सहज समाध पछानी।
लोभ त्यागी पाये छत्र संतोखा, सतनाम की सूझ बखानी॥
क्रोध त्यागी प्रेम को परसे, सबसे सांझ बनाई।
पर का कष्ट हरे दिन रैना, सत मारग धर्म लखाई॥
पांच विकार महा दुःखदाई, जले सकल संसारा।
परमारथ परतीत बिन, नहीं जीव पावे निस्तारा॥
जेते दोख जो ही जन त्यागे, सो एता सुगड़ सुजाना।
मारग उन्नति में सो लागा, जग जीवन सार पहचाना॥
सतगुरु सीख में निश्चय राखे, सब मन के भरम निवारे।
झूठ देही की ममता त्यागे, नित सरजनहार चितारे॥
पांच विषे का मूल विनासे, जब आतम तीरथ नहाई।
दुर्मत त्याग सुख सहज समाये, परम गति सो पाई॥
नित ही जीवन करो सुतन्तर, सत तत रूप पछानो।
'मंगत' अंतर होये परगासा, पद परस शांत निर्वानो॥

110. दौरांगला में सत् उपदेश

दौरांगला निवासी प्रेमी अक्सर काहनूवान दर्शनों के लिए आते और सत्संग का लाभ उठाते रहे और साथ ही प्रार्थना भी करते- श्री महाराज जी! कुछ दिन दौरांगला पधार कर सत् उपदेशों द्वारा कृतार्थ करें। आपने उनकी बार-बार की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और 24 दिसम्बर, 1945 को मय भक्त बनारसी दास वहां पहुंच गए। दौरांगला निवासी प्रेमियों ने शहर से बाहर तकरीबन तीन फर्लांग के फासले पर एक कुटिया में आपके निवास का प्रबन्ध किया और सुबह सात बजे और शाम आठ बजे सत्संग का समय निश्चित किया गया। शहर और आसपास के लोग सत्संग का

लाभ उठाते और अपनी शंकायें निवारण करते। हिन्दू, मुसलमान, सिख साहेबान हाज़िर होकर तसल्ली हासिल करते।

सत् उपदेश दौरांगला

प्रेमी जीवों! इस जीव को कर्म का नतीजा मिलता है। लाभ-हानि, सुख-दुःख, संयोग-वियोग हर एक कर्म के दो पहलू हैं। ख़्वाहिश तो लाभ की होती है मगर मिलती है हानि। सुख चाहता है मगर मिलता है दुःख। ऐसी रचना में जीव दिन-रात लगा रहता है। जीव की ख़्वाहिशात (इच्छा) अति बढ़ी हुई हैं। चाहता है कि हमेशा ज़िंदा रहे, बड़ा इकबाल (नाम, दबदबा) हो, यश और कीर्ति का भागी होवे, लेकिन ऐसा नहीं होता। क्योंकि असली शांति को प्राप्त करने की कोशिश नहीं करता बल्कि उल्टा शारीरिक उन्नति यानि खान-पान और रस्म व रिवाज़ में ही दिन-रात लगा रहता है। असली धर्म यानि आत्मिक धर्म की तरफ नहीं जाता है बल्कि उल्टा शारीरिक धर्म को ही आत्मिक धर्म समझ बैठा है और उसी में दिन-रात ग़ल्तान (मग्न) रहता है। रस्म व रिवाज़ के झगड़ों में ही अपने अमूल्य जीवन को नष्ट करके अशांत रहता है। रस्म व रिवाज़ की पूर्ति से असली शांति प्राप्त नहीं होती। रस्म व रिवाज़ तो बुद्धिमान लोगों ने समय और लोगों की तलब (इच्छा) के मुताबिक बनाये हुए हैं। उस वक्त के लिहाज़ से वह ठीक हैं और ठीक होंगे मगर सारे संसार पर लागू नहीं हो सकते हैं। चूंकि हर एक मज़हब वाले अपने रस्म व रिवाज़ को सारी दुनिया पर हावी करना चाहते हैं इस वजह से सारे संसार में अशांति है। असली शांति तो कुछ और बात है जो कि इन सबसे बालातर (अलग) है। वह रस्म व रिवाज़ की कैद में नहीं है। शारीरिक धर्म में लोभ, मोह, अंहकार, तृष्णा, बेइमानी, दूसरों को दुःख देना, अपनी प्रधानता, दग़ा, फरेब, झूठ छुपा हुआ है। जिनसे अशांति होती है, सच्ची शांति प्राप्त नहीं होती। बल्कि इससे जीव करोड़ों मील दूर हो जाता है। इसके बरअक्स (उलट) जब जीवों में सत् पुरुषार्थ, सत् विचार, निर्मानता, परउपकार, संतोष, प्रेम, सादगी और सत्संग जैसे औसाफ़ (गुण) आते हैं तब इसको शांति का पता चलता है। कई जीव असली शांति को प्राप्त करने के लिए जप, तप और कई प्रकार के शारीरिक कष्ट देने के साधन करते हैं और कई प्रकार के बाहरी साधन अपनाते हैं। उनके अन्दर जो कर्तव्य का अंहकार है कि मैं योगी हूं, तपी हूं, धरती नापता हूं, जलशयन करता हूं यही उसको आवागमन में डालते हैं। इसलिए ऐसा जीव असली शांति को नहीं पा सकता है।

कई जीव चाहते हैं किसी सरल तरीके से शांति प्राप्त कर लेवें। इसके लिए कई देवी-देवताओं की आराधना, उपासना करते हैं और अपने मनमाने इष्ट बना लेते हैं। लेकिन आज के मादा-परस्तों (भौतिकवादियों) ने यह साबित कर दिया है कि जीव अपनी उन्नति स्वयं आप ही कर सकता है। उसे जो कुछ भी मिलेगा अपने पुरुषार्थ से मिलेगा। तोहमात की पूजा से शांति नहीं मिल सकती है। कोई देवी-देवता नहीं दिला सकता। जीव का कर्म ही उसको परम शांति दिला सकता है। जिन कर्मों द्वारा देवी-देवताओं ने मोक्ष प्राप्त की वह ग्रहण करने चाहियें। जो बाहर सच्ची खुशी

को ढूंढते फिरते हैं वह बिल्कुल वहम है। सच्ची शांति का मुंबा (स्रोत) जीव के अंदर हर वक्त प्रकाशमान है।

संसार में जो जंग व जदल यानि अशांति फैली हुई है उसका कारण सिवाय स्वार्थ के और कुछ नहीं है। मौजूदा ज़माने में नेता ताकत से संसार में शांति पैदा करना चाहते हैं। लेकिन आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ है। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं उनके अंतःकरण में विश्व प्रेम था और निर्मानता व निष्कामता से अपने कर्तव्य को करते थे, इसलिए वह संसार में अपनी उच्च मिसाल छोड़ गए। जिनके नाम से संसारी लोग अपने मन को शांत करते हैं। ताकत से यानि फाइलियत से न कभी शांति हुई और न हो सकती है।

प्रेमियों! परम शांति को पाने के लिए केवल एक साधन है कि जीव अपना सब कर्म ईश्वर विखे अर्पण करे यानि ईश्वर भावना या रज़ा इलाही में विश्वास रखे तो उस वक्त अंहकार का नाश हो जाता है, निर्मानता पैदा होती है। बुद्धि देह से असंग हो जाती है, निष्कामता पैदा होती है, जिस पर गीता में श्री कृष्ण ने ज़ोर दिया है कि सारे कर्म ईश्वर विखे अर्पण करो और रज़ा इलाही (ईश्वर आज्ञा) पर विश्वास रखकर कर्म के फल की इच्छा न रखते हुए कर्म किये जाओ। सो प्रेमियों! आत्म निश्चय रखकर जो कुछ हो रहा है, जो कुछ होता है और जो कुछ होगा ईश्वर आज्ञा में समर्पण करो। ऐसे निश्चय से सच्ची श्रद्धा पैदा होती है जिसकी एक ही चिंगारी ईंधन के ढेर को ख़त्म कर देती है। इस तरह सच्ची श्रद्धा से भक्ति और भक्ति से ज्ञान पैदा होकर जीव परम शांति को प्राप्त होगा। यह ही मानुष योनि का असली कर्तव्य या चाहना है। इसके बग़ैर मानुष पशु समान है। परम शांति तक पहुंचना ही मानुष का कर्तव्य है। सांसारिक कामों से असली शांति प्राप्त नहीं हो सकती है। जब-तक ब्रह्मलीन न होगा यानि जब-तक जुज़ कुल में न मिलेगा तब-तक भटकाना रहेगी। जब वहां पहुंच गया शांति ही शांति होगी। ईश्वर आज्ञा में कर्मों को अर्पण करने से दिल काबू में आता है और मानुष समर्थ हो जाता है और बुद्धि परम तत् को अनुभव करके मग्न हो जाती है। जब ऐसी अवस्था जीव पर आती है तो उसको अपने जिस्म की भी ख़बर नहीं रहती है। कभी मस्ती में आकर गाता है। लोग उसकी हालत को नहीं समझते हैं, लेकिन वह तसव्वर (प्रेम) में आनन्दमई रहता है और जब अति आरूढ़ हो जाता है तो देह को छाया ही समझता है। कई दिन तक भूखा रह सकता है, लेकिन उसके चेहरे पर एक ख़ास किस्म का तेज़ होता है। जिसको आम लोग आंख उठाकर भी नहीं देख सकते। लोगों को उसकी मसरूरी (बाहरी) हालत भयानक नज़र आती है। लेकिन उसको ईश्वर ही ईश्वर नज़र आता है। सर्वत्र संसार ईश्वर स्वरूप देखता है। सर्वत्र संसार ब्रह्म रूप जानता है। त्रिकाल तृष्णा से रहित हो जाता है, जीवन मुक्त हो जाता है। तमाम वासनाएं ख़त्म हो जाती हैं। अपने आपकी रहनुमाई करता हुआ स्वयं रहनुमा (मार्गदर्शक, गुरु) हो जाता है। सारी उलझनों से रहित हो जाता है। यह ही ग़ैर-फाईली (निष्कर्म) हालत है। ऐसी हालत को प्राप्त करके कबीर कहता है।

देहते मर गए पुत्ते मर गए, रिश्तों को लगी आग।
दुल्हे को दुल्हन मिल गई, गए बराती भाग॥

लौकिक तमन्ना, पारलौकिक वासना ख़त्म हो गई। वासनाओं का कुटुंब ख़त्म हो गया। बुद्धि ने ईश्वर को पा लिया। आवागवन चक्कर ख़त्म हो गया। प्रेमियों, परम शांति को पाने के लिए अपने सारे कामों को ईश्वर विखे सौंप कर निष्काम कर्म किए जाओ।

कर्म चक्कर संसार है, कर्म ही बंध सरूप।
'मंगत' मिले तब शांति, जब पाये निज रूप॥
जीवन में जो कुछ किया, सो ही जीव की रास।
'मंगत' पाछे के यतन से, नहीं कटे जीव की फांस॥

111. अबोहर में अमृत वर्षा

अबोहर से सेठ करोड़ी मल जी श्री महाराज जी को साथ ले जाने के लिए दौरांगला हाज़िर हुए। श्री महाराज जी 14 जनवरी, 1946 को उनके साथ रवाना हो पड़े। गुरदासपुर से गाड़ी में सवार होकर मय भक्त बनारसी दास लाहौर पहुंचे। लाहौर से गाड़ी तबदील करके फिरोजपुर, फिरोजपुर से भटिंडा और भटिंडा से गाड़ी तबदील करके अबोहर पहुंचे। स्टेशन पर प्रेमी डिप्टी लाल वग़ैरह लेने के लिए आये हुए थे और श्री महाराज जी को ब्रह्मचारी की जोहड़ी पर ले जाकर एक कमरे में ठहराया गया। इस जगह सत्पुरुष रात को बाहर चले जाते और दूर खेतों में जाकर अपनी आनन्दित अवस्था में मस्त बैठे रहते और दिन को तालाब के किनारे धूप में विराजमान रहते और प्रेमियों की शंकायें निवारण करते। इस जगह भी सत्संग का प्रोग्राम निश्चित किया गया। इस जगह श्री बाबू अमोलक राम जी दर्शनों के लिए पहुंचे। सत्संगों के नोट लेने कठिन थे। सिर्फ़ मुख़्तसर (संक्षिप्त) नोट ले लिए गए जो नीचे दर्ज़ किए जाते हैं।

112. नाम की महिमा

सत् उपदेश दिनांक 25 जनवरी, 1946

मन अति चंचल है। स्मृति इस का स्वरूप है। यह कुछ न कुछ यत्न हर वक्त करता रहता है। संकल्प-विकल्प मन की स्मृति करके उदय हो रहे हैं। जो-जो वस्तु मन के सिमरण में आती है उसके गुण-दोष ग्रहण करके चलायमान रहता है। बड़े-बड़े यत्न करके यह पाठ याद करता रहता है। इंद्रियों करके यह नाना प्रकार की रचना देख रहा है। जब एक पाठ कर चुकता है दूसरा पाठ शुरू कर देता है, चिन्तन करते रहना इसका स्वभाव है। जब-तक इसकी स्मृति या वाणी ख़त्म नहीं होती यह शांत नहीं होता। यह संसार के मिथ्या नाम रूप को सिमर रहा है। एक पलक भी फ़ारिग

नहीं। जब-तक यह उस तरफ से पलटे नहीं उसको शांति नहीं मिलती। महापुरुषों ने कल्याण का मार्ग यह बतलाया कि तू कल्पना को छोड़ कर सतनाम को चेत। जिस तरह माया का पाठ करता था उसी तरह प्रभु के नाम का चिन्तन कर। जब यह मन नाम-रूप का चिन्तन करता था तब यह फैलता था। ज्यूं-ज्यूं यह संसार की याद में रहता था संसार के नक्शे बनाता था। जब नाम को सिमरण किया सब भय, भ्रम मिट गए। ज्यूं-ज्यूं परमेश्वर के नाम की याद दृढ़ होती गई मन की कल्पना कम होती गई और एकाग्र हो गया। जब शरीर के अंदर नाम के अटल सिमरण से आत्म शक्ति अनुभव हुई मन वाणी रहित हो गया और उज्ज्वल होकर उसमे लीन हो गया।

नाम प्रभु का सिमर के, सुरता भई अडोल।
काल कल्पना सब मिटी, घर पायो आनन्द कलोल॥
गुप्त दीपक परगासया, सुनी शब्द की तान।
मन में मन प्रसन्न भया, घर भेंटे पुरख सुजान॥
छिन-छिन विरती रसना पीवे, त्याग भरम संताप।
साचे नाम की प्रीत में, नित सुरता लीनी थाप॥
जाप जपत मन निर्मल भयो, अंतर खुलयो पाट।
'मंगत' नज़री आया, प्रभ पार पुरख निरवाट॥
साची सिमरनी नाम की, जिस हृदय लई लटकाये।
भय भरम संसा तजे, घर जीवन रूप लखाये॥
आसा त्याग निरास हो जीवे, अगम निगम गत जाने।
सरब व्यापक सरब निराला, ऐसा तत्व पछाने॥
नित ही निर्मल प्रेम कमावे, सब जग की बांछे धूड़ी।
आप गंवा के आप पछाने, करे कठन मज़दूरी॥
अंतर निर्मल प्रीत लखावे, सब दुबधा करे त्याग।
'मंगत' बूझे भेद जो, सो साजन बडभाग॥

देह मद

मुख्य नोट सत्संग दिनांक 26 जनवरी, 1946

जीव निर्भय शांति की चाह कर रहा है। मगर वह उस शांति को संसारी पदार्थों में तलाश कर रहा है इसलिए इसे शांति प्राप्त नहीं होती। बुद्धि शरीर मद के चक्कर में बंधायमान होकर शरीर की क्रिया में सुख चाह रही है लेकिन शरीर विनाश होने वाला है और शरीर के सुख भी नाश होने वाले हैं। जब शरीर ही साथ देने वाला नहीं उसके सुख कब साथ देंगे। गुणी पुरुषों ने समझाया कि यह शरीर नामुकम्मिल (अपूर्ण) है। इसके सुख भी नामुकम्मिल हैं तो नामुकम्मिल चीज़ से तालुकात (संबंध) पैदा करने से नामुकम्मिल ही रहेगा, सुख नहीं पायेगा। इसलिए तू उस चीज़ की

तलाश कर जो मुकम्मिल है। तू शरीर के साखी पुरुष की तलाश कर। जब उसको तलाश करेगा शांति मिलेगी। शरीर की जो प्रकाशक शक्ति है जब उसको अनुभव करोगे तसल्ली होगी। सब ख़्वाहिशात मिट जावेंगी, शांति हो जावेगी।

देह ममता को धार के, नहीं कुछ सार पछानी।
संसे में औधी गई, उठ चला निरासा प्रानी॥
देह के सुख के कारने, यतन किए बहु भांत।
पलक में सब बिनास गई, नहीं चित पाई शांत॥
अंधमत भूला अत घना, नहीं सरजनहार विचारया।
माया मोह को धार के, विच जुए जन्म को हारया॥
सुन सत् पुरुषों की सीख मन, अब तो हो सुचेत।
सरजनहार पहचान के, नित राखो तिस की टेक॥
ज्यों चलावे सुख कर माने, निमर भाओ चित धार।
पल-पल कर तिस को बंदना, जाए बंधन संसार॥
सब कुछ हुआ तिस का जान, अपना त्याग गुमान।
'मंगत' भगती रंग रंगें, तब पावें कल्यान॥

शरीर रूपी आकार में जब निराकार प्रगट हुआ बुद्धि शुन्न हो गई। जिस बात को समझना था समझ गई। इस प्रसन्न हालत को प्राप्त होकर प्रसन्न हो गई।

सत् शरधा को पाये के, मन का तजा गुबार।
नित ही साची प्रीत में, प्रभ दाता कियो विचार॥
अन्तरमुख हो गाया, पार पुरख निर्वान।
सिमर-सिमर मन निर्भय हुआ, पाई शब्द की तान॥
देह अंतर तत् सूझया, निर्देह आतम देव।
तब यह मन निर्मल भया, पाई अचरज सेव॥
निर्भय सो ही शांति, निर्भय सो ही धाम।
'मंगत' गुरमुख विरले, पाये लियो बिसराम॥

सत् उपदेश दिनांक 28 जनवरी, 1946

शरीर रूपी संसार को धारण करके हर एक जीव इंद्रियों के भोगों द्वारा तृष्णा की प्यास को दूर करने का यत्न कर रहा है। ज्यूं-ज्यूं भोगों को भोगता है प्यास बढ़ती जाती है, कम नहीं होती और जीव अंत में प्यासा और निराशा ही इस संसार से चला जाता है। जिन सत्पुरुषों ने असलियत की तहकीकात (खोज) की उन्होंने बतलाया कि असली जीवन की सफलता इंद्रियों के भोगों से छुटकारा हासिल करने से प्राप्त होती है। जब-तक बुद्धि, मन, इन्द्रियों के भोगों में सुख प्रतीत कर

रही है तब-तक राग-द्वेष की अग्नि प्रचंड हो रही है। राग-द्वेष की अग्नि किसी तरह बुद्धि को निर्मल नहीं होने देती, भोगों की लालसा में अधिक चंचलता का कारण हो रही है। यह ही भवसागर है। इस बैतरणी नदी को पार करना बड़ा कठिन है। इस लालसा से छुटकारा पाना ही मुक्ति है। जप-तप, संध्या-बंदन, पूजा-पाठ इसलिए किए जाते हैं कि भोगों की लालसा कम हो। हर एक जीव इस शरीर रूपी संसार को धारण करके भोगों को भोगने में लगा हुआ है। भोगों की अधिक लालसा कई प्रकार के संकल्प-विकल्प खड़े करके मन रूपी समुद्र में उथल-पुथल पैदा कर रहे हैं। हर एक जीव भोगों की चेष्टा से मजबूर हो रहा है। जब-तक इस खेद रूपी रोग को नहीं समझता तब-तक बेचैनी दूर नहीं होती। इस जीवन के भेद को समझना और फिर कल्याण हासिल करनी ही मानुष जन्म का लाभ है। जो साधन सत्पुरुषों ने इनसे छुटकारा हासिल करने के बतलाए उन्हें धारण करने से ही जीव इस चक्कर से छूट सकता है। महापुरुषों ने बतलाया कि:- जब-तक मानसिक कल्पना का निरोध नहीं होता चित्त की तृष्णा ख़त्म नहीं होती। चूंकि सांसारिक पदार्थ नामुकम्मिल हैं इसलिए इनसे जीव की तलब (इच्छा) ख़त्म नहीं होती। उन्होंने बतलाया कि:- एक ऐसी हालत है जिसमें कमी-बेशी नहीं होती। जब मुकम्मिल (पूर्ण) हालत को अनुभव कर लिया, तब प्रसन्नता होगी। संसार की मरकज़ व मसदर (स्रोत और मूल) वही आनन्दमई हालत है। यही हालत जानने योग्य है और उसकी प्राप्ति से चित्त की तलब पूर्ण होती है।

जग जीवन दाता चेत ले, होए माया मोह दुःख दूर।
सब कुछ तिसका पेखिए, सत् शरधा का मिले सरूर॥
बनत बनावे सरब की, सरब को करे परकाश।
परिपूरन समरथ स्वामी, नित मन करे अरदास॥
नाना भांत यह रचना जगत की, इक प्रभ की प्रभता जानी।
ऐसी महिमा हृदय आवे, तब भगति सार पछानी॥
ज्यूं-ज्यूं प्रभ की भगत कमावे, तृष्णा रोग विनासे।
घट अंतर में चानन होवे, प्रभ सरूप लखें परकाशे॥
ऐसा आनन्दघन सो पार स्वामी, जिस जाना तिस सुख पाया।
'मंगत' पूरन भाग हैं तिनके, जिन एह बिध प्रेम कमाया॥

इस जगह के सत्संगों से प्रभावित होकर चौधरी हरजी राम जी, रईस मलोट मंडी, लाला मुरली धर नागौरी, लाला खेम राज जी, लाला बैज राज जी अग्रवाल ने सत्मार्ग पर चलने के वास्ते दीक्षा ग्रहण की।

113. तरनतारन में आगमन

तरनतारन निवासी प्रेमी सेवा में प्रार्थना कर रहे थे कि कुछ दिन श्री महाराज जी उन पर भी कृपा करें और पधार कर सत्संग द्वारा कृतार्थ करें। प्रेमी जगजीत सिंह खुद भी आपको ले जाने के

लिए हाज़िर हो गया। आपने वहां का प्रोग्राम निश्चित कर लिया और 9 फरवरी, 1946 को दोपहर बाद रवाना होकर दूसरे दिन दोपहर बाद तरनतारन पहुंच गए। तरनतारन निवासी प्रेमी लेने के लिए स्टेशन पर आये हुए थे। प्रेमी अनंत राम जी कुंद्रा पहले उन्हें अपने गृह पर ले गए। थोड़ी देर वहां ठहराया और शाम को सबको बगीचे में ही ले गए, जहां कि टैंट वग़ैरह लगवा दिए थे और वहां ही ठहराया। यहां पर भी सत्संग का समय निश्चित किया गया। एक दिन एक सरदार साहब प्रेमी ने कहा:

सरदार प्रेमी:- स्वामी जी! आपने भी एक पोथा (ग्रंथ) और बना दिया है। यह चीज़ें आगे ही मिलाप की बजाये फूट पैदा कर रही हैं।

श्री महाराज जी:- प्रेमी जी! महापुरुषों के वचन एकता पैदा करने वाले होते हैं। अपनी-अपनी खुदगर्ज़ियाँ ही आपस में फूट पैदा करने वाली होती हैं। गुरु गोबिन्द सिंह ने सब को इकट्ठा किया, ऊंच-नीच का भेद ख़त्म हो गया। हिन्दू धर्म की हिफ़ाजत के वास्ते सिपाही बनाये लेकिन जब बाढ़ ही खेत को खाने लगे तो फिर क्या हो सकता है?

एक और प्रेमी ने पूछा:

प्रश्न - इस तरनतारन में इतना बड़ा तालाब पानी का बनाकर मुक्ति का कारखाना बना दिया है कि नहायें और मुक्त हो जायें। इसको खुरक करके अगर अनाज पैदा किया जाए तो कई ग़रीबों का गुज़ारा हो जाये। कई परिवार बस जायें। जितने राग कीर्तन आये दिन गाये जाते हैं उतनी ही ज़्यादा बद-रीतियां हो रही हैं। ग़रीबों के रुपये से अमीर ऐश कर रहे हैं। इस तरह से क्या मुल्क व कौम का सुधार हो रहा है?

श्री महाराज जी:- किसी हद तक तुम्हारा विचार ठीक है। हर एक के साथ एक जैसा सलूक हो। रोटी, कपड़ा, रहन-सहन सब का बंदोबस्त हो। मगर अमीरों को लूटकर ग़रीबों में तकसीम कर देने से न हो सकेगा बल्कि इख़लाकी तालीम (सदाचारी शिक्षा) देने से होगा। जब-तक पहले जनता विचारवान नहीं होती तब-तक किसी बात को सही न समझ सकेगी। सिर्फ रोटी, कपड़ा, मकान सबको मिल जाने से मसला हल नहीं हो जाता। न ही एक जैसा सबको कर सकते हैं। ज़मीदार, साधारण आदमी एक जैसे नहीं हो सकते। यह हो सकता है कि सबका विचार दुःख भरा सुना जाये और उसकी सेवा का बंदोबस्त अच्छे से अच्छा किया जाये। बताओ, तुम्हारी कितनी आमदन है? महीने के बाद उसको कितने आदमियों में बांटते हो? कितनों को तुमने अपने जैसा बनाया है कि खाली खुश्क स्कीमें ही हर एक के आगे पेश करते हो।

इस पर वह प्रेमी खामोश हो गया। फिर श्री महाराज जी ने फरमाया:- "प्रेमी! पहले अमली जीवन बनाओ, फिर कोई तुम्हारी बात सुनेगा।"

114. एक अद्भुत सेवा का आदर्श

एक दिन जब श्री महाराज जी स्नान से फ़ारिग हो गए तो आप वृक्ष के पास थोड़ी धूप में जाकर खड़े हो गए। भक्त बनारसी दास जब आसन बिछाने के वास्ते लौटे तो श्री महाराज जी का

ध्यान पास पड़े मल पर पड़ गया और भक्त जी से, जिन्होंने उसे देखा नहीं था, फरमाया:- प्रेमी! इसे उठाकर परे फैंक दो। भक्त जी ने उसे हाथ से उठाने में घृणा महसूस की और कोई बेलचा वग़ैरह लेने के लिए चले गए। सत्पुरुष ने उनकी ग़ैर हाज़िरी में अपने पवित्र हाथों से उठा कर दूर फेंक दिया और वापिस आकर मिट्टी से हाथ साफ कर लिए। जब भक्त जी वापिस आए तो मल को वृक्ष के पास न पाकर लज्जित हुए। इस पर आपने फरमाया:

''प्रेमी! इस जगह अगर कोई कड़ा प्रशाद या कोई चीज़ रख जाता तो उसे उठाने के लिए बड़ी जल्दी इन हाथों से सेवा करता। बेईमान इस मल को उठाने में सोच आ गई। गुरु के वचन पर ध्यान नहीं दिया। शायद यही कुछ और बन जाता। प्रेमी, जिस समय जिस बात के वास्ते आज्ञा हो फौरन पालन करो। तुम्हारी बुद्धि का हर घड़ी हर समय यह इम्तहान लेते रहते हैं। सेवा करते यह कभी ख़्याल न करो कि यह ख़राब है, यह अच्छी है। यह अमीर है, यह ग़रीब है। हर जीव की तन, मन, वचन, कर्म से सेवा करने के वास्ते हर घड़ी तैयार रहो। अगर कोई कहे बर्तन साफ करो या पानी लाओ और टट्टी फेंक आओ, और भी इससे तुच्छ सेवा का वक्त आ जाये तो खुले चित्त से सेवा करो। मन में ग्लानि आ जाये तो समझो मन बेईमान है। जबरदस्ती उस तरफ लगाओ। बिन सेवा के सार का पता नहीं लगता। मन की मैल को दूर करने के वास्ते केवल एक सेवा का ही मार्ग है। मन के रोगों से खुलासी (छुटकारा) पाने का वाहिद (उत्तम) इलाज एक सेवा ही है और अंतर सत्नाम सिमरण से अंत:करण शुद्ध होता है।''

घर फूंका जिन अपना, लिया चोहाता हाथ।
अब फूंकेंगे तिस का, जो चले हमारे साथ॥

''तुम और प्रेमियों की तरफ न देखा करो। यहां तो सेवा करके फिर हाथ जोड़ो और कहो बड़ी कृपा, दया की जो इस दास को सेवा का मौका बख़्शा है। इन वचनों द्वारा आदर करके चित्त प्रसन्न करो। इस तरह मन के अंदर शील, संतोष, प्रेम, वैराग्य, अनुराग पैदा होते हैं। सब शरीरों को अपना शरीर समझो। जिस तरह अपने शरीर की गंदगी साफ करते वक्त मन में ग्लानि नहीं आती इसी तरह ऐसे मौके मिलने पर कभी मन को मत मोड़ो। अमली जीवन हर तरह से होना चाहिये। गुरु दरबार में जो सेवा भी सामने आए करते समय सब गुरु की सेवा समझो। यह मत ख़्याल करो कि दूसरे आदमी की कर रहा हूं। सबको अपने से उच्च और गुरु रूप जानो। तब जाकर तन, मन द्वारा हर एक ही सेवा बन सकती है। अच्छा अब सुना, आगे तू किस तरह करेगा?''

भक्त जी ने इस पर कहा:- ''उठाने में इंकार तो न था। सिर्फ यह विचार आया किसी और चीज़ से उठाकर फेंक दिया जाये। हाथ न खराब हों।''

श्री महाराज जी ने फिर फरमाया:- ''क्या हाथ गल जाने थे? कोई आग लगी थी? अभी तो तुम जैसे प्रेमियों का कोई इम्तहान भी नहीं लेते, अगर ऐसा समय आ जाए तो तुम सब ही भाग जाओ।''

भक्त जी:- महाराज जी! जब आप इम्तहान लेंगे तब बुद्धि भी बख़्शें ताकि फेल न हो जायें। यहां तो अक्ल ही ऐसी है। पल-पल भ्रम में फंस जाती है। बड़ी कृपा की हुई है जो मूढ़मति को अपने चरणों में जगह दी हुई है। वैसे इस लायक नहीं कि आपके चरणों में रह सकें। जिस तरह बेअक्ली से जो कुछ बन पड़ता है स्वीकार करें। इस तरह आहिस्ता-आहिस्ता समझ आवेगी।

श्री महाराज जी:- प्रेमी! सेवा यह होती है कि दूसरे के मुंह से निकले ही न, तुम खुद-ब-खुद ही हर बात को करने लग जाओ। यह गुरमुख-पन होता है। कह कर सेवा करवानी यह मध्यम सेवा है। ज़बरदस्ती सेवा करवानी इससे कम तमोगुणी सेवा है। सेवादार के अंदर खुद-ब-खुद ही प्रेरणा होती रहती है कि जब ऐसा करना है या यह करना है। किसी समय अगर किसी बात की समझ न आवे तो पूछ लिया करो। हर समय इधर से तुम्हारे वास्ते दरबार खुला है।

115. लाहौर में आगमन

एक माह तरनतारन में निवास करने के बाद 10 मार्च, 1946 को आप मय भक्त बनारसी दास व सरदार जगजीत सिंह तरनतारन से तांगे द्वारा अमृतसर तशरीफ़ लाये और वहां से गाड़ी द्वारा लाहौर तशरीफ़ लाये। आपको लाहौर निवासी प्रेमियों ने मारतंड भवन में ठहराया, जहां उन्होंने प्रबन्ध किया हुआ था। इस जगह गुलाब देवी अस्पताल के अहाता में सेठ तारा चंद जी ने एक कुआं बनवाया था। जब श्री महाराज जी लाहौर पहुंचे उन्हीं दिनों में यह मुकम्मल हुआ था। सेठ जी ने श्री महाराज जी से प्रार्थना की:- कृपा करके इसका उद्घाटन करें। श्री महाराज जी ने दयालुता करते हुए इसे स्वीकार कर लिया और प्रेमियों के साथ निश्चित समय पर माडल टाउन लाहौर में गुलाब देवी अस्पताल में तशरीफ़ ले जाकर सत्संग करके उद्घाटन की रस्म अदा की। जब रस्म अदा हो चुकी तो प्रेमियों ने एक तस्वीर लेने की प्रार्थना की तो अपने इंकार कर दिया, मगर प्रेमियों के बार-बार प्रार्थना पर आज्ञा दे दी। जब तस्वीर ली जा चुकी तो उसके बाद प्रशाद बांटा गया। इसके बाद आप चौबुर्जी भवन में तशरीफ़ लाये। सेठ तारा चंद जी ने आपसे आज्ञा लेकर संगत को भोजन खिलाया। शारियां कश्मीर से उस समय चौधरी फकीर चंद जी तशरीफ़ लाये हुए थे। वह भी भोजन पाने साथ गए। किसी समय चौधरी जी ने शहरी लोगों के बारे में ऐसे विचार प्रकट किए थे कि शहरी लोग अच्छी तरह से किसी को पूछते नहीं जैसे कि गांव के लोग आने-जाने वालों का आदर सत्कार करते हैं। उनके घर यदि दो-तीन मेहमान ज़्यादा आ जावें तो घबरा जाते हैं। चौधरी जी की ऐसी अंहकारमई धारणा को उलटने के लिए जब वह खाना खाकर वापस आए तो आपने उनसे पूछा:- चौधरी जी! आपने शहरी लोगों का कैसा भाव देखा है? उस समय चौधरी जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! हम उनके साथ नहीं मिल सकते और कहा कि आपकी जिस पर दया दृष्टि हो जाती है वह बढ़-चढ़ कर सेवा में हिस्सा लेते हैं, चाहे गांव का वासी हो या शहर का। आपकी सेवा में हाज़िर होने से एक दूसरे से संबंध बढ़ जाता है और कहीं का भी हो कोई फ़र्क नहीं रहता।

116. समयाला बंगला में एकांत निवास

प्रेमी लाला शंकर दास जी डेरा गोपी पुर, पिछले साल से प्रार्थना कर रहे थे कि- श्री महाराज जी, उस तरफ भी तशरीफ़ लाकर पिछड़ी हुई जनता पर कृपा करें। आपने उनकी प्रार्थना को कबूल कर लिया और लाला शंकर दास जी के साथ जो अपने फ़रजंद (पुत्र) को भी साथ लिए हुए थे एक अप्रैल, 1946 को लाहौर से रवाना होकर होशियारपुर पहुंचे। पंडित आशनदास जी उन दिनों में होशियारपुर तैनात थे। वह स्टेशन पर हाज़िर होकर श्री महाराज जी को अपने क्वार्टर में ले गए जो कि अहाता डाकखाना में ही था। डाकखाने के स्टाफ को सत्पुरुष के आने की सूचना दी और सबको सत्संग में शामिल करके सत्पुरुष के सत् उपदेशों से लाभान्वित किया। यहां से आप 4 अप्रैल को बस द्वारा रवाना होकर डेरा गोपीपुर तशरीफ़ ले गए। डेरा गोपीपुर में लाला शंकर दास जी ने श्री महाराज जी को अपने गृह पर ठहराया। उनके मकान में अलेहदा जगह थी जहां उनके ठहरने का प्रबन्ध किया गया। आगे खुला दालान था। शहर में आपके आने की ख़बर देकर अतृप्त जनता को सत्पुरुष ने सत् उपदेशों द्वारा उनको तृप्त किया। आपके सत् उपदेश का सार इस प्रकार था।

सत् उपदेश

''जीव शरीर रूपी संसार को धारण करके सुख या शांति की तलाश करने के लिए तथा सांसारिक भोग पदार्थों को एकत्र करने के लिए दिन-रात यत्न-प्रयत्न में लगा रहता है। पदार्थ को एकत्र करता है और भोगता है, मगर तृप्ति नहीं होती बल्कि अशांति बढ़ जाती है, क्योंकि भोगों की लालसा आ घेरती है। इस तरह दिन-रात यत्न-प्रयत्न करते हुए कई किस्म के पाप कर्म भी कर जाता है। इस दौड़ में लगा रहता है। लालसा पूर्ण नहीं होती शरीर ख़त्म हो जाता है और अंत समय अफ़सोस करता हुआ जाता है। उसे इस बात की सूझ नहीं कि शांति सांसारिक वस्तुओं में नहीं है, बल्कि वह तो इस शरीर के अंदर ही मौज़ूद है।

जग जीवन की खोज करो, ओढ़क जंगल वास।
महल मंडप उसारे, नित घर कूड़ भरवास॥
निज स्वरूप की कथा विचारो, जो देह परकाशे नीत।
निर्मल तत् ज्ञान यह, हृदय करे पुनीत॥

''इसलिए सुख या आनन्द की प्राप्ति के लिए असली ज़िंदगी की तहकीकात (ख़ोज) करनी होगी। यह वही शक्ति है जो देह को प्रकाश कर रही है। जो जीव इसकी तहकीकात कर लेता है तृप्ति को प्राप्त हो जाता है और उसकी तहकीकात मुकम्मल (पूर्ण) हो जाती है।''

बैसाखी के दिन प्रेमी शंकर दास ने विशाल सत्संग का प्रबन्ध किया जिसमें पंडित लक्ष्मणदास जी व उनकी धर्म पत्नी भी शामिल हुए। वह होशियारपुर से वापिस धर्मशाला जा रहे थे। सत्संग का, डेरा गोपीपुर निवासियों ने काफी लाभ उठाया और लंगर का प्रशाद भी पाया।

यज्ञ की समाप्ति पर श्री महाराज जी ने लाला शंकरदास जी से पूछा- ''प्रेमी! क्या सोचा है? अब तुम्हारा प्रेम पूरा हो गया, अब इज़ाज़त दो कश्मीर की तरफ चले जावें, इधर नहीं ठहरना।'' पालमपुर से आगे एक जगह बीड़ बंघाल है, उधर चलने का विचार है।

लाला शंकर दास जी:- महाराज जी! दास ने सब बन्दोबस्त कर लिया है।

15 अप्रैल को श्री महाराज जी मय भक्त बनारसी दास जी व लाला शंकर दास जी बस द्वारा कांगड़ा के लिए रवाना हो पड़े। साथ में पंडित लक्ष्मणदास जी मय धर्मपत्नी के खुद भी रवाना हुए। कांगड़ा तक सब एक ही बस में आए। कांगड़ा से पंडित जी दूसरी बस में सवार होकर धर्मशाला चले गए और श्री महाराज जी, भक्त जी व लाला शंकर दास जी पालमपुर, बैजनाथ होते हुए अहजू पहुँचे, और बस से उतर गए। वहाँ एक आदमी श्री महाराज जी की इंतज़ार कर रहा था, वह घोड़ा साथ लाया हुआ था। श्री महाराज जी को घोड़े पर सवार कराया गया और सब 'भेड़' के लिए चल पड़े। भेड़ पहुंचने पर श्री महाराज जी को लाला निहाल चंद इराईज़ नवीस के गृह पर ठहराया गया। यह जगह 4000 फीट की ऊंचाई पर थी। आस-पास किसी एकांत जगह की दूसरे दिन तलाश की गई। आख़िर समयाला बंगला पसन्द आया जो 5000 फुट की ऊंचाई पर था। इसके आसपास चाय के खेत थे। यह बंगला एक अंग्रेज ने बनवाया था और अब यह बंगला राय बहादुर जोधामल खड़ालिया ने खरीद लिया था। 19 अप्रैल को भेड़ से चलकर इस बंगले के एक कमरे में आसन लगाया गया। दूसरे कमरे में प्रेमियों को ठहरने का प्रबन्ध किया गया। लंगर का कमरा अलग था। भक्त जी ने उसमें डेरा लगाया। पानी की इस जगह समस्या थी। नदी नीचे काफी गहराई पर थी। पानी की आसपास तलाश शुरू हुई । बंगले से एक तरफ ढलान में थोड़े फासले पर पानी का चश्मा देखा, मगर पानी साफ नहीं था। श्री महाराज जी ने खुद तशरीफ़ ले जाकर उसे देखा और उसे खोदने की आज्ञा दे दी। जब जगह खोदी गई और उसे चौड़ा किया गया तो और पानी की धाराएँ निकल आईं। उस समय आपने फरमाया:- यहां के आदमी सुस्त हैं, पीने का पानी भी दुरुस्त नहीं कर सकते।

इस जगह निवास के दौरान बाबू अमोलक राम जी, पंडित राम जी दास जी, बख़्शी परसराम जी हरयाल व चौधरी फकीर चंद जी दर्शनों के लिए हाज़िर हुए। सत्पुरुष अपने प्रोग्राम के मुताबिक रात को जंगल में चले जाते और अपनी आनंदित अवस्था में मग्न हो जाते और दिन निकलने पर वापिस तशरीफ़ लाते। बरसात इस जगह शुरू हो गई। बरसात में इस जगह जोंकें आम हो जाती हैं। इनके चिपटने का पता ही नहीं लगता। धागे की तरह यह होती हैं। लेकिन सत्पुरुष अपने प्रोग्राम के मुताबिक जंगल में जाकर समाधिस्थ रहते। कई दफ़ा जोंकें लगीं भी और खून चूस कर खुद ही उतर गईं, पता तब ही लगता जब खून निकलना शुरू होता।

एक दिन बाबू अमोलक राम जी ने सेवा में अर्ज़ की:- महाराज जी! मन अभ्यास में क्यों नहीं लगता?

श्री महाराज जी:- प्रेमी जी! अभी तो सिर के बाल संवारने में लगे रहते हो। इधर से जब सुरति हटाओगे तब चित्त अभ्यास में शायद लगे। ख़ुराक और लिबास जहां तक हो सके सादा रखने की तरफ ध्यान दो।

इसका यह प्रभाव पड़ा कि बाबू जी दूसरे दिन बैजनाथ जाकर बाल कटवा आये।

इस जगह एकान्त निवास के दौरान आपने काफी वाणी प्रगट फरमाई और श्री सतगुरु गुह्य उपदेश प्रसंग भी लिखवाया जिसे हाज़िर प्रेमियों ने बड़ा पसन्द किया! फिर पूछा:

प्रश्न– महाराज जी, मन की खुशियां किस तरह खत्म हो सकती हैं?

उत्तर– प्रेमी! सेवा, सिमरण, विचार में लगे रहने से ही किसी समय कामना कल्पना से ख़ुलासी प्राप्त होगी। मन और बुद्धि शरीर को ही सब कुछ समझ रहे हैं। जिस समय बुद्धि मन, इन्द्रियों से परे इसके साक्षी स्वरूप को अभ्यास द्वारा बोध कर लेगी तब जाकर असली माइनों में वैराग्य प्राप्त होगा, शरीर का मोह टूटेगा। यह आसान बात नहीं। जब-तक बुद्धि बाल-बाल में फैली हुई है कैसे उस शब्द को अनुभव कर सकती है?

सत्गुरु गुह्य उपदेश के बाद आपने 'देह परायणता' और 'ईश्वर परायणता' का प्रसंग लिख करके प्रेमियों को दिया। यह दोनों अब ग्रन्थ श्री समता विलास में छप चुके हैं।

आपने एक प्रेमी अब्दुल हकीम, अबोहर निवासी के पूछने पर निम्नलिखित शब्द लिखकर भेजा। यह शब्द ग्रन्थ श्री समता प्रकाश में छप चुका है!

ज़िकर रब छाड के होवें मग़रूर नित, ग़ाफिल गोता खावेंगा यह समझ लीजिये।
दुनिया सराय फ़ानी रहना मुकाम नाहीं, राह ये सूफियां तहकीक कीजिये॥
नफस शैतान को सदा गुलाम रख, बंदगी खुदाये में सिदक कमाईये।
गंदगी को छोड़ के जिन्दगी पहचानकर, तासुब त्याग के मेहर वरताईये॥
ज़ात-रूबानी नित कर तहकीक तूं, कलमा बेखुदी की विरध पहचानिये।
राज़ी रज़ाये रब सिदक ले दम-दम, बंदगी कमाये के साहेब घर जानिये॥
साहेब पहचान के ग़फ़लत दूर भई, यह दुनिया नूर खुदाये जाना।
नफ़स को मार के ग़ैब को देखया, पाये इलहाम ज़िकर रहमाना॥
सही तहकीक से पाया रफ़ीक को, दोज़ख़ व जन्नत का भरम टारा।
ज़ाते विसाल से भया खुशहाल सो, बंदगी कमाये रंग एक धारा॥
फ़ना आग़ाज़ सब ग़फ़लत दिल की, नूर रुबानी सब थाईं पूरा।
नूर मे नूर मिल इक रंग होया, पाये ये रमज़ कोई सालिक शूरा॥
सिदक सबूरी ये पावे जागीरी, नित मुरशद मेहर से पाक होवे।
'मंगत' ये ज़िंदगी कमाल जग माहीं, साहेब विसाल से दुःख खोवे॥

इस दौरान बंगले के मुंशी ने भक्त जी के बटुए से तीन सौ रुपये निकाल लिए। भक्त जी ने यह बटुआ अपने बिस्तर में रखा हुआ था। भक्त जी को इस नुकसान का बड़ा अफ़सोस हुआ और

खाना बंद कर दिया। महाराज जी को इस बात का पता लगा तो आपने भक्त जी को अंदर बुलाया और फरमाया:– ''जिसको रुपये की ज़रूरत थी वह ले गया। तू अब क्यों फिक्र कर रहा है? जो ले गया उसने अपना ही नुकसान किया है। अब बिल्कुल चुप हो जाओ, किसी से पूछो तक नहीं। ऐसे उन सबको पता लगेगा कि इनका कुछ नुकसान नहीं हुआ है। सिवाय इस मुंशी के और किसी को ज़ुरायत (हिम्मत) नहीं जो ऐसा काम करे। तेरी लापरवाही का यह नतीजा है। जो होना होता है वह होकर रहता है। आईंदा चौकन्ने रहो। कोई बिस्तरा वग़ैरा भी न गुम कर देवे। तुम उन लोगों की आदत नहीं देखते हो। चार, छः आने रोज़ पर यह लोग मज़दूरी करते हैं। सब आदमी घर का काम करें तब उनका गुज़ारा होता है। जो कमाते हैं लुगड़ी (एक किस्म की शराब) में ही गंवा देते हैं।''

इस जगह सत्संगों के नोट लिए गए थे जो एक कापी में लिखे थे। चूंकि वह सब कापियां अब कहीं नीचे ऊपर हो गई हैं इसलिए वह दर्ज नहीं हो सके। इस जगह लगभग ढाई माह एकांत निवास करने के बाद वहां से रवानगी का प्रोग्राम बना लिया। 5 जुलाई, 1946 को आप समयाला से वापिस रवाना हो पड़े। सामान एक घोड़े पर लादा गया। श्री महाराज जी के साथ भक्त जी और बाबू अमोलक राम जी थे। रास्ते में जा रहे थे कि खूब ज़ोर की बारिश शुरू हो गई। रास्ते में एक मकान था, सब वहां ठहर गए। बारिश बंद होने पर सब रवाना हो पड़े। रास्ते में बैजनाथ से थोड़े फासले पर एक नदी थी जो पूरे ज़ोर से चल रही थी। पानी इतनी तेज़ और ज़ोर से चल रहा था कि उसमें से गुज़रने की हिम्मत आम आदमी भी नहीं कर सकता था। यद्यपि श्री महाराज जी का जिस्म दुबला-पतला था मगर जिस शक्ति के वह मालिक थे भला यह बरसाती पानी चाहे कितने ज़ोर से चल रहा हो कैसे उनको रोक सकता था? आप बेधड़क नदी में उतर गए और पानी से पार निकल गए। उनके साथ ही साथ पीछे बाबू अमोलक राम जी भी नदी को पार कर गए और उनके पीछे भक्त बनारसी दास जी भी नदी पार कर गए। थोड़ी देर बाद घोड़े वाला भी घोड़े समेत नदी पार कर गया।

प्रोग्राम धर्मशाला जाने का था। बैजनाथ पहुंचकर वहां से बस में सवार होकर शाम छः बजे धर्मशाला पहुंचे। प्रेमी लाला शंकर दास जी ने आपके निवास का प्रबन्ध लाला हबैसी राम जी एडवोकेट की कोठी पर किया हुआ था। बस से उतरने पर श्री महाराज जी को वहां ले जाया गया और एक अलेहदा कमरे में ठहराया गया। चार दिन उस जगह सत्पुरुष ने निवास किया और सत् के जिज्ञासु इस जगह भी सेवा में हाज़िर होकर सत् विचारों का लाभ उठाते रहे।

117. शाहपुर कन्डी में एकान्त निवास

10 जुलाई, 1946 को धर्मशाला से सुबह बस द्वारा पठानकोट गए और वहां से शाहपुर कन्डी तांगा द्वारा तशरीफ़ ले गए। बाबू अमोलक राम जी आपसे आज्ञा लेकर काला गुजरां चले गए।

शाहपुर कंडी आप दरियाये रावी के किनारे उस पुराने किले में तशरीफ़ ले गए जहां पहले तशरीफ़ लाने पर आप ठहरा करते थे और उसी कमरे में, जहां पहले निवास किया था आसन लगा लिया। शहर ख़बर पहुंचने पर प्रेमी आने लगे और सत्संग का प्रोग्राम प्रेमियों ने प्रार्थना करके बनवा लिया। सत्संग का समय शाम को निश्चित किया गया ताकि शाहपुर कन्डी निवासी कारोबारी प्रेमी भी शामिल हो सकें। सत्संग में सत् उपदेशों की अमृत वर्षा होने लगी और प्रेमी लाभ उठाने लगे।

चेतावनी

एक दिन शाहपुर कन्डी निवासी प्रेमियों ने शहर पधार कर शहर निवासियों को भी सत् उपदेश द्वारा कृतार्थ करने की प्रार्थना की। मगर आपने जाने से इंकार कर दिया और फरमायाः– इस दफ़ा शहर नहीं जाएंगे। एकांत के वास्ते इधर आए हुए हैं, इनका तीसरी दफ़ा इधर आना हुआ है। यह देखा गया है कि आप लोगों पर कोई असर नहीं हुआ है इसलिए फ़कीर क्यों अपना वक्त ज़ाया करें? जब डंडा बरसेगा तब आप लोगों को होश आवेगी। अब सबके लिए इकट्ठा मिलकर प्रेम से रहने का वक्त था। मगर आप लोगों पर उसी तरह अभी तक छूत–छात का भूत सवार है और नफ़रत का जज़्बा दूर नहीं हुआ, जिसे दूर करने की प्रार्थना की जाती रही है।

आप जब दो दफ़ा यहां तशरीफ़ लाए थे और ठहरे थे तो आपने शाहपुर कन्डी निवासी प्रेमियों को छूत–छात ख़त्म करने के लिए कहा था और उन्होंने ऐसा करने का वायदा भी किया था, मगर उसे पूरा नहीं किया।

वहां का एक मौलवी भी आकर हालात सुनाया करता था और अर्ज़ करता था– पीर जी! आपके कलाम (वचन) ही दोनों मज़हबों से तास्सुब (नफ़रत) ख़त्म करने वाले हैं, लेकिन आजकल जो हवा चल रही है न मालूम क्या हालत बना देगी? श्री महाराज जी आमतौर पर खामोशी से हालात सुनते रहते या फरमा दिया करते– प्रेमी! खुदा की रज़ा में फ़ना (लीन) होने से ही इन्सान मुसीबतों से बच सकता है।

118. काहनूवान में निवास

इस दफ़ा आपने सिर्फ 19 दिन शाहपुर कन्डी में एकांतवास में गुज़ारे और 24 जुलाई, 1946 को काहनूवान तशरीफ़ ले गए। आपको राय साहब देवी दयाल जी की कोठी के बरामदा में ठहराया गया। सत्संग का प्रोग्राम शाम को 5.00 बजे से 6.00 बजे तक रखा गया। काहनूवान निवासी सत्संग में शामिल होकर लाभ उठाते। इस जगह से आपने जो महन्त रतनदास को पत्र लिखवाया, उसे नीचे दिया जा रहा है। ताकि प्रेमी पाठक भी इससे शिक्षा ग्रहण करें।

''प्रेमी जी! भाव प्रेम को दिल में रखें। अगर कोई तुम्हारे साथ ईर्ष्या करता है तो उसके साथ दिल व जान से मोहब्बत करें। इससे सब झगड़े टूट जाते हैं। ख़ैर समां देखकर सदाचारी जीवन को

धारण करें और अपने जन्म का सुधार करें। जहां तक हो सके इन झगड़ों में कमी करें। ईश्वर सर्व शक्तिमान तुम्हारा सहायक हो। निश्चय कर लेवें। वह जीव कल्याण को प्राप्त होता है जो महापुरुषों के वचन को तन, मन करके मानता है। दुनिया के ऐश्वर्य और मान की कोई हस्ती नहीं, यह सब धूल की तरह उड़ जाते हैं। मगर सत् यत्न और पर-उपकार हमेशा के वास्ते लाभदायक हैं। जहां तक हो सके अपने कीमती वक्त को ईश्वर भक्ति में लगाओ जो दुनिया में महाकारज है, और परम धाम को प्राप्त करें। मानुष जन्म ही है जिससे कुछ लाभ हासिल किया जा सकता है। ख़ाक का पिंजर आख़िर ख़ाक में ही समाएगा। दुर्लभ यही है कि जीव ख़ाक से पाक वस्तु तत् प्रकाश को हासिल कर लेवे। ईश्वर तुमको सदा आनंद और शांति देवें। हमारा मूलभाव यही है।''

माटी केरा पिंजरा, माटी जाये समाये।
माल मुलख सब छाड़ के, जीव निमाना जाये॥
सत् सरूप खोजन करो, संतन करी पुकार।
संशे सकले मिट गए, परस लियो सुख सार॥
इस मृतक संसार में, एको रूप अपार।
खोज करो नित तिस की, मिट जाए कर्म कराल॥
जीव दया उपकार नित, आतम में विश्वास।
सतनाम सिमरत रहे, जब लग देह में आस॥
सत् असत् संसार में, एको रूप अपार।
खोज करो नित तिस को, मिट जाए कर्म कराल॥
देह संग आपा हो गया, विसरे साखी भूत।
जन्म-जन्म भरमत फिरे, तृष्णा धार रसोत॥
चेत लियो नित चेत लियो, आनन्द तत् परकाश।
जां के पाये भरम मिटे, पद पावे अबनाश॥
कहत सुनत बहु दिन गए, सरया कछु न काज।
हाड़ मांस का पिंजरा, छोड़ चला सब साज॥
ऐसा ही एह चक्कर है, उपजे बिनसे मीत।
कूड़ी रचना जगत की, त्यागो मन से प्रीत॥
परमारथ तत् सार है, सब जीवों का धाम।
जतन-जतन से ले गए, जिन सिमरा सतनाम॥
गरभ गुबार मन में घना, संशे अधिक अपार।
किस जीवन की लालसा में, अपने पांव पसार॥
नित उठ धाओ प्रेम में, संगत साध पछान।
दुर्लभ घड़ी सो जान लो, जे चित्त लागे नाम॥

आस-आस में मर मिटे, लाख करोड़ी मीत।
पलक में सकल छाड़ गए, चले निरासे चीत॥
नाम सिमर नाम सिमर, एह तत् जग में सार।
सतगुरु की सत् दिख्या, घट में खोल किवाड़॥
अंतर बाहर चानन होया, नौबत बजे नफ़ीर।
खाट चले सत वस्त को, कामिल सो ही फ़कीर॥
पलक-पलक में याद कर, संग स्वांस की डोर।
'मंगत' तत में तत मिले, अखे शब्द घनघोर॥

यह पत्र लिखकर भक्त बनारसी दास को दिया कि पढ़कर लिफ़ाफे में बन्द करके डाक में डाल आओ। भक्त जी ने इसे पढ़कर लिफ़ाफ़े में बंद करके लेटर बक्स में डाल आए। वापिस आकर चरणों में बैठे तो पूछा:- ''महाराज जी! इस कदर विचारवान भी किस दुविधा में पड़े हुए हैं। आपस में झगड़े चल रहे हैं।''

सतपुरुष ने फरमाया:- ''प्रेमी! संसार है ही झगड़ों का घर। जिस जगह माया ने प्रवेश कर रखा है वहां यह अपना रंग दिखाती है। बाकी गुणी पुरुष इससे ज़्यादा संबंध नहीं रखते। संसारियों की चीज़ संसारियों के हवाले कर दिया करते हैं। जब-तक यह माया सेवा में खर्च होती रहती है तब-तक दिखलाई नहीं देती, जब अपना मानकर बैठ जाते हैं तब हर जगह ही झगड़े बन जाते हैं। झगड़ों से निज़ात पाने के वास्ते सबसे बड़ा असूल त्याग है। जो भूल जाता है वह ख़्वार (परेशान) होता है! प्रेमी, माया दु:ख नहीं देती, अपनी भावना ही दुविधा में डालती है। अब तुमको क्या फ़िक्र लग रहा है? इधर से उपदेश करना फ़र्ज़ है, समझ कर चलने में ही सुख है। अब ज़रा आराम करके संगत सेवा करो।''

भक्त जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! यह समाज या संगत की सेवा भी बन्धन का कारण है। जिस तरह परिवार को पालने के वास्ते परिवारी सोचता है और कर्म करता हुआ नित ही कल्पता रहता है, उसी तरह यह भी एक बड़ा परिवार है।''

इस पर आपने फरमाया:- ''प्रेमी! जब-तक गर्ज़ रख कर सेवा भाव में दृढ़ है तब-तक बंधन में ही है। अगर चित्त की शुद्धि की ख़ातिर निष्काम भाव से सेवा कर रहा है। तब समाज या देश की सेवा कल्याणकारी है। अपने परिवार और खानदान की सेवा मोह वश होकर हर समय जीव करता रहता है। ऊपर से कहता है इनका फ़र्ज़ पूरा करना है, सेवा कर रहा हूं। वास्तव में संगत की सेवा, देश की सेवा ही निष्काम भाव से करना चाहे तो कर सकता है। मगर असली सेवा तब ही बन सकती है जब अन्तरविखे आत्मा का प्रकाश हो जाये और मैं-तू, तेरे-मेरे का झगड़ा ख़त्म हो जाये। वर्ना यह तो ज़रा सी बड़ाई मिलने पर भी भूल जाता है। फिर अपनी बड़ाई को कायम रखने के वास्ते कई प्रकार की चालाकियां, चतुराईयाँ करता है। लेकिन इस तरह हर एक जीव के हृदय में वह बैठ नहीं सकता। सेवा भी कई किस्म की होती है। जितना-जितना लालच रखकर सेवा करता

है उतना-उतना मान अपमान पाता रहता है। निर्मान भाव में दृढ़ होकर निष्काम चित्त से की हुई सेवा जुगा-जुग तक सबके वास्ते सुखदायक होती चली जाती है। तुम्हें क्या फ़िक्र लग रहा है? परिवार और संगत की सेवा में बड़ा ज़मीन-आसमान का फ़र्क है। परिवार की सेवा में नित ही मोहवश रहता है, हर प्रकार की खिदमत करते भी छित्तर (गालियां) पड़ते हैं। कोई खुश नहीं होता। चाहे कितना भी निष्काम भाव से सेवा करे, मगर फिर भी थोड़ी बहुत गर्ज़ बनी ही रहती है। संगत की सेवा से चित्त में खेद नहीं पैदा होता। बाकी आहिस्ता-आहिस्ता सत् सिमरण करने वाला जीव निष्काम भावना की तरफ अपने आप ही चला जाता है। बग़ैर ईश्वर परायणता के निष्काम सेवा नहीं हो सकती। गुरु भक्ति, ईश्वर भक्ति में कोई फ़र्क नहीं। गुरु वचनों में ईश्वर प्राप्ति के वास्ते ही जिज्ञासु दृढ़ होता है। यह दृढ़ता ही संसार की परायणता से छुटकारा देने वाली है। बाकी सेवा करते समय किसी संसारी पदार्थ की चाह चित्त में नहीं रखनी चाहिए। बल्कि जिस सत् पद को सत्पुरुषों ने प्राप्त करके सत् शांति प्राप्त की उस मरकज़ (लक्ष्य) की तरफ सुरति को लगाए रखना चाहिए। ऐसी भावना ही बंधन हालत से निर्बन्धन हालत की तरफ ले जाने वाली है। इस तरह विचार करते रहा करो। संशय निकल जाते हैं। न फ़र्ज़ की कोई हद है, न सेवा की। स्वार्थी जीव एक टका अरदास करके सारे संसार के पदार्थों की मांग कर लेता है। लेकिन लोक सेवा में शरीर तक बलिदान करने वाले कुछ भी नहीं मांगा करते।

119. मलखानवाला ज़िला स्यालकोट में अमृत वर्षा

पंडित बिहारी लाल जी ऋषि आपकी सेवा में प्रार्थना कर रहे थे कि दया-दृष्टि करते हुए तशरीफ़ लाकर एक तो उनके गृह को पवित्र करें और दूसरे उस तरफ पिछड़ी हुई जनता को भी सत् उपदेशों द्वारा कृतार्थ करें ताकि उन्हें भी पता चले कि इस मानुष चोले का लाभ क्या है? और उन्हें भी सत् मार्ग पर लगायें। आपने पंडित जी की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और 12 अगस्त, 1946 के दिन काहनूवान से रवाना होकर ठीक उस समय स्टेशन पर पहुंचे जब गाड़ी आ चुकी थी। उस दिन बारिश हो गई थी। काहनूवान से सड़क गुरदासपुर तक कच्ची थी इसलिए तांगा आहिस्ता-आहिस्ता आया। प्रेमी स्टेशन पर इंतज़ार कर रहे थे। आपके पहुंचते ही प्रेमी ख़िदमत राय फ़ौरन टिकट लेने चला गया और दूसरे आये हुए प्रेमियों ने श्री महाराज को गाड़ी में सवार करवा दिया। जैसे ही आप गाड़ी में सवार हुए गाड़ी चल पड़ी। जब प्रेमी ख़िदमत राय टिकट लेकर आए तो गाड़ी तेज़ी से चल रही थी, वे टिकट दे न सके। गाड़ी में भीड़ बहुत थी। खचा-खच भरी हुई थी। बमुश्किल, आपको खड़े होने की जगह मिली। चूंकि आपका लिबास सादा था इसलिए गाड़ी के मुसाफ़िर जान नहीं सकते थे कि यह महात्मा हैं और आप अपने आपको ज़ाहिर किया ही नहीं करते थे, इसलिए आप खड़े ही रहे। थोड़ी देर में गाड़ी अगले स्टेशन सोहल पहुंच गई। वहां अमृतसर से आने वाली गाड़ी से क्रास हुआ। आपने भक्त बनारसी दास से पूछा:- ''यह गाड़ी

किधर जा रही है?'' भक्त जी ने अर्ज़ की:- गुरदासपुर जा रही है। आपने फरमाया:- ''जल्दी उतरकर उसमें चढ़ चलो।'' भक्त जी ने बिस्तरा उठाया और उतरकर दूसरी गाड़ी में सवार हो गए और मय भक्त जी आप गुरदासपुर लौट आए। अब बस द्वारा जाने का विचार करके आप बस स्टाप पर तशरीफ़ ले गए। अभी आप वहां खड़े ही हुए थे कि प्रेमी ख़िदमत राय और पंडित रामजी दास आ गए। बस आ गई, उसमें सवार होकर आप लाहौर पहुंचे और रेलवे स्टेशन से बाहर गए। वहां से वज़ीराबाद जाने वाली गाड़ी पकड़ी और वज़ीराबाद उतरकर स्यालकोट जाने वाली गाड़ी से समभड़याल स्टेशन पर पहुंचे। उस वक्त रात के दस बज चुके थे। आपने रात स्टेशन पर ही व्यतीत की। सुबह होने पर तांगे द्वारा मलखांवाला पधारे। वहां पहुंच कर पंडित जी के मकान का पता करके वहां पहुंच गए। प्रेमी कुंदन लाल जी, पंडित बिहारी लाल जी के भाई, कुदरतन एक मौत होने की वज़ह से लाहौर गए हुए थे। घर वालों ने एक अलेहदा कमरा खोल कर आपका आसन लगवा दिया। शाम को पंडित कुन्दन लाल जी वापिस आ गए। सत्संग का प्रोग्राम निश्चित कर दिया गया और मलखांवाला के निवासी सत् उपदेशों का लाभ उठाने लगे। आपने दो हफ़्ता इस जगह निवास किया।

120. काला गुजरां में आगमन

काला गुजरां से बाबू अमोलक राम जी इस जगह दर्शनों के लिए हाज़िर हुए और सेवा में प्रार्थना की:- काला तशरीफ़ ले जाकर काला निवासियों को दर्शन देकर सत् उपदशों से कृतार्थ करें। सत्पुरुष की बड़ी मेहर की निग़ाह बाबू पर थी। आप बाबू जी के साथ ही रवाना होकर काला गुजरां पधारे।

जब बाबू जी पर कृपा करके उन्हें चरणों में जगह बख़्शी थी और सत् मार्ग पर लगाया था उस वक्त आप अपने आपको ज़ाहिर नहीं कर रहे थे और छुपे हुए थे। उस समय न तो कोई अमृत वाणी प्रगट हुई थी और न कोई अमृत वचन। उस समय कोई नियम भी नहीं थे। आपके गांव निवासी आपको भक्त जी कहा करते थे। बाबू जी उस समय मांस, अंडा वग़ैरा इस्तेमाल किया करते थे और सिगरेट भी पीते थे। उन दिनों में जब बाबू जी शुभ स्थान पर जाया करते थे तो उनके लिए सिगरेट भी मंगवाये जाते थे और बाबू जी श्री महाराज जी के सामने ही उन्हें पिया करते थे। आपने उससे फरमाया था कि दो साल के बाद आपकी ड्यूटी मालिक की तरफ से दुनिया के सुधार की तरफ लगने वाली है। जब ड्यूटी लगी अमर लोक की वाणी का प्रवाह बहने लगा। बाबू जी ने मांस इत्यादि तो छोड़ दिया मगर सिगरेट पीते रहे। सिगरेट न छोड़ने का एक कारण तो आदत थी और दूसरे जब बाबू जी अंग्रेजों की कोठियों में जाते तो वहां अंग्रेज अंदर से सिगरेट पीने के लिए भेजा करते थे। जब सत्पुरुष ने 1946 में बाबू जी के गृह पर तशरीफ़ लाने की कृपा की तो एक दिन वह अजीज़ हरबंस लाल को समझा रहे थे कि अपनी कुछ आदतों को बदल लें। बाबू जी ने भी सत्पुरुष की आज्ञाओं के पालन करने के लिए अजीज़ को कहा तो उसने आप से कहा:- ''बाबू जी!

आपने कौन सी सिगरेट छोड़ दी है?'' बाबू जी ने उस वक्त सिगरेट न इस्तेमाल करने का प्रण कर लिया और सिगरेट पीना बन्द कर दिया।

सत्पुरुष दिन के समय शहर से बाहर फासले पर बनी-बादियां जाकर छायादार वृक्षों के नीचे समय व्यतीत किया करते थे। बनी-बादियां एक एकांत स्थान था जहाँ किसी समय अच्छे तपस्वी महापुरुष रह चुके थे। यह स्थान काफी लम्बा चौड़ा था और आसपास की जमीन से ऊंचाई पर बना हुआ था। अहाता में गहरा तालाब था और एक बावली बनी हुई थी और अन्दर एक कुआं भी मौज़ूद था और बड़े-बड़े पीपल के वृक्ष थे और फुलाही के भी बहुत से वृक्ष लगे हुए थे, जो इसे जंगल की सूरत दे रहे थे। सत्पुरुष दिन के समय यहां छाया में आनन्दित अवस्था में विराजमान रहते थे।

एक दिन आप वृक्ष की साया में बैठे थे कि चौधरी करम दास नम्बरदार आपके चरणों में हाज़िर होकर बाअदब बैठ गया और अर्ज़ की:

''पीर जी! यह ख़ादिम आपके रोज़ाना दीदार (दर्शन) करता है। जिस जमीन में रात को आप बैठते हैं वह इसी गुलाम की ज़मीन है। आप हुक्म फरमावें, उसमें से बीघा दो बीघा ज़मीन आपके बैठने के लिए तकिया बना देवे और आप वहां ही क्याम (निवास) फरमावें।''

श्री महाराज जी:- प्रेमी! तेरी बड़ी मेहरबानी है जो तूने ऐसी पेशकश की है। ख़ुदा तुम्हें यकीन पाक बख़्शें जो कि इस कदर नेक ख़्याल फ़कीरों के लिए बनाया है। फ़कीर तकियों के हक में नहीं, सारी दुनिया ही उनका तकिया है। फ़कीर एक जगह बनाकर बैठा नहीं करते, न किसी जगह की पाबंदी में आने वाले हैं। हिन्दू मुसलमान सब ही इसके लिए एक जैसे हैं। किसी को किसी फ़र्क की निग़ाह से नहीं देखते। ज़ाते-आला सब में एक सा है, गो (यद्यपि) जिस्म सबके ख़ाकी (नश्वर) हैं। सबको दिल की राहत की ज़रूरत है। वह कलबी सकून (परम शांति) फ़कीरों के पास बैठने से मिलती है। उनकी अमली ज़िंदगी सबको खुशी देने वाली होती है। फ़कीरों की निग़ाह में हिन्दू मुसलमान का कोई फ़र्क नहीं। सब ही एक खुदा के बन्दे हैं। यह अलहेदगी ख़ुदग़र्जी लोगों में भाई, मुल्ला, पंडित डालते आये हैं। कमज़ोर अक्ल वाले उनके पीछे चलकर ख़ुदा की हस्ती को भूल जाते हैं। न कोई बुरा है, न अच्छा। फ़कीरों के लिए बादशाह, गदागर (भिखारी), ग़रीब, अमीर सब एक जैसे हैं। खुदा जाने, यह तास्सुब बढ़ता हुआ क्या रंग लाता है?

नम्बरदार:- पीर जी! आपकी खरी-खरी बातें दिल पर बड़ा गहरा असर कर रही हैं। फ़कीर किसी का लिहाज़ नहीं करते। आपकी दुहाई आने वाली आफ़ात से बचाये तो बचाये वर्ना हालात बहुत नाज़ुक होते जा रहे हैं।

श्री महाराज जी:- प्रेमी! तुम अपने दिल को साफ करो। सारी दुनिया ठीक नहीं हुआ करती।

इसके बाद प्रेमी बड़ी आज़ज़ी से सलाम आदाब बजा कर इज़ाज़त लेकर उठा। उल्टे कदम ही श्री महाराज जी की ख़िदमत से पीछे हटा और जहां भी महाराज जी विराजमान थे उसके थोड़े फासले पर ही बड़ा गेट था, उसमें से बाहर जाकर उसने पीठ फेरी।

उस वक्त सत्पुरुष के पवित्र मुखारबिन्द से जो वचन निकले वह निम्नलिखित थे:-

''प्रेमियों! अगर यह फ़कीर उनके मज़हब में होते तो इस जगह आज कितनी रौनक होती। कितनी फ़कीरों पर फ़िदा होने वाली कौम है। क्यों न इन्हें भाग लगें? इसलिए इनके अंदर एकता है। हिन्दू नुक्ताचीनी करना जानते हैं। यह मुर्दे पूज कौम है। कोई एक तरीका इनका है ही नहीं जिस पर चलकर आपस में मिल बैठने का सबक तो सीखें। 'मिल के बहना ते वंड के खाना' (मिल के बैठना और बांट के खाना) ही असली कम्यूनिज़्म है। हिन्दुओं ने इनकी आवाज़ न सुनी तो फिर मस्ज़िदों में जाकर वाज (प्रवचन) करेंगे, उस वक्त पता लगेगा।''

इस काल में बंगाल में हिन्दू मुस्लिम झगड़े हो रहे थे, उनको ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित चेतावनी दी थी। ऐसे महापुरुष जो उस मालिक से एक हो चुके होते हैं मज़हब रहित होते हैं। उनकी निग़ाह में सब एक जैसे होते हैं। उन्हें भविष्य के हालात का पता होता है और अक्सर ऐसे शब्द मुंह से निकलते कई बार सुने, ''प्रेमियों! भयानक समय आ रहा है। अपने कर्म शुद्ध करो। तुम्हारे शुद्ध कर्म ही तुम्हारी रक्षा करने वाले हैं।''

एक दिन आप चाकू से नाखून उतार रहे थे कि अचानक चाकू लग गया और खून बहने लगा। आपने भक्त बनारसी दास को फरमाया:- ''प्रेमी! कोई कपड़ा लाकर इसे बांध दे।'' भक्त जी इधर-उधर कपड़ा तलाश करने लगे और सोचने लगे कि किस कपड़े से पट्टी फाड़ें। इस दौरान पास बैठे एक प्रेमी ने अपनी पगड़ी उतारकर फाड़ कर पट्टी बांध दी। जब वह कटी हुई जगह पर बांध चुका तो आपने भक्त जी से फरमाया:- ''वाह तेरी बुद्धि पता नहीं कहां चली गई थी? ऐसे मौके पर क्या सोचने का समय होता है? अब इसकी एक-एक तंद (डोरा) का हिसाब देना पड़ेगा।''

भक्त जी ने पूछा:- ''महाराज जी! यह कैसे?''

श्री महाराज जी:- जिस तरह एक दफ़ा सती द्रौपदी ने भगवान कृष्ण की उंगली कट जाने पर एकदम अपनी कीमती साड़ी फाड़ कर पेश कर दी थी, उसकी सेवा को देखकर कृष्ण ने फरमाया था:- ''यह कर्ज़ा भी किसी समय अदा कर दिया जावेगा।'' समय आने पर एक-एक तंद के बदले कितने थान गुप्त रूप से प्रकट कर दिए। जब दु:शासन साड़ी खींच रहा था तो वह साड़ी उतारते-उतारते थक गया और आख़िर सती के तपोबल से घबरा गया और शर्मिंदा हुआ। प्रेमी, ऐसे वक्तों में फ़कीरों की सेवा में तन, मन लगा देना ही अक्लमंदी होती है। तेरा क्या था जो सोच में पड़ गया था?

121. रावलपिंडी में निवास

सम्मेलन का समय नज़दीक आ रहा था इसलिए आप 9 सितम्बर, 1946 को काला गुजरां से रावलपिंडी तशरीफ़ ले गए और प्रेमी नंद लाल जी बिन्द्रा के गृह में आसन लगाया। सत्संग का

समय रात को निश्चित किया गया। प्रेमी सज्जन काफी संख्या में हाजिर होकर सत् उपदेशों व अनमोल वचनों द्वारा लाभ उठाते रहे। आप यहां भी रात को बाहर तशरीफ़ ले जाते और एकांत जगह आसन लगाकर परम स्थिति में लीन होकर आनन्द लेते। रात के दो बजे के करीब आप रवाना होकर राम वन से काफी आगे तशरीफ़ ले गए। भक्त बनारसी दास भी साथ थे। नाला लई के किनारे धोबी कपड़े धो रहे थे और छूआ-छू की आवाज़ आ रही थी, यह सुनकर फरमाया:-

'प्रेमी देखो! जिन्होंने मैल उतारनी होती है वह पहले ही आ जाते हैं।''

भक्त जी ने इस बात को नहीं समझा। इसके थोड़ी देर बाद फरमाया:

''बेईमान, समझा नहीं।''

भक्त जी:- महाराज जी! धोबियों के सिलसिले में फरमाया है।

श्री महाराज जी:- हां, इसी तरह इनसे सबक लेना चाहिए। दुनिया की हर चीज़ सबक दे रही है। जिस तरह यह कपड़ों की मैल उतार रहे हैं उसी तरह तुम भी प्रभात समय बैठ कर मन की मैल उतारो। तुम उधर लई नदी के किनारे बैठो, रोशनी होने पर आ जावेंगे। आपने गड़वी ली और निम्न शब्द उच्चारण फरमाते हुए आगे चल दिए:

गुरु धोबी शिश कपड़ा, साबुन सरजनहार।
सुरत सिला पर धोइये, निकसे रंग अपार॥

अंधेरी रात थी, सुनसान जगह थी और हू (सांय-सांय) का आलम था। भक्त जी रेत पर बैठकर मन को सिमरण की तरफ लगाने लगे। सुबह होने पर स्नान किया ही था कि श्री महाराज जी तशरीफ़ ले आए और आकर स्नान किया। स्नान से फ़ारिग हुए ही थे कि प्रेमी आ गए और आप सबके साथ चलकर प्रेमी नंद लाल जी के गृह पर पहुंचे। चाय पीकर सम्मेलन की सूचना प्रेमियों को पत्र द्वारा भेजी और पास बैठे प्रेमियों से सामान लंगर वग़ैरा के बारे में विचार करने लगे। इस दौरान प्रेमी ठाकुर दीवान सिंह जी, कोहाला निवासी, भी पहुंच गए। यह प्रेमी बड़ा सेवादार, श्रद्धावान और शुद्ध जीवन वाला था। सेवा की ख़ातिर यह प्रेमी माह, डेढ़ माह पहले ही हाज़िर हो जाया करता था उसके आने पर भक्त जी को अपने रिश्तेदारों से मिलने की छुट्टी मिल जाया करती थी। उसके पहुंचने पर भक्त जी को छुट्टी मिल गई कि जाकर रिश्तेदारों को मिल आए।

सत्पुरुष नीति को कायम रखने, बुज़ुर्गों को सम्मान देने की प्रथा कायम रखने और आदर्श पेश करने के लिए हमेशा सम्मेलन के लिए अपने बुज़ुर्ग भाईयों से आज्ञा लिया करते थे और अब भी उनसे आज्ञा लेने उनके मकानात पर गए। आपके बड़े भाई पंडित ठाकुर दास जी बड़े सन्तोषी और धीरजवान थे। आपने दोनों भाईयों से आज्ञा ली।

5 सितम्बर, 1946 को आप रावलपिंडी से रवाना होकर शुभ स्थान गंगोठियां पहुंचने के लिए भिखड़ाल पहुंचे। आगे सड़क पर बाबू अमोलक राम जी, पंडित पुष्प नाथ और प्रेमी बृजलाल लेने के लिए आए हुए थे। श्री महाराज जी तो भिखड़ाल गांव से निकल कर तरेल नदी की तरफ चले

गए और बाकी सब शुभ स्थान पर सीधे रवाना होकर पहुंच गए। आपके-आने की सूचना मिलने पर भूरियां, सामी वग़ैरा आसपास के प्रेमी चरणों में हाज़िर होने लगे।

सबसे पहले लकड़ी का प्रबन्ध किया जाता और प्रेमी जंगल से फुलाही की लकड़ी काटते और बाबू अमोलक राम जी दौड़-धूप करके परमिट लेकर सामान जमा करने लगे। दालें वग़ैरा सामान खरीद कर ऊँटों द्वारा शुभ स्थान पर पहुंचाया गया।

सत्संग हाल के साथ लगती हुई ज़मीन भी मिल चुकी थी। चूंकि इलाका पहाड़ी था और ज़मीन ऊँची-नीची थी इसलिए उसे ठीक किया गया ताकि उसमें खेमें वग़ैरा लग सकें और प्रेमियों के रहने की सहूलियत हो। 4 कार्तिक को सम्मेलन था, प्रेमी पहले ही आने लगे। लंगर तैयार करने का प्रबन्ध भी आश्रम के अहाता में ही किया गया। लंगर भी तैयार हो चुका था। 4 कार्तिक की सुबह ही पुराना झंडा उतारकर, नया झंडा चढ़ाया गया। पहले महामंत्र और मंगलाचरण सब प्रेमियों ने झंडे के पास खड़े होकर उच्चारण किया, फिर पुराना झंडा उतारा गया और नया झंडा चढ़ाया गया। प्रेमियों ने इसके बारे में अपने-अपने विचार भी पेश किये।

इसके बाद सत्पुरुष जंगल से वापिस तशरीफ़ लाये और चाय पीकर लंगर के बारे में पूछा। बतलाया गया कि लंगर तैयार हो चुका है। आप तशरीफ़ ले चलकर दया दृष्टि की निग़ाह डालें। आपने जाकर तैयार शुदा सामान पर कृपा दृष्टि डाली और सत्संग हाल के बरामदे में ही विराजमान हो गए।

इस दफ़ा प्रेमियों ने जूतियों का प्रबन्ध करने की आज्ञा मांगी। आपने फरमायाः- प्रेमियों! पहले की तरह ही इंतज़ाम रहने दो। आने वाले अपनी-अपनी जूतियां आप संभालें। मगर प्रेमियों ने ज़ोर दिया तो आपने इजाज़त दे दी। प्रेमियों ने गेट के पास अहाता आश्रम के अंदर लकड़ियां लगाकर और रस्सियां बांधकर जगह बना ली और उसके अंदर प्रेमी जूतियां टिकटों पर रखने लगे।

नौ बजे सुबह से सत्संग का समय निश्चित किया गया था। पंडाल लगवा दिया गया था और निश्चित समय पर संगत के प्रेमी और आस-पास की जनता पंडाल में आकर बैठ गई और सत्संग की कार्यवाही महामंत्र व मंगलाचरण से शुरू की गई। इसके बाद प्रेमी नंद लाल जी बिन्द्रा ने मीठे स्वर से वाणी पढ़ी। इसके बाद प्रेमी लाला बख़्शी राम जी ने वाणी के आधार पर बतलाया कि इंसान कहलाने का हकदार कौन है?

मानुष तां को आखिये, जां का शुद्ध विचार।
पाप पुन्न पहचान के, संभल-संभल पग धार॥

इसके बाद बाकी प्रेमियों व परमार्थी जी वग़ैरा ने भी अपने-अपने विचार रखे, फिर सत्पुरुष तशरीफ़ लाये और उन्होंने मानुष चोले के धारण करने का उद्देश्य, आम जीव क्या कर रहे हैं, करना क्या चाहिए और जीवन कैसे सफल किया जा सकता है? इस पर रोशनी डाली। इसके बाद आरती और समता मंगल संगत ने मिलकर उच्चारण किया और फिर प्रशाद बांटा गया और सत्संग की कार्यवाही समाप्त हुई।

सब प्रेमियों की भिन्न-भिन्न किस्म की सेवाओं पर ड्यूटियां लगी हुई थीं। सब अपनी-अपनी ड्यूटी पर लग गए और आई हुई जनता को कतारों में बिठाकर लंगर तकसीम किया गया और महामंत्र उच्चारण करने के बाद लंगर खाने की आज्ञा दी गई। इस तरफ के लोग कड़ाह (हलवा) खाने के शौकीन थे इसलिए यह ज़्यादा मात्रा में तैयार किया जाता था। बीस-बीस सेर सूजी के आठ-दस कड़ाह (पूर) तैयार होते थे और सबको खूब कड़ाह दिया जाता। हर एक प्रेमी अपनी-अपनी ड्यूटी दे रहा था और दाल फुल्के वग़ैरा पहुंचाये जा रहे थे। मुसलमान प्रेमी भी आए हुए थे। उन्हें भी भोजन खिलाया गया।

जब भोजन पा चुके तो आसपास इलाके के लोग एकदम उठे और जूतियों वाली जगह पर धावा बोल दिया और जूतियां उठाकर ले गए, कुछ तो बोरियों में जूते डालकर ले गए।

जब इसके बारे में सत्पुरुष को पता लगा तो आपने प्रेमियों को बुलाकर फरमायाः- प्रेमियों! आपको इस इंतज़ाम से मना किया था। अब इन लोगों की हालत को आपने देख लिया। अच्छा, अब ख़्याल रखो कि किसी किस्म की गिला-गुज़ारी किसी की तरफ से न हो और कोई शिकायत का कलमा (वचन) मुंह से न निकले। जिनके पास दो-दो जूते थे उन्होंने एक-एक जोड़ा उनको दे दिया जिनके जोड़े उठाये गए थे और बहुत से प्रेमियों को नंगे पांव वापिस जाना पड़ा। इलाका बहुत पथरीला और रास्ते खराब थे। बाज़ जगह कांटे भी थे, इसलिए कई प्रेमियों को बड़ी तकलीफ़ हुई। बाद में पता लगा कि जूतियां ले जाने वाले प्रेमियों में से शायद ही किसी को पूरा जोड़ा मिला।

जब सब प्रेमी आहिस्ता-आहिस्ता चले गए और पीछे बाबू जी, ठाकुर दीवान सिंह जी और बख़्शी मनी राम जी रह गए तो बाबू जी ने तमाम हिसाब-किताब निकाल कर सामने रख दिया। आप उस समय सत्संग शाला के बरामदे में विराजमान थे। आपने यह देखकर फरमायाः

''यह माया पीछा नहीं छोड़ती। बंद करने पर भी प्रेमी इस कदर श्रद्धा विश्वास प्रगट करते हैं। यह जगह इतनी खराब है कि यहां पहुँचना भी मुश्किल है। इस भूमि के लोगों का यह हाल है कि रास्ते भी बंद कर देते हैं। अब किसी दूसरी जगह का विचार करना चाहिये।'' प्रेमी नंद लाल जी ने रावलपिंडी के पास खन्ना वाली ज़मीन को बतलाया हुआ था। इसके बारे में पूछाः- ''तुम प्रेमियों की क्या राय है?''

बाबू जी ने अर्ज़ कीः- महाराज जी! जन्म-भूमि की महानता तो कम होती नहीं। यहां पर प्रेमी ज़रूर दर्शन करने आवेंगे, चाहे भंडारा करने के वास्ते कोई अन्य स्थान क्यों न बन जाये?

इस पर आपने फरमायाः- ''जगह बनने को तो बन सकती है मगर देश के हालात कुछ ऐसे बन रहे हैं, देखा जाये आगे क्या गुल खिलता है? रावलपिंडी चलकर विचार करना, जगह तो देख ही ली है।''

सम्मेलन में रावलपिंडी से प्रेमी लाला हरजस राय जी आये हुए थे। उन्होंने चरणों में बार-बार प्रार्थना कीः- आप तशरीफ़ लाकर उनके गृह को भी पवित्र करें और रावलपिंडी का प्रोग्राम बनावें।

भखड़ाल के कप्तान यूसुफ खां एक दिन श्री महाराज जी की सेवा में हाज़िर हुए। आप उस समय सत्संग हाल के बरामदा में बाबू जी के साथ बैठे हुए थे। कप्तान साहब मिलिट्री से थोड़ा अर्सा पहले ही पेंशन पर आए थे। उन्होंने निम्नलिखित प्रश्न आपसे पूछे:

कप्तान साहब:- बुत परस्ती के बारे में आपका क्या ख़्याल है?

श्री महाराज जी:- कप्तान साहब! दिन-रात ही जिस्म के बनाव श्रृंगार में लगे रहते हो या नहीं। क्या यह बुत परस्ती नहीं? अलबत्ता जिस हस्ती का बुत (मूर्ति) है अगर तू उसकी तालीम पर अमल करता जाता है तो वहदत परस्ती (ईश्वर परायणता) वर्ना सब बुत परस्ती है।

कप्तान साहब:- हज़रत तकबीर के बारे में आपका क्या ख़्याल है?

श्री महाराज जी:- कप्तान साहब, कुरान शरीफ़ में यह दिया हुआ है कि नहीं कि ख़्वाहिश और ग़जब (क्रोध) से मुबर्रा (मुक्त) होकर तकबीर पढ़।

कप्तान साहब:- नहीं।

श्री महाराज जी:- तो बताओ, यह क्या तकबीर हुई? तकबीर तो हज़रत इब्राहिम ने पढ़ी थी जिसने अपने लड़के के गले पर छुरी चलाई थी। वह ख़्वाहिश और ग़जब से मुबर्रा थे।

कप्तान साहब:- तनासख (पुनर्जन्म) के मुतालक आपका क्या फरमान है?

श्री महाराज जी:- कप्तान साहब! कुरान शरीफ़ में दिया हुआ है कि नहीं कि आकबत (प्रलय) के दिन रूहें उठेंगी और उनको उन्हें अहमाल (कर्म) के मुताबिक दोज़ख (नर्क) या बहिश्त (स्वर्ग) मिलेगा?

कप्तान साहब:- जी हां, दिया हुआ है।

श्री महाराज जी:- एक श़ख्स (व्यक्ति) है जिसके अहमाल बहुत अच्छे हैं मगर जिस्म उसका खराब है। लूला लंगड़ा है, काना है और कई नुक्स हैं। उसे बहिश्त मिलेगा या नहीं?

कप्तान साहब:- जी हां, मिलेगा।

श्री महाराज जी:- अब बताओ, किस जिस्म (शरीर) में मिलेगा?

अगर वही जिस्म मिलता है तो उसे क्या बहिश्त मिला? और अगर नया जिस्म मिलता है तो यही तनासख है।

दो टीन घी के बच गए थे। पड़ोस में एक लड़की की शादी थी। उसकी मां विधवा थी। आपने चुपके से दोनों टीन उसके हवाले कर दिए और फरमाया, ''आज यज्ञ सम्पूर्ण हुआ।''

ऐसे महान पुरुषों के अन्दर एक अजीब कशिश होती है जो हर जीव को, जो उनके नज़दीक आता है, अपनी तरफ खींचती है। आपने रावलपिंडी का प्रोग्राम बना लिया और 6 नवम्बर, 1946 को पैदल ही शुभ स्थान से मांकयाला स्टेशन के लिए रवाना हो पड़े। अलावा प्रेमियों के, शुभ स्थान निवासी भी कई साथ हो लिए और गांव की काफी औरतें और मर्द आपको काफी दूर तक छोड़ने के लिए आए। ऐसा प्रतीत होता था कि यह जनता जुदा होना चाहती ही नहीं थी, मजबूरन जुदा हो रही है।

दो घंटे के बाद आप स्टेशन पर पहुंचे और गाड़ी में सवार होकर रावलपिंडी पहुंचे। आगे लाला हरजस राय जी व अन्य प्रेमी स्टेशन पर लेने के लिए आए हुए थे। लाला हरजस राय जी अपनी कार भी लाए हुए थे। उसमें श्री महाराज जी को बिठाकर अपनी कोठी नजद सदर मार्किट ले गए। प्रेमी स्टेशन से पैदल या ताँगे द्वारा वहां पहुंचे और नमस्कार करके बैठ गए। थोड़ी देर बाद अर्ज़ की:- महाराज जी! सत्संग का समय क्या होना चाहिए?

महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमियों! यह सारा दिन, रात ग्यारह-बारह बजे तक तुम्हारी सेवा में ही हैं। तुम अपनी सहूलियत देखो। यह फाटक बन्द करके सोने वाले महात्मा नहीं कि अच्छी कोठी देखकर आराम करें। इनका आराम यह है कि तुम सुनकर बेहतर (अच्छे) बनो। इन्होंने ज़्यादा देर इधर नहीं ठहरना। जिस-जिस को पता देना है दे दो। अब जाओ, फिर शाम को आना।''

प्रेमी हरजस राय ने हाथ जोड़कर लंगर पाने की प्रार्थना की। कई प्रेमी प्रशाद पाकर आए थे लेकिन जो नहीं पाकर आए थे उन सबको वह अपने साथ दूसरी तरफ ले गए। बड़े प्रेम से सबके हाथ धुलाए और अपने परिवार की मदद से लंगर बड़े प्रेम से खिलाया गया। अमीराना ज़िंदगी थी। खूब ठाट-बाट था, मगर सेवादार इतने थे कि ब्यान नहीं हो सकता। बर्तन वग़ैरा खुद ही उठाए। किसी नौकर को नहीं उठाने दिए। लंगर पाकर सब प्रेमी अपने-अपने घरों को गए।

श्री महाराज जी ने भक्त जी से सब हालात पूछे। और जब भक्त जी ने निम्नलिखित सेवा का दृश्य ब्यान किया तो आप फरमाने लगे:- ''ईश्वर जिसको माया देता है अगर साथ ही ऐसी सत् बुद्धि भी देवे और देव परिवार भी हो तो स्वर्ग ही है। माया प्राप्त हो मगर बुद्धि न हो तो दुर्भाग्यशाली जीव है।''

इसके बाद आपने फरमाया:- ''शहर चलना है।'' इस वक्त लाला हरजस राय जी भी आ गए थे। उन्होंने अर्ज़ की:- हम अभी छोड़ आते हैं। झट उन्होंने कार निकाल ली और श्री महाराज जी को पंडित किशनचंद जी के मकान पर पहुंचा दिया। भक्त जी भी साथ गए।

आपने दो घंटे वहां व्यतीत किए, फिर तांगा लाया गया और श्री महाराज जी उसमें सवार होकर आसन पर पहुंचे। कोठी पर आपकी वापसी से पहले काफी प्रेमी पहुंच चुके थे। सबने नमस्कार किया और विचार शुरू हो गए।

शाम के साढ़े सात बजे सत्संग शुरू किया गया। पहले महामंत्र और मंगलाचरण प्रेमियों ने मिलकर उच्चारण किया, फिर वाणी पढ़ी गई। उसके बाद श्री महाराज जी ने अमृत वर्षा की। उसके बाद आरती और समता मंगल सब प्रेमियों ने उच्चारण किया और प्रशाद बांटा गया। आम प्रेमी तो चले गए मगर कुछ प्रेमी बैठे रहे और विचार करते रहे और अपनी शंकाएं निवारण करते रहे।

प्रेमी मलिक रणबीर देव जी चावला अब तबदील होकर झंग मघियाना चले गए थे। वह श्री महाराज जी की सेवा में मघियाना पधारने की प्रार्थना करते रहते थे और अब भी पत्र द्वारा प्रार्थना की थी। रावलपिंडी पहुंचने पर मलिक साहब को प्रोग्राम लिख दिया गया।

11 नवम्बर, 1946 को आख़िरी सत्संग था। इसमें आपने सादगी, सेवा के नियमों पर रोशनी डाली और माताओं को ख़ासतौर पर शिक्षा दी कि वह घर का काम-काज खुद अपने हाथों से किया करें। नौकरों पर ही निर्भर न रहें। अगर प्रेम से खुद रोटी पका कर सबके आगे रखोगी तो उसका ख़ास असर होता है और बच्चों पर भी इसका ख़ास असर पड़ता है। उनकी प्रेममई भावना बच्चों पर बड़ा असर करती है। जितना बेहतरी का ख़्याल उनका अपने बच्चों से व दीग़र परिवार से होता है, नौकरों का कभी ऐसा ख़्याल नहीं हो सकता। अगर नौकरों से यह सेवा करवाएंगी उनके ख़्यालात का वैसा ही असर पड़ेगा और फिर बेकार बैठने से उनकी अपनी विचारधारा विकारमई हो जावेगी। नुमायशी जीवन बढ़ेगा। अगर लक्ष्मी ज़्यादा है तो ग़रीब, यतीम, दुःखी जीवों की सेवा में खर्च करें। नौकरों से दूसरे काम करवाएं। जो देवियां अपने फ़रायज़ (कर्तव्य) को जानती हैं और उनका पालन करती हैं, धन्य उनका जीवन है। उनकी विचारधारा की पवित्रता पर सारे ख़ानदान की पवित्रता का अनहसार (निर्भर) है। ईश्वर ऐसे समय में सबको सुमति देवें, तब ही लोगों में शांति हो सकती है और सुख बना रह सकता है। ज़माने के हालात को देखते हुए पांच मुख्य नियम, सादगी, सेवा, सत्य, सत्संग और सत् सिमरण प्रगट हुए हैं। उनको जो भी सही तरीके से धारण करेगा वह अपनी कल्याण करके दूसरों की कल्याण का मौज़ुब (कारण) होगा। गुरु के शरीर की पूजा और आरती, धूप, दीप देने से कल्याण नहीं हो सकती जब-तक कि उनके कायम-करदा (किए गए) नियमों को धारण नहीं किया जाता। उनकी सेवा व उनकी आज्ञाओं का पालन करना ही है। जब आहार पवित्र, व्यापार पवित्र और संगत पवित्र होगी और जीवन मर्यादा का होगा तब ही उन्नति हो सकती है। खाना, पीना, देखना, सुनना जब-तक पवित्र नहीं होता मन कैसे शुद्ध हो सकता है? और अगर मन शुद्ध नहीं हो तो वह नाम सिमरण में कैसे लग सकता है और कैसे परम धाम की प्राप्ति हो सकती है? जब-तक इंद्रियों द्वारा भोगों की प्राप्ति में बुद्धि लगी हुई है सत् वस्तु की प्राप्ति नहीं हो सकती। गुरु शरणागत होकर सत् उपदेशों को ग्रहण करके उनके मनन निद्यासन से ही कल्याण हो सकती है। सीढ़ी पर चढ़ने से ही छत पर पहुंचा जा सकता है। छलांग लगाकर चढ़ने से गिर पड़ता है और कमर टूट जाती है। वैसे सत् लोक, अगम लोक, भंवरगुफा के ख़्याली नक्शे मन के अन्दर बनाने से कुछ प्राप्त नहीं हो सकता है यही युक्ति और सही कोशिश से ही ठिकाने पर पहुंच सकता है। दो दोहे इधर के, दो दोहे उधर के याद कर लिए। दो काफियां जबान ज़द (याद) कर लीं, यह जूठी पत्तलें चाटने से क्या बनता है? जब-तक अमली जीवन बनाकर कमाई न की जावे। सत्पुरुषों का आदर्श जीवन ही तपते हुए हृदयों को शांति देने वाला होता है। ज्ञान, ध्यान तो चिरकाल के बाद बनता है, पहले मिलकर बैठना सीखो। जो तास्सुब फैला हुआ है वह क्या रंग लाता है, यह समय बतलाएगा? अपने में ज़्यादा प्रेम भाव पैदा करो। ऊपर से काली रात आ रही है और इधर बीस आदमी और इक्कीस चूल्हे जो बना रखे हैं वह ही तरट्टी चौड़ (बरबादी) है। कैसे एकता आ सकती है? ईश्वर सबको सत्बुद्धि देवें।

इसके बाद काफी देर तक विचार चलते रहे। चूंकि आख़िरी दिन था, प्रेमी उठने का नाम ही न लेते थे और कुछ आपकी टांगों को दबाने लगे तो आपने फरमाया:

''इन लकड़ियों को ज़्यादा न दबाओ। आराम करो।'' तब आज्ञा पाकर प्रेमी घरों को गए और कई वहीं सो गए।

रात तीन बजे उठकर श्री महाराज जी रोज़ की तरह शमशान भूमि में, जो सदर की थी, चले गए और सूरज निकलने पर वहां से लौटे। आसन पर पहुंचने से पहले आपने भक्त जी से पूछा:

''प्रेमी, ठेकेदार हरजस राय वग़ैरा सेवा से तंग तो नहीं आ गए?''

भक्त जी ने अर्ज़ की:- ''नही, महाराज जी! सारा परिवार ही निर्मान भाव से संगत की सेवा कर रहा है। ख़ुद ही बर्तन रखते और उठाते हैं। हर एक से बार-बार पूछते हैं, 'किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं।' वैसे वहां किसी चीज़ की कमी तो नहीं है और इधर ज़रूरत ही नहीं जो उनको कहा जाए। मगर उनकी प्रेम भरी वाणी दिखा रही है कि किस कदर निर्मल बुद्धि है, यद्यपि खान-पान बच्चों का अमीराना है।'' इस पर सत्पुरुष ने फरमाया:

''प्रेमी! इनके वास्ते यह ही बड़ा है जो साधु-संतों की सेवा का भाव रखते हैं। इतनी माया तो अंधा कर देती है। इस वास्ते ज़्यादा समय इधर नहीं दिया गया। थोड़े में प्रेम बना रहता है। अब रात को टिकट लेने की सेवा इनसे न करवाना। तुम खुद ही टिकट ले लेना।''

अर्ज़ की गई:- ''महाराज जी! मुझे तो कोई एतराज नहीं लेकिन संगत कब ऐसा करने देगी।''

यह विचार करते हुए आसन पर पहुंचे। स्नान से फ़ारिग होकर बिस्तरा वग़ैरा बांधा गया। रात साढ़े सात बजे स्टेशन पर पहुंच गए। अभी गाड़ी में काफी देर थी। एक तरफ बड़ी दरी बिछाई गई। दर्शन अभिलाषी प्रेमी वहां पहुंच गए। आख़िर गाड़ी पेशावर से आ गई। लाला मूसा का एक टिकट सैकिंड क्लास लिया गया और एक थर्ड का। गाड़ी में बहुत भीड़ थी। महाराज जी को सैकिंड क्लास में बिठाया गया। भक्त जी सर्वेन्ट क्लास के कमरे में बैठे। लाला मूसा से गाड़ी बदली गई और झंग जाने वाली गाड़ी में सवार हो गए।

122. झंग मघियाना में एकांतवास

गाड़ी ग्यारह बजे शाह जीवना स्टेशन पर पहुंची। यह स्टेशन झंग से दो स्टेशन पहले था। वहां प्रेमी मलिक रणबीर देव चावला मिल गए। उन्होंने फौरन गाड़ी में दाखिल होकर गुरु चरणों में प्रणाम किया। श्री महाराज जी ने पूछा:- ''प्रेमी! किधर?''

प्रेमी चावला ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! यह इलाका अपना ही है। काम करवाने के ख़ातिर आना पड़ता है। आपके आने की भी उम्मीद थी। इसलिए भी दो स्टेशन आगे चला आया था।'' यह बातें हो रही थी कि झंग मघियाना स्टेशन आ गया। प्रेमी चावला जी का क्वार्टर स्टेशन के करीब ही था। वहां जाकर स्नान किया गया और चाय लाई गई, फिर लंगर पा चुकने के बाद श्री महाराज जी फरमाने लगे:

''प्रेमी, अब एकांत जगह का प्रबन्ध करो। यहां घर है और बच्चों का शोरगुल है।''

चावला जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! जल्दी जगह देख लेते हैं।'' दूसरे रोज़ शाम के समय दरियाये चुनाव यानी चंदर भाग्य के पार दूसरी जगह देखने के बाद विचार किया गया। चावला जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! जगह देख तो आए हैं मगर रात को सत्संग के बाद विचार किया जाएगा।''

प्रेमी रणबीर देव जी ने मंडी में बहुत सारे सज्जनों को सत्संग में शामिल होकर सत्पुरुष के सत् उपदेश सुनने की प्रार्थना की। रात को आठ बजे से पहले ही काफी संगत जमा हो गई। पूरे आठ बजे सत्संग, महामंत्र व मंगलाचरण से शुरू हुआ फिर वाणी पढ़ी गई। इसके बाद श्री महाराज जी ने जो सत् उपदेश दिया उसका ख़ुलासा निम्नलिखित है:

''प्रेमियों! विचार करना है इस मानुष चोले को धारण करने का मकसद (उद्देश्य) क्या है? देखा जाए तो आम जीवों ने खाना, पीना, सोना, ऐश व आराम ही इसका मकसद समझ रखा है, लेकिन यह तो पशु-पंछी इत्यादि भी कर रहे हैं फिर मानुष और पशु पंछियों में फ़र्क क्या है? मानुष को प्रभु ने बुद्धि दी है। जब जीव ने सोचा तो उसे पता लगा कि भूख तो ख़त्म नहीं होती। सुबह खाया शाम को फिर भूख लगी। सत्पुरुष बतलाते हैं कि जीव खा-खाकर भूखा है और ला-ला के नंगा है ज्यों-ज्यों भोग एकत्र करके उन्हें भोगता है तृष्णा बढ़ती जाती है और यह लाचार होता है। उन्होंने सोचा कि तृप्ति तो भोग पदार्थों में नहीं। शरीर बनने बिगड़ने वाली चीज़ है। उन्होंने खोज करके बतलाया कि इसके अन्दर जो जीवन शक्ति है वह पूर्ण है, उसको प्राप्त करने से तृप्ति होती है। उसको प्राप्त करने के लिए समय को देखते हुए सादगी का नियम कायम किया गया। यानि आहार, व्यौहार की शुद्धता पर ज़ोर दिया और बतलाया कि मांस, मदिरा, इंसान की ख़ुराक नहीं, यह तो बुद्धि को भ्रष्ट करने वाले हैं। धरंगे (मुर्दा जानवर) खाने वाले तो शेर, चीते, कुत्ते, बिल्ली हैं। इनके दांत लम्बे बनाए गए हैं। मानुष के ऐसे दांत नहीं। जैसे शेर, चीते झुककर शिकार करते हैं ऐसे ही ऐसी ख़ुराक खाने वालों का स्वभाव हो जाता है। वह भी छल-कपट करने लग जाते हैं। मांस खाने वालों को शराब की आदत भी पड़ जाती है। इनके इस्तेमाल से बुद्धि खोटी बनती जाती है। कपट-छल करने से माया मिल भी जाती है, मगर ऐसी एकत्र की हुई माया दु:खदाई होती है। यह अपने रंग दिखलाती है और जाते समय तो अति दु:खी करके जाती है। जब-तक आहार निर्मल और व्यौहार शुद्ध नहीं मन कैसे सत् की तरफ लग सकता है? और जीव अशांत ही इस संसार से जाता है। इसलिए ज़ोर दिया कि अगर शांति चाहते हो तो आहार, व्यौहार और संगत को शुद्ध करो। सेवा करो, ईश्वर परायणता को धारण करके नाम सिमरण में लगो और कल्याण को प्राप्त करो। जब अपना कल्याण करोगे दूसरों के भी कल्याण का मौज़ुब (साधन) बनोगे। ईश्वर सबको सत् बुद्धि देवें।''

इन्हीं विचारों के बाद सत्संग सम्पूर्ण हुआ। इसके बाद आरती और समता मंगल उच्चारण करने के बाद प्रशाद बांटा गया। इसके बाद एक बुज़ुर्ग प्रेमी बोले:- ''महाराज जी! ऐसा सत्संग तो

आज तक किसी से नहीं सुना। बड़े धन्य भाग्य हैं कि इस धरती पर आपके चरण पड़े हैं। पहले जब यहां आकर बैठे थे तो आपके साधारण लिबास और शारीरिक कमज़ोरी को देखकर विचार हुआ था कि यह कैसे महात्मा हैं? मगर आपने तो कान खोल दिए हैं।''

इस पर प्रेमी रणबीर देव जी बोल उठे कि श्री महाराज जी के वास्ते एकांत जगह तलाश की जा रही है। काफी दिन इधर निवास करेंगे।

इतने में एक प्रेमी बोल उठे:- ''महाराज जी! भोजन कल हमारे यहां खाएं।''

महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! इनका भोजन, खाना वग़ैरा खत्म हो गया है। सिर्फ़ एक वक्त चाय लेते हैं।'' प्रेमी कहने लगा:- जो कुछ भी आप लेते हैं वह ही कृपा करें।

महाराज जी ने फरमाया:- ''चाय के वास्ते मजबूर न करें, पहले अपने आप को देख। तेरी चाय तब ही पिएंगे जब तू फ़कीरों जैसा बन जाएगा या फ़कीरों को अपने जैसा बना लेगा। चाय इस तरह नहीं पिएंगे। अच्छी तरह विचार करके फिर कहना।''

इस प्रकार श्री महाराज जी के मुखारबिंद से ऐसे निकले हुए शब्दों ने प्रेमी पर असर किया। प्रेमी कहने लगा:- महाराज जी! आपकी कृपा होनी चाहिए। चाय तो ज़रूर पिलाऊंगा, आपकी आशीर्वाद होनी चाहिए तब ही बच्चा निर्मल हो सकता है। दयालु भगवान कृपा करें। आपके फरमाए हुए वचन मेरी रग-रग में धंस गए हैं। सेवक ज़रूरी इन चीज़ों को छोड़कर ही चाय पिलाएगा। बैठी हुई संगत हैरान हो रही थी कि यह प्रेमी क्या कह रहा है? जो दिन-रात शराब, जुए, मांस वग़ैरा खान-पान में मुस्तग़रक (डूबा) रहता है, कब छोड़ सकता है? ख़ैर, सब प्रेमी अपने दिलों में अच्छे विचार लेकर विदा हुए।

इसके बाद प्रेमी रणबीर देव ने श्री मुकन्द लाल की ज़िन्दगी पर रोशनी डाली।

''महाराज जी, यह बड़ा अय्याश और जुआरी है। कोयटा, बिलोचिस्तान, अमृतसर, दिल्ली तक जुआ खेल आता है। जुए की कमाई से बड़ा भारी मकान खड़ा कर लिया है। आपकी बड़ी कृपा इस पर हुई है, तब ही यह सीधी बातें करने लगा है।''

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''ऐसे लोग जल्दी सीधे होकर संगत की सेवा करने वाले बन जाया करते हैं। शायद प्रभु ने इसी के वास्ते भेजा हो।''

''वह बुज़ुर्ग प्रेमी जो बोल रहे थे, उनका क्या नाम है?''

प्रेमी रणबीर देव जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! लाला सावन मल इनका नाम है। वह मुकन्द लाल के हिस्सेदार हैं। इकट्ठे ही काम करते हैं।''

महाराज जी ने फरमाया:- ''अच्छा, अब जगह का क्या करना है?''

श्री रणबीर देव कहने लगे:- ''जल्दी विचार करेंगे। अभी एक-दो दिन इधर ही ठहरें, कल हमारे पिताजी आ जावेंगे फिर अच्छी तरह सोचेंगे। आज मैने सब रिश्तेदारों को लिख दिया है और संदेशा भी भेज दिया है। बाकी इस मंडी के भी बहुत अच्छे-अच्छे लोग हैं, अभी सबको पता नहीं लगा।''

महाराज जी फरमाने लगेः– ''प्रेमी! रूखे विचार कौन सुनता है? आजकल जो खाने-पीने से न रोके उसके पीछे दौड़ने वाले लोग हैं। अच्छा देखो, जिसके भाग्य में होगा आ जाएगा। ज़्यादा ढिंढोरा न करना। अब आराम करो।''

रात के करीबन 12 बज चुके थे। आराम किया गया। श्री महाराज जी सुबह चार बजे जंगल की तरफ चल दिए। भक्त जी काफी दूर तक साथ जाकर छोड़ने गए और फिर लौटकर आसन वाली जगह पर आ गए। जब अच्छी रोशनी हो गई तो भक्त जी लेने के वास्ते आगे गए। उधर से श्री महाराज जी आ रहे थे। भक्त जी चरणों में नमस्कार करके पीछे-पीछे हो लिए।

थोड़ी दूर चले थे, फरमाने लगेः– ''प्रेमी! अगर इस जगह तम्बू लगा लिया जावे तो कोई रुकावट तो नहीं।'' वह जगह रेलवे स्टेशन के पास क्वार्टरों से दो फर्लांग के फासले पर थी। मलिक रणबीर देव जी कहने लगेः– ''महाराज जी! रुकावट बिल्कुल नहीं है।'' विचार करते-करते क्वार्टर में पहुंचे। श्री महाराज जी ने स्नान किया फिर चाय लाई गई। फिर महाराज जी की आज्ञानुसार प्रेमियों को पत्र लिखे गए।

करीबन दो बजे के करीब श्री मुकन्द लाल जी ने आकर नमस्कार की और जगह के बारे में विचार होने लगा। श्री महाराज जी ने साधारण तौर पर ज़िक्र किया तो मुकन्द लाल ने कहा:– ''महाराज जी! पानी वग़ैरा सबका बन्दोबस्त हो जाएगा। आप दूर किसी जगह पर जाने की न सोचें।'' इतने मे ड्यूटी से प्रेमी रणबीर देव जी आ गए। श्री मुकन्द लाल जी ने तम्बू, पंप वग़ैरा की सेवा के वास्ते कहा, ''शाम तक यह सब काम पूरा हो जाएगा।''

श्री महाराज जी ने बहुत मना किया कि प्रेमी तुम तकलीफ़ न करो। प्रेमी कहने लगा:– ''महाराज जी! चाय भी आप सेवक की नहीं पीते, अन्न-पान खाते नहीं और यह सेवा भी नहीं करने देते। महाराज जी, आप आए तो मेरे वास्ते हो और सेवा कोई और करे।''

महाराज जी सब सुनते रहे। जब नमस्कार करके वापिस प्रेमी गया तो भक्त जी को पीछे भेजा कि कह आवे कि तुमको इसलिए महाराज जी सेवा का मौका नहीं देते कि तुमने सफाई पेश नहीं की।

भक्त जी ने इसी तरह जाकर कह दिया। मुकन्द लाल जी कहने लगेः– ''आप मेरी तरफ से हां भर आवें। मैने श्री महाराज जी को गुरु धारण कर लिया है। मांस, शराब का त्याग मैने दिल से उसी दिन से कर दिया है। मगर अब एक बीमारी जुए वाली के बारे में सोच रहा हूं। सिगरेट भी पीता हूं। तुम मेरी सिफ़ारिश करो, महाराज जी छाती से लगा लें बच्चे को। मैं बच्चा हूं। तू मेरा भाई है।'' बड़े प्यार भरे शब्दों से सबके सब वचन कहे।

भक्त जी ने वापिस आकर चरणों में अर्ज़ की:– ''महाराज जी! वह बड़े प्रेम से प्रार्थना कर रहा है कि महाराज जी को चाय ज़रूर पिलानी है।''

सब बुरी आदतें छोड़कर रात सत्संग के वक्त से पहले ही प्रेमी आ गए। सत्संग होने तक श्री महाराज जी आंखें बन्द किए अंतर ध्यान में मग्न रहे। अभी पांच मिनट बाकी थे कि श्री

महाराज जी ने आंखें खोलते हुए सत्संग करने का इशारा किया। महामंत्र व मंगलाचरण उच्चारण करने बाद वाणी पढ़ी गई। इसके बाद निम्नलिखित सत् उपदेश अमृत वर्षा आपने की।

''जीव जब से शरीर रूपी संसार को धारण करके आया है तबसे ही सुख की तलाश में है। मानुष, पशु, जंगम, अस्थावर, चराचर भूत सब शांति के वास्ते दौड़ रहे हैं। मानुष को संसार में आने की यह श्रेष्ठता अधिक मिली है कि उसकी बुद्धि जागृत है और ज़्यादा सोच विचार और छानबीन वाली है। जिस जीव की ज़्यादा चतुर बुद्धि है वह ऐसे विचार और कर्तव्य करता है जो उसे बन्धन दर बन्धन में फंसाते जाते हैं। यह चोला मिला था छूटने के वास्ते मगर यह संसार को देखकर ज़्यादा मोहित होता जा रहा है। खाने-पीने, सोने-जागने, देखने-सुनने की चेष्टा हर एक जीव को बचपन से ही शुरू हो जाती है। जिस-जिस माहौल में यह जीव पलता है वैसा ही चलन यह इख़तियार (धारण) कर लेता है। व्योपारियों के घर में व्योपारियों वाला वातावरण होगा और उस घर में वैसा ही स्वभाव बनेगा। जिस घर में जैसा जीवन होगा वैसी ही शिक्षा बच्चों को मिलेगी। दूसरे शब्दों में मां-बाप के जीवन का असर बच्चों पर ही पड़ता है। जैसे-जैसे वो कर्तव्य करते हैं वैसे ही उनकी औलाद भी कर्तव्य करती है और जैसी-जैसी जिसकी संगत होगी वैसा ही उसका रहन-सहन होगा। चोरों की संगत से चोरी की आदत पड़ेगी। जुआ खेलने वालों की संगत से जुए की आदत पड़ेगी इत्यादि। जैसे बाप-दादा, भाई-बन्धुओं को करते देखा वैसा उनके सम्पर्क में आने वाले जीव भी बनने लग जाते हैं। कोई जीव विचार नहीं करता कि यह जीव आया किधर से है और इसने किधर जाना है। कोई निर्मल बुद्धि वाला ही होगा जो ऐसा विचार करता है। जैसे कबीर, नानक, बुद्ध, राम, कृष्ण जैसे अवतारी जीव जब संसार में आते हैं तब उनके अमली जीवन को देखकर पता चलता है कि संसारी जीवन से परे कोई जीवन है।

लाल दास गोविन्द भज, आलस मनूं त्याग।
रच्छ पराया कारज अपना, बरत लियो दिन चार॥

''यह शरीर खाने-पीने, विषय, विकार के वास्ते नहीं मिला। चार रोज़ा ज़िंदगी अच्छे कर्तव्य के वास्ते मिली है ताकि इन्हें धारण करके कल्याण कर ले। ईश्वर की याद, सेवा, सत्संग, परोपकार में इस खलड़े (शरीर) को लगाने से ही मन ठंडा होता है। वर्ना जैसे पशु आए वैसे ही इन्सान भी आया। पैदा होने से मरने तक सोच नहीं आती कि संसार में आने का सार क्या है? जिन्होंने इस सार को समझने की कोशिश की उसे कहते हैं यह पागल है, भक्त बन गया है। अपने साथ मिलाकर उसे अपना जैसा कर लेते हैं। बड़ा भाग्यशाली वह जीव है जो सही सोच करके संसार से मुंह मोड़ लेता है, मन बुद्धि को निर्मल करने के यत्न शुद्ध कर देता है। यहां गृहस्थी, विरक्ती का कोई सवाल नहीं। जीव ख़्वाहे (चाहे) गृहस्थी है या विरक्ती, वह जब पवित्र कर्म करते हुए प्रभु के सिमरण में लग जाता है, कल्याण को प्राप्त कर लेता है। आम संसारी जीव तो यह ही विचार लिए हुए दौड़ लगा रहे हैं कि अभी खाने-पीने का वक्त है, जब बूढ़े होंगे तब भजन कर लेंगे। लेकिन जब बुढ़ापा आता है तृष्णा बढ़ जाती है, इन्द्रियां शिथिल हो जाती हैं। यह शरीर कमज़ोर हो जाता है और

कांपने लग जाता है। उस वक्त कुछ नहीं बनता। प्रेमियों, धर्म का मार्ग बड़ा गहन है। इसे बहुत समझने की ज़रूरत है। हिन्दुओं ने तो यह धर्म माना हुआ है कि हमारे बेटे, पोते हमारे बाद हमारी कल्याण या गति कर देंगे। आचार्यों से पिंड भरवाकर, ब्राह्मणों को खीर वग़ैरा खिलाकर, दक्षिणा देकर ख़ुलासी करवा देंगे। इनको और कोई कर्म करने की ज़रूरत नहीं। ऐसे जीव अंधविश्वासी, इस भरोसे में रहने वाले अंधकार में हैं। अगर अपनी ज़िन्दगी में कल्याण नहीं की तो कोई दूसरा इसका कल्याण नहीं करवा सकता। ऐसे जीव इस अंधकार में सही कर्तव्य धारण नहीं कर सकते बल्कि सारी उम्र धन, दौलत इकट्ठा करने में लगे रहते हैं। शादियां करने और मकान बनाने को ही बड़ा कर्तव्य समझते हैं। कमाई करके इसे दीन-दुखियों, यतीम, ग़रीबों की सेवा में लगाने वाला ही बुद्धिमान है। अंग्रेज या दूसरे मुल्कों वाले भले ही ईश्वर वाले मसले को नहीं जानते मगर उनका व्यौहार कितना शुद्ध है, जैसी चीज़ बतलाते हैं वैसी ही देते हैं। ऐसा नहीं जैसा कि यहां है कि दिखाया कुछ, भेजा कुछ। बग़ैर मिलावट के शुद्ध कोई चीज़ मिल ही नहीं सकती। खोटी चीज़ को खरी बतलाकर बेचना यह कहां का धर्म है। देश सेवा का बड़ा नारा लगाते हो, मगर इन विकारों को दूर करने का यत्न नहीं करते हो। अपवित्र व्यौहार कभी आपस में प्रेम भाव पैदा नहीं होने देता। ख़ुदगर्ज़ी बढ़ जाती है, जो विनाश अशांति का कारण है। धर्म तो यह है कि जीवन बड़ा पवित्र हो जाये, व्यौहार पवित्र हो जाये। दीन-दुःखी जीवों की सेवा की धारणा धारण कर ली जावे। आपस में प्रेममई बन जायें। हर एक जीव को ईश्वर रूप या अपनी आत्मा ही देखा जाये। ऐसा न होने के कारण आए दिन तास्सुब बढ़ता ही रहता है। यह सब ख़ुदग़र्जी के कारण है। यह ख़ुदग़र्जी क्या रंग लाती है, यह आने वाले समय में पता लगेगा? तुम्हारा आपस में व्यवहार न हुआ तब दूसरे लोग लाभ उठायेंगे। इसलिए सही धर्म के रूप को समझो और उसे धारण करो।

''धर्म की धारणा ही ऐसी है जिस करके ख़ुलासी (मुक्ति) इन विकारों से होती है। ऐसी धारणा को ही धर्म का रूप जानें। पवित्र खाना, मीठा बोलना, सादा पहनना, सत् बोलना, निष्काम सेवा, सत्संग, सिमरण दो घड़ी करना, यह शुभ गुण ही धर्म का रूप हैं और इंसान से देवता बनाने वाले हैं। ईश्वर सबको सुमति देवें।''

महाराज जी के इस उपदेश के बाद आरती व समता मंगल उच्चारण किये गये। प्रशाद बांटा गया। उसके बाद श्री महाराज जी ने फरमायाः- ''किसी प्रेमी का कोई विचार हो तो करे।''

एक प्रेमी ने विचार किया, कि महाराज जी! आपके विचार सुनने के बाद तो विचार करने की आवश्यकता रहती नहीं जो बोला जाये। हमारे हिन्दुओं के कितने ही धर्म हैं, कोई कुछ कहता है, तो कोई कुछ। समझ नहीं आती कि किसकी बात को मान कर चलें।

महाराज जी ने फरमाया :

जीव दया और आतम पूजा। तिस समान धर्म नहीं दूजा।

''प्रेमी, सोच के चलो तो झट फैसला हो जाता है। हर एक जीव मात्र से प्रेम करना, किसी का बुरा न सोचना, अपनी आत्मा सबमें जानना और उसकी रक्षा करनी ही बड़ा और सत्य धर्म है।

टल्ली बजाना, सूत्र लपेटना, पानी चढ़ाना धर्म नहीं। ऊँचे-ऊँचे राग गाना यह धर्म नहीं। आत्मा और जीव के भेद को समझने वाले और समझाने वाले ही धर्म मार्ग को जानते आए हैं। जो सब जीवों में अपनी आत्मा को जानकर हर एक जीव की सेवा करने वाला है, वही धर्म के रूप को जानने वाला है। तुमने कभी ऐसी खोज की है? इस तरह सोचने की कोशिश करोगे तो धर्म का रास्ता अपने आप मिल जायेगा।''

यह विचार करने के बाद श्री महाराज जी ने प्रेमी मुकन्द लाल से पूछा:- ''तुमने क्या समझा है?''

प्रेमी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! हमें तो कल पहली दफ़ा और आज दूसरे दिन सत्संग में आने का मौका मिला है। आप मेरे वास्ते ही शहर झंग में आए हैं। मांस, शराब आज से सेवन नहीं करूंगा और दूसरे दोस्तों को भी आज जवाब दे आया हूं। आप बच्चा जानकर सेवक पर कृपा करें।''

श्री महाराज जी फरमाने लगे:

''प्रेमी! अभी इस जगह ही हैं। चाय पिलाने वाले जब बन जाओगे तब देखी जावेगी।''

सब संगत बहुत खुश हुई। श्री सावन मल जी बोल उठे:

''मुकन्द लाल जी, सोचकर इस जगह वायदा करना। यह न हो कि पीछे हानि हो। सन्तों के दरबार में बैठकर जो प्रण किया जाये उस पर न चलोगे तो नुकसान में रहोगे।'' इस तरह विचार करने के बाद प्रेमी चले गए।

प्रेमियों के चले जाने के बाद प्रेमी रणवीर देव का गुरुदेव से विचार चलता रहा। रात के ग्यारह बजे आराम की आज्ञा हुई। तीसरे रोज़ जब बाहर से वापिस आए, श्री महाराज जी स्नान करने बैठे ही थे कि प्रेमी मुकन्द लाल जी तम्बू वग़ैरह लेकर आ गए और प्रणाम करके कहने लगे:- महाराज जी! तम्बू किस जगह लगना है? उन्हें जगह बता दी गई और दो-तीन घंटे में तम्बू और नल वग़ैरा लग गए। पानी चालू हो गया। आसन, बिस्तर वग़ैरा उठाकर ले गए। रात में ही सत्संग होने की सबको सूचना दी गई।

मलिक रणवीर देव जी के पिता जी गांव से आ गए, और प्रेमी भी दर्शनों के लिए आने लगे। प्रेमी मलिक रणवीर देव जी थटा माला गांव के रहने वाले थे, जो झंग से सात-आठ मील के फासले पर था। रेलवे मुलाज़िम होने के कारण स्टेशन पर उन्हें क्वार्टर मिला हुआ था। सत्पुरुष के चरणों में आने के कारण उनका आचरण बहुत सुधर गया था।

इस दौरान सेठ तारा चन्द जी लाहौर से, बाबू अमोलक राय जी काला गुजरां से और मलिक भवानी दास जी रावलपिंडी से दर्शनों के लिए चरणों में हाज़िर हुए।

एक दिन सत्संग में आपने तम्बाकू के नुकसानात पर खूब रोशनी डाली और भंग, चरस के इस्तेमाल के बारे में भी फरमाया कि बुद्धि को भ्रष्ट करने वाले यह नशे हैं और सेहत भी खराब करते हैं, और यह भी फरमाया कि बेकार ही शिवजी को बदनाम किया जाता है। कौन उनके साथ

रहकर देखता रहा है कि शिवजी भंग और चरस पीते थे। वह तो नित नाम ख़ुमारी में मस्त रहते थे। आजकल चंडू, गांजा, भंग पीकर बदमस्त रहने वाले अपनी तरट्टी चौड़ (सत्यानाश) कर रहे हैं और कई साधारण जीवों की बुद्धि भ्रष्ट करते हैं। ऐसे गुरु जो शिष्यों को नशे की आदत डालने वाले हैं, उनके नज़दीक तक नहीं जाना चाहिए। ऐसे संतों में कोई सिद्धांत नहीं होता और न ही समाधि उन्हें लग सकती है। नशे पीने वालों की बुद्धि गफ़लत में चली जाती है। उसने जप-तप क्या करना है? जप-तप तो बड़ी सूक्ष्म बुद्धि वाले ही कर सकते हैं। जो इन नशों को पीकर कहते हैं कि सुरति लग जाती है, यह सरासर धोखा है। पहले इन खोटे स्वभावों से अपने आपको साफ करो। बिल्कुल साधारण खाना, पीना, पहनना जब हो जाएगा तब जाकर देवताओं वाले स्वभाव बन सकते हैं। जिस ख़ुराक और जिस नशे से शरीर को कष्ट हो, मन विकारमई हो जाये और बुद्धि पर पर्दा पड़ जाये, वह कब खुशी व सुख-शांति दे सकते हैं?

इन विचारों के बाद आरती हुई और समता मंगल उच्चारण किया गया। प्रेमी मुकन्द लाल जी ने सिगरेट की डिब्बी जेब से निकाल कर माचिस के साथ बाहर फैंक दी।

श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''अभी तक यह बला तुमने चिमटा रखी थी।''

प्रेमी मुकन्द लाल जी कहने लगे:- ''आज से सब कुछ छूट गया है। अब हम पर कृपा करें। हम सबका सुधार करने के लिए ही आप झंग में पधारे हैं।'' श्री महाराज जी ने फरमाया:

''अब जाने का समय हो चुका है, फिर समय आने पर देखा जायेगा। फ़कीरों के नज़दीक सोच समझ कर आना चाहिए। इनमें तुम लोगों ने क्या देखा है?''

प्रेमी लाल चन्द जी कहने लगे:- ''महाराज जी! आपके पास आकर बैठने और विचार सुनने से मन को एक अजीब सी शांति मिलती है, और जो उपदेश आप देते हैं वह देखा जा रहा है कि आपके जीवन में ढले हुए हैं। इस वास्ते आपका हर वचन हमारे दिल को खेंचता है।'' श्री महाराज जी ने एक और प्रेमी ने पूछा:- ''तुम्हारा नाम क्या है?''

उसने राधा किशन बताया।

फिर फरमाया:- ''अच्छा और कोई विचार करो।''

प्रेमी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! आप सत्य बोलने पर बड़ा ज़ोर देते हैं। हम तुच्छ बुद्धि इस कदर संसार में ग्रस्त हैं कि बग़ैर झूठ के कोई मानता ही नहीं। इस समय कंट्रोल का ज़माना है। बीस बोरी अंदर चीज़ पड़ी है। अफ़सर के आने पर उसे 10 बोरी बताई जाती है। ग्राहक को या अफ़सर सबसे दांव खेलना पड़ता है। सच बोलते हैं तो गिरफ़्तार होने का डर है। यद्यपि जानते हैं कि झूठ पाप है, मगर फिर भी बोलना पड़ता है, क्योंकि झूठ बोलने से ही काम चलता दिखाई देता है।''

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! यह सब मनघड़ंत बातें है। लाल जी, सारा दिन दुकान पर काम करने के बाद शाम को ज़रा एकांत में बैठकर यह विचार करें कि फलां आदमी को चालीस सेर के बजाय 36 सेर चीज़ दी गई। ऐसा क्यों हुआ, और मुझे ऐसा करने से क्या लाभ हुआ? इस

तरह जब बार-बार विचार करोगे मन, बुद्धि सच्चाई की तरफ रागि़ब होंगे। जब-तक ऐसा सोचोगे नहीं और मन के कहने पर लगे रहोगे और देखा-देखी चलते रहोगे, कभी सुधार नहीं हो सकेगा।''

एक और प्रेमी ने कहा:- राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ देश सुधार में बड़ा हिस्सा ले रहा है।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! उनका एकत्र होना मुसलमानों के लिए भय का कारण हो रहा है। आगे चलकर देखना यह क्या रंग लाता है? यह तास्सुब (धर्मान्धता) जो दिन ब दिन फैल रहा है, यह भारी तूफान लायेगा। उधर मुसलमानों से वैर भाव, इधर देश भक्त गांधी, नेहरू जो देश के वास्ते जान की बाज़ी लगाये बैठे हैं उनको गालियां दे रहे हैं और गद्दार समझ रहे हैं, यह तुम्हारी देश सेवा क्या है? बच्चू, अभी कुछ सीखो और समझो। देश सेवा करने वाले प्रेमी, लाल जी, कुछ और किस्म के होते हैं। जहां थोड़ा सुधार कर रहे हैं वहां बिगाड़ ज़्यादा पैदा हो रहा है। इसका नतीजा आप ही देख लेना। देश सुधार का यह मुकम्मल इलाज नहीं है। प्रेमी, हर एक जीव से प्रेम करना सीखें। इतनी विशाल बुद्धि बनाओ, सब जगत को अपना बना लो। शिवाजी वगै़रा जिनके राग गाते हो, उनके पीछे सत्पुरुषों का हाथ था और वह ज़माना भी और था। अब नफ़रत से काम नहीं बनेगा। इतना हाज़मा बनाओ कि सबको हज़म कर जाओ यानी सब तुम्हारे हम-ख़्याल बन जावें। राम राज्य बनाना है तो राम जैसे बनो। मन, वचन, कर्म से हर एक की सेवा करो। ज़माना खुद ही सबक देगा। यह शूं-शां थोड़े ही दिन हुआ करती है।'' इन विचारों में काफी रात गुज़र गई। प्रेमी नमस्कार करके विदा हुए। अभी दो-तीन दिन का प्रोग्राम बाकी था कि प्रेमी साईंदास जी सुखू की मंडी से पधारे और श्री गुरु चरणों में सुखू की मंडी पधारने की प्रार्थना की। आपने रात के सत्संग में फरमाया:

''फ़कीर कुछ देने के वास्ते आये हैं। लेने वालों में से नहीं है। मगर झंग मघियाना वालों के भाग (भाग्य), फिर इस तरफ आना मुश्किल से ही बन सकेगा। अच्छा, जिन्होंने कुछ समझा है आपस में प्रेम भाव बढ़ाने की कोशिश करें और मिलकर सत्संग का नियम बनायें और जो विचार पूछने की ज़रूरत पड़े, पूछ सकते हैं।

दम दमे में दम नहीं, अब खैर मांगो जान की।
बस जफर अब हो चुकी, यह तेग हिन्दुस्तान की॥

''हवा ही कुछ ऐसी चल रही है। वक्त के परिवर्तन का कोई पता नहीं, काल चक्कर क्या रंग लाता है? धर्म का मार्ग ही है जो खौफ़ के समय कुछ धीरज बनाये रखा करता है। ईश्वर तुम सबको सत् विश्वास बख़्शें। सारी उम्र फ़कीर एक जगह पर नहीं बैठ सकते। इस तरह ईश्वर आज्ञा से आना-जाना बना रहता है। मिलना, बिछुड़ना लगा रहता है। इधर से हर समय आशीर्वाद अंग-संग जानो।'' दोहे पढ़े गए और आरती के बाद प्रशाद बांटा गया।

जब संगत सत्संग की समाप्ति पर चली गई तो आपने प्रेमियों से फरमाया:- ''इस जगह का मौसम अजीब सा है। रात को सख़्त सर्दी और दिन को गर्मी।

प्रेमी कहने लगे:- ''महाराज जी! हम को कमरों में रात को रजाई ओढ़ कर भी सर्दी लगती है, आप तो एक लोई और तम्बू में समय गुज़ार रहे हैं।''

महाराज जी ने फरमाया:- प्रेमी! कई सर्दियां-गर्मियां इसी तरह गुज़र गई हैं। प्रेमी टांगें दबा रहे थे। इस पर फरमाया:- "अब इन लकड़ियों को ज़्यादा न दबाओ। जाओ, आराम करो।"
सब प्रेमियों को मुश्किल से विदा किया गया। लेकिन प्रेमी मुकन्द लाल जी सब प्रेमियों के चले जाने के बाद भी बैठे रहे और हाथ जोड़कर प्रार्थना की:- बच्चे को सेवा बख़्शी जाये। श्री महाराज जी इंकार करते रहे। जब उसने बहुत ज़ोर दिया तो आपने फरमाया:

"जो तेरी श्रद्धा हो बाबू अमोलक राम को भेज दो।"

प्रेमी मुकन्द लाल ने कई सौ रुपये निकाल कर चरणों में रख दिये। मगर श्री महाराज जी ने फिर फरमाया:- तुम खुद ही उनको भेज दो। प्रेमी मुकन्द लाल प्रणाम करके चला गया। श्री महाराज जी ने उसके जाने के बाद फरमाया:

"क्या तुमने उसे कोई सबक पढ़ाया है?" भक्त जी ने अर्ज़ की:- "जी नहीं।"

123. सुखू की मंडी में कुछ दिन निवास

29 नवम्बर, 1946 को सुबह तम्बू वग़ैरा उखाड़े गए और श्री महाराज जी मलिक रणवीर देव जी के क्वार्टर में आसन पर, जो वहां लाया गया था, पधारे। स्नान करने और चाय पीने के बाद तैयार हो गए। प्रेमी मुकन्द लाल ने कार का इंतज़ाम कर रखा था। सब प्रेमी विदा करने आए। श्री महाराज जी ने सब प्रेमियों को जाने की आज्ञा दी। श्री रणवीर देव जी, साईंदास और मुकन्द लाल जी कार में लायलपुर तक साथ आए। वहां रेल में बिठाकर नमस्कार करके वापिस गये।

सुखू की मंडी पहुंचकर कस्बे के बाहर एक बंद पड़े कारखाने में एक कमरे में ही श्री महाराज जी का आसन लगाया गया। प्रेमी साईंदास ने सत्संग का समय नियत करवाकर सुखू के निवासियों को सत्संग की सूचना दे दी। सत्संग के समय पर काफी संगत आई, मगर मर्दों की तुलना में मातायें बहुत ज़्यादा थीं। सत्संग महामंत्र, मगंलाचरण उच्चारण करने से शुरू किया गया, फिर वाणी पढ़ी गई। इसके बाद सत्पुरुष ने सबसे पहले फरमाया:

जिस घर कथा कीरत नहीं, संत नहीं मेहमान।
ते घर जम डेरा किये, जीवत भयो मसान॥

जिन शहर या कस्बों में प्रभु का विचार नहीं होता उसे शमशान घाट के बराबर ही जानना चाहिए। स्त्रियों को अपनी मति नहीं होती। जिधर कोई लगा दे उधर ही लग जाती हैं। पहले मर्द विचारवान होना चाहिए। जिस घर में दो धर्म हैं, स्त्री का और मर्द का और, वहां कैसे प्रेम बन सकता है? हर वक्त झगड़ा बना रहेगा। मर्द कमाते रहें, स्त्रियां गुप्त दान करती फिरें। फिर यह कलयुगी धर्म आजकल नई किस्म का निकला है। अगर देवियां ही असली धर्म की सार को समझकर मर्यादा सहित घरों में रहकर प्रभु की याद करें तो कर सकती हैं। बेशक सेवा भाव इनमें ज़्यादा है, मगर अंधविश्वास बढ़कर रखती हैं। इसलिए संत लूटने वाले आकर लूट जाते हैं। बाद में

लुट-लुटा कर रोती फिरती हैं। कड़ा सोने का ले गया, मुंदरी ले गया, हार ले गया। घरवालों को कहती हैं, गुम हो गया है। स्त्री का धर्म है कि पहले निष्काम मन से अपने पति की सेवा करे और फिर परिवार में जो बड़े-छोटे हैं उनका अदब करके सेवा करे। अपने बच्चों की देखभाल और फिर थोड़ा बहुत समय निकाल कर ईश्वर याद में लगा दें। प्रथम गुरु उनका अपना पति ही है। अगर वह किसी उल्टे मार्ग में लगा हुआ है उसे अपने पवित्र भाव द्वारा सही रास्ते पर लाये। पति का भी फ़र्ज़ है कि पत्नी की हर बात का ख़्याल रखे। इस संसार का चक्कर नियम पूर्वक चलने से शांति बनी रहती है। जिस घर में अपना-अपना धर्म है, सास का कुछ धर्म है, बहू का कुछ, लड़का बिलकुल बे-मुख है, उस घर में कभी सलूक (एकता, सुमति) न हो सकेगा। खाना, पीना, भोगना तो पशु भी जानते हैं। परिवार उनका भी बढ़ जाता है। मानुष जन्म इस वास्ते प्राप्त हुआ है कि अपने छुटकारे का विचार करें। खाते, पीते, पहनते हुए भी बेचैनी बनी रहती है। ये क्यों? अन्दर मन बेचैन रहता है। लोभ, मोह को पूरा करते-करते सारा जीवन गुज़र जाता है। हमेशा किसी ने संसार में स्थिर नहीं रहना। तब इतना क्यों मोह-माया का जाल पसारा जा रहा है। यह सब सत् विचार विचारने के बाद ही साधु शरण में जाकर शिक्षा प्राप्त करे, तब जाकर सत् मार्ग में श्रद्धा, विश्वास दृढ़ होता है। बिना विचार के जो गुरु धारण कर लेते हैं उनका थोथा धर्म है। थोड़े दिनों के बाद फिर उनको मोह-माया लपेट लेती है। सत्संग में जीने और मरने का निर्णय होता है। इस बन्धन से छुटकारा कैसे मिले? साधु की महिमा बड़ी अपार है। वेद ग्रन्थ सब गा रहे हैं। कपड़े रंग कर डालने से, गले में कंठी माला लटकाने से साधु नहीं बन जाता। तौलिया सिर पर रख ऐनक लगा ली, देशी कपड़े, वस्त्र धारण कर लिये, ऐसा करने से महान आत्मा नहीं बन जाता। यह तो शरीर का श्रृंगार है। किसी समय भगवा वेष त्याग का बाना समझा जाता था। अब यह लूटने का साधन बन गया है। ज़रा होश से संसार में रहना चाहिए। जाकर मर्दों को कहो कि सत्संग में आवें। यह फ़कीर आप लोगों से कुछ गुप्त दान लेने नहीं आए हैं। कुछ बुद्धि देकर जायेंगे। ईश्वर सत् बुद्धि बख़्शें।

सत्संग की समाप्ति के बाद प्रेमी साईंदास कहने लगे कि:- महाराज जी! इस जगह भी चकोड़ी वालों ने अपना जाल फैलाया हुआ है। महाराज जी फरमाने लगे:

''पहले तूने ही इनको प्रेरणा की होगी। अब यह तेरा कहना किस तरह मान सकते हैं। तूने तो अच्छी तरह इनकी तह को जान लिया है। अब पीछे हट गया है। सब कुछ दे दिलवा कर अब होश आई है। प्रेमी, बड़ी होश से चलना चाहिए। बड़े विचार और देखभाल के बाद फिर किसी के आगे झुकना चाहिए।'' (यह घटना प्रेमी की नकली गुरु द्वारा ठगे जाने की है)।

इन विचारों को करते-करते काफी समय बीत जाने पर श्री महाराज जी ने आराम करने की आज्ञा दी। सुबह तीन बजे आसन छोड़कर श्री महाराज जी बाहर चले गए। काफी दूर जाने के बाद गड़वी पानी की लेकर आगे निकल गए।

भक्त जी जंगल दिशा से फ़ारिग होकर वापस आ गए। कुछ समय बैठकर, कुछ समय सो कर काटा गया। सूरज निकलने पर श्री महाराज जी पधारे। स्नान करने के बाद धूप में बैठे। प्रेमी

साईंदास मूलियां, शलगम ले आया और आगे रखकर नमस्कार किया। प्रेम से काट-काटकर आगे रखने लगा। दो चार टुकड़े लेने के बाद सब प्रशाद के रूप में बांटा गया। इसी तरह दूसरे रोज़ कच्ची सब्जी ले आया। नमस्कार करके बैठा ही था कि श्री महाराज जी ने फरमायाः

''कल तुम पूछकर लाए थे इसलिए ले ली थी। आज तू बग़ैर इज़ाज़त लिए ही सवेरे-सवेरे किसी की उखाड़ लाया है।''

प्रेमी के मुंह से भी निकल गया, ''महाराज जी, ज़मींदार तो वहां नहीं था, वैसे ही ले आया हूं। पैसे बाद में दे दिए जावेंगे।''

श्री महाराज जी ने खूब झाड़ डाली। ''जाओ, जाकर कीमत देकर आओ। गुरु को भी इस तरह का माल खिलाते हो। तुमने इनको चिकोड़ी वाला समझा हुआ है। पुराना स्वभाव तुम्हारा जाता नहीं।'' फिर दुबारा जाकर मूलियों के पैसे देकर आया तो श्री महाराज जी ने प्रेम से समझाया। ''इस तरह बग़ैर पूछे लाने में क्या फ़ायदा है? अगर ज़मींदार कुछ कह बैठे तो क्या रही? अगर वहां नहीं था तो दो मिनट सबर कर लेते। बेशक तुम्हारा वाकिफ़ ही था मगर तरीके से चलना चाहिए। तुमने सब राष्ट्र का माल अपना समझा हुआ है।

साधू बोले सहज स्वभाए।
साध का बोलया बृथा न जाए॥

''इधर से तो सहज स्वभाव ही मुंह से निकल गया था। सवेरे-सवेरे किस की उखाड़ लाया है।'' प्रेमी हाथ जोड़कर माफी मांगने लगा, ''नहीं महाराज जी, आप घट-घट के जाननहार हैं। वाकई ग़लती हो गई थी।'' बाकी बची हुई मूली का प्रशाद देते हुए फरमायाः- ''जाओ रोटी खाओ और गरम पानी इनके वास्ते लेते आओ।'' सर्दियों के दिन थे। जाते-जाते ही दस बज गए। खुद भोजन पाकर चाय बनाकर लाई गई। चरणों में नमस्कार किया तो फरमाने लगेः

''प्रेमी, नाराज़ तो नहीं हो गया।''

अर्ज़ कीः- ''महाराज जी! मैं अपनी ग़लती पर पश्चाताप कर रहा हूँ।''

चाय के बाद डाक का थैला खोला गया। महाराज जी फरमाने लगेः- ''फलां प्रेमी को पत्र लिखो।''

श्री महाराज जी आशीर्वाद फरमाते हैं, स्वीकार करें। आगे भी दो पत्र लिखे गए थे। मगर तुम्हारी तरफ से कोई जवाब नहीं आया। शायद फ़ुर्सत न मिली हो। ख़ैर, जैसी प्रभु इच्छा।

प्रेमी, वाज्या (जानो) हो कि यह संसार अधिक कठिन है। इससे पार होना अधिक शूरवीरता है। जितना-जितना जो इस संसार में प्रवृत्त होता है, उतना ही वह कष्ट पाता है। शरीर सम्बंध करके संसार भास रहा है और शरीर दिन-ब-दिन नाश की तरफ जा रहा है। अगर जीवित समय में जिसने अपनी मानसिक उन्नति यानी निर्मल त्याग हासिल नहीं किया, वह इस जीवन को निष्फल करके अन्त को निराशा ही चला। इस वास्ते गहरी ग़ौर करके अपने आपको अंतर से इस संसार से असंग करके निर्भय शांति के मार्ग पर दृढ़ करें। यह ही भावना असली शांति के देने वाली है।

प्रेमी जी, इधर से तो हर वक्त हर एक जीव की कल्याण की भावना बनी रहती है। शायद सेवा करके तुम थक गए हो, इस वास्ते पत्रिका लिखनी याद नहीं रही। प्रेमी जी, यह निश्चय कर लेवें कि जो-जो समय के अनुसार उपदेश तुमको दिया गया है वह तुम्हारी कल्याण का बायस (कारण) है। अगर इसके अनुकूल चलोगे तो निर्मल शांति को प्राप्त हो जाओगे, नहीं तो तुम्हारे भाग। तुम साधु पन्थ के एक शिरोमणी हो करके अगर कल्याण न की तो और जीवों की क्या हालत? इस वास्ते प्रभु विश्वास को दृढ़ करके अपने आपकी कल्याण करें और शरीर की नाश हालत से पहले-पहले अपनी तमाम कमज़ोरियों पर प्रभु के बल से विजय प्राप्त करें। यह मानुष जन्म का असली पुरुषार्थ है। प्रभु दृढ़ अनुराग देवें और गुरुवचन का विश्वास बख़्शें। हर वक्त हमको हृदय में देखें। दीगर तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर मानसिक शांति देवें। अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। इसी में तुम्हारी खुद ही कल्याण है, यह निश्चय कर लेवें। प्रेमी, अधिक प्रेम से तुमको पत्र लिखे जाते हैं। शायद तुम प्रेम से विचार नहीं करते। प्रभु सुमति देवें। एक हफ्ता यहां क्याम (निवास) फरमाएंगे। दोबारा ताकीद (हिदायत) है कि पत्रिका को अच्छी तरह से विचार करके शुभ विचारों से मुतलाह (सूचित) करें। इस दफ़ा पत्र लिखने में क्यों देरी कर दी है?

124. तरनतारन में आगमन

सुखू की मंडी का प्रोग्राम खत्म हो चुका था। 3 दिसम्बर, 1946 को यहां से रवानगी का प्रोग्राम निश्चित कर दिया गया। रात के सत्संग में संसार की असारता को ब्यान फरमाकर मोह माया के जाल से छूटने के साधन विस्तार से ब्यान करके सबको आशीर्वाद दी और 3 दिसम्बर रवानगी की सूचना सबको दे दी। आप 3 दिसम्बर, 1946 को 8 बजे सुबह सुखू की मंडी से बस द्वारा रवाना होकर चार बजे शाम को तरनतारन पधारे। भक्त जी सड़क से बिस्तरा उठाकर पुरानी जगह बगीचा में महाराज जी के साथ पहुंच गए। धूप में आसन बिछाकर, आपको बिठलाकर, शहर जाकर प्रेमी जगजीत सिंह को सूचना दी और फिर बाकी प्रेमियों को भी श्री महाराज जी के आने की ख़बर पहुंचा दी। तम्बू वग़ैरा सामान तांगा में शहर से लाया गया और लगवा दिया गया। बाद में प्रेमी भी पधारने लगे। संत आत्मा सिंह जी, जो बड़े श्रद्धालु साधु थे, श्री महाराज के आने के बारे में सुनकर अंधेरे में ही हाज़िर हो गए। रात को दस बजे तक वार्तालाप करते रहे। श्री अनन्त राम जी, पंडित दीवान चंद जी व लाला अमीर चंद जी विकला साहिबान भी हाज़िर हो गए। चरणों में प्रणाम करके कुछ देर बैठकर वापिस चले गए। भक्त जी को बाहर बुलाकर कहा कि यद्यपि श्री महाराज जी को किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है मगर फिर भी ख़्याल रखें। यदि किसी चीज़ की भी ज़रूरत हो तो पता दे देवें और मंगवा लेवें। हम लोग माया के चक्कर में ऐसे फंसे हुए हैं कि वक्त दे नहीं सकते। श्री महाराज जी से प्रार्थना करें कि दो-तीन माह इस जगह निवास फरमा कर हमें कृतार्थ करें। सत्संग की सूचना शहर में दे दी जावेगी।

रात को जब भक्त जी सोने लगे तो सत्पुरुष ने देखा कि भक्त जी के पास सिर्फ एक लोई है और फरमाने लगे:- "प्रेमी! लोई में सर्दी तो नहीं लगेगी?" फिर अपने आसन से लोई निकालकर भक्त जी की तरफ फेंक दी। भक्त जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! चादर जोड़ लूंगा। मगर आप न माने और फरमाने लगे:

"गुजरात के एक फ़कीर के पास औरंगजेब और उसका भाई दारा को जाने का मौका मिला। फ़कीर ने अपनी नीचे की चटाई निकालकर दारा की तरफ फेंकी, इशारा किया बैठ जाओ। दारा ने फ़कीर की अज़मत (बड़प्पन) के आगे चटाई पर बैठना गुनाह समझा। औरंगज़ेब ने झट से चटाई को लेकर अपने नीचे बिछा लिया। फ़कीर हँसने लगा। हँसी का कारण पूछा गया। फरमाने लगे:- "इसके वास्ते तख़्ते शाही फैंका गया था। मगर तुम सयाने निकले मुतबर्रिक (पवित्र) समझ कर और दात समझकर बैठ गए। ख़ुदा के घर में बादशाही कबूल हो गई है।"

"प्रेमी, इंकार कभी न किया करो। इधर नीचे एक लोई है और दो ऊपर हैं, और तुम क्या चाहते हो? आधी घड़ी के बाद फिर उठ बैठना है।"

सुबह चार बजे गड़वी लेकर आप बाहर तशरीफ़ ले गए। दिन निकलने पर वापिस तशरीफ़ लाये। स्नान से फ़ारिग हुए। कुछ मूलियां लाई गई थीं और प्रेमी जगजीत सिंह दो मालटे और दो संतरे ले आया। श्री महाराज जी के आगे रखे गए। एक आध फांक आपने लेने की कृपा की, बाकी भक्त जी व प्रेमी जगजीत सिंह ने खाये। शहर से चाय लाई गई। पत्रिका लिखी गई। सत्संग का वक्त साढ़े पांच बजे तक रखा गया था।

ठीक समय पर सत्संग महामंत्र, मंगलाचरण और वाणी के पढ़ने से शुरू किया गया। उसके बाद आपने अपने पवित्र वचनों से कृतार्थ फरमाया। सत्संग के नोट न लेने के कारण उन्हें यहां दिया नहीं जा सकता। आपने अपनी अनुभवी वाणी में, जो 'समता प्रकाश' ग्रन्थ में छप चुकी हैं, सब मज़हब व पंथों के रहबरों की तालीम का ज़िकर किया हुआ है और फरमाया हुआ है कि सबकी तालीम एक ही है और उसकी पुष्टि में शास्त्रों, कुरान, उपनिषदों, अंजील सबके हवाले भी दिये हुए हैं। आपके सत्उपदेश भी ऐसे होते जो सबके लिए लाभकारी होते हैं। इसलिए सब मज़हबों के लोग इन्हें पसन्द करते और सत्संग का लाभ उठाते। यहां भी हिन्दू, सिख, मुसलमान, सत्संग में शामिल होते और लाभ उठाते।

एक दिन सत्संग के बाद प्रेमी लाला अनन्त राम जी ने विचार रखा।

प्रेमी :- महाराज जी! साइंसदान कुदरत के राज़ को दरियाफ़्त करके खुफ़िया ताकतों से काम लेकर आवाम की सेवा करते हैं और दुनिया का नक्शा बदल रहे हैं। अगर रूहानी पुरुष भी रूहानी ताकत से लोगों को फायदा पहुंचायें तो ईश्वर का इसमें नुकसान क्या है? ईश्वर बेअंत शक्ति वाला लामहदूद (असीमित) ख़ज़ाना है। रूहानी शक्ति से लोगों के दु:ख दूर करने से उसके खज़ाने में कमी नहीं हो जाएगी, फिर रूहानी पुरुष क्यों ताकत छुपाये रखते हैं और करामात के इस्तेमाल से परहेज़ करते हैं?

श्री महाराज जीः- लाल जी! करामातें दिखाने के कारण ईसा और मन्सूर को सूली पर चढ़ना पड़ा। शम्स तबरेज़ को खलड़ी (खाल) उतरवानी पड़ी और भी फ़कीरों, जिन्होंने शक्तियां दिखाई, उन्हें सज़ा भुगतनी पड़ी। प्रेमी, कोई अक्लमंद आदमी अपना खज़ाना बेसूद जाया (व्यर्थ बरबाद) नहीं करता। करामात का मुआवजा अदा करना पड़ता है। बाकी निष्काम कर्म को धारणा ही ज़िन्दगी का भूषण है। इससे ही इन्सान जीवन सफल कर सकता है। तत्त्वों के रद्द-ओ-बदल (परिवर्तन) के बग़ैर यह संसार उजाड़ बन जाता है। तो फिर इन्सान बग़ैर किसी सहारे के किस तरह मंज़िले मकसूद तक पहुंच सकता है? कुदरत की तमाम ताकतें सूरज, चन्द्रमा, पवन, पानी, आग, पृथ्वी वग़ैरा निष्काम कर्म का पवित्र आदर्श पेश कर रही हैं। यह तमाम ताकतें अनथक कर्मचारी हैं। इनका जीवन निष्काम सेवा के अर्पण है। जब-तक जीवन सादा न हो आचार, विचार, आहार, व्यौहार ठीक न हो तो ज्ञान की बातें करना बेसूद (व्यर्थ) हुआ करती हैं। ऐसे जीव धोखेबाज बन जाते हैं। कहनी, करनी और रहनी और बन जाती है। जीव अंधकार में पैदा हुआ है, अंधकार में बढ़ता, फलता-फूलता और ख़त्म हो जाता है। कोई विरला पुरुष ही इस माया के अंधकार से ऊपर उठ सकता है। ज्यों-ज्यों प्रकृति की खोज की जावेगी त्यों-त्यों नये से नये अज़ाबात प्रगट होंगे, जिनको देखकर जीव दंग रह जाता है। आगे और खोज करने के वास्ते बढ़ रहा है। प्रकृति की खोज कभी ख़त्म नहीं होती, खोज करने वाले ख़त्म हो जावेंगे। जब-तक ग़ैर तबदीली हालत को समझा नहीं जाता तब-तक इस जीव की खोज बंद नहीं होती। सम तत की प्राप्ति करनी कोई आसान नहीं। इस मोह माया के जाल को ही जीव ने सब कुछ समझ रखा है और इसमें ऐसा मोहित हो गया है कि अपने सत्सरूप की बिल्कुल ही याद भूल गया है। प्रकृति को ही अपना रूप मान लिया है। इस नाम-रूप-गुण, कर्म की वासना जब-तक चित्त में दृढ़ है तब-तक भ्रम, अज्ञान और अविद्या ख़त्म नहीं हो सकती। नाम-रूप की कल्पना हर चित्त के अन्दर अनेक प्रकार के तरंग, संकल्प पैदा कर रही है। यह संकल्प ही भोग पदार्थों की तरफ जीव को बार-बार ले जाते हैं। प्राप्ति और अप्राप्ति दोनों हालतें संशय शोक पैदा करती रहती हैं। कभी धीरज चित्त के अन्दर नहीं आ सकता। कोट जन्म जन्मान्तर तक इस भ्रम में गुज़र जाते हैं। इंद्रियों के भोगों में जीव ग्रसा रहता है। छिन में ग़मी, छिन में खुशी को पाता हुआ सारी जीवन यात्रा व्यतीत कर देता है। शरीर के नष्ट हो जाने पर भी भोगों की लालसा ख़त्म नहीं होती वह ही तृखा (तृष्णा) बारमबार कई प्रकार के शरीरों को धारण करवाती है। चाहे कोई साइंसदान है, गृहस्थी है या विरक्त, जब-तक समतत्त बोध कर नहीं लेता तब-तक भटकना बनी रहेगी। इस वास्ते परम तत्त्ववेत्ता सत्पुरुष प्रकृति की खोज में दख़ल नहीं देते। जीवन शक्ति की खोज में समय देकर उस हालत में प्रवेश कर जाते हैं जिसे पाकर फिर खोज की ज़रूरत नहीं रहती।

''कोट बार पसरया पासारा''

''यह सृष्टि कई बार पैदा हुई और लीन हुई। मग़रिब (पश्चिम) वाले जिस खोज में लगे हुए हैं, इन साइंसदानों के पास बैठकर पूछो, क्या हासिल हुआ है? अगर इतना समय मन, बुद्धि को परम

तत की खोज में लगा दें तो वह लोग बहुत ज़्यादा तरक्की कर सकते हैं। तुम्हारे देश के सत्पुरुषों ने जिस बात को छोड़ रखा है इसको उन्होंने पकड़ रखा है। प्रकृति की खोज के बाद जब आत्मा की खोज की तरफ आवेंगे तब शांति आवेगी। इस वक्त तक केवल दूसरों के नाश करने वाले सामान ही ज़्यादा से ज़्यादा बनाकर एक दूसरे को हैरान-परेशान कर रहे हैं। पहाड़ दूर से ही सुहावने मालूम होते हैं। इन देशों में जितनी अन्दर अशांति यानी आग लगी हुई है, वही जानते हैं। कोई रास्ता उनको नहीं मिलता। उन मुल्कों में विवेकानन्द और राम तीर्थ वग़ैरा के जाने से उनकी आँखें खुली हैं। बाकी उनकी अक्ल ज़रूर तेज़ है। किस तरह दुनियावी सामान को बनाया जावे और इस्तेमाल किया जावे, रहन-सहन की मर्यादा, सेवा भाव और दूसरे का दर्द अच्छी तरह जानते हैं। कपट करते हैं तो अच्छा मौका देखकर। जहां तक अपने देशवासियों से ताल्लुक है, बहुत अच्छा है। मैं-तू का झगड़ा तो विवेकी पुरुष के अन्दर से ख़त्म हो सकता है। जब-तक जीव मोह माया के जाल में फंसा हुआ है तब-तक किसी को परिवार का बंधन है, किसी को गांव का, किसी को कस्बे का, किसी को सूबे का और किसी को देश का मोह बना ही रहता है। सारे विश्व के प्राणियों से एक जैसा अन्दर से प्रेम रखना गुणी पुरुष का धर्म है। कोई बाहोश बुद्धि वाला जीव सदियों के बाद पैदा होता है। उसके अमली जीवन को देखकर हज़ारों-हज़ारों जीवों के अंदर चाव बनता चला जाता है। ख़ासकर भारत की धरती ही ऐसी है कि इस मिट्टी से कोई न कोई भाग्यवान जीव प्रभु प्रेरणा से आता ही रहता है। सूरज का काम है रोशनी देना। इस रोशनी से चाहे कोई लाभ उठाये या न उठाये, उसे इससे कोई मतलब नहीं। जब सूरज ग़रूब (अस्त) हो जाता है तब कदर आती है या जिस वक्त अंधेरे में ठोकरें लगती हैं।

''प्रेमी, तुम अपना विचार करो। पहले इस शक्ति को प्राप्त करो फिर करामात में ख़र्च करके तज़ुरबा कर लो। जब-जब मौका मिला नानक, कबीर, मीरा, दादू, पल्टू वग़ैरा सत्पुरुषों को जाहिर (प्रगट) होना पड़ा। यह कोई समां होता है, काया पलट देते हैं।''

प्रेमी अमीरचन्द जी बोले:-''महापुरुष दयालु हुआ करते हैं। मेहर और दया करते हैं। आपकी मेहर के बिना हम अंजान ही हैं, आगे चल नहीं सकते।'' इस तरह रोज़ाना सत्संग के बाद संवाद चलता रहता था क्योंकि वहां के बहुत से प्रेमी वकील थे। इस सम्बन्ध से हर बात की नई से नई तुरंग निकाल कर रख देते थे। श्री महाराज जी हर तरह से कृपा करके अनेक तरीकों द्वारा उनकी दलीलों को साफ कर देते थे।

अभी चन्द दिन ही तरनतारन में हुए थे कि लाहौर की संगत ने सेवा में हाज़िर होकर चरणों में नमस्कार किया। सत्संग श्रवण किया और लाहौर तशरीफ़ ले चलने की प्रार्थना की। प्रभु स्वरूप श्री सत्गुरु देव जी ने फरमाया:- ''अबोहर से वापसी पर विचार किया जावेगा।'' इसके बाद प्रेमी आज्ञा लेकर वापिस चले गए। प्रेमी मुकन्द लाल जी और गुरदासपुर, काहनूवान और दौरांगला निवासी प्रेमी भी दर्शनों के लिए हाज़िर हुए। एक दिन सत्संग समाप्त हो चुका तो एक प्रेमी अपनी अंग्रेज बीवी और बच्चों के साथ दर्शनों के लिए हाज़िर हुआ। हाथ जोड़कर सबने नमस्ते की और

बैठ गए। पूछने पर पता चला कि प्रेमी अनन्त राम जी के रिश्तेदार हैं। घर से बिना पूछे विलायत चले गए थे। वहां जाकर रिहायश इख़्तियार कर ली और मामूली कारोबार शुरू करके बढ़ा लिया और अब वहां काफी जायदाद बना ली है और वहां के वाशिन्दे बन गए हैं। रिश्तेदारों की प्रीत ने जोश मारा तो मिलने के लिए आ गए हैं।

महाराज जी के पूछने पर वहां के रहन-सहन व अंग्रेजों के बर्ताव पर रोशनी डाली, किस तरह एक दूसरे से मोहब्बत से पेश आते हैं। रोज़गार और व्यौपार में कितनी सच्चाई और सफाई है। ख़ुराक भी बहुत सादा है। हिन्दुस्तान की तरह चटपटी चीज़ें बिल्कुल नहीं खाते। मांस, शराब का बहुत से लोग इस्तेमाल नहीं करते और जो करते भी हैं बड़ी मर्यादा का करते हैं। अगर कोई कमी है तो आध्यात्मिक तालीम की है। उनके असूल बड़े अच्छे हैं। संसार में रहकर ज़िन्दगी अच्छी तरह गुज़ारते हैं। दूसरे का हक ज़हर के समान समझते हैं। जनता की यह हालत है कि किसी को फ़िकर नहीं। अमीरी-ग़रीबी तो हर जगह है ही मगर वहां की सरकार हर एक का बड़ा ख़्याल रखती है। हम ज़बानी कहते हैं सेवा करो, आपस में प्रेम करो, उनमें अमल है। ज़्यादा गप्पें नहीं मारते। मेहनत करके खाना खाना सबके वास्ते लाज़मी है। व्यौपार में बहुत ही साफ हैं। जैसा कहेंगे वैसी चीज़ भेजेंगे। बाज़ार में कोई चीज़ गिर जाए, पहले तो वहां ही पड़ी रहेगी या किसी उस इलाके के थाने में पहुंचा दी जावेगी। पूरी जांच पड़ताल के बाद मालिक अपनी चीज़ वहां से ले सकता है। ऐसे बहुत से वाक्यात उसने बतलाए।

श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''अच्छे असूल ही भाग्यशाली बनाया करते हैं। पुरुषार्थ से सांसारिक सुख प्राप्त होते हैं और पुरुषार्थ से ही सत् स्वरूप की प्राप्ति हो सकती है। इसलिए जहां भी रहो दो घड़ी उस बनाने वाले की याद कर लिया करो। वैसे सब जगहें उस ईश्वर की ही हैं। अन्न-जल संयोग बड़े प्रबल हैं।'' चूंकि शाम हो गई थी, सबको जाने की आज्ञा दी गई।

वे हाथ जोड़कर वापिस चले गए। आसन उठाकर तम्बू में बिछाया गया और सत्पुरुष अंदर आ गए। जो प्रेमी बाकी रह गए थे अंदर आ गए थे! उन्हें कहने लगे:- ''क्यों न इन मुल्कों को भाग (भाग्य) लगें? अगर करतार को नहीं मानते, तो क्या हुआ, आपस में मिलकर रहना, इस कदर सेवा भाव रखना, दुखियों के दु:ख दूर करने के लिए तन, मन, धन कुर्बान कर देना, यह ही उदारता के लक्षण हैं। मामूली चीज़ के वास्ते बेइमानी नहीं करते। करते भी हैं तो नीयत से कौम की भलाई के लिए करते हैं। देश भक्ति भी बड़ी चीज़ है। खुदगर्ज़ को न तो संसारी सुख मिलते हैं, न आगे की सोझी होती है। हिन्दुस्तान में लोग बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। वहां अमल साथ है, क्यों न रंग लगे? अगर यहां भी अमल हो, भारत सबसे आगे बढ़ सकता है। मगर यहां खुदगर्ज़ी की वजह से एक दूसरे को नुकसान पहुंचाया जा रहा है। लड़ने के वास्ते तैयार बैठे हैं। कब इनका भला होगा? हालांकि पूजा-पाठ, सत्संग, कीर्तन सबसे ज़्यादा इस मुल्क में हैं, बड़े-बड़े महात्मा माथा मारते रहते हैं, मगर एकता प्रेम नहीं आ रहा। पता नहीं, कौन सी सख़्ती और आ रही है? यह निफ़ाक (झगड़ा), तास्सुब (धर्मान्धता) सब अशांति और झगड़े की निशानियां हैं। महात्मा लोग क्या करें?

उन्होंने तो समझाना ही है। आध्यात्मिक तालीम के ज़रिये ही भारत ऊपर उठ सकता है। प्रकृति की तरक्की कोई माईने नहीं रखती। तरक्की इतनी ही होनी चाहिए कि सब मिलकर रहें। एक दूसरे का दर्द महसूस करते हुए मिलकर काम करें और वंड के (बांट कर) खायें। सब लोग योगी तो नहीं हो सकते, मगर अच्छी तरह रहना-सहना, व्यौपार करना सीख जायें तब ही शांति बनी रह सकती है। फिर जो स्वभाव बन जाये सिरों के साथ ही जाता है। संसार में सब किस्म के जीव होते हैं, तब ही संसार कहलाता है। जिसकी आंख से अज्ञान रूपी मोतिया-बिन्द हट जाता है उसे सब करतार रूप ही दिखाई देता है। उसकी बे-अन्त माया है, जिस पर वह आप दयालुता करें उसके घट में सोझी हो सकती है। उसके दरबार में दयालुता ही दयालुता है। उधर जाकर देखें तो सही।''

बैठे हुए विचार चल रहा था कि अबोहर से प्रेमी चिरंजी लाल व करोड़ी मल जी हाज़िर हो गए और चरणों में दण्डवत प्रणाम किया। श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''समझा था भूल गए होंगे।''

प्रेमी करोड़ी मल जी कहने लगे:- ''महाराज जी! घड़ी-घड़ी गिन-गिन कर गुज़ार रहे थे। सब प्रेमी रास्ता देख रहे हैं कि कब महाराज जी पधारने की कृपा करते हैं। सब संगत हाथ जोड़कर नमस्कार करती थी कि जल्दी महाराज जी दर्शन देने की कृपा करें।'' प्रेमियों को शहर चलने के लिए कहा गया। मगर उन्होंने जाने से इंकार कर दिया और अर्ज़ की-कि हम सत्गुरु देव जी के चरणों में ही रहेंगे। वह कमरा जो बनवाया गया था उसे खोलकर सफाई करके पराली बिछाकर बिस्तरे लगा दिए गए। काफी देर विचार के बाद 24 जनवरी, 1947 को चलने का प्रोग्राम बनाया गया। इसके बाद श्री महाराज जी ने आराम करने की आज्ञा दी और कहा कि प्रेमी सफ़र की वजह से थक गए होंगे।

18 जनवरी के दिन श्री महाराज जी धूप में बैठे थे कि संत आत्मा सिंह जी बाहर से सैर करते हुए आए। अंजीरों का प्रशाद और छोटी इलायची रखकर नमस्कार करके चले गए। प्रेमियों ने बाद में पूछा:- ''यह किस जगह रहते हैं?'' श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''इस शहर में बाहर कुटिया में अर्सा से रहते हैं। अच्छे विचारवान और त्यागी हैं। गुरु ग्रन्थ साहब के अच्छे ज्ञाता हैं। पहले से ही इस जगह के रहने वाले हैं। करीबन छत्तीस साल बाहर फिरते रहे हैं। अपनी मौज में रहते हैं। संसार में रब के प्यारे भी हैं, न मानने वाले भी हैं।''

मूली के प्रशाद के बाद अंजीरों के प्रशाद को बांटा गया। शहर से चाय लाई गई। और जाने के प्रोग्राम का पता दिया गया। 19 फरवरी को आख़िरी सत्संग था। काफी जनता ने आकर लाभ उठाया। श्री महाराज जी ने फरमाया:

''इस गुरु की नगरी में हर महीने के महीने अमावस के रोज़ काफी संगत इकट्ठी होती है। सबको पवित्र आहार, व्यौहार के मुतालक अगर समझाया जावे तो कितना भला हो सकता है। इस गुरु की नगरी में सबसे ज़्यादा मांस बिकता है, और जगहों में कैसे कमी हो सकती है? जिन सतपुरुषों की वाणी रोज़ाना अमृत वेले उच्चारण होती है उन्होंने कई-कई वर्ष रोड़ों पर बैठकर तप

करके जीवों के उद्धार के वास्ते देव वाणी उच्चारण फरमाई। वाणी जितनी पवित्रता के वास्ते कह रही है उतनी ही ज़्यादा अय्याशी और नुमायशी जीवन बढ़ रहा है। इनको मानना, पूजा, भेंट और सत्कार करना यह ही है कि उनके कहने पर अमल किया जावे। जिस दिन गुरु तत्ते तवों पर बैठे थे उसी दिन लोग ज़्यादा शिकार पर चढ़ते हैं, हालांकि ऐसे त्यौहारों पर ज़्यादा से ज़्यादा पवित्रता इख़्तियार करनी चाहिए। एकत्र होकर और इकट्ठे मिल बैठकर सुधार का विचार करना ही सत्संग है। सत्पुरुषों ने बड़ी कुर्बानी करके धर्म को बचाया था, फिर से उत्साह पैदा किया था। आज मांस खाना और शराब पीना ही धर्म रह गया है। ऐसे हालात ही तबाही की तरफ ले जाया करते हैं। मांस खाने से ताकत नहीं बढ़ती। जुर्रत (हिम्मत), दिलेरी धर्म की धारणा के बल से पैदा होती है। मांसखोर कभी भी सामने होकर दिलेरी से न लड़ेंगे। छुपकर दाओं से ही हमला किया करते हैं। धोखाबाजी, चालाकी, अय्याशी इनके इस्तेमाल से आती है। इस वास्ते जो कुछ सुना जाए उस पर सच्चे दिल से अमल करना चाहिए, तब जाकर फल लगता है। अपवित्र ख़ुराक से पैदा हुई औलाद कभी भी मां-बाप की सेवा करने वाली नहीं हो सकती। हर घर में आज क्यों अशांति है, बेचैनी है? वह इसलिए है कि न तो आहार ठीक है और न व्यौहार। बाबे की वाणी भी कह रही है:

बाबा होर खाना सुशी ख़्वार, जित खावे तन पीडीये।
मन में चले विकार॥

''जिस खान-पान से, जिस पहनावे से, जिस बोल से मन में विकार पैदा हों, मन अशांत हो, चंचलता आए, शारीरिक तकलीफ़ का सामना हो, ऐसे भावों को बिल्कुल तर्क (छोड़ना) कर देना चाहिए। इनकी जगह सील, संतोख, उदारता, प्रेम, वैराग्य, अनुराग, सिमरण, अध्ययन का आसरा लेना चाहिए। बग़ैर इन धारणाओं के जप, तप का धन नहीं ठहरेगा। समय-समय पर सत्पुरुष जीवों के उद्धार के लिए ही तरीके कायम करते आए हैं। कीर्तन प्रभु का करना बहुत ही उत्तम है, मगर आजकल तो ज़्यादा ध्यान स्वरों में ही रहता है, कौन अच्छा बोलने वाला है? वाणी के असली भाव को तो कोई सुनता ही नहीं। मरदाने की सितार-सारंगी बजाना बाबे नानक देव जी का मौज में आकर प्रभु महिमा का उच्चारण करना और बात थी। आजकल इस गाने-बजाने से सौ विकार पैदा हो रहे हैं। ख़ैर, न करने से तो कुछ करना अच्छा है। ऐसा कीर्तन करो जिससे प्रेम भाव बने। तास्सुब नाश हो। धरंगे (बकरे) खाकर देववाणी का पाठ कहां लिखा है। वग़ैर केसधारी को बाजे के साथ पाठ करने पर नफ़रत की निग़ाह से देखा जाता है। जिन गुरुओं ने हिन्दू धर्म बचाने के लिए सीस तक दे दिए उस धर्म के अनुयाईयों से आज नफ़रत की जा रही है। संतों की तालीम यह नहीं बतलाती। यह ख़ुदगर्ज़ी का दौर-दौरा हो रहा है। ख़्वाम-ख़्वाह अपने आपको महदूद (सीमित) किया जा रहा है। हृदय विशाल बनाओ। जो श्रद्धा भाव, प्रेम भाव और इज़्ज़त पहले बाबे की वाणी की थी, लोग आज उसे उस निग़ाह से नहीं देख रहे। जिस चीज़ ने दूर-दराज़ तक फैलना था वह आज महदूद होकर थोड़े से टुकड़े पंजाब में ही रह गई है। ईश्वर सबको सुमति देवें। जो बाढ़ खेती की हिफ़ाजत के लिए लगाई गई थी, आज-तक खेत को उजाड़ने वाली बन रही है। यह सब अपनी

नाश के ही सामान पैदा हो रहे हैं। इसलिए जो सुना उस पर अमल करो। इस सनातन धर्म को कई दबाने वाले आए मगर ऋषियों की पुरानी तालीम ख़त्म न हो सकी। जब-तक वेद, उपनिषद, गीता जैसे महान ग्रन्थ मौज़ूद हैं तब-तक सभ्यता कायम रहेगी। गो बातूनी लोग हिन्दू फ़िलासफ़ी से अनेक प्रकार के भाव निकाल कर अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं मगर उन बातों से सिद्धान्त समता धर्म बदल नहीं सकता।

''समता की सिख्या के बग़ैर कोई ग्रन्थ नहीं है। जो जीव ग्रन्थों व महापुरुषों की इस धारणा के विरुद्ध बह चलते हैं उनका मान हमेशा के वास्ते नहीं बना रह सकता। जीवन सुधार के वास्ते दो-चार बातों का ख़ास ख़्याल रखना ज़रूरी है, एक तो सत नियमों, सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग का धारण करना और दूसरे दो घड़ी ईश्वर की याद या सिमरण, आम संसारियों के वास्ते यह धारणा बहुत ही उत्तम है। यह नियम हर तरफ से जीवों, ख़्वाहे पूरब के हों या पश्चिम के, सबके वास्ते सुखदाई हैं। हर जगह और हर हालत में इनके द्वारा लाभ प्राप्त किया जा सकता है। ईश्वर सबको श्रद्धाभाव बख़्शें। इस तरह सत्संग में प्रीति बनाए रखें।''

जगत जलन्दा रख दे। अपनी किरपा धार॥
जित द्वारे ऊबरे। तिते लियो उबार॥

''फ़कीरों का बार-बार आना बड़ा ही मुश्किल हुआ करता है। कोई भार दिल में रखकर न ले जाना। अमल करो या न करो तुम्हारी मर्ज़ी। ईश्वर सत् बुद्धि देवें।''

दोहे वैराग्य अंक से पढ़कर आरती की गई और प्रशाद बांटा गया। आख़िरी दिन की वजह से संगत काफी देर बैठी।

आख़िर में श्री पूरन सिंह जी रागी ने, जो आंखों की ज्योति से हीन थे, हाथ जोड़कर प्रार्थना की:- ''महाराज जी! आपने बड़ी कृपा कीति ऐ। इस तरह का ज्ञान दी अखां खोलन वाला उपदेश सुनके बड़ी खुशी हुई ऐ। इथै इस दी बड़ी लोड़ सी । असी राग़ी हाँ। वाकई राग, रोज़गार दा धंधा बन गया ऐ। जिस राग दे नाल परमात्मा अकाल पुरख दा दर्शन करना सी उस राग नूं भूल गए हाँ। मेहर करो, ते चरणां विच बैठके कीर्तन कीता जावे। इस तूं बाद बेशक चले जाना।''

श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''सुना है इस पंथ के तुम अच्छे कर्ता-धर्ता हो। तुम्हारा राग मशहूर है। विचार तो तुमने सुन ही लिया है कि संत ढोलकी, तबला के साथ प्रभु महिमा सुनने के खिलाफ़ हैं और सत्संग में बिल्कुल साज़ व बाजा बंद कर दिया हुआ है। वैसे साज़ के बग़ैर आप महिमा कह सकते हो और विचार कर सकते हो। फ़कीर ही ग़ल्त रिवाज़ों को तोड़ते आए हैं। आज जो बंद लगाया गया है किसी वक्त यह असूल जाकर फायदा पहुंचाएगा। प्रेमी जी, सत्संग में बैठकर सत्पुरुषों के विचारों को ध्यानपूर्वक आराम से सुना जाए तब ही जाकर बुद्धि में बात बैठती है। राग-रोले में किसी के पल्ले कुछ नहीं पड़ता। अच्छी तरह विचार कर लेवें।''

प्रेमी जी अर्ज़ करन लगे:- ''मेनूं आप जी दे असूला दा पता नहीं सी। माफ करना। साडा स्वभाव ही बन चुकिया है। साजां नाल बोलन दा। ते आम लोग नई-नई तरजां नाल वाणी सुननदा

शौक रखते हैं। ऐह सब सिनेमा दी मेहरबानियाँ हन। पता नहीं कैड़े पासे सानूं ले जासन। पर मैं ता ज़्यादा पुराने रागां नूं ही पसन्द करदा हां। बहुत ही तहसब हटान वाले शब्द वचन कहे जांदे हन। पर साडे नेता ही फैटी पावने वास्ते लगे हुए हन। किसे वेले इन्हां गल्लां नूं देखके रोवन आंदा ऐ। वाहे-गुरु ही बख़्शें ते मत आवे। तुसां जेहां महा पुरुषां दी दयालुता और कोशिश नाल शायद कृपा हो जावे। वाहे-गुरु दी दयालुता होनी चाही दी है। अज ऐह धरती कितनी भागशाली ऐ। जिथे संत कृपा कर रहे हन। महाराज जी, इधर निग़ाह ते मेहरां करना। साडियां भूलां नूं माफ करना।'' तमाम संगत नमस्कार करके वापिस चली गई।

125. अबोहर में अमृत वर्षा

20 जनवरी, 1947 को श्री महाराज जी सुबह स्नान वग़ैरा से फ़ारिग होकर बैठे ही थे कि श्री अनन्त राम जी ने अपना तांगा भेज दिया। तम्बू वग़ैरा सामान पहले ही ले जाया गया था। खुद हाज़िर होकर प्रार्थना करके घर ले गए। वहां चाय पिलाकर स्टेशन पर ले गए। गाड़ी में सवार करवा दिया। सब संगत भी स्टेशन पर पहुंच गई और सबने गाड़ी में बिठाकर चरणों में प्रणाम किया। और तांगे में सवार होकर जोहड़ी साबका स्थान पर ही पहुंचा गया। वहां ही प्रेमियों ने ठहराने का बन्दोबस्त किया हुआ था। काफी रात हो चुकी थी। वहां पहुंचने पर प्रेमियों को जाने की आज्ञा दे दी गई। इसके बाद आपने भक्त जी को भी आराम करने की आज्ञा फरमाई।

नियम के अनुसार सुबह सवेरे उठकर आप बाहर चले गए और सूरज निकलने पर वापस पधारे। आसन बाहर धूप में ही लगाया था। स्नान के बाद आप आसन पर विराजमान हो गए। इतने में प्रेमी करोड़ी मल चाय का गड़वा उठाकर ले आए और नमस्कार करके बैठ गए। श्री महाराज जी ने फरमाया:

''इस तरह आप चाय बनाकर न लाया करें। बनारसी खुद ही बना कर लाया करेगा। अच्छा, अब आप गड़वी में थोड़ी सी डाल कर ले जाओ। पुराना नाप ही ठीक है। बाकी वापिस कर दो।''

कमरे में गड़वी लाकर भर ली गई। बाकी वापिस कर दी गई। चाय पिलाई ही जा रही थी कि बख्शी डिप्टी लाल गाय का गर्म दूध लाए । महाराज जी ने उनका प्रेम देखते हुए एक कटोरी में थोड़ा सा दूध ले लिया। बाकी प्रशाद के तौर पर प्रेमियों में बांट दिया गया। करोड़ी मल जी कहने लगे:- ''आपकी चाय और बनारसी दास का भोजन इधर हमारे यहां रहेगा।''

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''पिछली दफ़ा तुमने काफी सेवा की है। इस दफ़ा तुम्हारा हिस्सा बांटने वाले काफी हो गए हैं। आपस में विचार कर लो।''

प्रेमी डिप्टी लाल जी कहने लगे:- ''इस दफ़ा बांट कर ही सेवा होनी चाहिए। पिछले साल हम सोच विचार में ही रहे थे कि शायद दूसरी जगह का दूध प्रशाद आप ग्रहण ही न करते हों, इस वास्ते चुप रहे।''

सत्संग का समय 8 बजे से 9 बजे तक निश्चित हुआ। यहां पहुंचने की सूचना रावलपिंडी वग़ैरा प्रेमियों को भेज दी गई। आपने 15 दिन अबोहर निवास फरमाया। इन दिनों में आप एकता पर ज़ोर देते थे और फरमाते थे कि प्रेमियों प्रेम भाव दृढ़ करो। तास्सुब की हवा ज़ोर पकड़ रही है और एक दूसरे को नीचा दिखाने के यत्न प्रयत्न हो रहे हैं। और एक रोज़ सत्संग में भी फरमाया:

''प्रेमियों! ज़माने की उल्टी हवा अक्सर हालात को बिगाड़ कर रख दिया करती है। ऐसे भयानक समय में केवल धर्म का मार्ग ही धीरज देने वाला होता है। हर समय ऐसा भाव दृढ़ करना चाहिए कि ईश्वर रक्षक और सहायक हैं। संसार का तमाम चक्कर तबदीली युक्त है। कभी किसी कर्म द्वारा खुशी मिल जाया करती है और कभी ग़मी। गुणी पुरुष रंज व राहत में मन, बुद्धि को समान रखा करते हैं। न खुद डांवाडोल होते हैं और न दूसरों के वास्ते बायस तकलीफ़ बनते हैं। मूर्ख लोग आपस में झगड़ा करते हैं। तास्सुब ही सब झगड़ों का मौज़ुब (कारण) हो रहा है। हर हालत में ईश्वर आज्ञा में निश्चित होकर आपस में प्रेम भाव पैदा करो। यह साधन ही भयानक आग से बचा सकता है। होनी अवश्य होकर रहा करती है। डंडा चलने से पहले अगर अच्छे भावों की तरफ आ जायें तो तकलीफ़ नहीं उठानी पड़ती। जप, तप, साधना, बंदगी का मतलब यह है कि ईश्वर विश्वास दृढ़ होवे। ईश्वर को मानने वाले आपस में लड़ा नहीं करते, मूर्ख लोग ही लड़ते मरते हैं। जिस धरती के वास्ते लड़-लड़ कर मरते हैं वह यहां ही पड़ी रहती है। मोह वश हुए तमोगुणी जीव कट-कट के मरते हैं। आख़िर सिवाये अफ़सोस के कुछ हाथ नहीं आता। गुरुद्वारे, मंदिर, मस्जिदें इसी वास्ते बनाए गए थे कि वहां बैठकर ख़ुदा की याद की जावे और आपस में जो वैर-भाव बने हुए हैं उनको दूर किया जावे और उनकी इसलाह (दुरुस्ती) करके दुविधा ख़त्म हो जावे, न कि वहां लड़ने-मरने के विचार सोचे जायें। अल्लाह की रज़ा में पक्का होने का विचार इन धर्मगाहों में ही दृढ़ होता है। इस वक्त मौलवी, पंडित, ज्ञानी सब ही शिकार चढ़े हुए हैं और पेट पालने में लगे हुए हैं। एक दूसरे को भड़काना ही धर्म, ईमान जान रखा है। जब सिख्या देने वाले ही ऐसे हो जावें, वहां आराम कैसे जनता पा सकती है? ईश्वर ही अक्ल देवें।''

अबोहर निवास के दौरान रावलपिंडी से प्रेमी हरबंस लाल सहगल और इन्द्र राज सेवा में हाज़िर हुए। उन्होंने ज़िला हज़ारा और नथया गली वग़ैरा के रहने वाले हिन्दू, मुस्लिम झगड़े का ज़िकर किया। इस झगड़े से सारे इलाके में खौफ़ व हरास फैल गया था। लोग इलाका छोड़कर जाने का विचार कर रहे थे। इन दोनों सज्जनों ने पूछा:- ''महाराज जी! हमारे वास्ते क्या आज्ञा है?'' श्री महाराज जी ने कुछ देर खामोशी इख़्तियार रखने के बाद फरमाया:

''प्रेमियों! इस समय बड़े सोच-विचार का समय है। जिधर सबकी राय होगी वैसा ही होगा। दु:ख-सुख में एक दूसरे के साथ रहना चाहिए। मुख़ालिफ (विरुद्ध) हवा चली तो सबको एक जैसी ही लगेगी। मौत तो किसी जगह छोड़ेगी ही नहीं। पहले ही दिल न छोड़ो।''

इस तरह हौंसला दिया गया। दो चार रोज़ प्रेमी वहां ठहरे। चलती दफ़ा प्रेमी डिप्टी लाल ने एक पीपल का पौधा शुभ स्थान गंगोठियाँ में लगाने के लिए दिया। श्री महाराज जी ने प्रेमी हरबंस

लाल को कहा:– ''प्रेमी! खुद ही जाकर लगाने की कोशिश करना। प्रेमी बड़े प्रेम से लाया है और बड़े अच्छे पत्तों वाला है।''

दूसरे दिन गुरु चरणों में नमस्कार करके प्रेमी विदा हुए। सत्पुरुष के पास आना–जाना लगा रहता था और विचार चलते रहते थे। सत् के खोजी तो विरले ही होते हैं। एक दिन दो बजे दोपहर का वक्त था। श्री महाराज जी मौज में बैठे थे कि एक साधारण व्यक्ति मैले, फटे–पुराने कपड़े पहने श्री चरणों में आ बैठा। श्री महाराज जी ने पूछा:– ''प्रेमी! कहां रहते हो?''

झट अपनी छाती पर हाथ लगाकर बोला:– ''गुरू जी! यहां रहता हूं। तुम्हारी बड़ी दया है।'' एकदम उसका शरीर कांपा और मस्ती में आंखें बंद कर लीं। श्री महाराज जी उसकी तरफ देख रहे थे–मुस्कराए। उसने आंखे खोलते हुए कहा:– ''श्री महाराज जी! तुम्हारी बड़ी कृपा है। थोड़ा समय काटने के लिए ईंटों का धंधा कर लिया जाता है और कुछ न चाहिए।'' प्रेम से नमस्कार करके चला गया।

श्री महाराज जी फरमाने लगे:

''गुदड़ियों में लाल इसी तरह छुपे रहते हैं। मस्ताने इन्हीं को कहते हैं। प्रेमी, तूने इसे आगे भी देखा है?''

भक्त जी ने अर्ज़ की:– ''महाराज जी! रोज़ाना सुबह चार बजे से पहले पानी की बाल्टी लेने आता है। खुद कुएँ से पानी निकाल कर ले जाता है। एक दिन सुबह जब पानी लेने आए, कुएँ पर जो रस्सी पड़ी थी उसके पास खड़े थे। हमने रस्सी उठाने के वास्ते हाथ नीचे किया। इसका पांव पास ही था। इन्होंने समझा पांवों को हाथ लगाने आया हूं। झट पीछे हट गए और कहने लगे:– ''गुरू जी! मैं तुम्हारा दास हूँ।'' तब से मैं समझ रहा हूँ कोई अच्छे प्रेमी हैं। नीचे जहां पानी खड़ा है वहां ईंटें थापते रहते हैं, जो कच्ची ही बिक जाती हैं। और लोगों से भी सुना है यह किसी से ज़्यादा बातचीत नहीं करते।''

श्री महाराज जी:– प्रेमी! ज़्यादा बातचीत में क्या धरा है? अपने–अपने स्वभाव में ही फ़कीर लोग फिरते रहते हैं। जहां भी मेरा मालिक मेहर कर दे, अमीरी–ग़रीबी उसके दरबार में नहीं। हर तरह ही ग़रीबी ही अच्छी रहती है जो कि उस पद तक पहुंचा देती है। अच्छे आदमियों से धरती खाली नहीं रहती। बाकी पहुँचने वाले फ़कीर तो बहुत कम होते हैं। वह अवस्था ही ऐसी है जहां जाकर चुप लग जाती है। जविंदा या बन्दा जो कमाई करते हैं आख़िर पहुंच ही जाते हैं। प्रेमी, इस तरह खोज करते रहा करो।

फिर मौज में आकर शब्द उच्चारण करने लगे।

ऐसा विचार हो रहा था कि कई प्रेमी आकर बैठ गए। एक–दो ने दीक्षा धारण करने की प्रार्थना की। महाराज जी फरमाने लगे:– ''प्रेमी! जाने के वक्त याद आया। दो रोज़ रह गए हैं। फिर कभी ईश्वर आज्ञा से इधर आना हुआ, देखी जावेगी। लाल जी, क्या जल्दी पड़ी है?''

126. लाहौर में आगमन

8 फरवरी, 1947 रात को सत्संग विशाल रूप से हुआ। समाप्ति पर कड़ा प्रशाद दिया गया। आम संगत तो चली गई, प्रेमी काफी देर तक बैठे रहे। रात दो बजे वाली गाड़ी से प्रेमियों ने सवार करवा दिया। 9 फरवरी को लाहौर में दस बजे पहुंच गए। जबकि प्रेमियों को डेढ़ बजे का समय दिया हुआ था, आगे स्टेशन पर कोई मौज़ूद नहीं था। स्टेशन से बाहर आए। तांगे वालों ने हड़ताल कर रखी थी। कोई मज़दूर तक नज़र न आया। बिस्तरा सिर पर उठाया और पैदल ही चल दिए। श्री महाराज जी आगे-आगे थे। आगे चुंगी वालों ने रोक लिया कि चुंगी देकर जाओ। जवाब दिया-कि चुंगी वाली कोई चीज़ नहीं है। लेकिन चुंगी पर मुसलमान ज़्यादा लगे हुए थे। एक ने कहा, ''बिस्तरा खोलते हो या कि नहीं, दिखाओ क्या है?'' भक्त जी ऊंचे बोलने ही लगे थे कि महाराज जी ने फरमाया:

''यह बोलने का वक्त नहीं है। चुप करके बिस्तरा खोलकर दिखा दे।'' सिवाय गर्म लोईयों और पुस्तकों के और क्या था? खोलकर बिस्तरा दिखाया। चुंगी वाले कहने लगे:- ''अच्छा, बंद कर लो।'' महाराज जी फरमाने लगे:- ''प्रेमी! चौबर्जी बहुत दूर है, कोई आदमी देख लो।'' अर्ज़ की गई:- ''महाराज जी! आहिस्ता-आहिस्ता चलते हैं, मिल गया तो ले लेंगे।'' स्टेशन से चौबर्जी लगभग तीन मील था। आहिस्ता-आहिस्ता चल दिए। करीबन 12.30 बजे परमार्थी जी के मकान मारतंड भवन पर पहुंचे। नीचे से आवाज़ दी, झट दौड़े-दौड़े आए। श्री चरणों में प्रणाम की और कहने लगे-कि जाने के लिए तैयार हो रहे थे। डाक्टर भक्त राम व सेठ तारा चन्द जी ने तांगे का इंतज़ाम किया हुआ था। वह स्टेशन पर जाने वाले होंगे। श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! उन्हें सूचना दे आओ, वह स्टेशन पर इंतज़ार ही न करते रहें।''

परमार्थी जी सूचना देने चले गए। प्रेमी तांगे का इंतज़ार कर रहे थे। सब मारतंड भवन में पहुंचे और चरणों में प्रणाम किया। विचार होने लगा।

प्रेमी ने कहा:- ''श्री महाराज जी! आसार खराब ही नज़र आ रहे हैं।'' सत्संग का समय 4.30 बजे से 5.30 बजे तक रखा गया। इसके बाद श्री महाराज जी ने सबको जाने की आज्ञा दी। प्रेमी लाला बख़्शी राम जी कहने लगे:- हम इस जगह ही ठहरेंगे। लंगर का इंतज़ाम प्रेमियों ने मिलकर मारतंड भवन में रखा।

श्री महाराज जी ने स्नान किया और फिर चाय ली। लंगर वग़ैरा से फ़ारिग हुए। सत्संग का समय हो गया। काफी प्रेमी और माताएं सत्संग में शामिल हुए और सत् उपदेश अमृत का लाभ उठाया। पूरे 5.30 बजे आरती के बाद प्रशाद बांट करके सत्संग समाप्त हुआ। प्रेमी आहिस्ता-आहिस्ता चले गए।

दो-चार दिन ठहरे हुए हो गए थे। प्रेमी लाला बख़्शी राम जी प्रेम से बातें कर रहे थे। बातें करते-करते कह दिया- ''महाराज जी! एक अर्ज़ की जावे, अगर नाराज़ न होवें। गुस्ताखी ज़रूर है मगर रह नहीं सकता।''

महाराज जी ने फरमाया:- ''कहो प्रेमी! जो कुछ कहना चाहते हो।''

बख्शी राम जी कहने लगे कि हमें बाबू अमोलक राम का स्वभाव पसंद नहीं आया। क्या वह साफ नीयत से हिसाब-किताब रख रहा है? पैसा ऊपर-नीचे ज़रूर हो रहा है।

श्री महाराज जी खमोशी से सुन रहे थे, उनको मालूम था इन दोनों का प्रेम काफी है। ऐसा यह क्यों कह रहा है? फिर श्री महाराज जी ने फरमाया:

''आपको क्या शक पड़ गया है? इनके आगे वह पाई-पाई का हिसाब रख रहा है। तुमने ऐसी बात क्यों कही है? ज़रा भी ऐसा करने वाला दिखाई दे, उसी वक्त एक तरफ कर सकते हैं। यह जो प्रधानता संगत ने तुमको दी है उसका यह मतलब है कि तुम एक दूसरे पर शक करते रहो। ख़बरदार, अगर आईंदा ऐसी बे-वज़ा बात कही। कोई नुक्स उसमें आज-तक नज़र नहीं आया। तुमने पता नहीं किस अन्दाज़े से कह दिया है। वह सेवादार प्रेमी है। उसे हक भी है, वह खा सकता है। नज़दीकी सेवादार गुरुदरबार से खाने का हक रखता है। इनको सब मालूम है, कितना अपने से खर्चा कर रहा है और कितना इधर का खा रहा है। यह बच्चे नहीं है। आज नया सबक लेकर आए हो। तुमने शक क्यों किया? इस तरह बेइतबारी करने से क्या हासिल होगा? अगर कोई तरीका हिसाब-किताब रखने का नज़र न आता हो तो प्रेम से उसे समझा दो। इनको पता नहीं कि कितनी सेवा आई है और कितनी खर्च हो चुकी है।

कोह न चली बाबुल तरहाई

''जो सेवा करे उनकी टांगें खींचते हो। जो सपने में भी ग़ल्ती करे उसे भी छोड़ने वाले नहीं। बाकी अभी भुलेखे वाला कोई हिसाब ही सामने नहीं आया। चिटा-चानन (साफ-साफ) सबके सामने रख रहा है। आईंदा ऐसी शिकायत लेकर इधर मत आएं जो कि बिल्कुल बे-बुनियाद हो। अगर किसी को ग़ल्ती नज़र आ रही हो, अच्छी तरह पहले तहकीकात कर लो, फिर प्रेम से बैठकर विचार कर लो। हां, यह मन शक से भरे रहते हैं। इस तरह अपना मन शक करने वाला चंचल हो जाता है। इसका स्वभाव अच्छी तरह समझते हैं। जो भी लेन-देन करता है सब साथ-साथ लिखता रहता है, इनको क्या मतलब इतने ऊंट ईंटों के आए, नहीं आए? मगर वह भी बग़ैर लिखे नहीं रहते।''

प्रेमी बख़्शी राम जी हाथ जोड़कर माफी मांगने लगे। कहने लगे:- ''महाराज जी! स्वभावक अर्ज़ की थी। (दोनों कानों को हाथ लगाकर) आईंदा किसी के बारे में गल्त नहीं सोचा जाएगा। कुछ हिसाब ठीक समझ नहीं आया, शक ज़्यादा बढ़ गया। आपको भी तकलीफ़ देनी पड़ी।'' इतने में नीचे से परमार्थी जी ने समता प्रकाश ग्रन्थ, जो लिखना शुरू कर रखा था, लेकर आए। बड़ा सुन्दर लिखा हुआ था। अभी उसके लिखने में और काफी समय चाहिए था। महाराज जी ने भक्त जी से पूछा:

''प्रेमी! तू भी लिख सकता है?''

भक्त जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! इस दफ़ा जंगल में पहुंच कर कोशिश की जावेगी। एक हिस्सा मजमून का और कागज़ इधर से साथ ले चलेंगे।''

महाराज जी ने फरमायाः- ''अगर एक ही हाथ से सारा लिखा जाता तो बहुत सुन्दर था। प्रेमी, मिलकर इसको जल्दी लिख लो। आगे भी तो एक प्रेमी ने लिखकर छोड़ दिया था। लिखते-लिखते अच्छा लिख लोगे। समां आए तो, देख लेना।''

देहरादून से दीवान रला राम जी, लाला बख़्शी राम जी के रिश्तेदार आए हुए थे। वह सत्संग सुनकर बड़े प्रभावित हुए। राजयोग के बारे में विचार करते रहे। श्री महाराज जी ने उनकी अच्छी तरह तसल्ली कर दी। जाती दफ़ा कहने लगेः- ''देहरादून की तरफ भी ज़रूर कृपा करें। बड़ा सुन्दर इलाका है।'' श्री महाराज जी ने सहज स्वभाव फरमायाः- ''देखो प्रेमी, शायद उधर ही आना पड़े।'' जाती दफ़ा दीवान साहब ने फिर अर्ज़ कीः- ''महाराज जी! ज़रूर दर्शन देवें।''

गोलड़ा से प्रेमी दुनी चंद जी ने सेवा में हाज़िर होकर गोलड़ा प्रोग्राम के बारे में अर्ज़ की। श्री महाराज जी फरमाने लगेः- ''प्रेमी! अभी यह कुछ नहीं बता सकते, उधर ही आ रहे हैं। उधर से पत्रिका द्वारा पता दिया जावेगा। अभी दिन काफी हैं, फिलहाल जाओ।''

जेहलम से पंडित कृष्ण गोपाल शास्त्री जी, महाराज जी के भांजे, भी आए हुए थे। उन्होंने प्रोग्राम पूछा तो महाराज जी ने फरमायाः- ''अभी कुछ नहीं कह सकते। अगले शनिवार यहां से चलने का विचार है।'' शास्त्री जी ने अर्ज़ कीः- ''जेहलम स्टेशन पर दर्शन करूंगा। आप वक्त ज़रूर लिख देना।'' नमस्कार करके चले गए।

उस दिन भी कोई हड़ताल थी। जलूस निकल रहे थे। सुबह जब बाहर से आ रहे थे तो मुसलमान भाई एक दूसरे को मुबारकबाद दे रहे थे। चुपचाप अपने आसन वाली जगह आ गए। सत्संग समाप्त हुआ था कि एक दो प्रेमी, जो इस घर में रहते थे, घबराए हुए आए और कह रहे थे कि झगड़ा शुरू हो गया है। तारा सिंह ने झंडा फाड़ दिया है। जो प्रेमी बैठे थे एक दम आज्ञा पाकर घरों को गए। परमार्थी जी ने घर के दरवाज़े बन्द कर लिए। ज्यों ही शाम हुई गोली चलने लगी। प्रेमी मुरलीधर, जो नीचे रहते थे, छुपते-छुपते रात के 8 बजे घर पहुंचे। उन्होंने बतलाया कि- मोची दरवाज़ा व लाहौरी दरवाज़े पर खूब झगड़ा हो रहा है। सब घर वालों के होश उड़े हुए थे। उन्होंने भी बन्दूक गोलियों से भर लीं और छत पर बैठ गए। मगर सब घबराए हुए थे। महाराज जी ने हौंसला दिया, ''घबराओ नहीं, सरकार ने कोई न कोई इंतज़ाम शुरू कर दिया होगा।''

श्री महाराज जी अपने प्रोग्राम अनुसार सुबह गड़वी लेकर बाहर तशरीफ़ ले गए। जब 7.30 बजे वापिस आए, रास्ते में मुसलमानों की टोलियां डंडे, सोटे, कुल्हाड़ियां, तलवारें लिए अल्लाह हू अकबर कहते हुए दौड़े। कोई आगे और कोई पीछे आ रहे थे। मारतंड भवन के पास पहुंचे। श्री महाराज जी मस्तानी चाल सिर नीचे किए हुए चल रहे थे। भक्त जी पीछे चल रहे थे और घबराए हुए थे कि रास्ते में कोई हमला न कर दे। जब दरवाज़े के पास पहुंचे तो पूंछ हाउस के आगे गोली चल रही थी। परमार्थी जी ने दरवाज़ा खोल दिया और सत्पुरुष अंदर आ गए। हज़ूम घर के ज़रा आगे जमा होने लगा। महाराज जी को नमस्कार करके परमार्थी जी कहने लगेः- ''महाराज! आप आईंदा बाहर न जावें। यह काली अंधेरी चल रही है।'' श्री महाराज जी ने फरमायाः

''प्रेमियों, अब घबराने से काम न चलेगा। ईश्वर का भरोसा रखो। जो होगा सबके साथ होगा।'' गोली की तड़-तड़ी की आवाज़ आ रही थी। सड़क पर स्पेशल पुलिस वालों ने मोर्चा बनाया हुआ था। उधर पार से कृष्णा नगर वाले गोली का जवाब गोली से दे रहे थे। इधर जो हज़ूम जमा हुआ था पुलिस वालों ने डांट डपट कर वापिस कर दिया। शाम तक इसी तरह सिलसिला चलता रहा। शाम को कोई प्रेमी सत्संग में शामिल नहीं हो सका। बड़ा भारी खौफ़ व हराश फैला हुआ था। एक दूसरे की ख़बर लेनी मुश्किल हो गई थी। इसी तरह दूसरे और तीसरे दिन भी गोली चलती रही। चौथे रोज़ शांत वातावरण हो गया। डाक्टर भक्त राम जी शाम को प्रोग्राम पूछने आए और कह गए कि गाड़ियां भी तीसरे रोज़ से बंद हैं। रावलपिंडी की तरफ कोई गाड़ी नहीं जा रही। सुबह फ्रन्टियर मेल जाती है, जिस पर जाने का प्रोग्राम निश्चित किया गया।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''सुबह ज़रूरी जाना है।'' डाक्टर साहब ने यह भी बतलाया कि अमृतसर और मुलतान की तरफ भी तथा रावलपिंडी की तरफ भी झगड़ों के बारे में सुना जा रहा है।

8 मार्च, 1947 को तांगे में सवार होकर परमार्थी जी के साथ स्टेशन पहुंचे। डा० भक्त राम जी, सेठ तारा चंद जी और एक दो और प्रेमी मौज़ूद थे। फ्रन्टियर मेल गाड़ी खड़ी थी। थर्ड, इन्टर और सैकन्ड के डिब्बे भर चुके थे। डाक्टर जी और सेठ जी दो टिकट गोलड़ा के ले आए। बड़ी मुश्किल से प्रथम क्लास के डिब्बे में दरवाज़े के करीब जगह मिली। स्टेशन पर बड़ा हज़ूम था, मगर सब चुपचाप खड़े थे। गाड़ी ने सीटी दी। प्रेमी नमस्कार करके जुदा हुए। गाड़ी जब कामोन्की पहुंची रावलपिंडी के सज्जन चुन्नी लाल, जो कि इस कमरे में बैठे थे, उतरकर हालात पूछने लगे। जब वापिस आए तो बतलाया कि रावलपिंडी में बड़ा फ़िसाद हो रहा है। लोग स्टेशन पर तीन दिन से रुके हुए हैं। यह सुनकर तशवीश (चिंता) हुई। महाराज जी फरमाने लगे:- ''प्रेमी! तेरी क्या सलाह है। गोलड़ा कैसे जा सकोगे?''

भक्त जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! रास्ते में भी उतरना ठीक नहीं । रावलपिंडी पहुंच कर देखा जाएगा। जब डेढ़ बजे के करीब जेहलम पहुंचे तो आगे पँडित कृष्ण गोपाल जी शास्त्री गाड़ी का इंतज़ार कर रहे थे। गाड़ी खड़ी होने पर झट कमरे के अंदर आकर बिस्तरा पकड़ लिया और कहने लगे:- ''महाराज जी! उतर आइये, आगे मत जाइये।'' श्री महाराज जी ने बहुत कहा कि देखा जावेगा, मगर वह न माने, उतरना पड़ा। आहिस्ता से कहने लगे कि रावलपिंडी को चारों तरफ से मुसलमानों ने घेर लिया है। स्टेशन पर खड़े होने की भी जगह नहीं। रेडियो पर अभी सुना है कि धड़ा-धड़ गोली चल रही है। आग भी कई जगह लगी हुई है।

महाराज जी ने फरमाया:-''अब किधर जाना चाहिए? जेहलम में भी रुकने की जगह नहीं। आजकल शायद यहां भी फ़िसाद (झगड़ा) शुरू हो जाए। भक्त जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! जम्मू रियासत की तरफ चलना चाहिए। रियासत होने की वजह से वहां अमन होगा। विचार हो ही रहा था कि रावलपिंडी की तरफ से सिंध एक्सप्रेस गाड़ी आ गई। सैकिंड के दो टिकट लेकर जम्मू

के लिए रवाना हो पड़े। एक डिब्बे में जगह मिल गई। बैठे ही थे कि गाड़ी चल दी। शास्त्री जी प्रणाम करके उतर कर चले गए। गाड़ी में सवारियों ने बतलाया कि रावलपिंडी, सहियाला, मन्द्रा स्टेशन पर काफी सिख मारे गए हैं। शाम को छः बजे वज़ीराबाद पहुंचे। आगे जम्मू जाने वाली गाड़ी जा चुकी थी। रात वेटिंग रूम में ही गुज़ारनी पड़ी। वेटिंग रूम भी खचाखच भरा था। बातें हो रही थीं। दहशत फैली हुई थी। श्री महाराज जी खामोशी से लोगों की बातें सुनते रहे। रात के दस बजे फरमाया:- ''प्रेमी! कुछ खा पी लो और थोड़ा सा कहवा मिले तो ले आओ।'' भक्त जी ने एक होटल से रोटी लेकर खाई और श्री महाराज जी के लिए कहवा ले आए। श्री महाराज जी रात को इस जगह भी बाहर तशरीफ़ ले गए और काफी दूर निकल गए। दो घंटे के बाद वापिस आए। मुंह हाथ धोने के बाद बाहर से चाय बनवाकर लाई गई और फिर भक्त जी ने पेट पूर्ति की। बारह बजे दिन के जम्मू जाने वाली गाड़ी आ गई, उसमें सवार हो गए। आगे पंडित बिहारी लाल जी ऋषि का भांजा देवदत्त बैठा था। उसने बतलाया कि कल इस जगह भी झगड़ा हो जाएगा। बहन को जम्मू भेज दिया है और खुद भी जम्मू जा रहा हूं। उसने बतलाया कि उसके एक मुसलमान दोस्त ने उसे बतलाया है और कहा है कि हमारे मकान पर ख़ास निग़ाह है। गाड़ी चल पड़ी। शाम साढ़े पांच बजे जम्मू पहुंचे और तांगा करके कश्मीर चंद जी तलवाड़ के मकान पर पहुंच गए।

प्रेमी कश्मीर चंद जी के घर बैठने पर सारी बात सुनाई गई और श्री महाराज जी ने फरमाया:

''कश्मीर चंद जी बग़ैर प्रोग्राम के आपके यहां आ गए हैं। आपको तकलीफ़ तो होगी।''

श्री कश्मीर चंद जी ने अर्ज़ की:- ''यह तो सब आपकी दयालुता है। हम इस लायक कहां? यह तो आपने अपने आप दयालुता कर दी है। मालिक की बड़ी मेहर है। महाराज जी, इस जगह तो फिलहाल शांति है, मगर इलाका रावलपिंडी और पंजाब के हालात सुन-सुनकर बड़ी हैरानी हो रही है। क्या बनेगा? क्या दयाल बाग चले जाएं या इसी जगह रहें?''

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! इस जगह से निकाल कर कहां जाओगे और किधर जाकर बचोगे। ऐसी ही परेशानी हर जगह हो सकती है। अभी तो शुरू ही है। विश्वास से जहां बैठे हो, बैठे रहो। दूसरे अंग्रेजी इलाके से यह रियासत फिर भी बेहतर रहेगी। जिसको मालिक ने रखना है उसका कुछ बिगड़ नहीं सकता। ईश्वर पर भरोसा रखो। जब तूफान या अंधेरी चलती है चूहे के बिल में भी उसका असर हुए बिना नहीं रह सकता। अपना शुभ कर्म हर जगह रक्षा करने वाला है।''

इस तरह काफी देर तक विचार होते रहे। भोजन वग़ैरा से छुट्टी पाने के बाद सत्संग हुआ और वाणी का पाठ किया गया। ''रोज़ाना सत्संग का प्रोग्राम इस जगह किस तरह चल सकता है''? तलवाड़ साहब कहने लगे।'' अपनी तरफ से सबको कहने की कोशिश की जावेगी और इधर की जनता, साध-संगत सत्संग में काफी प्रेम भाव रखती है। चार बजे दफ़्तर में छुट्टी हो जाती है। साढ़े चार बजे से साढ़े पांच बजे तक शाम का समय ही ठीक है।'' विचारों के बाद आराम किया गया। और सुबह सवेरे उसी मकान के नीचे वाली खड्ड में उतरकर नहर की तरफ चले गए।

श्री महाराज जी वहां से भी आगे चले गए। भक्त जी नहर के किनारे लगी हुई लकड़ियों पर जंगल दिशा से फ़ारिग होकर बैठ गए। सूरज निकलने के बाद श्री महाराज जी वापिस तशरीफ़ लाए और नहर के ठंडे जल से स्नान किया और फिर आसन पर वापिस पधारे। चाय से फ़ारिग होकर लाहौर, रावलपिंडी और गंगोठियाँ, बाबू अमोलक राम जी को, गोलड़ा, कोहाला, चिनारी प्रेमियों को श्री महाराज जी के पधारने की सूचना दी गई।

सफ़र का बीता हुआ हाल सब जगह लिखवाया गया। सत्संग निश्चित समय पर शुरू किया गया। सत्संग में काफी माताएं और प्रेमी भाई शामिल हुए। श्री महाराज जी ने ज़माने के हालात के बारे में रोशनी डालते हुए सबको ईश्वर आज्ञा में दृढ़ता धारण करने की आज्ञा फरमाई और फरमाया:- ऐसे भयानक समय में ईश्वर विश्वास ही सहायक होता है और वाणी द्वारा संसार की आसारता पर रोशनी डाली। सारे प्रेमी प्रशाद लेकर बड़ी प्रसन्नता से वापिस हुए। श्री महाराज जी के आदर्श जीवन का सब पर असर पड़ रहा था। आपकी ख़ुराक और सादा लिबास देखते तो सब हैरान होते। न तो आपका सन्यासी साधुओं जैसा भेष था, न कोई ठाट-बाट और फिर जो वचन अमृत फरमाते, दिलों में असर करते। इसका असर यह हुआ कि जम्मू निवासी आम जनता सत्संग का लाभ उठाने लगी। छः-सात दिन के बाद एक साहब, जिनका नाम ठाकुर जफर सिंह था, श्री महाराज जी के चरणों में हाज़िर हुए और नमस्कार करके अर्ज़ की:- डाक्टर भक्त राम जी ने लाहौर से आपके इस जगह आने की सूचना दी है। महाराज जी, आपने जम्मू निवासियों पर बड़ी कृपा की है। ठाकुर जफर सिंह जी महाराजा साहब के महलात के वज़ीर थे। काफी देर चरणों में बैठे रहे और हालात जमाना पर विचार चलते रहे। महाराज जी ने पूछा:- ''रियासत में तो किसी गड़बड़ होने का डर नहीं?'' और फिर कहा कि शाम के सत्संग में शामिल होने की कोशिश करें। ठाकुर जी प्रणाम करके वापिस हुए।

उस रोज़ की हाज़िरी भी बढ़ने लगी और बड़े-बड़े समझदार प्रेमी भी आने लगे। लाला मूलराज जी महंगी, रिटायर्ड सेशन जज, प्रेमी रामदास जी तुल्ली, लाला दीनानाथ जी महंगी, लाला बिहारी लाल जी खोसला और लाला नानक चंद जी वग़ैरा मय अन्य प्रेमियों के सत्संग में शामिल होने लगे और सबने शिक्षा ग्रहण की।

इस दौरान बाबू अमोलक राम जी, जो शुभ स्थान से काला गुजरां आ गए थे, और मलिक भवानी दास जी रावलपिंडी से सेवा में हाज़िर हुए। बाबू जी ने तमाम इलाके में कत्ल व ग़ारत की बातें सुनाई और अर्ज़ की:- कैसे रात को दूर-दूर तक आगें लगी हुई नज़र आती थीं? और यह भी बतलाया कि कप्तान यूसफ खां रोज़ाना सत्संग हाल में आते और इशारे बता जाते कि अगर रात को अचानक हमला जो जाये तो कैसे उन्हें ख़बर पहुंचाई जावे और कैसे उन्होंने व काज़ी नूर मोहम्मद साहब ने तमाम इलाके में ऐलान कर दिया था कि वह शुभ स्थान पर हमला नहीं होने देंगे? अगर कोई हमला करेगा तो पहले उनसे मुकाबला करना होगा और कैसे एक रात जब खतरा था, रात को तीन मुसलमान पहरे पर मुकर्रर कर दिये थे? काज़ी नूर मोहम्मद साहब अपने साहबजादे को इलाके में भेज दिया करते थे ताकि लोगों को रोकें।

बाबू जी ने यह भी बतलाया कि एक रात गांव निवासियों ने बाबू जी को कहा कि मुसलमान कहते हैं कि महाराज जी का झंडा उतार दो और उसके बजाये लीग का झंडा लगा दो। बाबू जी के पास कप्तान साहब रोज़ आते थे, उन्होंने तो कभी ऐसा ज़िक्र नहीं किया मगर लोकल ब्राह्मण ऐसा कह रहे थे इसलिए ख़्याल पैदा हुआ कि अगर झंडा उतारने दिया जाता है तो यह नियम के विरुद्ध है। जान चली जाये मगर झंडा तो उतारने नहीं दिया जायेगा। दूसरा विचार हुआ कि अगर कोई वाक्या हो जाता है तो मुझे मुल्ज़िम बनाया जायेगा। ख़्याल हुआ रोज़ाना रात को इनकी रखवाली करता है, घर की कुछ ख़बर नहीं, क्या हो रहा है? लड़के की बहू इस इलाके में दूसरी तरफ फंसी हुई है। चल, यहां से बरास्ता थोहा नारा जेहलम दरिया से गुज़र कर पार रियासत में गह ब्राह्मणा पहुंच। वहां से कोटली, कोटली से मीरपुर और मीरपुर से जेहलम पहुंच। इस तरह वह 90 मील का सफ़र था। यह ख़्याल आते ही बाबू जी शुभ स्थान से, अभी अंधेरा था, रवाना हो लिये। चार मील आगे भोटियां तक पहुंच गए। रास्ते में दिन चढ़ गया । जब भोटियां पहुंचे, वहां आबादी मुसलमानों की थी। वह सब सड़क पर इकट्ठे होने लगे। आगे बाबू जी ने देखा थोहा और नारा दोनों जल रहे थे। भोटियां गांव में जाकर प्रेमियों से मिले और आगे रास्ते के बारे में पूछा तो उन्होंने भी कहा कि थोहा और नारा दोनों कस्बों पर हमला हुआ है। तमाम मुसलमान इधर जमा हैं। लूट-मार हो रही है। आगे बिल्कुल ही मुसलमान आबादी है। तुम्हें कोई आगे जाने नहीं देगा। बाबू जी ने फिर पूछा कि कोई ब्राह्मणों के गांव से रास्ता रियासत में जाता हो। मगर उन्होंने बतलाया कि कोई रास्ता नहीं जाता। फिर लीग के झंडे के मुतालक पता किया। उन्होंने जवाब दिया:- क्या बतलायें? देखा सब घबराए हुए थे। बाबू जी ने कहा कि मैं वापिस जाता हूं। उन्होंने चाय पिलाई और बाबू जी वापिस चल पड़े। गांव से बाहर सड़क पर मुसलमानों का झुंड खड़ा था, आगे बढ़ा। बाबू जी ने उसे सलाम किया। उसने पंजा लिया और पूछा:- ''किधर से आये हो?'' बाबू जी ने जवाब दिया- ''लीग के झंडे का पता करने गया था।'' फिर उसने पूछा, ''मुसलमान हो गए हो?'' बाबू जी ने जवाब दिया, ''जो तू समझ ले।'' वह वाह-वाह करता हट गया। बाकी सब लोगों ने रास्ता दे दिया और बाबू जी आगे चल पड़े।

एक मील आए थे तो उन्हें एक मुसलमान, सुर्ख पगड़ी बांधे, कंधे पर कुल्हाड़ी रखे बाइसिकल पर आता हुआ सामने नज़र आया। जब वह करीब पहुंचा तो वह बाइसिकल से उतर पड़ा और पूछा:- क्या कोई ऊंटा वाला जाता नहीं देखा? बाबू जी ने फिर अर्ज़ की:- प्रेमी! मुझे झूठ बोलने की क्या ज़रूरत थी, अगर देखा होता तो बता देता। थोड़ी देर तक वह सड़क के दूसरे किनारे की तरफ चलता आया। थोड़ी दूर चलने के बाद उसने कहा:- मैं तुम्हारी वजह से लौटा हूं। बाबू जी खड़े हो गए और पूछने लगे:- बता प्रेमी, क्या कहता है? उसने कहा:- ''तुम्हारे पास कोई हथियार है'' बाबू जी ने जवाब दिया:- प्रेमी! कोई नहीं। उसने कहा:- ''तलाशी दे दो।'' बाबू जी ने खुद ही पोस्ट कार्ड, बैट्री, बीड़ी, चाबियां, घड़ी, फाउंटेन पैन, वग़ैरा सब चीज़ें जेब से निकाल कर उसे पकड़ानी शुरु कर दीं। पौने तीन रुपये का तोड़ था और बटवे में 120 रुपये संगत के थे। जब

यह उसके हाथ में आए, बाबू जी ने उसके हाथ कांपते देखे और ख़्याल पैदा हो गया कि उसकी नीयत खराब हो गई है। फिर ख़्याल आया कि तू क्या कर सकता है, अकेला है? उसने पोस्ट कार्ड वग़ैरा, तीन में से एक फाउंटेन पैन तोड़ कर यह कहकर वापिस दे दिया कि आपके काम आवेगा। बाकी सब चीज़ें रख लीं और पूछा:- ''कहां जाना है?'' बाबू जी ने बतलाया:- ''वह सामने चनाम गांव में जाना है।'' वैसे यह गांव सामने था, मगर रास्ता आगे से घूम कर जाता था। सड़क के पास गहरा पानी भरा था। वह कहने लगा:- आप अजीब आदमी हैं, जहां, कोई जत्था मिला तुम्हारे टुकड़े कर देगा। आप यहां ही से नीचे उतरें और सीधे जावें। उस वक्त बाबू जी ने ख़तरा महसूस किया। पानी वाली गहरी जगह से उतरकर पार करके जमीनों में से होते हुए सीधे चनाम गांव सड़क पर पहुंच गए। आगे काफी आदमी वहां खड़े थे, जिनके पास कुल्हाड़ियां थीं। बड़े चौधरी सामने बैठे थे। उन्होंने ज़ोर से कहा कि यह तो बाबू है। थोड़ी सी देर में जवां कुम्हार आ गया। बाबू जी से पंजा ले लिया और बाबू जी के साथ चलने को कहा। जब उस जमघट से बाहर निकले तो जवां ने बताया कि आप बड़े खुशकिस्मत हैं जो सीधे आ गए हैं। इन नौजवानों ने आपको उस सड़क पर जाते देख लिया था और कुल्हाड़ियां लेकर वहां जाकर उन्होंने आपके टुकड़े कर देने थे। आप सीधे आ गए हैं। बड़े चौधरी आपको जानते हैं, उन्होंने बचा लिया है। धर्म पत्नी चौधरी कर्मदाद ने मुझे आपको इनमें से निकालने के लिए भेजा है। वह बाबू जी को अपने घर ले गया। जब घर पहुंचे तो आगे उसका भतीजा बैठा था। बाबूजी को देखते ही उसका चेहरा बदल गया। जवां कहने लगा, बाबू जी अंदर बैठ जाओ। भतीजे की हालत देखकर बाबूजी कहने लगे:- नहीं, तुम जल्दी कुल्हाड़ी तलाश करो। कुल्हाड़ी लेकर दोनों मकान से बाहर रवाना हो पड़े। आगे से एक पठान मिल गया और बिना कुछ कहे वह पास से गुज़र गया। जब दरवाज़े से दोनों बाहर निकले तो भतीजा जवां को आवाज़ देता है कि चाचा मुड़ आ। जवां ने जवाब दिया:- नहीं, मैं बाबू को छोड़कर वापिस आऊंगा। उसने फिर आवाज़ दी- ''खान कहता है कि मुड़ आ।'' उस जवां ने फिर जवाब दिया:- ''खान को कह दो कि नहीं। यहां वह बात नहीं।'' इतनी देर में सिफू कुम्हार आ गया। वह भी बाबू जी के पास काम कर चुका था। जवां ने उसे कहा कि बाबू जी को साथ सड़क तक ले जावे। बुज़ुर्ग चौधरी तो बाबू जी को जानते हैं मगर छोकरे नहीं जानते थे। ऐसा न हो कि कोई हमला कर दे। सिफू रास्ते तक आया। आगे ब्राह्मण खड़े थे, उनसे मिलकर बाबू जी शुभ स्थान चले गए।

जब यह सब हालात सत्पुरुष के सामने कहे गए तो आपने फरमाया:- बाबू! संगत का रुपया तुम अपने पास से दे दो। इसमें तुम्हारा कल्याण है।

उपरोक्त कहानी के ज़िक्र करने की ज़रूरत इसलिए महसूस हुई कि बावज़ूद उन सब हालात के सत्पुरुष को संगत के रुपये का कितना ख़्याल था।

कुछ वाक्यात और भी हैं जिनका यहां ज़िक्र करना ज़रूरी है। जब सत्संग हाल की आज्ञा सतपुरुष से मांगी तो जैसा पहले ज़िक्र आ चुका है, सत्पुरुष ने सिर्फ पांच प्रेमियों को खर्च करने की

आज्ञा फरमाई थी, जिसमें से एक बाबू जी भी थे। सत्पुरुष एक सेवा का नमूना कायम कर रहे थे कि किसी को पता ही न लगे कि किसने सेवा की और कितनी सेवा की और सेवादार के अंदर ख़्याल तक पैदा न हो कि वह सेवा कर रहा है।

एक और वाक्या इस तरह का है कि 'समता स्थिति योग' की छपवाई की सेवा पंडित लक्ष्मण दास जी ने ली थी। छपवाने का काम भक्त जी के जिम्मे था। तीन सौ रुपये का उनमें झगड़ा पड़ गया। पंडित लक्ष्मण दास जी उन दिनों जम्मू लगे हुए थे। कहते थे:- उन्होंने भक्त जी को रुपया दे दिया है। भक्त जी कहते थे:- नहीं दिया। इसके बारे में पंडित जी सम्मेलन पर तेज़ भी हुए। मगर सत्पुरुष खामोश रहे और बाबू जी को हुक्म दिया कि रुपये तुम अपने पास से दे दो। ऐसे ही एक और रकम भी बाबू जी से दिलवा दी थी।

यह सब वाक्यात किसी को पता नहीं लगने दिए और बाबू जी के परम मित्र लाला बख़्शी राम जी को भी इनका पता नहीं दिया, जिसकी वजह से उन्होंने सत्पुरुष के सामने शिकायत की। सत्पुरुष फरमाया करते थे- ''सेवा ऐसी करो कि एक हाथ करे, दूसरे को पता न लगे। यानी निष्काम सेवा हो ताकि अहं ख़त्म हो।''

सत्पुरुष ने सब हालात शुभ स्थान वग़ैरा के सुनकर फरमाया:

''प्रेमियों! धर्म का मार्ग इस समय के वास्ते ही हुआ करता है कि मुसीबत में चित्त न डोले। मगर ऐसे मौकों पर बड़े-बड़े दिल वाले हौंसला छोड़ जाते हैं। सिवाए प्रभु विश्वास के और कोई चीज़ धीरज देने वाली नहीं। भय में भी रब याद आता है। इस जगह हर समय अपने शुभकर्म ही सहायता करने वाले होते हैं। सत्संग और अभ्यास के वास्ते सब प्रेमियों को कहना। इस वक्त चारों तरफ अशांति ही अशांति दिखाई दे रही है। अधिक वैर-विरोध की आग प्रचंड हो चुकी है। प्रेम के जल से ठंडी हो सकती है। मगर यह सोच बाद में आवेगी। धर्म का साथ ही हमेशा कल्याण किया करता है। अब इनका प्रोग्राम किसी एकांत जगह काफी देर रहने का है। प्रेमी जफर सिंह जी किसी अपने मित्र से सलाह कर रहे हैं। अनन्त नाग में किसी एकांत जगह का प्रबन्ध कर रहे हैं। इधर देहरादून से दीवान रला राम जी की पत्रिका भी आई है कि इधर पधारें।''

प्रेमी बिशनदास जी, चिनारी निवासी, उस तरफ से चलने के लिए हाज़िर हुए। प्रेमी पंडित राम जी दास फोतेदार, मटर निवासी उस तरफ तशरीफ़ लाने के लिए बार-बार पत्र लिख रहे थे। बाबू जी और मलिक जी एक हफ्ता ठहर कर वापस चले गए।

19 अप्रैल, 1947 को श्री महाराज जी जम्मू से मटन के लिए रवाना हो पड़े। प्रेमी बिशनदास जी साथ थे। ठाकुर जफर सिंह जी, पंडित रघुनाथ, वज़ीर वज़ारत अनन्त नाग को टेलीफोन श्री महाराज जी के आगमन का कर दिया था। जब बस अनन्त नाग पहुंची तो वहां पेट्रोल पम्प पर एक आदमी मिला जिसने अर्ज़ की:- यहां के वज़ीर वज़ारत श्री रघुनाथ जी अनन्त नाग में हैं। उन्होंने आपको यहां ठहराने को कहा है। श्री महाराज जी ने जवाब दिया:- ''मटन जा रहे हैं। उन्हें कह देना पंडित रामजी दास फोतेदार के यहां ठहरेंगे।'' वहां से बस से उतर पड़े। भक्त जी ने अर्ज़

की:- महाराज जी! वज़ीर वज़ारत का आदमी आया हुआ है। आपने फरमाया:- ''तुमको पता नहीं, पहले प्रेमी के पास पहुंचना चाहिए। ख़बर तो उसको पहुंच गई। ख़्वाहिश हुई तो वहां पर आप ही आ जावेगा। मानी लोगों के पास जाने का और तरीका है। ज़िला का डिप्टी कमिश्नर है, तुम उसे मामूली आदमी समझते हो। चलो, तांगे पर सवार होकर मटन पहुंचो।''

मटन पहुंचने पर पंडित रामजी दास फोतेदार बहुत ही प्रसन्न हुआ। उन्होंने अपने मकान में आसन लगा रखा था। सीधे वहां ही ले गए। करीबन दिन के ग्यारह बजे का वक्त था। काफी ठंडी हवा चल रही थी। फौरन ही पंडित जी कहवा ले आए। सबको कहवा पिलाया गया। उसके बाद श्री महाराज जी को दूध वाली चाय पिलाई गई। भक्त जी को भोजन चावल खिलाए गए, फिर उसके बाद आराम किया गया।

शाम को वज़ीर वज़ारत पंडित रघुनाथ जी मट्टू और अन्य लोग मय एक रईस के साथ चरणों में हाज़िर हुए। प्रणाम करके अर्ज़ की:- ''महाराज जी! हम उधर इंतज़ार में थे। आदमी भेज रखा था, आप इधर चले आए। वक्त का ठीक पता न होने के कारण खुद अड्डे पर हाज़िर नहीं हो सका। आपके एकांत के वास्ते दो चार रोज़ में ही बंदोबस्त हो जावेगा। इंतज़ाम कल से ही शुरू कर देंगे।'' पंडित राधा कृष्ण जी राजदान रईस, जो साथ आए थे, अर्ज़ करने लगे:- ''महाराज जी! हम पर ज़रूर दया करें। पास ही पांच छ: मील की दूरी पर हमारी झोंपड़ी है। पहले उसे पवित्र करें, फिर सब ठीक हो जाएगा।'' बड़े श्रद्धा प्रेम से उन्होंने प्रार्थना की और अर्ज़ भी की-कि कोई आदमी साथ चलकर जगह देख आए। महाराज जी ने बहुत टालने की कोशिश की मगर पंडित जी न माने। मट्टू साहब कहने लगे:- ''हम अभी जगह दिखलाकर ला सकते हैं। महाराज जी हुक्म करें।'' इन सबका प्रेम श्री महाराज जी देख रहे थे। ऐसा विचार चल रहा था, पंडित रामजी दास कहने लगे:- ''धन्य भाग्य हमारे, आप सबके दर्शन हुए।''

मकान के पिछली तरफ से बहुत सी कारें आती दिखाई दीं। सबने हाथ जोड़कर नमस्कार किया। महाराज जी ने पूछा:- क्या बात है? मट्टू साहब ने कहा:- ''महाराज जी! महाराजा हरि सिंह मछलियों का शिकार खेलकर अपने महल में वापिस जा रहे हैं।'' उस वक्त महाराज जी ने फरमाया:

''दुनिया वाले मर रहे हैं और इसे शिकार की पड़ी है। इसे कोई सोच नहीं कि इधर भी कल ऐसा न हो जाए।'' कहवा पीने के बाद प्रेमी राजदान जी फिर प्रार्थना करने लगे। आख़िर उनकी श्रद्धा और प्रेम को देखकर श्री महाराज जी ने भक्त जी को इशारा किया-कि प्रेमी जाओ, इनका प्रेम पूरा कर आओ।

इस पर सबने नमस्कार करके आज्ञा ली और भक्त जी को कार में बिठाकर सालहा नामी गांव में ले गए। पंडित जी ने जब कार घर के पास खड़ी की, सब गांव वाले जमा हो गए और अपनी-अपनी अर्जियां वज़ीर वज़ारत साहब को पेश की। भक्त जी को साथ लेकर पंडित राजदान जी जगह दिखाने के वास्ते ले गए। मकान की दूसरी तरफ अच्छा बड़ा कमरा मेहमानों के वास्ते जो

बनाया हुआ था दिखाया, फिर बाहर बैठने वाली जगह दिखाई जो एकांत थी। पंडित जी कहने लगे:–''उससे ज़्यादा एकांत जगह का भी बंदोबस्त हो सकता है। फिलहाल इधर ही आकर दो–चार रोज़ कृपा करें। फिर बड़ी–बड़ी अच्छी एकांत जगहें दिखाई जावेंगी और जो जगह पंसद आई उसका इंतज़ाम कर दिया जावेगा।'' बीस मिनट वहां ठहरकर फिर कार में वापस मटन पहुंचा दिया गया। पंडित राधा कृष्ण जी भी साथ आए। नमस्कार के बाद अर्ज़ की:– ''अब तांगा किस दिन भेजूँ?'' महाराज जी हँसकर फरमाने लगे:

''प्रेमी, क्या बताएं? तुम्हारे प्रेम को ठुकराया भी नहीं जा सकता और हां भी नहीं कर सकते।''

पंडित राधा कृष्ण जी ने कहा:– ''हम आपको ज़रूर ले जाएंगे। जगह न पसन्द आने पर फिर जैसा फरमाएंगे वैसा कर लिया जावेगा।'' इनका अगाध प्रेम देखकर श्री महाराज जी ने फरमाया:

''अच्छा, 23 अप्रैल, 1947 को इधर से दो–तीन रोज़ के वास्ते चलेंगे, फिर जैसी प्रभु की आज्ञा।'' पंडित जी ने अर्ज़ की:– ''अगर किसी वजह से खुद न आ सका, श्री नगर चला गया तो मेरा भाई अमरनाथ आवेगा। अब प्रोग्राम न बदलें।'' नमस्कार करके वापिस हुए।

प्रेमी बिशनदास जी कहने लगे:– महाराज जी! चिनारी की तरफ हमने अच्छी जगह आपके लिए देखी हुई है। आप उधर तशरीफ़ ले चलें।

श्री महाराज जी ने फरमाया:– ''रोज़–रोज़ उधर नहीं जाना हो सकता। यह जगह भी कोई दूर नहीं। प्रभु खुद ही प्रेरणा कर रहे हैं। आए किस के लिए थे, ले कौन जा रहा है।''

श्री रामजी दास जी के रिश्तेदार पंडित दामोदर जी वहां मौजूद थे। कहने लगे:– ''महाराज जी! इधर बड़ी–बड़ी एकांत जगहें हैं और पानी के चश्में हैं। पंडित राधा कृष्ण जी के आगे ही हमारा घर है। उस तरफ भी बन्दोबस्त हो सकता है। अब तो इधर ही कृपा करें। हम पर दया करके तब आगे जा सकते हैं।'' मटन में श्री महाराज जी दो दिन ठहरे। सुबह एक बर्फानी नाले पर, जो मटन से दो–तीन फलांग के फ़ासले पर था, चले जाते। पंडित दामोदर दास जी ने अपने संशय इन दो–तीन दिन में निवारण कर लिए और शिक्षा ग्रहण की।

23 अप्रैल को दो बजे पंडित अमरनाथ जी दो तांगे लेकर आ गए और श्री महाराज जी को इनमें सवार करके सालहा ले गए और बाग में ले आए। श्री महाराज जी ने बागवाली जगह देखकर फरमाया:

''प्रेमी, यह जगह फ़कीरों के वास्ते नहीं। यह तुमने बड़े–बड़े अफ़सरों के वास्ते बनाई है। फ़कीरों के वास्ते झोंपड़ी होनी चाहिए।

प्रेमी राजदान जी ने अर्ज़ की:– कल चाय और लंगर के बाद बनारसी दास जी के साथ किसी आदमी को भेजेंगे, जो उसे जगह दिखला लाएगा। आपने हम पर बड़ी कृपा की है कि खुद पधार कर हमारे गृह को पवित्र किया है, वर्ना अगर मुझे तलाश करनी पड़ती तो बड़ी मुश्किल थी।

महात्मा बड़े दयालु होते हैं। हमारी तकलीफ़ को देखते हुए इधर ही कृपा कर दी है। श्री महाराज जी हँसने लगे और फरमाया:- ''प्रेमी! प्रभु बड़े प्रेरक हैं। वह खुद ही सबके अंदर प्रेरणा करते हैं।''

जे साहिब कुछ करनी लोड़े।
सो सबब इक पल विच जोड़े॥

काफी देर तक विचार चलता रहा। फिर पंडित जी, प्रेमी बिशनदास और भक्त जी को साथ ले गए कि भोजन खा आएं और श्री महाराज जी के लिए थोड़ा दूध ले आएं। श्री महाराज जी ने दूध भेजने से मना किया। मगर पंडित जी बड़े प्रेम से कहने लगे:- ''महाराज जी! आज का दिन खाली नहीं जाना चाहिए।''

जब भक्त जी रसोई घर में पहुंचे, आगे वहां पंडित दामोदर जी और कई बाहर के आदमी व रिश्तेदार बैठे हुए थे। एक साथ बीस-बाईस आदमी बैठ गए। पहले भंडारी ने आकर गोबर का लेप किया, फिर लकड़ी की चौकियां धोकर सबके आगे रखीं। फिर थालियों में परोसा हुआ भात आ गया। रोटी पकाने का इस तरफ़ रिवाज़ नहीं था। भोजन पाने के बाद दूध लेकर चरणों में पहुंचे। बड़ी मुश्किल से श्री महाराज जी ने एक ख़ासू दूध लिया बाकी भक्त जी व प्रेमी बिशनदास ने पिया। दो-तीन अनजान आदमी भी खाने पर बैठे थे। उस वक्त उनसे किसी ने नहीं पूछा कि वह कौन हैं और कहां से आए हैं? जब खाना खा चुके तब उनसे, जब वह चबूतरे पर बैठे थे, पूछा कि-किधर से आए हैं और क्या काम है?

सब हालात सुनकर श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''कश्मीर के ब्राह्मण बड़े मेहमान नवाज देखने में आ रहे हैं। किस कदर प्रेम भाव है, और जगह के ब्राह्मणों की तरह खुश्क स्वभाव के और हलवा मांडा खाने वाले नहीं हैं।''

पंडित जी कई गांवों के मालिक थे। अब उनका एक बड़ा भारी संशय था कि यह ज़मीन आने वाली सरकार ले लेगी। विचार हो रहा था, पंडित जी ने आकर नमस्कार किया और कहने लगे कि किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो बंदा हाज़िर है। फिर कहने लगे:- ''हिन्दुस्तान-पाकिस्तान बन रहा है। एक सयासी पार्टी भी ऐसा कानून बनाना चाहती है जिससे ज़मीन छीनकर आप लोगों में तक्सीम कर दी जावे।'' काफी देर तक इसके बारे में विचार करते रहे और श्री महाराज जी से पूछते रहे। श्री महाराज जी ने तसल्ली दी कि सबके साथ एक जैसा बर्ताव होगा। अक्सर तबदीलियां होती आई हैं। प्रभु सबका रखवाला है।''

पंडित जी नमस्कार करके चले गए। भक्त जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! तुम भी जाकर लेट जाओ। सुबह जगह का विचार कर लेना। ज़्यादा इधर नहीं ठहरना चाहिए क्योंकि यह प्रेमी हालात से वाकिफ़ नहीं है। बोझ ही महसूस न करें। बिन बुलाए ही मेहमान आख़िर ठहरे। दो-चार रोज़ में इनके विचार का अच्छी तरह पता चल जाएगा।''

भक्त जी ने अर्ज़ की:– ''पंडित जी दिखावे की बात तो नहीं कर रहे। हर बात बड़े प्रेम भाव से प्रगट कर रहे हैं।'' फिर प्रणाम करके लेट गए और सो गए।

भक्त जी सुबह महाराज जी के साथ जब बाहर गए, महाराज जी आगे निकल गए और एक तरफ जाकर अपनी आनन्दित अवस्था में लीन हो गए और भक्त जी वापिस डेरे पर आ गए। कुछ समां यहां ठहरने के बाद फिर बाहर महाराज जी को लेने के लिए चले गए। रास्ते में एक कोहिल पानी की बह रही थी, उसमें स्नान किया गया और स्थान पर वापिस पधारे। इसके बाद पंडित जी चाय बनवाने के वास्ते भक्त जी को साथ ले गए। भोजन पाने और चाय पिला चुकने के बाद पंडित जी ने भक्त जी के साथ अपनी एक अजीज़ जगह दिखाने के लिए भेजा। वह भक्त जी को तीन मील ले गया। रास्ते में कई जगहें दिखलाईं। जब पहाड़ के दामन में नहर के किनारे पहुंचे तो दो-तीन कमरे दूर बने हुए दिखाई दिए। पास ही सुन्दर चश्मे का ठंडा पानी बहता हुआ देखा। इस जगह का नाम कारकुट नाग था। कारकुट शिवजी महाराज का नाम था और नाग चश्मे को कहते हैं। वह कश्मीरी पंडितों का तीर्थ था। अक्सर कश्मीरी पंडित यहां आकर यज्ञ वग़ैरा करते और वहां ही रहते। बाहर का हिस्सा मुसलमान भाइयों की ज़्यारत गाह (पूजा स्थल) थी। जो मुसलमान आता बाहर दरख़्त की टहनी से हरी, लाल, नीले रंग के कपड़े की टाकी (पट्टी) लटका कर सलाम करके चला जाता। अंदरूनी हिस्से में पंडित लोग हवन वग़ैरा करते। जगह बड़ी सुन्दर थी। पानी, हवा, एकांत दृश्य हर लिहाज़ से उपयुक्त था। प्रेमी बिशनदास जी भी साथ थे और कहने लगे:– श्री महाराज जी ज़रूर इसे पंसद करेंगे।

वापिस जाकर श्री महाराज जी की सेवा में सब हालात अर्ज़ किए गए। श्री महाराज जी फरमाने लगे:– ''कमरों में नहीं ठहर सकते। न जाने कब कोई आकर मेला लगा दे। हिन्दू मुसलमान दोनों का तीर्थ है, किस-किस को मना करेंगे।'' पंडित जी ने कहा कि कमरों में रहने के लिए बंदा खुद भी हक में नहीं है। वहां दूसरा बंदोबस्त कर दिया जावेगा। आप खुद फरमाएंगे, यह सिलसिला ठीक है। हमारे पास डबल छोलदारियां बढ़िया पड़ी हुई हैं और टेंट भी मौजूद हैं। रसोई की जगह अलग तैयार हो जाएगी। आप सिर्फ़ ख़िदमतगार को आज्ञा दें। बंदा वहां दो रोज़ ठहरेगा। जगह का इंतज़ाम ठीक करके आपको बुलवा लिया जावेगा।

महाराज जी ने फरमाया:– ''प्रेमी! फ़कीरों को ठहराने में काफी तकलीफ़ हुआ करती है। कोई आया, कोई गया। इतना बोझ तुम्हारे ऊपर नहीं डालना चाहिए।''

पंडित जी ने कहा:– ग़रीब नवाज महाराज जी! सब कुछ फ़कीरों महात्माओं की ही दौलत है। हम भी आपकी कृपा से खा रहे हैं। खाने-पीने की बातों की तरफ ध्यान ही न करें। बस आज्ञा बख़्शें।

महाराज जी ने बार-बार कई तरीके से इंकार किया मगर अन्त में आज्ञा बख़्शी। पंडित जी ने ख़ुद जाकर सब ठीक करवाया। टेंट वग़ैरा लगवा दिए गए और रसोई बनवा दी गई और पहली मई को संदेशा भेजा कि श्री महाराज जी तशरीफ़ ले आवें। श्री महाराज जी को घोड़े पर सवार करवा

कर वहां डेढ़ घंटे में पहुंचा दिया गया। आपके लिए जो टेंट लगाया था उसमें कालीन बिछाकर ऊपर आसन लगाया हुआ था। बाकी सारा इंतज़ाम बहुत सुन्दर किया हुआ था। लंगर के लिए सब सामान भी पहुंचा दिया गया था। महाराज जी ने सारे इंतज़ाम को सराहा।

जब कारकुट नाग जंगल से प्रेमी राधा किशन का पैग़ाम तशरीफ़ लाने के बारे में पहुंचा था तो आपके पवित्र मुख से यह वचन निकले:- ''प्रेमी के प्रेम ने बांध लिया है।''

जब श्री महाराज जी आसन पर विराजमान हुए तो प्रेमी राधा किशन ने अपने एक नौकर को, जिसका नाम ऋषि मुहम्मद था और सब उसे ऋषि-ऋषि कहकर पुकारा करते थे, चरणों में हाज़िर करके अर्ज़ की:- महाराज जी! हमारा यह ख़ास आदमी यानि काश्तकार है। यह यहां की हर बात का ध्यान रखेगा। दूध वग़ैरा यह ही पहुंचाएगा। लकड़ी वग़ैरा जिस चीज़ की ज़रूरत होगी यह ला दिया करेगा और दूसरा आदमी रोज़ाना डाक व अखबार पहुंचा जाया करेगा। जिस चीज़ की ज़रूरत है उसके हाथ पर्चा लिखकर भेजने की कृपा फरमा दिया करें। उसे सेवा में पहुंचा दिया जावेगा। आज्ञा हो तो रोटी पकाने के लिए भी आदमी भेज दिया जावे।

श्री महाराज जी यह सब सुनते रहे और अन्त में फरमाया:

''प्रेमी! तुमने जंगल में मंगल बना दिया है। तुम्हारा इस कदर सत् भाव देखकर फ़कीरों को इधर ठहरना पड़ गया है, वर्ना उड़ते पंछियों को कौन फंसाने वाला है? ईश्वर तुमको सत् विश्वास बख़्शें।'' शाम का समय था थोड़ा वक्त रह जाने पर पंडित जी ने, नमस्कार करके जाने की आज्ञा मांगी। सत्पुरुष ने आज्ञा दे दी और पंडित जी रवाना हो पड़े। बनारसी दास जी उन्हें छोड़ने के लिए कुछ दूर साथ गए। रास्ते में पंडित जी ने कहा:- अगर डर हो तो रात को एक आदमी इधर सोने के वास्ते भेज दिया जावे क्योंकि ज़माने की हवा ही ऐसी है, यद्यपि इस तरफ के लोग शरारती नहीं।

भक्त जी ने अर्ज़ की:- श्री महाराज जी की दया दृष्टि से सब ठीक ही रहेगा। जहां सत्पुरुष निवास करते हैं जंगली दरिंदे भी वहां अपनी दरिंदगी त्याग देते हैं। बेशक रीछ, शेर वग़ैरा हैं तो सही, मगर सत्पुरुष ऐसे-ऐसे जगंलों में रह चुके हैं जहां ऐसे दरिंदे बहुतायत से थे और रात को सत्पुरुष जंगल में जाकर समय व्यतीत किया करते थे और ऐसा प्रतीत होता था कि यह जानवर उनका पहरा देते थे।

इस पर पंडित जी ने फरमाया:- ज्यूं-ज्यूं गर्मी होगी यह पीछे ठंडी जगह चले जावेंगे। फसल मक्की जब तैयार होगी तब वह जानवर आवेंगे और सर्दी के मौसम में इधर ही रहेंगे। इसके बाद पंडित जी चले गए और भक्त जी वापिस लौट आए।

रात होने को थी। सर्दी बढ़ रही थी। ऋषि ने तम्बू के सामने काफी लकड़ियां लाकर इकट्ठी कर दीं और इन्हें आग लगा दी। अत्याधिक सर्दी के कारण हरी चाय का कहवा इस्तेमाल किया गया। इसके बाद भक्त जी ने देव वाणी का पाठ किया और फिर आरती की। इसके बाद श्री

महाराज जी ने भक्त जी को 'समता प्रकाश' ग्रन्थ की लिखाई शुरू करने की आज्ञा दी और हिदायत फरमाई कि आराम से अच्छी तरह लिखना। कोई जल्दी नहीं है। खुला समां है।

कई प्रेमी इस जगह भी दर्शनों के लिए हाज़िर होते रहे और बाबू अमोलक राम जी भी चरणों में हाज़िर हो गए। चौधरी फकीर चंद जी भी शारियां से दर्शनों के लिए हाज़िर हुए।

एक दिन का वाक्या है कि यहां बाबू जी को बुख़ार आना शुरू हो गया। वह तम्बू के आगे लेटे हुए थे कि लंगर के कमरे को आग लग गई। शोले उठने लगे और बाबू जी ने भक्त जी को आवाज़ दी- कि भक्त जी जल्दी पहुंचो, आग लग गई है। भक्त जी उस वक्त जंगल में ग्रन्थ की लिखाई कर रहे थे। श्री महाराज जी जंगल में एकान्त स्थान पर समाधिस्थ थे।

दरअसल चौधरी फकीर चंद जी लंगर खाने में जाकर कुछ पनीर की टिकियां तलने लगे थे। आग तेज़ थी। ज्यूं ही चौधरी जी ने टिक्की तवे पर डाली एक दम तेल को आग लग गई और शोलों ने छलकी झलाफूं को आग लगा दी। शोले खूब बुलन्द हो उठे। चौधरी जी ने सामान आटा वग़ैरा फ़ौरन निकाल लिया। भक्त जी और ठाकुर दीवान सिंह ने आकर चश्मे से, जो पास ही था, पानी लाकर छत पर अंदर से डालना शुरू कर दिया। श्री महाराज जी भी तशरीफ़ ले आए और बाबू जी को डांटा कि तुम खड़े क्या कर रहे हो? बाबू जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! बुखार चढ़ा हुआ है। फिर फरमाया:- आग कैसे लगी? जब बतलाया गया कि चौधरी जी पनीर की टिकियां तलने लगे थे और जब टिक्की डाली तो तेल को आग लग गई और छत तक पहुंच गई। इस पर आपने फरमाया:

''चौधरी! अभी तुमने रोटी खाकर पेट भरा था। फिर इतनी जल्दी क्या आग लग गई थी? दो मिनट आराम से नहीं गुज़ार सकते थे?'' इसके बाद मुस्करा कर फरमाने लगे:

''फ़कीरों की कुटिया को आग लग जानी कुछ मायने रखती है। शांति होनी मुश्किल है।'' फिर मुख से वचन निकले- ''पता नहीं कहां-कहां की आग इस जगह लगी है।'' यह एक रमज़ (रहस्य) थी जिसे वह जानते थे। थोड़ी देर बाद आग बुझ गई।

उस समय देश के हालात ख़राब थे। बटवारा होने वाला था। लोग घबराए हुए थे। उसी समय महाराजा हरी सिंह इस इलाके में दरियाओं में से मछलियों के शिकार के लिए आया हुआ था और शिकार कर रहा था। उस वक्त ही कुछ कश्मीरी पंडित साथ ही तीर्थ पर आए और सत्पुरुष ने उन्हें कहा:- उसे समझाओ, वह क्या कर रहा है? इधर तबाही आ रही है और उसे मछलियों के शिकार की सूझ रही है।

उसी समय में आपने प्रसंग 'नित का जीवन नित की शांति, नित का सूरज केवल समता ही है' लिखा, जिसे बाबू अमोलक राम जी ने नकल किया और इसके चन्द दिन बाद अन्य प्रसंग 'जिज्ञासु का निर्मल प्रण', 'समता परम स्वराज', 'शक्ति तत्त्व का निर्णय' भी लिखे जिन्हें बाबू जी ने नकल कर लिया। यह सब अब समता विलास में छप चुके हैं।

इस तरफ कश्मीरी पंडितों में मांस खाने का रिवाज़ बहुत था। पुरुष ही नहीं, औरतें भी इसका इस्तेमाल करती थीं। जब भी कश्मीरी पंडित तीर्थ पर आते और वहां से होकर दर्शनों के लिए आते तो आप उनको हिदायत फरमाते कि मांस का इस्तेमाल बंद करें। यह ऋषि भूमि है। कश्यप ऋषि की यह तपोभूमि है और फरमाते कि गो आप लोगों का आपस में प्रेम, मोहब्बत व सलूक है लेकिन अगर निर्मल ख़ुराक हो तो बहुत कुछ धर्म के मार्ग में आप लोग कदम आगे बढ़ा सकते हैं। इन्हें ख़बरदार भी करते कि तुफान से बचाने वाले ही जीव के अपने कर्म हैं।

कई दफ़ा इस भूमि पर भी तूफान आए और आप लोग बचते आए हो, अब भी हालात बिगड़ रहे हैं। इसलिए बाहोश हो जाओ और पुरातन ऋषियों की शिक्षा को ग्रहण करो। तुम्हारे शुभ कर्म ही तुम्हारी रक्षा करने वाले हैं।

पंडित राधा कृष्ण जी भी उस दिन हाज़िर थे। उन्होंने सत्पुरुष के वचनों को सुनकर अर्ज़ की:– ''महाराज जी! प्रभु ने आपको इस इलाके में पहले ही हमारी हिफ़ाजत के लिए भेज दिया है। इस इलाके में कुछ नहीं हो सकता।'' इस पर श्री महाराज ने फरमाया :

''प्रेमी! विश्वास बड़ी चीज़ है। प्रभु सबको धीरज देवें और धर्म मार्ग में प्रतीत बख़्शें। जब सब नमस्कार करके वापिस जाने लगे तो पंडित जी ने अर्ज़ की:– ''महाराज जी! कुछ आज्ञा फरमाईये।'' इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया:– ''प्रेमी! अब इस जगह चंद रोज़ ही और हैं। श्रीनगर वाले प्रेमी प्रोग्राम मांग रहे हैं। कुछ समां उधर भी देना होगा। 3 जुलाई को इधर से चलने का समय निश्चित किया हुआ है। एक-दो रोज़ सालहा में ठहरकर फिर मटन होते हुए आगे जाने का विचार है।''

इस पर फिर पंडित जी ने अर्ज़ की:– महाराज जी! ठहरने के दिन तो अब आगे आ रहे हैं। इस पर आपने फरमाया:– ''तुम्हारे प्रेम करके इधर काफी अच्छा समां गुज़ार दिया है। प्रभु तुमको शांति देवें। फिर कभी तुम्हारे बुलाने पर आना होगा।''

बाबू अमोलक राम जी को बुख़ार रोज़ाना हो जाता था। इस दौरान उन्होंने सेवा में अर्ज़ की:– महाराज जी! मुझे बुख़ार नहीं छोड़ता। अगर आप आज्ञा देवें तो मैं श्रीनगर चलकर इलाज करवाऊं। इस पर आपने बाबू जी को आज्ञा दे दी और फरमाया:– ''तू चल, यह भी आते हैं।''

जाने से पहले प्रेमी राधा किशन जी ने भक्त जी से पूछा:– इस जगह किसी किस्म की तकलीफ़ तो नहीं रही, जिस करके महाराज जी जल्दी जा रहे हैं। भक्त जी ने कहा:– ''नहीं जी, कोई कमी नहीं रही।''

जब भक्त जी चरणों में हाज़िर हुए तो आपने पूछा:– प्रेमी! पंडित जी क्या कहते थे? तो भक्त जी ने अर्ज़ की:– वह पूछते थे कि इस जगह किसी किस्म की तकलीफ़ तो नहीं रही, जिस वजह से श्री महाराज जी जल्दी जा रहे हैं, और अर्ज़ की–कि महाराज जी बड़े प्रेम भरे शब्दों द्वारा मन के भाव प्रगट कर रहे थे। यह नहीं कि अपने प्रेमी ही ऐसा कर सकते हैं।

सत्पुरुष फरमाने लगेः- ''प्रेमी! ग़ैर प्रेमी का भाव ही दिल से निकाल दो। सबके अंदर मालिक की जोत एक समान है। प्रेमियों से यह प्रीत करते हैं। हर जगह से उनको ऊपर उठाने की कोशिश करते हैं। मगर फिर मूढ़ के मूढ़ ही रहे हैं। क्या चिनारी, डोमेल कोई दूर जगह हैं? इस इलाके में सेवा करना क्या उनका हक नहीं था? मगर बुद्धि कौन दे।''

चौधरी फकीर चंद जी ने कहाः- ''महाराज जी! दास आपकी सेवा में सबकी तरफ से आया हुआ है। यह कमी मेरी तरफ से रह गई है। आप जो मुनासिब ख़्याल फरमावें कर सकते हैं।'' ''जे मैं पूत कपूत हों तो पिता को लाज।''

फिर श्री महाराज ने फरमायाः- ''प्रेमी! यह नाराज़ किसी के ऊपर नहीं हैं। कुछ अपनी होश भी होनी चाहिए।''

10 जुलाई, 1947 को पंडित राधा किशन जी व पंडित दामोदर जी पधारे और आश्रम में डेरा लगाया। तीसरे रोज़ लंगर से फ़ारिग होकर चार बजे श्री महाराज जी को घोड़े पर सवार कराकर आप पैदल रवाना होकर सालहा में पधारे। प्रेमी ऋषि मुहम्मद काफी दूर छोड़ने के लिए आया। आज्ञा अनुसार पांच रुपये उसे बच्चों के लिए दे दिए गए।

सालहा पहुंचने पर पंडित जी के बाग में चबूतरे पर आसन लगाया गया। इस जगह मच्छर बहुत था, मगर गोबर का धुंआं उसे दूर करने के लिए कर रखा था। पंडित जी के सब परिवार के मैम्बर, इलाके का पटवारी और अन्य लोग भी प्रणाम करने के लिए हाज़िर हुए।

इस जगह देश के हालात के बारे में बातचीत का सिलसिला कई लोकल लोग शुरू कर देते, मगर सत्पुरुष जो वचन उच्चारण फरमाते वे मेल मिलाप वाले होते, यद्यपि कुछ लोग तास्सुब की बातें कर जाते थे।

सालहा से रवानगी से पहले पंडित राधा किशन जी ने दो अदद कश्मीरी लोईयाँ, ऊपर कुछ रुपये रखकर चरणों में भेंट की। मगर आपने इस सबको उठाकर पंडित जी की झोली में रख दिया और फरमायाः- ''प्रेमी! सेवा में कोई कसर छोड़ दी है? अगर कभी ज़रूरत हुई मंगवा ली जाएंगी।''

127. मटन व श्रीनगर के लिए रवानगी

12 जुलाई, 1947 को आप सालहा से तांगा द्वारा रवाना होकर मटन पहुंचे और पंडित रामजी दास फोतेदार के गृह पर आसन लगाया। देश के हालात बिगड़ते जा रहे थे। आम जनता घबरा रही थी। आपने सबको धीरज देते हुए फरमायाः- ''प्रेमियों! इस भयानक समय में ईश्वर सबको धीरज देवें और सत् विश्वास बख़्शें। प्रेमियों, घबराने से काम नहीं चलेगा। यह हवा किसी एक के वास्ते नहीं चल रही है। तूफान जब आता है सब अमीर-ग़रीब, पशु-पंछियों पर असर करता है और सबको परेशान होना पड़ता है।

128. अंधकार परस्ती के प्रति चेतावनी

मटन पहुंचने पर दूसरे दिन चौधरी फकीर चन्द जी सुबह सैर करने के लिए गए और मटन के पंडितों के अड्डे चढ़ गए। पुराने रस्म व रिवाज़ के मुताबिक सिर, दाढ़ी, मूंछे मुंडवाकर अपने बुज़ुर्गों के पिंड आदि भरवाए। इस कार्य में उन्हें काफी देर लग गई। जब चौधरी जी वापिस चरणों में हाज़िर हुए तो आपने देखकर फरमाया:

''प्रेमी! तुम्हारी इधर इंतज़ार कर रहे थे। सुबह से तुम किधर सैर को गए हुए थे और यह क्या रंग बना आए हो?'' चौधरी जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! अपने पांडों ने घेर लिया था। सिलमास (पित्र पक्ष) के दिन थे। उन्होंने ज़ोर दिया कि पितरों को जल इत्यादि देकर प्रशाद पाकर जाओ। उनके चक्कर में फंस गया और उनके कायदे के मुताबिक पितरी पूजा करने में देर लग गई।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''अभी तक तुम ऐसे अन्धेरे में ही पड़े हुए हो। क्या तुम अपने पितरों को तार आए हो? बाकी के किधर जाएंगे? यह ही समता की तालीम से तुमने सबक सीखा है, फिर वही अन्धकार परस्ती कर आए हो। प्रेमी, जिनकी अभी तक अपनी गति नहीं हुई वह दूसरे की क्या गति करवा सकते हैं? बहुत बात थी तो पांडों को उनका टैकस देकर वापिस आ जाते। जब तुम उनके अड्डे पर चले गए, उन्होंने क्या तुम्हें छोड़ना था?''

129. श्रीनगर में सत् उपदेश

दो-तीन दिन मटन में निवास करने के बाद आप श्रीनगर तशरीफ़ ले आए। इस जगह सत्संग का समय साढ़े पांच बजे से साढ़े छः बजे तक रखा गया और प्रेमी सत् उपदेशों का लाभ उठाने लगे।

इस दौरान बाबू अमोलक राम जी को एक पत्र जेहलम से आया कि एक केस दायर करना है इसलिए जेहलम पहुंचें। बाबू जी ने पत्र सेवा में रखा तो आपने हुक्म दिया-कि जाओ, मगर रास्ते में हालात देखते जाना।

27 जुलाई, 1947 को बाबू जी श्रीनगर से रवाना होकर चिनारी, डोमेल ठहरते हुए जब कोहाला, जलमादा पहुंचे तो पता लगा कि जो स्कीम झगड़ों के दौरान रावलपिंडी ज़िला में चलती रही थी कि हर मस्जिद में मुल्ला भेजा गया था और हर गांव में दो-दो पठान भेजे गए थे, अब यह स्कीम पुंछ की तरफ चल रही थी। बाबू जी ने सब हालात सेवा में लिख दिए और अर्ज़ की:- महाराज जी! अब रियासत में भी झगड़ा होने वाला है।

श्री महाराज के श्रीनगर पहुंचने के कुछ दिन बाद प्रेमी दीवान चन्द छम्बियां निवासी सेवा में हाज़िर हुए। प्रेमी बहुत दुःखी था। चरणों में प्रणाम करके जब बैठा तो आपने उसकी दुःखी हालत देखकर पूछा:- ''प्रेमी! तुम किधर?''

ग़म के कारण पहले तो प्रेमी दीवान चंद के मुंह से कोई बात नहीं निकली। कुछ देर संभलने के बाद बतलाया:- किस तरह मुसलमानों ने हमला करके उनके गांव को आग लगाई और अन्य छम्बियां निवासियों के साथ उनके परिवार के सात मैम्बर भी कत्ल कर दिए गए और कैसे वह अपनी जान बचाकर वहां से भागे?

सारा वृतांत सुनकर आपने फरमाया:- ''प्रेमी! होनी बड़ी बलवान है। किस तरह तुम आराम से ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। मगर इन फ़िसादात व खून-ख़राबे ने क्या रंग बना डाला है? प्रभु तुम्हें धीरज देवें ताकि इस सदमे को बर्दाश्त कर सको। प्रेमी, सबने एक दिन एक दूसरे से जुदा होना है। प्रभु सत् विश्वास बख़्शें।''

एक दिन सत्संग के दौरान आपने निम्नलिखित सत् उपदेश देने की कृपा फरमाई।

चार किताबाँ अरशों आइयां, पंजवां आया डंडा॥

''जब-जब जीव धर्म मर्यादा को भूल जाते हैं, कहर इलाही (ईश्वर) नाज़ल हुआ करता है। जंग व जलद, लूट-खसोट, मारकाट का बाज़ार गर्म होता है। अति तमोगुण बढ़ जाते हैं और ऐसा ही हुआ करता है। इस समय भी न तो खाने-पीने की और उठने-बैठने की तमीज़ है। मानुष और पशुओं के जीवन में कोई फ़र्क नहीं रहा। गिरावट की इस समय हद हो गई है। प्रेम भाव ख़त्म हो चुका है। वैर-भाव अधिक बढ़ गया है। राम कृष्ण के नाम लेवा, उनकी शिक्षा को भूल गए हैं।धर्म का स्वरूप उनकी मूर्तियों को धूप दीप देना ही समझ रखा है। गीता का वह फ़िल्सफ़ा व ज्ञान जो च्यूंटी से लेकर ब्रह्मा तक व तिनकों, पहाड़ों में उस आत्मा को व्यापा हुआ देखना सिखलाता था, वह अलोप हो चुका है। सर्गुण व निर्गुण पूजा का मतलब अपनी मर्ज़ी के मुताबिक निकाला जा रहा है। सत्पुरुषों के फरमान के मुताबिक सर्गुण देह में निर्गुण आत्मा की खोज को भूलकर पत्थरों को गले से लगा रहे हैं, और जीवों के बधिक बन रहे हैं। जिनको आज भगवान, परमात्मा करके पुकार रहे हैं उस सत्पुरुष ने सती द्रौपदी के हाथों पकवान तैयार करवाकर स्वपच (भंगी) को तृप्त करवाया, तब युधिष्ठिर का यज्ञ सम्पूर्ण हुआ। राम, जिन्हें अवतार मानते हो, उन्होंने शबरी भीलनी के चरण जल में डलवा कर उसे शुद्ध करवाया। उसके झूठे बेर खाए। आज उनके पुजारी उन्हें नीच बताकर उनको धक्के मार रहे हैं। उनसे ऐसा सलूक करने का नतीजा आज सामने देख लो। अखंड भारत के टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं। ज्यों-ज्यों नफ़रत का जज़्बा कम होता जावेगा त्यूं-त्यूं हालात भी बेहतर हो जावेंगे। अब भी समां है, इंसानों से प्रेम करो और हाज़मा ऐसा पैदा करो कि सबको हज़्म कर जाओ। अब वह समय नहीं कि तफ़रका (फूट) डालो। ऐसा करने से मुख़लिफ़ (विरुद्ध) हवा का होना लाज़मी है। ऐसे अशांति के समय धीरज और सत् विश्वास ही मन को कायम रख सकते हैं। फ़कीरों ने तो समझाना ही है। प्रेम करो, सेवा भक्ति धारण करो। सत्संग में एकत्र होकर एकता पैदा करो। इसके सिवा वह और क्या कर सकते हैं?'

जीओ पेटा जी। तू ही पुत्र तू ही धी॥

''ख़ुदगर्ज़ी को छोड़ो। ख़ुदगर्ज़ी ने सब तरक्की चौड़ कर दी है। अपना व देश का बेड़ा ग़रक

कर दिया है। आपस की ना इत्तफ़ाकी ने आज से नहीं बल्कि सदियों से देश का सत्यानाश कर दिया है।''

''जिस की लाठी उसकी भैंस। जिसके हाथ में लाठी हुई, चार गांव संभाल लिए और रियासत बना ली। बाकी देखते ही रह जाएं। कौरवों, पांडवों की ना इत्तफ़ाकी (फूट) ने भारत से सच्चाई, सफाई और बहादुरी का सफाया कर दिया। राजपूतों की ना इत्तफ़ाकी दूसरी कौमों को बाहर से ले आई। अपने हलवे मांडे की ख़ातिर दूसरों के हाथ मज़बूत कर दिए। देश की सभ्यता और धर्म को तबदील करके रख दिया।''

''कई तपस्वियों के तपोबल से शिवाजी, महाराणा प्रताप, गुरु गोबिन्द सिंह, बन्दा बहादुर जैसी हस्तियों ने देश और धर्म के लिए कुर्बानियां दीं। कबीर, नानक, दादू जैसे सत्पुरुषों ने आध्यात्मिक बल से देश को बचाने का यत्न किया। मगर हिन्दू जाति ने किसी का साथ न दिया। यह मुर्दे पूज कौम है। मरने के बाद सत्पुरुषों की मूर्तियां थाप कर उनकी पूजा शुरू कर दी। फूल चढ़ाने लगे, गऊओं को पेड़े देने और तीर्थों पर जाकर स्नान करना धर्म मान लिया। कपट, कम तोलना नहीं छोड़ा। आपस में मिलकर बैठना नहीं आया। मां का धर्म कुछ है, बाप का कुछ। लड़का पिता से मुतरिफ़ (भिन्न विचार) है। ऐसे हालात में प्रेम भाव कैसे बन सकता है?''

उल्टी प्रीत सुवान की, दोहां गलां थीं दु:ख।
खीजे काटे टांगरी, रीझे चाटे मुख ॥

''धन की प्रीत कुत्ते के समान है। कुत्ता खुश होगा तो मुंह चाटेगा। नाराज़ होगा तो टांग काटेगा। इसी तरह जब दौलत आती है तो अंधा कर देती है। अभिमान में इंसान अंधा हो जाता है। जब जाती है कलेजा फाड़ कर रख देती है। गोली की तरह लगती है। गोली दाख़िल होते समय छोटा सा सुराख़ करती है, जब निकलती है घाव बड़ा कर देती है। इस दौलत को कमाने के लिए धर्म, ईमान सब कुछ एक तरफ कर देते हैं। बेशक माया के बिना संसार का कारज नहीं चल सकता, लेकिन धन को इकट्ठा करके इसको खर्च करने के लिए भी अक्ल की ज़रूरत है। अगर तुम इस धन को अच्छे कामों में न लगाओगे, परमार्थ कार्यों में न खर्च करोगे, देश की जागृति के वास्ते या समाज के उठान के लिए या दीग़र धर्म के कार्यों में न सर्फ़ (खर्च) करोगे तो इसके कई मालिक निकल आएंगे। यानि चोर लूट लेंगे, आग इसे ख़त्म कर देगी या राजा ले लेगा या परिवार वाले छीन लेंगे। यह हर हालत में छिन जाएगी। धर्म कार्यों में इसे खर्च करने वालों की बुद्धि निर्मल हो जाती है और शांति का मौज़ुब (कारण) होती है।''

दिल दा मरहम कोई न मिलया, जो मिलया सो गर्ज़ी।

''किसे समझाया जाए। जब-तक दिलों में ख़ुदगर्ज़ी मौज़ूद है तब-तक देश धर्म की सेवा नहीं हो सकती। देश धर्म की सेवा फ़कीर फक्कड़ ही करते आए हैं और करते रहेंगे।''

घर फूंका जिन अपना, लिया चोहाता हाथ।
अब फूंकेंगे तिस का, जो चले हमारे साथ॥

''यह फ़कीर धन जोड़ने का उपदेश नहीं देते बल्कि तन, मन, धन को निष्काम भाव से पर उपकार में लगाने का उपदेश देते हैं। अगर ऐसा न करोगे तो शांति सुख बहुत दूर हैं। जिनके सामने इस समय आप बैठे हैं उनका सबक ऐसा नहीं है, मक्खी गुड़ की भेली उठाकर ले गई है और आगे से कह दिया जाए सत् वचन। बल्कि यह तो कहते हैं सोचो, समझो और तह तक जाओ, तब साधु के वचन मानो और फिर उन पर अमल द्वारा कल्याण हो सकती है। इस समय ईश्वर आज्ञा में चित्त को लगाते हुए समय व्यतीत करो। नेहरू, गांधी को गालियां देने से कुछ नहीं बनेगा। वह तो देश की ख़ातिर इस समय तख्ते पर बैठे हैं। तख़्त तो जब मिलेगा तब मिलेगा। ईश्वर सबको निर्मल बुद्धि बख़्शें। सादगी को धारण करो। नुमायशी जीवन को छोड़ो। घड़ी दो घड़ी ईश्वर को याद करो। बाहोश होकर चलो। ईश्वर सब पर कृपा करें।''

बटवारे के दिन नज़दीक आ रहे थे। रियासतों को भारत के साथ शामिल करने का यत्न किया जा रहा था मगर कश्मीर का महाराजा भारत के साथ शामिल होने को नहीं मान रहा था। जब रियासत के वज़ीर अमीरचंद आपके दर्शनों के लिए आए और रियासतों के भारत में मिलाए जाने की बातचीत चली तो आपने फरमाया:

''महाराजा क्यों देर कर रहा है? एक तरफ क्यों नहीं हो जाता? उसका हठ न जाने क्या गुल खिलाएगा? अशांति दिन-ब-दिन बढ़ रही है। महाराजा मछलियों के शिकार में मस्त हो रहा है। क्या उसे सही ख़बर पहुंचाने वाला और सही मशवरा देने वाला इस समय कोई नहीं?''

जब सत्पुरुष कारकुट नाग जंगल में मौजूद थे तो उस वक्त जब आप आत्म आनन्द में लवलीन बैठे होते तो कई दफ़ा उनके मुख से ऐसे वचन निकलते सुने जाते जो आने वाले हालात की ख़बर देते थे और यह भी लफ़्ज़ निकलते कि कुर्बानी देने से ही इन आफ़तों से बचा जा सकता है। आप उस समय भी, जब रावलपिंडी वाले वाक्यात नहीं हुए थे, प्रेमियों से हर किस्म की कुर्बानियाँ करवाने का यत्न करते। जैसे कि आपने खन्ना नज़द रावलपिंडी में आश्रम बनाने के बारे में आज्ञा दे दी और जगह खरीद करने के वास्ते कई पत्र लिखे। यहां तक ज़ोर देते रहे कि जल्दी उसे खरीद लिया जाए। मगर कुदरत भी अपना काम करती है, बावज़ूद कोशिश के वह जगह खरीदी न जा सकी। ऐसा विचार है कि उस जगह को खरीदने का उद्देश्य यह था कि कहोटा तहसील की तरफ जो झगड़े हुए उनकी लहर रावलपिंडी शहर के झगड़ों के बाद उससे बही और उनका खन्ना आश्रम तैयार करवा कर कुर्बानी देने का मकसद उस लहर के आगे बंध लगाना था। मगर होनी बलवान होती है, वह जगह न खरीदी जा सकी।

कश्मीर के विभिन्न जंगलों जैसे कि फैलां, नड़धज्जियां, सरूपा वग़ैरा जंगलात में तप करने का क्या उद्देश्य था? बाद में जो पाकिस्तान से जंग हुई उस से पता चलता है कि लोगों को आने वाली मुसीबत से बचाने के लिए इतने कठिन तप आप जंगलों में करते रहे। मगर कर्म चक्कर अमिट है। बचे वही लोग जिनकी तकदीर में बचना लिखा था और ऐसे लोग ही कुर्बानी कर सके। सत्पुरुष एक अज़ीब हस्ती के मालिक थे। एक लामज़हब फ़कीर थे। अज़ीब-अज़ीब थियोरियाँ

ब्यान फरमाया करते थे। फरमाते थे:- "जो दूसरों के नाश का यत्न करता है उसका अपना ही नाश होता है। जब किसी के अंदर दूसरे के नाश का ख़्याल उत्पन्न हुआ, उस ख़्याल ने उसके अंदर तो स्याही फैला दी। उसका अपना नुकसान तो हो गया। जिसके नाश का वह ख़्याल कर रहा था उसका नाश तो उसी सूरत में होगा अगर उसके मुकद्दर में नाश लिखा है।"

उस समय निम्नलिखित वचन भी आपने फरमाए:

आया बीसा, न रहिया मोहम्मद, न रहिया ईसा।

इसके मुतालक आप से पूछा गया कि क्या इस्लाम व ईसाईयत ख़त्म हो जाएंगे, जैसा कि हम लोग इसका मतलब ले रहे हैं?

आपने इस पर उत्तर दिया:- नहीं प्रेमी! ऐसा नहीं है। इसका मतलब यह नहीं कि इस्लाम व ईसाईयत ख़त्म हो जावेंगे, मगर इसका यह मतलब है कि उन पीर पैग़म्बरों की तालीम पर अमल नहीं रहेगा।

130. चिनारी में आगमन

श्रीनगर में निवास के समय चिनारी निवासी प्रेमी सेवा में प्रार्थना करते रहते थे कि आप चिनारी तशरीफ़ लाकर उनको भी सत् उपदेश द्वारा कृतार्थ करें। आपने इसे स्वीकार कर लिया और 27 अगस्त, 1947 को आप चंद दिनों के लिए चिनारी तशरीफ़ ले गए और सत्संग शाला में निवास किया।

देश के बंटवारे की वजह से इस जगह भी खौफ़ व हरास (निराशा) था। प्रेमियों ने सेवा में अर्ज़ की:- उन्हें अब क्या करना चाहिए? आपने सबको धीरज देते हुए फरमाया:

"आप लोग क्यों इतनी चिन्ता कर रहे हो? आराम से बैठे रहो। पंजाब में आग लगी हुई है। यहां तो हिन्दू राज्य है। फिर भी आपको गड्ढे में नही फैंकेगा। महाराजा कुछ सोच ही रहा होगा। उसके हाथ मज़बूत करो और उसके पास जाकर फ़रियाद करो।"

एक प्रेमी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! मिलिट्री वाले जो आते हैं उनसे पूछते हैं तो वह कहते हैं कि फिक्र न करो, बड़ा इंतज़ाम है। हौंसला देकर चले जाते हैं। मगर यह अफ़वाह जोरों पर है कि हज़ारा की तरफ से हमला होगा। अकेले महाराजा की पाकिस्तान के आगे क्या चलेगी?

सत्पुरुष खामोशी से सब सुनते रहे। शाम को सत्संग में मुसलमान और सिख साहिबान भी शामिल हुए थे। आपने फरमाया:

"इस भयानक समय में आपस में मिलकर रहने से ही अमन हो सकता है। एक दूसरे को अगर शक की निग़ाह से देखते रहोगे तो दिल का चैन कहीं नहीं रहेगा। किसी पीर, पैग़म्बर, अवतार, ऋषि, मुनि ने लड़ना नहीं सिखाया। ख़लकत की ख़िदमत और खुदा के नाम की याद, अलहा की रज़ा में फ़ना होना यानि ईश्वर आज्ञा में रहना या भाने को मानना ही बंदगी या रियाज़त

(भजन) है। क्या पड़ोसी का दिल दुखाने की तालीम मोहम्मद साहब ने दी या उनकी ख़िदमत व मदद करने का हुक्म दिया है। किसी का मज़हब इज़ाज़त नहीं देता कि रूहों को तंग किया जाए। काफ़र या नास्तिक वह ही इंसान है जो अपने बुज़ुर्गों का कहना नहीं मानते। खुदा या रब बाहिद (केवल) मुसलमानों का ही नहीं है बल्कि सब जीवों का मुश्तरफा (सांझा) है। खुदा की ज़ात को हर रूह में देखो। जो बंदा खुदा के बंदों की दिलजोई (तसल्ली) करना और उनकी ख़िदमत करना नहीं जानता वह काफ़िर और बेपीर है। गुरु, पीर कहलाने का वह ही हकदार है जो दूसरों के दुःख दूर करने वाला है। दिल में तास्सुब रखने वाले कभी अपने नाम लेवा नहीं हो सकते हैं। परमात्मा, खुदा इस समय सब को अक्ल सलीम यानि निर्मल बुद्धि देवें कि अपने-अपने फ़र्ज़ को जान सकें। फ़कीर लोग तो इतनी ही सबके वास्ते प्रार्थना कर सकते हैं कि तुमको अक्ल आए। अक्ल मार खाकर आई तो क्या फ़ायदा हुआ? अक्ल की दुरुस्ती के वास्ते आहार व ब्यौहार की शुद्धता ज़रूरी है। वैर-भावना तबाह करने वाली ही हुआ करती है। खुदा, ईश्वर का खौफ़ करो। तुम को किसी ने राज-तख़्त पर नहीं बिठला देना। ग़रीब-ग़रीब ही रहेगा, अमीर-अमीर ही। लूट-मार कर किसी का घर नहीं भरा है। चोरों के घर में एक वक्त भी खाने के लिए नहीं हुआ करता। जिस तरह खुदा ने रखा हुआ है उसी हाल में रहकर सबर व धीरज से जिंदगी बसर हो सकती है। इस समय ज्ञान, ध्यान, बंदगी, इबादत यही है कि आपस में ज़्यादा से ज़्यादा मोहब्बत बढ़ाओ। खुदा तक पहुंचना बहुत दूर की बात है। पहले खुदा की ख़लकत की ख़िदमत कर लो। जो उनके बंदों की ख़िदमत करना नहीं जानता उसने और कौन सी बंदगी करनी है? खुदा की बंदगी यही है कि किसी को मन, वचन, कर्म द्वारा दुःख न दिया जावे। दिल में गल्त सोचना, जबान से कड़वा बोलना, जिस्म से दूसरों को दुःख देना- सब गुनाहे अज़ीम (बड़ा) है। दिल को राहत इन फलों (कर्मो) में नहीं। दिल का इतमिनान, सकून, शांति, नेक अहमाल (कर्म) में है। बुरे फेल (कर्म) हमेशा राहत में खलल डाला करते हैं। खुदा के नाम लेने वालों को दिल-ओ-जान से हर एक के साथ मोहब्बत रखते हुए ज़िंदगी के सफ़र को पूरा करना चाहिए। खुदा की ख़ुदाई इसी में है।''

सत्संग समाप्त हुआ। चिनारी निवासी प्रेमियों ने प्रार्थना की:- इस जगह एक विशाल यज्ञ किया जावे। आपने दो-तीन बार तो यह कह कर टाल दिया कि इस समय ग़रीब, अनाथ, उजड़े हुए लोगों की सेवा करो और अपने राजा को कुछ मदद देने की पेशकश करो।

प्रेमियों ने फिर अर्ज़ की:- महाराज जी! यज्ञ ज़रूर होना चाहिए। आपके उपदेश से लोगों की ज़रा तसल्ली होगी। इलाका हिज़ा के हिन्दू, मुसलमानों का आपस में मिलाप होगा।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमियों! यज्ञ करके अभिमान में न आ जाना। महाराज जी आये थे, हमनें यह कहा, वह कहा। इस तरह क्या सफलता मिलेगी? अभी तक तुम प्रेमियों का खान-पान फिर राक्षसी चल रहा है जैसा कि पहले था। तुम लोगों ने फ़कीरों से क्या सीखा है? तुम लोगों का अन्न खिला कर दूसरों की बुद्धियां भी भ्रष्ट की जाएं।''

इस झाड़ की वजह यह थी कि चिनारी निवासी प्रेमियों ने अपना खान-पान भ्रष्टाचारी बना लिया था। राक्षसी ख़ुराक इस्तेमाल करने लगे थे। सब प्रेमियों ने अपनी ग़ल्ती की माफी मांगी और फिर अपना आहार, व्यौहार पवित्र रखने का प्रण लिख करके दिया।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- रात को उन्हें यज्ञ के मुतालक बतलाया जाएगा। रात के सत्संग के बाद आपने फरमाया:

''प्रेमियों, सबसे बड़ा यज्ञ यही है कि खोटे विचारों को छोड़ो। अच्छे विचार ग्रहण करो। अमली जीवन बनाओ। नियमों का सख़्ती से पालन करो और फरमाया कि सुबह बाहर से वापिस आकर यज्ञ के मुतालक बतलाया जायेगा।''

दूसरे दिन सुबह बाहर से वापिस आकर आपने फरमाया:- ''अच्छा प्रेमियों! तुम्हारी मर्ज़ी है तो 27 सितम्बर का दिन मुकर्रर कर लो। 30 सितम्बर को इस जगह से श्रीनगर जाने का प्रोग्राम निश्चित हो गया है। ज़्यादा दिन अब इधर नहीं ठहर सकते और न ही और किसी जगह जाने का प्रोग्राम बनेगा, सब ही इस जगह आ जायें। प्रभु आप सहायक होवें।''

131. विशाल सत्संग यज्ञ

27 सितम्बर, 1947 सुबह दस बजे सत्संग का प्रोग्राम शुरू हुआ। बाहर से आये हुए राम लाल शाह जी, मौलवी मुहम्मद शफी साहब से पहले अपने-अपने विचार संगत, जिसमें हिन्दू, मुसलमान, सिख सब शामिल थे, में रखते हुए आपस में एकता रखने की अपील की और यह भी बतलाया कि सब इंसान ज़ाते-वाहद (ईश्वर) की मख़लूक हैं। आपस में प्रेम व मोहब्बत से रहना चाहिए। कोई मज़हब आपस में द्वेष पैदा करना नहीं सिखाता। जिन्होंने आपस में लड़ने वाली हवा चलाई है। उन जैसा गुनहगार दुनिया में कोई नहीं है। खुदा ने हमें अक्ले-सलीम (सद्‌बुद्धि) बख़्शी हुई है। हमारा फ़र्ज़ है कि सही सोचें और समझें और वे खौफ़ होकर मोहब्बत से रहें।

इसके बाद श्री महाराज जी ने निम्नलिखित उपदेश अमृत द्वारा जनता को कृतार्थ किया।

''जिस देश, कौम, परिवार या घर में निफ़ाक (झगड़ा) आ जाता है वह कभी भी हरे-भरे नहीं रह सकते। लूट-मार करना, दूसरों को ख़ौफज़दा करना बहादुरों का काम नहीं है। मासूम बच्चों को मारना और औरतों की बेइज़्ज़ती करनी अक्लमंदी नहीं बल्कि दरिन्दगी है। जो लोग ऐसा करते हैं वह ज़ाहिल हैं। ख़्वाहे वह हिन्दू हों या मुसलमान । कानून-कुदरत व खुदा के अहकाम (नियम) सबके वास्ते एक जैसे हैं। बहादुरी यही है कि दूसरे के दिलों पर हकूमत की जावे। दिल की राहत भी इसी में है। खुदा पर यकीन रखने वाले खुदा के बंदों का यह काम नहीं कि दूसरों पर तशद्दुद (सख्ती) किया जावे। ज़रा ग़ौर किया जावे तो पता लगेगा कि यह सब दूसरों के भड़काने से हो रहा है। जो लोग ऐसा करवा रहे हैं वह भी अब हिन्दुस्तान में वापिस नहीं आ सकते और न आ सकेंगे। आपस में लड़वाकर वह अब दोबारा बादशाही वापिस बुलायेंगे और कहेंगे बाबा बादशाही संभालो। तक्सीम (बंटवारा) जो हो चुकी है, वह हो चुकी है। आराम से दोनों तरफ राज करें। अगर आराम

से रहेंगे तो दोनों तरफ सुख रहेगा। बख़िलाफ इस तरह मार-काट से क्या हासिल होगा? काफ़ले के काफ़ले तबदील हो रहे हैं। इस तशद्दुद से दिन-ब-दिन दोनों तरफ (नफ़रत) की आग बढ़ती जावेगी। खुदा ही ऐसे लीडरों को अक्ल देवें। खाली गांधी की आवाज़ क्या कर सकती है, जबकि लीडरों ने साथ देना छोड़ दिया है? इस रियासत में अभी तक तो बड़ी मेहर है। बाहर से कोई आग न लगा दे। अपने-अपने धर्म-ईमान में रहते हुए लोग अमन से रह सकते हैं। धर्म, ईमान दरअसल ऐसे मौकों पर सब्र पर इस्तकलाल (हिम्मत) दिया करता है। खुदगर्ज़ी ही सब झगड़े की मौज़ुब (कारण) होती है। जब-तक खुदी, अभिमान का राज दिलों पर रहेगा तब-तक झगड़े नहीं खत्म हो सकेंगे। जिस समय बंदा यह समझ लेता है कि सब कुछ खुदा का ही है और उसके अंदर से मैं-तू या तेरा-मेरा का भाव दिल से निकल जाता है, वह ही सूफी या गुरमुख है। यह खुदी ही अज़ाब (पाप)- दरअज़ाब मौज़ुब (कारण) होती है। यह मेरा मुल्क है, यह मेरा मज़हब है वग़ैरा, यही अहंकार सबको ग़र्क (डुबोने) करने वाला है। जो कोई दिल की राहत चाहता है उसे इन झगड़ों से अपने दिल को पाक (पवित्र) करना चाहिए। जिस जगह नेक-इख़लाक (चरित्र) व नेक-ख़्यालात वाले लोग रहते हैं वह जगह ही पाकिस्तान है, पवित्र भूमि है। थोड़े से जमीन के टुकड़ों को पाकिस्तान बनाकर अपने आपको महदूद (सीमित) कर लिया है। इंसान का गोल या मक्सद दुनिया में आने का यह नहीं कि आपस में नफ़रत फैलायें, बल्कि राहते-अबदी यानि हमेशा की खुशी की लाजवाल (बहुमूल्य) दौलत को हासिल करने का है। इस दौलत की प्राप्ति के वास्ते सत् विश्वास यानि यकीने पाक की ज़रूरत है। जो दम-ब-दम (हर पल) उस मालिक की याद करते हैं और उसकी दरगाह में झुकते हैं उनको ही कल्बी राहत (परम शांति) मिलती है। दुनिया को चाहने वाले दुनिया के बन्दे हमेशा लड़ते-झगड़ते आए हैं मगर दुनिया किसी की नहीं बनती। कई धरती को अपनी बनाकर परलोक चले गए परन्तु यह धरती उनकी न बनी, बल्कि यह यहीं पड़ी रही। नमरूद, फरऊन, सिकन्दर, रावण, दुर्योधन जैसे बली अपनी-अपनी ढपली बजा कर चले गए और साथ कुछ न ले गए। सिर्फ़ खुदा की याद करने वाले पीर, पैग़म्बर, अवतारों के नाम ही दुनिया में कायम रहे और उनसे ही दुनिया शांति, सकून हासिल करती आई है। खुदा आप सबको नेक तौफ़ीक (हौंसला) देवें ताकि आपस में ज़्यादा मिलजुल कर रह सको। इस चार रोज़ा ज़िंदगी में नेकी करने में ही लाभ और फ़ायदा है। ईश्वर सबको निर्मल बुद्धि बख़्शें।''

उस दिन, रात के समय सत्संग के बाद चिनारी निवासी प्रेमियों को फरमाया:

''प्रेमियों! ज़माने के हालात के साथ-साथ ही इंसान को चलना पड़ता है। जिनकी अक्सरीयत (बहुसंख्यक) होती है उनका ज़ोर हुआ करता है। अब इन इलाकों में रहने का यह स्वाद नहीं रहेगा। लेकिन जब-तक राज सत्ता मौज़ूद है तब-तक जगह नहीं छोड़नी चाहिये। जब ज़रा भी गड़बड़ देखो, विचार करना। हफ्ता हुआ, तुम्हारे मुजफ़राबाद वज़ीर-वज़ारात आये थे। उन्होंने काफी तसल्ली दी थी। जहां तक उनको इल्म (ज्ञान) है, इंतज़ाम तो बहुत है मगर अक्लमंदों का कौल (वचन) है।''

''बजी तंदी सुनया राग''

''जिस समय बादल उठते हैं कहते हैं अब मेंह बरसेगा। बिल्कुल बेहोशी से नहीं रहना चाहिए। जिस वक्त मौका देखो दूसरी जगह तलाश कर लेना। मजबूरी सब कुछ करवाती है। राजा को या तो असली हालात से वाकिफ़ नहीं किया जा रहा या अंदर खाने उसको कुछ हौंसला है। फिर भी वह राजा है। उसे प्रजा का ज़रूरी ख़्याल होना चाहिए। बिलकुल बेहोश रहेगा तो आख़िर पछतायेगा। बहुत सयानफ़ (चतुराई) भी बाज़ औकात धोखा दे जाती है। होनी बड़ी बलवान है। समय पर सबकी मत मार देती है। बड़ी होशियारी से रहने का वक्त है।''

डोमेल निवासी प्रेमियों ने, जो सत्संग में शामिल होने के लिए आए हुए थे, अर्ज़ की:- महाराज जी! उधर भी चरण डालने की कृपा करें।

आपने फरमाया:- इनका प्रोग्राम इस जगह तक का है। इधर भी प्रेमियों का प्रेम ले आया है। वैसे श्रीनगर में ही काफी जनता लाभ उठा रही थी। इस समय ज़्यादा जगह फिरना नहीं चाहते। घबराओ नहीं, ईश्वर का विश्वास रखो। कुछ राजा सोच ही रहा होगा। आख़िर उसे भी अपनी हिफ़ाज़त का डर होगा। कबाइली आयेंगे तो बिना मुकाबला कैसे रियासत में दाख़िल हो सकते हैं। हां बारूद की जगह सरसों वाला हिसाब न हो जाये। इधर की मुसलमान मिलिट्री उनके साथ मिलकर शायद मनाही न कर दे। ऐसे मौका पर इतबार सब धरा-धराया रह जाता है। ईश्वर ही सहायक हों। गफ़लत की नींद में अब न रहना। कुछ हिम्मत खुद भी करो।

132. चिनारी निवासियों पर कृपा

रवानगी के समय यह भी फरमाया:- प्रेमियों! आख़िरी समय तक इंतज़ार करना। जब पठानों ने हमला कर दिया, मुसलमान मिलिट्री उनसे मिल गई और डोगरे सब मारे गए तो ब्रिगेडियर मय दो मिलिट्री वालों से बचकर वहां से भाग कर चला आया और रास्ते में सबको कहता आया कि भागो पठान आ गए हैं। चिनारी निवासी घबराये और सोचने लगे अब क्या करें, कैसे भागें? इतने में पचास तांगे सेबों की पेटियों से लदे हुए आ गए। वह रावलपिंडी जा रहे थे। जब उन्हें पठानों के हमले का पता लगा तो पेटियां उन्होंने वहीं उतारीं और उन्हें रखकर लौटने लगे। चिनारी निवासियों ने उन्हें कहा कि खाली क्यों लौटते हो, हमें साथ ले चलो? उन्होंने मान लिया। पैसे का लालच आ गया। सबको उन्होंने सवार कर लिया और वह वापिस चल पड़े। दो-तीन दिन रास्ते में लग गए। जब श्रीनगर के करीब पहुंचे, वे चिनारी निवासियों को सीधे हवाई अड्डे पर ले गए। उन्हें वहां उतारा ही था कि मिलिट्री ने हुक्म दे दिया कि फ़ौरन हवाई अड्डा खाली करो। बहुत से श्रीनगर निवासी भी हवाई अड्डे पर जमा थे। मिलिट्री वालों ने यह भी कहा कि पठान नज़दीक आ गए हैं। हम उनसे लड़ेंगे या तुम्हारी हिफ़ाज़त करेंगे। पठानों की आमद की ख़बर सुनकर शहर वाले तो भागकर वापिस चले गए, चिनारी निवासी सोच ही रहे थे कि क्या करें? इतनी देर में एक हवाई

जहाज मिलिट्री लेकर आ गया। उन्हें उतारकर चिनारी निवासियों को कहा कि आओ सवार हो जाओ और इन्हें लेकर दो-ढाई घंटे में दिल्ली पहुंचा दिया। चिनारी निवासी इस तरह सबसे पहले दिल्ली पहुंच गए।

133. श्रीनगर वापसी

सत्पुरुष 30 सितम्बर, 1947 को बस द्वारा चिनारी से श्रीनगर तशरीफ ले गए थे। उस जगह सत्संग का समय निश्चित किया गया मगर प्रेमी सत्संग में देर से आने लगे। दो-चार दिन तो आपने देखा, एक दिन बारिश हो रही थी, प्रेमी बहुत देर से आए। सत्संग की समाप्ति पर आपने सबको डांटा और फरमाया कि जिन प्रेमियों ने वक्त की पाबंदी ही नहीं सीखी वे और क्या कर सकते हैं? जो वक्त की कद्र नहीं जानते उन्होंने फ़कीरों को पहचाना ही नहीं और न ही उनके उपदेशों पर विचार किया है। बड़ी-बड़ी सरकारी नौकरियां करने वाले भी वक्त की कद्र नहीं जानते। महापुरुषों की संगत पूर्ण भाग से मिलती है। चेतन होकर निश्चित समय से पहले आना तुम्हारा फ़र्ज़ है। यह फ़कीर आपके हालात देख-देख कर हैरान हो रहे हैं कि कहां वक्त बर्बाद किया जा रहा है?

प्रेमी मूलराज जी महंगी, रिटायर्ड सेशन जज, ने हाथ जोड़कर माफी मांगी और अर्ज़ की:- महाराज जी! आईंदा ऐसा नहीं होगा। कृपा करके इस दफ़ा बख़्श देवें।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी जी! तुम्हारे वास्ते इधर आये हुए हैं। तुम ही अगर इस तरह देर करके आओगे तो दूसरों पर क्या असर पड़ेगा?''

प्रेमी मूलराज जी ने अर्ज़ की:- ''बच्चों के सुधार के लिए माता-पिता, गुरु प्यार भरी झाड़ डाला करते हैं, तब ही उनकी आंखें खुलती हैं। अपनी ग़ल्ती की वजह से शर्मिंदा हूं। कसूरवार हूं, माफ़ फरमायें।''

श्री महाराज जी ने फरमाया:- आईंदा के लिए एहतयात (सावधानी) रखें और वक्त की पाबंदी करें।

134. होनी बलवान है

श्रीनगर में निवास के समय आपने चौधरी फकीर चंद को फरमाया:- ''प्रेमी! जाकर घर से बाल-बच्चों को ले आओ।'' दरअसल चौधरी जी का भी जाने का प्रोग्राम बन रहा था। चौधरी ने अर्ज़ की:-महाराज जी! डोमेल एक शादी है, वहां जाना है। आपने फरमाया:- ''शादी वग़ैरा को छोड़ो, बच्चों को निकालने वाली बात करो।'' चौधरी जी ने वहां तो हां कर दी मगर ऐसा बतलाया जाता है कि घर पर कुछ रुपया पड़ा था। अपने सम्बन्धी को श्रीनगर में ही कहा कि वह डोमेल जा रहे हैं। वह उनके पास वहां रुपया जमा करवा देगा। सम्बन्धी का नाम भी फकीर चंद ही था और

वह डोमेल का रहने वाला था। वहां उनका मकान भी था, पर कारोबार श्रीनगर में करता था। दोनों वहां से चल पड़े। चौधरी जी शारियां पहुंचकर घर से रुपये लेकर डोमेल पहुंचे और लाला फकीर चंद के पास रुपया जमा करवा दिया। रात को पठानों का हमला हो गया। चौधरी जी तो वहां से भागे, मगर लाला फकीर चंद का सम्बंधी न निकल सका। वह वहीं मारा गया और घर लूट लिया गया। चौधरी जी की कुछ मुसलमान बाशिंदों से दुश्मनी थी। उन्होंने देख लिया और पकड़कर मार कुटाई की, मगर बच गये और दिन को छुप गए। रात को वहां से निकलकर शारियां जाने की कोशिश की। जब पुल पर से गुज़रने लगे तो मुसलमानों ने देख लिया। जाकर पुल पर ही कत्ल करके दरिया में फैंक दिया। शारियां दरियाये जेहलम को पुल पर से गुज़रकर जाना पड़ता था।

135. जम्मू के लिए रवानगी

20 अक्तूबर, 1947 को श्री महाराज जी बस द्वारा श्रीनगर से जम्मू के लिए रवाना हो पड़े। रास्ते में रुकावटें बहुत थीं। बारिश भी हो रही थी इसलिए दूसरे दिन बटोत पहुंचे। वहां पता चला कि कबाईलियों ने मुज़फ़राबाद पर हमला कर दिया है। जब बस ऊधमपुर पहुंची तो भक्त जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! अब कैसे करना चाहिए?

श्री महाराज जी ने फरमाया:- इस समय सीधा जम्मू जाना भी ठीक नहीं। दो तीन रोज़ इधर ही रहकर देख लो। अगर पाकिस्तान से खुलम-खुला हमला कर दिया तो आज पता लग जावेगा। फिर तो जम्मू की तरफ से भी हमला हुआ समझो और अगर कबाईलियों द्वारा शरारत की गई है फिर बला उधर ही रहेगी। अब जम्मू निवासियों के रिश्तेदारों का पता करो।

भक्त जी ने श्री मंगतराम शाह जी का मकान तलाश कर लिया और आप वहां तशरीफ़ ले गए। वहां कुछ और प्रेमी भी आ गए। प्रेमी पूछने लगे:- महाराजा हरी सिंह क्या सोच रहा है?

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''वक्त बड़ा नाज़ुक है। अभी वक्त है। हिन्दुस्तान से मिल जाये तो बच सकता है। अपनी राजपूती अकड़ में रहेगा तो आप भी ख़राब होगा और इतनी बेगुनाह जनता भी मारी जायेगी।'' एक प्रेमी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! इस चक्कर ने हैरान परेशान करना ही है तो हमने क्या सोच-विचार में पड़ना है।''

श्री महाराज जी ने फरमाया:- प्रेमी! बात तो ठीक है। हिन्दू अपनी हिकमत अमली किये बिना नहीं रह सकता तो उसका फ़र्ज़ है सोच विचार के चले। नतीजा प्रभु आज्ञा में छोड़े। ऐसा करने से धीरज, शांति बनी रहती है।

आपके पहुंचने के दूसरे दिन बाद ऊधमपुर हल्ला-गुल्ला होने लगा। दूसरे दिन आपने शाम को भक्त जी से फरमाया:- ''प्रेमी! जम्मू ही चलो। वह फिर भी शहर है। शायद कोई गुरदासपुर की तरफ जाने का प्रबन्ध बन जाये।''

भक्त जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! बसें तो बंद हैं। कोई-कोई तांगा ही जाता है।''

श्री महाराज जी ने फरमाया, ''सुबह बाहर से जल्दी आकर सीधे तांगा करने के वास्ते चले जाना। इन लोगों को इसके मुतालिक ख़बर न देना और न तांगा करने के लिए कहना।''

दूसरे दिन भक्त जी तांगा कर लाये और उस पर सवार होकर श्री महाराज जी व भक्त जी जम्मू की तरफ रवाना हो पड़े। प्रेमी प्रार्थना करते रहे कि रास्ते में किसी से झगड़ा न हो जाये, तो आपने फरमाया:- ''फ़कीरों से किसी ने क्या लेना है? दो तीन लोईयाँ हैं, अगर कोई आया तो खुद ही दे दी जावेंगी।''

तांगा चल दिया। रास्ते में सड़क के दोनों तरफ सिवाये धूल उड़ने के और कुछ दिखाई न पड़ता था। जब तांगा नंदनी पड़ाव पर पहुंचा तो वहां जमा शुदा लोगों ने आगे जाने से रोक दिया। दो-तीन घंटे तक तांगा वहां रुका रहा। जब पता लगा कि अब रास्ता साफ है तो तांगे वाला आगे चला। 25 अक्टूबर, 1947 मुताबिक 7 कार्तिक का दिन था और इतवार था। सम्मेलन का दिन था इसलिए भक्त बनारसी दास ने अर्ज़ की:- महाराज जी! आज तो सम्मेलन का दिन है मगर इधर लम्बा सफ़र तय हो रहा है।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! अब सम्मेलन वाली बात बहुत दूर है। यह राज-गरदी जब आराम से बैठने देगी तब ही कुछ विचार हो सकेगा। न घर-घाट रहा, न आश्रम रहे। नये सिरे से रचना किसी वक्त ही जाकर बनेगी। ज़रा विचार करो, प्रेमी कितना परेशान हो रहे होंगे''?

तांगा शाम के छ: बजे के करीब जम्मू पहुंचा और श्री महाराज जी सीधे प्रेमी कश्मीर चंद के मकान पर गए और वहां आसन लगाया। जब आराम से बैठे तो पूछा गया:- ''महाराज जी! यह क्या बनने लगा है?''

श्री महाराज ने उत्तर दिया:- ''अब फ़िकर वाली बात नहीं रही। वक्त पर महाराजा हिन्दुस्तान से मिल गया है। पता नहीं किसने महाराजा को अक्ल दी है। अब हिन्दुस्तान जाने, उसका काम जाने। उसने बहुत देर लगा दी है। घबराने से वक्त नहीं निकलता। मालिक पर विश्वास रखो।''

जम्मू पधारे एक हफ्ता ही हुआ था कि महाराजा हरी सिंह को भी श्री महाराज जी के जम्मू में निवास की ख़बर पहुंच गई। महाराजा के सम्बंधी ठाकुर नचिंत चंद और जफर सिंह जी सत्संग में हाज़िर होने लगे। एक दिन दोनों ने अर्ज़ की:- महाराज जी! आप इस समय महाराजा हरी सिंह पर दया करें। वह बहुत घबराया हुआ है। इसे हौंसला बंधायें, ऋषि-मुनि हमेशा ऐसे मौकों पर ही राजाओं-महाराजाओं को नसीहत करते आये हैं।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमियों! वक्त बहुत बीत जाने पर आये हो। अब क्या नसीहत करनी है? पहले तो वह किसी की सुनता न था। श्रीनगर में वज़ीर वज़ारात तेज राम ने भी कोशिश की थी, महाराजा तक उनका पैग़ाम पहुंचाने की मगर उसने सुनी ही नहीं, इसलिए अब क्या हो सकता है?''

उसी रात को फिर ठाकुर जफर सिंह और ठाकुर नचिंत राम जी ने आकर प्रार्थना की- ''महाराज जी! महारानी साहिबा ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की है, कि आप ज़रूर दर्शन देने की कृपा करें।''

श्री महाराज जी ने थोड़ी देर खामोश रहने के बाद फरमाया:– ''अच्छा, कल रात उधर आने का प्रोग्राम रखो, मगर शर्त यह है कि राज्य गृह का एक तो कुछ ग्रहण नहीं किया जावेगा, इसलिए उस समय मजबूरी न की जावे। दूसरे सिवाये सफेद चादर के ज़मीन पर कोई दरी कालीन वग़ैरा न बिछाया जाये। नीचे ज़मीन पर ही सबको बैठना होगा। वहां पहुंचने पर या रवानगी पर किसी वक्त कोई भेंट वग़ैरा रखने की कोशिश न की जावे।''

प्रोग्राम निश्चित हो गया। सब शर्तें मान ली गईं। आपने उस समय भी सादगी का उपदेश देकर एक आदर्श कायम किया। आप वस्त्र 21 दिन के बाद बदला करते थे। जब दूसरे दिन रवाना होने लगे तो भक्त जी ने वस्त्र तबदील करने की अर्ज़ की। मगर श्री महाराज जी ने फरमाया:– ''बेईमान! वस्त्रों की तबदीली से क्या होगा?''

भक्त जी ने अर्ज़ की:– महाराज जी! आप महाराजा साहब के पास जा रहे हैं, वह कहेंगे आपके वस्त्र भी साफ करने वाला कोई नहीं।

श्री महाराज जी ने मुस्कराते हुए कहा:– ''फ़कीर तो गुदड़ियों में जाया करते हैं। यह वस्त्र तो अभी बड़े साफ हैं। सफेद कपड़े तो उसे हौंसला नहीं देंगे। फ़कीरों के वचन ही ढांढ़स देने वाले हुआ करते हैं।''

शाम निश्चित प्रोग्राम अनुसार आप महाराजा के महल में तशरीफ़ ले गए। लगभग एक घंटा वहां रहे। जब कार में बैठकर वापिस आ रहे थे तो दूसरी तरफ महारानी साहिबा ने कार रोककर नमस्कार करते हुए हाथ जोड़कर अर्ज़ की:– ''महाराज जी! आपने बड़ी दयालुता की है कि इस कद्र पवित्र वचनों द्वारा हौंसला बंधाया है।''

श्री महाराज जी ने फरमाया:– ''अब आपको कोई फिक्र नहीं करनी चाहिए। हिन्दुस्तान की इज़्ज़त रियासत के बचाव में है। वहां के लीडर बड़े समझदार हैं। सब कुछ इस कश्मीर के वास्ते कुर्बान कर देंगे। इस समय आप सिर्फ़ उनकी हां में हां मिलाते रहें। इस पर महाराजा साहब ने रियासत छोड़ने का ख़्याल तर्क (छोड़) कर दिया है। फ़िक्र न करो। ईश्वर को याद करो। प्रभु आप सबको धीरज देवें।''

जब वापस आकर आसन पर पधारे तो प्रेमी कश्मीर चंद ने पूछा:– महाराज जी! महाराजा साहब से क्या बातचीत हुई। इस पर हज़ूर ने जवाब में फरमाया:– ''वाकई महाराजा बहुत घबराया हुआ था। राजाओं का यह हाल है। सियासत छोड़ने को कह रहा था। बहुत तरह समझाया गया कि अब इस तरह छोड़कर चले जाने से बहुत बेइज़्ज़ती होगी। अब गांधी, नेहरू, पटेल वग़ैरा के कहने के मुताबिक चलो। शेख अब्दुल्ला के साथ अच्छी तरह बरतो। फिर जब ज़रा अमन-अमान हो जाये फिर जैसा मुनासिब समझो कदम उठाओ।''

''दरअसल वज़ीर व अफ़सरान वग़ैरा उसे गल्त हालात पहुंचाते रहे थे। यह विचार क्या करता? अब लाचार हो रहा है। हिन्दुस्तान से पहले मिल जाता तो बहुत ज़्यादा इज़्ज़त, आराम से रहता और मान भी बना रहता। शुक्र है अब्दुल्ला का, इस वक्त दिल व जान से कांग्रेस का साथ दे

रहा है वर्ना दो दिन में श्रीनगर में हालात ख़राब हो जाते। बेसहारों का मालिक कोई न कोई सहारा बना ही देता है। जब राज सत्ता बिगड़ जाती है तब सबको अपना-अपना दाँव लगाने का मौका मिल जाता है।''

136. पठानकोट की तरफ प्रस्थान

ठाकुर जफर सिंह जी ने आपके लिए टेलीग्राफ वालों की एक बस में पठानकोट जाने का प्रबन्ध कर दिया और 16 नवम्बर, 1947 को आप पठानकोट के लिए रवाना हो पड़े। यह बस पठानकोट कुछ सामान लेने जा रही थी। उस दिन मग्घर की संक्रात थी। श्री महाराज जी भक्त जी के साथ उसमें सवार होकर रवाना हो पड़े। सिविल ट्रैफ़िक उन दिनों में बिल्कुल बंद थी इसलिए लोग जम्मू में पठानकोट की तरफ नहीं आ-जा सकते थे। बस जैसे ही शहर से बाहर निकली तो ड्राइवर ने करीब 25 सवारियां बिठा लीं और हर एक से अठारह-अठारह रुपये ले लिये। साथ ही उनसे कह दिया कि अगर कोई पूछे तो कह देना कि मुफ्त बिठला कर ला रहा है, किराया नहीं लिया। आगे जाकर मिलिट्री वालों ने ड्राइवर को पकड़ लिया। आख़िर सब रुपये वापिस करके जान छुड़ानी पड़ी। रात काठुआ में गुज़ारनी पड़ी। दूसरे दिन बस पठानकोट पहुंची। ड्राइवर ने श्री महाराज जी को डाकखाने के पास उतार दिया और चरणों में नमस्कार करते हुए अर्ज़ की:- महाराज जी! मेरी ड्यूटी यहां तक ही थी।

श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''प्रेमी! अब आगे प्रभु कुछ प्रबन्ध कर देंगे। तुम को बड़ी तकलीफ़ हुई है। तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया।''

इस समय इर्द-गिर्द गांव के रिफ़्यूजी धड़ा-धड़ पठानकोट आ रहे थे जिस कारण शहर में बड़ी भीड़ थी। आगे न तो कोई बस जाती थी, न लारी। सब ट्रैफिक बंद था। रेल कोई-कोई जाती थी मगर उसमें इस कद्र भीड़ होती कि लोग छतों पर बैठकर सफ़र करते थे। आगे जाने का कोई ज़रिया न होने की वजह से मंदिर में डेरा लगाया गया। प्रभु अपने प्यारों के प्रबन्ध भी आप ही कर देता है। भक्त जी जब बाज़ार गए तो उनको बख़्शी मनी राम जी कोहाला निवासी के रिश्तेदार मिल गए। जब उन्हें श्री महाराज जी की आमद का पता लगा तो वह फ़ौरन चरणों में दंडवत प्रणाम करने के लिए हाज़िर हो गए और प्रणाम करके अर्ज़ की:- महाराज जी! रात को यहां से ट्रक अमृतसर ले जाता हूं इसलिए मैं आपको ले चलूंगा। दिन तो मंदिर में व्यतीत किया गया, रात को प्रेमी ने श्री महाराज जी व भक्त जी को सवार करके रात साढ़े दस बजे गुरदासपुर पहुंचा दिया। रात श्री महाराज जी ने पैट्रोल पम्प के बरामदा में व्यतीत की। दूसरे दिन वहां से प्रेमी सरदार मथुरा सिंह मिल गया। वह श्री महाराज जी को अपने गृह पर ले गया और वहां आसन लगा दिया। काहनूवान संदेश भिजवा दिया गया। दोपहर को वहां से हकीम जसवंत राय जी और पंडित राम जी दास आ गए और शाम को अपने साथ काहनूवान ले गए।

137. काहनूवान में निवास

काहनूवान ले जाकर प्रेमियों ने श्री महाराज जी का आसन राय साहब देवी दयाल जी की कोठी के अहाता में शहर से बाहर लगवाया। उस दिन 19 नवम्बर का दिन था। जब आपने वहां आसन लगाया और बैठे तो उस जगह भी हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की चर्चा शुरू हुई। प्रेमियों की घबराहट को देखकर आपने सबको धीरज दिया और संतोष रखने का उपदेश दिया और फरमाया:- ''प्रेमियों! कई बार ऐसे उल्ट-पुल्ट होता चला गया है। अंग्रेजों के दो सौ साल के राज्य ने लोगों को आराम तलब बना दिया था। इस वास्ते यह झगड़े-फ़िसाद नई किस्म के मालूम हो रहे हैं। पहले इस तरह आराम से रहना किसको मिलता था। आज जहां बस्ती है दो-चार माह के बाद वहां उजाड़ हो जाती थी। गंदम (गेंहू) किसी खुश किस्मत को ही खाने को मिलती थी। सिक्खों के जमाने में भी लूटमार होती थी। लोग पहले भी छुप-छुप के गुज़ारा करते थे। आराम तलबी अब बेचैनी का बायस (कारण) हो रही है। पहले जो भी यहां रहते थे बड़ी हुशियारी और बाजू के बल से वक्त काटते थे। अलबत्ता अब यह नया स्वांग बना है। जो पंजाब वग़ैरा की तक्सीम (बांट) हो गई, यह सब अंग्रेजों की शैतानी है। लीडर बेचारे भी मजबूर हैं। विदेशियों को बाहर निकालना कोई आसान काम न था। जैसा अंग्रेजों का सारे हिन्दुस्तान में फ़िसाद करवाने का विचार था और जैसा वह प्रबन्ध कर गए थे वैसा हो नहीं पाया। कुदरत ने मदद की है। कुछ संभाल ही लिया गया, मगर यह जो कश्मीर का झगड़ा खड़ा हो गया है उससे जान छुड़ायेंगे तो पता लगेगा। अभी से कांग्रेस वालों ने गांधी जी का कहना-सुनना छोड़ दिया है। संघ वालों के पांव ही ज़मीन पर नहीं लगते। यह अपनी जगह तीसमारखाँ बने हुए हैं। आपस की फूट ने आगे भी कई बार भारत का बेड़ा ग़र्क किया, न जाने अब यह और क्या गुल खिलायेंगे? यह वक्त है कि सब पार्टियां मिलकर एक हो जायें और कांग्रेस के हाथ मजबूत करें। यह मुल्क कि अशांति किसी की बलि लेकर छोड़ेगी।''

काहनूवान पहुंचने पर आपने बाबू अमोलक राम को, जो धर्मशाला ज़िला कांगड़ा पहुंच चुके थे, तार देकर बुलाया। तार पहुंचने पर बाबू जी बस द्वारा पठानकोट और वहां से गुरदासपुर पहुंचे और गुरदासपुर से तांगा द्वारा काहनूवान श्री चरणों में हाज़िर हो गए। उसी समय लाला शंकर दास जी भी डेरा गोपीपुर से दर्शनों के लिए हाज़िर हुए।

चरणों में हाज़िर होने पर आपने बाबू जी से हालात पूछे। इस पर बाबू जी ने अर्ज़ की:- आपकी कृपा से किस तरह मुसलमानों ने ही उनकी सहायता की। तमाम शहर काला गुजरां खाली हो गया। लोग काला निवासी शहर छोड़कर चले गए। मगर बाबू जी और तीन-चार काला निवासी पड़ोसी और कुछ महरे, सुनार व बावा पीर गोमती नाथ शहर में रह गए। शहर के कई मुसलमान और ज़ैलदार उनकी हर तरह से सहायता करते रहे। उनके साथ हर तरह से उन्होंने बहुत अच्छा सलूक किया। 3 सितम्बर, 1947 को जब लेखक पेंशन लेने जा रहा था तांगा में सवार था। शहर से सड़क जाती थी और जाकर आगे जरनैली सड़क से मिलती थी। उसके करीब सड़क रोकी हुई थी।

मगर जब बाबूजी का तांगा उस जगह के करीब पहुंचा सब सड़क छोड़कर बाज़ारों में घुस गए। सिर्फ एक मुसलमान साई सड़क पर रह गया। बाबू जी के तांगे को तो गुज़र जाने दिया गया मगर बाद में जो तांगे आये उन पर हमला करके एक सिख ईशर सिंह का कत्ल कर दिया और कुछ जख़्मी कर दिये और जब काला गुजरां से पुलिस ने जाकर बाबू जी व बाकी शहर निवासियों को जेहलम कैम्प में ले आये तो विचार मीरपुर जाने का हुआ और उस तरफ से जम्मू होते हुए पठानकोट पहुंचने का इरादा किया और कैसे मुसलमानों ने ही उन्हें उस तरफ जाने से रोका और बताया कि पठान खारियाँ पहाड़ियों से रियासत में दाखिल हो गए हैं और उन्होंने आगे से रास्ता रोक लिया और यह भी अर्ज़ की-कि कैसे मुसलमान ही जाकर ज़ेवरात निकलवा लाए और ट्रंक भी एक निकलवाया। फिर कैसे गुजरांवाला से आगे दरियाए रावी के सैलाब की वज़ह से सड़क बंद हो गई और कनवाय रूक गई तो यह लोग जेहलम से वहां पहुंच कर सामान, ख़ुराक पहुंचा गए। दीग़र कत्ल व ग़ारत जो हुई उसके मुताल्लक भी अर्ज़ की गई और कैसे लाशें जेहलम दरिया में फैंकी गईं? और रास्ते में आगे भी जो हालात देखे वह भी अर्ज़ किए गए। यह सब हालात सुनकर आपने कत्ल व ग़ारत पर बड़ा अफ़सोस ज़ाहिर किया।

इसके बाद आपने बाबू जी से पूछा:- आगे के बारे में उसका क्या विचार है और क्या प्रोग्राम सोचा है? बाबू जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! जिस तरफ कदम उठ चुका है उस तरफ आगे बढ़ेगा, कदम पीछे नहीं हटेगा। इस पर आपने फरमाया:- लाला शंकर दास जी के साथ जाकर जो-जो जगहें मुकेरियां के पास और दसूआ में दिखलाते हैं देखकर सब हालात से मुतला (सूचित) करो।

इस आज्ञा के मिलने पर लाला शंकर दास जी के साथ बाबू जी रवाना हो पड़े। काहनूवान निवासी प्रेमी और भक्त बनारसी दास जी बाबू जी को तांगे पर चढ़ाने के लिए तांगा स्टेंड तक साथ आए। उस समय बाबू जी के पास जो रुपया पाकिस्तान से लाया हुआ था वह ख़त्म हो चुका था और पेंशन के कागज़ात आए नहीं थे। इसलिए बाबू जी ने लाला शंकर दास जी से सौ रुपया बतौर कर्ज़ा मांगा था और उनसे अर्ज़ की थी कि जब पेंशन के कागज़ात आ जाएँगे यह रुपया अदा कर दिया जावेगा। यह खबर अन्य प्रेमियों को भी पता लग गई थी। बाबू जी तांगे में मय लाला शंकर दास जी सवार हुए तो भक्त जी एक सौ रुपये का नोट निकालकर बाबू जी को पकड़ाने लगे। बाबूजी ने इन्हें लेने से इंकार किया। मगर भक्त जी ज़ोर देने लगे कि बाबूजी इन्हें ले लें। उस वक्त ख़्याल पैदा होने पर कि शायद सत्पुरुष ने ही भक्त जी को रुपया देने की आज्ञा दी हो, बाबू जी ने रुपया पकड़ लिया। इसके बाद तांगा रवाना हो गया। गुरदासपुर पहुंचने पर वह तांगा छोड़ दिया गया और दूसरे तांगे में, जो दरियाये व्यास की तरफ जाता था, दोनों सवार हो गए और दरियाये व्यास के किनारे जा उतरे। वहां से दरिया पार करके पैदल मुकेरियां पहुंचे। मुकेरियां से आगे प्रेमी लाला शंकर दास जी बाबू जी को ले गए और एक एकांत जगह दिखलाई। फिर वहां से वापिस आकर दसूआ ले गए जहां उनके रिश्तेदार थे। पहले उनके गृह पर ले गए फिर शहर से बाहर ले

जाकर कुछ एकांत स्थान दिखलाए। स्थान दिखलाने के बाद दोनों गाड़ी द्वारा जालंधर पहुंचे। जालंधर से होशियारपुर वाली गाड़ी पकड़कर होशियारपुर पहुंचे और वहां से बस द्वारा डेरा गोपीपुर पहुंचे। एक दिन बाबू जी ने डेरा गोपीपुर लाला शंकरदास के गृह पर निवास किया और फिर वहां से बस द्वारा धर्मशाला चले गए और जो-जो हालात विभिन्न एकांत स्थानों के देखे थे श्री महाराज जी की सेवा में अर्ज़ कर दिये गए।

इसके बाद सत्पुरुष की झाड़ की पत्रिका पहुंची कि क्यों बाबू जी ने गुरु दरबार में हाज़िर होकर लेन-देन किया है? इस पर बाबू जी ने जवाब में अर्ज़ की-कि असल हालात क्या थे? कैसे बाबू जी ने प्रेमी लाला शंकर दास से रुपया मांगा था और कैसे जब तांगे में सवार हो गया तो भक्त जी ने रुपया पेश किया? बार-बार इंकार करने पर और भक्त जी के बार-बार ज़ोर देने पर कैसे ख़्याल उठा कि आपने यह रुपया बाबू जी को देने की भक्त जी को आज्ञा न दी हो इसलिए रुपया पकड़ लिया और यह भी अर्ज़ कर दी कि पेंशन आने पर यह रुपया वापिस अदा कर दिया जावेगा। एकाउन्टेंट जनरल लाहौर के दफ्तर में बाबू जी के मुसलमान दोस्त थे। उन्होंने दूसरे बैच के पेंशन के कागज़ात भेज दिये और बाबू जी को जब पेंशन मिली तो रुपया वापिस अदा कर दिया।

काहनूवान में रोज़ाना सत्संग का प्रोग्राम निश्चित किया गया। नये-नये प्रेमी सज्जन हाज़िर होकर सत् उपदेशों का लाभ उठाते। एक दिन प्रेमियों ने श्री महाराज जी की सेवा में विचार रखा कि गुरु स्थान जो पाकिस्तान में चला गया है, संगत के एकत्र होने के वास्ते जगह की ज़रूरत है। हकीम जसवंत राय जी ने अपनी ज़मीन अर्पण करने का विचार पेश किया और दो-तीन और जगहें भी दिखलाईं, मगर कोई फैंसला न हुआ। एक दिन सत्पुरुष ने फरमाया:- प्रेमियों! तुमको अपने सत्संग के वास्ते जगह बनानी चाहिए। यह बहुत ज़रूरी है। कोई अच्छी सी जगह देखकर कुटिया बना लो।

प्रेमियों ने यत्न करके काहनूवान कस्बे से एक मील के फ़ासले पर नहर छम्ब के किनारे एक तकिया मुसलमानों का जो बनाया हुआ था, उसे देखकर चुन लिया और सफाई वग़ैरा करवाकर श्री महाराज जी से प्रार्थना की:-महाराज जी! आप भी तशरीफ़ ले चलें और जगह देख लेवें, और जगह पसंद आ जावे तो वहां सत्संग की आज्ञा फरमावें।

श्री महाराज जी ने जगह जाकर देखना स्वीकार कर लिया, मगर फरमाया:- प्रेमियों! जब कभी आईंदा इधर आना हुआ खेमा उसी बाग़ में लगाकर ठहरा जावेगा जहां अभी ठहरे हुए हैं। तुम्हारा प्रेम पूरा करने के वास्ते सत्संग सम्मेलन के दिन वहां चले चलेंगे। प्रेमियों ने वहां कुटिया बनवा दी और 16 जनवरी 1948 मुताबिक एक मॉघ को संगत ने कुटिया पर सत्संग सम्मेलन निश्चित करके इलाका गुरदासपुर के प्रेमियों व जनता को सत्संग में शामिल होने के लिए पैग़ाम भेज दिये।

निश्चित दिन इलाके से सब प्रेमी और जनता कुटिया पर आ गए। सत्संग किया गया और आपने जो अमृत वर्षा फरमाई उसका सार नीचे दिया जा रहा है।

"ईश्वर इस भयानक काल में तुम सब को धर्म मार्ग में विश्वास देवें। जिन-जिन मुसीबतों को तुमने देखा है यह कोई नई बात नहीं। पहले भी फसाद होते रहे हैं। लोग उजड़ कर एक जगह से दूसरी जगह जाते रहे हैं। ऐसे वाक्यात सबक देने वाले होते हैं। संसार में सिवाये अशांति के और कुछ नहीं। स्वार्थी यानि खुदगर्ज़ लोग हमेशा से ऐसा करते चले आए हैं। करता कोई है, भरता कोई है। पिछली लापरवाहियों ने यह वक्त दिखाया है अब भी वक्त है, आपस में ज़्यादा से ज़्यादा प्रेम पैदा करो। महापुरुषों के वचन मानकर धर्म को अच्छी तरह समझो, धारण करो और ऐसे साधन करो ताकि मिलकर आराम से वक्त गुज़रे। अपना आहार, व्यौहार, विचार, संगत शुद्ध करो। भ्रष्ट आहार, मांस, शराब की यह सब मेहरबानियां हैं। यह आहार जीवों की बुद्धि को जड़ बना देता है और ऐसे हालात लोग पैदा कर देते हैं कि आपस में मिलकर बैठ नहीं सकते। इसी कारण, न सही सत्संग किसी से बन सकता है, न सही विचार। किसी मज़हब की तालीम व आचरण आपस में लड़ना-भिड़ना नहीं सिखलाते। ज्यूं-ज्यूं लोगों के ख़्यालात भ्रष्ट व आहार-व्यौहार ज़्यादा भ्रष्ट होते जाते हैं त्यों-त्यों ही आचरण में गिरावट आती जाती है और आपस में कट-कट कर मरने की सोचने लग जाते हैं। जिस भी गुरु, पीर, अवतार को कोई मानने वाला है उसकी शिक्षा अनुसार चलकर ही हर जगह सुख पा सकते हो। नुमायश व अय्याशी जीवन अशांति की तरफ ले जाने वाले हैं। विचार की एकता और ख़्यालात की एकता कभी नहीं हो सकती। कबीर, नानक, राम, कृष्ण और दीग़र गुरुओं को मानने वाले सच्चे माइनों में तब ही हो सकते हो जब उनके कहने के मुताबिक चलोगे। प्रभु सबको गुरु वचनों में विश्वास और आपस में प्रेम भाव बख़्शें।"

इस उपदेश अमृत के बाद सत्संग आरती और समता मंगल उच्चारण करने के बाद समाप्त हुआ और प्रशाद बांटा गया और आई हुई संगत को लंगर भी खिलाया गया।

138. जगाधरी की तरफ प्रस्थान

सत्गुरु के आगमन की सूचना उजड़े हुए प्रेमियों को, जहां-जहां कोई आकर आबाद हो रहा था, मिलने लगी। जगाधरी में जो प्रेमी आबाद थे उन्हें जब आपके काहनूवान आने का पता लगा तो वह सेवा में प्रार्थना करने लगे:- आप जगाधरी तशरीफ़ लाकर उनको भी दर्शन देवें और ढाढ़स बंधायें। काफी दिन तो सत्पुरुष यह लिख करके टालते रहे कि प्रेमियों! तुम खुद उजड़े हुए हो, फ़कीरों को कहां ठहराओगे। मगर प्रेमी बाकायदा प्रार्थना करते रहे। आख़िर आपने उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और उस तरफ का प्रोग्राम बनाकर उन्हें सूचना दी गई।

29 जनवरी, 1948 को आप काहनूवान से रवाना हुए। आप दोपहर डेढ़ बजे के बाद गुरदासपुर स्टेशन पहुंचे और गाड़ी में सवार होकर रात के आठ बजे अमृतसर स्टेशन पर पहुंचे। वहां पता चला कि महात्मा गांधी को किसी ने गोली मार कर मार डाला है। इस ख़बर के फैलने की वजह से स्टेशन शहरे खामोशां बना हुआ था। यद्यपि भीड़ बहुत थी मगर नगर में किसी प्रकार का शोर व गुल न था। आपने उस समय फरमाया:

''बड़ा अनर्थ किसी ने कर दिया है। अब हिन्दुस्तान निवासियों को उनकी कद्र होगी। बड़ों-बड़ों के दिमाग़ ठिकाने आ जावेंगे। बलि तो ज़रूर चढ़नी ही थी। ऐसे महापुरुष अपना काम ख़त्म करके चले जाया करते हैं। बड़ी अच्छी चार गुना शोभा लेकर गए हैं। अगर ज़िंदा रहते तो शायद इतनी इज़्ज़त न पाते। अफ़सोस तो ज़रूर है मगर उनकी कुर्बानी आज़ादी की जड़ें ज़रूर मजबूत कर देगी।''

रात को गाड़ी पर सवार होकर आप जालंधर छावनी पधारे। वहां प्रेमी मलिक रणबीर देव चावला के क्वार्टर पर तशरीफ़ ले गए। आपके पधारते ही मलिक जी के पिता जी ने नमस्कार करके अर्ज़ की:- दाता जी! बड़ी कृपा की है। इस तूफान से आपकी कृपा से बचकर इधर आना हुआ है।

आपने इस पर फरमाया:- ''प्रेमी! प्रभु हर जगह रक्षक हैं। सिर्फ विश्वास होना चाहिए।'' वहां भी महात्मा गांधी के मारे जाने की चर्चा हो रही थी। आपने उस समय फरमाया:

''सूरज ग़रूब (अस्त) होने पर उसकी कद्र हुआ करती है। अब इन लीडरों को ईश्वर सुमति देवें।''

यह विचार हो ही रहे थे कि मिलिट्री के मुलाज़िम प्रेमी सुखलाल जी, जो काहनूवान के पास ही के रहने वाले थे, दर्शनों के लिए हाज़िर हुए। वह उन दिनों जालंधर छावनी अपनी रेजीमेंट के साथ थे। आपने उनसे पूछा:- प्रेमी! तुम्हारी मिलिट्री का क्या हाल है?

प्रेमी सुखलाल ने जवाब दिया:- ''महाराज जी! आज तो सारी मिलिट्री ने व्रत रखा हुआ है। मिलिट्री तो मुल्क की ख़ातिर जान कुर्बान करने को तैयार है। अंग्रेजों के ज़माने में मिलिट्री वाले नहीं बिगड़े, अब तो अपने मुल्क का काम है।''

श्री महाराज जी:- प्रेमी! अब तो हकूमत ही तुम्हारी है। अपनी तरफ से तन-मन करके देश का हित दिल में रखो। इनका विचार हो रहा था कि अब दिल्ली जाकर गांधी जी को मिला जावे। कुछ ज़माने के हाल पर विचार करके सदाचार की बाबत उनसे तबादला ख़्यालात किया जावे। मगर अब सुनने वाला कौन है? इसके बाद प्रेमी ने पूछा:

प्रश्न : महाराज जी, मिलिट्री की नौकरी में आदमी ज़्यादा सादा रह सकता है। यह भी ऋषियों का जीवन है। मगर संसारी मोह-जाल बच्चों का फिर भी बना रहता है। संसार से अलग रहने पर भी माया पीछा नहीं छोड़ती?

उत्तर : प्रेमी, हर एक जीव के अंदर एक न एक विकार ज़्यादा होता है। कोई काम में ग्रस्त है, कोई मोह में, कोई क्रोध में तो कोई लोभ में, यानि एक न एक विकार में तीव्र वासना बनी रहती है। मोह करके हर एक जीव संसारी लगाव बनाये रखता है। इसके बाद सब विकार साथ-साथ पैदा होते जाते हैं। इन विकारों से ही जीव ने छुटकारा हासिल करना है। गृहस्थ विरक्त का सवाल नहीं। जिनके कलेजे के अंदर तड़प पैदा हो जाती है कि सत्य को हासिल करना है, फिर वह राज त्याग कर भी भर्तृहरि, गोपीचंद, महावीर, बुद्ध, हरिचंद, ऋषभ देव जैसे निर्मोह, निर्लोभ, निर्वास अवस्था

को प्राप्त कर लेते हैं। जब-तक चित्त में द्वैत यानि दो भाव हैं कि माया भी बनी रहे और मायापति भी मिल जावे, ऐसा हो नहीं सकता। एक मयान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं। हां, शुद्ध विचार, आहार, व्यौहार की निर्मलता चित्त में ठंडक बनाए रखती है। आम संसारियों की तरह परमार्थ में प्रीत रखने वाला जीव हाहाकार नहीं करता। संसारी जीव नित ही भोगों की प्रीति व प्राप्ति में ही पतंगे की तरह जलते रहते हैं। शब्द, स्पर्श, रूप, गंध, रस - इन पांच प्रकार के सूक्ष्म नफ़सानी लज़्ज़तों में (इन्द्रिय भोगों में) हर एक का मन डावांडोल रहता है। जितने भी जीव रात-दिन कोशिश कर रहे हैं ज़रा निर्मल बुद्धि से विचार कर देखो, पूरब से पश्चिम तक मन पांच विषयों को पूर्ण करने के वास्ते ही लगे हुए हैं या इनके अलावा और भी कोई यत्न है। चौदह लोकों में जहां तक जीवमयी सृष्टि है, जितने भी शरीरधारी जीव हैं - सबको माया ने घेर रखा है। सब ही मोहवश होकर दिन-रात इन्द्रियों की वासना को पूरा करने में लगे हैं। जो भी जीव बिना विचार के चल रहा है वह संसार में आने का कुछ अर्थ नहीं पा सकता। जरनैल-करनैल क्यों न बन जायें? राजे, राने, गृहस्थी, विरक्ती- सबके सब ही तब-तक अंधकार में जीवन व्यतीत कर रहे हैं जब-तक संसार को देखकर मोहित हो रहे हैं। दुनिया का राजा हो जाना बड़ी बात नहीं। जिसके हाथ में डंडा होता है वही मानी बन जाता है। दुनिया को ज़ेर (नीचा दिखाना) कर सकता है, मगर मन राजे को ज़ेर करना निर्मल बुद्धि वाले का काम है। इस अद्‌भुत माया के चक्कर को अच्छी तरह विचार करना और फिर मन को सत् की तरफ लगाना ही बहादुरी है। जिन्होंने मन पर राज किया उनको ही राम, कृष्ण अवतार आदि कहा गया। नानक, कबीर, सत्पुरुषों के नाम ले-ले कर ही दुनिया तर रही है। उनके ज़माने में उन सत्पुरुषों के दर्शन करके चन्द ही जीवों ने कल्याण पाई। लेकिन बाद में उनके नाम लेवा श्रद्धालु भक्त प्रेम-अनुराग के बल द्वारा ही आत्म ज्ञान को प्राप्त हुए। धन्ना भक्त, पीपा, सेन, नामदेव, रविदास, सूरदास, मीराबाई, सदना कसाई और भी कई भक्तों ने सिद्ध गति पाई। हर प्रेमी के अंदर जिस वक्त आत्म विरह जागती है, वह चाहे किसी देश के रहने वाले हों, कमाई करके जानी-जान को जान सकते हैं।

जब लग भरम गंठी नहीं टूटे, तब लग कैसे तृष्णा छूटे॥
जब लग सोध कुंड नहीं जाना, तब लग मन कैसे पतियाना॥
अनहद वाणी प्रेम की खानी, त्रिकुटी आसन विरला जानी॥
बांध पवन पाताल ठहराए, 'मंगत' योगी अमर घर जाये॥

फिर कबीर साहेब के दोहे भी उच्चारण करने शुरू कर दिये।

चल-चल हंस वही देश, जहां तेरा पिया बसे॥
नौ दर मूंद दसवें दर खोले, स्वास गगन चढ़ावे॥
चढ़ी अटारी सुरत सम्भारी, बौहड़ न भवजल आवे॥
जां तेरा पिया बसे, जगमग जोत उदर में झलके॥
छिन राग सुनावे मधुर-मधुर, अनहद धुन बाजे प्रेम इत झुलावे॥
अष्ट सिद्धी कर-कर, ब्रह्मा वेद सुनावे॥

जग में बहुत गुरु कन फैंकू, फांसी लाये बुझावे॥
कहें कबीर वही गुरु पूरा, जो कन्त को आन मिलावे॥

प्रश्न : महाराज जी, अभी तक तो हमने कोई गुरु धारण नहीं किया। क्या गुरु के बग़ैर कुछ समझ नहीं आ सकती? यह आपने बड़े-बड़े ऊंचे शब्द पढ़ दिये हैं, हमको कुछ समझ नहीं आई। वह पहला पद ही समझ आया है कि जब-तक भ्रम मौज़ूद है तब-तक तृष्णा वग़ैरा से मुक्ति नहीं हो सकती।

महाराज जी:- प्रेमी! गाते-गाते कुलवंत हो जाया करते हैं।

ममता माई जन्मत खाई, काम क्रोध, दोऊ मामा।
मोह नगर का राजा खाईयो, तब पहुंचयो उस धामा॥

लाल जी, गुरु के बग़ैर तो जीव न संसार में चल सकता है, न करतार में। परमार्थ मार्ग तो वैसे ही कठिन है। श्रद्धा, विश्वास के बल द्वारा सत्मार्ग में प्रीत बन जाया करती है। आगे रंग चढ़ाने वाला कोई मिल जाए तो करोड़ वर्ष का पंथ पल में ही चुक जाता है। वैसे जीव भ्रम में कई जन्म गुज़ार देता है। पढ़ सुन कर भी मन नहीं मानता। यह ऐसा दुष्ट है। बाहोश (विवेकशील) जीव कोई अवतार ही आते हैं। बाकी सारे मदहोशी ही हालत में संसार के मोह-माया में फंसकर भटकते रहते हैं। जिस समय कोई राह लगाने वाला मिल जाएगा, सब शब्दों की समझ लग जावेगी। किसी रास्ते पर चलने वाले बनो तो सही।

प्रेमी:- महाराज जी! ड्यूटी पर हाज़िर होना है, लेकिन आपसे अलग होने को जी नहीं चाहता।

महाराज जी:- प्रेमी! इस मामूली सरकार का इतना डर है, वक्त पर हाज़िर न हुए तो शायद क्या हो जावेगा? ऊँची सरकार का भी खौफ़ मन में रखो।

दूसरे दिन भी इस प्रकार चर्चा चलती रही। रात के सत्संग के बाद मलिक रणबीर देव ने जालंधर कुछ दिन ठहरने के लिए ज़ोर दिया तो आपने फरमाया:

''फिर किसी समय वक्त दिया जावेगा। अभी तुम भी ठीक तरह पैर जमा लो। इस समय सब प्रेमियों का हाल तो ऐसा ही है, फिर भी उनके प्रेम से खिंचे हुए जा रहे हैं। जगाधरी में काफी जनता उस तरफ की आई हुई है। वह लोग भी परेशान हाल हैं। इन फ़कीरों के पास और कोई धन-दौलत तो नहीं है, विचारों द्वारा ही उनकी तसल्ली हो जावे, इसी में इनको खुशी है।''

139. जगाधरी में सत् प्रचार

पहली फरवरी, 1948 को आप जालंधर से जगाधरी के लिए रवाना हुए। गाड़ी में बहुत भीड़ थी, इसलिए आपको काफी कष्ट उठाना पड़ा। तकरीबन साढ़े ग्यारह बजे रात को गाड़ी जगाधरी स्टेशन पर पहुंची। उन दिनों गाड़ियां भी वक्त के मुताबिक नहीं चलती थीं। इसलिए प्रोग्राम प्रेमियों को नहीं भेजा गया था। इसलिए स्टेशन पर कोई प्रेमी मौज़ूद न था। भक्त बनारसी दास ने स्टेशन

से बाहर जाकर तांगा कर लिया और श्री महाराज जी को लेकर जगाधरी चल दिये। एक बजे के करीब तांगे वाले ने देवी भवन बाज़ार तांगा पहुंचा दिया। इस बाज़ार में प्रेमी गोकुल चंद की दुकान थी। दुकान बंद थी। मकान का पता नहीं था। श्री महाराज जी को एक दुकान के बरामदे में बिठाकर भक्त जी लाला गोपी चंद का मकान तलाश करने लगे। चौकीदार से पूछा गया तो वह मकान का पता न दे सका। प्रभु ने ही कृपा की-कि भक्त जी को ठिकाने पर पहुंचा दिया। दरवाज़े पर दस्तक दी तो अंदर से गोपी चंद जी बाहर आ गए। गोपी चंद जी ने दूसरे मकान में श्री महाराज जी का आसन लगा दिया। अगले दिन आपका आसन शहर से बाहर तकरीबन डेढ़ फर्लांग के फ़ासले पर सेठ बाबू राम स्वरूप के बाग के एक कमरे में लगाया गया। बाबू राम स्वरूप का रिहायशी मकान भी उसी मोहल्ले में था और प्रेमी गोपी चंद के मकान से थोड़ा आगे था।

ज्यों-ज्यों पाकिस्तान से उजड़कर आये हुए लोगों को आपके आगमन का पता लगा तो लोग लगातार दर्शन करने आने लगे। सत्संग का समय रात ८.०० बजे से ९.०० बजे तक निश्चित कर दिया गया।

एक दिन प्रेमी लखमीदास जी, जो शुभ स्थान के रहने वाले थे, श्री महाराज जी के जगाधरी पधारने की ख़बर पाकर दर्शनों के लिए हाज़िर हुए। उन्होंने आपको सारे शुभ स्थान के हालात सुनाये।

सत्पुरुष के आदर्श जीवन का उस इलाके के मुसलमानों पर इतना असर था कि जब मुसलमान बंटवारे से पहले उस इलाके में प्रोपेगंडा करने आते तो काज़ी नूर मोहम्मद साहब इलाके में कोई प्रचार वग़ैरा न होने देते और सत्पुरुष को सांझा फ़कीर कहते।

श्री महाराज जी ने प्रेमी लखमीदास को फरमाया:- "प्रेमी! मुसीबत में ही इंसान की परख हुआ करती है। जो कुछ हुआ सब कुछ भूल जाओ। अब आपस में मिलजुल कर रहने की कोशिश करो।"

जो सामान शुभ स्थान पर पड़ा था, कप्तान यूसुफ साहिब ने उसे बेच करके लखमीदास को रकम दे दी थी, जो उसने सेवा में भेंट कर दी। उन्होंने आश्रमों के बर्तनों व दरियों वग़ैरा के बारे में भी पूछा जिसके बारे में श्री महाराज जी ने लिख दिया कि बर्तन वग़ैरा तो जो लोग इधर-उधर से गए हैं उन्हें दे दिये जावें और दरियों के बारे में फरमाया कि या तो सरकार को दे दी जावें या जैसे मुनासिफ ख़्याल किया जावे वैसा करें। ये दरियां बहुत बड़ी थीं और हाल में जो 40X20 का था उसमें बिछाई जाती थीं।

एक दिन प्रेमी शेष राज खारवां से चरणों में हाज़िर हुआ और शिक्षा के लिए प्रार्थना की तो आपने फरमाया:

"प्रेमी, और भी कोई ब्राह्मण इस तरह आने की कोशिश कर रहा है या तू ही भूला हुआ आ गया है। आगे तो किसी ने उस तरफ इनकी बात भी अच्छी तरह नहीं सुनी। आए, कड़ाह खाया और चल दिये। ऐसी बैल बुद्धि के लोग हैं, उनके दिमाग़ में कोई बात बैठी ही नहीं।"

शेष राज ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! ज़मीन उखाड़ने वाले मोटी बुद्धि के ही हुआ करते हैं। किसने हम लोगों को पहले उठाने की कोशिश की है? आपकी कृपा से ही मुसीबत आने पर इधर जागृति होने लगी है। दास आपकी वाणी को घर-घर पहुंचायेगा। जिस तरह हुक्म करेंगे, चलेगा।''

सत्पुरुष ने उसकी यह बातें सुनकर उस पर दया कर दी और उसे सत् मार्ग पर लगा दिया।

एक दिन जगाधरी निवासी प्रेमी आश्रम के बारे में बातचीत करने लगे और अर्ज़ की:- ''महाराज जी! इधर ही कोई जगह बनानी चाहिए।'' श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमियों! अभी सब बे-ठिकाने हालत में हैं। किसी की हिम्मत नहीं जो इसके वास्ते त्याग कर सके। काफी कुर्बानी का काम है। अभी यह बात ही मुंह से न निकालो। इस हालत में फ़कीर किस को सेवा के लिए प्रेरणा करें। धर्म के मार्ग में खर्च करना बड़ा मुश्किल है। लोग लूट कर खा जायें, चोर लूट लें, परिवार वाले खा-खा कर जूते मारें, संसारी यह सब कुछ सहन कर लेंगे, मगर धर्म के मार्ग में खर्च करने में कोई विरला ही सर-धड़ की बाज़ी लगाया करता है। इस तरह धन लगाने से कमी नहीं पड़ती, मगर दिल कहां से लायें?''

यह सुनकर प्रेमी राम स्वरूप, बाग के मालिक, ने अर्ज़ की:- महाराज जी! स्थान इस तरफ बनाने की कृपा करें। आपकी कृपा से ज़मीन का बंदोबस्त हो जावेगा। जितनी ज़मीन आप हुक्म करें, खरीद ली जावेगी।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! यह कुछ नहीं कह सकते। समय आया तो विचार कर लेना। अब तुम इधर के प्रेमियों ने ही कोशिश करनी है। बाबू राम स्वरूप ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! जिधर आप सुबह के समय जाते हैं, माजरी के सामने वाली ज़मीन कोशिश करके ली जा सकती है।''

श्री महाराज ने फरमाया:- ''प्रेमी! तुम अकेले क्या कर सकते हो? माता-पिता से पहले पूछ लो, फिर कहना। आगे ही कारोबार में तुमको नुकसान उठाना पड़ गया है। बच्चों वाली बात न करो। पहले घर में अच्छी तरह विचार कर लो, कोई मजबूरी न समझो।''

इस पर सब प्रेमी बोल उठे:- ''महाराज जी! यह तो हम सबका फर्ज़ है। ऐसा कारज तो प्रेम भाव से आपकी कृपा से ही हो सकता है।''

140. क्षर-अक्षर का निर्णय

सुबह के समय महाराज जी स्नान करके आसन पर पधारे ही थे कि एक पंडित जी आए और आते ही एक श्लोक संस्कृत में पढ़ दिया।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! यह संस्कृत वग़ैरा नहीं पढ़े हुए। साधारण तौर पर तुम ही इसका विचार करो। क्षर-अक्षर का भेद अच्छी तरह भगवान कृष्ण ने गीता के आठवें अध्याय में साफ दिया हुआ है, और तुम क्या चाहते हो?''

पंडित जी ने कहा:- ''महाराज जी! इसका निर्णय किस तरह किया जाये?''

इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''यह तो जीते जी मरना है। पढ़ लेने से ज्ञान का पता नहीं लगता। इस परम विवेक के जानने वाले ही परम गति अविनाशी पद को प्राप्त होते हैं। इस विवेक को जानने के वास्ते ही महात्माओं की शरण में जाया जाता है। अक्षर अवस्था की प्राप्ति करके ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि योग आचारी, सिद्ध, बुद्ध, नाथ, गुरु, अवतार, पीर कहलाये। नाम-रूप संसार का फैलाव, जितना भी माया जाल दिखाई दे रहा है सबका सब झूठ यानि नाश रूप है। अक्षर यानि अविनाशी, अपरम शक्ति, नित अनादि है। उसका ही गुणी पुरुष नित ध्यान, सिमरण करके परम सिद्धि को पाते हैं। जब-तक अजर-अमर तत् का बुद्धि अनुभव नहीं कर लेती तब-तक उसकी अशांति ख़त्म नहीं होती। करोड़ों जन्म-जन्मांतर तक जीव तृष्णा में गोते खाता रहता है। बन्धनों से खुलासी नहीं हो सकती, जब-तक क्षर रूप माया के संग बुद्धि लिपटी है। उस अक्षर ब्रह्म को मानने के वास्ते कृष्ण ने गीता में फरमाया है:- हे अर्जुन! सब दरवाजों को बंद करके मन को हृदय में रखते हुए प्राणों को मस्तक में ठहराकर मुझ अक्षर अविनाशी परमेश्वर का ध्यान करता हुआ जीव परम गति को प्राप्त होता है, जिस स्थिति को प्राप्त होकर वापिस किसी मृतक लोक में नहीं आना पड़ता। सारी गीता का सार ही यह है कि जिस्म और जान क्या वस्तु है? पुरुष और प्रकृति का खोलकर निर्णय सुनाया गया है। अव्यक्त रूप में आरूढ़ होने के वास्ते सत् यत्न को फिर पांचवें अध्याय, छठे और आठवें अध्याय में बहुत अच्छी तरह समझाया गया है। पढ़ लेने से ज्ञान होना होता तो सब ही ज्ञानी बन जाते। करनी करके ही वह अवस्था प्राप्त हो सकती है। खाली चार श्लोक इधर के चार उधर के, या उपनिषद् याद करने से कोई पंडित नहीं हो जाता। ब्राह्मणों ने तो श्लोक बेच कर गुज़रान का ज़रिया बना लिया है। अपने असल कर्तव्य को भूलकर क्या दशा बना ली है? गीता का अर्थ कृष्ण ही जानते हैं, और सब पत्तलें चाटने वाले हैं। पढ़कर गुढ़ने की कोशिश करो।''

पंडित जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! हमको भी किसी रास्ते पर डाल देवें।

हज़ूर ने फरमाया:- ''प्रेमी! यह खुद अभी लगे हुए हैं। तलाश करते रहा करो। कोई ख़बर पाने वाला आ जावेगा जब पूरी तरह खोज करोगे।''

141. देहरादून का प्रोग्राम

राय साहब दीवान रला राम जी, जो प्रेमी लाला मुंशी राम जी कपूर के रिश्तेदार थे और लाहौर में श्री महाराज जी के दर्शन कर चुके थे, जब उनको आपके जगाधरी निवास का पता लगा तो उन्होंने पत्र द्वारा प्रार्थना की:- महाराज जी! इन्हें कुछ समय देवें। पत्र पढ़कर हज़ूर ने भक्त बनारसी दास को फरमाया:- प्रेमी! अब ज़्यादा इधर नहीं ठहरना चाहिए। रात को सत्संग के बाद प्रेमियों से विचार कर लेना, और जगह के सब प्रेमियों को वक्त देने से इंकार कर दिया गया है।

अब इस नये प्रेमी के प्रेम को पूरा करना चाहिए और नई जगह पर नये प्रेमियों के दर्शन करने चाहिए। फिर पूछा:- ''तेरी क्या राय है?''

भक्त जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! आप मालिक हैं। जिधर मर्ज़ी हो कृपा करें। राय साहब का प्रेम तो उधर ही खींच रहा है। बड़े गुणी और श्रद्धावान हैं। दिखलावा करने वाले नहीं दिखलाई देते हैं। फिर यह इलाका भी नया है। थोड़े दिनों बाद मौसम गर्मी का भी आ रहा है। उधर ही किसी जगह ठहरा जावे। आज्ञा हो तो पत्र लिख दिया जावे।''

हज़ूर ने फरमाया:- ''आज रात को फिर प्रेमियों की राय ले लो। अच्छा, अपना काम तो पूरा करो। कब-तक तुम्हारी इच्छा पूरी होगी या इसी तरह जगह-ब-जगह बोझ उठाए फिरोगे।''

भक्त जी ने अर्ज़ की- महाराज जी! दो प्रसंग लिखने रहते हैं उनकी दुरुस्ती का काम रह जायेगा।

रात सत्संग के बाद प्रेमियों के सामने प्रोग्राम रखा गया और 22 मार्च, 1948 को वहां से रवानगी का प्रोग्राम निश्चित किया गया।

श्री महाराज जी ने भक्त जी को फरमाया:- प्रेमी को पत्र लिख दो कि 22 मार्च शाम को सात बजे देहरादून पहुंच जावेंगे। और साथ ही लिख दो कि आने की तकलीफ़ न करें। उधर ही बस के अड्डे पर इंतज़ार करें।

142. शरीर विनाश की चेतावनी

आप जिस बाग में निवास कर रहे थे वहां भी हमेशा के प्रोग्राम के अनुसार पूर्ववत् रात को तप के लिए बारह बजे के करीब बाहर जंगल की तरफ चले जाया करते थे और सुबह सूरज उदय होने के करीब वापिस आसन पर चले आते थे। वापिस आकर स्नान करके आसन पर पधारते थे। आपका यह प्रोग्राम हमेशा से चला आ रहा था।

एक दिन जब सुबह आसन पर पधारे तो स्नान के समय अपने शरीर को देखते हुए फरमाने लगे:- इस शरीर की क्या हालत है? जब-तक स्वांस की धारा जारी है, खड़ा है। बोलने वाला जब निकल जाता है इसकी क्या गति हो जाती है?

आज जब वापिस आ रहे थे तो रास्ते में देखा कि बैल खड़ा-खड़ा खेत में गिर गया। अभी गिरे हुए दो मिनट ही गुज़रे थे कि एक दम गिद्ध आकर उस पर बैठकर आंखें निकालने लगे। उनके साथ कुत्ते और कौवे भी पहुंच गये। यह खड़े-खड़े देख रहे थे और विचार कर रहे थे कि किस तरह इन जानवरों को मुर्दे का पता लग जाता है? देखते-देखते कुत्तों ने मांस फाड़ डाला और कौवे नोचने लगे। जानवर का शरीर तो फिर भी हज़ारों जीवों का आहार बन जाता है मगर इंसानी शरीर किसी काम नही आता। आख़िर इस शरीर की मुट्ठी भर राख ही बनती है।

किधर गया भौर जो उठाये पहाड़ नूं।
जांदी वार न मिलया महरम यार नूं॥

न आते हुए जीव को कोई देखता है, न जाते हुए। जिसने जाना है उसने ही जाना है। संसारी जीव दु:ख को देखकर फिर सुख की प्राप्ति के वास्ते यत्न करने लग जाते हैं।

स्नान कर चुकने पर जब वहीं खड़े-खड़े पगड़ी बांध रहे थे तो साथ ही साथ फरमा रहे थे -

जिस सिर बांधे रुच-रुच पाग।
सो सिर चूंडन लागे काग॥

इस दोहे को बार-बार उच्चारण करते हुए आसन पर पधारे और फिर आपने कबीर साहब के निम्नलिखित शब्द उच्चारण करने शुरू कर दिये।

मन रहना होशियार, इक दिन चोर दा आवेगा।
तीर, तफ्क, तलवार, बर्छी न बन्दूक चलावेगा॥
आवत, जावत लखे न कोई, घर में धुंद छावेगा।
न गढ़ तोड़ा, न गढ़ फोड़ा, न कुछ रूप दिखावेगा॥
नहीं सुने सकल फरियाद, बन ऐसा तस्कर आवेगा।
लोक, कुटुम्ब, परिवार घनेरे, खोज-खोज न पावेगा।
ऐसा कोई है संत विवेकी, नाम भजन गुन गावेगा।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, खोल कवाड़ी जावेगा।।

यह इस नाशवान शरीर के विनाश की चेतावनी थी। इससे साफ ज़ाहिर होता है कि सत्पुरुष किस तरह हर चीज़ से शिक्षा लेते हैं और किस तरह वह आदर्श जीवन पेश करते हैं ताकि संसारी, भूले-भटके जीव उनके इस आदर्श जीवन से शिक्षा हासिल करें और मौत का भय और शरीर की विनाशता हर समय ध्यान में रखते हुए इस जीवन यात्रा को व्यतीत करें। जब-तक जीव मौत का भय नहीं मानता वह कभी भी सत्कर्मों की तरफ राग़ब न होगा, बल्कि हर समय कुकर्मों की तरफ राग़ब होगा और मोह-माया के जाल में फंस कर कलह और कलेश को प्राप्त होगा। इस माया जाल से छूटने के वास्ते ही सत्पुरुष समय-समय पर प्रभु से भूले-भटके जीवों को चेतावनी देते हैं ताकि जीव सत् विचार को धारण करके जीवन उन्नति करने के लिए सत्मार्ग पर चल पड़ें। सत्पुरुषों के जीवन आदर्श से शिक्षा लेकर सत् विवेक धारण करना ही लाभदायक है और ऐसा जीवन ही आस्तिकपन है। आपने श्री समता विलास में फरमाया है:

''हर एक महापुरुष की ज़िन्दगी का आदर्श धारण करना आस्तिकपन है। बरख़िलाफ इसके जो आदर्श को छोड़कर महज़ वज़ूद (शरीर) की पूजा करता है वह ही नास्तिक है। वह कभी भी माया के चक्कर से छूट नहीं सकता।''

श्री महाराज जी ने एक पत्र अपने कर-कमलों से दिल्ली संगत को लिखा, वह निम्नलिखित है।

आज्ञाकारी प्रेमी संगत दिल्ली,

तमाम संगत को आशीर्वाद पहुंचे। प्रेमी परमार्थी जी और याद राम सिंह ने दर्शन दिये और दिल्ली के प्रोग्राम के बारे में मजबूर किया। सो तमाम प्रेमियों को वाजया (सूचित) होवे कि हर वक्त हमको हृदय में देखें। चूंकि हालते ज़माना निहायत कष्ट में है, इस वास्ते प्रभु प्रेरणा यह ही है कि कहीं अनुकूल जगह में ज़्यादा समय तप में गुज़ारा जाये। इस वास्ते 22 मार्च को प्रभु इच्छा से देहरादून की तरफ चले जावेंगे और वहां किसी एकांत जगह ठहरेंगे और ईश्वर तप में ज़्यादा समय दृढ़ रहेंगे जिससे प्रभु कृपा होवे और संसार में शांति प्रगट होवे। अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। प्रभु कृपा इसी में है। तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद पहुंचे। अपने सत् विश्वास से कष्ट के समय को धैर्य पूर्वक बर्दाश्त करें। प्रभु कृपा इसी में है। गुरुमुखों का धर्म है कि प्रभु आज्ञा में निश्चित होकर दु:ख-सुख में धीरजवान रहें। हर वक्त गुरु आशीर्वाद को अंग-संग जानें। ईश्वर सत् विश्वास देवे। तमाम प्रेमियों, माताओं व बच्चों को दोबारा आशीर्वाद पहुंचे। हर वक्त समता में दृढ़ता धारण करके भयानक पाप की अग्नि से अपने आपको बचायें जिससे मानसिक व शारीरिक शक्ति प्राप्त होवे। ईश्वर गुरु वचन में विश्वास देवें और नित रक्षक होवें।

143. देहरादून में निवास

22 मार्च, 1948 को निश्चित प्रोग्राम अनुसार आप जगाधरी से चलकर शाम को देहरादून पहुंच गए। आगे प्रेमी बस के अड्डे पर इंतजार कर रहे थे। राय साहब दीवान रला राम जी आपको अपनी कोठी पर ले गए और वहां आसन लगा दिया। आपने उस दिन राय साहब से फरमाया:- ''प्रेमी! यहां ज़्यादा देर नहीं ठहरेंगे और पूछा:- प्रेमी! क्या एकांत जगह का प्रबन्ध हुआ है या नहीं?

राय साहब ने अर्ज़ की:- महाराज जी! अब तो सारा वक्त इधर ही कृपा करें। मसूरी वग़ैरा की तरफ कोई जगह देखी जावेगी, और भी बहुत सी इधर जगहें हैं।

श्री महाराज जी ने भक्त बनारसी दास को फरमाया:- सुबह चाय के बाद उनके साथ जाकर जगह देख आओ। जिससे विचार सुनना होगा खुद ही पहुंच जावेगा। बहुत सस्ता सौदा भी नहीं है, चार कदम चल कर जायेंगे तो ज़्यादा भला होगा।

दो रोज़ के बाद लाला दीप चंद के बाग में आसन लगाया गया। रोज़ाना सत्संग का प्रोग्राम निश्चित हो गया। नये-नये प्रेमी सत्संग में आने लगे।

अभी देहरादून में पधारे हफ्ता ही हुआ था कि प्रेमी रामजी दास दर्शन करने आ गया। उसके आने पर फरमाया:- ''कैसे आये हो?''

रामजी दास:- सेवा और दर्शन के वास्ते।

श्री महाराज जी:- किस की इज़ाज़त से आया है? बस दर्शन हो गए। रात रहकर वापिस चले जाओ। वक्त देखना चाहिए। ख़्वाह-म-ख़्वाह दूसरों पर बोझ बनना कहां तक अच्छा है? उधर तुम्हारी मां इनको गालियां निकालती होगी। जाकर मां की सेवा करो और थोड़ा बहुत काम भी कर लो। अभी थोड़े दिन हुए उधर काहनूवान ठहर कर आये हैं, फिर इतनी जल्दी दर्शन की क्या ज़रूरत पड़ गई है?

रात सत्संग के बाद पूछा:- ''प्रेमी! तेरे पास कितने रुपये हैं?''

रामजी दास:- महाराज जी! दो-तीन।

श्री महाराज जी:- अब वापिस किस तरह जाओगे?

रामजी दास:- बनारसी से ले लूंगा।

श्री महाराज:- उसके पास कौन सा बाप का खज़ाना पड़ा है जो दे देगा? तुम्हारी नज़र संगत की भेंट पर पड़ी हुई है। खुद उसे ख़र्च करने से रोकते हैं, तुमको अपने आप कैसे दे सकता है?

रामजी दास:- महाराज जी! काहनूवान में बाबू अमोलक राम ने भी चलते समय भक्त बनारसी दास से रुपये लिए थे।

श्री महाराज जी यह सुनकर बनारसी दास पर बहुत नाराज़ हुए।

भक्त जी वह रुपया अदा कर देंगे। ख़ास वज़ह करके मैंने खुद ही रुपये दे दिये थे, उन्होंने नहीं मांगे थे। भक्त जी ने जवाब दिया।

श्री महाराज जी:- ख़बरदार, आईंदा ऐसा लेन-देन का व्यौपार किया तो।

रामजी दास खामोश रहा। इस प्रकार एक हफ्ता तक प्रेमी को ठहराने के बाद उसे वापिस भेज दिया। जब भक्त जी उसको छोड़कर आए तो आपने फरमाया:- ''प्रेमी नाराज़ तो नहीं हो गया?''

भक्त जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! नाराज़ क्या होना था? उसके भले के वास्ते ही आपने फरमाया था।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! मां उसकी उधर घर में अकेली बातें बना रही होगी। भाई बोझ समझ रहा है। अपनी जीविका के वास्ते कुछ करे। कुछ मां की सेवा करे। बाकी वक्त अभ्यास करने में लगा दे। इधर क्या धरा है? कोई सेवा का कारज हो फिर भी विचार किया जावे। तुझे अपनी मदद के वास्ते ज़रूरत हो तो अलग बात है। सेवा करनी छोड़ दो। सेवा करवाने की मर्ज़ी हो तो फिर बुला लो।''

भक्त जी (हाथ जोड़कर):- महाराज जी! दास आपकी कृपा से मन में ऐसी धारणा नहीं रखता। न ही मुझे किसी की, की हुई सेवा पसन्द आती है। दास इस ख़्याल से किसी को मना नहीं करता कि यह न कोई कहे, बनारसी दास टिकने नहीं देता।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''तू देखता नहीं अमीरों से कौन सी थैलियां ली जाती हैं। सिर्फ भ्रष्ट बुद्धि वाले ही ऐसा मन में सोचते हैं। अगर किसी को सेवा के वास्ते कहा भी जाता है

तो संगत सेवा के वास्ते कहते हैं। अमीर आदमी और तो कुछ कर नहीं सकते, उनसे धन की सेवा करवाकर उनकी सफाई करवाई जाती है। फ़कीर तो मांग कर किसी से पानी का घूंट भी नहीं पीते। सिवाये तेरे किसी के हाथ की बनी हुई चाय भी ये इस्तेमाल नहीं करते। तेरी मर्ज़ी हो तो फिर सेवा में रह, अगर बहुत सेवा करके थक गया है तो फ़कीर किसी को ज़्यादा नज़दीक नहीं बैठने देते। फ़कीर तुम से प्रेम करते हैं। अभी तक इनकी ज़िन्दगी को तूने नहीं समझा। तेरा ख़्याल अगर सेवा करवाने का हो तो तेरे लिये दो फुल्के भी पका सकते हैं। तीन पाव पानी चाय का गर्म हो सकता है। भक्त जी यह वचन सुनकर हँसने लगे। मगर आपने फरमाया:- ''बेईमान! हँसता है, विचार नहीं करता।''

भक्त जी ने हाथ जोड़कर अर्ज़ की:- ''महाराज जी! बड़ी अच्छी तरह से अब समझ में आ गया है। किसी समय भी दूसरे का आसरा लेने की कोशिश नहीं करेगा। जहां तक हो सकेगा या जैसे बन सकेगा खुद ही सेवा करेगा।''

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''फ़कीरों ने जमात बनाकर नहीं चलना। तुम खुद ही सबको कह दिया करो, रहने या जाने के वास्ते।''

राजा, जोगी, अगन, जल, इनकी उलटी रीत।
परश राम डरते रहिये, थोड़ी पालें प्रीत॥

पीड़ित प्रेमियों की ख़बर गुज़ारी (वार्तालाप)

आपके देहरादून निवास के दौरान पाकिस्तान से आये हुए बहुत से प्रेमी सज्जन चरणों में हाज़िर होकर दर्दनाक हालात व वाक्यात सुनाया करते और आप बड़े प्रेम से मीठे वचनों द्वारा उनको धीरज देते। एक दिन प्रेमियों से जब सब हालात सुने तो आपने फरमाया:

''प्रेमियों! इस काली अंधेरी रात से बचकर आना बड़ी खुश किस्मती है। अब ईश्वर को याद करो और समां काटो। गवर्नमेंट तो लोगों के लिए बहुत कुछ सोच रही है। दिल हौंसला पकड़ते-पकड़ते ही पकड़ेगा।''

जब एक देवी के दर्दनाक हालात सुनाये गये तो आपने फरमाया:- ''प्रेमी! किस-किस का दु:ख सुना जाए। सब ही अपनी-अपनी जगह दु:खी हैं। सिवाए हौंसला देने के फ़कीर क्या कर सकते हैं? इनके पास है क्या? बाकी संजोग-वंजोग होना लगा हुआ है। जब अपने शरीर ने ही नहीं रहना, दूसरों के वास्ते क्या ग़म किया जावे? शरीरों ने हर हालत में ख़त्म होना है। कोई बीमारी से मर जाते हैं, कोई अपने आप मर जाते हैं, कोई मारे जाते हैं। किसी न किसी तरह शरीरों ने नाश होना ही है। कोई चार दिन आगे, कोई चार दिन पीछे। अपने-अपने कर्म भोग सबने भोगने हैं। रोने वाले के साथ रो लिया करो, हंसने वाले के साथ ज़रा हँस लिया करो। मगर अंतर से हर समय एक जैसी समान हालत में रहने की कोशिश करो। कोई किसी को न सुख दे सकता है, न दु:ख। हर एक जीव अपने-अपने शुभ-अशुभ कर्मों का नतीजा हासिल कर रहा है। तुम अब अफसोस किस-किस

का करोगे। प्रेमी, संसार में इस तरह उत्पत-खपत लगा आया है। सिवाय प्रभु सिमरण और थोड़ी सत् सेवा के मन को शान्ति देने वाली और कोई चीज़ नहीं है। संसार का ताओ बड़ा ज़बरदस्त है। तुमको मानसरोवर के पास बैठे हुए कुछ पता नहीं लगता। हर एक जीव का हृदय अंतर विखे जल रहा है। यह ही लोग जो वहां कहते थे, अब हिन्दुस्तान जाकर सिवाये ईश्वर सिमरण के और कोई काम न करेंगे, प्रभु अब इस दुःख से निकाल, बड़ी-बड़ी प्रार्थना करते थे, इधर आकर फिर भूल गए हैं। अपनी-अपनी पड़ गई है। पहले से भी अंहकार ज़्यादा बढ़ गया है। रात-दिन यह ही चिंता है कि किस तरह पहली जैसी हालत बन जाये। माया मोहिनी है। सबकी आंखों पर पर्दा डाल देती है। तुमको इन सब हालात को देखकर विचार करना चाहिए कि तृष्णायुक्त जीव कितने क्लेश में हैं। एक घड़ी आराम नहीं। फ़कीरों की बात कोई थोड़ी सुनता है। सब अपने-अपने रंग में रंगे हुए जा रहे हैं। यहां जो भी आता है संसार के बढ़ाने की कामना दिल में रखकर आता है। फ़कीरों से चलकर आशीर्वाद ले आयें। यह नहीं करते कि मर्यादा में रहकर ही दो घड़ी मालिक का नाम याद करते हुए वक्त गुज़ारें। संसारी करें भी क्या? उनको संसार ही सब कुछ नज़र आता है। इस सौहदे धन के बग़ैर भी गुज़र अमीर-ग़रीब की नहीं होती। इसकी प्रीत भी दुःखदाई है। इसकी जुदाई भी अधिक कलेजा चीरती है। विवेकी पुरुष ही सुखी रहता है। संग्रह और त्याग दोनों लाज़मी हैं। आई चलाई करने वाले का मन सदा खुश रहता है प्रभु सबको सुमति देवें और धीरज देवें। प्रेमी, तुम मस्त होकर यहां न बैठे रहो। यहां से भी दूर चलने की करो।

144. सिद्ध खड्ड मसूरी में एकांत निवास

देहरादून में निवास के दौरान आपके लिए एक रमणीक स्थान मसूरी शहर की आबादी से करीबन तीन मील नीचे एक गहरे नाले के किनारे तलाश किया गया। यह जगह पाकिस्तान बनने से पहले छोटा सा धोबी घाट था। मुसलमान धोबी यहाँ रहा करते थे। कुदरती चश्मा भी पास था। इस धारा के पास ही मकान बनाया हुआ था। जगह बड़ी एकांत थी। किसी किस्म का शोर व गुल वहां नहीं था।

7 अप्रैल, 1948 को आप देहरादून से चलकर शाम को इस स्थान पर पधारे। इस जगह का नाम चमर खड्ड था।

'समता प्रकाश' ग्रन्थ की लिखाई पूर्ण हुई। इसके बाद इसको जिल्द बंधी के लिए दिल्ली भेज दिया गया, जहां से डा० भक्त राम जी ने बड़ी सुंदर जिल्द बंधवा कर इसे वापिस मसूरी पहुंचा दिया। पहली बैसाख, सं० 2005 को यह वहां सिद्ध खड्ड पहुंचा। चूंकि एक तो यह जगह तप स्थान बन गई थी, दूसरे 'समता प्रकाश' ग्रन्थ इस जगह पूर्ण हुआ, इसलिए सत्पुरुष ने चमर खड्ड का नाम बदल करके सिद्ध खड्ड रख दिया और फरमाया:

''समां बीत जाने पर ऐसी धरतियां तीर्थ स्थान बन जाया करती हैं। फ़कीरों की जगह गो उजाड़ हुआ करती है, बरखिलाफ़ राजाओं की शान व शौकत वाले स्थानों के, मगर समां आने पर

दोनों की हालत बदल जाया करती है। राजाओं के महल उजड़ जाया करते हैं और फ़कीरों और शहीदों की जगहों को चार चांद लग जाया करते हैं और ऐसे स्थान पुण्य, दान व सत्संग के स्थान बन जाया करते हैं।

आपके फरमान के अनुसार इस जगह की अब बहुत महानता बन गई है और प्रेमी हर साल बैसाखी वाले दिन आकर यहाँ विशाल समता सत्संग करते हैं और इस जगह के सुन्दर दृश्य का लाभ उठाते हैं।

जब 'समता प्रकाश' ग्रन्थ सुन्दर जिल्द बंध कर आया तो आपने प्रातः काल स्नान वग़ैरा से फ़ारिग होकर कलम दवात मंगवाकर उसके आख़िर में अपने कर-कमलों से चेतावनी यानि हिदायत लिखी और अंधकार परस्ती को रोका और यह भी लिखा "ईश्वर तेरी आज्ञा पूर्ण हुई" और दस्तख़त कर दिये और मौज़ूदा प्रेमियों को फरमाया, "अब इसे अच्छी तरह संगत संभाल ले और जिस तरह मर्ज़ी हो रखे।"

भक्त बनारसी दास जी ने भी लिखा "तुच्छ सेवक से तुच्छ सेवा बन आई" इत्यादि वचन लिखवाकर दस्तख़त करवा लिए। इस तहरीर के बाद भक्त जी ने चरणों में नमस्कार किया तो आपने उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए फरमायाः- "प्रेमी! इसने तेरे हाथ से लिखा जाना था।"

इस जगह उन्हीं दिनों में प्रेमी बख़्शी राम जी व बाबू अमोलक राम जी वग़ैरा भी दर्शनों के लिए आए हुए थे। एक दिन लाला बख़्शी राम जी का साहबज़ादा प्रेमी चुन्नी लाल उनको मिलने के लिए आ गया और साधारण तौर पर दूर से ही नमस्कार करके बैठ गया। यह हालत देखकर श्री महाराज जी ने उससे पूछाः- "प्रेमी, राज़ी है? किस तरह आया है और किधर से आया है?"

प्रेमी चुन्नी लालः- पिता जी का पता लगा था कि आए हुए है, मिलने आया हूं।

श्री महाराज जीः- क्या यही तरीका मिलने का है, आए और बैठ गए?

पिता को प्रणाम क्यों नहीं किया? यह ही पढ़कर आदमियत सीखी है? और क्या तुम उनकी सेवा करोगे? जिनको बैठने बुलाने की तमीज़ नहीं। प्रेमी, पहली बंदगी माता-पिता की सेवा, उनका आदर-सत्कार है। त्रट्टी चौड़ (सत्यानाश) अंग्रेजी राज व तहज़ीब ने कर दी है। माता-पिता को गुडमार्निंग और लड़की, स्त्री सबको एक तराज़ू पर तोलते जाना। तुम माता-पिता का सम्मान न करोगे, कल तुम्हारा कौन करेगा और शिक्षा जो तुमने ली है उस पर क्या अमल करते होगे?

प्रेमी चुन्नी लाल पहले तो नीचा सिर करके सुनता रहा। आख़िर में हाथ जोड़कर माफ़ी मांगी।

श्री महाराज जीः- माता-पिता की इज़्ज़त करने में तुम्हारी इज़्ज़त है। बेशक, तुम बड़े लायक हो। बड़ों को नमस्कार करनी बहुत ज़रूरी है। दूसरों पर इसका असर अच्छा पड़ता है। आगे जैसे तुम्हारी मर्ज़ी। अगर तुम बुज़ुर्गों की इज़्ज़त करोगे तो तुम्हारे बच्चे तुम्हारी और बुज़ुर्गों की भी इज़्ज़त करना सीखेंगे।

इसी समय में एक दिन किसी ने आकर बतलाया कि उधर मसूरी में सरदार पटेल साहब, होम मिनिस्टर, सर्किट हाउस में स्वास्थ्य लाभ के लिए आए हुए हैं। उस समय चौधरी हरजी राम जी व

मलिक भवानी दास जी भी वहां मौजूद थे। प्रेमियों ने सत्पुरुष की सेवा में प्रार्थना की:- ''महाराज जी! शिक्षा के अमृत वचन प्रगट फरमावें ताकि पटेल साहब को पहुंचाये जावें।''

आपने फरमाया:- ''प्रेमियों! कौन इन वचनों को पढ़ेगा? फ़कीरों की शिक्षा की तरफ ऐसे बड़े लोग कब ध्यान देते हैं।''

फिर अर्ज़ की गई:- महाराज जी! आप कृपा तो कर देवें। हम इन्हें पहुंचाने का यत्न तो करेंगे। इस पर आपने फरमाया:- प्रेमियों! अव्वल तो तुम्हें पुलिस ही अंदर नहीं जाने देगी और अगर अंदर जाने भी दिया गया तो तुम्हें पटेल साहब के पास कोई नहीं जाने देगा। मगर प्रेमियों ने पुनः आग्रह किया। इस पर आपने विचित्र प्रसंग 'विश्व शांति संदेश', जो अब समता विलास का प्रसंग बन चुका है, प्रगट फरमाया। वैसे तो यह प्रसंग काफी लम्बा-चौड़ा है, इसमें से कुछ वचन नमूना नीचे दर्ज़ किये जाते हैं ताकि प्रेमी पाठक अंदाज़ा लगा सकें कि मौज़ूदा सांइटिस्ट जिस खोज में लगे हुए हैं उसका अंजाम क्या होगा? और ऐसे सत्पुरुष जनता को इस खोज के भयानक नतीजे की चेतावनी देकर असलियत की तरफ उनका ध्यान दिलवाते हैं।

इस प्रसंग में फरमाया है कि जब-तक जीवन यात्रा की सही तहकीकात न की जावे तब-तक सही यत्न की प्राप्ति कठिन है और सही यत्न के बग़ैर परम शांति का प्राप्त होना नामुमकिन है, और आगे फरमाया हुआ है कि बुद्धि जितनी भी शारीरिक भोगों की आसक्ति में आकर बाहर तत्त्वों की खोज में दृढ़ होती है उतने ही नये से नये अज़ायबातों को अनुभव करके अति मोहित होती है (जैसा कि मौजूदा सांइटिस्ट चंद्रमा तक पहुंच कर मोहित हो रहे हैं और आगे अन्य सितारों तक पहुंचने का यत्न कर रहे हैं) और अपने आप में नित अधीर रहती है। यानि तत्त्वों की खोज से अधिक से अधिक अश्चर्ज मुतालाह (जानकारी, ज्ञान) प्रगट होते हैं जोकि अंजाम में परम दुःख और नाश के देने वाले होते हैं। अगर अहंकारवाद को इस कदर धारण कर लिया जावे जिस से सूरज, चंद्रमा, पवन, पानी आदि का पूरा-पूरा कंट्रोल हो जावे तो भी अंतर की बेचैनी और अधीरता से छुटकारा हासिल करना नामुमकिन है।

आगे दिया हुआ है कि इस वास्ते इस बैरूनी (बाहरी) तहकीकात (खोज) यानि अधिक मादा परस्ती जिसका नतीजा भयानक अशांति, भ्रष्टाचार, अति छल-कपट और अति नाश के देने वाला है, इससे जाग्रत हो करके यानि मादा परस्ती की तहकीकात को छोड़ करके जीवन शक्ति की तहकीकात करनी चाहिये।

मादा परस्ती यानि इन्द्रियों के भोगों की अधिक आसक्ति ही परम नाश के देने वाली है। जिस वक्त आम मानुष ऐसे भोगमई जीवन में अंधे हो जाते हैं उस वक्त अपने अंतर बढ़ती हुई तृष्णा की अग्नि अधिक उपद्रव की तरफ राग़ब करती है यानि दूसरे के नाश के यत्न को धारण करती है, तब साथ ही अपनी भी नाश हो जाती है।

आपने यह भी इसमें फरमाया है कि भारतवर्ष के ऋषियों, महर्षियों ने जिस बात को छोड़ रखा है अब इन लोगों ने उसे पकड़ा है। इसका अंजाम भी यह देख लेवेंगे।

जब यह प्रसंग आपने प्रगट फरमाया तो उसे भक्त बनारसी दास जी को साफ लिखने के लिए दिया गया। जब उन्होंने इसे लिख दिया तो चौधरी हरजी राम, बाबू अमोलक राम और मलिक भवानी दास इसे लेकर उधर मसूरी सर्किट हाउस में गए।

जब वहां पहुंचे तो पहले पुलिस वालों ने इन्हें रोक लिया और कहा:– ''अंदर जाने की इज़ाज़त नहीं है।'' पुलिस वालों से अर्ज़ की गई कि हम किसी काम के वास्ते नहीं आए बल्कि एक महात्मा जी की लिखी शिक्षा भेंट करने के लिए हाज़िर हुए हैं, तो इस पर उन्होंने अंदर जाने की इज़ाज़त दे दी और सैक्रेट्री साहब के कमरे में पहुंचा दिया।

सैक्रेट्री साहब पटेल साहब के पास गए हुए थे। थोड़ी देर बाद वापस आए तो उन्हें अर्ज़ की गई कि सत्पुरुष के अमृत वचन हम पटेल साहब को भेंट करने आये हैं, तो उन्होंने फरमाया:– डाक्टर साहब ने उनको किसी से भी मिलने से मना किया हुआ है। आप यह मुझे दे जावें, मैं उन्हें पहुंचा दूंगा।

जैसा कि सत्पुरुष ने पहले ही फरमाया था, किसी ने अंदर जाने नहीं दिया। वह तहरीर (लेख) सैक्रेट्री साहब के हवाले करके ही तीनों वापिस लौट आए।

सिद्ध खड्ड पधारने पर राय साहब ने जाते समय कुछ रुपये भक्त जी को खर्च के लिए दिए और फरमाया:– जिस चीज़ की ज़रूरत हो मंगवा लिया करो। ख़्याल रखें कि कोई कमी न रहे। उनके चले जाने के बाद भक्त जी ने श्री महाराज जी को अर्ज़ की:– राय साहब रुपये दे गए हैं। इस पर आपने फरमाया:

''ईश्वर जिसको भाग लगाता है साथ ही वैसी उपकारी बुद्धि भी बख़्शा देता है। कोई न कोई सिफ़त (गुण) होती है तब ही माया का इकबाल (प्रसिद्धि) बढ़ता है। अच्छा, तुम शाह खर्च न बन जाना। मर्यादा से खर्च करना।''

एक आर्य-समाजी उधर एक कोठी में रहा करता था। वह स्नान के लिए चश्में पर आया करता था। वह साबुन तेल साथ लाता था। एक दिन जब वह नहाने आया तो भक्त बनारसी दास जी भी स्नान करने लगे और देखा-देखी साबुन लगा लिया। इतनी देर में श्री महाराज जी बाहर से आ गए और भक्त जी के जिस्म पर साबुन लगा हुआ देखकर उसे फटकारा और फरमाया:– ''रहना फ़कीरों के साथ और मलने साबुन तेल।''

भक्त जी ने आगे से कहा:– महाराज जी! जिस्म की सफाई के लिए साबुन वग़ैरा लगाना ज़रूरी है।

इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया:– प्रेमी! जिस्म पर मिट्टी मल, उससे साफ कर। क्यों साबुन तेल मलता है? भक्त जी का स्वभाव शुरू से मिर्च, मसाले, चटनी, अचार इत्यादि इस्तेमाल करने का चला आ रहा था। आप उसे सुधारने के लिए नये से नये तरीके इस्तेमाल करते थे।

इस जगह निवास के दौरान पहली जेठ, सं० 2005 से आपने ख़ुराक भी कम कर दी। प्रेमियों ने प्रार्थना की:– आप ऐसा न करें। इस पर आपने फरमाया:

''प्रेमियों! दुनिया की हालत देखो। इस समय किस तरह अशांत हो रहे हैं। फ़कीरों की ख़ुराक अन्न-पानी नहीं। यह तो तुम लोगों की ख़ातिर ओहला (पर्दा) रखा हुआ है। इस समय तो बिल्कुल निराहार रहने की ज़रूरत है और बिलकुल मौन रखने की। इस अति तमोगुणी हालत में फ़कीरों के वास्ते यह ही आज्ञा है। तुम खाओ-पिओ। तुम्हारे वास्ते मना नहीं करते। इस वास्ते बिल्कुल निराहार नहीं रहते कि फिर तुम कैसे आहार कर सकोगे? फ़कीर कुछ न ग्रहण करें तो तुम कैसे ग्रहण करोगे? इसलिए मशीनरी को थोड़ा तेल देना ज़रूरी है। आप घबरायें नहीं। नमक की डली नहीं जो गल जावेगी। जिन संसारियों का जो कुछ ग्रहण किया जाता है उनके भले के वास्ते भी विचार करना पड़ता है। तुम्हारे वास्ते यह ही है, जिस विचार में लगे हो लगे रहो। इनके प्रोग्राम में दखल मत दो। जिस तरह कहा जाता है उसी तरह किया करो। चालाकी करोगे, चाय बनी बनाई फैंक दी जावेगी। साग-भाजी ज़बरदस्ती किसी वक्त ले आते हो, तुम्हारे प्रेम को ठुकराया नहीं जाता। इनको किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। अगर लेते भी हैं तो इस वास्ते कि तुम लोगों का स्वभाव देखा जाता है।''

एक प्रेमी:- महाराज जी! स्वभाव जल्दी बदलने वाला नहीं, न हममें शक्ति है कि इसे बदल दें, आपकी कृपा हो तो शायद बदल जाये। वैसे अगर आज एक चीज़ को छोड़ दिया जावे और कुछ अरसे के बाद फिर उसे ग्रहण कर लिया जावे, चाहे थोड़ी मात्रा में ही हो, प्रण तो टूट गया और विश्वास में कमी आनी लाज़मी है। इसलिए यह अच्छा नहीं।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! किसी हद तक यह अच्छा विचार है। कमी दर कमी की तरफ आहिस्ता-आहिस्ता जाओगे तो ठीक रहेगा। ऐसा नहीं कि दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए दस-बीस दिन छोड़ दिया, जैसा कि सत्याग्रही जेलों में कर रहे हैं, और बाद में मुर्गे, अंडे वग़ैरा हड़प कर लिए या पहले दूध सब्जी या फल शुरू कर दिये और फिर अन्न शुरू कर दिया। ऐसा नहीं होना चाहिए। जो प्रोग्राम बनाया जावे उस पर दृढ़ता से चला जाये। इस वास्ते नानक ने दरबार में एक तुक में कहा हुआ है।

अन्न छोड़ करे पाखंड, न ओ सुहागन न ओ रंड।

दो फुलके न खाये, चार सेर कच्ची सब्जी, फल, दूध अंदर ग़ार में डाल लिया और कह दिया संत अन्न नहीं खाते, फल आहारी हैं या थोड़ा दूध लेते हैं और क्या सोहागा खायें? ऐसे विचार दुनिया को ठगने और प्रभावित करने वाले होते हैं। वशिष्ठ जी ने बड़ा अच्छा फरमाया है:

''बुद्धि निर्मल करने के वास्ते और शास्त्र वग़ैरा विचारने के लिए किसी तीर्थ पर जाने या तप, दान, पुन्न और त्याग, पाखंड करने की ज़रूरत नहीं। जहां जी चाहे बैठे और जैसा भोजन घर में हो करे। बार-बार शास्त्र विचार करे और शिक्षा धारण करे तो अज्ञान नष्ट हो कर आत्म पद की प्राप्ति होगी। जब ऐसा निश्चय परिपक्व हो जावे तो फिर जहां भी चाहे भ्रमण करे। अपना और संसार का उद्धार करे। यह नहीं कि गृहस्थियों को रोटी खाने को न मिले, संत दूध, मलाई, हलवे के बग़ैर बात न करें। जहां रहे फूल की तरह रहे। फूल का भी बोझ है, साधु फ़कीर का बोझ कोई महसूस न करे।

मसूरी में निवास के समय आप पूर्ववत् रात को बाहर तशरीफ़ ले जाते और नीचे एक पत्थर की चट्टान पर, जो सिद्ध खड्ड के किनारे थी, अपनी आनन्दमई हालत में बैठ जाते और दिन निकलने पर तशरीफ़ लाते। आपने 29 अगस्त, 1948 तक सिद्ध खड्ड मसूरी में एकांत निवास व कठिन तप में समय व्यतीत किया।

145. देहरादून में चंद दिन निवास

29 अगस्त, 1948 को आपने मसूरी से प्रस्थान का प्रोग्राम निश्चित किया था। उस दिन आप सड़क पर तशरीफ़ ले आये। प्रेमी बनवारी लाल उधर बस अड्डा से सीटें रिज़र्व करवा कर बस में बैठकर आ गए। श्री महाराज जी बस में सवार होकर देहरादून तशरीफ़ ले आए और जैनी लाला के बाग में ले जाकर आपको ठहराया गया। दूसरे दिन सत्संग का प्रोग्राम निश्चित किया गया और सब प्रेमियों को सूचना दे दी गई। चूंकि मौसम बरसात का था इसलिए सत्संग में हाज़री कम होती। इसी समय में डाक्टर भक्त राम जी दिल्ली से चरणों में पधारे और दिल्ली का प्रोग्राम बनाने की प्रार्थना कर रहे थे कि दिल्ली तशरीफ़ लाकर सत् उपदेशों द्वारा उनको निहाल करें। अन्य प्रेमियों ने भी अर्ज़ की:- आपके दिल्ली आगमन से सबको तसल्ली मिलेगी। आपके निवास के लिए एकांत जगह का प्रबन्ध कर दिया जावेगा। श्री महाराज जी ने फरमाया:- प्रेमी! चंद दिन इधर निवास करना है, फिर जैसा विचार हुआ इतलाह दी जावेगी।

इन्हीं दिनों प्रेमी शेष राज देहरादून चरणों में हाज़िर हो गया और एक दिन अर्ज़ की:- महाराज जी! ताजे वाले हैड पर बहुत सुन्दर एकांत जगह है जो एकांत-वास के लिए बहुत उपयुक्त है और ऐसा ही आगे दादू पुर के पास ताजे वाले आने वाली सड़क पर एक बाग है, वह भी बहुत एकांत है।

श्री महाराज जी ने उससे पूछा:- तुम्हें कैसे इन जगहों का पता है? तो उसने अर्ज़ की:- महाराज जी! उसे उस तरफ जाने का मौका मिला था। उसने यह दोनों जगहें देखी थी। आपने इस पर उसे आज्ञा दी कि वह फिर जाकर उन्हें अच्छी तरह देखकर हालात तहरीर करे। शेष राज देहरादून से पैदल ही रवाना हो पड़ा और छत्तीस मील सफ़र तय करके शाही बाग पहुंचा और वहां से ताजेवाला और दादू पुर होता हुआ सब जगहें देखकर खारवां पहुंचा और पत्र लिखा कि देहरादून से रवाना होकर वह शाही बाग में पहुंचा और वहां से होता हुआ खारवां पहुंच गया है। ताजेवाले डाकखाने के बाबू से मिलकर बातचीत की है, उसने अर्ज़ की है:- अगर श्री महाराज जी तशरीफ़ ले आवें तो जो सेवा उनसे हो सकेगी वह खुशी से करेंगे।

146. ताजे वाला हैड पर एकांतवास

इस पत्र के प्राप्त होने पर ताजे वाले का प्रोग्राम बन गया। संसार में अशांति का राज्य हो ही रहा था। अभी देहरादून से रवानगी में तीन-चार दिन थे कि जिन्नाह साहब इस दुनिया से कूच कर

गए हैं और फिर अखबारों में ख़बर निकली कि निज़ाम हैदराबाद दक्षिण की रियासत को भारत की फौजों ने चारों ओर से घेर लिया है क्योंकि वहां गड़बड़ चल रही थी। इन ख़बरों ने जनता में फिर खलबली पैदा कर दी कि कहीं भारत और पाकिस्तान में पहले वाली फिर जंग न छिड़ जाये। बावज़ूद इस हालात के सत्पुरुष के प्रोग्राम में कोई रुकावट न हुई। राय साहब दीवान रला राम जी उस दिन सुबह ही चरणों में हाजिर हो गए और प्रार्थना की:- ''श्री महाराज जी! उसके गृह में रवानगी से पहले चरणकंवल डाल कर पवित्र करें। सत्पुरुष ने उसकी सेवा को मद्दे नज़र रखते हुए प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और उसके गृह पर तशरीफ़ ले गए।

प्रेमी भी वहां पहुंच गए। आपको चोहड़पुर वाली बस में सवार करवाया गया। राय साहब भी साथ चल पड़े। सब प्रेमियों ने बारी-बारी चरणों में प्रणाम किया और बस रवाना हो पड़ी। करीबन डेढ़ घंटे बाद बस चोहड़पुर पहुंच गई। राय साहब ने समान उतरवाया । इतने में प्रेमी अत्तर चंद सेठी, चिनारी निवासी ने श्री महाराज जी को देख लिया और दौड़कर आ गया। चरणों में प्रणाम कर प्रार्थना की:- उसके गृह को पवित्र करने की कृपा करें और बस के आने तक वहां ठहरें। श्री महाराज जी ने स्वीकार कर लिया। सामान अपनी दुकान पर रखवा दिया और श्री महाराज जी का आसन अपने मकान में लगाकर अंदर ले गया। मकान दुकान के साथ ही था। उस जगह सेवा में प्रार्थना की:- श्री महाराज जी! कुछ दिन वहां निवास फरमावें। मगर सत्पुरुष ने उसे स्वीकार नहीं किया और फरमाया:- फिर किसी समय देखा जावेगा। ताजे वाले प्रोग्राम दिया जा चुका है, उसे अब बदला नहीं जा सकता।

जब दूसरी बस आई श्री महाराज जी को बुला लिया गया और उस पर सवार करवाया गया। सामान वग़ैरा बस में रखवा दिया गया। प्रेमी अत्तर चंद ने फिर चरणों में प्रणाम किया और बस रवाना हो पड़ी। रास्ते में मीर आसन नामी नदी पड़ती थी। उसका पुल टूटा हुआ था। नया पुल बन रहा था। बस पार नहीं जा सकती थी। सवारियां बस से उतर पड़ी। यहां सवारियां तबदील होती थीं। नदी को पार करने का अजीब साधन बनाया हुआ था। टीनों को बांसों से बांधा हुआ था। पहले सामान उस किश्ती पर रख कर मल्लाह ने पार किया। फिर श्री महाराज जी और राय साहब को पार लंघाया गया। राय साहब ने एक रुपया निकाल कर मल्लाह को दिया, जिसे लेकर वह बड़ा खुश हुआ। इस पर राय साहब ने उसे कहा:- ''प्रेमी! तूने पुरानी याद आज ताज़ा की है। जैसे मल्लाह ने भगवान राम को नाव में पार लंघाया था, आज तूने भी भगवान को पार लंघा कर पुरानी मर्यादा को प्रत्यक्ष कर दिखाया है।''

इस जगह का दृश्य बड़ा सुन्दर था। इर्द-गिर्द कई किस्म की बूटियां उगी हुई थीं। आस-पास जंगल था। श्री महाराज जी को एक दरख़्त के नीचे आसन बिछाकर बिठाया गया। दूसरी बस का इंतज़ार किया जाने लगा।

बस आने पर उसमें सवार होकर चार बजे शाम शाही बाग के पास जाकर उतरे। वहां से ताजेवाला करीबन 4 मील था। सामान के लिये कुली कर लिया गया और काफ़िला पैदल ही रवाना

होकर साढ़े पांच बजे ताजेवाला पहुँचा। लोहे के रस्सों के जरिये यमुना दरिया को पार किया गया और आगे पुल हैड पर से गुज़र कर डाकखाने में पहुंचे, जो पुल के करीब ही था और उसके बरामदे में आसन लगाया गया। पंडित गोवर्धन शुक्ला पोस्ट मास्टर थे। वह आपके आने की ख़बर सुनकर फौरन चरणों में हाज़िर हो गया। अंदर तार की घंटी बजी। शुक्ला जी अंदर गए, दो मिनट बाद वापिस आए और अर्ज़ की:- ''महाराज जी! बड़ी खुशख़बरी आई है। हैदराबाद रियासत ख़त्म हो गई है। नवाब ने हथियार डाल दिये हैं।'' प्रेमी शेषराज ने एकांत जगह देखने की प्रार्थना की। इस पर आपने फरमाया:- ''प्रेमी! सुबह देखा जावेगा, अभी आराम करो।''

सत्पुरुष इस जगह भी रात को बाहर जंगल में तशरीफ़ ले गए और सुबह सूरज निकलने पर वापिस तशरीफ़ लाए और फरमाया:- प्रेमी! किसी वृक्ष के नीचे आसन ले चलो। बिस्तरे वग़ैरा इसी जगह बरामदे में पड़े रहें। चाय का प्रबन्ध करने के लिए प्रेमी एक दुकान पर गए। इस जगह एक साधु ने दूध चाय की दुकान खोली हुई थी। उससे दूध लिया गया और चाय बनाई गई। उसके बाद एकांत जगह देखी गई।

साधु दुकानदार ने बताया कि आधे मील या उससे ज़्यादा फ़ासले पर सामने पहाड़ी पर और उसके आसपास जंगल है उसे देखा गया । बहुत घना जंगल था। साधु ने यह भी बतलाया था कि जंगल के अंदर आध मील पर या उसके करीब एक सुन्दर चश्मा भी है। जंगल के अंदर जाकर वह जगह भी देखी गई। इस जंगल में शेर, चीते, सुअर काफी थे। रास्ते में रेतीली जगह पर इन जानवरों के पंजों के निशान देखे गए। आगे चश्मे के नज़दीक एक दरख़्त के नीचे बैठकर इस जगह के बारे में विचार किया गया और इस नतीजे पर पहुंचे कि सामान वग़ैरा इस जगह पहुंचाना और आना-जाना बहुत मुश्किल है। सब सामान और दूध साधु की दुकान से ही लाना पड़ेगा। सब हालात देखकर और विचार करके वापिस आकर श्री महाराज जी से अर्ज़ की गई। श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''उधर जाकर डाक बंगला देख आओ।''

बंगले तक जाने के लिए पुख्ता सड़क नहीं थी। कच्ची सड़क थी, उस पर चलकर बंगला पहुंचे। जगह देखी गई। दूसरी तरफ पास ही गांव भी था। वापिस आकर श्री महाराज जी की सेवा में वहां के सब हालात अर्ज़ किये गए और यह भी अर्ज़ की-कि वहां दूध भी गांव से मिल सकता है। मगर रिहायश के लिए इज़ाज़त लेनी पड़ेगी। इस बंगले में अफ़सर वग़ैरा शिकार के लिए आकर ठहरते हैं। अफ्सर इन्चार्ज से पूछा गया। उसने बतलाया कि करनाल से इज़ाज़त लेनी पड़ेगी। श्री महाराज जी की सेवा में इसके बारे में अर्ज़ की गई तो आपने फरमाया:- जगाधरी जाओ। प्रेमियों को इतलाह भी दे आओ और बर्तन व टैंट वग़ैरा सामान वहां से ले आओ। फिर जगह के बारे में देखा जावेगा।

प्रेमी शेष राज बस में सवार होकर जगाधरी चला गया। उसके जाने के बाद बतलाया गया कि फिदाबाद के नज़दीक नहर के किनारे एक मंदिर है। वहां सिवाये पुजारी के और कोई नहीं रहता। तीसरे दिन राय साहब श्री महाराज जी को चाय पिलाने के बाद और खुद दूध पीकर वह

जगह देखने गए। चार-पांच मील सफ़र तय करने के बाद वह मंदिर देखा गया। जगह तो बहुत एकांत थी।यह भी पता लगा कि गांव से सुबह-शाम चंद मर्द व औरतें ही मंदिर में आते हैं। पुजारी से बातचीत हुई। उसने बड़े प्रेम से सब हालात बतलाये। सामान खुराक वग़ैरा के लिए पूछने पर उसने बतलाया कि सब प्रबन्ध यहां ही हो सकता है, अगर इज़ाज़त हो तो अभी भोजन वग़ैरा तैयार हो सकता है। राय साहब ने कहा:- प्रेमी! बर्तन दे दो। उसने चावल, दाल, आटा वग़ैरा मय बर्तनों के लाकर रख दिया। दाल-भात तैयार किया गया, फिर भोजन पाकर और कुछ आराम करके प्रेमी वापिस हुए। पुजारी ने फिर कहा कि ज़रूर महाराज जी को प्रार्थना करके इस जगह लावें, जो सेवा बन सकेगी की जायेगी। राय साहब ने पुजारी जी को दो रुपये दिये जो बमुश्किल उसने लिए। वहां से होकर जब श्री चरणों में पधारे, नमस्कार करके सब हालात अर्ज़ किए गए। इतनी देर में प्रेमी शेष राज सामान लेकर वापिस पहुंच गया।

श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''प्रेमियों! अब ज़्यादा न भटको। इस जगह एक तरफ तम्बू लगा लो। चूंकि तम्बू छोटा है, घास-फूस का एक झोंपड़ा बना लो। जिस जगह अब आये हैं, वहां ही समय दिया जावेगा।''

हैड से ऊपर दरिया के किनारे एक जगह, फ़ासले पर बायें किनारे तम्बू लगाकर सामान वहां पहुंचा दिया गया और फूस की कुटिया लंगर के लिए बना ली गई। दूसरे दिन राय साहब आज्ञा लेकर वापिस चले गये।

भक्त बनारसी दास के अलावा इस जगह प्रेमी शेष राज भी चरणों में हाज़िर रहे। प्रेमी शेष राज तो दिन को भोजन वग़ैरा से फ़ारिग होकर एकांत में जाकर साधना करने लग जाता और भक्त जी काफी समय लंगर सेवा में खर्च करते और इसके बाद समता विलास ग्रन्थ की लिखाई में व्यस्त हो जाते और सिमरण में समय न दे पाते। सत्पुरुष अंतरयामी होते हैं। उनकी निग़ाह हर तरफ होती है। इसलिए जो भी प्रेमी उनके संपर्क में आता उसकी कमज़ोरी को दूर करने का यत्न करते और इस मकसद की पूर्ति के लिए अजीब तरीके से चेतावनी देते। आपने एक दिन शेष राज को फरमाया- कि इस बंध के किनारे-किनारे जाकर दिन के समय बैठने की कोई एकांत जगह देख आओ।

प्रेमी शेष राज आज्ञा पाकर उस तरफ चले गए। भक्त जी बर्तन साफ करने ही लगे थे कि आपने उन्हें भी फरमाया कि तुम भी जाकर देख आओ।

आज्ञा मिलने की देर थी कि भक्त जी भी बर्तनों को वैसे ही छोड़कर प्रेमी शेष राज के पीछे चल दिये। जगह तलाश करने में दोनों को एक घंटा लग गया। दोनों वापिस आकर चरणों में नमस्कार करके बैठ गए और अर्ज़ की:-

''महाराज जी! काफी दूरी पर एक दरख़्त के नीचे जगह है।'' यह अर्ज़ करने के बाद भक्त जी सरकंडे के बने झोंपड़े में बर्तन वग़ैरा साफ करने की ग़र्ज से गए ताकि उन्हें साफ करके कमरे में सफाई कर दी जाए। यह अन्दर दाखिल हुए तो कमरे की हालत को देखकर हैरान हो गए और देखा कि कितनी अच्छी तरह बर्तन साफ किये हुए हैं। उनकी चमक ही ज़ाहिर कर रही थी कि बड़ी

मेहनत से इन्हें साफ किया हुआ है और निहायत तरीके से इन्हें रखा हुआ है और अंदर झाड़ू देकर खूब सफाई की हुई है। भक्त जी इस सोच में पड़ गए कि आख़िर कौन आया है जिसने ऐसी अच्छी तरह सफाई कर दी है? ऐसी सुनसान जगह जंगल में कौन आ सकता है जो बिना किसी के कहे यह काम इस सुन्दरता से कर गया है? ऐसा विचार भक्त जी कर ही रहे थे कि प्रेमी शेष राज जी भी उस कमरे में आ गया और भक्त जी को हैरान देखकर उसने पूछा:- क्या मामला है? भक्त जी ने इशारा करके बतलाया:- देखो, कोई आकर कैसी सफाई कर गया है? प्रेमी शेष राज के लिए भी यह हैरानी का कारण हुआ और दोनों सत्पुरुष श्री गुरुदेव जी के चरणों में हाज़िर हो गए और प्रणाम करके खामोशी से बैठ गए।

दोनों को हैरान देखकर सत्पुरुष ने पूछा:- ''प्रेमी! क्या सोच रहे हो?''

भक्त जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! कौन प्रेमी आया था और किसने बर्तन वग़ैरा ऐसे साफ कर दिए हैं?

श्री महाराज जी:- प्रेमी! खुदा आया था। तुमको होश नहीं था कि सेवा का काम छोड़कर चले गए। जिस काम को शुरू करो उसको पूरा करके दूसरी तरफ लगना चाहिये। अपने किसी काम को अधूरा छोड़कर नहीं जाना चाहिए। इनको ख़ुद तुम्हारी सेवा का मौका मिल गया। कुछ होश होनी चाहिए। अपनी सेवा का मौका दूसरे को नहीं देना चाहिए और न अपनी सेवा के लिए कहना चाहिए। बिना कहे सेवा करने वाला ही गुरमुख है।

सत्पुरुष के फरमान शर्मिंदगी का कारण हो रहे थे और भक्त जी सोच रहे थे कि बड़ा बोझ सत्पुरुष ने सेवा करके डाल दिया है।

सत्पुरुष, जैसा पहले भी ज़िक्र आ चुका है, अंतर्यामी होते हैं। भक्त जी की आंतरिक हालत को जानकर कुछ देर खामोश रहने के बाद फरमाने लगे:- ''प्रेमी! यह बोझ न समझो। यह तो मौज फ़कीरों को आ गई। यह ही समझ, बर्तन वग़ैरा तूने ही साफ किए हैं। पश्चाताप करना तुम्हारा फ़र्ज़ है।, आईदा के वास्ते बाहोश हो जाओ। यह शेष राज सुस्त होता जा रहा था, जो खा-पीकर बर्तन छोड़कर तप के वास्ते चल देता है। यह नहीं विचारता, लंगर नहीं पका सकता तो यह सेवा ही कर दिया करूं। यह आलसी लोग अपनी सेवा भी आप नहीं कर सकते, बल्कि दूसरों पर बोझ डाल देते हैं। पहला तप सेवा है। एक समय का ज़िक्र है- इलाका पुंछ के एक महात्मा बैरम शाह हुए हैं। एक समय शिक्षा ग्रहण करने की ख़ातिर यह गुरु दरबार में पहुंचे। उस समय गुरु हरिहर राय जी पंजाब में जीवों को कृतार्थ कर रहे थे। उनके चरणों में हाज़िर होकर प्रार्थना करके शिक्षा प्राप्त की और फिर अर्ज़ की-कि कुछ सेवा भी बख़्शी जावे। तो गुरुदेव ने पानी लाने की सेवा बख़्शी और साथ ही एक तांबे का छोटा पैसा, जो उस समय चलता था, दे दिया कि इसका इनू लेकर सिर पर रख लेना। बैरम शाह ने उस पैसे को ही सिर पर इनू की जगह रख लिया। उसके ऊपर बर्तन रखकर रोज़ाना सुबह चार बजे स्नान के वास्ते पानी लाते, फिर लंगर के वास्ते पानी लाते। शाम को लंगर पाने के बाद दरिया के किनारे चले जाते और रात को अभ्यास दरिया के किनारे करते रहते। फिर

सुबह उठकर चार बजे पानी लेकर पहुंच जाते। इस तरह सेवा करते-करते काफी समय व्यतीत हो गया। एक दफ़ा दिन के समय लंगर के लिए जब बैरम शाह पानी ला रहे थे तो गुरू जी ने देख लिया। क्या देखते हैं? कि पानी की गागर सिर से दो फुट ऊपर है और बैरम शाह चला आ रहा है। उस समय विचार आया कि अब इससे पानी की सेवा नहीं लेनी चाहिए। सिद्ध पुरुष से सेवा करवानी योग्य नहीं। बैरम शाह को आसन पर बुलाया गया और फरमाया:- ''प्रेमी! आज से तुम्हारी सेवा पूरी हो गई। आईदा पानी लाने की सेवा न करो। इधर ही दरबार में बैठे रहा करो।''

बैरम शाह ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! इस तुच्छ सेवक से और सेवा बन नहीं सकती और न ही बैठा रह सकता हूं। मुझ पर ही इस सेवा की कृपा रखें।'' इतना कहने के बाद चरणों में प्रणाम किया तो महाराज जी ने देखा, सिर में पैसा अटका हुआ है। पूछा:- ''बैरम, यह क्या?''

बैरम शाह ने अर्ज़ की:- (हाथ जोड़कर) ''इनू आपने लेने को दिया था। सेवक ने इसको इनू समझ लिया। आपकी दया हो गई।'' इतने परम विश्वासी श्रद्धालु के वचन सुनकर झट उसे छाती से लगा लिया और सेवा छुड़वाकर उसे पुंछ की तरफ जाकर आसन लगाने के वास्ते फरमाया। वहां बैरम शाह ने काफी देर तक जीवों को सत्मार्ग में चलाने की सेवा की।

प्रेमी! सेवा को मामूली चीज़ न समझो। पानी भरना, बर्तन साफ करना, और भी तन, मन, धन से संगत की जो सेवा बन आवे सब गुरु की ही सेवा समझो।

फिर फरमाया:- ''एक समय बुद्ध भगवान एकांत में निवास कर रहे थे। बहुत सारे शिष्य भी अलग-अलग कुछ कुटियाओं में, कुछ दरख़्तों के नीचे बैठकर तप ध्यान में समय दे रहे थे। एक दिन एक भिक्षु के पेट में दर्द हो गया जिसकी वजह से उसे बहुत तकलीफ हो गई और उसे बड़ी कमज़ोरी हो गई। शरीर कमज़ोर होने कारण वह पेशाब करने वाली जगह पर ही पड़ा रहा। इतनी हिम्मत न हो सकी कि वह अपने आराम करने वाली जगह तक आ सके। कुदरत का करना क्या हुआ? कि भगवान बुद्ध और उनकी सेवा में रहने वाला आनन्द दोनों घूमते हुए उधर जा निकले, जहां वह भिक्षु पड़ा था। उसको ऐसी गंदी जगह पर पड़ा देखकर भगवान ने उससे पूछा:- ''तुझे क्या रोग है?'' भिक्षु ने अर्ज़ की:- ''पेट की बीमारी है।'' भगवान ने फिर पूछा:- ''तेरी कोई सेवा करने वाला और पूछने वाला कोई भिक्षु नहीं है?'' भिक्षु ने कहा:- ''नहीं भन्ते! (महात्मा बुद्ध को इस तरह भिक्षु कहा करते थे) मुझ से भी किसी भिक्षु की सेवा नहीं बन पड़ी।''

तब महात्मा बुद्ध ने आनन्द को फरमाया:- ''आनन्द! जाकर जल लाओ, मैं इस भिक्षु को स्नान कराऊंगा।'' आनन्द आज्ञा पाकर चला गया और थोड़ी देर बाद पानी लेकर लौटा।

भगवान बुद्ध ने भिक्षु को स्नान कराया और आनन्द ने उसके शरीर को अच्छी तरह अपने हाथों से धोया। अच्छी तरह साफ हो जाने के बाद भगवान ने उसको सिर की तरफ से उठाया और आनन्द ने पांव की तरफ से और उसे उठाकर ले जाकर चारपाई पर लिटा दिया। फिर उसका इलाज वग़ैरा भी किया।

उसके बाद भगवान बुद्ध ने सब भिक्षुओं को एकत्र करके फरमाया:- ''भिक्षुओं! तुम्हारी माता नहीं, तुम्हारा पिता नहीं जो तकलीफ़ के समय तुम्हारी सेवा करे। अगर तुम एक दूसरे की आपस में मिलकर सेवा न करोगे तो कौन करेगा? जो रोगी या और किसी की सेवा करता है वह मेरी सेवा करता है।'' यह मिसालें देकर आपने प्रेमी से पूछा:

''प्रेमी शेष राज! क्या समझा?''

प्रेमी शेष राज:- महाराज जी! आईंदा ऐसी कोताही नहीं होगी।

श्री महाराज जी:- प्रेमी! अब इधर तुम्हारे काफी दिन हो गए हैं। घर का हाल-चाल भी जाकर लो। माता को तंग न किया करो। उसके पास भी रहकर उसकी सेवा करो। और कोई काम नहीं कर सकते हो तो तुम्हारे भजन का यह मतलब नहीं कि मां की आत्मा कलपती रहे। माताओं के अंदर मोह ज़्यादा होता है। तुम अपने प्रोग्राम में पूरे रहो। इधर से ऐसी शिक्षा नहीं देते कि बिल्कुल ही घर-बार त्याग कर दूसरों से सेवा करवाने लग जाओ। पहले जो फ़र्ज़ हैं उसे अदा करो। और परिवार वाले इतना प्रेम-प्यार, हित नहीं रखते, अपने-अपने धंधे, मोह में फंसे हो करके हर समय काम धंधे के वास्ते कहते हैं। जब इधर से आज़ाद हो जाओगे तब विचार कर लेना। अभी इतना त्याग भी नहीं आया कि बिल्कुल ही मां, भाई का ख़्याल छूट जाए। ध्यान बना रहता है। जब वह अतीत अवस्था आएगी फिर कोई दोष माता को छोड़ने का नहीं है। तुम अपने विचार से दृढ़ रहो। गुरु कृपा, आशीर्वाद अंग-संग ही है। जाओ, फिलहाल उधर वक्त दो। फिर समय मिले तो दो चार रोज़ के वास्ते आ जाना।

ताजेवाला में निवास के समय श्री महाराज जी ने चाय के अलावा और कोई चीज़ इस्तेमाल नहीं की। असूज का महीना था। गर्मी काफी थी। सत्पुरुष पानी का इस्तेमाल भी नहीं करते थे। साल में एक-दो दफ़ा जब कभी पीते, इससे अंदाज़ा लग जाता कि शरीर में कुछ नुक्स है। पानी पीने से तकलीफ़ जाहिर हो जाती। इस जगह भी एक दिन आपने दरिया का पानी पी लिया। मगर उसका नतीजा यह हुआ कि प्यास बहुत लगने लगी। एक दो दफ़ा इसे बुझाने के लिए आपने लस्सी इस्तेमाल की। फिर दिन में दो-तीन दफ़ा कहवा लिया। काली मिर्च और सोंठ का भी सेवन किया। आख़िर इसका नतीजा यह हुआ कि जुलाब शुरू हो गए। इस पर नींबू की शिकंजी दिन में दो बार ली गई और सत् ईसबगोल नींबू की शिकंजी के साथ लिया गया जिससे तबीयत ठीक हो गई। अर्ज़ की गई कि दूध में पानी होता है इस वजह से तकलीफ़ हुई है।

चांदनी रात थी। शाम का समय था। तम्बू में बैठे हुए थे कि अर्ज़ की गई:- ''महाराज जी! शरीर में विकार भरे पड़े हैं। किसी समय एक हालत में नहीं रहता।'' इस पर सत्पुरुष ने फरमाया:- ''प्रेमी! शरीर रोग का रूप है। नवद्वारों से हर समय गंदगी झड़ रही है। बचपन, जवानी, बुढ़ापा सब ही दु:खदाई अवस्था हैं बचपन में जवानी छुपी हुई है। जी-जी के आख़िर इस शरीर ने गिरना है। चाहे सौ नहीं हज़ार वर्ष तक भी इसे रख लो, मौत माई ने उसे आकर गिरा ही

देना है। इसका जायज़ (उचित) ख़्याल ज़रूरी है। इतना परहेज़ रखते हुए भी फिर तकलीफ़ का आ जाना कर्म रोग है। सब को कर्म दंड भोगना पड़ता है।''

प्रेमी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! आप फरमाया करते हैं कि तीन तापों से सिमरण छुड़ाने वाला है, फिर क्यों शरीर को रोग आकर घेर लेते हैं?''

श्री महाराज जी:- प्रेमी! रोग-सोग तो आते रहते हैं। यह सब मन की स्थिति पर मुनहसर (निर्भर) है। ज़ाहरा (बाहर) तुमको तकलीफ़ में प्रतीत होते हैं, अंतर ज्ञान अवस्था में न रोग है, न अरोग। संसारी जो शारीरिक, मानसिक वग़ैरा दुःखों में संजोग- वंजोग होने पर तपते रहते हैं, उनमें कर्तापन दृढ़ है। खाली मुंह से ईश्वर आज्ञा कहने का कुछ लाभ नहीं। न ही ऐसा कहना मन को शांति दे सकता है। होना न होना, दुःख-सुख सारे द्वन्द्व चक्कर को निरन्तर अंतर से ईश्वर आज्ञा में देखने पर कलह, कल्पना नहीं सताती। तुम्हारी बुद्धि बहिर्मुखी रहती है। अंतर विचार किया करो। इनको बदल-बदल कर चीज़ें लेते देखकर तुम भ्रम में पड़ जाते हो। जब-तक यह पिंजर है तब-तक गड़बड़ लगी रहेगी इन बातों से स्थिति में फ़र्क नहीं पड़ता। आधि-व्याधि-उपाधि तीन प्रकार के दुःखों और तीन प्रकार के सुखों में जीव फंसा रहता है।

प्रेमी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! इसका निर्णय करके समझाने की कृपा करें?''

श्री महाराज जी - शोक, मोह, लोभ इत्यादि द्वारा उत्पन्न दुःख आध्यात्मिक यानि आधि दुःख कहलाते हैं। शारीरिक बीमारियों से पैदा हुए दुःख को व्याधि दुःख कहते हैं। तूफान, आंधी, बारिश, बिजली, सर्दी-गर्मी द्वारा जो दुःख प्राप्त होता है उनको उपाधि विकार करके कहा गया है। इस तरह सुख भी तीन तरह के हैं। अपनी प्रिय वस्तुओं की याद, शारीरिक बल, शारीरिक सुन्दरता, अपनी अक्लमंदी, बुद्धिमता के अभिमान का सुख, कर्तव्य यानि गुणों का अभिमान, घंमड द्वारा जो सुख महसूस होता है यह आध्यात्मिक सुख कहलाता है। स्त्री, पुत्र, भाई, बंधु, मित्र दोस्तों के संजोग और अनेक वस्तुओं के मिलने से जो सुख मिलता है आधिभौतिक सुख कहलाता है। इस तरह ठंडी-ठंडी शीतल वायु के स्पर्श, बरसात के फौहारे और नदी, नालों, पहाड़ों, बागों और कई तरह के सुन्दर दृश्यों से जो सुख महसूस होता है, यह आधिदैविक सुख कहलाता है। इस समय को ही देखो किस कदर यमुना का वेग ठाठें मार रहा है। चांदनी रात कितना मन प्रसन्न कर रही है। एकान्त में और भी अधिक आनन्द आ रहा है। देख-देख कर मन प्रसन्न हो रहा है। यह आधि यज्ञ स्वरूप परमात्मा सुख कहलाता है।

प्रेमी जी, जिसका मन इन इन्द्रियों के सुख-दुःख की प्राप्ति व अप्राप्ति में चलायमान नहीं होता और जो अंतर से रोग, भय, कामना, क्रोध से रहित है, वह ही अक्ल-सलीम (श्रेष्ठतम बुद्धि) वाला स्थिरचित्त है। किसी के स्थिरचित्त का पता तुमको पूरी तरह नहीं लग सकेगा जब- तक तुम खुद ऐसी स्थिति को प्राप्त न कर लो। ज़रा-ज़रा सी बात में मन संशययुक्त हो जाता है। हर एक के मन की ऐसी ही हालत है। कृष्ण सदा ही जती और दुर्वासा सब कुछ खा-पीकर कह रहा है, ''जाओ देवियों, जमुना माई से कहना दुर्वासा निर-आहारी है तो रास्ता दे।''

प्रेमी:- महाराज जी! यह कथा किस तरह है?

श्री महाराज जी:- प्रेमी! सत् पुरुषों के जीवन को समझना बड़ा मुश्किल है। वह अपनी ज्ञान अवस्था में कंवल की तरह निर्लेप रहते हैं। चाहे वह बातें कर रहे हों, चाहे लेटे हुए हों, चाहे दुनिया का व्यौहार कर रहे हों, वह कर्म के बंधन में नहीं पड़ते। दुनिया की निग़ाह में वह कर्म कर रहे होते हैं। ज्ञान दीपक उनके हृदय में हर समय प्रकाश करता रहता है, जिस करके उनको कर्तापन सताता ही नहीं।

एक समय किसी गोपी ने जाकर कृष्ण के आगे प्रार्थना की:- महाराज जी! कृपा करें, पुत्र का सुख प्राप्त कर सकूं। इस पर कृष्णा ने फरमाया:- ''जाकर दुर्वासा से यह प्रार्थना करो।'' गोपी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! दुर्वासा जमुना पार रहते हैं, कैसे पार जा सकती हूं?'' कृष्ण ने फरमाया:- ''जाकर जमुना माई से प्रार्थना करो।, अगर कृष्ण सदा जती हैं तो रास्ता दे दो।'' गोपी मन ही मन में इस विचार को सुनकर हैरान हुई कि महाराज ने यह क्या बात कही है? किस तरह एतबार किया जावे। मगर उनकी आज्ञा पाकर मीठे भोग पदार्थ लेकर सहेलियों के साथ चल पड़ी। जमुना के किनारे जाकर उसी तरह प्रार्थना की। जमुना ने रास्ता दे दिया। जब गोपियां पार दुर्वासा ऋषि के पास पहुंचीं, पदार्थ रखकर प्रणाम करके अपनी कामना ऋषि जी से ब्यान की। दुर्वासा ऋषि ने जब पकवान खा लिए और गोपी को आशीर्वाद दी और तथास्तु कहकर फरमाया:- ''जाओ।''

गोपी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! अब इधर से जमुना कैसे पार की जावे?'' तो दुर्वासा ऋषि ने कहा:- जमुना जी से जाकर इस तरह कहो कि अगर दुर्वासा ऋषि निर-आहारी हैं तो रास्ता दे दो। यह विचार सुनकर गोपी को और भी हैरानी हुई क्योंकि ऋषि ने उनके सामने सब कुछ खा लिया था। गोपियों ने जमुना के किनारे जा कर कहा:- माई! अगर दुर्वासा ऋषि निर-आहारी हैं तो रास्ता दे दे। जमुना ने रास्ता दे दिया और सब पार हो गईं।

फिर भगवान् कृष्ण के पास जाकर दंडवत प्रणाम करके पूछा:- महाराज जी! हमें इन बातों का भेद बताने की कृपा करें कि आप कैसे जती हैं और ऋषि दुर्वासा कैसे निराहारी हैं?

कृष्ण जी ने उत्तर दिया:- वह इन्द्रियों के विषय-भोग मन की ख़्वाहिश से नहीं करते और इसी तरह दुर्वासा ऋषि ने आहार मन की ख़्वाहिश को पूरा करने की ख़ातिर नहीं किया है। महापुरुषों के करने और न करने की तरफ ध्यान न दिया करो। फ़कीर सिर्फ़ चाय पीते हैं, अगर तुम भी नकल करोगे तो नष्ट हो जाओगे। पहले ऐसी स्थिति पैदा करो। फ़कीरों के सामने कई किस्म के पदार्थ फल वग़ैरा आते हैं, क्या यह उन्हें ग्रहण नहीं कर सकते? दरअसल इनके अंदर चेष्टा ही नहीं होती। संतों का जीवन जल में कंवल के न्याईं (तरह) होता है।

जैसे जल में कंवल निरालम, मुरगाबी निशानिये।
सुरत शब्द भव सागर तरिए, नानक नाम बखानिए॥

यह सब नाम की महिमा है। तेरे सामने रहनी वाले संत मौज़ूद हैं। जब-तक ऐसी तेरी भी रहनी-सहनी नहीं बनती तब-तक मंज़िले मकसूद तक पहुंचना मुहाल (कठिन) है। ऐसा करने के लिए जीते जी मरना है। जब ऐसी मौत को कबूल करोगे ज़िन्दगी मिलेगी। कबीर ने कहा है:

जिस मरने ते जग डरे, मेरे मन आनन्द।
मरने ही ते पाइये, पूरण परमानन्द॥

दिल्ली से पत्र आ रहे थे कि आप उन पर कृपा करके दिल्ली तशरीफ़ लाकर सत्उपदेश अमृत से कृतार्थ करें। जगाधरी से भी प्रेमी बाबू राम सरूप वग़ैरा दर्शनों के लिए हाज़िर हुए और जगाधरी पधारकर उनको भी सत् उपदेशों की वर्षा से तृप्त करने की प्रार्थना की। इसके अलावा जगाधरी निवासी प्रेमियों ने सेवा में यह भी प्रार्थना की-कि आश्रम जगाधरी में बनाने की कृपा करें। बाबू राम सरूप ने ज़मीन की सेवा करने की आज्ञा भी मांगी।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- संगत के प्रेमी इस वक्त तक ठीक तरह बैठ भी नहीं सके हैं। ज़मीन की सेवा तो तुमने कर दी, बाकी तामीरात (बनवाने) वग़ैरा का खर्च भी तो ज़रूरी है। पहले संगत सब हालात पर विचार कर लेवे फिर देखा जावेगा। ज़माने के हालात को भी मद्देनज़र (ध्यान) रखो। फ़कीर किसी पर दबाव नहीं डालना चाहते। मजबूर करके काम करवाने से श्रद्धा में कमी आनी अवश्य है और भी हालात पर विचार करने होंगे। दिल्ली में बहुत से प्रेमी जमा होंगे, वहीं आप प्रेमी पहुंच कर उनसे भी विचार करें।

शाम के समय हैड के बाबू वग़ैरा भी आ गए। सत्संग हुआ। पहले महामंत्र मंगलाचरण प्रेमियों ने उच्चारण किए, फिर ग्रन्थ से अमृत वाणी पढ़ी गई। उसके बाद श्री महाराज जी ने सत् उपदेश से निहाल किया। इस उपदेश में आपने यह भी फरमाया:- यह वही जमुना नदी का किनारा है जिसके किनारे कृष्ण ने बाल लीला की और गुरु गोबिन्द सिंह ने समां व्यतीत किया और भी कई महापुरुषों ने इसके तट पर तप किए और आत्म लीनताई में समय व्यतीत किया।

''इन फ़कीरों को भी हैड ताजेवाला पर प्रेमियों ने बैठने के लिए जगह दी। समां बड़ी अच्छी तरह निकल गया है। अब इस जगह से विदायगी होगी। जिस तरह जो जीव रहता है उसका प्रबन्ध प्रभु आप कर देते हैं। मगर जो कुछ प्राप्त हो उसमें सन्तोष रखना आवश्यक है। ऐसा करना ही उस प्रभु की भक्ति बंदगी है। ऐसी जगह पर रह कर दो घड़ी मालिक की याद में समय देना ही इस मानुष शरीर का लाभ है। कल सुबह इस जगह से जाने वाले हैं। फिर कभी इधर आने का मौका मिला तो देखा जावेगा। ईश्वर सुमति देवे।''

हैड ताजेवाले के बाबूओं ने अर्ज़ की:- महाराज जी! इस जगह रहने का मौसम तो अब आया है। आपको हम अच्छी तरह समझ नहीं सके हैं और न ही ऐसी समझ थी।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमियों! अच्छी तरह परख करना ही हर जीव का फ़र्ज़ है। शायद आपने समझा हो कि कोई मरीज़ दरिया के किनारे समय काटने आ गया है। कोई बड़ी-बड़ी

लटों वाले, तम्बाकू चरस ग्रहण करने वाले साधु आ जाते तो फ़ौरन दौड़कर उनके पास पहुंच जाते। फिर भी आप लोगों ने जो इस जगह ठहरने के लिए दो गज जगह दी है यह भी आपकी बड़ी सेवा है। यह कोई तुम से नाराज़ नहीं हैं। फ़िक्र न करें।'' इसके बाद बाबू प्रणाम करके विदा हुए।

147. दिल्ली में एकांत निवास

21 अक्तूबर, 1948 तक आपने ताजेवाला हैड पर निवास किया। 22 अक्तूबर, 1948 को सुबह की बस में सवार होकर आप जगाधरी तशरीफ़ ले गए। बाबू राम सरूप के बाग वाले कमरे में प्रेमियों ने आपके निवास का प्रबन्ध किया हुआ था। आपने सिर्फ़ दो दिन उस जगह निवास किया। आपने दिल्ली निवासियों को प्रोग्राम दिया हुआ था। सत्पुरुष वक्त और प्रोग्राम के बड़े पाबंद थे। जैसा प्रोग्राम बन जाता और जो वक्त निश्चित कर देते उस पर फ़ौरन रवाना हो जाते। प्रोग्राम में बिल्कुल तबदीली न करते थे। आप 25 अक्तूबर, 1948 को सुबह दस बजे की गाड़ी में सवार होकर दिल्ली के लिए रवाना हो पड़े। गाड़ी चार बजे शाम दिल्ली स्टेशन पर पहुंची। डाक्टर भक्त राम जी रावलपिंडी निवासी, और चिनारी निवासी प्रेमी स्टेशन पर आए हुए थे। जब गाड़ी स्टेशन पर पहुंची और सत्पुरुष उससे उतरे, सबने चरणों में प्रणाम किया और फूलों के हार पहनाए। सत्पुरुष फूलों को तोड़ना पसंद नहीं करते थे। आपने हार अपने हाथ में ही लिए, गले में नहीं पहनाने दिए और लेकर एक प्रेमी को पकड़ा दिए। प्रेमियों ने आपके निवास का प्रबन्ध ठाकुर मुक्त राम के बाग में किया हुआ था। यह बाग सब्जीमंडी के आगे शक्ति नगर से जो सड़क सराय रोहिला स्टेशन को जाती थी उस पर गंदे नाले से आगे जो तीन फर्लांग आगे है, उसके आगे बागों के अन्दर है। सड़क से कच्चा रास्ता बागों के अन्दर जाता था। प्रेमियों ने तांगे पर श्री महाराज जी को सवार किया और आप भी दूसरे तांगों पर सवार होकर उस बाग के कमरे में आपको ले गए। दरियां वग़ैरा कमरे में बिछाई हुई थीं, उन पर आपका आसन लगाया गया।

उस जगह भी आपका दैनिक प्रोग्राम यथावत शुरू हो गया। आप रात को बाहर तशरीफ़ ले जाते और दूर जंगल में जाकर आत्म-लीनताई का आनन्द लेते। काफी दिन निकलने पर वापिस तशरीफ़ लाते और कुएं पर, जो कमरे से पहले ही था, स्नान करके धूप में विराजमान हो जाते। आपकी वापसी पर प्रेमी आने शुरू हो जाते और माताएं भी दर्शनों के लिए आ जातीं। लेकिन आपने उनके आने का ख़ास समय निश्चित कर दिया था। इतवार के दिन विशाल सत्संग होता और काफी जनता उसमें शामिल होकर तृप्ति प्राप्त करती। प्रेमियों की प्रार्थना पर कि शहर में ढिंढोरा पीटा जाए और इश्तहार छपवा कर बांटे जावें तो आपने इस प्रस्ताव को रद्द कर दिया और फरमायाः- गत्ते पर लिखकर बाहर सड़क पर लगा दो। प्रेमियों की प्रार्थना पर इस जगह 'समता समाज' का नाम तबदील करके ''संगत समतावाद'' रख दिया। जनता को पता लगने पर काफी लोग दर्शनों के लिए आने लगे और अपनी शंकाएं निवारण करते और सत्संग का लाभ उठाते।

इस जगह निवास के दौरान प्रेमी देवराज गुप्ता, जो फ़िलास्फ़ी से एम०ए० थे, सेवा में हाज़िर हुए और प्रश्न करके, जो गूढ़ फ़िलस्फ़ा पर होते, उनके उत्तरों से और सत्पुरुष के उच्च जीवन का जो असर उन पर हुआ, उनका ख़ाका जो उन्होंने खींचा था वह नीचे दिया जाता है।

''आमतौर पर देखा गया है कि महापुरुषों के मुतालिक उनके पैरोकार (अनुयायी) बहुत कुछ बढ़ा-चढ़ा कर काम लेते हैं। वह अपनी श्रद्धा और अकीदत (विश्वास) के जोश में अक्सर सच्चाई को नज़र-अंदाज़ करके अपने तज़रबात को बढ़ा-चढ़ा कर ब्यान करते हैं। यह दुरुस्त है कि उनका इश्तयाक और शौक उनके प्रेम और ख़लूस (एकता) की तस्वीर है। मगर बात को बढ़ा-चढ़ा कर ब्यान करने की हकीकत और मारफ़त (रूहानियत) के कार्य को बहुत हद तक नुकसान पहुंचता है। लोग जब अक्ल की कसौटी पर उनके मुशाहदात (अनुयाईयों के द्वारा वर्णित चमत्कार) को परखते हैं तो वह कई बार मायूस होकर उन महापुरुषों से ख़सूसन (विशेष तौर पर) और रूहानियत से अमूमन बेज़ार (निराश) हो जाते हैं। जिसके नतीजे के तौर पर ख़ुद उन महा गुरुओं के मुरीद उनके करीब में रहकर चंद एक ग़ैर कुदरती मोज़ज़ात (करिश्में) नहीं देखते। ऐसा होना बहुत कुछ मुमकिन हो सकता है। मेरा मुद्दा साफ यह है कि ऐसे मोजज़ात को आम लोगों के सामने ब्यान करना उनके दिल को ठेस पहुंचाता है। मेरी इस तमहीद (भूमिका) से मुराद (मतलब) यह है कि मैं पाठकों के सामने अपने सच्चे और हकीकी मुशाहदात, जो कि मैने गुरु चरणों में किए हैं, ठीक और सही शक्ल में पेश करूं। मैं अपने तज़रबे के बिनाह (आधार) पर उस बात को प्रगट करना चाहता हूं जिसने मेरी ज़िंदगी में एक भारी इंकलाब पैदा किया है।

''1948 का लम्बा वर्ष मेरे लिए इंतहाई (अत्याधिक) रंज व ग़म का वक्त था। मैंने अपनी आंखों के सामने दुनिया की नापायेदारी (नश्वरता) को देखा था। दिल पर एक नाकाबले बर्दाश्त (असहनीय) बोझ था जो मुझे चैन से न बैठने देता था। जब मैं अपने माजी (भूतकाल) को फिर से याद करता था तो मुझे हैरत होती थी कि मैने खुदकशी क्यों न कर ली? मुझे अपनी ज़िंदगी के बने रहने पर खुद हैरानी होती थी। निराशा और ग़म के बादल मुझे हर वक्त घेरे रहते थे। मैं हर शाम उदास और सुबह मायूस। मैं अकेला, बिल्कुल तन्हा ज़िन्दगी की घाटियों में आठ-आठ आंसू बहाता हुआ अपनी लाश को घसीटता हुआ चला जा रहा था। सब रंज व अलम (ग़म) शायद किसी आने वाले बहुत बड़े वाक्या का पेश खेमा (पूर्वाभास) थे।

''इस शिकस्ता (निराश) दिली के दौर में 1948 के आख़री महीनों में मेरे मेहरबान रफ़ीक (साथी) ने मुझे सत्गुरु श्री मंगत राम जी महाराज के बारे में बताया। मैं उनके हमराह (साथ) अफ़सुरदगी (ग़म) को समेटे हुए जगत गुरु के पवित्र चरणों में हाज़िर हुआ। क्या देखता हूं कि मेरी उम्मीदों के बरअक्स (उलट) एक फ़रिश्ता सीरत किसी साधु के लिबास में मलबूस (लिपटा हुआ) है। कमर में तैबंद, तन पर मामूली सा कुर्ता, सिर पर पगड़ी और अपने ऊपर एक सफेद चादर ओढ़े हुए वह दरवेशों का बादशाह अपने भक्तों और श्रद्धालुओं की टोली में बैठा हुआ उन्हें राज़े-ज़िन्दगी समझा रहा था। उसके चेहरे पर संजीदगी और बुज़ुर्गी की सब अलामात (चिन्ह)

मौज़ूद थीं। वह बड़े आसान पैराये (तरीका) में ज़िंदगी के निहायत पेचीदा मसायेल (समस्याएं) पर रोशनी डाल रहे थे। उनकी आम फ़हम (साधारण) पंजाबी ज़ुबान उनके विचारों की गंभीरता से कभी-कभी लड़खड़ा उठती थी। सबसे पहला रद्देअमल (प्रतिक्रिया) जो मेरी तड़पती हुई आत्मा पर हुआ, वह यह था कि मैं एक लम्हे के लिए अपने आप में खोकर रह गया और काफी लम्बे अर्से के बाद मैंने अपने पुराने मानसिक सकून (शांति) का अहसास किया। ऐसा मालूम होता था जैसे सहरा (रेगिस्तान) के लम्बे सफ़र की थकान के बाद किसी नखलिस्तान (रेगिस्तान में हरियाली वा पानी का स्थान) ने मुझे अपनी गोद में ले लिया हो। उनके आसन के मरकज़ से उठकर चारों तरफ दौड़ने वाली सतोगुण की लहरों ने मुझे अपने आगोश (गोद) में ले लिया। जलते हुए दिल ने एक ठंडक और शांति महसूस की। मेरे दिल के आइने में उस महापुरुष की बुज़ुर्गी का अक्स पड़ने लगा और मैं समझ गया कि मेरा वास्ता ग़ैर मामूली शख़सीयत (हस्ती, व्यक्तित्व) से पड़ रहा है।

''श्री सत्गुरु देव जी तो जिस्मानी ऐशो-आराम और भोग विलास के काफी होने का जिक्र करने के बाद और उनसे पैदा करदा (किए हुए) ग़म व अलाम को ब्यान करने के साथ-साथ अपने ज़ाती (व्यक्तिगत) तज़ुर्बे की बिनाह पर योग की आख़िरी हालत पर रोशनी फरमा रहे थे, जहां जाकर जीव के सारे शकूक (संशय) रफ़ा (दूर) हो जाते हैं। और वह हर किस्म के दुःख और दर्द से आज़ाद होकर अपने आप में मस्त हो जाता है। मेरे नन्हें से दिमाग़ में जुस्तज़ू (खोज, कोशिश) का माद्दा शुरु से ही था। इसलिए उनके इस रूहानी प्रोग्राम ने कम्-अज़्-कम चंद मिनटों के लिए मुझे हैरत में डाल दिया। इनका हर नुक्ता उनकी फ़जीहत (विद्वत्ता) का शहिद (गवाह) था।

''सत्संग के ख़ात्मा पर हसब मामूल (हमेशा की तरह) गुरुदेव ने हाज़रीन (उपस्थित व्यक्तियों) से कोई सवाल पूछने को कहा। मैने दो लफ्ज़ों में अपने रंज का इशारतन ज़िक्र किया। जिसके जवाब में सत्गुरु देव एक निहायत कोमल मुस्कराहट के दरमियान निहायत पिदराना (शख़सियत से पेश आते हुए) ऐसी चोट कर गए जिसका बराय रास्त (सीधा) ताल्लुक मेरी ज़ात से था।'' उन्होंने फरमायाः

''लालजी, जितनी कोशिश उस तरफ की है उससे आधी कहीं इस तरफ होती तो बाज़ी को जीत लिया होता। अब बहुत हो चुकी है ज़्यादा जिद्द न करो।''

''मेरे ख़्याल में हाज़रीन में से शायद कोई शख़्स इस बुझारत को समझ सका होगा। मगर मेरे लिए तो उनके अल्फाज़ मेरे कानों की राह हल्काए दिल (दिल के अन्दर) में उतरकर उसके एक-एक गोशा (कोना) में सरायत (प्रवेश) कर गए। मेरी आंखें भर आईं और गला रूक गया। उसके बाद महफ़िल की बाकी बातचीत से बेग़ाना होकर अपने ही मसायल में उलझकर रह गया। मगर योगीराज का मेरे दिल की गहराईयों में बड़ी तेजी से पहुंच जाना मुझे उनके चरणों में झुकाये बग़ैर न रह सका।

दूसरे रोज़ सुबह मैं फिर फ़कीर के हज़ूर (दरबार) में पहुँचा। अब तो मैंने कल से बिलकुल मुख़्तलिफ कैफियत (स्थिति) देखी। गुरुदेव अपनी योग निन्द्रा में मख़मूर थे। उनके चेहरे पर

खामोशी और सन्नाटा, उनका जिस्म बिलकुल निश्चल था। मैंने सिर्फ़ प्रेम और शफ़कते पिदरी (पित्र प्रेम) का अवतार समझा था। मगर उनकी इस कदर उदासीनता, इस कदर फ़रागत (बेलगाव) लिए हुए चेहरे से मुझे खौफ़ हुआ। मैं डर गया कि कहां आ गया हूं? मैं सोचने लगा कि वह इंसान है या जादूगर, जो एक वक्त में धीमी सी मुस्काराहट से दूसरों के दिलों पर कब्जा कर लेता है और दूसरे वक्त में उसकी बेनियाज़ी (बेपरवाही) अपनी इंतहाई (अत्यंत) सूरत में अपने चाहने वालों के लिए ख़ौफ व हरास (निराश) की चीज़ें बन जाती हैं। मेरे लिए यह उलझन थी, एक मोजज़ा (चमत्कार) था। मुझे गीता के ग्यारहवें अध्याय में अर्जुन की उस बेअक्ली का मतलब समझ आने लगा जो कि अर्जुन के अंदर कृष्ण के खौफ़नाक विराट रूप को देखकर हुई थी। लेकिन चंद मिनटों के बाद गंभीरता की लहर आहिस्ता-आहिस्ता गुम हुई और गुरुदेव मुझ से मुख़ातिब (बोले) हुए। सिलसिला कलाम फ़िलस्फ़ा के मुश्किल मसायेल पर पहुंच गया। अब मैंने गुरुदेव को, जिनकी स्कूल की तालीम कोई ज़्यादा न थी, एक बहुत बड़े फ़िलास्फ़र और मुफ़क्कर (विचारक) की शक्ल में देखा। उन दिनों मैं फ़लसफ़ा का विद्यार्थी था और अपने ताईं आसानी से मात खाने वाला ख़्याल न करता था। गुरुदेव उसकी जड़ में पहुंच कर मेरे शकूक को रफ़ा करते जाते थे। जिस इंसान को कोई लम्बा-चौड़ा किताबी मुतालया (अध्ययन) न हो उसकी इस कदर गहरी सूझ-बूझ ने मुझे सकते (हैरानी) में डाल दिया। उन्होंने बताया कि ईश्वर मेरी ही बेख़्वाहशी और समता की हालत का नाम है। इससे मेरे जिस्म में एक आशावाद की लहर दौड़ गई। गुरुदेव की दिमाग़ी फ़जीलत का अंदाजा में उस वक्त बड़ी आसानी से लगा सकता था।

''लेकिन इन सब बातों से ज़्यादा जिस चीज़ ने मुझे गर्विदा (प्रभावित) किया वह उनका तरज़े कलाम (बात करने का ढंग) था। सिलसिला गुफ़्तगू में अपने नुक़ात को प्रकट (स्पष्ट) करते हुए गुरुदेव अपने असूल पर कामल यकीन होने की वजह से इश्तियाक (शौक) और गर्मजोशी से भर जाते थे। उनके गले से सहज ही (एकदम) एक चीख सी निकल जाती थी। वह अपना हाथ उठाकर अपने ब्यान की सदाकत (सच्चाई) को समझा जाते थे। उनके अलफ़ाज में निश्चय और एत्माद (विश्वास) था। मेरी नज़रों के सामने जर्मनी के सब से बड़े दिमाग़ हीगल और दौरे हाज़रा (वर्तमान युग के) के सबसे बड़े फ़लास्फ़र बरटंड रसल घूम गए। उन दिनों फ़लास्फ़रों ने बाकी विद्वानों की तरह अपना फ़लसफ़ा और तालीम लिखते हुए हर जगह हिचक और संकोच से काम लिया है। वह किसी भी नतीजे पर पहुंचते हुए उनके साथ 'ऐसा मालूम होता है' के अल्फ़ाज लगा देते हैं। मुझे उनकी हिचक से अक्सर परेशानी हुआ करती है। मैं सोचता हूं कि अगर दुनिया के यह सब से बड़े रोशन दिमाग़ लोग काफी ग़ौर व ग़ौस (चिंतन) के बाद ऐसे नतायज (नतीजे) पर नहीं पहुंच सकते जिनकी सदाकत पर उन्हें रत्ती भर भी शुबा (संशय) न हो तो इसका साफ मतलब यह है कि इंसान की अक्ल हकीकत को जानने में हमेशा कासर (वंचित) रही है। मगर पूज्य मंगत राम जी के हर फ़िकरे में मैंने ठोस यकीन और पुख़्तगी पाई । उन्होंने कहा:- ''फ़कीरों का प्रधान निश्चय है कि दुनिया में कोई चीज़ इंसान को राहते-अबदी (चिर शांति) नहीं दे सकती। इसके ख़िलाफ यहां का

हर एक सामान आख़िर में ग़म और दु:ख को देने वाला है। अगर इंसान इन मादी लवाज़मात से मुंह मोड़ कर बेख़्वाहिश हो जाये तो सच्ची खुशी के दरवाज़े उसके लिए खुले हैं।'' यह एक ज़बरदस्त हकीकत है। सच तो यह है कि उनके इस एत्माद और निश्चय ने मुझे सबसे ज़्यादा अपनी तरफ खींचा।''

इस जगह भी संगत ने आश्रम बनवाने के लिए प्रार्थना की। इस पर बाबू राम सरूप को जगाधरी से बुला लिया गया और उसे चेतावनी दी- प्रेमी! कल तेरे माता-पिता और परिवार वाले तुम से नाराज़ न हों इसलिए ज़मीन के मुतालिक (बारे में) विचार कर लो। इस जगह के प्रेमी भी आश्रम की कायमी के लिए ज़ोर देने लगे हैं। अब तुम देख लो कि तुम पूरी तरह तैयार हो। इस पर बाबू राम सरूप ने हर तरह से श्री महाराज जी को तसल्ली दिलाई और संगत को ज़मीन लेकर देने का वायदा कर लिया। श्री महाराज जी ने दिल्ली निवासी प्रेमियों से भी कहा:- प्रेमियों! तुम भी विचार कर लो।

बाबू अमोलक राम उन दिनों दिल्ली में ठहरे हुए थे और चरणों में हाज़िर हुए। संगत ने उनसे भी प्रार्थना की-कि जैसा कि शुभ स्थान गंगोठियां में हाल वग़ैरा तैयार करवाने की व ज़मीन वग़ैरा लेने की सेवा की थी उसी प्रकार यहां भी करें। बाबू जी ने अर्ज़ की:- वो जैसी श्री सद्‌गुरुदेवजी की आज्ञा होगी, उसका पालन करेंगे। यह निश्चित हो गया कि आश्रम जगाधरी में बनना है, जगाधरी में ही उसे कायम किया जाये। संगत तन-मन से सेवा करेगी।

दिल्ली में एक सत्संग के नोट लिए गए थे जिसके मुख्य अंश नीचे दर्ज किए जा रहे हैं ताकि प्रेमी पाठक भी उसका लाभ उठावें।

सत्संग उपदेश अमृत

जीव शरीर रूपी संसार को धारण करके इतना डूब जाता है कि उसे पता ही नहीं लगता कि इन्द्रियों के भोग सुख देने वाले नहीं हैं, बल्कि सुख जो जीवन शक्ति आत्मा की प्राप्ति में है। ज़रा बाज़ार में खड़े होकर देखो, लोग बड़ी तेज़ी से आते-जाते नज़र आयेंगे। किसी को खड़ा करके ज़रा पूछो, ''सुखी तो है?'' पहले एक मिनट के वास्ते वह कह देगा- ''सब ठीक है। गुज़र हो रहा है।'' फिर दो मिनट बाद अपने दु:खों की पोथी खोल देगा।

आवे दया खोतिया कचियां ले जावना, पकियां ले आवना।
इनां नहियों मुकना, तूं नहीं छुटना॥

यह है संसारी जीवों की हालत। जिस तरह ईंटों के भट्ठे पर जो खोते (खच्चर) काम करते हैं वह कच्ची ईंटें ले जाते हैं और पक्की पीठ पर लाद कर ले आते हुए ही नज़र आवेंगे। एक लम्ह भी उन्हें बोझ से खाली नहीं देखोगे। जिस तरह कच्ची ईंटें उनकी पीठ से उतार कर पक्की लाद दी जाती हैं यह ही हालत आम लोगों की है। हर जीव तृष्णा रूपी बोझ से लदा रहता है। कभी भोग पदार्थों को एकत्र करते देखोगे फिर उन्हें भोगते पाया जावेगा और फिर उनकी प्राप्ति के लिए अधिक यत्न-प्रयत्न करते पाओगे।

यह शारीरिक यात्रा हमेशा के वास्ते नहीं, कुछ समय के लिए है। शरीर अवश्य ही नाश होने वाली वस्तु है। इसके लिए जितने भी सुख भोग हैं सबके सब आख़िरकार परम क्लेश के देने वाले बन जाते हैं। जीव जब-तक सही जीवन के भेद को नहीं जान लेता तब-तक परम शांति को प्राप्त नहीं हो सकता, बल्कि अशांत चला जाता है।

किधर गया भौर, जो उठाए पहाड़ नूं।
जांदी वार न मिलया, महरम यार नूं॥

वह भौर कहां गया जो पहाड़ को उठाये हुए था? जब जान निकल गयी पता नहीं लगता भौर किधर चला गया। शरीर हर घड़ी, हर लम्ह नाश की ओर जा रहा है। उसकी प्रीत ही परम दुःख रूप है। इसके अन्दर बोलने वाली जो शक्ति है वह परम सुख रूप है। उसे ही आत्मा कहते हैं। आत्मा नित्य है और शरीर अनित्य है। इनका निर्णय करने वाली बुद्धि अगर स्वतंत्र है, नित ही सत् विश्वास, निर्मल विवेक द्वारा सत् की खोज में लग रही है, तो वह तमाम विकारों से निर्विकार होकर उस परम अवस्था को प्राप्त कर लेती है। मनुष्य जीवन का परम लाभ यह है कि ज़िंदगी में ही शारीरिक विकारों से मुख़्लसी (मुक्ति) हासिल कर ली जावे। ईश्वर ही इस समय सब को सत् बुद्धि देवें। बड़े-बड़े दाने-बीने संसार चक्कर में ग्रस्त हैं। जो भी आता है अपनी अक्लमंदी का मुज़ाहरा (प्रदर्शन) करने लग जाता है। वह ऐसा जताने लग जाता है कि मैं ही संसार का पालक, रक्षक आया हूं। यह नहीं सोचता कि मेरे से पहले भी कई संसार में आये और आडम्बर रच-रच कर चले गए। संसार का रूप बनता बिगड़ता रहता है। जब-तक राजनैतिक लोग आम लोगों के आचार-विचार का ख़्याल नहीं रखेंगे तब-तक यह अशांति दूर नहीं होगी, बल्कि अशांति दर अशांति बनी रहेगी। राजगद्दी ने बेशक हर एक का मन डांवाडोल कर दिया है लेकिन जो राजनीति धर्म सहित होती है वह ही हर एक जीव के अंदर शांति बनाये रखती है। बिना धर्म धारण के कोई नीति कायम नहीं रह सकती। माया का पुजारी तो शुरू से ही हर एक जीव बना हुआ है। जिस मालिक से यह माया की रचना फैल रही है, जिसके आधार पर यह संसार का चक्कर चल रहा है उसकी तलाश, उसकी याद, उसका सिमरण ध्यान ही हर एक के चित्त को ठंडा करने वाला है। आज-कल का नुमायशी जीवन, यानि बाहर से तो बड़े साफ-सुथरे रहना और अंदर वासनाओं का भंडार से भरा हुआ होना, ऐसा ही है जैसे कि वह मकान जो बाहर से तो बड़ा सुन्दर बना हुआ है मगर उसके अंदर बिच्छू, सांप और दीग़र ज़हरीले जानवर भरे हुए हैं। जब कोई जीव उसकी सुंदरता को देखकर उसमें जावेगा तो अंदर विषैले बिच्छू सांप देखकर अन्दर घुसने का नाम नहीं लेगा। इस नुमायशी ज़माने के लोग मांस, शराब और भी विकार धारण करके कह रहे हैं यह नई रोशनी का ज़माना है। उनसे पूछा जावे, क्या वे सुखी हैं? जब उनसे पूछा जावेगा दुःखों का चिट्ठा खोल देंगे। जब-तक आचार-विचार का सुधार नहीं होता तब-तक दुःखों से छुटकारा नहीं मिलेगा, बल्कि दुःख अधिक बढ़ जावेंगे। जब स्वार्थ बढ़ जाता है अशांति भी साथ-साथ बढ़ जाती है। तमोगुण के बढ़ जाने से लोग आपस में कट-कट कर मरते हैं। फ़कीरों ने तो समझाना ही है। अगर कोई समझ कर

ठीक रास्ता अख़्तियार (स्वीकार) कर लेगा तब ही ठीक चलेगा। उसके स्वार्थ और परमार्थ दोनों ही ठीक बन जावेंगे। जब-तक किसी के होकर न चलोगे, दोनों तरफ से निराशा ही होगी। ईश्वर ही इस भयानक काल में सबको सुमति देवें।

एक दिन आपने फरमाया:- ''अब दिल्ली में काफी संगत हो गई है। सत्संग का प्रोग्राम बनावें। अब इनका प्रोग्राम जाने का है।''

148. कुरुक्षेत्र में निवास

प्रेमी रामजी दास चरणों में हाज़िर थे। वह काहनूवान पधारने की प्रार्थना कर रहे थे। प्रेमी मुकंद लाल तलवाड़ कुरुक्षेत्र से हाज़िर होकर वहां कृपा करने की प्रार्थना कर रहे थे। मलिक रणबीर देव जी चावला जालंधर पधार कर कृपा करने की प्रार्थना कर रहे थे। सत्पुरुष ने फरमाया:- पहले कुरुक्षेत्र चलना चाहिए, अगर कोई जगह पंसद आ गई तो कुछ समय वहां व्यतीत किया जावेगा। 2 दिसम्बर, 1948 को रवानगी का प्रोग्राम निश्चित किया गया। प्रेमी सुबह ही आने शुरू हो गए। पंडित ठाकुर दास अपना ट्रक ले आए। श्री महाराज जी को अगली सीट पर बिठाया गया। बाबू अमोलक राम व पंडित रामजी दास को भी साथ चलने की आज्ञा हुई। सब प्रेमी पीछे ट्रक में बैठे। जब ट्रक स्टेशन पर पहुंचा सब प्रेमी ट्रक से उतर कर महामंत्र का उच्चारण करते हुए प्लेटफार्म पर, मय श्री महाराज जी, चले गए। श्री महाराज जी को साढ़े आठ बजे वाली गाड़ी में सवार करवाया गया। जब कुरुक्षेत्र स्टेशन आया तो श्री महाराज जी मय प्रेमियों के गाड़ी से उतर पड़े। आसन प्लेटफार्म पर ही लगाया गया। बाबू अमोलक राम जी को आज्ञा हुई कि जाकर प्रेमी मुकन्द लाल जी को सत्पुरुष के आगमन की सूचना देवे। बाबू जी ने मंडी में जाकर प्रेमी को बता दिया कि श्री महाराज जी पधारे हुए हैं और स्टेशन पर विराजमान हैं। प्रेमी को आपके आने की ख़बर मिलने पर बड़ी खुशी हुई और बड़ी तेज़ी से स्टेशन पर पहुंचा और चरणों में प्रणाम करके अर्ज़ की:- इस बच्चे पर बड़ी कृपा की है कि खुद ही तशरीफ़ ले आए हैं मेहरबानी करके उसके गृह में चरणकंवल डालकर उसे पवित्र करें।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! दर्शन हो गए हैं। इस जगह ज़्यादा नहीं ठहरेंगे। तेरा प्रेम पूरा हो गया है।''

प्रेमी मुकंद लाल ने अपने गृह को पवित्र करने की प्रार्थना की और श्री महाराज जी को घर ले गया। आगे आसन बिछा हुआ था, उस पर सत्पुरुष विराजमान हो गए। प्रेमी के माता, पिता, भाई व सब परिवार ने प्रणाम किया। फिर प्रेमी ने अर्ज़ की:- आपने झंग में तो इस बच्चे के गृह को पवित्र नहीं किया था, अब आपने खुद ही इसकी झोंपड़ी में चरण डालकर इसे पवित्र किया है और हमें निहाल किया है। इसके बाद भक्त जी, पंडित रामजी दास व बाबू जी ने भोजन पाया और फिर एकांत जगह देखने के लिए प्रेमी चमन लाल के साथ एक गांव में गए। दो जगह देखी गई मगर

कोई पसन्द नहीं आई। शाम को वापिस आकर श्री महाराज जी की सेवा में सब हालात अर्ज़ किये गए। इस पर श्री महाराज जी ने फरमायाः- ''जालन्धर चलो। इस तरफ ठहरने का प्रोग्राम फिर किसी समय के लिए रहने दो। जल्दी में मौजूं (ठीक) जगह नहीं देखी जा सकती। ''प्रेमी मुकंद लाल ने फिर अर्ज़ कीः- महाराज जी! कल तक और जगह देख लेंगे। इधर बड़े खाली स्थान पड़े हैं मगर श्री महाराज जी ने फरमायाः- प्रेमी! तुम ख़ुद अभी पैर नहीं जमा सके हो, फिर किसी समय तुमको वक्त दिया जावेगा।

श्री महाराज जी मय भक्त जी व पंडित रामजी दास जी रात के 10 बजे की गाड़ी से सवार होकर जालन्धर के लिए रवाना हो पड़े और बाबू अमोलक राम को आज्ञा हुई कि जगाधरी जाकर ज़मीन की खरीद का प्रबन्ध करे। उन दिनों ज़मीन को खरीदने के लिए बहुत कोशिश करनी पड़ती थी। इज़ाज़त डिप्टी कमिश्नर से लेनी पड़ती थी।

गाड़ी में भीड़ बहुत थी। बड़ी मुश्किल से श्री महाराज जी को बैठने की जगह मिली। श्री महाराज जी ने ऐसे हालात को देखते हुए फरमायाः- सफ़र में किसी को आराम नहीं मिलता। जिस तरह हो सके समां काटो। गाड़ी सुबह जालंधर छावनी पहुंची। प्रेमी मलिक रणबीर देव जी को पता दिया गया और वह झट स्टेशन पर हाज़िर हो गए और श्री महाराज जी को अपने क्वार्टर में, जो स्टेशन के सामने लाईनों की दूसरी तरफ था, ले गए।

सत्पुरुष ने स्नान किया। चाय लेने के बाद निवास की जगह के बारे में विचार किया। दो-तीन जगह देखी गई मगर कोई जगह पसन्द नहीं आई। आख़िर एक जगह कुएं के पास थी और क्वार्टर से दो फर्लांग के फ़ासले पर थी, उसको पसन्द किया गया। किसी समय ज़मींदार उस जगह भेड़ें बांधते थे। कमरा बना हुआ था। उसमें पुराना खाद पड़ा हुआ था। उसे साफ करके गोबर का लेप किया गया और चौथे दिन वहां आसन ले जाया गया। आपने फरमायाः- ''फ़कीरों के वास्ते महल नहीं हुआ करते। ऐसी टूटी-फूटी जगहों में ही रौनक लग जाया करती है।'' सत्संग का समय साढ़े सात बजे से साढ़े आठ बजे रात का रखा गया। जालन्धर शहर में भी श्री महाराज जी के पधारने का पता दिया गया। प्रेमी सुख लाल जी को भी पता दिया गया। वह उन दिनों मिलिट्री में जालन्धर ही थे। पास ही दकौहा गांव था, वहां भी पता दिया गया। प्रेमी प्यारे लाल, दकौहा निवासी और बख़्शी प्रताप सिंह जो रिटायर्ड सब इंस्पेक्टर पुलिस, जिनकी रिहायश छावनी में ही थी और शिकार वग़ैरा के बड़े शौकीन थे, चरणों में हाज़िर होकर सत्संग अमृत वर्षा से तृप्त होते रहे। बख़्शी जी पर सत्संग का इतना असर हुआ कि उन्होंने शराब, मांस वग़ैरा सब छोड़कर चरणों मे जगह प्राप्त की।

इस जगह आपने अपने कर कमलों से ''जीवन स्थिति'' छोटा सा प्रसंग लिखकर दिया और भक्त बनारसी दास को फरमायाः- इसे प्रेमियों को खुशखत (साफ) लिखकर भेजते जाओ।

एक दिन आप आनन्दित अवस्था में बैठे थे। कुछ देर बाद जब आंख खुली तो देखा कि एक ज़मींदार सिख प्रेमी कुंए के पास ही ज़मीन में चारा काट रहा है और सिगरेट पी रहा है। उसकी दाढ़ी

भी कटी हुई थी। आपने उसे बुलाकर पूछाः- ''प्रेमी! कहां के रहने वाले हो''? जब उसने अपनी रिहायश बतलाई तो फिर उससे पूछाः- ''प्रेमी! ये क्यों पीते हो? दाढ़ी तुम्हारी कहां गई? क्या तू गुरु का सिख नहीं?''

उसने जवाब दियाः- ''बाबा जी! गुरु महाराज जी तमा (लोभ) और कूड़ (झूठ) छोड़ने को कह रखा है। यह तो सब साधु-संत पीते हैं। दाढ़ी पांच कक्कों (कच्छा, कड़ा, कंघा, कृपाण, केश) में शामिल नहीं है। यह दद्दा में शामिल है। ज़मींदार लोग वाहगुरु के भाने में रहते हैं। बारिश बरसने पर जो अन्न उनको मिल जावे उसमें गुज़र करके खुश रहते हैं और थोड़ा-थोड़ा राम-राम जप लेते हैं और कुछ बन आवे तो साधु-संत की सेवा कर दी।''

सत्पुरुष ने इस पर फरमायाः- ''प्रेमी! तूने बातें तो बड़े ज्ञानियों वाली की हैं।' इस पर उसने कहाः- ''बाबा जी! हम पढ़े हुए कुछ नहीं। थोड़ी ज़मींदारी और मज़दूरी करके वक्त निकाल लेते हैं।''

श्री महाराज जी ने फरमायाः- ''प्रेमी! मेहनत करके अपना पेट पालना गृहस्थी के वास्ते अच्छा है, मगर सिगरेट छोड़ दो।'' इतनी देर में पंडित रामजी दास अपने भाई के घर से खाना खाकर वापिस आ गया और आकर चरणों में प्रणाम करके बैठ गया, फिर काहनूवान की तरफ का प्रोग्राम निश्चित करने के लिए प्रार्थना शुरू कर दी।

श्री महाराज जी ने फरमायाः- ''प्रेमी! वहां के किसी जिम्मेवार प्रेमी के न तो दर्शन हुए हैं और न पत्र आया है। खाली तेरे कहने पर किस तरह जा सकते हैं? बार-बार काहनूवान जाने में क्या धरा है। साल-ब-साल जाना अच्छा नहीं होता।''

तू मान न मान, मैं तेरा मेहमान।

पंडित रामजी दास ने अर्ज़ कीः- ''महाराज जी! एक-दो दिन में प्रेमी पहुंचने वाले हैं।'' विचार हो रहे थे कि ख़िदमत राय आ गए। नमस्कार करके चरणों में बैठकर अर्ज़ कीः- भाईजी (भाई साहब हकीम जसवंत राय) ने कहा है कि आपको साथ लेकर आऊं। अब आपको साथ लेकर ही जाऊंगा। दो-तीन दिन विचार होता रहा। फिर प्रेमी किशोरी लाल जी भी काहनूवान से आ गए और काहनूवान का प्रोग्राम बनाने की प्रार्थना की।

प्रेमी मलिक रणबीर देव जी, उनके पिता मोहन लाल जी व सब परिवार सेवा का लाभ उठाते रहे थे। जब उन्हें पता लगा कि सत्पुरुष दो रोज़ तक जाने वाले हैं तो सबने प्रार्थना कीः- कुछ समय और उनको बख़्शें।

सत्पुरुष ने इस पर फरमायाः- ''प्रेमियों! इस दफा इस तरफ का विचार तो न था मगर रामजी दास दिल्ली से साथ ले आया है। समां बांटकर ही देना ठीक रहता है। इस जगह पन्द्रह दिन के बजाए महीना लग गया है। फिर किसी समय मौका दिया जावेगा।''

प्रेमी मोहन लाल ने फिर प्रार्थना कीः- महाराज जी! मुझे ज़मीन रोहतक ज़िला में अलाट हुई है। कभी उस तरफ का भी प्रोग्राम बनाने की कृपा फरमावें। हज़ूर के सिवाय और किसी का सहारा नहीं। आप ही माता-पिता हैं।

श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''प्रेमियों! जिधर-जिधर प्रेमियों का प्रेम खींचता है जाना पड़ता है। जिस जगह के लिए प्रभु प्रेरणा होती है चले जाते हैं। जब-तक शरीर में शक्ति है यह सेवा के वास्ते ही हैं। फ़कीर का क्या है?''

आई मौज फ़कीर दी, दित्ती झौंपड़ी फूंक।

''जितना समय पब्लिक के लिए ज़रूरी है वह दिया जा रहा है। मालिक का हुक्म ज़बरदस्त है। भला फ़कीरों का इनसे क्या सम्बन्ध है? मगर यह घर-घर ढिंढोरा देते फिर रहे हैं। वह भी समां था जब कई साल गंगोठियां के नाले पर ही व्यतीत कर दिये। प्रेरक शक्ति ने वहां से उठाया और जिधर घुमाना था घुमाया। सदा किसी के पास इनका ठहरना मुश्किल है।''

पानी बहता भला, जोगी रमता भला।

''हर समय अपने विश्वास से पास ही जानें। जिस जगह भी प्रभु आज्ञा से रहना पड़ गया है वहां रहकर संतोष से जीवन व्यतीत करें और पिछला ध्यान छोड़ दें। थट्टा-माहला में इधर के कई लोग जाकर बैठ गए होंगे। जिस तरह तुमने उनकी ज़मीन संभाल ली है उन्होंनें तुम्हारी भी संभल ली होगी। धरती उस मालिक की है। अपनी शुभ करनी ही हर जगह सुख देने वाली है।''

मलिक रणबीर देव जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! अपनी दया दृष्टि इन आज़िज़ों पर रखें। आपकी कृपा दृष्टि से और सत्संग से पिछला ध्यान अपने आप दूर होगा।

149. काहनूवान में एकांत निवास

2 जनवरी, 1949 को जालन्धर से रवानगी का प्रोग्राम बनाया गया। प्रोग्राम अनुसार सुबह की गाड़ी में प्रेमियों ने आपको सवार करवा दिया और चरणों में प्रणाम करके प्रेमी वापिस हुए। दस बजे गाड़ी गुरुदासपुर पहुंची। गाड़ी से उतरकर काहनूवान के अड्डे पर पहुंचे। वहां पहुंचने पर सरदार मथुरा सिंह के मकान पर आसन लगाया गया। काहनूवान निवासियों को सूचना तो थी मगर कोई प्रेमी लेने को नहीं आया। काफी देर इंतज़ार की गई, न तो हकीम जसवंत राय और न कोई और प्रेमी पहुंचा। इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया:- यह लोग घर के दरवाज़े पर ही दर्शन करना चाहते हैं। यह तो ज़बरदस्ती जाने वाली बात है। काहनूवान जाने के लिए अंतर से प्रेरणा नहीं हो रही और न ही आगे कोशिश दिखाई देती है। अब दूसरी तरफ का विचार करो। जो प्रेमी साथ थे वह प्रार्थना करने लगे- शायद हकीम जी किसी काम की वजह से रुक गए हैं। उन्होंने हमको आपको लाने के वास्ते भेजा था।''

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''तुम इनसे ज़्यादा नहीं समझते। वह बड़ा लापरवाह है। फ़कीरों के साथ लापरवाही हो रही है। दुनिया के साथ कैसा सलूक होगा।'' विचार हो ही रहा था कि गोसाईं संत राम जी साइकिल पर आ गए। उसने और प्रेमियों ने फिर प्रार्थना की और तांगा ले आए। उसमें सवार करवाकर श्री महाराज जी को काहनूवान ले गए। जब काहनूवान पहुंचे तो श्री

महाराज जी आबादी से बाहर ही उतर पड़े और रामजी दास से फरमाया:- बाहर-बाहर से ही उन्हें ले चल। रामजी दास ने ज़मीनों से गुज़रते हुए दशहरा ग्राउंड में जा पहुंचाया। आगे से हकीम जसवन्त राय जी आ गए और हँसते हुए चरणों में प्रणाम किया और लातों को दबाने लगे। मगर श्री महाराज जी खामोशी से बाग की तरफ चल दिये, जहां आगे भी ठहरा करते थे। प्रेमी किशोरी लाल और जज साहब, हकीम जसवंत राय ने बिस्तरे वग़ैरा पहले ही पहुंचा दिये थे और जगह साफ करके वहां तम्बू खड़ा करने का यत्न करने लगे। इतने में डाक्टर रोशन लाल व अन्य प्रेमी पहुंच गए। दरी बिछाकर आसन लगा दिया गया। जल्दी-जल्दी तम्बू गाढ़ दिया गया और पराली बिछाकर आसन उस पर लगाया गया। बाहर बहुत सर्दी हो गई थी, और सब आराम से अंदर बैठे। इसके बाद श्री महाराज जी ने सबको जाने की आज्ञा दी।

इस जगह निवास के दौरान एक दिन डाक्टर रोशन लाल जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! जब हम पाकिस्तान से आए थे और कादियां में रिहायश इख़तियार की थी, एक रात मुझे श्री गुरु नानक देव जी के साक्षात् दर्शन शारीरिक रूप में हुए। उस समय दिव्य प्रकाश को नमस्कार किया और प्रार्थना की:- 'आपकी बड़ी कृपा है जो दर्शन दिए हैं।' वह बोले:- 'जलजला आने वाला है'। अर्ज़ की- 'मेहर करो।' उस घड़ी स्वप्न में क्या देखता हूं? बहुत ज़ोर से आंधी आई? उन्होंने उंगली से इशारा किया, देखो जलजला आने वाला है। उसी इशारे के साथ ही एक शरारा (शोला) निकला। वह प्रकाश (शरारा) आकर उस जगह गिरा जहां आपके चरणों की भेंट हुई है। इस हालत के डेढ़ माह बाद आप आए हैं और इसी कोठी में आप आकर विराजमान हुए हैं। आप उनका ही अवतार हैं। हम पर कृपा करने के वास्ते ही आए हैं। दास को आने से पहले ही चेतावनी द्वारा सूचित कर दिया। महाराज जी, इसके बारे में आप बतायें कि इसमें क्या भेद है?''

श्री महाराज जी:- प्रेमी! यह तुम्हारा अपना ही सत् विश्वास है। संत जिज्ञासुओं को ढूंढते रहते हैं। जिस तरह कबीर ने धर्मदास, नानक ने लहना को, इसी तरह यह भी खोज कर रहे हैं। मगर अभी तक-

ऐसा कोई न मिला, जिस लगा कलेजे बाण।

प्रेमी, सब चाहते हैं महाराज कृपा कर देवें। हाथ पांव न हिलाना पड़े। इन्होंने तो सही खोज में लगा दिया है।

जतन में ही रतन है, जो खोजे सो पावे।
लागी चोट शब्द की तन में, गृह नहीं चैन, चैन नहीं वन में॥

जब जीव के अंदर किसी पदार्थ की प्राप्ति की ख़्वाहिश उठती है, चाहे वह हिमालय की चोटी पर हो वहां से मरते-मरते उतार लावेगा। जिनके अंदर संसार असली मायनों में असार नज़र आने लगता है और सच्ची खुशी के वास्ते चाह पैदा होती है उनको न घर में आराम, न जंगल में चैन, जब-तक बुद्ध की तरह निर्वाण अवस्था को प्राप्त नहीं कर लेते।

प्रेमी डाक्टर रोशन लाल – महाराज जी! कैसे विचार सत्संग का किया जावे?

श्री महाराज जी– (प्रेम में आकर) –

ऐसा ज्ञान विचारे कोई, सो नर जीवन मुक्ता होई॥
बोलन हार कहां से हुआ, कैसे उपजा कैसे मुआ॥
पवन की गांठ सहज बन आई, तां सों बंगला बनया भाई॥
खुल गई गांठ खोज नहीं पाया, पवन का पुतला पवन समाया॥
जैसे बादल होत आकाशा, तैसे दरसें यह संसारा॥
मिट गए बादल रहा आकाशा, ऐसे आतम को नहीं विनासा॥
इस बहुरंगी का पार नहीं पाया, कहैं कबीर गुरु भेद सिखाया॥

प्रेमी, गुरु गोसाईं मिलें तब ही सत् का भेद लखावें। बिना गुरु के तरीके का विचार नहीं मिलता। बिना विचार के ज्ञान नहीं होता। जिस तरह संसार की भक्ति यानि प्राप्ति कठिन है उसी तरह सत् की धारा पर चलना भी कठिन है।

चलो-चलो सब कोई कहे, विरला पहुंचे कोए।
जां को सतगुरु साध मिलें, तो घट सोझी होए॥

तरीका पाकर भी बड़ी भारी मेहनत की ज़रूरत है। तुम को अभी उस तरफ की क्या पड़ी है? तुमने अभी संसार को देखना है। प्रेमी, यह आशिकों का मार्ग ही अलग है और संसारियों का अलग।

गृही हो तो भक्ति कर, ना तो कर बैराग ।
बैरागी बंधन पड़े, तां को बड़ा अभाग ॥
तब लग जोगी जगत गुरु, जब लग है निरास।
जब जोगी आशा करे, तो जग गुरु जोगी दास॥

बाहोश होकर बुद्धि खोलकर सुना कर। भाई का कड़ाह नहीं जो जल्दी मुंह में डाल लोगे। सत्संग में आया करो। इस तरह शौक बंधा करता है।

साध बड़े परमार्थी, धन जीवों के आए ।
तपन बुझावे और की, अन्यो पारस लाए॥
नदिया बहती जात है, उठ धोईयो शताबी हाथ।
न जाने किस पलक में, नाथ से होवें अनाथ॥

प्रेमी, किसी के होके चलोगे तब कुछ न कुछ पा लोगे। मनमति जीव लोक परलोक दोनों के सुखों से महरूम (वंचित) रहता है।

दूसरे दिन सुबह के बाद आप धूप में विराजमान थे। एक प्रेमी दर्शन करने आया। नमस्कार करके एक तरफ बैठ गया। थोड़ी देर बाद आपने उससे पूछा:– "प्रेमी! क्या नाम है?"

प्रेमी:- इस पंच तत्त्व के पुतले को साधु सिंह कहते हैं।

महाराज जी:- बीच में जो बोल रहा है उसे क्या नाम लेकर बुलाते हैं?

प्रेमी खामोश हो गया।

(थोड़ी देर के बाद प्रेमी से जवाब न पाकर) महाराज जी:- साधु सिंह शरीर का नाम है या जो अंदर इसके ''मैं-मैं'' कर रहा है उसका?

प्रेमी:- जीव का रूप नहीं, नाम, रूप-रेख से परे है। इस रूप में आया तब ही नाम पड़ा।

महाराज जी:- जब इससे बोलने वाला निकल जाता है फिर लाख आवाज़ देने पर रूप-रेख नहीं बोलता। तुमने आते ही बड़े ज्ञानियों वाली बात दे मारी। जहां खड़े हो वहां की बात करो।

प्रेमी:- महाराज जी! इस काल, देश से जब-तक गुरु आकर निकालता नहीं तब-तक किस तरह से यह जीव बेचारा मालिक तक पहुंच सकता है? सत्गुरु ही पिंड से ब्रह्मण्ड तक ले जायेगा, फिर अपने असली रूप में शामिल हो सकता है।

महाराज जी:- प्रेमी! क्यों बच्चों वाली बातें करता है? कभी ऐसा सुना है कि किसी गुरु ने किसी शिष्य का हाथ पकड़ कर कहीं पहुंचाया है?

मोये गुरू ते मोये शिष्य, दोनों डूबे मंझदार।

पहुंचना-पहुंचाना क्या है? पहले इस बात को अच्छी तरह समझो। ऐसी बातें कर रहे हो जैसे मालिखोलिया (तेज बुखार की हालत में बड़बड़ाना) हुआ होता है। पहले समझ, शरीर क्या है? बोल क्या वस्तु रही है? बिछोड़ा क्या है? मिलना किस तरह है? गुरु अगर आप ही न मिला हुआ हो तो तुझे क्या मिलावेगा? गुरु तो आदिकाल से रास्ता बताते आए हैं, जिस पर शिष्य चलकर जानने वाली वस्तु को जान कर खामोश हो जाता है। दो हरफ़ी बात है, क्यों चक्कर में पड़कर खराब हो रहे हो? अपना यत्न छोड़कर गुरु के आसरे पर सब कुछ छोड़ दिया। गुरु किस-किस को पार लगावेंगे। कौन हाथ है जिन हाथों से पकड़कर पार लगावेगा? तुमने जब से गुरु बनाया है कौन सा विकार कम हुआ है? काम घटा, क्रोध कम हुआ, लोभ, मोह, अंहकार से छुटकारा मिला है? यह सब बेईमान विकार अंदर मौजूद हैं। गुरु किस समय इनसे छुड़ायेगा? जाओ, जाकर विचार करो। बोलता अंदर कौन है? कहां से आया और यह मन आकर किस में फंस गया है? जब इस भेद को जान लेगा तेरी भटकन ख़त्म हो जायेगी। अब बिना सत्संग के इस मोह माया के जाल से छुटकारा न हो सकेगा। एक परमेश्वर की टेक मन में रखते हुए मन की दुर्गति को छोड़ो। बार-बार ईश्वर आज्ञा में हौमें (अहंकार) को ख़त्म करो। साधन द्वारा परम गति प्राप्त होती है, साधना के संग से सिद्धि को पायेगा। साधना संतों के दरबार से मिलती आई है, इसमें शक नहीं। यह कहो कि कोई उंगली पकड़कर काल-देश से निकाल कर ले जायेगा। यह अंध विश्वास ही बेड़ी डुबोने वाला है। गुरु इस अंध विश्वास रूपी सागर से पार कर देते हैं। सही पुरुषार्थ करने और रहनी बनाने की आज्ञा देते आए हैं। ऐसे गुरु जगत का आधार यानि स्तूप हैं। सत्गुरुओं की महिमा जुगा-जुग तक जीव करते हुए प्रतीत, (विश्वास) प्रीत में दृढ़ता प्राप्त करते रहते हैं। इस माया के कठिन जाल से

बिना तत्त्व ज्ञान के निस्तारा (मुक्ति) होना मुश्किल है। सत् का निर्णय, सत् का निश्चय, सत् में प्रीति, उसका यश गायन करना, सिमरण और ध्यान सत् का ही करते रहना, हर समय वृत्ति का सत् विखे करके लगे रहना ही मन के वेग को स्थिर करने वाला है। सारे संसार को सत् वस्तु की छाया समझते हुए केवल सत् को ही करता-हरता जानते हुए इस शोक, मोह, सर्व प्रकार के विकारों से जीव शांत पद को प्राप्त हो सकता है। मानुष जन्म का सार यही है कि सत् का मुतलाशी (जिज्ञासु) बने और इसका फल सत् की प्राप्ति है। चित्त की अग्नि तब ही ठंडी हो सकती है जब सत्-असत् का अंतर विखे बोध करेगा। बग़ैर सत् यत्न के इस मन का शंका नहीं मिट सकता। जुगा-जुगांतर तक इस तरह डोलता रहता है। मन के गुरु बनो, संसारी गुरु न बनो।

इस तरह प्रेमी रोज़ाना आकर विचार करते रहते।

150. अबोहर में सत् उपदेश

अबोहर से प्रेमी चरणों में हाज़िर होकर प्रार्थना करने लगे :- श्री महाराज जी! कृपा करके अबोहर का भी प्रोग्राम बनायें और उन्हें भी सत् उपदेश अमृत से निहाल करें। आपने उनकी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए अबोहर का प्रोग्राम निश्चित कर दिया। प्रेमी करोड़ी मल एक हफ्ता पहले काहनूवान पहुंच गए। 7 फरवरी, 1949 को रवानगी का प्रोग्राम बनाया गया।

7 फरवरी को सुबह ही प्रार्थना करके प्रेमी हकीम जसवंत राय जी श्री महाराज जी को गृह पर ले गए। श्री महाराज जी को चाय वहां ही पिलाई गई और प्रेमियों ने भोजन भी वहाँ ही पाया। इसके बाद श्री महाराज जी तांगे में बैठकर गुरदासपुर के लिए रवाना हो पड़े। रवानगी से पहले काहनूवान निवासी प्रेमियों ने अड्डे पर हाज़िर होकर चरणों में प्रणाम किया। कुछ प्रेमी साथ में गुरदासपुर आए और गाड़ी में सवार करवा दिया। 8 फरवरी, 1949 को आप अबोहर पहुंचे। आगे प्रेमी फूलों के हार लिए हुए स्वागत के लिए मौजूद थे। जब गाड़ी पहुंची सबने चरणों में प्रणाम किया। हार श्री महाराज जी ने लेकर प्रेमियों को दे दिये। श्री महाराज जी को तांगे में बिठाकर जोहड़ी वाले साबका स्थान पर ले जाया गया। फरवरी का महीना था, मगर अबोहर में गुरदासपुर की तुलना में मौसम का ज़मीन आसमान का फ़र्क था। चाय श्री महाराज जी के लिए प्रेमी करोड़ीमल जी ले आए, और भी प्रेमी दर्शनों के लिए हाज़िर हुए। आख़िर सत्पुरुष ने सबको जाने की आज्ञा फरमाई- कि जाकर अपना काम काज करो, फ़कीरों ने तो घरबार को तिलांजली शुरू से दे रखी है। तुम इनके पास मत बैठा करो। यह छूत की बीमारी ऐसी है कि जिस पर इसका असर हो जाता है उसे घर बार का नहीं छोड़ती।

प्रेमियों ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! संसार चक्कर से छुटकारा पाने के लिए चरणों में हाज़िर हो गए हैं। आपकी कृपा दृष्टि से ही इस बंधन से मुक्ति हो सकती है, वैसे इस चक्कर से कोई नहीं निकल सकता।'' श्री महाराज जी ने फरमाया:- उनका आसन बाहर पुरानी जगह दीवार

के पास ही लगा दिया जाये। यह खुली जगह है। सत्संग का प्रोग्राम रात को रखा गया। एक रोज़ सत्संग की समाप्ति पर प्रेमी अमीरचंद ने पूछा:

प्रेमी:- महाराज जी! जिस समता सुख के मुतालिक आप रोज़ाना विचार करते हैं, बड़ी अच्छी तरह समझाते हो। दु:ख-सुख में समान कैसे रहा जा सकता है? लाभ में खुशी न हो, हानि में मन दु:खी न हो, यह बड़ी मुश्किल बात है। संसार में रह कर ऐसी स्थिति का पाना बड़ा मुश्किल है। हम लोग सारा दिन कम देने और ज़्यादा लेने का व्यौहार करते रहते हैं। यह ज्ञान बुद्धि में कैसे आवे?

महाराज जी - **ज्ञान सम कोई धन नहीं, समता सम नहीं सुख।**
जीवत सम आशा नहीं, लोभ समान नहीं दु:ख॥

''प्रेमी जी, समता बुद्धि का होना कोई आसान नहीं। जब-तक कर्म की ममता जीव के अंदर ख़त्म नहीं होती, होना न होना उसकी आज्ञा में नहीं देखता, तब-तक ममता माई चैन नहीं लेने देगी। कर्मफल भोग की आशा ही ख़्वार कर रही है। ज्यों-ज्यों प्रभु भाने में बुद्धि दृढ़ होती है त्यों-त्यों क्षणभंगुर रसों से उपरस होती जाती है। उपरस जीवन ही कर्म की ममता को नाश करने वाला है। कर्म की ममता नाश हो जाने पर ही बुद्धि निर्मल होकर सम विचार में चलने लगती है, जहां से उसकी उत्पत्ति है, उसी परम सत् में लीन होकर बेख़्वाहिश हो जाती है। इसने अपना कर्ता भाव प्रभु आज्ञा में ही ख़त्म करना है। जब-तक कर्ता भाव बना हुआ है तब-तक खुशी-ग़मी, लाभ-हानि, सर्दी-गर्मी की महसूसात बनी रहती है। बुद्धि दोनों चक्करों से छूट नहीं सकती। सत्संग में रोज़ाना ही आहार, व्यौहार, संगत की शुद्धि पर ही ज़ोर दिया जाता है। सुनकर मानना, मानकर चलना, फिर किसी वक्त जाकर सत्संग, सिमरण, ध्यान द्वारा शांति तक पहुंच सकता है।''

प्रेमी:- महाराज जी! जो चीज़ प्राप्त ही है, मौज़ूद है, यानि ब्रह्म आप ही आप है तब किस को कर्ता और किस को अकर्ता कहें?

श्री महाराज जी:- प्रेमी! यह सिद्धों की स्थिति है, आप संसारियों की नहीं हो सकती। सिद्ध, औलिया होकर फिर कहते आये हैं, 'जो तेरी आज्ञा', अंतर विखे चाहे पूरा ब्रह्म ही हों। हर समय इनकी दृष्टि में सर्व ब्रह्म है, तेरी निग़ाह में नहीं। बिना ज्ञान साधना के ऐसा कहने वाला मूर्ख है। मां, बहन, स्त्री सबमें ब्रह्म जानना विवेक है। बर्ताव में नियम अनुसार ही चलना पड़ेगा। चित्त भोगों से मुतनफर (मुक्त) हो भी जाये तब भी उस ज्ञानी-ध्यानी विचारवान विवेकी को ऐसा कहना शोभा नहीं देता। अव्वल तो जिसके अंतरविखे दिव्य ज्ञान प्रकाश हो गया है, भोगों की इच्छा उसके लिए पैदा नहीं होती। ऐसे विवेकी सतगुरु शिष्य को कभी भी 'अहं ब्रह्मास्मि' का उपदेश नहीं देते। पहले सादगी, सेवा, सत्, सत्संग, सत् सिमरण ध्यान की तरफ लगाते हैं। आहिस्ता-आहिस्ता जिज्ञासु जब कमाल तक पहुंच जाता है, खुद ही जाग पड़ता है। जो उपदेशक पहले ही शिष्य हो 'अहं ब्रह्मास्मि' का उपदेश दे देते हैं, आप भी और शिष्य भी दोनों नर्क के गामी होते हैं। भोगों में लीन होकर अपने आपका नाश कर लेते हैं। तुम जिस हालत में खड़े हो वहां की बात किया करो। बिना

साधना के ऐसी स्थिति प्राप्त नहीं हो सकती। जबानी ब्रह्म बनना कोई मायने नहीं रखता। हर प्रकार के भोग पदार्थ मौज़ूद हों फिर चित्त उनकी तरफ न जाए, यह मामूली बात नहीं। कौड़ी-कौड़ी के वास्ते बुद्धि घड़ी-घड़ी में भरम रही है, उधर ब्रह्म बना फिरता है। गो वह प्राप्त है, मौज़ूद है, सब कुछ वही है, सर्व में वही है। अस्चर्ज संसार की लीला रचने वाले की है। सबमें रमा हुआ है, फिर न्यारे का न्यारा है। मानुष से लेकर चिड़ी, च्यूंटी तक, ब्रह्मा आदिक सब स्थावर जंगम में धरती, आकाश में, पवन, पानी, अग्नि में, सबमें भरपूर वह पूर्ण परमेश्वर है। आप ही नाथ, आप ही दास है। इस बिस्माद ज्ञान का विचार भी आप ही करता है। जिसने अध्यात्म तत् ज्ञान जान लिया है, सब में तू, मैं-मैं एक ही है। वे कोई विरले ही आत्म सुख में रमन करने वाले, इच्छाचारी हुआ करते हैं। उनके वास्ते कोई भेद-भाव नहीं। संसार सारा ही ब्रह्म का रूप है। उस परम तत्त्व की खोज ही संसार में महान कर्तव्य है। जिस तत् के जानने के बाद फिर कुछ जानना बाकी नहीं रहता, चुप हो जाता है। यह सिलसिला बातों और मिसालों से हल होने वाला नहीं। अमली जीवन बनाओ। अगर पानी में से मक्खन निकलने लगता तो फिर ख़ुश्क खाने की किसी को क्या ज़रूरत है?

प्रेमी:- महाराज जी! यह अमल का ज़िक्र जब आप फरमाते हैं, तब आपकी अमली ज़िंदगी को देखकर कुछ बोला नहीं जाता।

श्री महाराज जी:- प्रेमी! जो तुमने समझा है उसमें दृढ़ होने की कोशिश करो। स्थिति, मंज़िल, ठौर, ठिकाना यह ही है। सिरफ बेअमल होने के कारण अशांति में रहते हो। तुम किसी को खड़ा होने नहीं देते। अपने जैसा अक्लमंद किसी को नहीं मानते। बुद्धिमत्ता यह ही है, जो बूझा है, उसे सूझा जाये। तू कर्ता भाव में दृढ़ होना कोई आसान है? जो दृढ़ हुए उनकी हालत वे आप ही जानते हैं। सूली पर चढ़ कर भी या तत्ते तवों पर बैठे हुए कह रहे हैं:

तेरा भाना मीठा लागे, नाम पदारथ नानक मांगे।

वहां किसी बात की कमी थी। चाहते तो पल भर में धरती ऊपर नीचे कर देते, मगर नहीं। आज्ञा पालन करना ही फ़कीर का धर्म है। यह स्थिति 'अहम् ब्रह्म अस्मि' वालों की है। सुख-दुःख उसकी आज्ञा में मिलता हुआ देख रहे हैं। जहां तुमको मुख़ालिफ़ (विरुद्ध) हवा लग जाये तो हज़ार दवायें करने के वास्ते दौड़ते हो। इस तरह तर्क बुद्धि के अंदर चैन नहीं आ सकता। अभी तू अनपढ़ है तो यह हाल है। शास्त्र पढ़ा हुआ होता तो न जाने फिर क्या होता?

प्रेमी अमीर चंद व श्री महाराज जी के इस संवाद को प्रेमियों ने बहुत पसंद किया। यह काफी देर रात को चलता रहा। प्रेमी अमीर चंद जब चला गया तो एक प्रेमी ने कहा:- ''महाराज जी! आपने ही अमीर चंद को चुप करवाया है। वर्ना वह तो किसी साधु महात्मा को खड़ा होने नहीं देता। यह हमेशा ही उल्टे चलते हैं। ईश्वरवादी आए तो मूर्ति पूजा को सिद्ध करेंगे, मूर्ति पूजा वाले आयें तो कोई और रंग खड़ा कर देते हैं।''

इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! हर एक जीव अपने-अपने रंग में चला जा रहा है। बिना अमल के इल्म कुछ मायने नहीं रखता। अमली जीवन वालों की ही उपमा होती आई

है, चाहे पढ़े हों या अनपढ़। ऐसे जबानी ब्रह्मवादी बनने वाले आख़िर ख़राब होते हैं। अमीर चंद अंदर से बड़ा समझदार है, खाली उसका स्वभाव उसे मजबूर करता रहता है।''

प्रेमी किशोरी लाल, चेतराम, हरबंस लाल, दयाल चंद, धर्मचंद, कुन्दन लाल वग़ैरह प्रेमियों ने चरणों में जगह पाने के लिए प्रार्थना की:- ''महाराज जी! हम पर कृपा करें और सत्मार्ग पर लगावें।'' श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमियों! फ़कीर इसी वास्ते जगह-ब-जगह फिर रहे हैं। कोई सत्मार्ग पर चलने वाला बने तो सही। अभी कुछ दिन और सत्संग सुनो, अच्छी तरह विचार कर लो। गुरु और शिष्य सम्बन्ध कोई मामूली नहीं है। आगे तुमने कई जगह दिल दे रखा है। जो आया उसी के आगे प्रार्थना शुरू कर दी, पहले अच्छी तरह ठोक बजा कर देख लो। इस तरह की फिरने वाली बुद्धि अच्छी नहीं होती-

गुरु धोबी शिष्य कापड़ा, साबुन सरजनहार।
सुरत शिला पर धोइये, निकसे रंग अपार॥

गुप्त वस्तु को प्रगट करने के वास्ते ही गुरु शरण में जिज्ञासु को जाना पड़ता है। पूरे गुरु के मिलाप का नतीजा यह है कि फिर किसी के पास जाने के ज़रूरत नहीं रहती। जब-तक मन में संशय है कि जो युक्ति किसी से प्राप्त हुई है ठीक भी है या नहीं, यह संशय किसी को कुछ करने नहीं देता। वैसे अपने श्रद्धाभाव से लगे रहना और बात है। योग की विद्या को हासिल करने के वास्ते बड़ी विशाल बुद्धि की ज़रूरत है। बिना गुरु के न साधना मिलती है और न बग़ैर साधना के धीरज आता है। बल्कि अनेक शरीरों को धारण करके जीव भ्रम में ही यात्रा को ख़त्म कर देता है। संसार में सबसे बड़ा मित्र गुरु ही है जो शिष्य से किसी स्वार्थ की कामना न रखते हुए हर समय शिष्य की आत्मिक उन्नति का चाहतक होता है और जिज्ञासु को निष्काम भाव धारण करने की तलकीन (प्रेरणा) करता रहता है। संसार में जो भी शरीरधारी आया है अपनी कमी को पूरा करने के यत्न में लगा है। लेकिन बावज़ूद यत्न-प्रयत्न के यह कमी पूरी नहीं होती। गुरु ही इस कमी को पूरा करने के साधन बतलाते हैं। कोई तो इस कमी को शीघ्र ही पूरा कर लेते हैं, कोई सारा जीवन लगा देने पर भी इसे पूरा नहीं कर सकते। यह सब अपने सत् पुरुषार्थ पर मुनहसर (निर्भर) है। पहले शिष्य को चाहिये तन, मन, धन सब गुरु के अर्पण कर देवे। अपना कुछ भी न जानते हुए जीवन निर्वाह करते हुए लोक सेवा में हर तरह से तन, मन, धन को लगाये रखे। लेकिन जो सही गुरु हैं वह शिष्य का कुछ न लेते हुए उसे पर-उपकार में अर्पण करने की तलकीन (प्रेरणा) करते हैं। ऐसे गुरु संसार में मिलने मुश्किल हैं। गो शिष्य होना भी कठिन है क्योंकि अदृष्ट वस्तु से मेल करना है, अधिक श्रद्धा और विश्वास की ज़रूरत है। शिष्य को चाहिए कि गुरु दरबार में हाज़िर होकर पहले अपने मन के संशयों को दूर करे, फिर योग साधना के लिए प्रार्थना करे। यह सस्ता सौदा नहीं कि बुला-बुला कर उपदेश दे दिया जावे। भले ही कोई शिष्य बार-बार प्रार्थना करे, मगर सत्गुरु शिष्य की श्रद्धा को देखते हैं, तब जाकर कृपा करते हैं। कलयुगी जीवों के दिल मजबूत नहीं होते इस वास्ते घरों में आकर चेताना पड़ गया है। इनको तुम लोगों ने क्या देना है? यह फ़कीर किसी अपनी

ग़र्ज़ के वास्ते तुम्हारे दरवाजों पर नहीं आए बल्कि इसलिए कि शायद कोई पारखू जीव मिल जाये। आत्म आनन्द में रते पुरुष इस तरह कब अपनी जगह से हिलते हैं? लेकिन साहब का हुक्म ज़बरदस्त है। वेद ग्रन्थों का सार निकाल कर रख रहे हैं, फिर भी विश्वास न आए तो तुम्हारी किस्मत।''

सत्संग के बाद एक दिन एक प्रेमी ने मूर्ति पूजा के मुतालिक पूछा। यह प्रश्न व उत्तर रहनुमाए-मारफ़त (गुरुदेव ने कहा) पुस्तक में छप चुके हैं। इसलिए उन्हें यहां नहीं दिया जा रहा।

इसके बाद सत्पुरुष ने फरमाया:- ''प्रेमी! सतपुरुषों के ज़ाहरी चिन्ह धारण कर लेने से सत्पुरुष नहीं बन जाता। उनकी सिख्या (शिक्षा) धारण करने से ही कल्याण होता है। महापुरुष समय-समय के अनुसार नई रचना बना लिया करते हैं। गाना-बजाना यह कर्ण इन्द्रिय का विषय है। हर एक शरीरधारी के अंतर विखे लगा हुआ है। जो उसे सुनने का यत्न करता है वह ही ज्ञान ध्यान के सार को प्राप्त कर सकता है। प्रभु कीर्तन, ढोलकी-बाजों से नहीं होता। यह तो दो-चार घंटे का मेला है। थकावट पैदा करता है। इससे आनन्द अखंड नहीं रहता है। अंतरविखे जो नाद हो रहा है, जब-तक बुद्धि उसमें लीन नहीं होती जन्म-मरण का तांता नहीं टूटता। यत्न करते-करते जब बुद्धि त्रिकुटी, मस्तक में स्थित होकर नाद स्वरूप परमेश्वर का बोध करती है तब जाकर उसका चंचलपना ख़त्म होता है और काल के भय से परे होकर निर्भय अवस्था को प्राप्त हो जाती है। फिर गुरु महिमा का पता लगता है। सत्पुरुष साधारण जीवों के वास्ते छोटे-छोटे साधन बाज़ औकात रुचि बढ़ाने के वास्ते शुरु करते आए हैं। यह नहीं कि सारी उम्र अ, आ ही जिज्ञासु पढ़ता रहे, आगे पढ़ने का यत्न भी न करे। वेद, ग्रन्थ, उपनिषद्, शास्त्र वग़ैरह किस वास्ते उन्होंने रचे हैं? उनका मकसद यह है कि अच्छी तरह विचारों में प्रवीण होकर सही तरीके को अख़्तियार (धारण) करे। अब तुम ही बताओ, क्या करना चाहते हो?

प्रेमी कहने लगे:- ''महाराज जी! आप जिस मार्ग पर डालेंगे उस पर अब चलेंगे। मगर आई गंगा को कैसे छोड़ सकते हैं? नारायण खुद कृपा करते आए हैं।''

प्रेमियों और माताओं ने फिर उपदेश के वास्ते अर्ज़ की और यह भी अर्ज़ की कि दो-तीन मातायें बड़ा ही सत्मार्ग में प्रेम रखती हैं। सत्पुरुष स्त्रियों को बहुत कम उपदेश दिया करते थे। फरमाया:- ''स्त्रियों की बुद्धि आमतौर पर चंचल देखी गई है और श्रद्धा प्रेम होते हुए भी शारीरिक विकार अक्सर अभ्यास में बाधक हो जाया करते हैं। तुम्हारे विचारों को सुनकर तुम्हारा यह यत्न त्रुटि वाला नज़र आ रहा है। उल्टे मार्ग पर कोई लगा गया है। तुम्हारे श्रद्धा, विश्वास और पुरुषार्थ में कमी नहीं है। यत्न दुरुस्त होने पर और आगे बढ़ सकते हो। इन्होंने आगे किसी स्त्री को इस तरह उपदेश नहीं दिया। अच्छा, तुम सब घरवालों के साथ सुबह आ जाना।'' आज्ञा मिल जाने पर सब खुशी-खुशी नमस्कार करके चले गए।

उनके जाने के बाद श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''प्रेमी! यह कोई स्वांग न बना डालें।'' प्रेमी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! क्या स्वांग बना सकती हैं? बहन विद्या और रुकमनी दोनों सुशील और समझदार हैं। आसन वग़ैरा की दृढ़ता भी बड़ी है और विचार भी बड़े शुद्ध हैं। मर्दों से

ज़्यादा उत्साह और लग्न उनके अंदर है। सत्संग का बड़ा अच्छा प्रोग्राम बनाया हुआ है। आगे आप मालिक हैं।''

श्री महाराज जी ने फिर फरमाया:- ''इन स्त्रियों के अंदर हठ बड़ा होता है। जिस बात को पकड़ लें, छोड़ती नहीं। श्रद्धा, विश्वास की भी कमी नहीं होती। उनकी साधना भी काफी नज़र आ रही है। मगर बिगड़ते ही देर नहीं लगती। यह ही इनमें कमी होती है। इस वास्ते इन्हें ज़्यादा नज़दीक नहीं आने दिया जाता। गो इनके अन्दर और पाखंडवाद नहीं, ज़रा अभ्यास का ज़्यादा शौक रखती हैं। उल्टे रास्ते पर पड़ी हैं, शायद ठीक चल पड़ें।''

इस जगह निवास के दौरान एक दिन प्रेमी अमीर चंद के घर से चाय लाकर सेवन करवाई गई। चाय पीने के चार घंटे बाद जब लंगर पाकर भक्त बनारसी दास जी वापिस आए तो श्री महाराज जी की तबीयत बड़ी बेचैन पाई। इतने में आपने फरमाया:- प्रेमी! जिधर जाते हो वहां के ही हो जाते हो। पानी लाकर पहले उस जगह को साफ करो। जब जगह की तरफ देखा गया तो कै का ढेर लगा हुआ था। पूछा:- ''महाराज जी! यह किस तरह आई?'' फरमाने लगे:- ''कुछ समझ नहीं आई।'' फिर पूछा:- ''चाय और बना कर लाई जावे।'' फरमाने लगे:- ''अंदर घबराहट सी है।'' भक्त जी उठकर अंदर गए और कमरे से एक अनार ले आए। उसके दाने निकाल कर देने लगे। कुछ अफाका (लाभ) हुआ। एक आध अनार और दिये जाने पर तबीयत ठीक हो गई।

इसी दौरान चौधरी हरजी राम जी ने मलोट मंडी से सेवा में हाज़िर हो कर प्रार्थना की:- महाराज जी! इस जगह की जनता को सत् उपदेश द्वारा निहाल फरमावें। श्री महाराज जी ने फरमाया:- रवानगी पर दो-चार दिन दिये जावेंगे।

अम्बाला शहर के पास कुछ फ़ासले पर गवर्नमैंट ने बलदेव नगर कैम्प कायम किया हुआ था, जिसमें ज़िला रावलपिंडी के रिफ़्यूजी, गंगोठियां के आसपास के इलाके के ब्राह्मण भी आबाद थे। वहां से प्रेमी लेखराज साही वाले पत्र द्वारा कई दफ़ा उस जगह तशरीफ लाकर ब्राह्मण बिरादरी को, जो उजड़कर उस जगह आबाद हुई थी, तसल्ली देने की प्रार्थना कर रहे थे। शायद आपके सत् उपदेश अब उन पर असर करें और वह उन्हें सुन कर लाभ उठावें। बार-बार उनके बारे में प्रार्थना-पत्र आने पर महाराज जी ने उन्हें तसल्ली का पत्र लिखा और प्रेमी लेख राज को यह भी तहरीर (लिख) कर दिया कि एकांत निवास के लिए जगह का बंदोबस्त भी करे। 10 फरवरी, 1949 को प्रेमी लेख राज एक दूसरे प्रेमी के साथ चरणों में हाज़िर हुए। पाकिस्तान बनने के बाद पहली दफ़ा ही उस इलाके के ब्राह्मणों में से किसी को यह पहला मौका श्री महाराज के दर्शनों का मिला। यह दोनों अबोहर के प्रेमियों की श्रद्धा, सत्संगों में हाज़िरी और सत्संग का लाभ उठाते देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उन पर गहरा असर पड़ा। दोनों श्री महाराज जी के चरणों में अम्बाला तशरीफ़ ले जाकर इन्हें निहाल करने की प्रार्थना करते रहे। श्री महाराज ने फरमाया:- ''प्रेमी! फिलहाल तुम जाओ, प्रोग्राम के बारे में फिर बता दिया जावेगा।'' प्रेमी लेखराज और उसका साथ प्रणाम करके विदा हुए।

151. मलोटमंडी में निवास

10 मार्च, 1949 को अबोहर से रवानगी का प्रोग्राम निश्चित किया गया। चौधरी हरजी राम जी मलोट मंडी से चरणों में हाज़िर हो गए और शाम की गाड़ी से श्री महाराज को साथ मलोट मंडी ले गए। चौधरी जी ने श्री महाराज जी के निवास का प्रबन्ध अपने कारखाने के एक चौबारे में किया हुआ था। कारखाना बंद था। चूंकि जगह एकांत ही थी इसलिए आपने उसमें आसन लगाया। सत्संग का समय शाम के साढ़े सात बजे से साढ़े आठ बजे तक रखा गया। चौधरी जी ने सत् के मुतलाशियों (जिज्ञासु) को सूचित कर दिया ताकि वे सत् उपदेशों का लाभ उठावें।

निश्चित समय पर महामंत्र व मंगलाचरण उच्चारण करके सत्संग का आरम्भ होता। उसके बाद एक प्रेमी वाणी पढ़ता और उसके बाद सत् उपदेश अमृत की वर्षा सत्पुरुष करते। प्रेमी पंडित सीता राम जी व ध्वजा राम जी, जो बड़े समझदार थे और विद्वान भी थे, सत्पुरुष के उपदेश वेद के अनुसार पाकर बड़े प्रसन्न हुए। सत्संग समाप्ति पर काफी देर प्रेमी विचार करते रहे। अबोहर से भी प्रेमी आए थे। वे आज्ञा लेकर दस बजे की गाड़ी से वापिस चले गए। वहां के प्रेमियों को भी आराम करने की आज्ञा श्री महाराज जी ने दी। इस जगह भी हमेशा की तरह रात को तीन बजे के करीब बाहर तशरीफ़ ले जाते। इस जगह दिन को तो काफी गर्मी होती मगर रात को बहुत ठंडक होती। श्री महाराज जी रात को भक्त जी को साथ ले गए। एक मील जाने के बाद आप गड़वी लेकर दूर चले गए और भक्त जी एक झोंपड़ी सी में बैठ गए। सुबह जब वापिस आए तो रास्ते में भक्त जी को फरमाया:– ''प्रेमी! इधर ज़्यादा ठहरने की कोशिश न करना। अमीर लोग हैं मगर इस मार्ग की तरफ कम रग़बत (लगाव) रखते हैं। अमीरों को इस तरफ आने की ज़रूरत नहीं होती। न मालूम चौधरी को किस तरह इस तरफ प्रेम हो गया है। इतना धन, सम्पत्ति होने पर भी इतना निर्मान चित्त है। समाजी ख़्याल ने सबको चतुर बना दिया है। अच्छी तरह देख-भाल कर सेवा करते हैं।--
स्थान पर पहुंच कर स्नान करने के बाद आसन पर बैठ कर महंत रतन दास को जो पत्र तहरीर (लिखवाया) फरमाया उसे नीचे दर्ज़ किया जा रहा है। आशीर्वाद के बाद आपने तहरीर फरमाया:–
''प्रेमी! तुम्हारे पत्र पर अच्छी तरह विचार किया गया है। गुप्त राज़ के साधने वाला किसी दुःख रोग में मुबतला (ग्रस्त) नहीं होता। सर्वकाल जीत रहती है। और बुद्धि, मन, पवन, शब्द की साधना से सब वृत्ति दुरुस्त हो जाती है और निन्द्रा वग़ैरा का नाश हो जाता है। इस गुप्त ज्ञान के बग़ैर कभी भी शरीर की व्याधि, तृष्णा आदि विकार जीव को नहीं छोड़ते। इस योग की धारणा से मन स्वतंत्र और निश्चल हो जाता है और आत्म रूपी अमृत को पान करता है। इसलिए तुमको बार-बार ताकीद (प्रेरणा) की गई है कि अपने कल्याण के वास्ते इस गुप्त मार्ग में स्थिर रहो। जब तुम दृढ़ भाव से चिन्तन करोगे सब दुःख दूर हो जावेंगे और आत्म तत्त में स्थिति प्राप्त होगी। वह ही जगह सब संसार का मरकज़ है। जाप में 'तू करता' यह भावना दृढ़ करते रहो। उस दृढ़ता से मन, कर्म के अभिमान को छोड़ देता है और सहज ही ब्रह्म शब्द में जागृति प्राप्त हो जाती है। दूसरा निश्चय

यह है कि शरीर को आत्मा के आधार पर समझें और तीन काल इसको नाश रूप और मिथ्या समझें। आत्मा को सर्वकाल अविनाशी और आधार जानें। इस धारणा की दृढ़ता से मन हर वक्त वैराग्यवान रहता है और इन्द्रियों के भोगों में नहीं फंसता और ईश्वर में ज़बरदस्त विश्वास और प्रेम प्रगट होता है और सहज ही मन आत्म तत्त्व को अनुभव कर लेता है और निहचल हो जाता है। तीसरा निश्चय यह ग्रहण करें कि शरीर वास्तव में जड़ और नाश रूप है, उसके भोग भी नाश रूप हैं और सर्वकाल भय के देने वाले हैं। इस वास्ते मन में परम पुरुषार्थ प्रगट करें। इस मिथ्या शरीर से निकल कर आत्मा, जो सर्व प्रकाश और नित्य है, उसको प्राप्त इस जन्म में ही होना है, दिन-रात यही लगन रहे और गुरमुख रूपी जाप को दृढ़ करते रहो। जब मन इस भावना का खूब आदी हो जावेगा, दुनिया में कोई ऐसी चीज़ नहीं जो तुम्हारे मन को डोला सके, और चौथा निश्चय यह है कि हर जीव की यथा योग्य सेवा करनी अपना परम धर्म समझें। इस भावना का यह फल है कि हर्ष और गुस्सा का जाल नाश हो जाता है और बुद्धि सम दृष्टि को प्राप्त होती है। यानि आत्मा का स्वरूप हो जाती है। उठते-बैठते शब्द की अंतरगति और बाह्य गति को सावधानता से साधे और पूर्ण ज्ञान को प्राप्त होवे। इसमें कुदरत का करिश्मा छुपा हुआ है। लाखों में से कोई महात्मा इस युक्ति को हासिल करके परम गति को प्राप्त हुए। सब योग का राज़ यह ही है। हाकार, साकार गति को गुरुमंत्र से साधे, ब्रह्म प्रकाश को हासिल करे। जीवन मुक्त पद को प्राप्त होवे। ईश्वर ही सत्मार्ग अनुराग की दृढ़ता बख़्शें।'' इसके बाद निम्नलिखित प्रश्न पूछा गया-

प्रश्न - महाराज जी, स्वर के भेद को कैसे जाना जा सकता है?

उत्तर - कुछ महापुरुषों ने स्वरों के भेद को बयान किया हुआ है और बतलाया हुआ है कि कौन सी स्वर चलते समय कौन सा काम करना चाहिए और कौन सा नहीं करना चाहिए? इस मकसद के लिए स्वरों में ध्यान रखना पड़ता है। आया अब सूरज स्वर चल रहा है या चंद्र स्वर चल रहा है, बुद्धि को इस तरफ लगाए रखना पड़ता है। इस वक्त कौन सा काम करना लाभदायक है और कौन सा नहीं? इस वक्त इस काम के करने से सिद्धी प्राप्त होगी। फिर फरमाया:- ''प्रेमी! इस झगड़े में अभ्यासी जिज्ञासु को नहीं पड़ना चाहिये। बल्कि उसे चाहिए कि होना न होना ईश्वर आज्ञा में देखे। प्रभु प्रेमी से कोई उल्टा काम होता ही नही। समय के अनुसार ही विचार उठा करते हैं। सुषुमना के भेद को जानने वाले की कुदरती तौर पर सब भोगमयी वासनाएं ख़त्म हो जाती हैं। मन को अशांति में डालने वाले भोग पदार्थ उनके नज़दीक नहीं आते। वैसे फ़कीर हर समय निर्धन ही रहते हैं। लोक भलाई के वास्ते जब इच्छा हो जाए तब सब सामग्री एकत्र होने के सम्बन्ध आप बन जाते हैं। निष्काम भाव से सब कारज करवाकर उसी समय ख़त्म कर देते हैं। कई संसार में अधिक सुख प्राप्त करने के वास्ते इस स्वर भेद के साथ प्रीत बनाए रखते हैं। किसी समय कोई दु:ख न आवे, लेकिन उनको आत्म शांति प्राप्त नहीं हो सकती। आत्म शक्ति जागृत करने वाले को निर्वाद यानि स्वरों का सब ज्ञान कुदरती हो जाया करता है। तुम इस पचड़े में पड़कर क्या लेना चाहते हो? जो बतलाया गया है सार योग ही जानो, सिर्फ़ पुरुषार्थ की ज़रूरत है।''

कुछ प्रेमी व माताएं अबोहर से आ गए। दर्शन करके कुछ देर बैठकर कस्बा में गए। वक्त पर सत्संग हुआ। महामंत्र व मंगलाचरण से सत्संग शुरू हुआ, फिर वाणी पढ़ी गई और फिर सत्पुरुष ने सत्उपदेशों द्वारा निहाल किया। उसके बाद आरती उच्चारण करने के बाद सत्संग समाप्त हुआ। सत्संग की समाप्ति पर प्रेमी ध्वजा राम ने अर्ज़ की:- महाराज जी! ऐसा सत्संग आजकल नहीं मिल रहा इसी कारण लोगों की रुचि भोगवाद की तरफ बहुत बढ़ी हुई है। हमारे ऋषि-मुनि इसी तरह सादा वचनों द्वारा समझाया करते थे। धर्म मार्ग में बार-बार दृढ़ता करवाई जाती थी। संसार की असारता का अच्छी तरह निर्णय करके समझाया जाता था। आपने तो पूछने की कोई ज़रूरत ही नहीं छोड़ी। हमने भी काफी शास्त्र, उपनिषदों, वेदों की छानबीन की हुई है। आपके वचन सुनकर ऐसा अहसास होता है कि अमल की कमी है। अब ज़्यादा से ज़्यादा अमल की ज़रूरत है। कथनी ज्ञान से कोई फ़ायदा नहीं। कृपा करके शरण में जगह बख़्शें तब ही हमारा पार उतारा होगा।

पंडित सीता राम जी भी बहुत बुद्धिमान थे। उन्होंने अर्ज़ की:- महाराज जी! आप हमारे वास्ते पधारे हैं। हम पढ़े-लिखे मूर्खों को पार लंघाने के वास्ते कृपा की है। वाकई हमने शास्त्रों को रोज़गार का ज़रिया बना रखा है, कैसे आत्म शांति प्राप्त कर सकते हैं? खूब खीरें, पूड़े, कड़ाह बग़ैरा इन शास्त्रों की कृपा से बिना हाथ-पांव हिलाए खा-खा कर शरीर बढ़ा लिया है। कितनी अन्ध बुद्धि है। महाराज जी, जो ज्ञान अमृत आप पिला रहे हैं सब ग्रन्थों, शास्त्रों में आया हुआ है। इस तरफ हमने कभी ध्यान ही नहीं दिया। खीर-पूड़े खाकर आशीर्वाद देने में उम्र गुज़ार दी है। हमारे ऋषियों-मुनियों ने उपकार भी बहुत किया है। मगर हमने उनके उपकार से जो फ़ायदा हासिल करना था वह नहीं किया, बल्कि स्वार्थ पूरा करने में लगे रहते हैं। बहुत किसी पर उपकार करना हो तो शनिचर और मंगल ग्रह लगा दिये जिससे संसारी जल्दी काबू आ जाते हैं। महाराज जी, इस भूत विद्या से छुड़ा दें।

श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''अपनी ग़ल्तियों को समझो और सीधे होकर चलो। लोगों को गुमराह न करो। न आप भुलावे में रहो और न किसी को रखो। ठीक समझाने में तुमको कोई कमी नहीं आ सकती और तुम्हारी बुद्धि पवित्र होती चली जावेगी। संसारी तो हर तरह की सेवा करने के वास्ते तैयार हैं। ब्राह्मणों ने खुद ही त्रट्टी-चौड़ (सत्यानाश) कर रखी है, केवल पेट भरने का ज़रिया बना रखा है। सुबह का भूला हुआ रात को घर आ जाए तो भूला हुआ उन्हें नहीं समझा जाता। अब भी कुछ नहीं गया। जजमानों को अच्छी तरह उपदेश देकर फिर वह जो प्रेम भाव से देवें उसमें सन्तोष रखें। पहले ही उनसे चुकता न कर लिया करो कि इतनी रकम लेनी है तब तुम्हारा काम करेंगे। सब कुछ जजमान पर छोड़ दो। अपनी तरफ से निष्काम रूप में सेवा करने का भाव रखो। तुम पढ़े-लिखों की इनको ज़रूरत है। तुम्हारे हाथ में अब भी सब कुछ है। तुम अपना भी भला और दूसरों का भी भला कर सकते हो। लोहा, लोहे को काटता है। ब्राह्मण ही ब्राह्मणों का और सबका सुधार करते आए हैं। मगर ज़्यादातर जनता को उन्होंने ही खराब किया है क्योंकि यह

ही ज़्यादातर शास्त्रों के ज्ञाता थे। जिधर किसी को लगाया बेचारी भोली-भाली जनता उधर लग गई। कबीर, नानक, दादू और पलटू जैसे संतों ने ब्राह्मणों के पाखंड का पोल बहुत सा खोला और तोड़ा और बहुत सारे पिछड़े हुए जीवों के लिए धर्म मार्ग में आने के वास्ते आसानी कर दी है। कुछ अंग्रेजों ने मेहरबानी की है। ऊँच-नीच के भेद को सामान्य कर दिया है। अब तो कोई-कोई ही आपके दांव में आते हैं, लेकिन प्रभाव ब्राह्मण राज्य का बाज़ जगह अब भी बहुत है। हलवा मांडा अब भी चल रहा है। इस तरह की कमाई देश को गिरावट की तरफ ही ले जाती है। जिस कदर ज्ञान, विचार उच्च प्रकार का देश में मौज़ूद है, ऐसे ही रहनी वाले हों तो कितनी देश धर्म की महानता हो। अब सच्चे-झूठे का पता ही नहीं लगता। सब ही ब्रह्म ज्ञानी बने हुए हैं। जिसने चार श्लोक पढ़ लिये वह ही अंधों में काना राजा हो गया। भारत की उच्चता, त्याग और धर्म वेद विद्या ने ही कर रखी है। विवेकानन्द और रामतीर्थ ने बाहर दूसरे देशों में जाकर अमली ज़िंदगी, पवित्र जीवन द्वारा चेताया है। वैसे तो दूसरे देशों में रहने वालों को पता ही नहीं था कि हिन्दुस्तान में कैसे लोग बसते हैं? अंग्रेजों ने ज़ाहिल ही बना रखा था। अब होश आई है, कहने लगे हैं कि ईसा भी इस हिमालय में रहकर आया था। इस जगह से पूर्ण होकर गया था। हिन्द की धरती ही ऐसी है, जिस जगह समय पाकर कोई न कोई सत्पुरुष आ ही जाता है। जो आता है, चोटी का होता है। इस मिट्टी से लाल निकलते ही रहते हैं और आईंदा भी निकलते ही रहेंगे। खाली बुज़ुर्गों का नाम ले-ले कर खुश होना नहीं चाहिये, कुछ खुद भी पुरुषार्थ करना चाहिए।''

इस तरह देर तक विचार होता रहा। कई प्रेमियों ने चरणों में बैठकर और सत् विचार सुनकर बड़ी प्रसन्नता पाई। फिर श्री महाराज जी ने सबको आज्ञा दी कि जाकर आराम करो। जब भी मौका मिले बेशक आकर विचार करो, झिझको नहीं। अभी दो-चार रोज़ इसी जगह हैं।

सब प्रेमी आज्ञा पाकर वापिस गए। अबोहर के प्रेमी रात को गाड़ी से वापिस चले गए। दरअसल अबोहर निवासी प्रेमी रोज़ाना सत्संग में शामिल होते और रात को गाड़ी से वापिस चले जाते।

152. बलदेव नगर कैम्प अम्बाला में सत् प्रचार

18 मार्च, 1949 सत्संग समाप्ति के बाद जब अबोहर निवासी प्रेमी चले गए और मलोट मंडी निवासी प्रेमियों को भी आराम करने की आज्ञा हो गई तो आपने फरमाया:- ''प्रेमी! ख़्याल रखना, शायद अम्बाला कैम्प से कोई प्रेमी आ जाए।'' अभी लेटे थोड़ा अरसा ही हुआ था कि श्री महाराज जी ने आवाज़ दी:-'' बनारसी! उठो, चोर आ गया है।'' उस वक्त रात के 12 बजे थे। उठकर दरवाजा खोला, प्रेमी लेख राज ने 'ओ३म् ब्रह्म सत्य' बाहर से की। बाहर जाकर चौकीदार से दरवाज़ा खुलवाया गया और बख़्शी जी को अंदर लाया गया। चरणों में हाज़िर होकर उसने प्रणाम किया और अर्ज़ की:- संगत ने साथ ले चलने के लिए चरणों में भेजा है। श्री महाराज जी ने

फरमाया:- प्रेमी! पहले कुछ खा लो, फिर आराम करो। सुबह विचार किया जावेगा। इस जगह इस वक्त तो अन्न-पानी का कोई प्रबन्ध नहीं था, संतरे माल्टे फल जो रखे हुए थे वह निकाल करके आगे रखे। श्री महाराज जी खुद उन पर से छिलके उतारकर प्रेमी को देने लगे और कहा:- "प्रेमी थक गया है। इस आधी रात के समय तुम्हारे लिए और तो कुछ यहां है नहीं, यह फल ही हैं।" एक बजे तक विचार होते रहे फिर सोने की आज्ञा हुई। आप उठकर बाहर तशरीफ़ ले गये और सुबह आठ बजे वापिस आए। स्नान करके आसन पर पधारे। फिर प्रेमी लेखराज ने प्रार्थना की:- कैम्प बलदेव नगर में चरण डालने की ज़रूर कृपा करें।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- "प्रेमी! ब्राह्मण बिरादरी से यह अच्छी तरह वाकिफ़ हैं। उन लोगों की तरफ से बार-बार तुम खुद ही पत्रिकाएं लिख-लिखवा रहे हो। वहां जाकर फ़ायदा क्या होगा? जिस इलाके के वह लोग हैं उस इलाके की इनकी भी पैदायश है। उन लोगों का स्वभाव यह अच्छी तरह जानते हैं। इन फ़कीरों के वचनों पर वह विश्वास करने वाले नहीं हैं। ख़्वाह-म-ख़्वाह तुम बार-बार कहते हो।"

प्रेमी लेखराज यह सुनकर उदास होकर कहने लगा:- महाराज जी! दास अच्छी तरह संगत से कह आया है, और जगह का बंदोबस्त भी कर आया है। सब संगत इतवार के रोज़ आपकी इंतज़ार में स्टेशन पर मौज़ूद होगी। अगर आप तशरीफ़ न ले गये सब मेरे पर नाराज़ होंगे।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- "प्रेमी! तुम अपनी मर्ज़ी से ही प्रोग्राम बनाते फिरते हो।" प्रेमी ने फिर चौधरी हरजी राम जी से सिफारिश करवाई और फिर तशरीफ़ ले चलने की प्रार्थना की। आख़िर इसके निश्चय और प्रेम को देखकर फरमाया- अच्छा प्रेमी! तेरे प्रेम को ठुकराया नहीं जा सकता, तेरा दोबारा आना भी मायने रखता है। जहां मर्ज़ी हो ले चल कर बिठा दे।"

21 मार्च, 1949 को रवानगी का प्रोग्राम बनाया गया। मलोट मंडी निवासियों ने सुबह तीन बजे की गाड़ी में आपको सवार करवा दिया और 12 बजे के करीब गाड़ी अम्बाला पहुंची। प्रेमी आगे स्टेशन पर इंतज़ार कर रहे थे। जब गाड़ी स्टेशन पर पहुंची "ओ३म् ब्रह्म सत्यम्" का नारा लगाते हुए प्रेमियों ने श्री महाराज जी को गाड़ी से उतारा और चरणों में प्रणाम किया। आपको तांगे में बिठाकर बलदेव नगर कैम्प में ले गये। प्रेमियों ने एक बाग में तम्बू लगवाया हुआ था। वहां ले जाकर आपका आसन लगाया गया। उस समय प्रेमियों ने फूल बरसाये। अम्बाला निवासी व बलदेव नगर निवासी वहां पहुंच गए थे। सबने चरणों में प्रणाम किया।

चूंकि कैम्प में सब प्रेमी रावलपिंडी ज़िले के ही थे सबने अपनी-अपनी आपबीती बारी-बारी सुनाई। श्री महाराज जी ने सबकी हौंसला अफ़ज़ाई की और निम्नलिखित उपदेश दिया।

शरणार्थियों को उपदेश

प्रेमियों, जो हालात आप लोगों पर गुज़रे, राज गरदी इसी का नाम है। तुमको यह मुसीबत बहुत दु:खदाई मालूम हो रही है। अब भी इससे सबक सीखो और आपस में सलूक रखो। तुम्हारा

सलूक (प्रेम) हो जावे तो सब ठीक हो जावेगा। गवर्नमेंट ने तुम्हारे लिए बहुत कुछ बंदोबस्त किया है। उजड़े हुए लोगों को जिस तरह बिठा दिया है। सारा बोझ गवर्नमेंट पर मत डालो। कुछ अपना भी पुरुषार्थ करो, क्योंकि अब दूसरी गवर्नमेंट नहीं है, तुम्हारी गवर्नमेंट है जो सहायता कर रही है। उस इमदाद (मदद) को सही तरह बांट लो तो आपको बहुत सहारा मिल जावेगा। सारा देश ही उजड़ कर आ गया है। गवर्नमेंट ने काफी संभाल लिया है। ईश्वर ऐसे समय तुम सबको शांति दें।

दूसरा सत् उपदेश

इस समय के परिवर्तन को देखकर भी अगर होश न आए और सत् धर्म में विश्वास न बने तो फिर किस समय बनेगा। ईश्वर कृपा से सबको कहीं न कहीं ठिकाना मिल जावेगा। राज चक्कर ने चलकर क्या कुछ कर दिखाया है? आख़िरकार किसी चीज़ ने साथ नहीं दिया। सिर्फ़ अपने-अपने कर्म ही सबके सहायक हुए हैं। बंगलों, मकानों में आराम के दिन काट रहे थे- वह ही सरमाया (धन सम्पत्ति) और जायदाद कई लोगों के नाश का कारण बन गए। इस इंकलाब और परिवर्तन से अब सबको शिक्षा लेनी चाहिए, आपस में अब तो मिलकर बैठना सीखें। आयंदा (आगे के लिए) के वास्ते विचार करें। किसी किस्म का आपस में विरोध न रखें। अब नई जगह आये हो, आपस में मिलकर रहो। विचार करो कि सब कुछ सामान, जायदाद वग़ैरा छोड़ने पर कितना तुमको दु:ख हो रहा है। जब अंत समय इनको छोड़ना होगा तब कितना दु:ख होगा, इसका अहसास करें। रावलपिंडी ज़िले की ब्राह्मण जाति इस इलाके में कितनी गिरावट में जा रही थी। आचार, सत्, धर्म विश्वास में कितनी कमी हो गई थी। अब इस परिवर्तन से शायद प्रभु कृपा से तुम लोगों के अंदर कुछ सही जीवन के जज़्बात पैदा हो जावें, तो बड़ी प्रभु कृपा समझो। अब अपने व्यौहार की शुद्धि करें। ज़मीन उखाड़ने वालों की बुद्धि हमेशा ही मोटी होती है। सारे दिन बैलों के पीछे फिर-फिर कर बैल बुद्धि बना लेते हैं। मनुष्य जीवन में आकर पशुओं की तरह ही अंधकार में रहें और अंधकार में चले गए तो क्या लाभ हुआ? अब जहां कहीं भी किसी को ठिकाना मिले, प्रभु विश्वास रखते हुए प्रेम से रहो। प्रभु कृपा ही भाग्यशाली बना देगी। अपना आचरण शुद्ध बनाओ। प्रभु आज्ञा को मानो। जिन जगहों में कथा कीर्तन नहीं होते, अतिथि, अनाथ जीवों की सेवा का भाव नहीं, सिर्फ़ अपने पेट भरने के वास्ते ही लगे रहते हैं, वह जगहें समय आने पर उजाड़ हो जाती हैं। तुम लोग ब्राह्मण होकर भी अपने कर्म को बिल्कुल भूल गए थे। अब भी उसी तरह आपस में वैर-विरोध रखे हुए हो। ऐसे भ्रष्ट विचारों वाले जीवों को सन्तोष नहीं मिल सकता है। अब समां होश करने का है। गवर्नमेंट के सारी उम्र पुरोहित न बने रहो। कुछ पुरुषार्थ करके जीवन गुज़र के वास्ते विचार करो। ईश्वर आज्ञा को मानो। अगर मिलकर कोशिश करोगे गवर्नमेंट पर भी असर होगा और उसका नतीजा ज़रूर सफलता को देने वाला होगा। सब धरती प्रभु की साजी हुई है। जिधर-जिधर जिसके भाग (भाग्य) होंगे जगह मिल जावेगी। ईश्वर आज्ञा को मानते हुए अपना ठिकाना बनाओ और समय व्यतीत करो। माया का चक्कर ऐसे खेल खिलाया करता है। ईश्वर

सबको सत् धर्म अनुराग देवें ताकि इस अग्नि सरूप संसार से कुछ न कुछ ठंडक लेकर जावें। ईश्वर हर जगह जीव की सहायता करने वाले हैं, ऐसा दृढ़ विश्वास रखें। तुम लोगों ने क्या मुसीबत देखी है? अपने पुरातन अवतारों की तरफ देखें। रामचंद्र जी और सीता माता किस तरह जंगलों में मारे-मारे फिरे। पांडवों की ज़िंदगी का विचार करें। गुज़रे ज़माने में महाराणा प्रताप जैसे बहादुर, गुरु गोबिन्द सिंह, बन्दा बहादुर और बड़े-बड़े राजाओं, महाराजाओं ने कैसे मुसीबतें उठाईं और जिन्दगियाँ व्यतीत कीं? आराम न मिला। राजगरदी के समय बड़ी भारी मुसीबत का सामना करना पड़ता है। नेहरू, पटेल वग़ैरह कोई आराम की ज़िंदगी थोड़ी बसर कर रहे हैं। रात को आध घंटा भी नींद उनको मुश्किल से आती होगी। उन्होंने तो मुल्क के भले के वास्ते सोचा था। मगर मुकाबले में जो दुश्मन होता है वह हर तरह से नुकसान पहुंचाने की कोशिश करता है। राज आसानी से नहीं पलटा करते। लोहा और लहू से ही पलटा करते हैं। तुम्हारी कुर्बानियाँ खाली नहीं जावेंगी। आख़िर किसी ने बली तो चढ़ना ही था। बिहार, बंगाल, पंजाब, फ्रन्टियर, सिंध में जो कुछ हुआ है बे-तरीके हुआ है। बहादुरों की तरह आमने-सामने होकर नहीं लड़ सके। बच्चों, औरतों, मासूम लोगों को लाइल्मी (नासमझी) में ख़त्म कर देना बहादुरी नहीं। यह तो मूर्ख, मक्कारों का काम है। जब तमोगुणी हालात छा जाते हैं सबकी बुद्धियां भ्रष्ट हो जाया करती हैं। अब गुज़रे हुए हालात को भूल जाओ। उच्च आदर्श वाले लोगों के जीवन पर विचार करते हुए प्रभु आज्ञा से श्रेष्ठ आचारी भाव बनाना चाहिये। यह ही इस हड्डी चाम वाले शरीर का लाभ है। प्रभु तुम सबको नित ही कल्याणकारी बुद्धि बख़्शें। सबको ईश्वर का भरोसा प्राप्त होवे और धीरज से संकट के समय को व्यतीत कर सकें। सत्पुरुषों का आशीर्वाद नित ही अंग-संग जानें। ईश्वर सम्मति देवें।

सत् उपदेश समाप्त होने पर 'वैराग्य वाणी' का शब्द पढ़ा गया, फिर आरती और समता मंगल उच्चारण करने के बाद प्रशाद बांटा गया और सत्संग समाप्त हुआ।

तीसरा सत् उपदेश: जीव का स्वभाव

दीर्घ वासना ही जीव को भ्रम में डाले रखती है। जब इसकी वृत्ति अनेक तरह के रंगों में बार-बार जाती है तब कलह-कल्पना अपने आप पैदा होने लग जाती है। यह कल्पनायें ही जीव को अधीर बनाये रखती हैं। इनकी अपूर्णता ही चंचलता पैदा करती है। इस चंचलता को पूर्ण करने के वास्ते यह जीव ज्यों-ज्यों स्वार्थ बुद्धि को संसार की तरफ लगाता है त्यों-त्यों सत् स्वरूप से दूर होता जाता है। न तो नाम रूप संसार की तरफ इसकी दौड़ ख़त्म होती है, न इसका आवागमन का चक्कर टूटता है। जीव मन की तृप्ति के लिए बार-बार इन्द्रियों के ज़रिये यत्न करता है मगर भोगों को भोगने पर भी तृप्ति प्राप्त नहीं होती। कलह-कल्पना बढ़ जाती है जो इसे अधीर कर देती है, संतोष जाता रहता है। बड़े-बड़े दाने-बीने इन्हीं इन्द्रियों की वासना को पूर्ण करने की कोशिश करते-करते सार वस्तु से वंचित रह जाते हैं।

झूठी माया सब तजें, झीनी तजी न जाए।
मान बड़ाई ईर्खा, सबको गई है खाए॥

अगर सब कुछ त्याग भी दिया जाए तो भी मान-बड़ाई, ईर्खा अंतरविखे बनी रहेगी, क्योंकि जिस वस्तु के जानने के बाद फिर कोई विकार नहीं रहता ऐसी शुद्ध निर्विकल्प अवस्था प्राप्त नहीं होती। वासना में नित बंधा होने के कारण अनेक प्रकार के कर्मों को यह जीव करता रहता है, इसलिए छूट नहीं सकता बल्कि बंधन दर बंधन चलता जाता है। बिना सत् कर्मों के धारण करने से निर्भय अवस्था प्राप्त नहीं होती और न ही कल्याण प्राप्त होता है। इस असगाह माया भ्रम चक्कर से वह जीव ही छूट सकते हैं जो निर्मल प्रेम से प्रभु नाम के सिमरण में लग जाते हैं और सत् स्थिति को प्राप्त कर लेते हैं।

चौथा सत् उपदेश

इस नास्तिकवाद के अति प्रचण्ड होने से तमाम संसार के जीवों को इस समय अति अशांति में से गुज़रना पड़ रहा है। आम मानुष तमोगुणी वासना के ज़ेर-असर होकर नित विकराल कर्म करके अपने आपके घातक बनते चले जा रहे हैं। शरीर की बनावट सजावट में ज़्यादा से ज़्यादा बेहतरी समझ रहे हैं। शराब, मांस और विकारों का तो नित ही प्रोग्राम बना लिया है।

धर्म कर्म दोये छुप खलोते, कूड़ फिरे प्रधान वे लालो।

सत्पुरुष के फरमाये हुए वचन पूरे हो रहे हैं। स्त्री-पुरुष सबने ही अपना-आप नष्ट करने वाला धर्म इख्तियार (धारण) कर लिया है। शरीर की बनावट सजावट को ही जीवन का ध्येय मान रखा है। अंत:करण की पवित्रता को किनारे रख दिया है। अंत:करण को नाश करने वाले कर्मों को धारण करके अपने आपको अधिक संकट के सागर की तरफ ले जा रहे हैं। ऐसे भयानक काल में जबकि अपने निश्चय को (बुद्धि, मन को) छल, कपट, ईर्खा, बाद-मुबाद, राग-द्वेष के अंधकार में लगा रखा है तब कैसे सत्वाद की दृढ़ता प्राप्त हो सकती है? ऐसा होना अति दुर्गम और कठिन है। कहो कि कोई अवतार आकर इस समय रक्षा करेगा, ऐसा होना नामुमकिन है। अवतार भी अगर आया तो वह पहले दुष्टों का संहार करेगा। बाद में उन देवताओं की रक्षा होगी जो छल-कपट से रहित होकर विचर रहे होंगे। मगर जब आंधी और तूफान आया करता है, अच्छे-बुरे सब ही रगड़े जाया करते हैं। इस समय जीवों के कल्याण के वास्ते ईश्वर आज्ञा से जो विचार आए हैं तुम्हारे सामने रखे जा रहे हैं। बग़ैर सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग, सत् सिमरण के और कोई यत्न इस जीव के कल्याण के वास्ते दिखाई नहीं दे रहा। इन असूलों को अपनाते हुए जीव अपने जीवन कल्याण के वास्ते सही रक्षक बनें। बहुत कुक्कड़ (मुर्गे), बकरे मारकर खाने वालों का आज तक कुछ नहीं बना, तो आगे भी कुछ नहीं बन सकता। तुम लोग ब्राह्मण हो। ब्राह्मणों का कर्तव्य है, ख़ुद भी सदाचारी बनें और दूसरों के वास्ते भी आदर्श रूप बनें। गुरु ही कुलखने (कुलक्षण) हुए तो फिर सेवक क्या करेंगे? वह तो तुम लोगों से ज़्यादा शिकार करने वाले होंगे। आहार, व्यौहार की पवित्रता ही हर जगह, हर समय जीवों को संतोष देने वाली है। बहादुरी यह नहीं कि अपने से

कमज़ोर जीवों को मारकर उनको अपना आहार बनाया जावे, बल्कि शेर, चीतों को मारकर रक्षा की जावे। पुरातन बुजुर्गों का नाम लेकर, राम जी ने हिरन का शिकार किया था, गुरु गोबिन्द सिंह ऐसे करते थे, उनको बदनाम न करो। वह तुम्हारी तरह चिड़ियों, बटेर, खरगोश मारने वाले नहीं थे। शिवजी भंग पीते थे, फलां यह करता था, वह करता था, यह सब नित खोटे विचारों में तुम्हारी बुद्धि लगी रहती है। अब तो इस परिवर्तन से कुछ सबक सीखो। तमाम दोषों से पवित्र होकर अन्तःकरण को शुद्ध करते हुए मानसिक शांति प्राप्त करनी चाहिए।

पंचा दा कहना सिर मत्थे, परनाला ओथे दा ओथे।

कई बार आगे भी उन इलाकों में समझाया गया है। मानुष जीवन की सार यही है कि अमली जीवन बनाया जावे। सत्पुरुषों के वचनों का आसरा लेते हुए सत् पुरुषार्थ द्वारा अपनी कल्याण की जावे तब ही जाकर नास्तिकपन से छुटकारा पा सकोगे। अपने ही शुभ कर्म हर जगह सहायता करने वाले होते हैं। ईश्वर तुम सबको सत्पुरुषार्थ बख़्शें ताकि समता आनन्द परम शांति प्राप्त हो सके। फ़कीरों ने हमेशा किसी के पास नहीं बैठे रहना। इनके शरीर के दर्शन से कुछ लाभ न होगा। जो कुछ तुम्हारे कल्याण के वास्ते कहा जा रहा है उन वचनों को अपनाओगे तो सुख और शांति आवेगी। इस वास्ते पूरे सत् विश्वास और श्रद्धा से असूलों को अपनायें। सब संसार के काम खाना-पीना, लेना-देना करते हुए सादगी, सत्य, सत्संग और सत् सिमरण यानि दो घड़ी मालिक की याद करते हुए प्रभु आज्ञा में रहने का यत्न करें। यह ही सत्भाव हर एक जीव के वास्ते कल्याणकारी हैं। ईश्वर सबको सत् बुद्धि देवें।

बलदेव नगर कैम्प में सत्संग अमृत वर्षा का इतना असर हुआ कि कप्तान अनन्त राम जी, लेफ्टिनेंट गुरांदित्ता मल जी, प्रेमी धनराज जी, प्रेमी ऊधो राम जी, डिप्टी लाल जी व प्रेमी हीरानन्द जी और बहुत से प्रेमियों ने सत् शिक्षा ग्रहण करके सत् सेवा द्वारा शांति प्राप्त की। आस-पास के इलाका व गंगोठियां निवासी अलीपुर जहांगीरपुर से दर्शनों के लिए आए। सबसे विचार होता और सबको तसल्ली दी जाती।

153. शिमला जाखू पहाड़ी पर एकांत निवास

शिमला से सेठ ताराचंद जी सेवा में पत्र द्वारा प्रार्थना कर रहे थे कि श्री महाराज जी इस तरफ तशरीफ़ ले आवें, उनके निवास का प्रबंध वहां पर एकांत जगह पर कर दिया जावेगा। जगह का प्रबंध करके सेठ तारा चंद जी ने सूचना भी दे दी और खुद 3 अप्रैल, 1949 को चरणों में हाज़िर होने के बारे में भी लिख दिया। इसलिए 4 अप्रैल को रवानगी का प्रोग्राम बनाकर सेठ जी को सूचित कर दिया गया।

अम्बाला शहर निवासियों ने भी सेवा में प्रार्थना की:- महाराज जी! शहर में भी कुछ समय देने की कृपा करें। श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमियों! इस समय तो वक्त दिया जा चुका है।

अब ज़्यादा देर एकान्त में ठहरने का विचार हो चुका है, फिर किसी समय प्रभु आज्ञा हुई तो विचार किया जावेगा। अभी तुम ख़ुद आराम में नहीं हो, फ़कीरों का ठहराना आसान नहीं होता।''

3 अप्रैल को सेठ तारा चंद जी शिमला से आ गए और 4 अप्रैल को बस द्वारा श्री महाराज जी को शिमला साथ ले गए। रात 9 बजे के करीब शिमला पहुंचे। बस अड्डा से पैदल चढ़ाई चढ़ कर सेठ तारा चंद जी के गृह पर पहुंचे और आसन वहां ही लगाया गया। यह जगह सतह समुद्र से 7500 फीट ऊँचाई पर थी। सुबह को श्री महाराज जी को ऊपर जाखू पहाड़ी पर, जहां मैदान था, एक क्वार्टर में, जो जोधपुर क्वाटिर के नाम से मशहूर था, वहां ठहराया गया। नल का पानी वहां से एक फर्लांग पर था। इसकी दूसरी तरफ भगवान राम व कृष्ण का मन्दिर था। आसपास कोई आबादी न थी। यद्यपि क्वार्टर सबके सब खाली थे परन्तु एक कमरे में ऊपर एक अंग्रेज रहता था, जो त्यागी था और एकांत में समय व्यतीत कर रहा था। जगह बहुत एकांत थी। बंगले के नीचे और मैदान के आसपास दयार के वृक्ष थे जो आसमान से बातें करते थे। सुबह उठते ही सेठ जी श्री महाराज जी को ऊपर ले गए। सत्पुरुष को वहां ही स्नान करवाया गया और मैदान में ही आसन लगाकर बिठा दिया गया। उस वक्त श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''अंग्रेजों ने भी किस-किस जगह जाकर अपने आराम की ख़ातिर आबादियां कर ली थीं। शहरी लोग पहले कौन पहाड़ों पर आकर रिहायश करते थे? किसको मालूम था कि यह सब बंगले छोड़ने पड़ जावेंगे। प्रभु आज्ञा अटल है। बड़े-बड़ों के अहंकार ख़त्म हो जाते हैं। किसी की कोई चालाकी-चतुराई नहीं चलती। जिनकी चीज़ थी फिर सैकड़ों वर्षो के बाद उनके हाथ आ गई। जिस हालत में यह अब है ऐसी हालत में पहले यह किसी समय नहीं थी। सैंकड़ों हिस्सों में उस समय लोगों ने अपना-अपना राज्य बना रखा था। जिसकी बाज़ू में ताकत आ जाती थी वह अपनी रियासत बना लेता था। अब कन्याकुमारी से श्रीनगर हिमालय की चोटी तक राज्य एक हो गया है। अब आगे देखो यह कांग्रेसी क्या करते हैं?''

इस जगह सत्संग का खास प्रबंध न था। रात को थोड़ी सी वाणी पढ़ ली जाती थी। इतवार को ही सत्संग किया जाता और कुछ प्रेमी भी आ जाते थे। इस जगह श्री महाराज जी ने रोज़ाना ही ख़ुराक में और कमी करने की आज्ञा दी।

इन्हीं दिनों में प्रेमी नन्द लाल जी बिन्द्रा दर्शनों के लिए चरणों में हाज़िर हुए। दो-तीन दिन वहां निवास किया। सत्पुरुष त्रिकालदर्शी होते हैं। एक दिन खुद ब खुद ही पूछने लगे:- ''नन्द लाल जी! कारोबार का क्या हाल है?'' प्रेमी नन्द लाल जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! कारोबार ख़त्म हो गया है। बहुत नुकसान हुआ है।'' आपने इस पर फरमाया:- ''तभी तीन दिन से बैठे हो।'' उसके बाद आंखें बंद कर लीं। थोड़ी देर के बाद आंखें खोलीं और पूछा:- ''प्रेमी! बख़्शी कुन्दन लाल कहां है?'' नन्द लाल ने अर्ज़ की:- ''हल्द्वानी में हैं।'' आपने फरमाया:- ''दिल्ली में रहना कोई ज़रूरी नहीं। तुम भी हल्द्वानी जाओ और वहां जाकर काम करो। सब जगह ईश्वर राज़क (भोजन देने वाला) और रक्षक है।''

दूसरे दिन जब सेठ जी के गृह से रोटी खाकर ऊपर आए, श्री महाराज जी धूप में लेटे हुए थे। प्रेमी नन्द लाल जी प्रणाम करके चरणों में बैठ गए। श्री महाराज जी भी उठकर बैठ गए। विचार शुरू हुए। श्री महाराज जी की निग़ाह एक बंदर पर पड़ी, उसका हाथ बिच्छू बूटी से लग गया था। उस बूटी के साथ जिस्म के लगने से फौरन जलन व ख़ारिश शुरू हो जाती है। बन्दर के हाथ में भी जलन व ख़ारिश शुरू हो गई। एकदम बंदर ने दूसरी बूटी लेकर हाथ में मलना शुरू कर दी। इस बूटी को जंगली पालक के नाम से पुकारते हैं। इस दौरान एक चिड़िया के साथ भी ऐसा ही वाक्या हुआ। चिड़िया ने अपनी लात को उस जंगली पालक बूटी से रगड़ना शुरू कर दिया। यह देखकर सत्पुरुष ने फरमाया:– ''प्रेमी! देखो बेज़बान जानवर भी कितनी बुद्धि अपनी शारीरिक रक्षा की रखते हैं। इंसान व हैवान में क्या फ़र्क है। सिर्फ़ यह कि यह अच्छी तरह बोल नहीं सकते, अपनी ज़रूरियात को पूरा करके मर्यादा में जीवन व्यतीत करते हैं। मानुष ही एक ऐसा जानवर है जो अच्छी बुद्धि रखने पर भी बेमर्यादा चलकर जीवन व्यतीत करते हैं। जिस–जिस शरीर को जीवन धारण किए हुए है उसमें वह खाने–पीने की पूरी सूझ रखता है। इंसान के अंतर–विखे विशेषता यह ही है कि अगर यह कोशिश करे तो यह क्षणभंगुर भोगों से ऊपर उठकर अविनाशी आनंद को प्राप्त कर सकता है। बाकी जोनियों के जीव इन्द्री भोगों में ही लगे रहते हैं। यत्न–प्रयत्न वे भी मनुष्य की तरह ही करते हैं। मानुष कर्म व कर्म के नतीजे सुख–दु:ख इत्यादि कैसे समझता है, बाकी जीवों में यह समझ नहीं? मानुष सब कुछ जानता हुआ बंधन में फंसकर अशांत रहता है। सही सोच हो जाने पर पुरुषार्थ करके शारीरिक बंधन से छुटकारा पा सकता है।''

श्री महाराज जी की आज्ञा पाकर प्रेमी नन्द लाल जी वाणी पढ़ने लगे। जब पढ़ चुके तो पूछा:

प्रश्न – महाराज जी, सतपुरुषों ने जो वाणी प्रगट फरमाई है वह राग में क्यों प्रगट फरमाई है? क्या राग उनको अच्छा लगता है?

उत्तर – (श्री महाराज जी) – लाल जी, संतों का जीवन राग रूप ही होता है। हर घड़ी अंतरविखे राग ही चलता रहता है, सो वह बाहर भी प्रगट होता है।

इसके बाद श्री महाराज जी ने कुछ और अमृत वर्षा फरमाई। इसके बाद नन्द लाल जी ने श्री महाराज जी से दिल्ली वापिस जाने की आज्ञा ली।

उसी रोज़ कप्तान गोपी चंद का पत्र आया जिसमें कुछ शंका निवारण करने की प्रार्थना की। जो उत्तर उसके जवाब में आपने लिखा वह प्रेमी पाठकों के लाभ के लिए दर्ज़ किया जा रहा है।

सब संगत को एक–एक करके आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सर्वकाल सहायक होवें। हर वक्त अपनी श्रद्धा द्वारा कृपा अपने अंग–संग जानें। ईश्वर निर्मल गुरु भक्ति देवें जिससे अपने तमाम मानसिक दोषों से निवृत्ति हासिल करके मानुष जन्म और ब्राह्मण जाति के सही गौरव को प्राप्त कर सकें। ईश्वर अधिक श्रद्धा प्रेम देवें। प्रेमी जी, आगे भी उसकी परम दयालुता से सब सुकरत कारज (कार्य) होते रहे हैं और आगे भी उसकी दयालुता से होते रहेंगे, यह निश्चय रखें। हर वक्त गुरमुख

बुद्धि को धारण करें यानि सत् कर्तव्य करते जावें। उसका फल प्रभु आज्ञा में देखें। ऐसा निश्चय ही परम कल्याण के देने वाला है। प्रभु परायण होने से सब कारज खुद-ब-खुद ही अनुकूल होते जाते हैं। गुणी पुरुषों का विश्वास होना चाहिये। आगे जो समय ज़िंदगी का व्यतीत किया है उसमें जैसा भी अपना निश्चय आया, ऐसा कर्म करना शुरू कर दिया, ख़्वाहे उसका नतीजा ग़ल्त हुआ या सही। अब प्रभु कृपा से अपनी सत् श्रद्धा द्वारा सत्गुरु प्राप्त हुए हैं, उनके सत् वचनों अनुकूल चलकर अपनी ज़िन्दगी को नित ही पवित्र और आनन्दित बनावें। जो विचार अपने शिव-भक्ति के मुतालिक लिखा है, उसका निर्णय सुनें। शिव शब्द का अर्थ कल्याण है। शिव कल्याण सरूप एक आत्म शक्ति को जानें। जिसकी महिमा अनंत ग्रन्थ और शास्त्र ब्यान कर रहे हैं और हर एक शरीर का आकार वास्तविक जो जीवन सरूप है उसका सिमरण ध्यान गुरु दरबार से प्राप्त हुआ है। यह दृढ़ निश्चय कर लेवें। ऐसे शिव सरूप अविनाशी शब्द को जिसने पहचान किया है वह सत्गुरु सरूप सर्व पूजने योग्य हैं, यानि आत्म-ज्ञानी पुरुष ही शिव सरूप है। उसके दर्शन और आज्ञा पालन करने से ही सर्व कल्याण प्राप्त होती है। श्री रामचन्द्र के ज़माने में चूंकि शिव सरूप ही आत्म-ज्ञानी प्रसिद्ध थे, इस वास्ते गुरु रूप करके उनकी सत् आज्ञा पालन करने की हिदायत की गई थी। अब अपने ज़माने में जो सत्गुरु आत्मदर्शी आपको प्राप्त हुए हैं वह ही शिव पद कल्याण के जानने वाले हैं और तुम अपनी कल्याण उनके सत् वचनों पर दृढ़ विश्वास होने से ही जानें, ऐसा निश्चय कर लेवें। सार निर्णय यह है कि शिव पद कल्याण सरूप एक आत्मदर्शी पुरुष ही है। अगर किसी को ऐसे सत्पुरुष का मिलाप हो जावे तो उस पुरुष के दुर्लभ भाग जानने चाहियें, अगर सत् विश्वास करके सत्गुरु आज्ञा को पालन करने में वह दृढ़ है। ईश्वर सत्बुद्धि देवें। इस विचार को ग़ौर करके अनुभव करें और हाज़िर सरूप शिव पद के ज्ञाता सत्गुरु के वचन अपनायें। इसमें सर्व कल्याण है। स्वाध्याय के वास्ते पुस्तकें पहुंच जावेंगी। उनका विचार करें और असली ज़िंदगी के मकसद (उद्देश्य) को समझ कर हर वक्त अपने आपको गुरुवचन परायण बनायें, यानि सादगी, सेवा, सत्य, सत्संग, सत् सिमरण में दृढ़ता धारण करें। हर वक्त गुरु की आंतरिक दिव्य-शक्ति को सहायक जानें। ईश्वर सत् श्रद्धा देवें। प्रेमी जी, सत्पुरुष ही शिव सरूप होते आये हैं और उनके तप, त्याग, सेवा से ही जीवों का उद्धार होता आया है, ऐसा ही निश्चय करें और सत्गुरु वचन को अपनाने का यत्न करें और समता की रोशनी को जागृत करें। यह ही तुम प्रेमियों का परम धर्म है। प्रेमी जी, जीवों की कल्याण की ख़ातिर यह सेवक शरीर प्रगट हुआ है और सब जीवों की उन्नति के वास्ते जो-जो अनुभव उस परम पुरुष की आज्ञा से प्रगट हुए हैं वह आप प्रेमियों के सामने रखे गए हैं। आप गुरमुख भी उस पवित्र विचार की रोशनी से अपने आपको रोशन करें। यह ही शिव का दर्शन जानें। ईश्वर सत् कर्तव्य में निश्चय देवें। हर वक्त अपनी मानसिक धारा को सत्गुरु उपदेश में लगाए जावें। यह प्रभु की परम कृपालुता जानें जो ऐसा अपनी उन्नति का समां प्राप्त हुआ है। ईश्वर गुरु वचन में विश्वास देवें। सत्संग का प्रोग्राम दृढ़ निश्चय से धारण करें। इसमें सर्व कल्याण सरूप श्रद्धा की जागृति होती है। तमाम प्रेमियों को दोबारा आशीर्वाद कहें। अपनी कुशल पत्रिका लिखते

रहा करें और सत् उपदेश हासिल करते रहें और अपने आईंदा जीवन का समय सफल करें। ईश्वर सत् सिमरण और अनुराग देवें।''

नोटः अंतर अभ्यास में सिर्फ़ एक गुप्त सत्गुरु उपदेश ही, बीज मंत्र की आराधना करना चाहिये। यह ही उपासना परम पद आनन्द कल्याण के देने वाली है। सुबह-शाम दोनों वक्त अभ्यास करें और हर वक्त बुद्धि को उठते-बैठते इस बीज मंत्र में लगाते रहें। ऐसी निर्मल भक्ति से तमाम पाप जल्दी ही नाश हो जाते हैं। इसके अलावा और जो कोई भी दुनियावी शुभ कारज करना होवे, पांच दफ़ा महामंत्र का उच्चारण करके इस कारज को आरम्भ करें। प्रभु सफलता देवेंगे। ऐसे निश्चय के बग़ैर और कोई बनावटी देवी-देवता कल्पित करके पूजा-याचना करना यह महज़ रिवाज़ है और यह नास्तिकपन और अज्ञान भी है। इस अंधेरे से अपने आपको बचायें और सही रोशनी की तरफ यानि सत् कर्तव्य में कदम उठायें। रोज़ाना गुरु वाणी, जो समता सिद्धांत है, उसका पाठ भी करें। उससे बुद्धि निर्मल होकर दुःखों से छूट जाती है। यह विचार ग़ौर करके पढ़ें और फिर धारण करें। इससे असली शांति प्राप्त हो जावेगी। महामंत्र वह ही है जो सत्संग के शुरू में पहले उच्चारण होता है। ईश्वर श्रद्धा देवें।

श्री महाराज जी फरमाने लगेः- ''अच्छी एकांत जगह है। शहर भी नुमायशी जीवन वालों का है, कौन चढ़ाई चढ़कर इतनी दूर आ सकता है? अच्छी जगह ताराचंद ने तजबीज़ की है। तुम किसी को अपनी तरफ से इधर आने के वास्ते न लिखना। जो लिखा भी, मामूली तौर से। जगह की बाबत लिख देना। शिमला को देखने का हर एक का दिल कर आया करता है। जो प्रेम से आ जावे, वह उसकी मर्ज़ी।''

कुछ अर्से के बाद पंडित रामजी दास शिवपुर से पधारे। नमस्कार करके बैठे ही थे, कुशलता पूछने के बाद सत्पुरुष ने पूछा, ''प्रेमी, किस तरह आया है?'' रामजी दास ने अर्ज़ कीः- ''दर्शनों के वास्ते।'' भक्त जी की तरफ देखकर फरमाने लगेः- ''तुमने इसको लिखा है?'' भक्त जी ने अर्ज़ कीः- ''नहीं, महाराज जी।'' श्री महाराज जी ने फरमायाः- ''प्रेमी! बग़ैर इज़ाज़त के क्यों आया है? आगे भी तुम को देहरादून में झाड़ पड़ी थी, और क्या तुमको कहा जाए? अपने आप तुम कुछ विचार नहीं करते हो। इज़ाज़त पहले क्यों नहीं ली? चाहिए तो यह कि तुम को इसी वक्त वापिस किया जावे।''

इसके बाद लंगर का इंतज़ाम उसी जगह किया गया । एक दिन 11 बजे का समय था। वृक्ष की छाया की ओट में श्री महाराज जी विराजमान थे। बाबू अमोलक राम जी का पत्र पढ़ रहे थे, रामजी दास पास बैठे थे। कुछ साग-पात बनाकर लाकर रखा। उसे ग्रहण करने के बाद फरमाने लगे- (कुछ गुस्से के लहजे में,) ''बाबू को अच्छी तरह इस तरह करके लिख दो। आश्रम की ज़मीन के बारे में इस तरह क्यों नहीं करता?'' प्रेमी रामजी दास कुछ बाबू अमोलक राम के बारे में विचार करने लगे और कहने लगे- ''ऐसे हैं, वैसे हैं, बड़े अभिमानी हैं। हर समय मूंछों को ताव देते

रहते हैं, वग़ैरा।'' महाराज जी सारे विचार चुप करके सुनते रहे। रामजी दास जब कह कर चुप हो गया तब श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''उसमें कोई सिफ्त (गुण) भी है या नहीं।'' फिर रामजी दास ने सिफ्तें गिनवानी शुरू कर दीं, ''बड़े आज्ञाकारी हैं, पुरुषार्थी हैं, रात-दिन जिस समय हुक्म मिले सोटी (छड़ी) उठाकर चल देते हैं, काम करके वापिस आते हैं। तन-मन-धन लगाने से भी नहीं हटते। दृढ़ विश्वासी हैं। हिसाब पाई-पाई का रखते हैं।'' पंडित जी ऐसा कह ही रहे थे, महाराज जी ने कड़क कर फरमाया:- ''जिस समय देखो दूसरों के नुक्स निकालते रहते हो। यही काम तुम्हारा है या और भी कोई है। जितनी सिफ्तें तुमने दी हैं, अगर दो खराब बातें भी हैं तो क्या हुआ? उससे अच्छे और कहां से लाये जायें। जो समां निकालकर घर से बेघर होकर संगत की सेवा करे, उसके नुक्स निकालते हो। तू कौन सा पाक है? दस दफ़ा तुझे कहा जाए तब तुझे होश आती है। न शरीर की सेवा, न धन की सेवा कर सकते हो। खाली बातों की सेवा क्या बनायेगी? अगर बाबू में अभिमान है, गुस्सा है, लंगर की सेवा नहीं कर सकता और किसी वक्त बैठ भी जाता है, इसका यह मतलब नहीं कि उसे हटा दिया जावे। और कौन इस तरह वक्त निकाल कर जेब से किराया ख़र्च कर सेवा करने वाला है। तेरी इतनी बुद्धि नहीं। तुमने कितनी मार मारी है जो इतनी बातें बनाता है। जो प्रेमी सेवा कर सकता है, प्रेम से करना उसका फ़र्ज़ है। एक अनपढ़ आदमी हिसाब-किताब का काम नहीं कर सकता, उसे चाहिये तन-मन की सेवा करे। दिमाग़ी आदमी अक्ल द्वारा नेक सलाह देवे। जिस-जिस में जो-जो गुण हैं, उसको निष्काम भाव से फ़ायदा पहुंचाना चाहिए। तू यह बता, यहां आकर सेवा की है? इधर आकर हमारी मुठ्ठियां भरने की ज़रूरत नहीं। सत्संग, सेवा और सिमरण करो।''

रामजी दास ने अर्ज़ की:- ''सिमरण ज़्यादा करने में ही लाभ समझता हूं।'' श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''पहले सेवा, सिमरण बाद में बनता है।''

फकीरा अन्न गृहस्ती का, इसके लम्बे-लम्बे दांत।
भजन करे तो उभरे, न तो काढ़े आंत॥

''सत्संग सेवा भी भजन ही है। इनके बिना सिमरण नहीं बन सकता। बिना सेवा के मन अभिमान को नहीं छोड़ता।'' फिर बनारसी की तरफ मुख़ातिब होकर फरमाया:- ''तू तो किसी को सेवा करने के वास्ते नहीं कहता। यह तेरा काम है, जो आए उसे समझाना।''

भक्त जी ने अर्ज़ की:- ''यह सिमरण को अच्छा समझते हैं। बाबू जी ज़्यादा पढ़ने को और चल-फिर कर सेवा करने को अच्छा समझते हैं। कई प्रेमी आते हैं, अपने हाथ से पानी भी पीना पसंद नहीं करते। कहकर सेवा करवानी दूसरा अच्छी नहीं समझता। मर्ज़ी आवे कुछ करें या न करें, यह उन पर छोड़ता है।'' इस दिन से प्रेमी रामजी दास कुछ दिल लगाकर बर्तन, पानी, लकड़ी की सेवा करने लगे। समां बीत रहा था चौधरी हरजी राम जी मलोट मंडी से पधारे थे। मास्टर मनी राम जी अहमदाबाद से चरणों में हाज़िर हुए। बाबू जी ने, जो ज़मीन को खरीदने का यत्न कर रहे थे, सब हालात पत्र द्वारा सेवा में अर्ज़ किए। उसके जवाब में जो पत्र उसे लिखा गया वह निम्नलिखित है।

आज्ञाकारी सती सेवक,

आशीर्वाद पहुंचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् शांति देवें। प्रेमी जी, हालात ज़मीन मालूम हुए। आजकल के हाकिम तो ऐसे ही है। अब अपने विचार मुताबिक जैसी सूरत हाल इख़्तियार हो सके करें। इधर से इन मामलों का कुछ कहा नहीं जाता। दीग़र तुमने जब इस जगह का सौदा मंज़ूर कर लिया है और अदालत में भी ब्यान दिये हुए हैं, और लोगों को भी पता हो चुका है, क्या यह मुनासिब है कि जब-तक कि ऊपर से कोई फैसला न होवे तो ज़मीन पर दूसरा सौदा करते फिरें? प्रेमी, असूल की पाबंदी चाहिये। अगर इंक्वायरी होवे या अदालत से इज़ाज़त न मिले तो हालात मुताबिक दूसरी ज़मीन तजवीज़ का विचार करना हो सकता है। आगे जैसा विचार समझें वैसा करें। जो-जो नई अड़चनें अब दोबारा अफ़सर माल के कानूनगो ने पेश कर दी हैं अगर उनमें से कोई कामयाबी की सूरत होवे तो कोशिश कर देखें, नहीं तो छुटकारा वैसे ही हो जाता है। अदालत की नामंजूरी पर दीगर दूसरी ज़मीन जो है उसके मुतालिक स्त्री स्थान का ब्याना बेशक दे देवें। जब मंजूरी हो जावे तो फिर तुमको जितनी जमीन ज़रूरत होवेगी उतनी ही लेनी। प्रेमी जी, तुमको हर हालत में आज़ादी है। अगर यह काम पाये तकमील (पूर्ण) पहुंचने की उम्मीद है तो कोशिश कर देखें, नहीं तो प्रभु इच्छा। ज़मीनों के मामले बड़े दुशवार होते हैं। तुम अपने तजुरबा के मुताबिक अमल करें। इधर से क्या लिखा जाए? तुम खुद बाहोश हो। दूसरा कितला (टुकड़ा) जमीन अगर ले लेवें तो भी कोई पाबंदी नहीं है और न लेवें और उसी महदूद खेत में उसका मुआवजा सर्फ़ (ख़र्च) करें तो भी जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। अच्छी तरह से विचार करके कदम उठावें। ईश्वर ही कामयाबी देने वाला है। कितनी देर तक दोबारा मिसल (मुकदमे की फ़ाइल) वापिस आवेगी?

बाबू अमोलक राम जी जगाधरी की तरफ से होकर चरणों में पहुंचे। आती दफा बाबू राम सरूप के बाग से आम का एक टोकरा भर कर प्रशाद लाए। मलिक भवानी दास जी भी दिल्ली से सेवा में हाज़िर हुए। श्री महाराज जी के चचाजाद भाई निरंजन दास जी भी मिलने के वास्ते पधारे। आप भी सादा फ़कीराना भेष में फिर रहे थे। नौकरी के बाद पेंशन लेकर यात्रा पैदल करते थे। कुछ दिन सेवा में ठहर कर वापिस चले गए। उन दिनों में महंगाई काफी हो गई थी, मगर सेठ तारा चंद बड़े खुले दिल से सेवा कर रहे थे। इतवार के दिन सब प्रेमियों को घर ले जाकर भोजन करवाते। सारा परिवार दिल से सेवा करता था। कोई प्रेमी आ रहा है, कोई जा रहा है। प्रेमी मुकंद लाल जी भी होडल मंडी से पधारे। हालांकि प्रेमी चलने से कुछ मजबूर था, मगर फिर भी नीचे बाज़ार जा कर कुछ प्रशाद ले आता और फिर प्रशाद पाता और रोज़ाना सेवा में होडल पधारने की प्रार्थना करता।

एक दिन प्रेमी मुकंद लाल स्नान के लिए जाते समय श्री महाराज जी की गड़वी, चाय पीने वाली, साफ करने की खातिर साथ ले गए। स्नान के बाद जब पानी लेकर चलने लगे, उसका ऊपर वाला ढकना बंद न कर सके। आते-आते रास्ते में पांव को ठोकर लगी। गड़वी का निचला चाय डालने वाला हिस्सा निकल कर नीचे खड्ड की तरफ चला गया। कपड़े धोने का साबुन भी दूसरे

हाथ से निकल भागा। घबराये हुए रसोई में पधारे और कहा, ''भक्त जी, आज बड़ा भारी नुकसान हो गया है। महाराज जी की चाय वाली गड़वी नीचे चली गई।'' प्रेमी रामजी दास और बाबू अमोलक राम जी उसे ढूंढते रहे। बाबू जी तो बहुत नीचे तक गए, काफी गहराई में नीचे सड़क थी, मगर गड़वी नहीं मिली। आख़िर श्री महाराज जी को सूचना दी गई। श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''प्रेमी! फ़कीरों की चीज़ गुम हो जाना मामूली बात न समझो। फ़कीरों के शरीर पर कष्ट आने की निशानी है। तुम लोग बड़े लापरवाह हो। ज़रा एहतियात नहीं रख सकते।'' जिस प्रेमी से यह गड़वी गिरी उसे कहा कि बड़ी सेवा करने आया है। अगर तुमने कोई सेवा तन-मन-धन से की है तो कोई इन पर अहसान नहीं किया है, तुम्हारी अपनी कल्याण थी। फिर भक्त बनारसी दास को झाड़ डाली और फरमाने लगे:- गड़वी की बात नहीं, गुम हो गई तो क्या हुआ? मगर तुम्हारी लापरवाही। गुरु बन बैठा है। हुक्म चलाने लग गया। वह अपना शरीर नहीं संभाल सकता और क्या काम करेगा? भक्त बनारसी दास के अंदर यह ख़्याल उठा कि थोड़ी सी बात पर श्री महाराज जी इतने क्रोध में आ गए। अक्सर चीज़ें गुम हो जाती हैं, क्या कष्ट आ चला है?

सत्पुरुष अंतर्यामी होते हैं। भक्त जी के ख़्यालात को फौरन भांप कर आपने फरमाया:- ''तुम शिष्यों के वास्ते प्रेम से विचार नहीं किया जा रहा है। प्रेम, नम्रता दूसरों के वास्ते है। यह प्रेम का नतीजा है। फ़कीर किसी को ज़्यादा करीब नहीं बिठाया करते। कृपा लोड़ने (कृपा करना) आए हैं।'' इस समय खामोशी के सिवाए और कोई इलाज नहीं था।

सत्पुरुष फरमाया करते थे कि फ़कीरों की निगाह हमेशा खास शिष्यों पर हुआ करती है। चाहे वह हज़ार कोस के फ़ासले पर क्यों न बैठे हों? अगर इन्हें कोई उनमें नुक्स नज़र आता है तो फौरन झाड़ डालते हैं। अगर कोई शिष्य इसे समझकर सही कदम उठाने लग जाता है तो यह उसका ही कल्याण है। ऐसे तज़ुरबात भी हुए कि किसी प्रेमी को झाड़ दी गई और उसने बुरा मनाया, फिर दोबारा उसे कभी झाड़ देते नहीं देखा। सरूपा जंगल का वाक्या है। एक प्रेमी को वहां झाड़ दी गई। उसने बुरा मनाया और दो-तीन दिन नाराज़ रहा। उसका चेहरा नाराज़गी ज़ाहिर कर रहा था। उसके बाद उसे कभी कुछ नहीं कहा गया। अपनी ग़ल्ती पर पश्चाताप करने के लिए प्रेमी मुकंद लाल ने कहा:- वह गड़वी और ला देता है। मगर आज्ञा न मिली।

पहली सावन संक्रांत के सुबह के सत्संग के बाद जब प्रेमी तारा चंद और बाबू अमोलक राम पास बैठे हुए थे, चाय के बाद भक्त जी कुछ कड़ा प्रशाद तैयार करके ले आए। चोलाई का साग बना कर लाया गया। इन्हें लाकर श्री महाराज जी की सेवा में रखा। सत्पुरुष ने तीन-चार चम्मच सेवन किया, फिर सबने प्रशाद पाया। उस दिन इतवार था। शाम को सत्संग हुआ। शाम के सत्संग के बाद जब प्रेमी चले गए तो श्री महाराज जी ने बनारसी दास को बुलाकर फरमाया:- ''बनारसी! थोड़ा कहवा बना लाओ। पेट के दाईं तरफ दर्द महसूस हो रहा है।'' कहवा लाया गया। आधे घंटे के बाद उल्टी हुई। दर्द पहले से बढ़ गया, फिर फरमाया:- ''दिल कच्चा हो रहा है।'' आधा निम्बू काली मिर्च लगाकर दिया गया। कुछ देर के बाद कुछ आराम महसूस हुआ। रात के दस बज चुके थे। महाराज जी फरमाने लगे:- ''आराम करो।''

नियम अनुसार रात को बाहर चले गए। दिन निकलने पर जब वापिस आए, स्नान के बाद चाय दी गई। फरमाने लगेः- ''दर्द फिर उसी तरह शुरु हो गया है। कल सत्संग के बाद, जब प्रेमी अभी बैठे हुए थे, एकदम अन्दर गुबार सा उठा था। सिवाये साग के और कोई चीज़ नहीं ली गई थी। पता नहीं क्या बात है''? लंगर पा लेने के बाद फिर शिंकजी बनाकर पिलाई गई। उससे ज़रा आराम हुआ। मगर थोड़ी-थोड़ी गड़बड़ चलती रही। उस तकलीफ़ में पांच सावन को आपने 'जीवन सफलता बोध' अपने कर कमलों से लिख करके दे दिया और फरमायाः- यह शिमला की याद में संगत सेवा के लिए है। इस तकलीफ की सत्पुरुष ने किसी को, यहां तक कि सेठ ताराचंद जी तक को, खब़र नहीं देने दी और न ही कोई दवाई इस्तेमाल करवाने दी। कहवा या शिंकजी वग़ैरा ही इस्तेमाल किया जाता रहा। बरसात का मौसम था। फरमाने लगेः- ''शायद इसकी वजह से ही तकलीफ हुई हो।'' तकलीफ़ कभी दूर भी हो जाती थी, मगर फिर शुरू हो जाती थी। आख़िर भक्त जी ने सेठ ताराचंद जी को बतलाया। उन्होंने भी दवाई के वास्ते अर्ज़ की। मगर आपने फरमायाः- ''खुद-ब-खुद दूर हो जावेगी।'' तकलीफ़ दिन-ब-दिन बढ़ने लगी, इसका जब डाक्टर भक्त राम जी को पता लगा तो वह सुनकर दिल्ली से शिमला पहुंचे। उन्होंने अच्छी तरह देखने के बाद चाय चंद दिनों के वास्ते बंद करवा दी। थोड़ा-थोड़ा दूध, गेस्टो मेग और आलिव आयल के दो चम्मच और एक सेब उबालकर बारी-बारी देना निश्चित किया। इस तरह के प्रोग्राम से तबियत कुछ ठीक हुई। बाबू अमोलक राम जी और डाक्टर जी आज्ञा लेकर वापिस चले गये।

इस जगह बख़्शी योगराज, श्री महाराज जी की एक बहन का दामाद और अज़ीज़ फतेह चंद, श्री महाराज जी का भतीजा, भी दर्शनों के लिए हाज़िर हुए। फतेह चंद उन दिनों मिलिट्री स्कूल में पढ़ता था। उसने चरणों में शिक्षा के लिए प्रार्थना की तो आपने फरमायाः- ''बच्चू! तेरे वास्ते शिक्षा यह ही है कि अपना आचार-विचार अच्छा रखो और बहनों की सेवा करो और ख़ानदान का ख़्याल रखो। अभी शिक्षा का समय नहीं।'' जब वह आज्ञा लेकर चला गया तो फरमाने लगेः- ''इसकी माँ ने इसका सुख नहीं देखना था। किस तरह मेहनत करके इसको पाला था। सारी उम्र ग़रीबी में काट गयी है मगर किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया। सन्तोष में भैंस पालकर दूध द्वारा समय निकालती रही है। उसने इस शरीर की सेवा की है। वह रोज़ गीता का पाठ करती थी। जिस दिन इनके अन्दर प्रभु कृपा हुई 13 वर्ष की आयु थी। दिव्य प्रकाश को पाकर उस रोज़ बड़ी प्रसन्नता थी। सुबह जब बाहर से होकर वापिस आए तो देखा कि भौजाई गीता का आठवां अध्याय पढ़ रही थी। यह अध्याय योग सम्बंध में है। जिसका चित्त और किसी तरफ नहीं जाता ऐसे चित्त वाला मनुष्य ऐसे ध्यान करने से परम् दिव्य प्रकाश को पा लेता है।'' आपने भौजाई को फिर उसे पढ़ने को कहा। वह हैरान हुई कि आज भगत जी ने ऐसा क्यों पढ़ने के लिए कहा? (उस समय श्री महाराज जी को भगत जी करके पुकारते थे), आगे ऐसा कभी नहीं कहा। उसने अच्छी तरह दोबारा पढ़कर सुनाया। सुनकर आपने अपनी आन्तरिक हालत से उसका मिलान किया और देखा कि ये हालत उस

ब्यान की हुई हालत से मिलती है। भौजाई ने कई बार पूछा:- भगत जी! आज क्यों गीता सुनाने के वास्ते कहा है, पहले आपने कभी नहीं कहा? इस पर आपने फरमाया:- ''तुम जाओ, अपना काम करो, अच्छा है, गीता पढ़ती रहा करो।'' उस समय श्री महाराज जी के नदी किनारे पत्थरों पर बैठे रहने के कारण लोग कहा करते थे कि जिन्न-भूत वश करता रहता है, पत्थर घिसा दिये हैं। मगर आप सबकी सुन लेते, चाहे कोई कुछ भी कहता। 35 साल की आयु तक इस नाले में रात-दिन व्यतीत करते रहे। जब महाराज जी यह हालात फरमा रहे थे उस समय उनका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक था और प्रेम से ये सब वृतान्त सुना रहे थे। उस समय आपसे पूछा गया :

प्रश्न – महाराज जी, ध्यान अवस्था प्रकट होने के बाद भी आरूढ़ होने में इतना अर्सा क्यों लग जाता है?

उत्तर – ''पहले संसार से वैराग्य होना ही मुश्किल है। कोई ही भाग्यशाली जीव है। जिसका चित्त पैदा होने के बाद संसार में न फंसे और हर समय उदासी की हालत में रहे और उसकी कोशिश में उसका मन बुद्धि में लगा रहे। हर एक के अन्दर आत्म-बिरह की लगन नहीं उठा करती। मगर किसी के अन्दर ऐसी बुद्धि आ भी जाये और अभ्यास, शुगल (साधन) में लगातार लग कर आत्म अनुभवता हो भी जाये, फिर भी माया मोह का डर रहता है या ऋद्धि-सिद्धि दिखाने का, क्योंकि उस समय वाक् में शक्ति आ जाती है। जब मोह जाल से पार हो जाता है, सब संशय शोक से छुटकारा पा लेता है। शून्य, अडोल, अचल, निष्कर्म अवस्था उसे ही कहा गया है। फिर उस समय वह संसार में विचरने योग्य होता है।'' उस समय भगत जी ने अर्ज़ किया:-

प्रश्न – हमारा क्या हाल है, अभी तक तो मन ही उधर नहीं लगता, हम कैसे संसार चक्र से निकल सकते हैं?

उत्तर – ''पहले गुरु तक तो पहुंच लो। जब-तक इनके साये के नीचे रहोगे तब-तक कोई डर नहीं है। इनकी रहनी की तरफ ध्यान रखा करो, घोलकर पिलाने वाली चीज़ नहीं है। बड़ी मेहनत करके इसे प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए मेहनत करो। तुम्हें हर बात की सहूलियत है। फ़कीर तुम्हारे पास हैं। इनसे पूछ सकते हो। इनको तो पहले समझाने वाला ही कोई नहीं मिला। उस मालिक ने इन पर दया कर दी थी। जो करवाना था करवा लिया।''

भक्त जी ने फिर अर्ज़ की:- ''आप दास पर दया फरमावें।''

मुस्कराते हुए फरमाया:- ''यह दया नहीं, फ़कीरों ने तुझे नज़दीक बैठने की इज़ाज़त दी है और तुझे सेवा सौंप दी है? तू समझता है 'मैं सेवा कर रहा हूं'। मूर्ख, तुझे खींचकर बिठाया हुआ है। ज़रा सा रिश्तेदार बुलाते हैं इनकी परवाह न करते हुए चला जाता है। यह देखते रहते हैं कितना मोह है, कितना संसार में अभी फंसा हुआ है। अंतर विचार होता रहता है, कहां तक भागता है?''

दरअसल इन्हीं दिनों में शिमले में भक्त जी की बहन की लड़की, जिसे उसने पास रखकर फिर उसकी शादी कर दी थी, मय खाविंद (पति) के शिमले आए हुए थे। भक्त जी रात को छुप कर उनके पास चले जाते और जाकर ताश खेलते रहते। जब भी मौका मिलता छुपकर भक्त जी करीबन रोज़ाना उनके पास चले जाते। सत्पुरुष ने इसके मुतालिक भक्त जी को चेतावनी दी।

एक दिन पत्र डालकर जब सेठ ताराचंद जी की दुकान पर डाक लेने के लिए पहुंचे तो पता लगा कि उनका कोई रिश्तेदार ऊपर श्री महाराज जी के चरणों में गया है। जल्दी-जल्दी डाक लेकर भक्त जी जब ऊपर पहुंचे तो देखा कि उनके बहनोई जयराम शाह जी और उनके सम्बन्धी श्री मेहर चंद जी पधारे हुए हैं। श्री महाराज जी बाहर लेटे हुए थे और यह प्रेमी पास बैठे थे। श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! चाय वग़ैरा इन्हें पिलाओ और भोजन वग़ैरा तैयार करो।''

चौधरी मेहर चंद जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! पहले झोली में शिक्षा डालें तब बाद में अन्न पावेंगे।'' जयराम शाह की आंखों में आंसू बहने लगे।

श्री महाराज जी ने बनारसी से पूछा:- ''क्या बात है?''

भक्त जी ने अर्ज़ की:- ''यह प्रेमी हरबंस लाल के ससुर हैं।'' चौधरी जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! हरबंस लाल जी को अपना बच्चा जानकर उस पर दया दृष्टि करें। वह इस समय भवाली सेनीटोरियम में बड़ी तकलीफ़ में है। आपकी दया के बग़ैर उसे आराम नहीं आ सकेगा।''

इस पर आपने फरमाया:- ''वह ही जयराम शाह है जो उसे फ़कीरों के पास आने से रोकता था और आप भी दूर रहता था। गर्ज़ किस तरह दौड़ाती है। प्रेमी, कर्म चक्कर अमिट है। फकीर खुद दो माह से कर्म चक्कर की लपेट में आए हुए हैं। यह अपनी तकलीफ़ दूर नहीं कर सकते, और किसी का क्या इलाज करेंगे? जिस विश्वास को लेकर इतनी दूर चलकर आए हो, प्रभु ही सहायता करने वाले हैं। हरबंस लाल तो वैसे ही इनको प्यारा है। न जाने किस कर्म चक्कर ने उसे इस समय लपेट में ले रखा है। जन्म-जन्मांतर के शुभ-अशुभ कर्म सुख-दुःख देने वाले बन जाते हैं। इस जगह इस जन्म में तो प्रेमी ने ऐसा कोई कर्म नहीं किया जिस करके तकलीफ़ मिल रही है। प्रभु कृपा करें, जल्दी ख़ुलासी मिल जाए। प्रेमी, और भी सैकड़ों बीमार हस्पताल में पड़े होंगे, उनके वास्ते तुम क्यों प्रार्थना नहीं करते? मोहवश तुम्हें इधर आना पड़ा है। प्रभु भावी को कौन मिटा सकता है?''

यहां ब्यान करना ठीक मालूम होता है कि प्रेमी हरबंस लाल बड़ा सुशील और सेवादार कुर्बानी करने वाला प्रेमी था। इसका सबूत इस वाक्या से मिलता है। एक बार एक प्रेमी ने सम्मेलन के ख़र्च की सेवा का वायदा किया हुआ था। मगर जब सम्मेलन का मौका आया तो ख़ामोश हो गया। इस समय प्रेमी हरबंस लाल ने अपनी औरत के ज़ेवरात गिरवी रखकर रुपया लाकर दे दिया और सम्मेलन हो गया। जिस प्रेमी ने वायदा करके सेवा नहीं की थी उसके यहां डाका पड़ गया और डाकू उसके घर का काफी ज़ेवर व माल लूट कर ले गए । जब तार शुभ स्थान पर पहुंची तो वह फ़ौरन चला गया। यद्यपि डाकू बाद में पकड़े गए, रुपया मिल गया, मगर अज़ीब बात यह हुई कि डाकू भी बरी हो गए और रुपया भी प्रेमी को मिल गया।

दूसरा काबले ब्यान वाक्या यह है कि श्री महाराज जी कारकुट नाग जंगल में थे। प्रेमी हरबंस लाल को, जिसकी तबियत उस वक्त खराब हो रही थी, ख़ास तौर पर बुलाने के लिए पत्र लिखा गया। मगर उसके पिता ने उसे वहां नहीं आने दिया। उसकी बीमारी आहिस्ता-आहिस्ता

बढ़ती गई और तपेदिक की शक्ल इख़्तियार कर गई। उस वक्त यह विचार भी हुआ, कर्म चक्कर अमिट है। अगर उस वक्त वो जंगल में आ जाता तो आशा थी कि आबो-हवा से ही उसे आराम आ जाता।

इसके बाद चौधरी जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! संतों के पास बड़ी ताकत होती है। रेख में मेख मार (असंभव को संभव करना) सकते हैं। कृपा दृष्टि करें। भिखारी बनकर आपके दर पर आए हैं।

श्री महाराज जी:- चौधरी! तुम बच्चों वाली बातें करते हो। क्या तुम प्रभु आज्ञा नहीं मानते? अपने कर्मों के फल को नहीं जानते? छुटकारा शुभ कर्म करने में है। तुम आए हो, तुम्हारा आना कुछ न कुछ लाभकारी ही रहेगा। पर जितनी देर दु:ख भोगना है, भोगना पड़ेगा। पहाड़ की राई तो रहेगी ही। अच्छा, भोजन वग़ैरह पाओ।

चौधरी जी कहने लगे:- ''भोजन खा आए हैं। अब रात को जैसा हुक्म होगा पा लेंगे।'' काफी देर तक विचार चलते रहे। एक-दो दिन ठहर कर प्रेमी नमस्कार करके जब विदा होने लगे तो पांच रुपये निकालकर भेंट करने लगे और अर्ज़ की:- महाराज जी! लंगर में डालने के लिए बनारसी दास को लेने का हुक्म दें।'' श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! यह होटल नहीं है। न ही रास्ते में सफ़र करने वालों से सेवा करवाते हैं। अपना भाग जीव को कहां से कहां ले जाता है। तुम अपने आप आए हो। किसी के बुलाने से थोड़े ही आए हो। अवश्य समय पर दाना-पानी खींच कर ले आता है, फिर किसी समय देखा जावेगा।'' आखिर प्रणाम करके प्रेमी वापिस आ गए।

भक्त बनारसी दास उन्हें छोड़ने गए। वापसी पर जब डाक लेने सेठ जी की दुकान पर गए तो सेठ जी ने सेब ले जाने को कहा और साथ लेकर एक दुकान पर गए। जब सेब देखे गए, वह बहुत उत्तम थे। सेठ जी ने ढाई सेर सेब ले दिये और कहा:- रोज़-रोज़ ऐसे नहीं आते। जब इन्हें लेकर भक्त जी चरणों में पहुंचे और उन्हें चरणों में रखा तो बहुत सेब देखकर अपने फरमाया:- इतने क्यों ले आए हो? भक्त जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! यह खराब नहीं होते। एक-एक रोज़ पकाते आठ रोज़ लग जावेंगे।'' इस पर आपने पूछा, ''क्या खर्च करके आए हो?'' भक्तजी ने बताया:- ''पांच रुपये के आए हैं।'' इस पर आपने फरमाया:- ''तुमने आगे कभी नहीं बताया कि प्रेमी इतनी रकम खर्च कर रहा है। फ़कीर बीमार क्या हुए बिचारे के वास्ते सख्ती आ गई है?''

भक्त जी ने अर्ज़ की:- ''सेठ जी बड़े प्रेम से हर एक चीज़ लेकर देते हैं।''

श्री महाराज जी ने इस पर फरमाया:- ''प्रेमी! तुम अपने पास से ले आया करो। पैसे तुमने क्यों दबाकर रखे हुए हैं?'' भक्त जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! कभी-कभी अपने पास से भी ले आता हूं। दुकान पर पहुंचते ही पूछ कर वह पैसे भी दे देते हैं। श्री महाराज जी ने फिर फरमाया:- ''प्रेमी, उन पर इतना बोझ मत डालो।''

अब वापसी का प्रोग्राम का विचार हो रहा था कि प्रेमी अमीर चंद, जो ऊंचा सुनता था, आ गया। नमस्कार करके बैठा ही था कि श्री महाराज ने पूछा:- ''आने से पहले पत्र द्वारा पता क्यों

नहीं कर लिया?'' अमीर चंद कहने लगा:- महाराज जी! क्या कभी पहले भी इज्ज़ाज़त लेकर आता रहा हूं? आपके दर्शन करने आ गया। अब पता लगा इज़ाज़त लेनी भी ज़रूरी है।

श्री महाराज जी हँसे। प्रेमी साधारण तबीयत का था और बड़ा सेवादार था। प्रेमी ने आस-पास निग़ाह डालकर कहा:- ''इन अंग्रेज बिल्लों ने नम्बड़ कपी-कपी के कह बनाई छोड़ा है'' (यानि अंग्रेजों ने पहाड़ों को काट-काट कर क्या बना दिया है?)

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''तुम्हारे लिए नम्बड़ हैं। अंग्रेजों ने लाखों रुपया खर्च करके आलीशान जगह बना दी है। तुमने पहली दफ़ा पहाड़ी शहर देखा है। अंग्रेजों ने अपनी अक्ल से काम लिया है। बेशक पैसा और मज़दूर हिन्दुस्तान के थे, मगर हिन्दुस्तान को बनाया भी है। गो नुमायशी जीवन सबका बनाकर त्रट्टी-चौड़ कर गए हैं। आगे कौन पहाड़ों पर आकर रहता था? जिस जगह पैदा हुए सारी उम्र वहां ही गुज़ार दी। बहुत सारे सुख के सामान भी उनकी मेहरबानी से पैदा हुए। पहाड़ों की चोटियों तक गाड़ी ले आए हैं। वह लोग संसारी जीवन को अच्छी तरह व्यतीत करने में माहिर थे। पहाड़ी इलाका ही ज़्यादा पसंद करते थे। अच्छी आदतें उनकी किसी ने धारण नहीं कीं। जो कुलक्षण थे सीख लिए हैं। तुम अच्छी तरह देखभाल कर जाना, कोई कसर न रह जाए।'' इसके बाद सत्संग किया गया। अमीर चंद को दूसरे कमरे में जगह ठहरने की दी गई।

श्री महाराज जी ने इसके बाद भक्त जी को फरमाया:- ''प्रेमी! शाम से फिर तकलीफ़ है। प्याली चाय बना लाओ। पोडर थोड़ा लिया जावे। भक्त जी चाय बना लाये। फिर विचार उठा कि पन्द्रह दिन के बाद फिर क्यों तकलीफ़ हो गई? और पूछा गया:- ''अगर आज्ञा हो तो डाक्टर साहब को फिर लिखा जावे।'' उस पर आपने फरमाया:- ''अभी किसी को पता मत दो, देखा जावेगा। बार-बार खाने-पीने का प्रोग्राम ठीक नहीं लग रहा। अब सेब वग़ैरा पकाने की भी ज़रूरत नहीं । पहले की तरह सिर्फ़ एक दफ़ा ही चाय लाया करो। तुम्हारे इन डाक्टरी तरीकों ने चोंचलों में डाल दिया है।'' भक्त जी को जाकर सोने की आज्ञा दी।

कोई दो घंटे के बाद एकदम उठकर बाहर आ गए। साथ वाले कमरे में दरवाजा बंद करके एक लोहे की बाटी में कै कर दी। भक्त जी को सोये हुए आवाज़ आ गई। एकदम उठकर चरणों में हाज़िर हो गए और आकर देखा, श्री महाराज जी घबराहट में हैं। सर्दी काफी थी। सिर, पीठ दबाये गए और आसन पर लाया गया। पांच मिनट के बाद चैन मालूम हुआ, फरमाने लगे:- ''प्रेमी! जाकर आराम करो।'' आप लोई लेकर लेट गए और फरमाया:- ''प्रेमी! इनकी तकलीफ़ ने तुम्हें भी बे-आराम कर दिया है।'' फिर फरमाया:- ''जाओ, जाकर आराम करो।'' भक्त जी जाकर सो गए। नींद दिन निकलने पर खुली। जाकर ग्वाले से दूध लाया गया। श्री महाराज जी रात को बाहर चले गए। जब बाहर से पधारे, स्नान नहीं किया और कहा, ''यह ठंडे पानी का ही नुक्स न हो और फरमाया:- सेठ तारा चंद को न बताना। थोड़ी चाय दूध में डालकर लाओ।'' शारीरिक स्वास्थ्य खराब होने पर आपने फरमाया:- ''रोगी शरीर को रखना फ़कीरों के वास्ते उचित नहीं है। क्यों न इसे सुबह सवेरे ही इस चोटी से नीचे धकेल दिया जावे? अब इसे रखने का कोई फ़ायदा नहीं है।''

अर्ज़ की गईः- ''महाराज जी! आप सारे विश्व के मालिक हैं और इस शरीर रूपी संसार के भी। अपनी मर्ज़ी के मुताबिक आप इसे उत्पन्न और लय कर सकते हैं। मगर ऐसा करने से क्या लाभ होगा? यह समझ में नहीं आ रहा है। ऐसा खुद-ब-खुद करने का आप क्यों विचार कर रहे हैं? हमारा इम्तेहान इस तरह न लें। हम अंजान हैं। वैसे योगी जिस समय चाहें शरीर बदल सकते हैं। इसमें आपके वास्ते कोई बड़ी बात नहीं। देखना यह है कि यह शारीरिक कष्ट आया ही क्यों?''

श्री महाराज जी ने फरमायाः- ''प्रेमियों! फ़कीरों को भी प्रारब्ध कर्म चक्कर से गुज़रना पड़ता है। घबराते तो नहीं, सिर्फ़ किसी समय तुम लोगों के दिल को देखा जाता है। तुम्हारे अंदर आत्म रूप क्या बोलता है? देखो! अब किस-किस को इम्तेहान से गुज़रना पड़ता है। जिन-जिन का इनके साथ सम्बंध है उन सबको परेशानी होगी। समय-समय पर रंग बदलता है।''

एक शाम अंधेरा होने वाला था कि अंग्रेज, जो ऊपर रहता था, नीचे आ गया और दरवाज़ा खटखटाया और पूछाः- ''महात्मा जी की तबियत का क्या हाल है? हम कुछ खिदमत कर सकता है?'' श्री महाराज जी ने फरमायाः- ''सब ठीक है। कोई फिक्र वाली बात नहीं। फिर 'गुड नाइट' करके चला गया।

उसके बाद श्री महाराज जी ने फरमायाः- ''इसको इस समय क्या सूझा है? बड़ा ही साबर और विश्वासी प्रेमी है। किस तरह का निर्भय जीवन बना रखा है। असली खुदा-परस्त है। कुदरत आप ही हर एक को शिक्षा देती है। जो भी उसकी राह पर चलने वाले हैं और निज़ात का शौक रखते हैं उनको हर समय मदद मिलती रहती है। किसी का मोहताज़ नहीं होना पड़ता। अब उसे किसने फ़कीरी जीवन का सबक दिया है। दरअसल अंतर से हर एक इस लाजवाल (एकरस) खुशी का चाहतक है, चाहे वह किसी देश का रहने वाला है। उनके सामने भी अपने पैग़म्बर ईसा की ज़िंदगी मौज़ूद है।''

एक प्रेमी को पत्र लिखा गया, जो निम्नलिखित है:

आशीर्वाद पहुंचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् अनुराग देवें। तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी। तमाम संगत को भी आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी, आगे भी पत्र का जवाब दिया गया था, ख़बर नहीं क्यों नहीं मिला? सो दोबारा मुख्तसिर (संक्षेप में) सा विचार लिखा जाता है। सो विचार कर लेवें। जो-जो भी गुरमुख जीवन अपने सामने बुज़ुर्गों का जीवन प्रेम से विचार करता है कुछ न कुछ असर ज़रूर उसके जीवन पर होता है। ईसा की ज़िंदगी भी इबादत, त्याग और ख़िदमत का आला से आला सबक दे रही है। महापुरुषों का जीवन जुगा-जुग तक असर अंदाज़ रहता है। हां, जीव इधर ध्यान देवे तो तन-मन-धन से सेवा करने का जज़्बा उनके अंदर भी कमाल दर्ज़े का था। वैसे हर एक महापुरुष का परउपकारी जीवन होता है। चाहे पूर्व में हुआ हो या पश्चिम में।

अस्वस्थ हालत में भी सत्पुरुष रात के चार बजे बाहर तशरीफ़ ले जाते। हमेशा की तरह आज भी बाहर तशरीफ़ ले गए। जब बाहर से वापसी पधारे, गर्म पानी से स्नान किया और फरमायाः- ''प्रेमी! दूसरी गड़वी भी खिसककर न मालूम किधर चली गई। ऐसा प्रतीत होता है कि

शारीरिक दु:ख जल्दी पीछा छोड़ने वाला मालूम नहीं होता। फ़कीर की चीज़ का गुम होना मामूली बात नहीं।''

प्रेमी डा० भक्त राम जी के पत्र आ रहे थे कि श्री महाराज जी दिल्ली तशरीफ़ ले आवें, वहां इलाज किया जावेगा। अन्य प्रेमी, दिल्ली निवासी, भी दिल्ली तशरीफ लाने की प्रार्थना कर रहे थे। जब विचार हुआ कि शायद सेहत की ख़राबी का कारण इसकी आबो-हवा न हो, इसके अलावा सर्दी भी काफी होने लगी थी, इसलिए आपने भक्त जी को फरमाया:- अब यहां से रवानगी का प्रोग्राम बनाओ। 27 सितम्बर को यहां से रवाना हो चलो।

दूसरे दिन सुबह सेठ ताराचंद जी आए। भक्त जी ने सेठ जी को प्रोग्राम रवानगी से सूचित किया और कहा:- डाक्टर जी को दिल्ली सूचित कर देवें, इधर से संगत को सूचित कर दिया जावेगा। सेठ जी ने श्री महाराज जी की सेवा में अर्ज़ की:- महाराज जी! किसी और डाक्टर को इस जगह बुला लाते हैं। ठीक तरह आराम आ जाए तब इस जगह से किसी दूसरी जगह जावें। बीमारी की हालत में जाने देना हमारे लिए ठीक मालूम नहीं होता।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! शायद सर्दी का ही नुक्स हो। अब सर्दी भी ज़्यादा हो रही है। उधर भी डाक्टर साहब आपके सम्बंधी हैं। किसी ग़ैर जगह थोड़े जा रहे हैं। इस बात पर आप विचार न करें। आपने बड़ी सेवा की है।'' प्रोग्राम पुख़्ता हो गया है। सेठ जी ने अर्ज़ की:- वह भी साथ दिल्ली तक चलेंगे।

भक्त बनारसी दास जी ने खाना वग़ैरा बनाने के बाद फालतू सामान सेठ जी के गृह पर पहुंचाया।

154. शिमला से रवानगी

रवानगी से पहले रात के आठ बजे के करीब प्रेमी बनवारी लाल जी बारलूगंज, मसूरी से आ गए। श्री महाराज जी के चरणों में प्रणाम करके बैठे। श्री महाराज जी ने पूछा:- ''तुम किधर?'' बनवारी लाल कहने लगे:- ''दर्शनों के लिए हाज़िर हुआ है। यहां दो-चार रोज़ चरणों में ठहरने का विचार है। संसार के धंधे तो जीव को निकलने नहीं देते। आपकी कृपा जिस पर हो जावे, तो वह ही प्रेमी इस भव दुस्तर से पार हो सकता है, वर्ना हम जैसे माया के कीड़े इस घूमर-घेर (माया चक्र) से नहीं बच सकते। जा किसी और तरफ रहा था, रास्ते में विचार आया कि आपके दर्शन करके कृतार्थ हो जाऊं। एक दम इधर का रुख कर लिया।''

श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''प्रेमी! तुमने ख़्वाह-म-ख़्वाह तकलीफ़ की है। पत्र लिखकर दरयाफ़्त कर लेते तो बेहतर था। अब तो सुबह दिल्ली जा रहे हैं। यहां का आब-ओ-दाना पूरा हो चुका है। जितना तुमने हवा पानी लेना है, ले लो। अब क्या खाना है?''

प्रेमी बनवारी लाल ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! खाना कुछ नहीं, आज व्रत है। सुबह देखा जावेगा।'' कुछ दूध पड़ा था, वह पिलाया गया।

सुबह उठकर बकाया सामान भी सेठ तारा चंद के गृह पर पहुंचाया गया। जाते समय सेठ तारा चंद जी व उनकी धर्मपत्नी ने एक सौ एक रुपये चरणों में भेंट किये। सत्पुरुष ने उसे उठाकर उनकी झोली में डाल दिया और फरमाया:– ''प्रेमी! आगे तुमने बड़ी सेवा की है। इस समय और कोई सेवा का प्रोग्राम नहीं । ज़्यादा नकदी पास रखना हानिकारक है। सफ़र के वास्ते प्रेमी के पास कुछ रकम है। जब कोई सेवा का समय आया तो तुम्हें लिखा जावेगा। फ़िक्र न करें। अब जिधर जा रहे हैं वहां सेवादार प्रेमी मौज़ूद हैं।'' इसके बाद श्री महाराज जी ने प्रशाद, जो पास पड़ा था, उसमें से कुछ उठाकर सेठ जी व उनकी धर्मपत्नी को दिया और फरमाया:– बाकी बांट दो।

इसके बाद श्री महाराज जी को कालका पहुंचाने का विचार होने लगा। प्रोग्राम यह बना कि भक्त बनारसी दास जी व प्रेमी बनवारी लाल जी गाड़ी द्वारा कालका जावें। गाड़ी 7–8 घंटे में वहां पहुंचती थी और श्री महाराज जी को कार द्वारा वहां पहुंचाया जावेगा। कार 4 घंटे में पहुंच जाती थी। श्री महाराज जी से आज्ञा लेकर भक्त जी व प्रेमी बनवारी लाल गाड़ी में सवार होने के लिए रवाना हो गए और मोटर बाज़ार तक सेठ जी छोड़ने आए और भक्त जी से माफ़ी मांगी कि उनको अलेहदा रवाना किया जा रहा है क्योंकि माता जी की तबीयत ठीक नहीं और लम्बे सफ़र से श्री महाराज जी को तकलीफ़ होगी इसलिए कार का प्रबंध किया गया है। भक्त जी रात के सवा नौ बजे कालका पहुंचे। गाड़ी पौने घंटे लेट पहुंची। श्री महाराज जी पहले पहुंच चुके थे। कलकत्ता जाने वाली गाड़ी में सैकिंड क्लास का टिकट लेकर श्री महाराज जी को लिटा दिया गया। रात को बारह बजे गाड़ी रवाना हुई। जब अम्बाला स्टेशन पर पहुंची, प्रेमी बनवारी लाल जी उससे उतर कर चरणों में हाज़िर हुए और प्रणाम करके आज्ञा मांगी, और अर्ज़ की:– मेरठ से होता हुआ बुलन्द शहर जाऊँगा।

28 सितम्बर को गाड़ी सुबह 7 बजे दिल्ली पहुंची। दिल्ली निवासी प्रेमी सब प्लेटफ़ार्म पर मौज़ूद थे। सबने चरणों में प्रणाम किया और फूलों के हार पहनाये और 'ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार' के नारे लगाए। श्री महाराज जी को टैक्सी में बैठा करके ठाकुर मुक्त राम के बाग के कमरे में पहुंचाया गया। बाकी संगत के प्रेमी तांगों से वहां पहुंचे। कमरे साफ करके दरी वग़ैरा उसमें बिछाई हुई थी। उस पर आसन लगाया गया।

डा० भक्त राम जी से श्री महाराज ने फरमाया:– कल से तो कुछ आराम ही है, हालांकि सफ़र में बेआरामी रही है। कुछ भारीपन महसूस हो रहा है। आज का दिन देखते हैं, फिर अच्छी तरह बैठकर विचार कर लेना। उसके बाद सब प्रेमियों को जाने की आज्ञा दी ताकि जाकर अपना–अपना काम करें।

श्री महाराज जी की ख़राब तबियत को प्रेमी महसूस कर रहे थे। इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया:– संगत की सेवा के लिए आना हुआ था मगर इस समय कुछ शरीर की ऐसी स्थिति है कुछ पता नहीं लगता। पल में यह तोला और पल में माशा हो जाती है। न मालूम किस समय दौरा शुरू हो जाता है। इनको ख़ुद समझ नहीं आ रही । कल सुबह से बिलकुल आराम था। अभी चाय

लिए घंटा नहीं गुज़रा, भारीपन महसूस होना शुरू हो गया है। तबियत मितल रही है। उल्टी आ जावे तो बेहतर होगा। सत्संग का प्रोग्राम जिस तरह मुनासिब समझो रख लो। शायद फ़कीर पहले की तरह समय न दे सकें। ज़्यादातर इनको एकांत में ही रहने दिया जाए। कमरा बंद रहे तो बेहतर है। कोई ख़ास बात हुई बुला लिया जाएगा, सेवादार मौज़ूद ही हैं। बाबू, डाक्टर जी को जब ज़रूरत हुई इत्तला कर सकता है। वैसे यह खुद भी रोज़ाना आवेंगे। बाकी जैसी ईश्वर आज्ञा। दुखियों के साथ दुःख उठाना ही पड़ता है।

सत्पुरुष के आने की सूचना मिलने पर प्रेमी दर्शनों के लिए आने लगे। सबको वक्त की पाबंदी के बारे में सूचित किया जाता। शाम के पांच बजे सत्संग हुआ। सत्संग महामंत्र व मंगलाचरण से शुरू हुआ। वाणी का पाठ हो चुकने के बाद सत्पुरुष ने अमृत वचनों द्वारा प्रेमियों को निहाल किया और फरमायाः- ''जो भी जीव शरीर धारण करके संसार में आता है उसे सुख-दुःख भोगने ही पड़ते हैं। गुरु, पीर, अवतारों को भी दुःख भोगने पड़ते हैं। ऐसी महान आत्माओं को तो मुसीबतों का ज़्यादा सामना करना पड़ता है, मगर वह ईश्वर आज्ञा को मानते हुए डांवाडोल नहीं होते। ज़ाहिरा वह तकलीफ़ में ही नज़र आवें मगर अंतर से वह असंग होते हैं। कर्म भोगों को ज्ञानी विचार से काटते हैं और अज्ञानी रोकर काटते हैं। प्रारब्ध कर्म अवश्य हर एक को भोगने पड़ते हैं। सत्-पुरुषों में केवल प्रारब्ध कर्म ही रह जाता है जिनका इवज़ाना दुःख या सुख इन्हें भोगना पड़ता है। मगर वह प्रभु भावी में दख़ल नहीं देते। आईंदा का लेखा वह ख़त्म कर चुके होते हैं। माया की लपेट से कोई जीव बच नहीं सकता। आम संसारी तो सुखों के समय गाफ़िल हो जाते हैं और दुःख आने पर हाहाकार करते हैं। जो भी शरीर धारी आया है बैचेन है, दुःखी है। मगर जिनकी बुद्धि सत् से अंतर में जुड़ चुकी है वे मन को विलग करके प्रकृति के दोषों से बचे रहते हैं। राम, कृष्ण, ईसा, पीर, पैग़म्बर, अवतारों को भी प्रकृति के दोषों से दो-चार होना पड़ा। त्रैगुणमई चक्कर ने सबको लपेट में लिया। शुभ-अशुभ संचित कर्मों का भोग दुःख या सुख इन्हें भी भोगना पड़ा। चाहे कोई राजवंश में पैदा हुआ हो चाहे भिखारी के भेष में, कुदरती नियम सबके वास्ते आदिकाल से एक जैसे ही होते हैं। जैसी रचना ईश्वर ने रच रखी है उसी के अनुकूल अपने आप जीव शुभ-अशुभ कर्म करते हुए लाभ-हानि, दुःख-सुख को प्राप्त होते रहते हैं। कोई विरला ही विवेकी पुरुष मनोबल से इस संसार से अपने सच्चे ठिकाने को वापिस होता है। बाकी सब जीव बेहोश बुद्धि धारण किये हुए माया जाल में ग्रस्त जन्म-जन्मांतर तक भटकते रहते हैं। उनको कोई रास्ता शांति का दिखाई नहीं देता। इस वास्ते नित कर्म-गति का विचार करते हुए सत् कर्मों को धारण करके इस चक्कर से निकलना चाहिए। ईश्वर सबको सुमति देवें ताकि अन्धकार के ज़माने में अपना कल्याण कर सकें। यह नया-नया राज मिला है, इसको सम्भालने के लिए भी सही अक्ल की ज़रूरत है, वर्ना ऐश व इशरत में फंस कर सब बुद्धि हीन हो जावेंगे। संसार में शांति से समां तब गुज़रेगा जब राजा भी नेक हो, प्रजा भी हुक्म मानने वाली हो और एक दूसरे की बेहतरी के विचार भी हों। 'चूल्हे की तेरी तवे की मेरी' या 'बेईमानी तेरा आसरा' से काम नहीं चलेगा। राम राज्य का

ढिंडोरा पीटा जा रहा है। पहले कोई राम तो बने तब जाकर वैसा आराम मिल सकेगा। तब शेर-बकरी एक जगह पानी पी सकेंगे। राज गरदी के समय यानि जब इंकलाब आता है या तबदीली होती है, लोहा और लहू एक हो जाया करता है और तब जाकर सिर पर छत्र धारण होता है। जितनी तकलीफ़ मुसीबत आनी चाहिए थी उतनी नहीं आई। घर बैठे ही गद्दियों के मालिक बन गये हैं। संसारी भोग पदार्थ हासिल करने के वास्ते सिर धड़ की बाजी लगा देते हैं। इसी तरह उस परम पदार्थ व मन की शांति के लिए भी जीते जी ही मरना पड़ता है। परमार्थ की ज़िंदगी में मौत को कबूल करने वाले अखंड सुख और शांति को अनुभव करके हज़ारों जीवों को सुख के मार्ग पर लगा जाते हैं।

''इसके खिलाफ़ मोहवादी सदा ही राग-द्वेष की अग्नि में जलते रहते हैं। कई राजे-राने, अमीर-ग़रीब संसार में पैदा होकर ख़त्म हो गए। उनके नाम व निशान भी मिट गए। उन्होंने मानुष जीवन को कृपा करके पर-उपकारी मार्ग में लगाया, वह ही संसार में गुरु, पीर, अवतार कहलाये। हर शांति के मुतलाशी (जिज्ञासु) जीव को सतमार्ग पर चलना चाहिए। बार-बार सत्संग सुनने का मकसद ही यह है कि सत् साधन प्राप्त करके अपने जीवन को सफल कर सकें। ईश्वर सबको सत्बुद्धि देवें।'' इसके बाद वैराग्य वाणी पढ़ी गई और आरती व समता मंगल उच्चारण करने के बाद प्रशाद बांटा गया।

श्री महाराज जी की सेहत दिन-प्रतिदिन ख़राब होती जा रही थी। यद्यपि डा० भक्त राम जी अपनी तरफ से पूरा यत्न कर रहे थे मगर उनकी सब कोशिश व्यर्थ जा रही थी। कमज़ोरी भी बढ़ने लगी। जिसका नतीजा यह हुआ कि निमोनिया की भी शिकायत हो गई। बावज़ूद इतने कष्ट के सत्पुरुष ने अपना दैनिक प्रोग्राम यानि रात को बाहर चले जाना बराबर जारी रखा। शारीरिक कष्ट को देखते हुए अगर कोई प्रेमी अर्ज़ भी करता कि इस प्रोग्राम को बंद करें और बाहर न जाया करें तो इसके उत्तर में फरमाते:- ''फ़कीर तुमसे ज़्यादा समझते हैं। जब-तक होश है अपने प्रोग्राम में फ़र्क नहीं आने दिया जायेगा।'' कुछ अर्सा बाद निमोनिया से आराम आ गया। आपने इस पर फरमाया:- ''झटका कष्ट का बाकी रहता था, उसने भी अपना रंग दिखा दिया है। अब सेहत बहाल हो रही है।''

एक दिन सत्संग हो रहा था। प्रेमी सत्संग का लाभ उठा रहे थे। अभी कुछ समय समाप्ति में रहता था। आपने फरमाया:- ''जल्दी आरती शुरू करो।'' आरती के बाद जब प्रशाद बंटना शुरू हुआ, आप उठकर बाहर चले गए। कुछ दूर जाकर कै की। ऐसा तीसरी बार हुआ। भक्त जी को फरमाया:- ''कहवा बनाओ।'' कहवा तैयार करके पिलाया गया, इसके बाद विचार हुआ किसी हकीम या डाक्टर को बुलाकर भी दिखाया जावे।

इन्हीं दिनों में प्रेमी हरबंस लाल भी भवाली सेनीटोरियम से वहां आ गया। उसके शरीर में भी कमज़ोरी बहुत थी। वह सहारा लिए बैठा था। आपने फरमाया:- ''प्रेमी! कर्म चक्र आशीर्वाद, जादू-टोने वग़ैरा से ख़त्म नहीं होता। यह किसी गुरु, पीर, अवतार को अपनी लपेट में लिए बग़ैर

नहीं रहता इसलिए जैसे प्रभु रखें शुक्र करना चाहिए। कर्म चक्र अमिट है, जो होना होता है होकर रहता है। दु:ख को कौन चाहता है? मगर समय पर शरीरधारी को तकलीफ़ उठानी पड़ती है। गुणों का चक्कर बड़ा ज़बरदस्त है। कर्म गति गहन है। बड़े-बड़े अवतारों को भी चक्कर में डाल देती है। जब भावी (प्रारब्ध) आकर चक्कर देती है उस समय उसकी आज्ञा में सब कुछ छोड़ने से धीरज और शांति मिलती है। इनकी तरफ देखो। मामूली सी बात किसी की समझ में नहीं आ रही । कितना संयमी जीवन है। आप सबके सामने हवा-पानी भी तोलकर लिया जाता है। इतनी परहेज़गारी है, मगर जो अपने आपको इस चक्कर से नहीं छुड़ा सकते वह दूसरों को कैसे छुड़ा सकते हैं? इनके जीवन की तरफ देखो, यह जो दु:ख हो रहा है यह भी सबक देने वाला है। ऐसे समय में ही मित्र-शत्रु का पता लगता है। जिनके वास्ते यह जीव दिन-रात एक कर देता है, आख़िरकार वह भी ऐसे समय में तंग आ जाते हैं। सिर नीचा करके सबकी सुनो और समां काटो, जैसे कटे।''

प्रेमी हरबंस लाल कहने लगा:- ''महाराज जी! आपने यह माया मेरे वास्ते ही रच रखी है। बीमार बन गए हैं। आपने कई दु:खी जीवों के दु:खों को दूर करने के वास्ते अपने शरीर पर कष्ट ले रखा है। इस तरह हमारे विश्वास में कमी नहीं आ सकती। इस दर के सिवाए हमारे वास्ते कोई दरवाज़ा नहीं, जहां जाकर प्रार्थना की जावे।'' इसके बाद प्रेमी आज्ञा लेकर विदा हुआ। भक्त जी साथ छोड़ने गए। रास्ते में प्रेमी ने भक्त जी से कहा:- ''मामा जी! आप दास के वास्ते प्रार्थना करें। बहुत ही दु:खी हूं। तीन दफ़ा खुदकशी का विचार उठ चुका है। मगर उसे रोक दिया जाता रहा है।'' शाम को खाना खाने के बाद प्रेमी चरणों में हाज़िर हो गए। फिर विचार होने लगा कि किसी और डाक्टर या हकीम को दिखाया जावे। श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''इधर से लोगों को क्या कहा जाए? तुम लोगों को अपनी समझ होनी चाहिए। कुछ भी अपनी जिम्मेदारी नहीं समझते हो। अभी तुम पर कोई बोझ नहीं डाला जा रहा है। कोई दवाईयों का खर्चा ही नहीं। ज़रा माशा सौंठ, अजवाइन द्वारा ही इलाज करवाना चाहते हैं, वह भी समझ नहीं आ रही। ख़ैर, जैसा मुनासिब समझो करो। जाओ, अब आराम करो। अब लकड़ियों को न दबाओ। सब प्रेमी खामोश होकर बैठे रहे। सत्पुरुष कुछ देर अपने निजि आनन्द में मस्त रहे। जब आंखें खोलीं सबको बैठे पाया। घड़ी देखी गई, ग्यारह का वक्त हो गया था। इस पर फरमाया:- ''प्रेमी! जाओ, बहुत वक्त हो गया है।'' और आप चादर लेकर लेट गए। जिन प्रेमियों ने जाना था चले गए, बाकी वहां ही अंदर-बाहर आराम करने के लिए लेट गए।

दूसरी सुबह जब श्री महाराज जी बाहर से आए और मुंह-हाथ धोकर ऊपर कमरे की छत पर धूप में बैठे। भक्त जी चाय तैयार करके लाए और सेवन करवानी शुरू की। आपने उस समय भक्त जी से पूछा:- ''किस-किस का दूध आता है?'' भक्त जी ने अर्ज़ की:- दूध गाय, भैंस दोनों का आता है। मगर आपके लिए ख़ास गाय का दूध प्रेमी भक्त प्रेम चंद और लख्मी चंद ने इंतजाम कर रखा था। दूध अलग-अलग गर्म किया जाता था।

फरमाने लगे:– ''प्रेमी सुनना! हकीम, सुनार, राजा और डकैत के घर का अन्न-पानी भी ग्रहण नहीं करना चाहिये। यह तो लंगर में देखने नहीं जाते, तुम विचार किया करो।''

भक्त जी ने अर्ज़ की:– ''दूध तो ग्वालों के घर से लाया जाता है।''

इस पर आपने फरमाया:– ''कमाई तो उनकी खर्च होती है। न जाने किस दलिद्री का पैसा उनके घर में आता है। वह ही खोटी कमाई का धन जिस तरफ जायेगा दु:ख, अशांति ही देने वाला होगा। राजाओं और हकीमों के घर में अव्वल तो औलाद होती ही नहीं और अगर होती है तो बेढंगी, बेअक्ल व अय्याश, ऐसा कोई नहीं देखा जिसका व्यौहार शुद्ध रूप में हो। पहले ज़माने में राजा और हकीम, वैद्य नज़राना पर जीवन निर्वाह करते थे, किसी से कुछ मांगते नहीं थे। जो आया उसमें से जो खर्च हो गया कर लिया बाकी तकसीम कर दिया करते थे। ज़्यादा समय भजन, बंदगी में देते थे। हर जीव मात्र का दु:ख दूर करना फ़र्ज़ समझते थे। फ़र्ज़ समझ करके जो दूसरे की सेवा में अपने आपको हर समय पेश करता है वह शांति को प्राप्त होता है।

अन्नी पीसे ते कुत्ती चटे, आटा घटे के न घटे।

''हर एक जीव अपने-अपने दाओं में खड़ा है। गुरुओं को अपनी कार (सेवा) भेंट से मतलब है, चाहे कैसे ही व्यौहार से धन कमाया हुआ हो। शिष्य चाहते हैं कोई कुछ न कहे, जो मर्ज़ी हो करते जावें। कई प्रकार की कामनाओं से भरी हुई सेवा-भेंट जब लाकर रखी जाती है, वह अपना असर ज़रूर दिखाती है। ज़हर जो खायेगा, असर किये बग़ैर नहीं रहेगा। इसको पचाने वाले कोई विरले ही होते हैं। इस वास्ते कम से कम दूध को ग्रहण किया जाता है संतों के लिए ही मक्खन आया करता है, छाछ जगत के वास्ते रखा जाता है।''

अर्ज़ की:– ''इसका मतलब क्या है?'' इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया:– ''प्रेमी जो ऐसी भेंट श्रद्धा, विश्वास से कष्ट करके लेकर आते हैं उनकी भेंट ग्रहण कर ली जाती है। मगर फिर भी वह रगड़ा दिये बग़ैर नहीं रहती। अच्छा, जरा ख़्याल करके खूब प्रेम से सब चीज़ें तैयार किया करो। तुम्हारी लाग़र्जी (निष्कामता) से की हुई सेवा ही शुद्ध कर देगी। जमा करके कोई चीज़ न रखा करो। आने वालों को खूब खिलाया-पिलाया करो । प्रशाद रूप में इधर लाया करो।''

ग्यारह बजे के करीब मलिक भवानी दास जी एक डाक्टर को साथ लेकर आ गए। उसने आकर श्री महाराज जी के शरीर के भिन्न-भिन्न हिस्सों छाती, पेट वग़ैरा को अच्छी तरह देखा और जबानी हालात पूछने के बाद कहने लगा:– ''अन्न-पानी खाने-पीने वाले का इलाज तो हम कर सकते हैं। ख़ुराक भी बहुत थोड़ी है। मौज़ूदा शारीरिक अवस्था ख़ुराक की कमी होने के कारण है। इनके लिए कोई दवाई तजवीज़ करनी भी मायने रखती है। दूध में ज़रा वृद्धि करनी पड़ेगी। कुछ सब्जी पकाकर गाजर वग़ैरा और फल अंगूर, पपीता वग़ैरा सेवन करवायें। नर्वस सिस्टम कमज़ोर है, ख़ुराक के बिना इनमें ताकत आनी मुश्किल है।'' अपनी डाक्टरी असूल के मुताबिक बहुत कुछ बताकर डाक्टर चला गया। उसकी फीस 32 रुपये थी, और भी कार का खर्च वग़ैरा भेंट किया गया और प्रेमियों ने उसे विदा किया।

श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''तकलीफ़ किधर है और यह लोग किधर टूटियां लगा-लगाकर देखते हैं। बीमारी क्या है, इनके दिमाग़ में नहीं बैठती? सिवाये ख़ुराक पर ज़ोर देने के इनको और कोई बात सूझती ही नहीं। अच्छा, दो-चार रोज़ इसका तरीका भी देख लो।''

पहले रोज़ जब उसकी दवाई इस्तेमाल करवाई गई उसने बहुत तकलीफ़ पैदा कर दी। श्री महाराज जी ने उसकी दूसरी ख़ुराक ग्रहण नहीं की। फरमाया:- ''किसी को कुछ समझ नहीं आती। ऐसे ही पैसे बर्बाद मत करो। ईश्वर आज्ञा पर रहने दो। जो आता है अपनी नई हकूमत चलाता है।'' चंद दिनों के वास्ते दवाई बंद कर दी। साधारण चाय ही, जो इस्तेमाल होती थी, वह चलने दी। कमरे का दरवाज़ा बंद करके अंदर मौज में विराजमान रहते, किसी को अंदर आने की इज़ाज़त नहीं थी।

एक योगी ज्ञान नाथ, जो हिकमत में महारत रखते थे और रावलपिंडी के इलाके की तरफ हिकमत करते थे, प्रेमी उनको ले आए। उन्होंने देखा और कहा:- यह खुश्की और सर्दी का नुक्स है। खाना, पीना, अन्न, जल ग्रहण करना यह शरीर के धर्म हैं। जब अन्न में कमी की जाती है, आहिस्ता-आहिस्ता रोग पैदा हो जाते हैं और कहा कि आप ज़रूर स्थूल ख़ुराक कुछ समय तक ग्रहण करें। जब सेहत ठीक हो जावेगी फिर अपना प्रोग्राम जारी कर लेवें। मोतियों का कुश्ता और चटनी देकर कहने लगे, सेवन करवा दें। कब्ज़ कुशा चीज़ का सेवन करवाते रहें। घी का थोड़ा सा इस्तेमाल शुरू करें। बादाम रोगन भी अच्छी चीज़ है। दूध में छः-छः माशे लेना उचित रहेगा। बाकी बात यह है कि हिन्दुस्तान का हर आदमी थोड़ा-थोड़ा हकीम है। बाज़ दफ़ा टोटके काम कर जाते हैं। आपके पास जो आता होगा नई से नई तज़वीज़ रख जाता होगा, क्योंकि इधर हर आदमी का आना-जाना है। हमने सुना है कि आप भी किसी समय हिकमत करते रहे हैं, इस वास्ते कई चीज़ों पर आपका विश्वास नहीं बैठेगा। हर चीज़ का स्वभाव, गुण पूछकर ग्रहण करते होंगे। ज़्यादातर आपकी ख़ुराक चाय है, इसने अंदर खुश्की कर दी है। योगी के वास्ते तो सूक्ष्म आहार, घी, दूध, मक्खन लाज़मी हैं। जब आप थोड़ा बहुत अन्न ग्रहण करते थे शारीरिक अवस्था भी ठीक रहती थी। इस तरह बहुत से विचार नाथ जी ने रखे। श्री महाराज जी श्रवण करते रहे और फिर फरमाया:- ''प्रेमी! इन्होंने हठ करके दिखावे के वास्ते अन्न नहीं छोड़ रखा है, कुछ उस तरफ से रुचि हट गई है। जनता की तकलीफ़ को देख-देख कर ऐसा प्रोग्राम बन गया था। अब जिस-जिस तरह डाक्टर, हकीम, वैद्य लोग कहते हैं, ऐसा ही हो रहा है। यह चाहते हैं कि ख़ुराक की तबदीली करके सिलसिला ठीक जो जाये। इनको वैसे शौक नहीं है कि कोई कहे, महाराज जी ने अन्न छोड़ रखा है। जितना शरीर के लिए आहार ज़रूरी है, ग्रहण कर लेते हैं। इस चाय ने ही त्रट्टि-चौड़ कर रखी है। रग-रग में यह धंस गई है, किसी को कुछ समझ नहीं आने देती। शौकिया इसे सेवन नहीं कर रहे। अब कोशिश यह ही है कि इसे कम से कम किया जाए, इसके बदले कोई और चीज़ दिखाई नहीं दे रही। देखो, शायद कोई सबब बन जाए।'' इसके बाद ज्ञान नाथ जी नमस्कार करके चले गए।

इसके बाद श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमियों! अब तुम्हारा क्या विचार है? यह शरीर संगत की चीज़ है, जिस तरह मर्जी हो करो। यत्न करने पर शायद तुम्हारा कुछ बन जाए। सुबह ही इधर से चल देते हैं। चलते-चलते जहां ख़त्म को गया वहां ही इसे छोड़ दिया जाए।''

प्रेमी कहने लगे:- ''महाराज जी! आप अपनी कृपा हम दासों पर करें और ऐसा साधन करें कि जिससे यह तकलीफ़ न रहे। सब ही डाक्टर कहते हैं कि अन्न खाने वाले का तो इलाज हम कर सकते हैं, इतनी थोड़ी सूक्ष्म ख़ुराक खाने वाले का कभी इलाज नहीं किया। बच्चों की जो दवाई की ख़ुराक होती है उससे भी कई गुना कम दवाई का असर तो होता है मगर फ़ायदा नहीं कर रही। बिना आपकी कृपा के और कोई कुछ नहीं कर सकता। इसके बाद प्रेमी मलिक भवानी दास ने एक श्लोक पढ़ा, जिसका अर्थ था कि ब्रह्मचर्य पालन करने वाले की आयु दीर्घ और शरीर अरोग्य होता है।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''शरीर तो नित ही रोग रूप है, चाहे संत का है, चाहे संसारी का। कल्याणकारी जीवन उन्हीं सत्पुरुषों का है जिनकी बुद्धि नित ही आत्मा में स्थित है, आत्मा की खोज में लगी हुई, आत्म परायण होने का यत्न कर रही है। जिनकी बुद्धि अंदर विखे तत् में लीन हो रही है, इस नौ द्वारों के कोट गढ़ में विचरती हुई बुद्धि इसके दुःख-सुख से उपरस है और हर समय ब्रह्म आनन्द में विचरने वाली है, वह ही ब्रह्मचारी हैं। असल में उनको ही निरोगी समझो। शरीर तो नित ही रोगी है। जो नित इन नौ द्वारों के सामान, भोग पदार्थों को प्राप्त करके क्षणभंगुर रसों में फंसा हुआ है, वह ही नित तृष्णा रूपी रोग में ग्रसा हुआ है। जिसने शब्द सरूप ब्रह्म तत्त्व आत्मा में स्थिति पाई है, वही असली ब्रह्मचारी है। वैसे तो हर शरीरधारी जीव की बुद्धि पलक-पलक विखे शारीरिक लालसा में फंसी रहती है, वह ही शारीरिक, मानसिक रोगों में जकड़ी हुई जुगा-जुग तक भटकती रहती है। ब्रह्म तत्त्व का विचार करने वाले, उसका रूप हो जाने वालों की आयु दीर्घ होती है, मतलब शांति को प्राप्त कर लेते हैं। जिनके अंतर से वह अभाव हो गया है कि मैं मर जाऊंगा, मैं दुःखी-सुखी हूँ, वह ही ब्रह्मचारी नित अपने आपको अजर-अमर, अविनाशी जानते हुए नित अरोग रहते हैं। शरीर के रोग आते-जाते रहते हैं, शरीर एक मर्यादी चीज़ है। समय पर इसके तत्त्व बदल जाते हैं, चाहे कितनी उसकी हिफाज़त की जाये। गुरु शंकराचार्य और गोरख को भगन्दर के रोग ने घेरा हुआ था। रामकृष्ण परमहंस को कंठमाला थी। कर्म गति अपार और गहन है। प्रारब्ध कर्म सबको भोगने पड़ते हैं।''

डा० भक्त राम जी इलाज बराबर करते रहे मगर फ़र्क नहीं पड़ा। आख़िर डाक्टर साहब ने अर्ज़ की:- ''आब-ओ-हवा तबदील की जावे।'' कुछ प्रेमियों का विचार था कि सर्दी बहुत है इसलिए अभी जगह तबदील न की जावे। माह जनवरी, 1950 ख़त्म होने वाला हो गया । मौसम कुछ बदलने लगा। कुछ प्रेमियों ने ओखले चलकर निवास करने का मश्वरा दिया। प्रेमी जगह देखने गए मगर पसन्द नहीं आई । प्रेमी लद्धा राम ने महरौली चलकर निवास करने की प्रार्थना की और अर्ज़ की:- जगह अच्छी है। श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''एक प्रेमी उधर जाकर देख आओ।''

बह-बह गए चबूतरे, कर-कर गए नयां।
पीलू पूछे साहब थीं, कित वल गया जहां॥

''जिस जगह बड़े-बड़े रानीख़ान अपनी-अपनी हकूमतें कर-कर के समा गए हैं उसको ज़रूर देख आओ।'' प्रेमी कहने लगा:- ''महाराज जी! आप भी एक दिन उधर कृपा करें।'' श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''प्रेमी! इन्होंने एक दफ़ा बहुत देख रखा है। अब वहां उल्लू ही बोल रहे हैं। हां किसी समय वहां अच्छे फ़कीर वली अल्लाह मुर्शिद हुए हैं जिन्होंने बाबा फरीद को उपदेश दिया था। राजाओं की जगहें बर्बाद हो जाया करती हैं, फ़कीरों के निशान सदियों तक कायम रहते हैं। उस तरफ शायद कोई जगह मिल जाये। इनको तो अब ज़रूरत नहीं। अब कुछ शरीर भी जवाब दे रहा है। कुछ प्रेमी भी सेवा करके थक गए हैं। उनके अंदर भी उदासी बढ़ती जा रही है। ईश्वर ही कृपा करें।''

साधू बोले सहज सुभाए, साध का बोल्या वृथा न जाए।

चेतावनी भी श्री महाराज जी देते जाते थे और फिर माया का पर्दा भी प्रेम से विचार करके डाल देते थे। बातों-बातों में फरमाया:- ''बनारसी! कहवा बना लाओ। तकलीफ़ बढ़ रही है। उल्टी करने को दिल चाहता है। अब यह रोग पुराना हो चुका है।''

दो-चार रोज़ गुज़र गए। इतवार आ गया। उस रोज़ श्री महाराज जी की तबियत ठीक थी। कुटिया के पास ही चहल-कदमी कर रहे थे। करीबन दो बजे का समय था। एक प्रेमी ओंकार शास्त्री, जो कि रावलपिंडी में श्री महाराज जी से प्रेम रखते थे, आए। प्रणाम करके खड़े हो गए। श्री महाराज जी के मुख से यह शब्द निकल रहे थे:

उड़ चलया हंस अंजाने दा। उड़ चलया हंस अंजाने दा॥

ओंकार जी कहने लगे:- ''महाराज जी! किस चीज़ ने चले जाना है, क्या जाना है? आप जैसे महापुरुष भी उदासी के लहज़े में ऐसे शब्द उच्चारण करें, यह शोभा नहीं देता।''

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''यह चोला पुराना हो चुका है।''

झट ही ओंकार जी कहने लगे:- ''यह सब आपके सामर्थ्य की बात है, चाहे चार साल रखें, चाहे चार सौ साल रखें, योगी के वास्ते मुश्किल नहीं, उसे रख सकते हैं। अभी तो यह बाग लगाना शुरू किया है, इसे ज़रा बाल अवस्था में तो आने दें। आप जिम्मेवार हैं इस बाग के, किसी ठिकाने पर लगाकर जाना चाहिए। वैसे तो आप हर समय अंग-संग हैं।''

फरमाया:- ''प्रेमी! फ़कीर भी किसी मालिक की आज्ञा बजाने आते हैं। जब काम हो चुका है, और चार साल शरीर रख भी लेंगे, तो क्या होगा? फ़कीरों के वचन ज़िंदगी में कोई नहीं सुनता। पीछे काग़ज फरोला (पलटना) करते हैं। यह संसार की नीति है। बाकी तुम फ़िक्र न करो। तुम तो बुद्धिमान हो, आना और जाना क्या है? हमेशा संसार में किसी की नहीं बनी रही। अफ़सोस इन्हें किसी बात का नहीं, कुदरती वचन निकलते रहते हैं। ज़्यादा दलीलों में न जाया करो। चलो, अब सत्संग का समां हो गया है।''

इसके बाद सत्संग हुआ। महामंत्र और मंगलाचरण के उच्चारण से इसे शुरू किया गया, फिर दोहरा शब्द पढ़ा गया। उसके बाद आपने जो सत् उपदेश दिया वह संक्षेप में नीचे दर्ज़ किया जा रहा है।

सत उपदेश अमृत

सारे संसार का चक्कर गुणों के आधार पर चल रहा है। जब धर्म पर चलने वाले ज़्यादा से ज़्यादा सतवादी लोग होते हैं तब सत् धर्म का प्रकाश होता है, वह समां सतयुग कहलाता है। उस समय कोई झूठ बोलने वाला नहीं होता। जो भी पाप जीवों से होते हैं स्पष्ट रूप में कह देते हैं। मर्यादा में रहकर तमाम जीव शांति पूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं। ज़्यादा से ज़्यादा शारीरिक भोग वासनाओं का त्याग करने में ही परम सुख मानते हैं। मन की शांति को हासिल करना ही फ़र्ज़ और धर्म समझते हैं। जब रजोगुणी हालत अपनी शुरू हो जाती है तब सत् विचार, विवेक कम होने लगता है। संसारी प्रवृत्ति बढ़ने लगती है। ज़्यादा से ज़्यादा सोना, चांदी, धन, माल इकट्ठा करने में सुख प्रतीत करने लगते हैं और शारीरिक सुखों को ही प्रधान समझते हैं। रात-दिन धन संपदा इकट्ठी करने के उपाय ही सोचते रहते हैं। धर्म परायण रहने का भी साथ ही यत्न करते हैं। मर्यादा में सुख भोगों को भोगते हुए दूसरों के दुःखों को भी ख़्याल रखते हैं। मगर ज्यूं-ज्यूं जीव शरीर के भोगों में आसक्त होते जाते हैं त्यूं-त्यूं तमोगुणी विचार बढ़ते जाते हैं। खाते, पीते, पहनते फिर अशांत रहते हैं। मर्यादा नहीं रहती । छल-कपट बढ़ जाता है। आपस में प्रेम भाव ख़त्म हो जाता है। खुदग़र्जी बढ़ जाती है और खुदग़र्जी सब पापों की जड़ है। इस वास्ते इस कठिन संसार में श्रद्धा और सत् विश्वास सत्पुरुषों को होता है वह ही सत् निद्धियास द्वारा तमाम विकारों से पवित्र होकर सत् शांति को अनुभव कर सकते हैं। इसके उल्ट एक संसारी जीव की हालत उस गधे के समान है जो दिन भर भट्टे से ईंटे लाता और ले जाता है।

आवे दया खोतिया कचियां ले आवना, पक्कियां ले जावना।
इटां नहियों मुकना, तूं नहियों छुटनां॥

जैसे-जैसे जीव कर्म करता है वैसा ही स्वभाव बन जाता है। वह स्वभाव ही मजबूर करता है। जानता है कि ऐसा करना ग़ल्ती है मगर स्वभाववश होकर ग़ल्ती करता है। इस स्वभाव को बदलने के वास्ते ही सत्पुरुषों ने जीवों को सतकर्म करने की शिक्षा दी है। मगर मायाधारी लोग फ़कीरों के वचनों की तरफ ध्यान ही नहीं देते। जब फ़कीर संसार से चले जाते हैं तो उनकी मड़ियाँ बना के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते हैं। महापुरुषों की कमाई जुग-जुग तक जीवों को माया के अंधकार से निकालने में मदद देती रहती है।

इकनां नूं मत रब दी, इकनां मंग लई।
एक दित्तयां मूल न लेवंदे, एह असचर्ज रचना भई॥

कुछ अपनी बुद्धि भी इस्तेमाल करनी चाहिए। अपनी अक्ल न हो तो किसी के होकर रहना चाहिए।

बुलिया रब तेरे तों वख नहीं।
पर देखन वाली अख नहीं॥

वैसे तो हर एक जीव की आंखें खुली होती हैं मगर विवेक वाली आंख बंद है जिसके खोलने के वास्ते सत्संग की ज़रूरत है। इस वक्त भोगवाद ज़ोरों पर है। यह दिन-ब-दिन बढ़ रहा है। आज़ादी क्या मिली है अपनी त्रट्टि-चौड़ कर ली है? नुमायशी जीवन बढ़ गया है इसलिए कैसे शांति मिल सकती है? चाहते हैं खाते, पीते, हंसते, खेलते जीवन मुक्ति मिल जाए। मगर इसे हासिल करने के लिए ज़िंदगी में मौत को कबूल करना पड़ता है। इस समय गुरु भी ऐसे मिल जाते हैं जो झटपट दर्शन करवा देते हैं। अब नुमायश रह गई है। बाबे नानक ने कहा है:

क्यों कर रखां पत
जे बोलो तां आखदे बड़-बड़ करे बहुत
चुप करां तां आखदे इस घट नाहीं मत
जे बह रहां तां आखदे बैठा सतर घत
जे कर निवां तां आखदे डरदा करे भगत
काई गलीं न होसनी जिथे कडहां झट
इथे ओथे नानका करता रखे पत॥

इस समय यह हालत बनी हुई है, सोहागन की पहचान न विधवा की। कहा जाता है बड़ी रोशनी का ज़माना है, मगर चालाकी का नाम पालिसी बना रखा है। अगर कुछ सुख शांति चाहते हो तो बुद्धि को अधिक से अधिक प्रभु आज्ञा में निश्चल करते हुए और यत्न-प्रयत्न करके इसे सिमरण में दृढ़ करो। नुमायशी जीवन को सादगी में बदलो। जो मन में सोचो वही बात प्रगट करो। बोल-तोल पवित्र करो। सत् बोलने की नित कोशिश करो। जो कमाई करो दीन दु:खी की तन, मन से सेवा करके यथार्थ प्रेम प्राप्त करो। सत् भावों द्वारा मलिन वासनाओं को दूर करो। थोड़ा समां सत्पुरुषों से प्राप्त की हुई सिख्या (शिक्षा) में दो। ऐसे भाव ही तमाम दु:खों को दूर करने वाले होते हैं। और बंधनों से छुटकारा दिलाते हैं। ईश्वर सबको सत् अनुराग देवें। ताकि तमाम अशुद्ध वृत्तियों से पवित्रता प्राप्त कर सकें। प्रभु नित रक्षक होवें।

आज के सत्संग में भक्त बनारसी दास सिर पर पगड़ी बांध कर नहीं बैठे थे बल्कि एक कपड़ा सा बांध कर बैठे थे। जब सत्संग समाप्त हुआ तो आपने फरमाया:- ''आज तूने क्या सांग बनाया हुआ है? टाकी सिर पर बांध कर बैठ गया है। ख़बरदार, आईंदा कोई नमूना बनने की कोशिश की। पगड़ी किसको दे दी है? फ़कीर जिस बात को अच्छा नहीं समझते वह ही शुरू कर देता है। प्रचलित तरीका अख़्तियार (धारण) करके मर्यादा में रहो ताकि लोगों को अलग रूप नज़र न आए। जब भेष बनाने का समय आवेगा तब देखा जावेगा। सुना, क्या समझा?''

भक्त जी ने मुस्कराते हुए अर्ज़ की:- ''आईंदा ऐसी बात नहीं होगी।''

आपने फिर फरमाया, ''शैतान हँसता है। जिस पांखड का खंडन करते हैं उसको तुम धारण कर लेते हो। जिस तरह साधारण चल रहे हो उसमें रहना ठीक है।''

एक बूढ़ा साधु भी सत्संग में शामिल हुआ करता था और भक्त जी से बातें किया करता था। उसके बाद आपने भक्त जी से पूछा:- ''यह बूढ़ा साधु जो आता है उसका क्या रंग है? तेरे साथ बड़ी बातें करता रहता है।''

भक्त जी ने अर्ज़ की:- ''वह प्रार्थना करता है कि आप उस पर कृपा दृष्टि करें।''

मुस्कराकर फरमाया:- ''उससे यह पूछ, यह भेष जो बनाया है यह लाल कपड़े उतारेगा। यह लोग यह चाहते हैं इनसे कुछ सीखकर दूसरों के अच्छी तरह गुरु बन सकें। यह लोग अपना सुधार नहीं कर सकते। भेष इनका व्यौहार बन गया है। यह लोग ठीक रास्ते को नहीं पकड़ सकते। इन साधुओं, पंडितों, ज्ञानियों से दूर रहना ही बेहतर है। जो लोग ज़बानी जमा ख़र्च करने वाले होते हैं महदूद (सीमित) अक्ल वाले बन जाते हैं, अपनी बेहतरी नहीं सोचते। सिर्फ़ पैसा बटोरना काम बना लेते हैं। सेवा करने की बजाये कराने वाले बन जाते हैं। अपना सुधार करना इनके वास्ते मुश्किल हो जाता है। इधर ऐसे लोगों की ज़रूरत नहीं है। यह लोग कोई आसरा ढूंढते हैं। इनको बहुत नज़दीक न आने दिया करो।''

जैसा ऊपर ज़िक्र आ चुका है प्रेमियों को महरौली जाकर स्थान देखने के लिए भेजा गया। वहां जाकर जगह देखी गई। जगह एकांत तो थी मगर पानी नहीं था। वापिस आकर हालात बताए गए। इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! साधु, राजे, शेर दूसरों के आसन नहीं संभाला करते, किसी और तरफ का विचार करो।''

इस दौरान पता लगा कि कई प्रेमी शराब, सिगरेट, पीने लगे हैं। श्री महाराज उन पर बड़े नाराज़ हुए। वह सिर नीचे किए सुन रहे थे। आख़िर प्रेमियों से दस्तखत लिए गए कि आईंदा वे ऐसा नहीं करेंगे। श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''सिर के बाल सफेद हो चुके हैं, बुढ़ापा आ गया है मगर फिर भी सीधे नहीं चल रहे। बच्चों की ग़ल्तियाँ माता-पिता के लिए दु:ख का मूज़ब (कारण) होती हैं। शिष्यों की ग़ल्तियों की सज़ा गुरु को मिलती है। फ़कीरों का शारीरिक स्वास्थ्य खराब ही चल रहा है, मगर बावज़ूद इसके तुम लोगों से सेवा नहीं करवा रहे। तुमसे यह ही चाहते हैं कि अपना सुधार करो, इनकी सेवा यह ही है। इसमें ही तुम्हारी बेहतरी है। फ़कीर तुम्हारी बेहतरी चाहते हैं, यत्न करना तुम्हारा फ़र्ज़ है।''

उन्हां मंजिल कद तै करनी, जिन्हां दा दिल धड़के।

प्रेमी नमस्कार करके चले गए। प्रेमी गए ही थे कि श्री महाराज की तबीयत फिर ख़राब हो गई। कुटिया से बाहर जाकर कै कर दी। जब बाहर से उठकर अंदर आए तो फरमाया:- ''दवाईयां सब बंद करो। दो एक रोज़ इनके इस्तेमाल से तबियत ठीक मालूम होती है मगर फिर यह तकलीफ़ का कारण बन जाती हैं।' इन दिनों होम्योपैथिक दवाई नक्स वामिका 30 ली जा रही थी। शारीरिक अवस्था इतनी सूक्ष्म थी कि दवाई लेते ही असर दिखाती थी। चार से लेकर छ: गोलियां ली थी

जिसका असर यह हुआ कि दिल की धड़कन बढ़ गई और विचार हुआ कि गर्म दूध दिया जाये। उसके सेवन से कुछ आराम महसूस होने लगा मगर धड़कन दूसरे दिन तक जारी रही। इस पर विचार हुआ कि ख़ुराक इतनी सूक्ष्म है मगर वह ही हज़म नहीं हो रही, इसलिए प्रोग्राम किसी दूसरी तरह का बनाया जावे। उस रोज़ अहमदाबाद से संत रतन दास जी दर्शनों के लिए हाज़िर हुए। चरणों में प्रणाम किया और सेहत के मुतालिक पूछा। कबीर मन्दिर, दिल्ली में आकर ठहरे थे। श्री महाराज जी ने कुशलता पूछने के बाद फरमाया:- ''क्यों, इतनी तकलीफ़ की है? अब आब-ओ-हवा की तबदीली का विचार हो रहा है। देखो, किधर का प्रोग्राम बनता है।'' कुछ देर चरणों में बैठने के बाद सन्त जी आज्ञा लेकर कबीर मन्दिर चले गए।

कुटिया के साथ ही पिछली तरफ एक मन्दिर था और यह कनफटे योगियों का स्थान था। उस स्थान के नाथ आए और महाराज जी की सेहत के बारे में पूछा। उन्होंने कहा:- ''आगे भी दो दफ़ा आए थे मगर आप कुटिया के अंदर थे इसलिए मौका नहीं मिल सका।'' थोड़ी देर बातें करके चले गए।

इन नाथों के बारे में वार्तालाप शुरु हो गया। श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''किसी ज़माने में बड़े-बड़े कमाई वाले नाथ हो गुज़रे हैं। अब तो यह लोग शराब, चरस, तम्बाकू पीने लगे हैं और धूनियां देना इनका योग रह गया है। हलवा, मांडा इनका अच्छा चल रहा है। दुनिया भी अंधी है, ऐसों की पूजा कर रही है।'' इस पर बाबू अमोलक राम जी ने अर्ज़ की:- काला गुजरां में पीर शामनाथ का स्थान था। इनका जन्म स्थान भैरा, ज़िला सरगोधा था। ज़िला जेहलम में जोगियों का टीला मशहूर स्थान है जो एक पहाड़ी है। इस जगह गुरु गोरखनाथ ने तप किया था। उनके नाम से वह टीला गोरखनाथ के नाम से मशहूर है। जो भी उस जगह के गद्दी नशीन होते थे पीर के नाम से पुकारे जाते थे। पीर शामनाथ जी ने अपने गुरु पीर सहज नाथ की बड़ी सेवा की। उनके स्नान के लिए पानी नीचे से भरकर सिर पर उठाकर लाया करते थे। काफी चढ़ाई चढ़नी पड़ती थी। स्नान करवाने के बाद लंगर सेवा करनी, फिर दिन भर जंगल में गऊएँ चराया करते थे और जंगल में सिमरण किया करते। काफी अर्सा उन्होंने सेवा, सिमरण, तप करके सिद्ध अवस्था को प्राप्त कर लिया। वहां का रिवाज़ था कि शिवरात्रि के दिन पीर गद्दी पर बैठते और दूर-दूर से कनफटे जोगी वहां पहुंचते और भंडारा होता। आम जनता भी श्रद्धा, विश्वास से वहां पहुंचती और चढ़ावे चढ़ाती और मन्नतें मांगती। एक दफ़ा रोहताश की एक औरत ने मन्नत मांगी कि अगर उसके यहां लड़का हुआ तो अगले साल चढ़ावा चढ़ाया जावेगा। कुदरतन उसके यहां लड़का पैदा हो गया। दूसरे साल शिवरात्रि के रोज़ वह उस बच्चे को लेकर टीले पर गई मगर वह बच्चा वहां पहुंचकर मर गया। वह औरत रोई नहीं । जब पीर गद्दी पर बैठे तो गमछे से मुर्दा बच्चे को उस औरत ने पीर जी के कदमों में रख दिया और कहा:- लोग तो मन्नतें मांगने के लिए आते हैं, मैं इसे दे चली, अब जैसी मर्ज़ी है कीजिए। इसे सरजीवित कीजिये। वक्त नाज़ुक था, गद्दी पर बैठने की रस्म अदा की जा रही थी। इम्तिहान आ गया, उस वकत पीर साहब ने कहा:- ''कोई है जो इस बच्चे को सरजीवित करे।''

मगर कोई योगी न उठा। दोबारा फिर ऐसा ही कहा और फिर तीसरी बार भी कहा। जब कोई योगी नहीं उठा तो उस वक्त पीर जी के मुंह से यह लफ्ज़ निकले कि अब यह शक्ति हममें से जाती रही। उस वक्त पीर शामनाथ जी उठे और गद्दी के पास जाकर मुर्दा बच्चे को उठा लिया और थोड़े फ़ासले पर एक गुफ़ा थी उसमें ले गए और वहां जाकर मुंह पर गाली निकाल कर एक चपत लगाई और कहा:- उठ। बच्चा ज़िन्दा हो गया और रोने लगा। उस रोते हुए बच्चे को पीर जी के कदमों पर रख दिया। उस वक्त पीर जी ने फरमाया :

''बेटा, दो तलवारें एक म्यान में नहीं रह सकतीं। अब अपना डेरा किसी और जगह ले जाओ।'' इस पर पीर शामनाथ जी टीले से उतर आए। पहले रोहतास में ठहरे। यह कस्बा किले के अंदर था जिसे मुगलों ने बनवाया था और बाद में काला गुजरां आ गए और उस जगह डेरा लगाया जहां अब उनकी समाधि है। पीर शामनाथ जी मस्ताने फ़कीरों में से थे। गालियां निकालते और किसी को नज़दीक नहीं आने देते थे। कोई प्रेमी कोई चीज़ रख जाता और कोई दूसरा आकर उठाकर ले जाता, उन्हें इस बात की परवाह न थी। जब खाना खाते तो साथ ही कौवे, कुत्ते भी खाना खाते।

उनके जीवन का एक और वाक्या प्रेमी कुन्दल लाल दुग्गल के पिता लाला सूरजभान दुग्गल का आंखों देखा था। पीर जी की कुटिया में गुदड़ियां पड़ी हुई थीं। एक दिन ख़्याल आया कि उन्हें उठाकर कुटिया में सफाई कर दी जाए। लाला सूरजभान और एक प्रेमी अक्सर सेवा में हाज़िर हुआ करते थे। पीर जी उस वक्त जंगल दिशा गए हुए थे। जब कुछ गुदड़ियां उठाई नीचे से एक कुत्ते के बच्चे का पिंजर निकला। उस वक्त छुआ-छात बहुत की जाती थी। उस वक्त प्रेमी ने कपड़े उतारकर उस पिंजर को पूंछ से खींचकर बाहर निकालना चाहा। वह पिंजर ट्रं-ट्रं करने लग गया। वही प्रेमी डर के मारे उसे छोड़कर बाहर निकल गया। पीर जी उस वक्त मल त्याग रहे थे, हँसे और आवाज़ दी (गाली निकालकर) कि फ़कीरों की गुदड़ियों को नहीं छेड़ा करते। उन्होंने गुदड़िया फिर वैसे ही रख दीं।

एक और वाक्या पीर जी के जीवन का है। वह भी इन दोनों साहिबान का आंखों देखा है। वह इस तरह है कि एक दिन बेबहारा खरबूज़ा पीर जी को भेंट किया गया। पीर जी ने वह रख छोड़ा। शाम को उस दिन एक साधु वहां आ गए। दोनों बगलगीर होकर मिले। दोनों ने यह खरबूजा उस समय खाया। उसके बाद आपस में बातें करते रहे। जब अंधेरा होने लगा तो वह साधु आज्ञा लेकर वहां से बाहर निकला। उन दोनों में से, जो सेवा में हाज़िर थे, एक प्रेमी उसे देखने गया। आगे ड्योढ़ी से बाहर जब वह महात्मा निकले तो बाहर निकलते ही वह गायब हो गए। जब वह प्रेमी पीर जी के पास वापिस आया तो आपने गाली निकाल के पूछा:- ''कहां गया था?'' तो उस प्रेमी ने जवाब दिया- कि उन्हें देखने गया था। इस पर पीर जी ने फरमाया:- ''बड़े खुश किस्मत हो, भर्तृहरि के दर्शन किये हैं। यह भर्तृहरि थे।''

इस पर बाबू जी ने पूछा:- क्या ऐसी अवस्था के साधु हो सकते हैं?

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''ऐसे महापुरुष संसारियों को ज़्यादातर नज़दीक नहीं आने देते। लोगों की नज़रों से ओझल रहते हैं। ज़्यादातर समां आनन्दित अवस्था में गुज़ारते हैं। संसारी स्वार्थी होते हैं। जो भी सच्चे और शुद्ध हृदय से उनके पास जाते हैं उनके मनोरथ न कहने पर भी पूर्ण हो जाते हैं। गालियां इस वास्ते देते हैं कि लोग बे-यकीने होकर वापिस चले जावें और मौज में दख़ल न दें। वैसे ही संसारी डर के मारे उनके पास कम आते हैं। इस अवस्था को ही समवृत्ति कहा गया है। वह ही आत्म आनन्द की आरूढ़ अवस्था होती है। जनता का भला ऐसे महापुरुष द्वारा नहीं हो सकता चूंकि संसारी सब कामना युक्त होते हैं इसलिए उनको कल्याण का रास्ता नहीं बताना चाहते और न ही कुछ समझ आने देते हैं।''

इसके बाद फिर बाबू जी ने पूछा:- महाराज जी! क्या भर्तृहरि इस समय मौज़ूद हैं?

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''हां मौजूद हैं, और भी ऐसे महापुरुष जिनमें हनुमान जी भी हैं, यह संसार के खेल को देख रहे हैं। अपनी जोत को बड़ी जोत से नहीं मिलने देते। जब चाहा शरीर धारण कर लिया, जब चाहा छोड़ दिया। इन्हें इच्छाधारी कहते हैं, मगर है यह नाकस (निम्न) स्थिति।''

बाबू जी ने यह भी बतलाया कि पीर शामनाथ जी के कानों में मुंदरे नहीं थीं, जैसा कि इस प्रणाली का रिवाज़ था। एक दफ़ा इस प्रणाली के कुछ साधु इकट्ठे हुए और उन्होंने ऐतराज़ किया कि पीर जी, क्यों आपने मुंदरें उतार दी हैं? इस पर आपने मुंह खोला तो अंदर मुंदरें आईं। इस अद्भुत लीला को देखकर सब खामोश हो गए। और भी कई वाक्यात उनके बारे में प्रसिद्ध हैं।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- अब तो भेष ही भेष रह गया है। अब तो यह गृहस्थियों से भी गए गुज़रे हैं। अच्छा, अपनी भली नबेड़ो। भारत दर्शन की तासीर ही ऐसी है। कोई न कोई लाल इसमें से प्रकट होते रहते हैं। हर किस्म के मौसम इस धरती पर उत्तराखंड से लेकर कन्याकुमारी तक होते हैं। कश्मीर इसका सिर है। इस वास्ते इसका नाम श्रीनगर डाला गया है। हर किस्म और हर रंग के लोग इस धरती में मिलेंगे। बाकी, धरती ईश्वर की है। न मालूम महात्माओं, अवतारों, फ़कीरों को क्यों यह जगह पसंद आती है? इस कदर भण्डार होते हुए फिर भी यहां ज़हालत (मूर्खता, अज्ञानता) का अंदाज़ा नहीं। मग़रिब (पश्चिम) में भी जो महापुरुष होते हैं, मसलन ईसा जैसों ने इधर ही आकर योग की तालीम को हासिल किया और कई वर्ष तक लापता रहकर कामयाब होकर गए। जो कोई जिस जगह भी हुआ है ईश्वर की अपार महिमा उसने गायन की है। जनता की सेवा करके ही परवान (ऊँचा उठना) हुआ है। फ़कीर जहां भी हों, जिस हालत में हों सबका भला चाहते हैं और जीवों को खुदा की बंदगी में डालते आए हैं।

सत्संग शुरू हुआ जिसमें आपने निम्नलिखित सत् उपदेश दिया।

सत्उपदेश

चौदह लोक में जितने भी जीव शरीर धारण करके आते हैं ख्वाहे पीर, पैग़म्बर, औलिया हैं, ख्वाहे सिद्ध व तपस्वी, अवतार, स्थावर, जंगम और चराचर, जल में रहने वाले या आसमान पर

उड़ने वाले, सब ही माया के चक्कर में फंसे हुए आते हैं। यह धरती ही सबके बंधन और भरम चक्कर से छुटकारा पाने की जगह है। कोई तो जन्म से ही रोशनी लेकर आते हैं, कई बाद में मेहनत करके इस अद्भुत संसार के भेद को समझते हैं। बाकी सब जीव कर्मों के फल भोगने आते हैं। कोई देवता, कोई इंसान, चरिंद- परिंद, हर प्रकार की जोनियों व शरीरों को धारण करते और छोड़ते रहते हैं। न जन्म से पहले का किसी को पता है, न शरीर छोड़ने के बाद का पता है। दरमियानी (बीच की) हालत में कोई माता बन जाती है, कोई पिता, कोई भाई, कोई पुत्र, कोई मित्र, कोई शत्रु, कोई रक्षक है, कोई भक्षक, यह सब अपने-अपने स्वभाव के मुताबिक बनते रहते हैं और सभी दुःख-सुख, लाभ-हानि, संजोग-वंजोग द्वन्द्व को धारण करके भटकते रहते हैं। इस तरह संसार की रचना अनन्त काल तक चलती रहती है। इस अश्चर्ज संसार में जीव ऐसे मोह माया में फँसे हुए हैं कि न इन्हें आने का पता लगता है, न जाने का। हर एक जीव अपनी इच्छा को लेकर संसार में दौड़ रहा है। इच्छा को धारण करके अनेक तरह के सांग रच लेता है। ऐसा करके संजोग होने पर खुश होता है और वंजोग होने पर दुःखी। कोई विवेकी जीव ही इस बंधन रूप संसार से निर्बन्ध होने पर यत्न करते हैं और आला जीवन को धारण करके आत्म आनन्द को प्राप्त होते हैं। उन्हीं के जीवन आदर्श को देखकर कुछ जीव सत्बुद्धि धारण करके अपना जीवन सुधार लेते हैं। जब से संसार बना है कोई न कोई महापुरुष, गुरु, पीर अवतार का रूप धारण करके चेतावनी दे जाते हैं और जीवों को सुधार का मार्ग बतलाते हैं। ऐसे सत्पुरुषों का जीवन आम संसारी जीवों से मुख़्तलिफ़ (भिन्न) होता है। आम संसारी जीव भोग पदार्थों को एकत्र करना ही जीवन समझते हैं, मगर फ़कीर लोग सब कुछ त्यागने में परम लाभ जानते हैं। मायावादी जमा करके खुश होते हैं, सतगुरु तकसीम (बाँट कर) करके प्रसन्न होते हैं।

जिन्हां तकवा रब दा, उन्हां रिज़क हमेश।

हर समय राज़ी-ब-रज़ा रहकर मलंग हालत में खुश रहते हैं। हर समय दूसरों के दुःखों को दूर करने में लगे रहते हैं। पर-उपकारी उदार चित्त उनका रूप होता है। दूसरों को सुख देने का यत्न करते हैं। समय आने पर बलिदान होने से भी गुरेज़ (हिचकिचाना) नहीं करते। दुनियादार बड़े-बड़े इम्तिहान लेकर आख़िर सर-ख़म (समर्पण) करते हैं। राम, कृष्ण, नानक, कबीर, ईसा, मूसा, मोहम्मद वग़ैरा ने किस कदर उच्च जीवन पेश किया है। उनके नाम लेवा हज़ारों परम तृप्ति को प्राप्त हुए हैं। पंजाब के गुरुओं ने धर्म की रक्षा के वास्ते किस कदर कुर्बानी की, मगर आज खुदग़र्ज लोग क्या कर रहे हैं?

अंतर से हर जीव खुशी चाहता है मगर उसका यत्न ग़ल्त है। सत्पुरुष भूले भटके जीवों को राहे रास्ते पर लाने के लिए चेतावनी देते हैं। भेद भावना को ख़त्म करने की कोशिश करते हैं और सत् मार्ग बतलाकर उस पर चलने की हिदायत करते हैं। उनका फरमान है कि माया की खोज से आज तक किसी को तसल्ली नहीं मिली। जैसे केले के पेड़ को खोलते-खोलते आख़िर इसमें से

कुछ प्राप्त नहीं होता, ऐसा ही माया का हाल है। देखने में संसार का बड़ा विस्तार है मगर विचार किया जावे सार कुछ नहीं मिलता। फ़कीर तो चेतावनी देते हैं, मगर

दिल दा महरम (कृपालु) कोई न मिलया, जो मिलया सो गर्ज़ी।

विवेकी जीव संसार में कम हुआ करते हैं। भाग्य से ही कर्म उदय हों तो जीव ईश्वर परायण होने के यत्न में लगें।

पुंछ के इलाके में मैंडर तहसील है। उसके जंगलों में एक महात्मा रहते थे। एक शिकारी रोज़ाना शिकार खेल कर उनके पास से गुज़रता था। एक रोज़ सुबह के वक्त जब वह शिकार करके लाया, महात्मा को दूर से प्रणाम करके गुज़र रहा था, तो महात्मा जी ने बुलाकर पास बैठा लिया और कहने लगे:- ''प्रेमी! तुमको यह हिसाब लेना-देना पड़ेगा।'' पूंछो नामी शिकारी ने कहा, ''महाराज जी, किस तरह?''

महात्मा जी कहने लगे:- ''प्रेमी! इन बे-ज़बानों को जो तू ख़्वाह-म-ख़्वाह दु:ख दे रहा है, क्या इनकी आत्मा तुमको शांति लेने देगी? जो किसी को दु:ख देता है उससे कई गुना दु:ख भोग कर भी छुटकारा नहीं मिलता। आगे पता नहीं किस गुनाह के बदले ऐसी बुद्धि तुमको मिली है। छोटे-छोटे जीवों का बाधक बना हुआ है। जिनके वास्ते ऐसा रोज़गार बना रखा है, कोई भी तेरा साथ देने वाला नहीं।'' प्रेमी पूंछों के दिल में सब बातें कांटे की तरह चूभ रही थीं। कहने लगा:- ''महाराज! क्या बदला देना पड़ेगा?'' महात्मा जी ने फरमाया:- ''बदला ज़रूर देना पड़ेगा। आगे भी कई जन्मों से कभी तू इनको खाता आ रहा है, कभी यह तुझे खाते आ रहे हैं। यह संसार कर्म क्षेत्र है। जैसा जो जीव बीज बोता है वैसा ही काटता है।'' फिर प्रेमी पूंछो ने पूछा:- ''महाराज जी! बदला ज़रूर देना पड़ेगा?'' महात्मा जी ने फरमाया:- ''हां ज़रूर।'' इस पर उसने उसी समय वहां ही तीर-कमान वग़ैरा सब फैंक दिये और अर्ज़ की:- ''रास्ते पर लगाइये। अब यह अपना हिसाब-किताब ख़त्म करके ही दम लेगा और अपना हिसाब-किताब सब चुका देगा।'' घर किसी के हाथ संदेशा भेज दिया कि पूंछो का अब इंतज़ार न करना। महात्मा जी से शिक्षा लेकर उसी जंगल में तप करने लगे, फिर कुछ अर्से के बाद रावलपिंडी के पास जरनेली सड़क पर रवात से लेकर गुजर खां तक सेवा का प्रोग्राम बना लिया। सारा दिन सफ़र करने वाले यात्रियों और पशुओं की सेवा करते रहते। पानी पिलाते और पशुओं की टांगें तक दबाते। दिन को ख़लकत (जीव जग) की सेवा करना और रात को सिमरण भजन करना, यह उनका रोज़ाना का प्रोग्राम था। उनके मुख से जो वचन आते-जाते, निकलते वह यह थे, ''जो होनी सो होनी, दुनिया ऐवें रोनी।''

लोग इनको भाई पूंछो के नाम से पुकारते। उन दिनों लोग ज़्यादातर पैदल सफ़र करते थे। सामान घोड़ों या गधों पर ले जाया जाता था। जो लोग उनको समझते थे वह उनको अपना ही समझते थे। आख़िर उनके जीवन का तमाम लोगों को भी पता लगना शुरू हो गया। एक बार महाराजा रणजीत सिंह काबुल पर चढ़ाई करके जा रहे थे, तो रास्ते में गुजर खां पड़ाव किया।

अशरफ़ियों का थाल भरकर गले में कपड़ा डालकर नंगे पांव भाई पूंछो साहब की कुटिया पर पहुंचे। आज्ञा लेकर अंदर दाख़िल होकर भेंट रखकर नमस्कार किया। अति नम्रता को धारण किये हुए अपनी लंबी दाढ़ी से पूंछो साहब के आसन के आगे वाली जगह साफ करने लगे। पूंछो साहब ने आंख खोलकर देखा, फरमाने लगे:

''काणयां इन्हां ठीकरियां नूं अगे रख के असानूं भरम विच पान लगा है''

महाराजा रणजीत सिंह ने हाथ जोड़कर अर्ज़ की:- ''महाराज, अंतरयामी प्रभु! तन-मन-धन सब कुछ आपका है। इस समय बड़ी भीड़ बनी हुई है। आप कृपा करें।''

पूंछो साहब कहने लगे:- ''पहले ऐथे खू खटा पानी दे प्यासयां नूं बड़ी तकलीफ़ होंदी ऐ, फिर जा जिधर मर्ज़ी होवे। फतह तेरे आगे खलौती होवेगी।''

आशीर्वाद पाकर नमस्कार करके उठे। बाहर आकर वज़ीर को हुक्म दिया:- ''बहुत जल्दी अच्छा कुआं खुदवा दो।'' फौरन काम शुरू हो गया। अब वह कुआं गूजर खां शहर के बीच मौज़ूद है। जिस किसी जीव को ठोकर लग जावे उसके लगने से सुधार हो जाता है और अपना उद्धार कर लेते हैं, और कई जीवों का आसरा बन कर उनका उद्धार करते हैं।

तर गया कबीर जुलाहा, संतां दा संग करके।

सत्संगत बड़ी चीज़ है। इसमें हर समय जीव को ठोकर लगती रहती है। आज संगत का समां ज़रा ज़्यादा ले लिया गया है। नाराज़ न होना, ईश्वर सबको सुमति देवें।

सत्संग की समाप्ति पर श्री महाराज जी के बड़े भाई पंडित किशन चंद जी श्री महाराज जी के पास आकर बैठ गए और आहिस्ता से ज़मीन की अलाटमेंट के बारे में विचार किया कि आप भी अलाटमेंट करवायें। श्री महाराज जी ने इंकार कर दिया। फरमाने लगे:- ''फ़कीर अब कचहरियों में नहीं दौड़ते हुए जाएंगे। अगर आपको मिल सकती हो तो ले लेवें। सब धरती फ़कीरों की है। झूठी अदालत में अब यह फ़कीर नहीं जाते। दौड़ लगाना संसारियों का काम है। अब तो समय ही बदल चुका है। लेखा ही पूरा होने वाला है। गवर्नमेंट अब क्या देवेगी? कोशिश अपने वास्ते करो। अगर कुछ प्राप्त हो जाये इनको कोई एतराज़ नहीं, आपकी चीज़ है।''

जब बुज़ुर्ग भाई जाने लगे तो आपने नमस्कार किया। आप रिवाज़ अनुसार हमेशा बुज़ुर्ग भाईयों की इज़्ज़त करते थे। चाय के मुतालिक पूछा और फिर कुछ दूर तक जाकर उन्हें छोड़ आए और वापिस आकर कुटिया के अंदर आसन लगाया गया।

उस वक्त डा० भक्त राम जी भी मौज़ूद थे। जब इज़ाज़त लेकर जाने लगे तो अर्ज़ की गई कि शिमला में जैसा इलाज का तरीका इख़्तियार (धारण) किया गया था अब भी वैसा ही शुरू किया जावे तो बेहतर होगा। डाक्टर जी कहने लगे:- ''चिकनी चीज़ देना तो बिल्कुल ही अनुचित है। न ही आलिव आयल और न ही बादाम रोगन या घी वग़ैरा देना चाहिये। वह इलाज उस समय के मुताबिक था। अब जो दवाई शुरू की गई है उससे ज़रूर फ़र्क पड़ेगा। विटामिन बी काम्पलैक्स

की कमी है, उसे पूरा करना है। हकीम, डाक्टर अपना-अपना ज़ोर लगा चुके हैं। एक दफ़ा फिर हमको कोशिश कर लेनी चाहिए।'' ब्रह्म सत्यं करके डाक्टर साहब चले गए।

27 फरवरी, 1950 को रात ढाई बजे श्री महाराज जी ने बाबू अमोलक राम को आवाज़ दी- ''बाबू, जागता है।'' और फिर बनारसी दास को फरमाया:- उठो। प्रेमी रामजी दास और ख़िदमत राय भी उठकर अंदर आ गए, फिर सबसे पूछा, ''बताओ क्या राय है? किस तरफ चला जाये?'' रामजी दास और ख़िदमत राय ने काहनूवान के वास्ते अर्ज़ की। श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''अब किसी के पास नहीं जाना चाहिए। कोई अलग जगह ही सोचो। कुछ अपनी समझ से काम लिया करो। बार-बार किसी पर बोझ नहीं डाल सकते।'' फिर फरमाया:- ''अच्छी तरह सोच कर लो। अब इधर ज़्यादा देर नहीं टिक सकते।'' आप उठकर बाहर चल दिये।

इसके बाद मौज़ूद प्रेमियों ने आपस में विचार किया। आख़िर यह फैसला हुआ कि जैसा सत्पुरुष फरमावें वैसा किया जावे। सत्पुरुष सबको मान देने के लिए पूछते हैं, बाकी ज़्यादातर विचार ताजेवाले का ही मालूम होता है।

जब सूरज निकला श्री महाराज जी तशरीफ़ लाए और स्नान किया। धूप में बैठे और चाय पिलाई गई। फिर आप फ़ौरन ऊपर से उठकर नीचे आ गए और भक्त बनारसी दास को नीचे बुलाकर पूछा:- ''क्या विचार है?'' भक्त जी ने अर्ज़ की:- सबने आपकी आज्ञा पर छोड़ा है। वैसे एकांत जगह तो ताजेवाला ही है। इसके बाद आपने एक छोलदारी लाने के लिए कहा ताकि ताजेवाले इस्तेमाल की जा सके।

155. ताजेवाले के लिए रवानगी

सत्पुरुष ने इसके बाद फरमाया:- ''चलो स्टेशन पर, गाड़ी के पता करने की ज़रूरत नहीं है। कोई न कोई सहारनपुर जाने वाली गाड़ी मिल जावेगी।'' मलिक भवानी दास को तांगे लाने की आज्ञा हुई। जब तांगे पहुंचे फौरन जगह छोड़ दी गई और जाकर तांगों में सवार हो गए। स्टेशन पहुंचने पर पता लगा कि गाड़ी स्टेशन पर खड़ी थी। टिकट खरीदकर लाए गए। साथ बाबू अमोलक राम, प्रेमी रामजी दास व शेष राज गाड़ी में सवार हुए। बाकी किसी प्रेमी को महाराज जी ने चलने की आज्ञा नहीं दी। जब गाड़ी रवाना हुई तो आपने पूछा:- कौन-कौन साथ आया है? जब पता लगा तो फरमाया:- इस कदर लशकर क्यों साथ आ गया था। उसे वहां से वापिस किया गया कि बिना इज़ाज़त क्यों आए हो? ट्रेन से उतर कर बस स्टाप पर पहुंचे। आगे चकरौता जाने वाली बस तैयार थी। इसमें सब जाकर सवार हो गए और बस रवाना हो पड़ी। मिर्जापुर गांव के पास बस वाले ने बस खड़ी कर ली और श्री महाराज जी और प्रेमी बस से उतर पड़े। सामान बस से उतार लिया गया। इस जगह से ताजेवाला पांच मील पर था। तांगा वग़ैरा कुछ नहीं जाता था। सामान ज़्यादा था। एक आदमी सामान उठाने के लिए साथ ले लिया गया और सब पैदल रवाना हो पड़े। आगे-आगे श्री महाराज जी थे। श्री महाराज जी की सेहत का ख़्याल रखते हुए विचार हुआ कि

इतना सफ़र कैसे कर सकते हैं? महाराज जी ने कहा-कि झूले, पालकियों का पला हुआ शरीर नहीं जो तप्ती हवा लग जावेगी। श्री महाराज जी बराबर पहले की तरह तेज़ रफ्तार से ही चलते रहे और साथ ही बाबू अमोलक राम जी भी तेज़-तेज़ चलते जा रहे थे। दौड़-दौड़ कर साथ मिलते थे।

दरअसल दिल्ली से अचानक रवानगी का ख़ास कारण था, जिसका पता बाद में चला। प्रेमी मुक्त राम के अंदर संशय उठ रहे थे कि महात्मा जी काफी अर्सा से उसके बाग के कमरे में ठहरे हुए हैं, जाने का नाम नहीं लेते। आज चलकर कहूंगा कि कमरा खाली करें। अपनी स्कीम के मुताबिक जब वह बाग में पहुंचा तो देखा कि आगे कमरा खाली पड़ा है, कोई आदमी वहां नहीं है। ऐसा देखकर उसे हैरानी हुई।

जब काफिला चलते-चलते हैड यमुना के दूसरी तरफ पहुंचा, प्रेमी गोवर्धन दास को मिला गया। उनसे बातचीत करने पर पता लगा कि हथनीकुंड बंगले में ठहरने का इंतज़ाम हो सकता है, वह इसके बारे में पता करेगा। फिलहाल उसी जगह पर जल्दी-जल्दी तम्बू लगाया गया। सबने दरिया में स्नान किया।

शाम को बाबू शुक्ला जी आए और आकर बताया कि जगह की इज़ाज़त मिल गई है। क्वाटर खाली है। वहां डेरा लगा लिया जावे। मगर साथ ही अर्ज़ की:- महाराज जी! आप हमसे दूर हो जाओगे। बंगला यहां से दो-ढाई मील के फ़ासले पर है। छुट्टी जब शाम को मिलती है उस वक्त अंधेरा हो जाता है। बहरहाल फिर भी समां निकालने की कोशिश की जावेगी। इसके बाद निश्चित हुआ कि हथनीकुंड बंगला पहुंचा जाये।

सुबह चार बजे उठकर श्री महाराज जी ने आवाज़ लगाई और आप बाहर तशरीफ़ ले गए, और प्रेमियों को कह गए कि सामान वग़ैरा बांध लें और ऊपर हथनीकुंड चलने की तैयारी करें। जब बाहर से आए तो फरमाया:- ''उधर ही चलते हैं। तुम आहिस्ता-आहिस्ता आओ।'' बाबू जी सोटी लेकर साथ चल दिये। प्रेमियों ने आहिस्ता-आहिस्ता वहां सामान पहुंचाया। पहली मार्च, 1950 का दिन था कि हथनीकुंड क्वार्टरों में डेरा लगाया गया। भक्त जी को बुलाकर श्री महाराज जी ने पत्र के ज़रिये किसी को सूचना देने की पाबंदी लगा दी और फरमाया:- ''तकलीफ़ बराबर चल रही है और ईश्वर ने इस शरीर की कायमी की ज़रूरत समझी तो आप ही कोई सबब (साधन) बनावेंगे।'' दूसरे रोज़ 2 मार्च, 1950 को आपने नीचे लिखे ख़ास वचन दोपहर के बाद प्रकट फरमाये।

परमार्थ

सही फ़र्ज़ को सर-अंजाम (पूर्ण करना) देना ही कामयाब ज़िंदगी है। अपने फ़राईज़ (कर्तव्य) में जो हर वक्त स्वतंत्र है वह ही शूरवीर है। स्वार्थ की बढ़ती हुई अग्नि को परमार्थ के जल से जो सींचित करता है वह ही परम गुणों को प्राप्त होता है। इस संसार में सब ही जीव यत्न-प्रयत्न करते हुए अपना-अपना सफ़र ख़त्म करते हैं।, मगर जिनका यत्न परमार्थ अनुकूल है उनका जीवन दुर्लभ है। जहां तक कोशिश हो अपने आपको सत् के आधारी बनाना चाहिये, इसी में परम कल्याण है।

दूसरे दिन भी समां अच्छी तरह गुज़र गया। तीसरे दिन फिर कृपालुता करते हुए 'सार निर्णय जीवन' प्रसंग प्रगट फरमाया, जो निम्नलिखित है।

1. संसार और शरीर की तबदीली निश्चय करके जाननी चाहिये।

2. अपना जीवन निर्मल कर्म में व्यतीत करना ही मानुष जन्म का परम कर्तव्य जानना चाहिए।

3. तमाम मानुषों के साथ निर्वैर भाव से बर्ताव करना चाहिए क्योंकि समय पर सब ही तबदीली को प्राप्त हो जावेंगे। इस वास्ते प्रेम संजुगत (संयुक्त) जीवन ही परम शिरोमणि जानना चाहिए।

4. मन और इन्द्रियों का दमन और सत्पुरुष में दृढ़ निश्चय ही इस वासना के भयानक अंधकार से कल्याण के देने वाला है यानि सत् स्थिति का सरूप है।

5. जीवन का सही मकसद निर्बन्ध होना है। यानि वासना के वेग को परित्याग करने से निर्बंधन होना हो सकता है। इस वास्ते, मन-वचन-कर्म से सत् परायण होकर निष्काम सेवा संजुगत होना ही असली जीवन की निर्मल यात्रा है।

6. अपने निर्मल प्रण में जो दृढ़ होता है वह ही तमाम प्रकार की परम सिद्धि को प्राप्त होता है यानि सत् सरूप निर्खेद आनन्द को हासिल कर लेता है।

7. इस संसार का दृश्य एक गहरी आंधी के समान जानना चाहिये, यानि सिवाये गर्दो गुबार और बेचैनी के और कुछ नतीजा हासिल नहीं हो सकता है। यह निश्चय आम गुणी पुरुषों ने हासिल करके कल्याण हासिल की है।

8. मानुष जन्म की उत्तम कीर्ति यह है कि अपने यथार्थ बल अनुकूल दूसरे के वास्ते कल्याणकारी बने। यह ही निर्मल कर्तव्य इस नाशवान संसार में सत् शांति के देने वाला है।

9. ऐसा निर्मल पुरुषार्थ धारण करना चाहिए जिससे मन और इन्द्रियों को शांति यानि निर्वास आनन्द प्राप्त हो सके। यह ही खोज परम गुणकारी है।

10. संसार की विनाश व निर्मल कर्तव्य का पालन, चित्तवृत्ति का निष्काम भाव में दृढ़ करना यानि परम तत में निःचल करने की धारणा जो धारण करता है वह ही अपनी सही उन्नति को प्राप्त हो सकता है। यह सार निर्णय जीवन का है। सब गुणी पुरुषों को अपनी धारणा दृढ़ करके अपनी कल्याण करनी चाहिये।

(4 मार्च, 1950 हथनी कुण्ड डाक बंगला, हैड ताजेवाला) इसके बाद समता के अनुयायियों के लिए यह खास वचन प्रगट फरमाये।

''तमाम समता अनुयायी सज्जन इस नाशवान संसार में सत् आधार के परायण होकर गुरु सिखया अनुसार अपना जीवन सरल सरूप निष्काम सेवा में व्यतीत करना अपना परम कर्तव्य जानें। इस संसार में मानुष जन्म का यह ही परम लाभ है।''

अभी 4-5 दिन हुए थे कि पंडित बिहारी लाल जी दर्शनों के लिए हाज़िर हुए और जगाधरी से एक सज्जन भी दर्शनों के लिए हाज़िर हुए। नमस्कार करके बैठे! श्री महाराज जी ने पूछा:- ''प्रेमी! कैसे आना हुआ?'' उसने जवाब दिया कि आपके दर्शन बाबू रामस्वरूप के बाग में किए थे। किसी कारण वहां से जल्दी आना पड़ गया। अब कुदरतन जगाधरी दो रोज़ हुए, सुना कि आप ताजेवाले पधारे हुए हैं। ख़्याल आया कि चलकर दर्शन कर आऊँ। यह भी पता लगा कि आपकी तबियत कुछ ठीक नहीं है। श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी! पहले पत्र द्वारा पूछ लेना चाहिये था। किसी अच्छे समय पर आते, विचार भी सुनते। इधर जंगल में कोई इंतज़ाम भी नहीं।''

वह सज्जन कहने लगे:- ''जैसे बाकी प्रेमी समां काट रहे हैं उसी तरह हम भी दो दिन गुज़ार लेंगे। मुझे कुछ आसन करने का शौक है। आसनों द्वारा शारीरिक रोग को भी दूर करने का तरीका आता है। क्या आप बतलाने की कृपा करेंगें कि आपको क्या तकलीफ़ है?'' प्रेमी के विचारों को सुनकर श्री महाराज जी ने हालात बतलाए।

उस प्रेमी ने ज़ोर दिया और दो-तीन आसन लगाकर बतलाया कि आप इस तरह पांच-दस रोज़ आसन करें। आपसे आप कब्ज़ भी दूर हो जावेगी और अन्तड़ियों और कोलन की तकलीफ़ भी दूर हो जावेगी। अभ्यास के वास्ते जहां मानसिक इलाज की ज़रूरत है वहां शारीरिक सेहत कायम रखने के वास्ते आसनों की भी ज़रूरत है। ज़ोर देकर श्री महाराज जी को आसनों के वास्ते तैयार कर लिया और कहा कि खाली पेट आसन करवाये जायेंगे।

दूसरे दिन सुबह जब श्री महाराज जी बाहर से वापिस आए तो ये सज्जन श्री महाराज जी को डाक बंगले के हाल में ले गया और आसन करवाये। मगर जिस्म अत्याधिक नाज़ुक था। रीढ़ की हड्डी के साथ ख़राश आ गई, जो उल्टी तकलीफ़ का कारण बनी। इस पर आपने फरमाया:- यह इलाज का तरीका खूब खाने-पीने वालों के लिए है। यह ग़ैर कुदरती इलाज है और उनके लिए जो शरीर को बढ़ाने को बेहतर समझते हैं। भक्त जी को फिर फरमाया:- ज़्यादा दिन उसको ठहरने के लिए ज़ोर मत देना, जाये तो जाने दो। इसके बाद महाराज जी ने रोज़ाना सैर का प्रोग्राम बनाया और पंडित बिहारी लाल जी उनके साथ सैर को जाते। कलियर बंगले तक सैर का प्रोग्राम रखा गया, जो वहां से दो मील के करीब था।

इस जगह आपने फरमाया:- देखो, पानी किस जगह गहरा है ताकि शरीर को वहां जल के सुपुर्द कर दिया जावे? इस बात पर रोका जाता कि महाराज जी, शरीर पहले तो पानी में चला जाता है मगर फिर पानी के ऊपर आ जाता है। इसे पुलिस निकालेगी, पोस्टमार्टम वग़ैरा होगा और झगड़ा पड़ेगा और इस तरीके से रोका जाता।

यह देखा गया कि ऐसी महान हस्तियों का शरीर से लगाव नहीं होता और कानूने-कुदरत में दख़ल नहीं देते और फिर अपने आस-पास आए हुए जीवों का इम्तेहान भी लेते हैं। एक दिन बैठे हुए थे। प्रेमी भी आसपास बैठे थे। पूछने लगे:- ''प्रेमियों! आपने फ़कीरों में क्या देखा?''

भक्त जी – जैसे दरिया के पास जाकर कुदरतन ठंडक मिलती है ऐसे ही आपके पास रहने से मानसिक शान्ति मिलती है। कोई विकार नहीं रहता। कोई स्वार्थी विचार नहीं उठते।

फिर पूछा:– "अगर यह शरीर अलोप हो जाए और लोग तुमसे पूछें कि गुरु का सरूप क्या था, तो क्या बताओगे? तुमने गुरु के अंदर क्या देखा?"

सब चुप हो गए। किसी ने जवाब न दिया। सोच में पड़ गए, फिर किसी ने कहा:– "त्यागमई जीवन गुरु का सरूप है।" किसी ने प्रेममई जीवन कहा, वग़ैरा।

फिर आपने फरमाया:– "कई गुरु तो बड़े-बड़े मठधारी हाथियों पर सवारी करने वाले हैं। कई पालकियों में बैठकर उपदेश देते हैं। कई और कई तरह के रंग रूप बनाते हैं। इनके पास तो कोई सांगो-पांग नही, तो सिफ्त (गुण, तारीफ़) करोगे तो किस बात की करोगे। दुनिया वाले तुम्हें छोड़ेंगे नहीं।" सब प्रेमी खामोश बैठे थे।

आख़िर पंडित बिहारी लाल जी ने अर्ज़ की:– "महाराज जी! हम तो अपने-अपने विचार के मुताबिक ही अर्ज़ कर सकते हैं। आत्मलीन सत्पुरुष की स्थिति को कैसे जान सकते हैं और इसके बारे में क्या अर्ज़ कर सकते हैं?"

इस पर श्री महाराज जी फरमाने लगे:– "प्रेमियों! फ़कीर तुम लोगों से कभी कुछ पूछते ही नहीं। कुछ अपनी बुद्धि से भी काम करो। ईश्वर का सरूप अगर कोई पूछे तो महामंत्र पढ़ कर सुना दिया करो। यह ही उसका सरूप है। गुरु का सरूप कोई पूछे तो गुरुपद सिद्धांत से जो गुरु का सरूप ब्यान किया हुआ है, वह बता दिया करो। इस पर कोई एतराज़ नहीं कर सकता। गुरु, पीर, अवतारों के शरीर अलग-अलग तरह के ही होते है मगर आंतरिक गुण सबके अंदर एक जैसे होते हैं। ख़्वाहे कोई राजा के घर पैदा होकर या ग़रीब के घर पैदा होकर फ़कीर बने, मगर अंतर स्थिति सबकी एक जैसी ही होती है। राम जी का त्याग और उदासीनता का सरूप उस समय सामने आया जब रावण ख़त्म हो गया। विभीषण को राज तिलक दिया तो कोई नज़राना स्वीकार नहीं किया। सिर्फ़ फूलों के हार ही स्वीकार किए। इसी तरह कृष्ण ने कई राजाओं को हराया मगर किसी का तख़्त नहीं सम्भाला। निर्मानता ऐसी दिखाई कि हैरान कर दिया। दुर्वासा ऋषि का रथ खुद व रुकमणी को लेकर तमाम द्वारका में फिराया और आख़िर में हाथ जोड़कर खड़े हो गए और अर्ज़ की:– और सेवा के वास्ते कृपा करें। दिन को संसारियों की सेवा करनी और रात को जंगल में रहना। मूर्ख लोग महायोगी को भोगी के रूप में दिखाते हैं। निश्चलता का क्या सुन्दर स्वरूप पेश कर रहे हैं, जैसे एक तरफ राज कर रहे हैं, दूसरी तरफ शेष नाग पर खड़े होकर बंसी बजाई जा रही है। सब कुछ प्राप्त होने पर भी मान नहीं। सुदामा जैसे भक्तों के चरण धोकर उदाहरण पेश किया है। जिन-जिन महापुरुषों के अंदर यह गुण प्रकाशवान हुए वह ही गुरु, पीर, अवतार कहलाये। ईश्वर आज्ञा में दृढ़ होना और शुभ विचारों को धारण करना, निष्काम भावना को प्रगट करना है। केवल एक प्रभु स्वरूप को नित प्रकाशक जानना और हर समय शरीर को नाशवान तसव्वर (समझना) करना निर्मानता का सरूप है। ज्यूं-ज्यूं जीव अभ्यास में दृढ़ होता है त्यूं-त्यूं आत्म विश्वास में दृढ़ता आती

है और आत्म विश्वास की दृढ़ता से संसार की असारता दृढ़ होती है। यह ही उदासीनता का सरूप है। आत्म अभ्यास और उदासीनता से ही नेहचलता आती है। हर समय शरीर और संसार का मिथ्या भासना और सत् सरूप में अधिक अनुराग का प्राप्त होना ही असली स्थिति है। सब कर्म करते हुए उनके फल को ईश्वर आज्ञा में छोड़ देने से ही पर-उपकारी भावना उत्पन्न होती है। ज्यूं-ज्यूं इन महागुणों में बुद्धि स्थिर होती है, त्यूं-त्यूं ही दुर्मति अंधकार से छुटकारा पाकर नित आनन्द समता भाव में बुद्धि स्थिर होती है। बार-बार सत्संग, निर्मल अभ्यास और सेवा के मार्ग में लगे रहने से हर प्रकार के पापों से मुख़लसी मिलती है और सर्व विजय प्राप्त होती है। करने से ही निज़ात मिलती है, खाली बातों से बे-विश्वासी आती है। आलिम-बा-अमल होगा तब ही अपना सुधार कर सकेगा। आलिम जब बे-अमल होते हैं तब ही उपद्रव फैलता है। इस वास्ते हर समय अच्छे कर्मों में लगे रहना चाहिए। फ़कीरों ने सब कुछ खोलकर आपके आगे रख दिया है। तुम्हें नज़दीक इस वास्ते बैठने दिया है ताकि तुम्हारा जीवन भी निर्मल बने। इन्होंने अपना खून काढ़कर कीमती समां तुम लोगों के सुधार के लिए दिया है। अब आख़िरी लम्ह आ पहुंचा है। फ़कीरों के शरीर पर कष्ट आना कोई मामूली बात नहीं है। इस समय में भयानक मायावाद की बढ़ती हुई अग्नि जीवों को भयभीत कर रही है। ऐसा समय जब आता है तब फ़कीरों पर भी कष्ट आता है। ऐसा होना सब जीवों के वास्ते और ख़ासकर नज़दीक आने वालों के लिए बेहतरी का मूज़ब (कारण) होता है। जो भी वचन फ़कीरों के अंदर से निकलते हैं कुर्राह हवाई (आकाश) में फैलकर असर दिखाते हैं और पवित्र बुद्धि वाले इस असर को कबूल करते हैं। इस समय समता का उच्च अक्षर किसी ख़ास मतलब के वास्ते फिर से प्रगट हुआ है। वैसे शास्त्रों में आया हुआ है, गो गुप्त रूप में है। अब विस्तार पूर्वक पूरी महिमा लेकर प्रभु आज्ञा से प्रकाश हुआ है। जब कोई इसका आधार लेकर पूरी कोशिश से चलेगा तब ही शांति का दौर होगा। अभी तो इनका साया तुम सब पर मौज़ूद है। इनकी अल्हेदगी में मान, मद, माया के चक्कर की लपेट में आ गए तो तबाही का बायेस (कारण) होगा। इस समय फ़कीरों के चरणों में रहने से कई प्रकार की मजबूरियों से बचे हुए हो। इनकी ग़ैर मौज़ूदगी में तुम कनक और कामनी के चक्कर में फंसकर जीवन नाशक न बनना। जीव इन भोगों को भोगकर भटकने लग जाता है। प्रभु कृपा से यह मानुष शरीर मिला है, इसको अंधमति द्वारा भोगों में नाश न करना, बल्कि योग युक्ति द्वारा आत्म शांति को प्राप्त होना।

इस पर प्रेमी शेष राज ने अर्ज़ की:- आपकी कृपा से ही हम भाग्यशाली बन सकते हैं। प्रेमी बिहारी लाल जी ने इस पर अर्ज़ की:- महाराज जी! इन्होंने कुछ विचार लिखे हैं। अगर आज्ञा हो तो सुनावें। श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''प्रेमी सुनाओ!'' प्रेमी शेष राज ने सुनाना शुरू किया:

फ़ानी यह दुनिया सुख समझकर, बंदा शादी योग कमाये।
बड़े बुज़ुर्ग बुलाए, पँडित जीवन लगन पुछाये॥
शुभ करनी शुभ मुहूरत, शादी रचना रचाए।
काल संदेसा नाता जोड़े, जमपुरी ससुराल कहलाये॥

सत संगत नित मेल मिलाए, सब प्रेमी कबीला बुलाए।
निर्मान बड़ी दरी बिछा, मन घर बार सजाये॥
मिल सतसंग नित ज्ञान गाये, मिठाई समती प्रेम वर्ताए।
मानुष जन्म अमोलक जाने, पल-पल मंगल गाये॥
रसोई करके तैयार शब्द दी, जब प्रेमी संगत बिठाये।
नाम पदार्थ भोजन देवे, अमृत पानी पिलाये॥
कच्ची कचोरी नाम रतन दे, अखंड आनन्द बर्ताए।
इस बिध दूल्हा सेवा कमाये, तां शादी घरहूं कहलाए॥
कंघा बांध प्रेम दा, मेहंदी हथ नाम दी लाये।
बुटना मल-मल सत शब्द दा, काया रूप बटाये॥
सतगुरु सिख्या सुमति लेवे, मन दे भरम मिटाये।
काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंहकार, पांचो शत्रु भगाये॥
चौथे पद की चौकी चढ़ के, मन निर्मल गंगा नहाये।
बुटना मल तन प्रेम भजन का, सुंदर रूप बनाये॥
मस्तक सेहरा सत्कर्म दा, जगमग चमक दिखाये।
देख-देख तृप्त होवन, सब जग खुशियां मनाये॥
भक्ति तप अहिल्या वाली, हृदय मन हीरा थाल सजाये।
सतगुरु शरन शीश निवाए, चरण धूड़ी तिलक लगाए॥
सत सेवा दा जोड़ा पहने, जीवन सादा बनाये।
सत समता जामा ओढ़े, देही शिंगार बनाये॥
कुटम्ब कबीला सब देवी देवता, नाता परिवार बुलाये।
ऋषि मुनि सिद्ध तपी तपीश्वर, दोस्त चुन-चुन पाये॥
नारद शारद बीन बजावन, शब्द शंकर डोरू बजाये।
शब्द गगन का बाजा बाजे, बिन घटा मेघ गरजाये॥
ब्रह्मा विष्णु बराती बना के, जग विच धूम मचाए।
पुष्प भवानी घोड़े चढ़ के, ससुराल धाम वल जाये॥
देवते जय-जय कार बुलावन, इन्द्र फूल बरसाये।
सूरज चंद फिदाई होवन, दूल्हा पल-पल शोभा पाये॥
अचल आसन पुड़ते चढ़ के, राम नाम छंद गाये।
ग़मी खुशी सब लाग बहतेरे, ध्यान भजन चित लाये॥
नरोतम धाम में आसन कीजे, समाध बेल लगाये।
'शीश' करे जो एह बिद्ध साधन, जो दूल्हा दुल्हन पाये॥

श्री महाराज जी फरमाने लगे-

भरया उन्हां दा जानिये जिन्हां तोड़ चढ़े॥

''प्रेमी ने अच्छा भाव प्रगट किया है इस तरह बनकर दिखाये तब ही उदासीन रूप हो सकता है। तुकां जोड़ लेनी आसान होती है। अच्छा चलो, जैसा भी चल सकते हो, चलो। अब यमुना के उस पार चलो।'' आपने उठते समय शब्द उच्चारण फरमाया:

पहले मां का खसम था, पाछे बनया पूत।
यह ही कथा विचार के, छाड़ चले अवधूत॥

लोटा लेकर लघु शंका के वास्ते चले गए। प्रेमियों ने आसन वग़ैरा उठाकर अंदर रखा और ताला लगाकर श्री महाराज जी के पीछे चल दिये। पहले लकड़ियों के टीले पर आसन लोई का बिछाया गया। महाराज जी फरमाने लगे:- ''आज फिर सुबह से उसी तरह डकारों व कब्ज़ का दौर चल रहा है। बड़ी कोशिश की जा रही है मगर चार दिन ठीक होकर फिर उसी तरह का हो जाता है। मुकम्मल इलाज इसका यमुना सुपुर्द करना ही है। पूछने लगे:- देखो, इस जगह कितना जल गहरा है''?

पंडित बिहारी लाल जी ने रुख बदलते हुए अर्ज़ की:- ''महाराज जी! एक विनती है। अगर बादाम रोगन एक हफ्ता तक लेकर देखें तो ज़रूर फ़ायदा होगा। यह कोई दवाई नहीं, गिज़ा नहीं।''

श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''यह क्या कह सकते हैं? चिकनी चीज़ के लिए कहते हैं नज़दीक न जाओ। किसकी सुनी जाए।'' फिर पंडित जी बादाम रोगन की बड़ी तारीफ़ करने लगे। फिर पूछने लगे:- ''हुक्म हो तो जगाधरी से ले आऊं।'' भक्त जी ने अर्ज़ की:- ''बादाम रोगन भी है और आलिव आयल भी लेकर रखा हुआ है। इनमें से जो चीज़ भी लें, मौज़ूद है।''

बाबू जी कहने लगे:- ''अगर डाक्टर साहब से पूछकर ली जाए तो अच्छा रहेगा।''

पंडित जी ने कुछ नाराज़गी प्रकट की। कहने लगे:- ''इधर हैड पर भी डाक्टर है। उसे बुलाकर सलाह ले ली जाए। चिट्ठी आने-जाने में वक्त लगेगा।''

श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''प्रेमियों! जो सोचना है, सोच लो। शरीर संगत का है। उन सबको पता है कि किस हालत में दिल्ली से आए हैं। जगह कोई दूर नहीं है। किसी को क्या कहा जाए? ये लोग अपना हठ करते हैं और अपनी मर्ज़ी करते हैं। तब भी नहीं मानते, कहते हैं- 'महाराज जी, अपनी हिकमत कर जाते हैं।' प्रेमियों! इनको कोई शौक नहीं। जितनी शरीर की रक्षा करनी होती है, कर रहे हैं। सब हालात आपके सामने हैं। वहां से उठकर फिर कहने लगे:- ''चलो, नदी पार करके, तेज बहाव गहरे पानी की तरफ चलो।'' हुक्म था, सब पार हुए। उस पार पानी थोड़ा था। गुज़रकर एक किनारे पत्थरों पर बैठ गए।

श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''कल रोज़ शुभ दिन अमावस का है। कल सुबह सवेरे ही आकर अंधेरे में ही कुछ पत्थर बांध कर किनारे पर खड़े होकर यहां से बहा दो। युमना माई इस शरीर को कबूल कर लेगी तो बड़ी खुशनसीबी होगी। इस जमुना के किनारे कृष्ण जी ने जीवन का

काफी हिस्सा व्यतीत किया है। आब-ओ-हवा पवित्र, वातावरण शुद्ध है। इस जगह को यह बहुत पसन्द करते हैं। इससे अच्छा समय और जगह कहां मिलेंगी? सबके वास्ते तीर्थ रूप बन जायेगा।'' सब प्रेमी बड़ी मायूसी को लिए हुए थे। बोलने की कोई हिम्मत नहीं कर रहा था। शाम हो चुकी थी, पंडित जी कहने लगे कि सब को विचार करने की इज़ाज़त दी जाए। जब शरीर संगत का है तो संगत इस पर विचार करेगी। हम आपसे जुदा नहीं होना चाहते। हमारी मर्ज़ी तो यह है कि आप ज़बरदस्ती भी नहीं कर सकते।

श्री महाराज जी कुछ मुस्कराए, फरमाने लगे:- ''अच्छा आज रात और अच्छी तरह सोच लो।'' कुटिया तक पहुंचने पर अंधेरा हो गया। इसके बाद चाय सेवन की।

श्री महाराज जी भक्त जी से फरमाने लगे:- ''प्रेमी! बादाम रोगन के वास्ते ज़ोर दे रहे हैं। तेरी क्या राय है?'' भक्त जी ने अर्ज़ की:- हुक्म हो तो थोड़ा सा ले आऊं। हँस कर फरमाने लगे, ''यह भी सब जानते हैं। प्रेमियों के मुहं की तरफ देख रहे हैं।'' इसके बाद सत्संग किया गया। जब सत्संग समाप्त हो चुका तो देखा, एक सांप श्री महाराज जी की तरफ जा रहा है बाबू जी ने कपड़े से पकड़ कर उसे उठा लिया। मगर हाथ कांप गया और सांप गिर पड़ा, फिर सोटी से उठाकर बाहर फैंक दिया।

इसके बाद आपने फरमाया:- तबियत ज़्यादा बेचैन है। जाओ विचार कर लो। न आब-ओ-हवा ने तबदीली की है, न इस विटामिन ने। लोई ओढ़ कर लेट गए। उसके बाद बाहर गए और कै कर दी।

दोपहर के बाद श्री महाराज जी पंडित बिहारी लाल जी और बाबू अमोलक राम जी को बंगले के परली तरफ चबूतरे के पास ले गए और फिर आत्मा राम जी को भी बुला लिया गया और फरमाया:- ''ज़रा ध्यान से सुनो, चूंकि अब शरीर रोगी हो चुका है, जनता की सेवा नहीं कर सकता, इसलिए अब ऐसा विचार हो रहा है कि इस शरीर को महातत्त्व के हवाले कर दिया जावे। सुबह चार बजे हथनी कुण्ड में जल के सुपुर्द कर दिया जावे।'' इस पर प्रेमियों ने अर्ज़ की:- महाराज जी! हमारा क्या बनेगा? आप किसके हवाले करके जा रहे हैं?

श्री महाराज जी फरमाने लगे:- ''जहां संजोग हैं वहां वियोग भी है। न कोई किसी के साथ आया है और न साथ हमेशा कोई रह सकता है। जो सिखया दी गई, जो इसे जीवन में ढालेगा वैसी स्थिति को प्राप्त होगा। तुम सबने कोशिश कर ली। शरीर की स्थिति ठीक नहीं हो रही। अब यह बेकार है। इसे किनारे लगा दिया जावे। कुछ ईश्वर आज्ञा ही ऐसी दिखाई दे रही है। इसके बाद प्रेमी आत्मा राम को जाने की आज्ञा हुई। इसके बाद फिर शरीर के त्याग के मुतालिक फरमाने लगे। पंडित बिहारी लाल जी ने अर्ज़ की:- महाराज जी! पहले डाक्टर से मशवरा लेकर बादाम रोगन इस्तेमाल कर लिया जावे। अगर फिर भी आराम न हुआ तो देखा जावेगा।

एक दिन आपने भक्त बनारसी दास को बुलाया और फरमाया:- बनारसी! ''तू गुरु बनने के काबिल तो नहीं, मगर हमारे बाद हमारा आसन तूने संभालना है। जा, तेरे लंगर में कभी कमी

वाक्या नहीं होगी।'' इस वक्त बाबू अमोलक राम जी ने कैमरा लाकर तस्वीर ले ली। भक्त जी खड़े थे। आपने फरमायाः– ''शैतान, अकड़ कर खड़ा है। चरणों में पड़।'' भक्त जी चरणों में झुके। उसकी भी तरस्वीर ले ली गई। उसके बाद बाबू जी को कुटिया के पिछली तरफ ले गए और फरमायाः– ''बाबू! तूने बनारसी के साथ रहना है यह गल्तियाँ कर जाता है, फिसल जाता है। तूने उसे संभालना है।'' बाबू जी ने इसके मुतालिक प्रण लिया। अक्सर बाबूजी को एक तरफ ले जाकर यह ही फरमान हुआ करता था और बाबू जी वायदा करते रहते थे कि महाराज जी, आपकी आज्ञा की पूरी तरह से पाबंदी की जावेगी।

इसके बाद फिर सेहत के मुतालिक विचार होने लगा और फरमायाः– डाक्टर बेचारा क्या करेगा? तुम सब क्यों हठ कर रहे हो? ईसा के शिष्यों ने उसके पैर धो–धो कर पिये थे मगर यह तुम से सिर्फ़ इज़ाज़त मांगते हैं कि इसे जल के सुपुर्द करने दो। ऋषि जी अर्ज़ करने लगेः– ''फैसला डाक्टर के आने के बाद ही सोच कर देंगे। मेरे विचार से इसका इलाज ज़रूरी खुशी देवेगा।''

दूसरे दिन बाहर से आकर चाय वग़ैरा ले चुकने के बाद हकीम ख़िदमत राय जी डाक्टर को लेकर आ गए। ग्यारह बजे का समय था। कुछ विचार करने के बाद डाक्टर जी श्री महाराज जी को बंगले के हाल कमरे में ले गए और अच्छी तरह से देखा, फिर आकर कमरे में बैठे। डाक्टर साहब ने फरमायाः– ''आप बादाम रोग़न और जैतून का तेल दोनों ले सकते हैं। मेरे सामने बादाम रोग़न में और किसी चीज़ या दवाई का सेवन साथ न करें। आप फिक्र न करें। कब्ज़ की तकलीफ़ दूर हो जावेगी। बाज़ दफ़ा हवा, गिज़ा तीन रोज़ में ज़रूर असर दिखाती है। पहले कम से कम दो तोले लें, फिर कम कर दें। हम लोग अकड़–बकड़ खाने वाले हैं। इसको हज़म करने के वास्ते चाय पीते हैं। तब भी यह अपना असर दिखाती है। आहिस्ता–आहिस्ता इसको कम कर दें। डाक्टर साहब ने खुद चाय बनवा कर अपने सामने बादाम रोग़न इस्तेमाल करवाया। इसके बाद प्रणाम करके डाक्टर साहब चले गए।

इसके बाद श्री महाराज जी ने फरमायाः– दरख़्त के नीचे आसन बिछाओ। जब वहां बैठे तो फरमायाः– बादाम रोगन ने तो जादू कर दिया है। आंतों का पकड़ना और बेचैनी उस समय से जाती रही है। पंडित बिहारी लाल जी ने फरमाया– ''ऋषि जी! तुम्हारी सरस्वती से जो बादाम रोग़न निकला है इसने तो कमाल ही कर दिखाया।'' सब प्रेमी सुनकर खुश हुए कि बादाम रोग़न ने तबियत ठीक कर दी है। आज सैर को श्री महाराज ने रास्ते में मार्के की बातें बतलाई थी, जो निम्नलिखित हैं:

1. इनके बाद किसी चीज़ पर अपनी मलकियत न जताई जावे। संसार के सब प्रेमियों को संगत समतावाद जानें। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, दीक्षा लिए हुए प्रेमियों में तमीज़ (भेद) न समझें। लिट्रेचर, ग्रन्थ व वाणी सब जग के लिए प्रगट हुई जानों।

2. जायदाद यानि ज़मीन के इंतज़ामात के वास्ते बड़ी–बड़ी स्कीमें बनाना रूहानियत के असूल के मुताबिक नहीं। आश्रम इन्हीं मक्सद के लिए कायम हुए हैं या होंगे कि संगत इनमें एकत्र

होकर ख़्यालात की एकता, यत्न की एकता और बाहमी (बाहरी) मेल मिलाप रखें और अपनी बेहतरी व कल्याण के मुतालिक सोचें। रिटायर शुदा प्रेमी सज्जन दुनियावी कामों से फ़रागत पाकर और वक्त निकाल कर तप की ख़ातिर रह सकें। सत्पुरुषों के बाद चालाक शिष्य बायेस (कारण) बदनामी बन जाते हैं। कई किस्म की गर्ज़ें खड़ी कर लेते हैं।

3. मौज़ूदा वक्त में ब्रह्म विद्या की ख़ास मांग नहीं है। समता की तालीम मुकम्मल तौर पर तहरीर (लिखी) हो चुकी है, अब कुछ लिखने-लिखाने की ज़रूरत नहीं रही, जैसी ईश्वर आज्ञा हुई है। अब सिर्फ़ सेवादार भिक्षुओं की ज़रूरत है जो सदाचारी, प्रेम पुजारी, पूर्ण त्यागी, समय का बलिदान करने वाले हों और हर तरफ जाकर समता के असूलों का प्रचार करें। अपने उच्च जीवन यानि अमली ज़िंदगी द्वारा दूसरे जीवों को उच्च जीवन बनाने की तरफ रागब़ करें। पांच मुख्य नियमों पर खुद आमल हों और दूसरों को चलायें।

4. प्रधानता व बड़ाई उसको नसीब होगी जो तन, मन, धन पब्लिक सेवा में अर्पण करेगा निष्काम भाव से, दिल से उठते-बैठते दूसरों को समझने वाला और छोटे-बड़े के वास्ते दिल के अंदर प्रेम रखता हो। हालांकि अपने पराये की तमीज़ ख़त्म करने वाला हो।

5. नुक्ताचीनी या दूसरों की ऐबजोई (निंदा) करने का किसी को कोई हक नहीं है। क्या तू कोई दुनिया का ठेकेदार है? अपनी ऐबजोई कर। दूसरों को अपनी ग़लती का अहसास अपने त्याग भाव और अमली जीवन से कराओ। समता की स्टेज पर किसी के खिलाफ़ कुछ कहना बिलकुल ठीक नहीं, प्रेमी ख़ास ख़्याल रखें। कोई खुद ऐसा काम न करें जिससे कि तालीम पर धब्बा लगे।

6. भिक्षु संसारी लोगों की बुराईयाँ छुड़वावें। उल्टे तरीके जो रायेज़ (प्रचलित) हैं उन्हें छुड़ायें । ग़ल्त कथाओं की जगह समता लिट्रेचर पहुंचायें। फैशन, सिनेमा, सिगरेट, तम्बाकू, मांस, मदिरा को छोड़कर सादा खाना, सादा पहनना इख़्तियार (धारण) करवायें और जो ऐसे करने से बचत हो वह पब्लिक सेवा में खर्च करें। पब्लिक सेवा का काम संगत सोचे। मुस्तहक की इमदाद (ज़रूरतमंद की सहायता), तालीम पर खर्च, बेकारी हटाने में सहायता करें। ऐसे-ऐसे अमली शुभ कर्म ही ईश्वर भक्ति, गुरु भक्ति समझें।

''प्रेमी, अंदरूनी शांति की तलाश हर जीव कर रहा है। मगर इन सब नज़र आने वाले पदार्थों का प्यार, अपनी ममता बेचैनी का मूज़ब (कारण) है। ऐसा जानकर यह संसार महज़ मेरे सुख के लिए नहीं है बल्कि दूसरों के सुख में ही अपना सुख खड़ा है, सुख दूसरों में बाँटिये। चूंकि ख़ुदगर्ज़ी और अहंगता सुख के बजाये दुःख पैदा करने वाले हैं। सत्पुरुष की शरण से और सत्संग से विवेक हासिल होता है। सत् विवेकी से मैं, मेरे और पराये का फ़र्क निकल जाता है। प्रेमियों को कहा तो सब कुछ गया है, अब अमल करना तुम्हारा फ़र्ज़ है।''

कर मजदूरी खा चूरी।

फिर बुल्ले शाह के वचन उच्चारण फरमाये।

माटी खुदी करेंदी यार।
माटी घोड़ा, माटी जोड़ा, माटी दा असवार।
माटी, माटी नूं दरुशाये, माटी दा खड़कार॥
माटी, माटी नूं मारन लगी, माटी दे हथियार।
जिस माटी पर बहुती माटी, तिस माटी हंकार॥
माटी बाग बगीचा माटी, माटी दी गुलज़ार।
माटी, माटी नू वेखन आई, माटी दी बहार॥
हस खेड मुड़ माटी होई, पंऊदी पांऊ पसार।
बुल्ला जां एहं बुझारत बूझे, तां लाह सिरों भूएं भार॥
माटी खुदी करेंदी यार॥

इसके बाद आपने मौत के अंतिम समय के बारे में कुछ हिदायत प्रगट फरमाई जो नीचे दर्ज़ की जा रही है।

1. जो मानुष शरीर छोड़ने वाला हो उसके इर्द-गिर्द बैठकर महामंत्र उच्चारण करें।

2. स्वांस के होते-होते चारपाई से उतारने की कोई ज़रूरत नहीं। जब प्राण निकल जावें उसको ज़मीन पर रख दिया जावे। स्नान कराके महामंत्र का जाप करते हुए मृतक शरीर को शमशान भूमि ले जावें। महामंत्र उच्चारण करके मृतक शरीर को चिता पर रख दिया जावे और अग्नि लगा दी जावे।

3. जब संस्कार हो जावे, महामंत्र उच्चारण करके चिता पर थोड़ा सा जल छिड़क कर वापिस आवें।

4. बिरादरी जब रोज़ाना रात को घर में आवे तो ईश्वर अरदास की जावे और ग्रन्थ ''समता प्रकाश'' का ''जीव गति सिद्धांत'' प्रसंग का एक अंग हर रोज़ सत्संग में पढ़ा जावे।

5. चौथे रोज़ शमशान भूमि में जाकर महामंत्र का जाप करके सब अस्थियां और राख इकट्ठी करके ख़्वाहे नदी हो या दरिया में बहा दी जावे। अगर नज़दीक पानी न होवे तो ज़मीन में किसी जगह दबा देवें। धरती की चीज़ धरती के हवाले।

6. ग्यारहवें दिन तौफ़ीक (सामर्थ्य अनुकूल) दान करके पांच आदमियों से बीस जाईज़ (उचित) आदमियों को भोजन खिलायें। अगर विस्तर वग़ैरा देना हो तो जाईज़ इस्तेमाल वाली जगह दिया जावे।

7. ग्यारहवें दिन सुबह दो घंटे तक महामंत्र उच्चारण करके थोड़ा प्रशाद तक्सीम कर देवें। अगर किसी की मर्ज़ी हरिद्वार जाने की हो तो ख़ास मज़बूरी नहीं। मगर वहां कोई फालतू कर्म नहीं करवायें, यह निश्चय दृढ़ करें।

गो बादाम रोग़न तीन दिन से दिया जा रहा था मगर शौच नहीं आ रहा था। डाक्टर साहब को फिर बुलाया गया। जब डाक्टर जी ग्यारह बजे के करीब आए तो प्रणाम करके बैठे। श्री

महाराज जी ने फरमाया कि हाज़त हो रही है। डाक्टर साहब ने कहा कि नज़दीक ही शौच हो आवें ताकि उसे टैस्ट कर लिया जावे। श्री महाराज जी जब फ़ारिग होकर वापिस आए तो डाक्टर साहब को बतलाया कि आज तीसरे दिन के बाद हाज़त हुई है। डाक्टर साहब ने कहा:- ''सब ठीक हो जावेगा। सिर्फ़ बादाम रोगन ही चालू रखें। आंतों में बहुत खुश्की हो चुकी है और इतनी कमज़ोरी हो चुकी है कि यह मल नहीं उतरती। दूसरे, कोई जुलाब वाली चीज़ नहीं लेनी चाहिए। जो मसब्रा एलुआ लेते रहे हैं उसने ज़्यादा खुश्की कर दी है। इससे मल तो आ जाता है मगर तरी को ख़त्म कर देती है, जिसकी वजह से यह तकलीफ़ हो रही है। कोलन में कोई तकलीफ़ नहीं ।''

जब श्री महाराज जी हाथ साफ करके आसन पर बिराजे, तबियत बेहतर थी। मगर फरमाया:- ''पूरी तरह फ़रागत नहीं हुई।'' डाक्टर साहब ने अर्ज़ की:- आप खाते ही क्या हैं? आप दो बार दूध या चाय लिया करें। सुबह और शाम तीन-चार बजे दो बार ज़रूर लेना पड़ेगा तब सारा आंतों का कार्य ठीक हो जावेगा। कोई फ़िक्र करने की बात नहीं। अब ताजेवाले के प्रेमियों को भी एक हफ्ते तक कृतार्थ करें। सबकी बड़ी ख़्वाहिश है।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''ईश्वर आज्ञा से जब चलना हुआ वहां सत्संग रख दिया जावेगा। आपको आने-जाने की बड़ी तकलीफ़ दी गई है। ख़ैर, गुरमुखों से जो सेवा बन जावे वह ही लाभकारी है।''

डाक्टर साहब ने अर्ज़ की:- ''दाते की बड़ी कृपा है। वाहेगुरु ने मेहर की है जो आपके चरणों में आने की बुद्धि बख़्शी है।'' तो महाराज जी ने फरमाया:- ''डाक्टरों, हकीमों और वैद्यों को हमेशा दयावान रहना चाहिये। ईश्वर ऐसे व्यक्तियों के हाथ में शफ़ा (स्वस्थ करने की ताकत) बख़्शता है। जो रोगी को अच्छी तरह देखकर ठीक दवाई दे और वचनों द्वारा तसल्ली भी दे तो मरीज़ ज़रूर राज़ी हो जाता है। सबसे बड़ी सेवा संसार में रोगी की सेवा है। इस जैसा तो संसार में और कोई पेशा ही नहीं। फीस से मतलब नहीं रखना चाहिये। जिसका रोग दूर हो जाता है तन-मन-धन सेवा में हाज़िर करता है।''

सत्पुरुष की सेहतयाबी की सब प्रेमियों को बड़ी प्रसन्नता हुई। आसन आम के पेड़ के नीचे लगाने की आज्ञा फरमाई और जब आसन पर विराजमान हुए तो पंडित बिहारी लाल जी ने अर्ज़ की:- पठानकोट क्या सूचना दी जावे। श्री महाराज जी ने मुस्कराते हुए फरमाया:- ''तुम फ़कीरों का पीछा नहीं छोड़ते हो। दो-चार रोज़ और ठहर जाओ।'' प्रेमी रामजी दास व हकीम ख़िदमत राय काहनूवान, गुरुदासपुर के वास्ते प्रार्थना करने लगे।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''अभी शरीर बहुत थका हुआ है, कुछ ठहर जाओ, अच्छी तरह इसका रंग देख लें।''

पंडित जी ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! पठानकोट निवासियों को जगह के वास्ते भी लिखना है और भी कई बातें सोचनी हैं। इस वास्ते कृपा करके एक दिन निश्चित कर देवें।'' प्रेमी रामजी दास और जज साहब ने फिर काहनूवान वग़ैरा के लिए प्रार्थना की। इस पर भी महाराज जी ने

फरमाया:– ''तुम काफी अर्सा से सेवा में हाज़िर हो। नई-नई जगह वक्त देना चाहिए। गुरदासपुर कोई ज़्यादा दूर नहीं। 7 अप्रैल सुबह को इधर से चलेंगे। कुछ समय हैड ताजे वाला सत्संग के लिए दिया जावेगा और उधर से उसी रोज़ चल दिया जावेगा। अब जिसे इतलाह देनी है दे देवें।

प्रोग्राम सुनकर प्रेमी शेष राज कहने लगे:– ''महाराज जी! मेरे लिए क्या आज्ञा है?'' श्री महाराज जी ने फरमाया:– ''प्रेमी! दूर दराज़ सफ़र करना तुम्हारे लिए मुश्किल है। घर पर रहकर माता का भी ख़्याल रखो। अपने निर्वाह का भी सोचो। जब आश्रम का सिलसिला शुरू हो, बाबू जी के पास आकर सेवा पूछ लिया करो। डाक्टर गोपी चंद भार्गव के सिर को आसीसें दो जिसकी सिफ़ारिश डाक्टर भक्त राम जी ने करवा कर सिलसिला आश्रम का जोड़ दिया है। बाबू जी की भाग-दौड़ की सेवा सफल हुई है। प्रेमी, मिलकर सहयोग दो।''

156. पठानकोट में एकांत निवास व सत् उपदेश

बाबू अमोलक राम जी को किसी काम के लिए जगाधरी जाना था। श्री महाराज जी से आज्ञा मांगी तो आपने फरमाया:– ''6 अप्रैल को वापिस आ जाना और 7 अप्रैल को यहां से साथ चलना होगा।'' बाबू जी 5 अप्रैल को ताजेवाले से जगाधरी गए। वहां पहुंचने पर पता लगा कि 7 अप्रैल को इन्तकाल बराय तसदीक पेश होना है। ज़मीन की रजिस्ट्री लिखवा लेने के बाद इन्तकाल कागज़ात माल में दर्ज़ करवा दिया गया था। बाबू जी ने चरणों में रूक्का तहरीर किया और अर्ज़ की:– 7 अप्रैल को इन्तकाल पेश होना है। इसलिए वापिसी सूचित करने की कृपा करें कि आया चरणों में हाज़िर हो या जगाधरी ठहरे। इस पर वापसी ही आपने सूचित किया कि आपको बस पर बुड़िया चौक पर मिले। श्री महाराज जी इन्हें स्टेशन पर साथ ले गए और वहां पहुंचकर आज्ञा दी– कि जगाधरी रह करके आश्रम तैयार करवा दे।

श्री महाराज जी हथनीकुंड बंगले से सुबह ही रवाना होकर हैड ताजे वाला तशरीफ़ ले गए और वहां नहर के अफ़सरान एस.डी. ओ., एक्सीएन वग़ैरा व अन्य कर्मचारी सत्संग के लिए जमा थे। उस जगह आपने निम्न अमृत वर्षा फरमाई।

सत् उपदेश अमृत

शरीर रूपी संसार को धार कर जीव जब से इस संसार में आया है अपनी कमी को पूरा करने के वास्ते दिन-रात यत्न-प्रयत्न कर रहा है। इसकी दौड़ हर समय यह ही लगी है कि जैसे भी हो ज़्यादा से ज़्यादा सुख शांति मिले। अगर बावजूद कोशिश के न तो कभी किसी की कमी पूरी हुई और न ही सुख मिला। बल्कि कमी को पूरा करते-करते शरीर ख़त्म हो जाता है और इस कमी को पूरा करने के लिए फिर जन्म लेना पड़ता है। विवेकी पुरुषों ने संसार में आकर इस कमी को महसूस किया और इसे पूरा करने की कोशिश में लगे। काफी जद्दो-जहद (प्रयत्न) के बाद सत् की तहकीकात (खोज) करके नेहकर्म अवस्था को प्राप्त होकर असली खुशी प्राप्त की और लोगों को

समझाया और लोगों को पुकारा–कि आओ, सच्ची शांति सुख ले लो। ईसा ने कहा:– ''जो मेरे पर ईमान लावेगा वह ही खुदा तक पहुंच सकेगा। मैं खुदा का बेटा हूं।'' बुद्ध ने उस अवस्था को निर्वाण कहा। मोहम्मद के कहा:– ''अल्लाह वाहिद लाशरीक (अद्वैत व असंग) है उस पर ईमान लाओ।'' रामकृष्ण आदि सबने आत्म सुख की प्राप्ति के वास्ते ज्ञान विचार दिया और सत् उपदेश जीव तक पहुंचाने की कोशिश की और बताया कि सुख शांति तो तेरे पास है, इसे अपने अंदर तलाश करो। इस शरीर के अंदर जीवन शक्ति है, उसको जानने से ही सुख शांति प्राप्त होती है। जिन्होंने उसकी तलाश करके कमी को पूरा किया उनके नाम फ़ना (नाश) होने वाली दुनिया में सदा कायम हैं। दायमी (स्थायी) ज़िंदगी को वह ही प्राप्त हुए। गुरु के सिख बनाने के लिए ही गुरुओं ने किस तरह कुर्बानियाँ दी हैं। उनकी कृपा से हिन्दू धर्म पंजाब में नज़र आ रहा है। जो भी महापुरुष संसार में आये सबने उस कमी को दूर करने के साधन बताये। उन्होंने ही संसारी जीवों को सच्चा उपदेश इस शरीर को खोज कर दिया । उनको ही दुनियादारों ने महात्मा, सत्गुरु, पीर, अवतार करके पुकारा है। सत्पुरुष दु:खी जीवों के दु:ख-सुख को देख हमेशा दया और मेहर करते आए हैं। हिन्दुस्तान की मिट्टी में ख़ासियत है, कोई न कोई सत्पुरुष पैदा होता रहता है और घोर नरकी संसारी जीवों को दु:खों से निज़ात (मुक्ति) का रास्ता समझाता रहता है। कई प्रभु के प्यारे, भले सज्जन उनका हुक्म मान कर चलते आए हैं। आईंदा भी जुगा-जुग तक उनकी तालीम का आसरा लेकर चलते जावेंगे। ख़ुदग़र्ज, कपटी लोग आपस में वैर डलवा कर अपना-अपना उल्लू सीधा करते हैं। सच्चाई को समझने वाले और उस पर चलने वाले बहुत कम हुआ करते हैं। अब तो तुम्हारा अपना राज हो गया है। अगर अपने-अपने फ़र्ज़ को समझकर राजा प्रजा चलेंगे तो सुख पावेंगे और अगर ''तवे की मेरी और चूल्हे की तेरी'' वाला हिसाब हुआ तो हाथ आया हुआ राज चला जावेगा। दूसरे संभाल लेंगे। पता नहीं किस-किस की कुर्बानी ने तुमको राज करने वाला बनाया है। अंग्रेज़ बड़े समझदार थे। जब आख़िरकार उनकी पेश न गई तो जाते-जाते हिन्दू मुसलमानों का झगड़ा खड़ा करके बांट गए। जितना भी मिल गया है उसे संभाल लोगे तो जनता सुख पावेगी। ख़ुदग़र्जी ने जो घर कर रखा है उसे नेहरू भी दूर नहीं कर सकता। उसे मिलकर विचार से ही दूर किया जा सकता है। विचार सत्संग से मिलता है। सत्संग के लिए गुरुद्वारे, मन्दिर वग़ैरा बने थे। इस समय नुमायशी जीवन दिन-ब-दिन बढ़ रहा है। अगर इसे रोका न गया तो खाना-पीना मुश्किल हो जायेगा। इस वास्ते अपने गुरु, पीरों की हिदायत पर चलने में सबको आराम मिलेगा। हर एक, चाहे छोटा है या बड़ा, अपने-अपने फ़र्ज़ को समझो। फ़र्ज़ को समझना ही धर्म है। आमदन से बढ़कर खर्च करने वाले ही रिश्वत लेने पर मजबूर होते हैं। सत्संग सुनने और मंदिर और गुरुद्वारे जाने का मतलब यह है कि मिल कर बैठो, वंडके (बाँटकर) खाओ। ईश्वर को याद करो। इसमें लोक-परलोक का सुख है। प्रभु सबको सुमति देवें ताकि अपना जीवन पर-उपकारी बनायें।

इसके बाद शुक्ला जी ने कहा:– ''महाराज जी! पहले भी काफी दिनों तक इधर पास ही निवास कर चुके हैं और रोज़ाना शाम को प्रेमी आपके वचनों द्वारा लाभ उठाते रहे हैं। इस दफ़ा

शारीरिक तकलीफ़ की वजह से मौका नहीं मिला। हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि- आप फिर किसी समय ज़रूर समय देने की कृपा करें। जिस जगह फरमायेंगे इंतज़ाम कर दिया जावेगा।''

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''इस समय सफ़र में हैं, फिर किसी समय ईश्वर आज्ञा हुई बता दिया जावेगा। फ़कीरों को प्रेम से जहां बिठाआगे, बैठ जावेंगे। अब आप सबके काम का वक्त है, काम करें।'' इसके बाद लारी पर सवार होकर जगाधरी के लिए रवाना हुए। जब लारी बुढ़िया चौक पहुंची, बाबू जी आगे इंतज़ार कर रहे थे। आश्रम की जगह उन्होंने वहां से दिखाई। उस समय उस तरफ सड़क बन रही थी और यह आश्रम के पास से गुज़रती थी। बाबू जी को स्टेशन पर साथ ले जाया गया। स्टेशन पर बाबू जी को आज्ञा हुई कि ज़मीन का कब्जा लेकर आश्रम बनवाओ। श्री महाराज जी गाड़ी में सवार होकर अम्बाला तशरीफ़ ले गए और वहां से दूसरी गाड़ी तबदील करके पठानकोट के लिए रवाना हो गए।

श्री महाराज जी के निवास के लिए मिस्टर जस्टिस मेहर चंद महाजन के बाग में प्रबन्ध किया हुआ था। वह ही कमरे, जहां सत्पुरुष पहले निवास कर चुके थे, साफ करवाये हुए थे। वहां आपको ठहराया गया। शामयाना वग़ैरा भी प्रेमियों ने लगवा दिया था। रास्ते में श्री महाराज जी को दांत दर्द की तकलीफ़ हो गई। दूसरे दिन डाक्टर को बुलाकर दांत निकलवा दिया। दो-तीन दिन खामोशी ही रही।

चूंकि बैसाखी का दिन नज़दीक था इसलिए प्रेमियों ने विशाल सत्संग सम्मेलन की प्रार्थना की और अर्ज़ की:- लंगर की भी आज्ञा देने की कृपा करें। श्री महाराज जी ने सत्संग की आज्ञा दे दी। सत्संग का समय नौ बजे से ग्यारह बजे तक रखा गया ताकि संक्राति का दिन होने के कारण लोगों को दूसरी जगह जाने में कोई रुकावट न हो।

सत्संग पूरे 9 बजे महामंत्र व मंगलाचरण के उच्चारण करने से शुरू किया गया। उसके बाद प्रार्थना-अंक से दोहरा शब्द पढ़ा गया। इसके बाद श्री महाराज जी ने अमृत वर्षा फरमाई।

सत् उपदेश

जीव शरीर रूपी संसार को धारण करके मोह रूपी जाल में फंसा हुआ है। शरीर रूपी चोला पहनकर इसमें अनेक प्रकार के कर्मफल की इच्छा को लेकर हर समय कर्म करता रहता है। कर्म करके शांति सुख चाहता है। मगर जितने कर्म जीव करता है वह भोग पदार्थों के एकत्र करने वाले होते हैं, जो वासना के फैलाव का मूजिब (कारण) होते हैं और इससे अशांति, दु:ख बढ़ता जाता है। चूंकि स्वार्थ की ख़ातिर कर्म करता है इसलिए नेःकर्म अवस्था प्राप्त नहीं होती। शादो-नादिर (विरला) ही बाहोश बुद्धि वाला जीवन छुटकारे के लिए सोचता है और यह जानता है कि शरीर भी ख़त्म होने वाली वस्तु है और भोग पदार्थ भी नाश रूप हैं। गर्ज़ कि (अर्थात्) संसार की हर चीज़ हर समय तबदील हो रही है, इसलिए कोई भी तबदील होने वाली वस्तु-चैन नहीं दे सकती। संसार को देखा बहुतों ने है, लेकिन समझा चंद एक ने है।

संसार एक बड़ा मेला है। विचार करके देखा जाये तो पता लगेगा कि दिन-रात असंख्य जीव आ रहे हैं। सत्पुरुष हर समय संसार को मेले के रूप में देखते हैं। भोगी जीव जब कोई त्यौहार आता है और मेले में जाते हैं, तो खूब कर्रोफर (शान-शौकत) से जाते हैं। मेले में चक्कर काटकर धक्के-मुक्के खाकर जब वापिस आते हैं, तो पूछा जाता है कि मेले में क्या देखा? जवाब मिलता है, "थकावट हो गई है, हिम्मत नहीं रही।" चारपाई लेकर लेट जाते हैं।

अगर विचार किया जावे तो पता लेगगा कि संसार दु:ख रूप ही है। किसी समय सुख नहीं देता है। आशा सुख की लगी हुई है। यत्न-प्रयत्न करता है मगर सुख मिल नहीं रहा। आशा-आशा में हर शरीर कर अंत हो जाता है। जीवन में अनेक पुण्य-पाप करके उनके फल-सरूप दु:ख-सुख भोगता हुआ अंत का विचार भूल जाता है। आख़िर शरीर की तबदीली के समय जब अंत समय जीवन का सारा नक्शा सामने होता है और गले में कफ़ खड़कने लगती है तब अफ़सोस करता है और कहता है कि जो कुछ करना था वह किया नहीं। जिनके लिए इतनी दौड़-धूप जीवन में की गई, कई किस्म के पाप-पुण्य किये, कोई साथी नहीं बना। दु:ख में कोई सहायक न हुआ। आख़िर अफ़सोस करता हुआ शरीर छोड़ता है। किसी विरले ही खोजी पुरुष ने समझा कि शरीर की परायणता को छोड़कर आत्म परायण होने में असली सुख है। शरीर और शरीर के सुख बहुत बदलने वाले हैं। इनमें कुछ सार नहीं, क्योंकि जो चीज़ बदलने वाली है वह कभी भी अबिनाशी सुख नहीं दे सकती। जिस समय ऐसी सोच आती है तब किसी गुरु, पीर को ढूँढ़ने लगता है। सत्पुरुष के मिलने पर ही जीवन की सार का पता लगता है, फिर बुद्धि सत् की खोज में लगती है। मन के मनोरथ को पूरा करने वाले जीव जिज्ञासु नहीं कहलाते। जिज्ञासु वह हैं जो अनात्म पदार्थों के मोह को छोड़कर आत्म परायण होकर समता आनन्द की प्राप्ति कर लेता है। इसलिए हर समय विचार करना चाहिए कि संसार क्या है? विचार से ही संसार से मन उपराम होता है। ऐसा विचार करने में ही भला है। जो खोजे सो पावे। जो तलाश करता है उसे वह मिलता है। प्रभु सुमति देवें ताकि आत्म तत् की खोज कर मानुष चोले का लाभ प्राप्त करें। ईश्वर सबको निर्मल बुद्धि देवें।

एक दिन सत्संग के बाद एक प्रेमी ने पूछा:-

प्रश्न - महाराज जी, जब जीव शरीर से निकल जाता है, बाद में सम्बंधी क्रियाकर्म करवाते हैं। क्या वह उसे मिलता है या नहीं? जैसा पंडित लोग कहते हैं हम करते जाते हैं, मगर चित्त में कुछ शक-शुबा बना रहता है। कृपा करके समझावें कि यह क्या भेद हैं?

उत्तर - श्री महाराज जी ने फरमाया:- "तुम लोग व्यापारी हो। हमेशा नफ़े वाली बात सोचते हो। किसी को कुछ मिलता है या नहीं, तुम्हारे हाथ से ऐसे कर्म किसी बहाने से हो जाते हैं। बुज़ुर्गों ने सोचा होगा, संसारी लोग हमेशा तो पुण्य-दान, यज्ञ कर नहीं सकते, इनके वास्ते ऐसे तरीके रख दो जिससे बंधे हुए किसी समय अच्छे कर्म कर सकें। मिलना-मिलाना किसने देखा है, माता-पितामा की याद हो जाती है। जैसे आजकल रिवाज़ चल रहा है जन्म दिन के मनाने का, इसी

तरह पित्रों की याद मनाने के दिन मुकर्रर कर देते हैं। श्राद्ध के पन्द्रह दिनों में तुम कुछ दान करो। वैसे पन्द्रह दिन श्राद्ध करोगे तब ही वह तृप्त होंगे, बाकी साल के दिन वह कैसे गुज़ारा करते होंगे। प्रेमी, कुछ अपनी बुद्धि से सोचना चाहिए। पंडितों ने खाने के रास्ते निकाल रखे हैं। ज्योतिष द्वारा दूसरों को कमज़ोर ग्रह छोड़कर अपना काम चलाते रहेंगे। दूसरी भी कई देवी-देवताओं की पूजा चलती रहती है। मोटी बात समझो, ज़िन्दगी में तुमने जो कुछ भी अच्छा या बुरा काम कर लिया है उसका एवज़ाना ज़रूर मिलेगा। ऐसी आदत डालो कि हर समय अच्छे कर्म होते रहें। श्राद्ध का मतलब श्रद्धा से हाज़तमंद की तन-मन-धन से जैसी सेवा बन सके यथाशक्ति करते जाओ। व्यौहार साफ रखो। सादा ख़ुराक खाओ। दो-चार घड़ी ईश्वर की याद किसी गुरु-पीर के बताये हुए रास्ते द्वारा कर लो। अपने आप परलोक सुधर जायेगा।"

प्रश्न - एक दूसरे प्रेमी ने कहा, "महाराज जी, ख़ुराक तो हमारी पाकिस्तान बनने से पहले सादा थी। जब से आज़ादी मिली है शराब आम हो गई है। इसके बग़ैर रोटी स्वाद ही नहीं देती।"

उत्तर - प्रेमी, खोता, घोड़ा, गाए, भैंस जो कुछ भी सामने आए सर भंगे खाते जाओ, शायद तृप्ति हो जाए। बुद्धि भ्रष्ट तब ही ज़्यादा हो रही हैं। स्त्रियों, मर्दों सबकी तमीज़ जाती रही है। इसके साथ शराब, फिर सारे ऐब क्यों न हों? मांस खाना है तो परहेज़ किसी चीज़ का न रखें। अंग्रेज़ों से ख़राब बात सीख ली है। उनकी अच्छी बातें नहीं सीखीं।

जे रत लगे कपड़े, जामा होये पलीत।
जो रत पीवे मानसा, तिन क्यों निर्मल चीत।।

प्रेमी, किसी बुज़ुर्ग ने मांस खाने की इज़ाज़त नहीं दी, न किसी धर्म की आज्ञा है। वाम मार्ग वाले किसी ज़माने में ऐसा करते थे। हिन्दू धर्म में तो बिल्कुल ही इसकी इज़ाज़त नहीं है। ख़्वाह-म-ख़्वाह बुज़ुर्गों के नाम बदनाम करते हो, फलां ने शिकार किया था, फलां ने खाया था। मांस दरिन्दों व हैवानों की ख़ुराक है। गाए, भैंस, बकरी वग़ैरा जिनके दांत इंसानों से कुछ मिलते जुलते हैं वह मांस की तरफ देखते भी नहीं। मांस खाने वाले कुत्ते, बिल्ले, भेड़िये, शेर वग़ैरा सैंकड़ों जानवर हैं। सब जीभ का चस्का है। मिर्च, मसाला, घी जिस चीज़ में डालो वह ही स्वादिष्ट बन जाती है। आपात-काल के वक्त, जब किसी को कुछ न मिले, जीवन रक्षा के वास्ते ग्रहण करने के वास्ते लिखा है। जिस देश में हज़ारों किस्म के पदार्थ हैं वहां भी ऐसी ख़ुराक खानी मूर्खता नहीं तो क्या है? दूसरे जीवों को क्लेश देकर अपने सुख पूरे करने सबसे बड़ी बेवकूफी व नादानी है। यह बेहोश बुद्धि का काम है। सत्संग सुनने क्यों आते हो, अगर ख़ुराक भी पवित्र नहीं कर सकते? मांस खाने वाला हमेशा धोखेबाज़ होगा, ज़ुर्रत (हिम्मत) कम होगी। दिलेर और सेवादार हमेशा पवित्र ख़ुराक ग्रहण करने वाला ही हो सकता है। ईश्वर ही बुद्धि देवें, लोग अच्छा सोच सकें और अच्छा कर सकें। इस तरह विचार करते रहा करो, आप ही समझ आ जाती है।

आम प्रेमियों के चले जाने के बाद कुछ प्रेमियों ने सत् उपदेश प्राप्त करने की प्रार्थना की। इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया:- "प्रेमी! मायावादी जीवों को अपनी तरफ खींचते हैं तुम भागने की कोशिश न करो। यह मांगने वाले फ़कीर नहीं, कुछ देकर ही जावेंगे। संसार एक कांटे की बाड़ है। मगर भोले मोहवश जीव मजबूर हैं। इन्हें कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। न पता लगता है क्या करें? जिस तरफ किसी ने लगाया वैसा करने लग जाते हैं। सार ज्ञान के बिना नित ही जीव मोहवश होकर परम दुःखी होता रहता है। तृष्णा की अग्नि जलाती रहती है। कई प्रकार के कर्म करता है कि चित्त को शांति मिले, मगर यह नित ही त्रृखावन्त और डोलता हुआ भटकता रहता है। उसको पूरा करते-करते अनेक जन्म धारण करने पड़ते हैं, लेकिन फिर भी धीरज एक पल की नहीं। ऐसा ही हाल सब राजे-रानों और अमीरों-गरीबों का है। अज्ञानता की जंज़ीर में बंधे हुए नाना प्रकार के संसार को फैला हुआ देखकर इसके ग्रहण-त्याग में सुख-दुःख पा रहे हैं।

कर्म द्वन्द्व को धार के, राग द्वेष में होए अंगारी।
धरती सागर नित ही तापे, मिटे नहीं जीव ख्वारी।।
बहु रचना देख तृप्त नहीं पावे, कर्म फांस में पड़े विशेखे।
लिखने ना आवे अद्‌भुत खेल अपारा, पड़ा अंधमत धार भुलेखे।।
अनंत सरूप देखे दिन राती, भिन्न-भिन्न गुन कर्म दिखाई।
अपनी-अपनी क्रीड़ा सब करें, सार बिना नित-नित भटकाई।।
अनेक मनोरथ धार के, अनेक जतन करें सुख की ताईं।
ओड़क चले सब निरासे जग से, तृष्णा में आवें जाईं।।
कोट जन्म इच्छा में धारे, मिटी न आपामत ख़्वारी।
'मंगत' बिन सत्‌गुरु साजन संत के, कौन बतावे भेद अपारी।।

"इस न रहने वाले संसार से छूटने का उपाय हर समय सुनते रहना चाहिए। सुन-सुन कर ठीक राह पर किसी न किसी वक्त चल ही पड़ोगे। जब-तक संसार को सुख रूप जान रहे हो तब तक ईश्वर वाला रास्ता मुश्किल है। जिस वक्त उदासी मत (उदास वृत्ति) इख़्तियार करोगे तब सार जीवन के भेद को जानने की कोशिश करोगे। इसी तरह लगे रहो।"

एक दिन भक्त बनारसी दास के बड़े भाई का पत्र आ गया कि अज़ीज़ की शादी है, देहरादून पहुंचो। भक्त जी ने महाराज जी से प्रार्थना की:- क्या आज्ञा है? इस पर आपने फरमाया:- "प्रेमी! चार रोज़ के वास्ते जाकर क्या कर लोगे? शादियां, ग़मियां होती रहती हैं। तुम्हारे बग़ैर भी कारज हो सकता है। इनका प्रोग्राम आगे जाने का बन रहा है। तुम कुछ अपना प्रेम प्रशाद भेज दो। सब खुश हो जावेंगे।" दूसरे रोज़ पंडित कुन्दन लाल ऋषि द्वारा एक सौ रुपया भिजवा दिया। भक्त जी को बाद में बताया कि तुम उन्हें सौ रुपया दे दो। भक्त जी को हैरानी हुई और बोल भी न सके। इज़ाज़त न मिलने का जो गुस्सा उनके अंदर आ गया था वह भी दूर हो गया।

दूसरे रोज़ जम्मू से सतपाल और कमला आ गए। चरणों में नमस्कार करके बैठ गए और भक्त जी को संदेश लंगर के कमरे में भेज दिया कि जम्मू से सतपाल, कमला आए हैं। भक्त जी का उनसे मोह था, फौरन आ गए और मिलकर प्रसन्न हुए। श्री महाराज जी ने फरमाया:- "इनके वास्ते भी लंगर तैयार करो।" मगर सतपाल ने कहा:- "महाराज जी! हमारी रोटी शहर में पंडित कुन्दन लाल ऋषि जी के घर में है। भक्त जी को भी आज्ञा देवें कि साथ चलें।"

श्री महाराज जी ने आज्ञा दे दी। भक्त जी लंगर का सामान संभाल कर आ गए और नमस्कार करके जब जाने लगे तो आपने फरमाया:- "प्रेमी! जल्दी आना।" सतपाल ने कहा, "महाराज जी, हमने भी रोटी खाकर दिल्ली चला जाना है।" उन्होंने भी प्रणाम किया और तांगे में, जो साथ लाए थे, भक्त जी को साथ लेकर शहर रवाना हो गए। रास्ते में पंडित राम जी दास मिल गए जो दूसरे तांगे में कुटिया की तरफ जा रहे थे। तांगे से ही भक्त जी ने पंडित जी को प्रार्थना की:- शायद मुझे आने में देरी हो जाये, आप तीन बजे दूध गर्म करके मामूली पत्ती डालकर, एक उबाला देकर उतार कर, ज़रा ठंडा करके श्री महाराज जी को दे देना। यह कह कर भक्त जी बेफिक्र हो गए। पंडित कुन्दन लाल जी के घर पहुंचे। आगे इंतज़ार हो रही थी। भोजन सतपाल वग़ैरा ने पाया। भक्त जी ने भी साथ मिलकर खाया। तकरीबन दो बज गए। पंडित जी कहने लगे- "तीन बजे श्री महाराज जी को दूध देना है।" भक्त जी ने कहा:- रामजी दास को कह रखा है। आज वह दूध गर्म करके दे देगा। ऋषि जी बेफिक्र हो गए। सतपाल ने भक्त जी से कहा:- "चलो, बाज़ार से कुछ लेकर स्टेशन पर चलें, वहां ही बैठकर बातें करेंगे।" वहां से चलकर बाज़ार से होकर स्टेशन पर पहुंचे। गाड़ी दो घंटे पहले प्लेटफार्म पर लगा दी जाती थी। इस समय वहां खड़ी थी। एक कमरे में बैठकर बातें करने लगे। तकरीबन चार बज चुके थे, इतने में पंडित कुन्दन लाल जी ढूंढते-ढूंढते आ गए। आकर ब्रह्म सत्यं कहा। कहने लगे:- "चलो भक्त जी, महाराज जी याद कर रहे हैं। अभी तक उन्होंने दूध नहीं लिया।" यह सुनकर भक्त जी ने महसूस किया। क्या बात हैं क्यों दूध नहीं लिया? सतपाल कहने लगा, "फिर श्रीनगर मिलेंगे।"

भक्त जी पंडित जी के साथ साइकिल के पीछे बैठकर निवास स्थान पर पहुंचे। देखा महाराज जी खामोश बैठे हैं। सत्संग हो चुका था। प्रणाम करके भक्त जी बैठे तो फरमाने लगे:- "अब रिश्तेदारियां पालनी शुरू की हैं पीछे की होश नहीं रही। सेवा करके बड़ा पहाड़ गिरा दिया है। बड़े रिश्तेदार यह हैं, वह आये हँस-हँस करके बातें की, इस तरह मौज-मेले में अभी तेरी बुद्धि फिरती है। चलती दफ़ा कहा भी गया था, जल्दी आ जाना, बेईमान ने ज़रा परवाह नहीं की।"

भक्त जी लंगर में गए। दूध वैसे ही पड़ा था, ऊपर से श्री महाराज जी भी आ गए और फरमाने लगे:- "रास्ते में संदेशा दे दिया गया था, दूध गर्म कर देना। फ़कीर तेरे क्या लगते हैं अभी तक समझ नहीं आई? दो वक्त दूध गर्म करना पड़ता है, बोझ समझ रहा है। यह किसी और के हाथ से दूध-चाय गर्म करवा कर लेना नहीं चाहते। पानी का घूंट लेना होता है तो तुझे आवाज़

दी जाती है सेवा अगर किसी दूसरे को देनी होगी तो खुद भी उसे कह सकते हैं। तेरा प्रधान बनने का क्या मतलब है? यह नहीं समझता, बड़े भाग्य से गुरु सेवा मिली हुई है। इसमें भी लापरवाही कर रहा है। यह खुद अपनी सेवा आप कर सकते हैं। कह दे कि आईंदा मेरे से कुछ नहीं हो सकता।"

भक्त जी ने जवाब दिया:- "महाराज जी! बात तो मामूली है। आप ख़्वाह-म-ख़्वाह नाराज़ हो रहे हैं। रामजी दास को न कहता तो मेरी ग़ल्ती ज़रूर थी।"

आपने फरमाया:- "यह ग़ल्त कह रहे हैं? जो कहा जाता है समझा करो। दूसरे के हाथ का गर्म किया हुआ दूध नहीं पीते। सेवा से तू तंग आ गया है तो तेरी सेवा भी कर देंगे और फिर और कुछ कहकर आसन पर चले गए।"

भक्त जी दूध गर्म करके चाय डालकर ठंडा करके ले गए और जाकर सेवा में रखा। मगर आपने ग्रहण नहीं किया और फरमाया:- "जब-तक तुम अपनी ग़ल्ती नहीं मानोगे दूध सेवन नहीं करेंगे। मूर्ख, तेरा मगज़ बिगड़ा हुआ है।"

भक्त जी ने हाथ जोड़कर माफी मांगी और अर्ज़ की:-"आईंदा ऐसी लापरवाही नहीं होगी।" श्री महाराज जी ने फरमाया:- "तेरा इनके साथ क्या सम्बंध है, पहले इसको समझ? कोई किसी किस्म की पाबंदी इन्होंने लगा नहीं रखी। बिलकुल खुला छोड़ रखा है। पहले ज़माने में बारह-बारह वर्ष तक गुरु झाडू लगवाते थे, फिर रसोई में कदम रखने देते थे। लंगर की सेवा तुमने मख़ौल समझ रखी है। तुमको आज़ादी है। तुम खुद किसी समय लंगर की सेवा किसी को नहीं करने देते। आप ही चिमटे रहते हो। वैसे कोई आवे, अपना खाना आप पका कर खाये। सेवा करनी भी करवानी भी दोनों तरह की होनी चाहिये। जाते-जाते संदेशा देने का क्या मतलब था? गर्म करके चाय बना देना, जिस तरह किसी ग़ैर का काम करवाना होता है। बेहोश बुद्धि नहीं होनी चाहिये। सोचना चाहिये, किनकी ज़िम्मेदारी मेरे सिर पर है। सारी उम्र बिल्कुल बच्चे बने रहोगे। सुना, ऐसा लापरवाह आईंदा न होना। बिल्कुल कुछ कहने का मौका नहीं देना चाहिये। फ़कीर किसी के मित्र नहीं होते। जानबूझ कर लापरवाही फिर हुई तो देखना क्या नतीजा निकलता है? अच्छा, ला बचा हुआ दूध भी ले आ। लाकर दिया तो थोड़ा सा पीकर फरमाने लगे:- "ले बाकी का तू पी ले। तेरा गुस्सा ठंडा हो।" इस पर भक्त जी का गुस्सा ठंडा हुआ और शर्मिंदा हुए।

सत्पुरुष की ख़ास निग़ाह भक्त जी पर थी। आप सेवा का सही स्वरूप उसके अंदर जाग्रत करना चाहते थे। बैरमशाह की मिसाल भी इस मक्सद के लिए दी गई थी। पीर शाम नाथ की सेवा का ज़िक्र भी भक्त जी के सामने हुआ। पीर शाह की मिसाल भी भक्त जी के सामने दी गई। ऐसी सेवा पर भक्त जी को लगवाकर साहिल (मंज़िल) पर पहुंचाना चाहते थे।

श्री महाराज जी इसके बाद बाहर चल दिये। इस जगह श्री महाराज जी रात के 2 बजे बाहर तशरीफ़ ले जाते। 27 अप्रैल को डा० भक्त राम जी वे सेठ तारा चंद दर्शनों के लिए हाज़िर हुए और हाल-चाल पूछा। श्री महाराज जी की सेहत को देखकर बड़े प्रसन्न हुए। दर्शन करके शाम को वापिस चले गए।

दूसरे दिन राजा साहब चनेनी दर्शनों के लिए आ गए। प्रणाम करके बैठ गए। श्री महाराज जी ने कुशलता पूछी तो राजा साहब ने अर्ज़ की:- "अब हालात खराब हैं। स्टेट में आबादी मुसलमानों की है, हिन्दू कम हैं। इस समय हमारी कोई कदर नहीं रही। न कोई हुक्म मानता है। हिन्द गवर्नमेन्ट ने पांच सौ रुपया वजीफ़ा लगा दिया है। ज़मीन की पैदावार सिर्फ चौथाई मिलती है। इसलिए गुज़ारा होना मुश्किल हो रहा है। इस वास्ते विचार हो रहा है कि पठानकोट या जुगिन्दर नगर की तरफ कुछ ज़मीन लेकर जीविका चलाई जावे। जिधर से आए थे फिर उधर जाना पड़ गया है। आप आशीर्वाद देवें। "सब ठीक हो जावेगा," श्री महाराज जी ने तसल्ली दी। थोड़ी देर के बाद राजा साहब चले गए।

जब राजा साहब चले गए तो आपने फरमाया:- "अब इन राजाओं, महाराजाओं की क्या हालत बन गई है? इस माया जाल से बचना मुश्किल हो गया है। पिछले सुखों के सुपने आ रहे है।। कैसे समय बदला है, किसी का राज्य नहीं रहने दिया? पटेल ने अच्छा हाथ फेरा है। इस संसार की सही गर्दिश का विचार करके ही जीव निर्मल शांति को प्राप्त हो सकता है। धर्म मार्ग पर दृढ़ होना बहुत मुश्किल है। इस शरीर और संसार को नाशवान कौन समझता है? अब पिछले घाटे कैसे पूरे हो सकते हैं? ईश्वर ही कृपा करें। चार साल होने लगे हैं, इनसे कश्मीर का मसला अभी हल नहीं हुआ है। लहू और लोहा जब एक होता है तब जाकर धरती पर कब्जे पक्के हुआ करते हैं। अब कागज़ी घोड़े दौड़ा रहे हैं। देखा जाए, आगे यह क्या करते हैं? कितनी देर फ़ौज के ज़रिये से हुकूमत कर सकते हैं? अब फिर एक दफा कश्मीर की धरती पर जा रहें हैं। प्रेमी उस तरफ आने के लिए ज़ोर लगा रहे हैं। उनको भी हौंसला देना है।

"कागज़ी कार्यवाहियां भी हुआ करती हैं। अंग्रेजों और अमरीकनों ने स्यापा डाल दिया है। शायद हिन्दुस्तान वाले दबाव में आ जायें और उनके ब्लाक में शामिल हो जायें। इस तरह दुनिया के रगड़े-झगड़े चलते रहते हैं। यह धरती किसी की नहीं रही और न आगे रहेगी। रहेगा नाम साईं दा। सबसे बड़ी हकूमत अपने दिल पर काबू पाना है और दूसरे के दिलों पर राज करना है। यह बहादुरी और अक्लमंदी है। आजकल की क्या लड़ाई है? एक कमज़ोर आदमी हज़ारों आदमियों को चालाकी हुशियारी से खत्म कर सकता है। बहादुरी की लड़ाई, धर्म युद्ध पहले ज़माने में हुआ करते थे। आमने-सामने होकर लड़ना लड़ाई की नीति हुआ करती थी। आज ग़रीब जनता मारी जाती है और बड़े-बड़े मुहासिर (अधिकारी) पीछे महफ़ूज़ (सुरक्षित) जगहों पर बैठे रहते हैं। अपने को तप्ती हवा नहीं लगने देते। गुलाब सिंह, ध्यान सिंह ने धोखे से रियासत संभाली थी। चार पुश्त तक राज कर लिया है। अब यह हाथ से निकल गई है। अब राजा और प्रजा में कोई फ़र्क नहीं रहा। जिसको प्रजा वोट देगी वह ही पांच साल के वास्ते राजा बन जायेगा। अब अक्ल की हकूमत है। डंडे का ज़ोर नहीं रहा। जहां भी जीव जायेगा उस जगह उसने अपने कर्मों का नतीजा देखना है। पाकिस्तान में जो ग़रीब थे इधर आकर वह अमीर बनने लगे हैं। जो उधर अमीर थे इधर आकर पागल होकर कई मर गए हैं। इस तबदीली से कई बन जाते हैं, कई रह जाते हैं, मगर त्यागी-वैरागी कोई ही

बनता है। वह तबदीलियां लगी रहती हैं। आपने अब अपने जीवन के वास्ते खुद सोचना है। भोजन और भजन चलता रहे। अब की बार प्रेमी हकूमत राय ने तो अपने आप पर बड़ी कृपा की है। पठानकोट में भी तुम्हारी संगत हो गई है। मिलकर सत्संग का प्रोग्राम बनावें। जम्मू से प्रेमी आने ही वाले हैं, एक दो रोज़ तक आ जावेंगे। प्रेमी जी, इस संसार में हैरानी और परेशानी हर वक्त जीव को गिरफ्तार कर रखती है। इस वास्ते हर घड़ी सत्धर्म का विश्वास धारण करने में कल्याण है जिससे निर्मल भक्ति, प्रेम प्राप्त होता है। ईश्वर हर समय जीव का सहायक है, ऐसा विश्वास रखें। जिस जगह रहने का समय मिल जाए वहां ही प्रभु आज्ञा समझनी चाहिये। धरती किसी ने सिर पर उठाकर नहीं ले जानी। चार दिन ज़िदंगी के गुज़ारने हैं। जहां भी जीव मेहनत करता है वहां ही उसकी जीविका पूरी हो जाती है।"

विचार हो रहा था कि दीना नाथ जी महंगी आ गए। जब प्रेमी ख़िदमत राय जी बादाम रोगन निकालने लगे तो महाराज जी ने फरमाया:- "बनारसी! तू भी इसके निकालने का तरीका सीख ले, शायद जम्मू जाकर निकालना पड़ जाए। हमेशा कोई साथ नहीं दिया करता।" जज साहब प्रेमी हकूमत राय मुस्कराये और अर्ज़ की:- "महाराज जी! जिस तरह आज्ञा हो दास हर जगह हाज़िर है।" श्री महाराज जी ने फरमाया:- "तुमने काफी सेवा कर ली है। पठानकोट तक तुम्हारी हद है। आगे अब कश्मीर वाले प्रेमी जानें, उनका काम जाने।" शाम को सत्संग हुआ, फिर महाराज जी ने वचनों की अमृत वर्षा फरमाई।

सत् उपदेश

इस मानुष चोले को धारण करके जीव कल्याण की ख़ातिर संसार में आया है। उसका असली संसार यह शरीर ही है। चौरासी लाख जिया-जन्त में उस व्यापक प्रभु की शक्ति ही व्याप रही है। उस शक्ति से कोई जगह खाली नहीं। उसके हुक्म के बग़ैर पत्ता भी नहीं हिल सकता है। चौरासी लाख योनियों में एक मानुष योनि ही ऐसी है जिसमें बंधन और मुक्ति का भेद यह जीव समझ सकता है। खुद किसी चोले में यह छुटकारा प्राप्त नहीं कर सकता। कर्म चक्कर में फंसा हुआ जीव बड़े-बड़े यत्न-प्रयत्न करता है कि किसी तरह जन्म सफल हो जावे, मगर कर्म चक्कर से छुटकारा नहीं मिलता। इससे निकलने का रास्ता संतों के पास है। वह कहते हैं:- आओ, अपना दु:ख इधर दे जाओ, इधर से ठंडक ले जाओ। जो कुछ सुना इस पर अलैहदा बैठकर विचार करो और दो घड़ी प्रभु का ध्यान करो। जलन देने वाली संसारिक वस्तुओं से दो घड़ी छुट्टी पाकर हरि की भक्ति में समां दो। अपने आप को प्रभु चरणों में समर्पण करो। इसके सिवा और कोई खुलासी की राह नहीं।

उठ फरीदा सुतया, झाडू दे मसीत।
तू सुत्ता रब जागदा, तेरी डाढे नाल परीत॥
फरीदा रातां होईयां वडियां, धुक-धुक उट्ठन पास।
ध्रिग तिन्हां दा जीवना, जिन्हां पराई आस॥

संसारियों की जलन को दूर करने के वास्ते फ़कीर दर-दर फिरते हैं। उन्होंने कोई वनज या कोई व्यौपार नहीं करना। अपने पर बड़ी कृपा करते हो जो दो घड़ी की तपिश से दूर रह कर सत्संग में शामिल होते हो। बिना किसी सत्संग के, सत्उपदेश के चित्त नहीं मानता। संसार में बड़े -बड़े अवतार, ऋषि-मुनि जो हो गुज़रे हैं उनको भी आकर किसी का आसरा पकड़ना पड़ा। कृष्ण ने दुर्वासा को गुरु धारण किया। रामचंद्र ने वशिष्ठ से सिखया ली।

ऐ जी जन्म मरण आवे पुन जावे, बिन गुरु गत नहीं काई।
गुरमुख प्राणी नामे राते, नामे गत पत पाई।।
भाई रे राम नाम, चित्त लाई।
गुरु प्रशादी हर प्रभ जापे, ऐसी नाम बड़ाई।।
ऐ जी बहुत भेख करे भख्या को, केते उदर भरन के ताईं।
बिन हर भक्त नहीं सुख प्राणी, बिन गुर गरब न जाई।।
ऐ जी काल सदा सिर ऊपर, ठाड़े जन्म-जन्म वीराई।
साचे शब्द रते से बाचे, सतगुरु बूझ बुझाई।।
गुर सरनाई जोह न साके, दूत न सके संताई।
अवगत नाथ निरंजन राते, निरभौ सियूं लिव लाई।।

कबीर ने भी गुरु रामानन्द किया तब संसार में मानता (मान्यता) होने लगी। पहले सारे लोग काशी वाले उसे निगुरा ही कहते थे। कबीर के अंदर तो जन्म से ही ज्ञान चक्षु खुला हुआ था। उसने छोटी उम्र में ही बनारस शहर के अंदर जब धर्म प्रचार शुरू किया तो लोगों ने पूछा:- "आपका गुरु कौन है?" वैसे बहुतों को इल्म (पता) था कि कबीर जुलाहे का लड़का है, इस वास्ते उसकी बात कोई नहीं मानता था। उस ज़माने में रिवाज़ गुरु प्रणाली का था। जब भी किसी से मुलाकात होती थी पहले पूछते थे किस गुरु का शिष्य है, पीछे बात चलती थी? कबीर से जब पूछा जाता तब कुछ लज्जित हो जाते। उस समय ऐसा समझा जाता था कि वग़ैर गुरु के ज्ञान देने और सुनने का अधिकारी कोई नहीं हो सकता। उन्होंने सोचा, क्या करना चाहिये? गुरु रामानन्द के पास गए और गुरु धारण करने की प्रार्थना की। उनको जब पता लगा कि जुलाहे हैं उन्होंने ज्ञान देने से इंकार कर दिया। फिर कबीर जी गंगा के किनारे उस जगह सीढ़ियों पर जाकर लेट गए जहां से गुरु रामानन्द जी उतर कर गंगा में स्नान करने जाते थे। सुबह चार बजे से पहले का समय था। गुरु रामानन्द जी जब स्नान करने जा रहे थे, सीढ़ियों पर से उतर रहे थे तो उनकी कबीर जी के शरीर से ठोकर लगी तो आपके मुख से निकला, बेटे! राम-राम कहो। इसके बाद कबीर जी ने प्रचार शुरु कर दिया और जब कोई पूछता कि गुरु आपका कौन है? तो कह देते- गुरु रामानन्द जी हैं। लोगों को अस्चर्ज हुआ और उन्होंने जाकर रामानन्द जी से पूछा और कहा:- "आपने कैसे इस नीच को शिष्य बना लिया है?" रामानन्द जी ने कहा:- "दीक्षा देना तो दर किनार, हम तो नीच कौम के आदमी के दर्शन भी नहीं करना चाहते।" इस पर लोग कहने लगे:- वह झूठ बोलता है, उसे पकड़ लाओ। कबीर जी को

पकड़कर रामानन्द के पास ले गए। रामानन्द जी ने उनसे पूछाः- "क्या हमने तुमको दीक्षा दी है?" कबीर जी ने अर्ज़ कीः- "आज सुबह चार बजे ठोकर लगने पर आपने फरमाया था, 'राम-राम कहो', यह ही तो गुरु मंत्र है।" रामानन्द जी ने कहाः- "इस तरह राम-राम कहने से कोई शिष्य बन जाता है?" कबीर साहब ने कहाः- "इससे अलग कोई और मतलब है तो बतला दो।" तमाम वेद ग्रन्थों का यही सार है। मतलब यह है कि जीव की प्यास गुरु मिलने से ही दूर होती है। देखा जावे जीव पैदा होने के बाद जब होश संभालता है तो हर मरहले (कदम-कदम पर) पर उसे गुरु की ज़रूरत होती है। पहले मां ही उसे बोलना सिखाती है। ज्यूं-ज्यूं वह बड़ा होता है उसे गुरु धारण करने पड़ते हैं, यानि कोई भी काम करेगा, गुरु से ही सीखना पड़ता है। आत्म पदार्थ पाने के लिए आत्मदर्शी गुरु धारण करने की ज़रूरत हुआ करती है। ईश्वर तुम सबको सुमति देवें। अब थोड़ा समां रह गया है। दो-तीन रोज़ और आने की कृपा करें। फ़कीर कुछ दे कर ही जावेंगे। डरो मत, यह लेने वाले नहीं हैं।

इसके बाद 'सम दर्शन योग' से प्रसंग 'काया छीजत जात है' वाला पढ़ा गया। इसके बाद आरती और समता मंगल सबने मिलकर उच्चारण किया और प्रशाद बांटा गया और सत्संग समाप्त हुआ। आम संगत तो शाम होने की वजह से चली गई, कुछ प्रेमी बैठकर विचार करने लगे। इतने में जम्मू से लाला नानक चंद जी व प्रेमी मूलराज जी महंगी, रिटायर्ड सेशन जज, आपको साथ ले जाने के लिए हाज़िर हो गए। आकर प्रणाम करके बैठ गए।

श्री महाराज जी का आसन नीचे से ऊपर ले जाया गया। प्रेमी रामजी दास ने अर्ज़ कीः- "महाराज जी! अगर आज्ञा हो तो दास जाकर माता के दर्शन कर आवे।" इस पर श्री महाराज जी ने फरमायाः- "अब एक दफा चलने वाले रोज़ छुट्टी लेकर जाना।" फिर रामजी दास ने अर्ज़ कीः- महाराज जी! सेहत घर में अच्छी हो जावे तो क्या फिर श्रीनगर में हाज़िर होकर चरणों के दर्शनों का लाभ उठा सकता हूँ? श्री महाराज जी ने फरमायाः- "साथ जाने की इज़ाज़त देकर संगत के ऊपर खर्च का बोझ नहीं डालना चाहते। फिर सर्दियों में किसी जगह हाज़िर हो जाना। दूसरी वजह यह है कि कश्मीर में अगर जंग छिड़ गई तो वहां से निकलना मुश्किल हो जावेगा। फिलहाल घर पर ही रहना अच्छा है। अपनी सेहत को अच्छी तरह बनावें। शरीर से सेवा और मन को नाम में लगावें। उधर प्रेमियों को ज़्यादा सेवा की ज़रूरत नहीं है। काफी समां सेवा में हाज़िर होते हो गया है। अब इधर ही मिलजुल कर प्रेम से समां काटो। जीवन निर्वाह के वास्ते कोई थोड़ा मशीन वग़ैरा का ज़रिया सोच लो, जिस काम में आज़ादी भी मिले।" आख़िर फरमायाः- "अच्छा जाओ प्रेमी! आराम करो, देर बहुत हो गई है।" आप बायें करवट चादर ओढ़कर लेट गए।

नियम के अनुसार दो बजे रात बाहर तशरीफ ले गए और सुबह काफी दिन निकलने पर वापिस आये। हकीम जसवंत राय जी काहनूवान वाले पास बैठे थे। जब दूध-चाय आप ले रहे थे तो प्रेमी जज साहब, लाला नानक चंद जी, प्रेमी बिहारी लाल खोसला, और भी प्रेमी पधारे। प्रेमी लाला साईंदास जी भी आ गए। विचार शुरू हो गए। आश्रम के लिए ज़मीन खरीदी जा चुकी थी।

बाबू अमोलक राम जी की ड्यूटी कब्जा लेने के लिए लग चुकी थी। अब फसल कट चुकी थी। बाबू जी ने कब्जा लेकर सूचना दे दी थी। प्रेमी साईंदास ने वहां चाय लगवाने की सेवा मांगी हुई थी। जो उन्हें दे दी गई थी। इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया:- "प्रेमियों! जगाधरी में आश्रम का सिलसिला शुरू है।सेवादारों की श्रद्धा और प्रेम से सब कार्य होगा। कुर्बानी करने से ही चीज़ तैयार होगी। ज़मीन की सेवा बाबू राम सरूप जगाधरी निवासी ने कर दी है। बाबू तन-मन-धन से सेवा करने में लगा हुआ है। सब सबब (साधन) अपने आप जुड़ गए हैं।" लाला साईंदास जी से मुख़ातिब होकर फरमाया:- "प्रेमी जी! क्या विचार है?" लाला जी ने अर्ज़ की:- "महाराज जी! जो आज्ञा होगी, सेवादार हाज़िर है। सब कुछ आपकी कृपा से ही होना है। जब आज्ञा मिलेगी वहां चले जावेंगे।" लाला साईंदास का दृढ़ निश्चय देखकर आपने फरमाया:- "घाटा कुछ नहीं पड़ता। सेवा में खर्च करने से एक से अनेक हो जाते हैं। यह किसी को पाबंद नहीं करना चाहते, न खुद पाबंद होना चाहते हैं। मगर संगत मजबूर कर रही है। चार साल से संगत बिखरी हुई है। आपस में प्रेमियों को इकट्ठा होने का मौका ही नहीं मिल रहा। समता की तालीम करीबन मुकम्मल हो चुकी है। श्रद्धावान प्रेमी भी काफी हैं। अब पुरुषार्थ करके आगे बढ़ने की ज़रूरत है।"

शाम को सत्संग में जो सत् उपदेश दिया वह नीचे दिया जा रहा है।

सत् उपदेश अमृत

शरीर रूपी संसार को धारण करके जिस कदर भी जीव, इंसान, हैवान, चिरन्द-परिन्द, जलचर वग़ैरा हैं सब त्रैगुणी माया के गेड़ में फंसे हुए चक्कर काट रहे हैं। च्यूंटी से लेकर ब्रह्मा तक सब तीन गुणों की कैद में हैं। जीव जिस भी प्रकृति को लेकर आया है वासना संजुगत होकर संसार में विचरता है। यह तमाम रूप, गुण, कर्म कई प्रकार के धारण करके हर एक जीव अपनी करनी के फल को पाता हुआ सुख-दुःख को प्राप्त होता रहता है। दुःखों से रहित और विकारों से निर्विकार उस समय जाकर होता है जिस समय ईश्वर परायण होकर जीव महागुणों यानि सील, संतोष, दया, खिमा, प्रेम आदि को ग्रहण करता है। मानुष चोले में ही जीव इस अविनाशी सुख को तलाश कर सकता है, दूसरी जूनियों में ऐसा नहीं कर सकता। इसलिए इस चोले को अशरफ़ उलमुखलूक़ात (सर्वश्रेष्ठ) कहा जाता है। इन गुणों के चक्कर से बग़ैर प्रभु सिमरण के छुटकारा प्राप्त होना मुश्किल है। जो जीव इस माया रूपी बंधन से छूटना चाहता है उसके लिए ज़रूरी है-

"जे तो प्रेम खिलन का चाओ, सिर धर तली गली मोरी आओ।"

जब जीव इस मार्ग में दृढ़ता से लग जाता है और ईश्वर आज्ञा को धारण कर लेता है तो-

तू तू करता तू भया, मुझ में रही न हूं।
अब आपा पर का मिट गया, जित देखूं तित तूं।।

यानि उस समय वह ख़ुदी से छूट जाता है और उसे हर जगह उस परम तत् का ही अनुभव होता है। ऐसा सत्पुरुषों का अनुभव होता है। सब जीव इस अभिमान के फंदे में फंसे हुए हैं। किसी

को शरीर का अभिमान है, किसी को धन का, किसी को परिवार का अभिमान है, तो कोई बुद्धि के अभिमान में फंसा हुआ है और कोई संसारी धन, माल, इकबाल के अभिमान में फंसा हुआ है, और यह अभिमान आसानी से दूर नहीं होता। इससे छूटने के लिए इस शरीर को नाशवान जानो। इसे अपनी मलकियत (सम्पत्ति) न जानना ही बड़ी बात है। शरीर जिस शक्ति के आधार पर खड़ा है उस महाशक्ति का विचार करना, बार-बार मन बुद्धि को प्रभु आज्ञा में ढालना ही भक्ति है। इसे तब ही धारण किया जा सकता है। जब सत्-असत् का निर्णय जीव करेगा। कृष्ण ने आत्मा और अनात्मा का ही निर्णय बताया है। मोहम्मद ने जिस्म और जान करके समझाया है।

''सौ स्यानयां इको मत''

शरीर हर वक्त नाशवान है। आत्मा नित ही दायम-कायम है। आत्मा को इन आंखों से नहीं देखा जा सकता। शरीर में इसकी खोज करने से बुद्धि इसे अनुभव करती है। कोई शूरवीर ही इसे अनुभव करता है।

टूट गई खूंटी बिखर गई काया, उड़ गया हंस हज़ूरे दा।
कहें कबीर सुन भरतरी योगी, अगम पंथ किसी सूरे दा।।
मिट्टी कहे कुम्हार नूं, तूं क्यों रोदें मोहे।
इक दिन ऐसा होयेगा, मैं रोंदूंगी तोहे।।

संसार के सब पदार्थ तृष्णा रूपी अग्नि को प्रचंड करने वाले हैं। अमीर-ग़रीब सब बेचैन हैं। न लाखों वालों को शांति है, न अरबपति को। ईश्वर ही कृपा करें तो जीवों को शांति मिल सकती है। शांति धर्म के मार्ग पर चलने से मिलती है। इसके बग़ैर सब भरम, अज्ञानता है। प्रभु सबको सुमति देवें ताकि संसार में आने का लाभ प्राप्त कर सकें। अब दो घड़ी का और मेला रह गया है। फिर किसी समय ईश्वर आज्ञा हुई तो विचार हो जावेंगे। यह संसार मेला है, कोई आ रहा है, कोई जा रहा है।

इसके बाद समदर्शन योग से दोहे पढ़े गए और सत्संग आरती और समता मंगल के बाद समाप्त हुआ। प्रशाद बांटा गया। इसके बाद श्री महाराज जी अंतरध्यान हो गए। थोड़ी देर बाद जब आंखें खोली तो फरमाया:- "प्रेमियों! जब जाओ, आराम करो।"

प्रेमियों ने हाथ जोड़कर अर्ज़ की:- "महाराज जी! फिर कब कृपा करेंगे।" इस पर आपने फरमाया:- "प्रेमियों! फ़कीरों का कोई ठिकाना नहीं। जब आपने बुलाया आ जावेंगे। जैसी प्रभु प्रेरणा होगी। कई दफ़ा पठानकोट से होकर शाहपुर कंडी की तरफ गए। जब-तक विचार भेंट न होवे, क्या पता लग सकता है? आज इस पठानकोट की पहली सी हालत नहीं रही। इसका रंग-रूप ही बदला हुआ है। एक दफ़ा शाहपुर कंडी से वापसी पर दो घंटे एक प्रेमी के पास ठहरे थे, फिर कोई सबब ही नहीं बना।"

6 मई, 1950 के रोज़ जब आप बाहर से स्थान पर पधारे और दूध सेवन करके फ़ारिग हुए तो भगत जी से कहा -"अपना सामान वग़ैरा संभाल। फ़कीरों को ज़्यादा समां किसी जगह नहीं

ठहरना चाहिये। उस जगह से मोह बन जाता है। पहले साधु जनों की वह नीति थी कि किसी जगह गांव, शहर, बस्ती में एक-दो दिन ठहरते थे। वह सात दिन से ज़्यादा नहीं ठहरते थे। अगर ज़्यादा किसी जगह ठहरना होता था तो दूर किसी जंगल में, बस्ती से दूर, अलग-थलग ठहरते थे। वह तवे, बिस्तरे कब किसी ने साथ रखे थे। तुम्हारे लिए छुट्टी दे रखी है कि घबरा न जाओ। अति संग्रह किसी चीज़ का ठीक नहीं रहता। गुज़रान वाली बात किया करो। इनको पहले कह देना कि ज़्यादा दिन जम्मू में नहीं ठहरेंगे। बीमारी की वजह से कमज़ोरी है। एकांत में ही ज़्यादा समां देंगे। रियासत के परमिट संभाल लो, शायद रास्ते में दिखाने पड़ जायें।"

157. जम्मू में निवास

थोड़ी देर बाद प्रेमी जज साहब, लाला मूल राज व लाला नानक चंद जी व अन्य प्रेमी आ गए। करीबन 10 बजे थे, श्री महाराज जी ने चलने की आज्ञा दी। तांगे आए हुए थे, उनमें सवार होकर बस अड्डे के लिए रवाना हो पड़े। बहुत से प्रेमी पैदल ही उस जगह पहुंचे। साढ़े ग्यारह बजे वाली बस में जगह मिली। सब प्रेमी प्रणाम करके जुदा हुए। बस माधोपुर पुल पर रुकी। मिलिट्री वालों ने परमिट देखे। काफी देर वहां रुकी, फिर वहां से लखनपुर पहुंची। इस जगह काफी चैकिंग होती है। शाम को चार बजे जम्मू पहुंचे। बस के अड्डे पर जम्मू निवासी प्रेमी इंतज़ार कर रहे थे। जज साहब श्री महाराज जी को प्रार्थना करके अपने गृह ले गए। वहां दूध सेवन किया। फिर श्री महाराज जी को तवी नदी के किनारे नहर से आगे दीवानों की कोठी थी, वहां ठहराया गया। प्रेमियों ने पहले ही बंदोबस्त किया हुआ था। जगह बहुत एकांत थी।

इस जगह भी सत्पुरुष रात को बाहर तशरीफ़ ले गए और जंगल में जाकर समाधिस्थ हो गए। दिन निकलने पर वहां से उठकर वापिस आए और आसन पर बिराजे। प्रेमी भी आ गए। दंडवत प्रणाम करके आपकी सेहत के बारे में उन्होंने पूछा:- आब-ओ-हवा के बदलने से तबियत ठीक रही है और कोई फर्क पड़ा है?

श्री महाराज जी ने फरमाया:- "सफर में प्रोग्राम बदलने से थोड़ा सा असर हो ही गया है, मगर वह दिल्ली वाला मामला नहीं। वहां बहुत गड़बड़ रही है। बादाम रोग़न के सेवन से बहुत फ़र्क हो गया है। आपने दूध में चाय को बिल्कुल बंद कर देने की आज्ञा फरमाई। कोहाला, जलमादा से यह शुरू हुई थी, अब यह ख़त्म हुई है। बड़ा नुकसान इसने पहुंचाया है।"

सत्संग का समां शाम के पांच बजे से छः बजे तक निश्चित किया गया और साथ ही बता दिया गया कि श्री महाराज जी का निवास यहां सिर्फ चंद दिन का ही होगा, फिर एकांत के लिए श्रीनगर चले जावेंगे। इसलिए प्रेमियों को सूचना दे देवें कि सत्संग का लाभ उठावें।

जज साहब ने इसके बाद अर्ज़ की:- महाराज जी! बस में श्रीनगर जाना तकलीफ दायक होगा। सफ़र लम्बा होगा। अगर आज्ञा हो तो हवाई जहाज में प्रबंध कर दिया जावे। सीट रिज़र्व करवाने की कोशिश की जावे। जिस रोज़ सीट मिल गई उसी रोज़ आप श्रीनगर तशरीफ ले जावें।

आधे घंटे में जहाज श्रीनगर पहुंचा देवेगा। बिलकुल कोई तकलीफ नहीं होगी। डोली में जैसे कुम्हार ले चलते हैं। फिर भी हिचकोले लगते हैं, मगर हवाई जहाज में तो बिलकुल पता ही नहीं लगता। चढ़ते समय या उतरते समय किसी-किसी का दिल ज़रा कच्चा होता है।

श्री महाराज जी ने फरमाया:- "प्रेमी! ऐसी तकलीफ करने की क्या ज़रूरत है? खर्चा भी ज़्यादा।" जज साहब ने अर्ज़ की:- "महाराज जी! खर्चा कुछ नहीं, तकलीफ़ बिलकुल नहीं होनी चाहिये। बस में दो रोज़ खराब होना पड़ता है। मिलिट्री की कानवाई चल रही है। बाज दफ़ा दो-दो चार-चार घंटे बस वालों को रास्ता नहीं मिलता। पठानकोट से जम्मू आने की बहुत सहूलियत हो गई है। नई सड़क, पुल बहुत आला बन गए हैं। बड़ी भारी रकम गवर्नमेंट ने खर्च की है।"

श्री महाराज जी ने फरमाया:- "प्रेमी! अब अपना राज है, चाहे गंगा घर के अंदर ले आओ। अब्दुला के सिर को आसीसें दो जिसने हिन्दुओं की मदद की और आधे कश्मीर को बचा लिया है।" काफी देर विचार चलते रहे, फिर पड़ोसी दीनानाथ जी महंगी ने पूछा-

प्रश्न : महाराज जी, ममता किस तरह ख़त्म हो सकती है?

उत्तर - प्रेमी, पहले तो इस जीव को बड़ी भारी ममता शरीर के साथ है, फिर जितने शरीर से सम्बंध रखने वाले हैं उनसे इसका ख़्वामख़ा ही मोह बहुत बढ़ जाता है जीव एक दूसरे से सुख चाहते हैं। ज्यूं-ज्यूं लगाव बढ़ता जाता है, संसारी ममता फैलती जाती है। ममता के नाश करने के वास्ते सब नियम धर्म बने हुए हैं। जब-तक शरीर की ममता ख़त्म नहीं होती तब-तक प्रभु प्रेम चित्त के अंदर नहीं आ सकता। जिस समय प्रभु प्रेम आ जायेगा ममता का रूप बदल जायेगा। मैं-मेरी की जगह तू ही तू करने लगेगा।

ममता माई जनमत खाई, काम क्रोध दोहे मामा।
मोह नगर का राजा मारयो, तब पहुँचियो तिस गामा॥

समतावाद और ममतावाद दो भेद हैं। जब यह जीव ममता को छोड़ता है तब इसे असली शांति आनन्द मिलता है। हर समय कारण कर्ता उस महाप्रभु को जानना चाहिये। ज्यूं-ज्यूं कर्ता-हर्ता ईश्वर को समझेगा, उसका अपना मान ख़त्म होगा। अपने अंदर उसको परम प्रसन्नता मालूम होगी। जन्म-जन्मांतर से जीव मोह रूपी बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। भाग (भाग्य) से संत शरण मिल गई तो उसे जाग आ जाती है।

सत्गुरु दाता भेंटया, साधी कठिन महीम।
पाया राजदेह दीप का, मारे पंच गनीम॥

पहले इसने शरीर का मालिक बनना है। इसकी परायणता छोड़नी है। बार-बार इस शरीर के बनाने वाले का विचार करने से देह मद से मुक्ति मिल सकती है।

मन के मते नहीं चालिये, मन के मते नहीं चैन।
आठ पहर की भटकना, न कुछ लेन न देन।

जिस तरह लकड़ी को घुन अन्दर ही अन्दर खा जाता है इसी तरह जीव को यह दोष काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार चट करते रहते हैं। न उसके सुख पूरे होते हैं, न ममता से निज़ात मिलती है। हर जीव को ममता ने बेचैन, दुःखी कर रखा है। सर पर छाई पाई, धूनियां तापीं, पानी में खड़े रहे, उल्टे लटके, फिर भी ममता वहां की वहां खड़ी है। मैं सन्यासी, मैं त्यागी, 'मैं' सबको खा रही है। इसका सबसे बेहतर इलाज निर्मानता, दीनता है। ''जो तेरी आज्ञा, जो तेरी आज्ञा, सत् तेरी आज्ञा,'' ममता को काटने का आसान इलाज है। इससे बेहतर और कोई इलाज नहीं। आज के सत्संग में जो अमृत वर्षा फरमाई वह संक्षेप में इस तरह है:-

सत्उपदेश

रोज़ाना की तरह शरीर को नाशवान बताते हुए आत्म तत् परमात्मा में विश्वास दृढ़ करने को फरमाया और कहा।

बहता पानी जात है, उठ धोइये शताबी हाथ।
गया समां नहीं पायेंगा, अंत होएं अनाथ ॥
कर संगत सतपुरुष की, तन से नित सेवा धार।
लाभ यथार्थ यह जग माहीं, भव दुस्तर से पावें पार॥

शरीर की शान-बान को त्याग कर हर समय परहित विचार करना ही कल्याणकारी है। निर्मल विचारों को लेकर संसार में चलने वाला ही सत् सेवा और सिमरण में दृढ़ हो सकता है। शरीर का क्या भरोसा है, किस समय इसकी फूंक निकल जाये? जब-तक इन्द्रियां काम कर रही हैं, शरीर अच्छी तरह चल रहा है। आहार, व्यौहार पवित्र रूप में करते हुए जीवन का सुधार कर लो, फिर शायद मानुष जामा मिलता है या नहीं।

खबर कर उस पलक की, जिस पल जायें सब छोड़।
काल दगा दे मारसी, उस पल जायें किस ठौर॥
यत्न करो निस दिन यही, जिस विध मन को तृप्ती आए।
मिटे संसार की वासना, इक प्रेम प्रभु चित आए॥
जन्म-जन्म का पड़ा अंधकार में, मिल सतगुरू सोझी होई।
माने भाना प्रभु का, चित चिन्ता रही न कोई॥
अमृत पाया घट माहीं, विख को पीना त्याग।
बार-बार प्रभ को सिमरण किया, चित में धर अनुराग॥

जीव चाहता है कि संसार के सुख भी बने रहें और करतार भी मिल जाए। शरीर को कायम रखने के वास्ते रात-दिन कोशिश हो रही है मगर यह माटी, आग, हवा, पानी, आकाश का बना हुआ पुतला आख़िर इनमें ही मिल जावेगा। कोई यत्न इसका कारगर न होगा। सुख इसमें है कि दूसरों को आराम दे। जब तेरी ऐसी पर-उपकार वाली भावना होगी, निष्काम बुद्धि को लेकर संसार में चलेगा, तब तेरी यह सत् भावना ही तेरा कल्याण कर देगी। ऐसा हर समय दिल के अंदर विचार

किया करो कि आज मैंने किसको सुख दिया है या दुःख, किसी अनाथ की सेवा की है या नहीं, प्रभु की याद किस कदर बन सकी है, व्यौपार में कितना सच-झूठ किया है। आहार कैसा चल रहा है, क्या आहार पवित्र खाया या अपवित्र? सत् विचार करता हुआ जीव अपना रास्ता आप ही ढूंढ लिया करता है। जब बुद्धि सत् विचार करेगी गुरु भी मिल जायेगा।

जे साहब कुछ करनी लोड़े, सौ सबब इक पल विच जोड़े।

गाते-गाते कुलवन्त हो जाते हैं। सिख्या हर जीव को कुदरत दे रही है। चलने वाले बनो। यह मन बेईमान हो तो लाख सत्संग सुनने का कुछ असर नहीं होता। लाहौर में एक दफ़ा फेरी वाला संतरे-संतरे, अच्छे संग तरे की आवाज़ दे रहा था। वहां ही छज्जू भक्त हुए हैं, उन्होंने सुन लिया 'अच्छे संग तरे, अच्छे संग तरे।' तो उन्होंने उस दिन से अपना रास्ता बदल दिया। ज़्यादा से ज़्यादा अच्छों की संगत शुरू कर दी।

दूसरा वाक्या इस तरह हुआ। एक दफ़ा सुबह के समय अभी मुंह अंधेरे ही था, छज्जू भक्त स्नान करने जा रहे थे। रास्ते में चूहड़ा आगे से झाडू देते हुए कह रहा था, ''भक्तों एक तरफ हो जाओ।'' भक्त जी ने सुनकर विचार किया और मन में धारण कर लिया। वाकई में एक तरफ होकर चलने में कुछ बन सकता है। संसार का लगाव ही बना रहे और प्रभु मिलने की लगन भी पूरी हो जाए, दो बातें मुश्किल हैं। ऐसा विचार करके अपने आप को संसार से अलग करके एक तरफ हो गए। मतलब यह है, विचार सुनकर चित्त में लग गए तो बेड़ा पार हो गया। अगर ऐसे विचार न धारण किये तो फिर क्या हासिल होता है?

कठिन मारग यह प्रेम का मीता, किसी विरले पाई सार।
सीस दिए बिन सरे नहीं काजा, चाहे लाख यत्न कर डार॥

ईश्वर सबको सत् बुद्धि देवें। सत्संग समाप्ति के बाद प्रशाद लेकर जब प्रेमी चले गए तो जज साहब ने अर्ज़ की:- सीट 16 मई के लिए मिल गई है। दो रोज़ और बाकी हैं। जम्मूं में बहुत थोड़ा समय मिला है। श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''आप प्रेमी भी तो अब सब उधर जा रहे हैं।'' महंगी साहब ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! श्रीनगर से काफी दूरी पर जगह मिल सकी है। रोज़ाना सत्संग में आना-जाना मुश्किल होगा।''

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''वहां समां रोज़ाना थोड़ी देना है। तकलीफ़ की वजह से कमज़ोरी हो गई है, यह भी दूर हो जावेगी। हठ करके सब कुछ हो रहा है। बाहर से तकलीफ़ दिखाई नहीं दी तो, प्रेमी समझते हैं अब ठीक हो गए हैं। लेकिन इस दफ़ा शरीर को काफी धक्का लगा है। थोड़ी और संगत सेवा देनी होगी।''

जज साहब ने अर्ज़ की:- ''महाराज जी! महापुरुषों की माया वह आप ही जानें। हम मायावादी लोग क्या समझ सकते हैं? क्यों ऐसी लीला धारण की गई है? प्रभु की बड़ी दया दृष्टि हुई जो कि 1947 के बाद अब कश्मीर के प्रेमियों को फिर दर्शन हुए हैं। उस समय बहुत हालात बिगड़ चुके थे। आपके कश्मीर रहने से कश्मीर का बचाव हो गया है, जो कसर होगी और निकल जाएगी।''

श्री महाराज जी ने फरमाया:- ''राजा रणबीर सिंह ने बड़ी कोशिश की थी मगर उसकी पेश पंडितों ने न चलने दी। आज यह आबादी उनकी न बैठती । संसार में हमेशा कौम और बिरादरी के सहारे ही विचरना पड़ता है। अपनी जगह ही न हो तो रहेगा कहां। महाराजा गुलाब सिंह वग़ैरा ने किस तरह तसल्लत (शांति) जमाया है। इनकी क्या कदर थी? राज कैसे संभाले जाते हैं। अवतारों, राजाओं का नाम ही मिट गया है। तरीका ही दूसरा चल पड़ा है। अब वज़ीर मस्ती करे तो पांच साल के बाद न रह सकेगा।

इन्हीं दिनों पंडित ठाकुर दास जी, बहनोई पंडित बिहारी लाल जी, रिटायर्ड सेशन जज, दर्शनों के लिए सेवा में हाज़िर हुए। वह उन दिनों वेदों का अंग्रेज़ी में तरज़मा (ट्रांसलेशन) कर रहे थे। उन्होंने बतलाया कि एक दिन पंडित बिहारी लाल जी ने ग्रन्थ 'समता प्रकाश' अनुभवी वाणी उनको दिखलाया। कुदरतन जो पृष्ठ उनके सामने आया उसमें निम्न शब्द पर निग़ाह पड़ी।

गुण से काल काल से कर्मा, सकली लीला धारे यह धरमा।

उन दिनों में वह वेदों के उस प्रसंग का तरज़मा कर रहे थे जिसमें वह बतलाया गया था कि संसार का खेल किस तरह शुरू हो रहा है और फैल रहा है। इस पद को देखकर तबियत बड़ी प्रसन्न हुई। इस पद में वेदों, उपनिषदों की सार निकाल कर रख दी है। आपके वचनों में बड़ी खूबी यह भी है कि हर पद का मतलब भी साथ-साथ प्रगट फरमाया हुआ है ताकि कमज़ोर बुद्धि वाले लोगों को कष्ट न करना पड़े। आपके दर्शनों की बड़ी इच्छा थी जो आज पूरी हो गई है। बड़ी कृपा इस धरती पर फरमाई है।

इस पर श्री महाराज जी ने सृष्टि की रचना पर बहुत से पद वाणी के उच्चारण फरमाए और फरमाया:- ''प्रभु की बेअंत माया है। कौन इसके भेद को लिख सकता है? जितना लिखा जाए उतना ही थोड़ा है।''

जज साहब न अर्ज़ की:- ''महाराज जी! वेदों में भी ऋषि ने किसी बात की कमी नहीं छोड़ी, मगर संतों ने भी कमाल कर दिखाया है, पढ़ते-पढ़ते बुद्धि चक्कर में आ जाती है। मुकम्मल तौर पर वह अनुभव समझ में नहीं आ सकता। हम इल्म के ज़ोर से असलियत को जानना चाहते हैं। उन्होंने बड़े-बड़े तप करके यह ख़ज़ाना निकाला है। आपके दर्शन करके बड़ी मन को शांति मिली है। पहले जैसा ऋषियों वाला आपका जीवन देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई है।'' पंडित जी श्री महाराज जी को प्रणाम करके बाहर गए तो प्रेमी मूलराज जी, जज के साथ बाहर गए। बाहर जाने पर पंडित जी ने लाला मूलराज जी का बड़ा शुक्रिया अदा किया कि उन्होंने श्री महाराज जी के मुतालिक उन्हें बतलाने की कृपा की है और दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अगर ऐसे चार ऋषि और हों तो संसार का नक्शा पलट सकते हैं। हमेशा से ऋषि-मुनि ही संसारियों पर कृपा करते आए हैं।

शाम को सत्संग में जो अमृत वर्षा आपने फरमाई वह नीचे दर्ज की जा रही है।

सत्पुरुष के पूर्ण अमृत उपदेश नोट करना तो मुश्किल हुआ करता था, प्रेमियों ने संक्षिप्त नोट लिए हैं। वह ही पेश किए जा रहे हैं।

सत् उपदेश अमृत

जीव अज्ञान को धारण करके दिन-रात अनेक तरह के कर्म कर रहा है। जिस तरह मां-बाप व दीगर संगी-साथी कर्म कर रहे हैं उसी तरह देखा-देखी बाद में आए हुए जीव भी कर्म करने शुरू कर देते हैं। वासना को लेकर जीव संसार में उत्पन्न होते हैं और आख़िर में वासना में ही शरीर छोड़ते हैं। जिस तरह पहले जीव अंधेरे में आए और अंधेरे में ही चले गए इसी तरह बाद में आने वाले जीव भी अंधेरे में उनकी देखा-देखी चलने लग जाते हैं। ऐसे मोह, माया के चक्कर में जीव ग्रस्त हो जाते हैं कि सही सोच उनके अंदर किसी समय पैदा ही नहीं होती। हर घड़ी वह अपने आपको नाश की तरफ लिए जाते हैं। अज्ञानता और मूर्खता यह ही है कि अंधा-धुंध चलते जाना। जिस कदर सुख के वास्ते यत्न करते हैं उतने ही दुःख आकर मिलते हैं। संसार के जितने भी सुख हैं अगर सब उसे मिल भी जाएं तो भी धीरज नहीं आता।

सुख के यतन नित करे, कोटां यत्न को धार।
रंचक मिले न सुख शांति, भटकत फिरे संसार॥
उस सुख के माथे सिल पड़े, जो नाम हृदय से जाए।
बलहारी उस दुःख की, जो पल-पल नाम रटाए॥

संसार के सभी कर्म अज्ञानता, भरम, वहम को प्रगट करने वाले हैं। कोई भी पदार्थ जीव की जलन को दूर करने वाला नहीं। महापुरुषों ने अच्छी तरह तहकीकात करके बतलाया कि संसार असत्, बदलने वाला है। सत् की खोज में असली अविनाशी सुख है। सत् की तहकीकात ही असली खोज है जिससे इस जीव की तपन शांत हो सकती है। परमार्थी जीव ज्यूं-ज्यूं शारीरिक सुखों का त्याग करता है त्यूं-त्यूं ईश्वर प्रेम बढ़ता है। जिनका स्वभाव आदि काल से है कि नाम, रूप, गुण, कर्म की तरफ ज़्यादा से ज़्यादा दौड़ना, जो मन के पीछे लग कर चलते हैं वह सुख-दुःख, लाभ-हानि, राग-द्वेष इत्यादि द्वन्द्व को प्राप्त होते हैं। जो जीव सत्बुद्धि द्वारा ज्ञान-विचार से मर्यादा को धारण करके संसार में विचरते हैं उनके अंदर शुभ गुण, मेल, सन्तोष वग़ैरा आकर परम सुख का कारण होते हैं। मायावादी बुद्धि हर समय ''मैं-मेरे'' के चक्कर में अन्तर विखे फंसी रहती है। इस दौड़ को बदलकर सत् परायण होने को ही भक्ति योग इत्यादि कहा जाता है। इस तरह सत् यत्न को धारण करके बुद्धि द्वन्द्व खेद से न्यारी हो जाती है। झूठे आसरे उसने संसार में बनाए हुए हैं कि यह मेरा भाई है, यह मेरी मां, बाप हैं, यह मेरा बेटा है। एक ईश्वर के भरोसे को धारण करके इस संसारी मोह से छूटने का यत्न करना ही उच्च बुद्धि का काम है।

सतियों सत न छोड़ तूं, सत छोड़ियां सत जाए।
सत की बांधी लक्ष्मी, बोहर मिलेगी आए॥

प्रभु ही सबको निर्मल विचार, सत् बुद्धि देवें ताकि सत्कर्म को धारण करके माया चक्कर से छुटकारा हासिल करें। इसके बाद ''सम दर्शन योग'' से दोहे पढ़े गए और फिर आरती व समता मंगल पढ़ने के बाद प्रशाद बांटा गया और सत्संग समाप्त हुआ और संगत में बताया गया कि कल सत्संग नहीं होगा क्योंकि महाराज जी श्रीनगर तशरीफ़ ले जा रहे हैं।

*****

भारतवर्ष में, अन्य स्थानों पर भी संगत समतावाद के आश्रम व सत्संग शालाएँ है जिनके बारे में जानकारी व अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी निम्नलिखित आश्रमों से ली जा सकती हैं।

HEAD OFFICE :
SANGAT SAMTAVAD
SAMTA YOG ASHRAM
CHACHHRAULI ROAD
JAGADHARI - 135003
PH. NO. : 01732-244882

मुख्य ऑफिसः
संगत समतावाद
समता योग आश्रम
छछरौली रोड
जगाधारी–135003
फोन न0–01732–244882

DELHI OFFICE :
SAMTA YOG ASHRAM
ANSAL PALAM VIHAR
FARM NO. 45
VILLAGE SALAH PUR
HUDA, GURGAON
OPP. SECTOR-21
NEW DELHI-110061
PHONE NO. 28061518, 28061519

दिल्ली ऑफिसः
समता योग आश्रम
अंसल पालम विहार
फार्म नं0–45
गाँव सलाह पुर
हुड्डा गुडगाँव, सेक्टर–21
के सामने
नई दिल्ली–110061
फोन न0–28061518, 28061519

संगत समतावाद द्वारा महाराज जी की शिक्षा पर आधारित ग्रंथ एवं पुस्तकें

क्रम सं०	नाम
1.	श्री समता प्रकाश ग्रन्थ
2.	श्री समता विलास ग्रन्थ
3.	जीवन गाथा भाग–1
4.	जीवन गाथा भाग–2
5.	मेरे गुरूदेव
6.	गुरूदेव ने कहा
7.	ऐसे थे गुरूदेव हमारे
8.	अमर वाणी
9.	ऐसी करनी कर चलो
10.	अनन्त की खोज
11.	संस्मरण (महाराज जी के जीवन के कुछ संस्मरण)
12.	समता ज्ञान दीपक
13.	समता आध्यात्मिक पत्र (हिन्दी–उर्दू) (महाराज जी द्वारा प्रेमियों को लिखे हुए कुछ पत्र)
14.	समता ज्ञान पुष्पमाला
15.	समता नीति
16.	प्रकाश पुण्ज
17.	अनन्त शान्ति की ओर
18.	नामावली
19.	संक्षिप्त जीवन परिचय
20.	प्रार्थना व वैराग्य वाणी
21.	जीवन परिचय (समतावाद)